लेव तोलस्तोय

आन्ना कारेनिना

५-८
भाग

प्रगति प्रकाशन

"लेव तोलस्तोय सदा के लिये रूसी और विश्व-साहित्य का ऐसा महान तथा उच्च शिखर बने रहेंगे, जहां तक पहुंचना सम्भव नहीं होगा।"

मिखाईल शोलोख़ोव

सोवियत सत्ताकाल में सोवियत संघ में लेव तोलस्तोय की संकलित रचनायें नौ बार प्रकाशित हो चुकी हैं और इनमें ९० खण्डों वाली सम्पूर्ण संकलित रचनायें भी शामिल हैं।

१९१८ से अब तक तोलस्तोय की रचनाओं की ९ करोड़ ९० लाख प्रतियां छप चुकी हैं। सोवियत संघ की जातियों और जनगण की ८७ भाषाओं में उनकी पुस्तकों के अनुवाद हो चुके हैं।

लेव तोलस्तोय

आन्ना कारेनिना



लेव तोलस्तोय

आन्ना करेनिना

उपन्यास

आठ भागों में

५—८ भाग

प्रगति प्रकाशन • मास्को

अनुवादक : डा० मदनलाल 'मधु'
चित्रकार : यूरी कोपिलोव

Лев Толстой
АННА КАРЕНИНА
(части V-VIII)
На языке хинди

Tolstoy L.
Anna Karenina

T $\frac{70301-937}{014(01)-81}$ 665-81

4708020100

पांचवां भाग

(१)

प्रिंसेस श्चेर्बात्स्काया का ख़्याल था कि लेण्ट के धार्मिक पर्व तक, जिसके लिये केवल पांच सप्ताह बाक़ी रह गये थे, शादी करना असम्भव था, क्योंकि इस वक़्त तक आधा दहेज तैयार नहीं हो सकेगा। मगर उसके लिये लेविन के साथ इस बात पर सहमत न होना भी सम्भव नहीं था कि लेण्ट के बाद कुछ ज़्यादा देर हो जायेगी, क्योंकि प्रिंस श्चेर्बात्स्की की सगी बूढ़ी मौसी बहुत बीमार थी और उसकी जल्द ही मृत्यु हो सकती थी। ऐसा होने पर मातम के कारण शादी और भी रुक सकती थी। इसलिये दहेज को बड़े और छोटे – दो भागों में बांटने का निर्णय करके प्रिंसेस लेण्ट से पहले ही बेटी की शादी करने को राज़ी हो गयीं। उन्होंने तय किया कि दहेज का छोटा भाग वे अभी तैयार कर लेंगी और बड़ा भाग बाद में भेज देंगी तथा इस कारण लेविन से बहुत नाराज़ थीं कि वह किसी तरह भी इस बात का गम्भीरतापूर्वक जवाब देने को तैयार नहीं था कि वह इसके लिये राज़ी है या नहीं। ऐसा निर्णय इस वजह से भी सुविधाजनक था कि नवदम्पति विवाह के फ़ौरन बाद गांव जानेवाले थे, जहां बड़े दहेज की चीज़ों की ज़रूरत नहीं होगी।

लेविन पागलपन की पहले जैसी स्थिति में ही बना रहा, जिसमें उसे ऐसा प्रतीत होता था कि वह और उसका सुख-सौभाग्य ही सारी दुनिया का मुख्य तथा एकमात्र ध्येय है और अब उसे किसी चीज़ के बारे में सोचने तथा चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं, कि दूसरे ही उसके

लिये सब कुछ कर रहे हैं तथा कर देंगे। भावी जीवन की उसकी कोई योजनायें और लक्ष्य भी नहीं थे। उसने यह जानते हुए कि सब कुछ अच्छा होगा, इनका निर्णय दूसरों पर छोड़ दिया था। उसका भाई कोज़्निशेव, ओब्लोन्स्की और कीटी की मां उसे यह बताते थे कि उसे क्या कुछ करना चाहिये। उसे जो भी सुझाव दिया जाता, वह उससे पूरी तरह सहमत हो जाता। भाई ने उसके लिये ऋण लिया और प्रिंसेस ने शादी के बाद मास्को से जाने की सलाह दी। ओब्लोन्स्की ने विदेश-भ्रमण का मशविरा दिया। लेविन सभी चीज़ों के लिये सहमत था। "अगर आपको ख़ुशी मिलती है, तो जो भी चाहें, करें। मैं बहुत सुखी हूं और आप चाहे कुछ भी क्यों न करें, मेरा सुख न अधिक और न कम होगा," वह अपने मन में सोचता। जब उसने कीटी को विदेश जाने के सम्बन्ध में ओब्लोन्स्की की सलाह बताई, तो उसे हैरानी हुई कि कीटी इससे सहमत नहीं थी और उनके भावी जीवन के बारे में उसकी कुछ अपनी निश्चित मांगें थीं। उसे मालूम था कि गांव में लेविन का अपना मनपसन्द काम है। जैसा कि उसे स्पष्ट था, कीटी न केवल इस काम को समझती ही नहीं थी, बल्कि समझना भी नहीं चाहती थी। लेकिन इससे उसके इस काम को महत्त्वपूर्ण मानने में बाधा नहीं पड़ती थी। चूंकि वह यह जानती थी कि गांव ही उनका घर होगा, इसलिये विदेश नहीं, जहां उसे रहना नहीं था, बल्कि वहां जाना चाहती थी, जहां उनका घर होगा। ऐसे इरादे की निश्चित अभिव्यक्ति से लेविन को आश्चर्य हुआ। किन्तु चूंकि उसके लिये सब समान था, उसने ओब्लोन्स्की से तुरन्त अनुरोध किया, जैसे कि यह उसका कर्त्तव्य हो, कि वह गांव जाकर अपनी अच्छी पसन्द के मुताबिक़, जिसकी उसके पास कोई कमी नहीं थी, वहां सारा प्रबन्ध कर दे।

"लेकिन सुनो तो," ओब्लोन्स्की ने गांव से लौटने के बाद, जहां उसने नवदम्पति के लिये सब प्रबन्ध कर दिया था, एक दिन लेविन से पूछा, "तुम्हारे पास ईसाई धर्म की दीक्षा लेने का प्रमाण-पत्र है न?"

"नहीं। क्यों?"

"उसके बिना शादी नहीं हो सकती।"

"हे भगवान!" लेविन चिल्ला उठा। "मुझे लगता है कि मैंने नौ साल से व्रत-उपवास नहीं किया। मुझे इसका ख़्याल ही नहीं आया।"

"तुम भी ख़ूब हो!" ओब्लोन्स्की ने हंसते हुए कहा। "और मुझे सर्वखण्डनवादी कहते हो! लेकिन ऐसे काम नहीं चलेगा। तुम्हें दीक्षा लेनी चाहिये।"

"कब यह किया जाये? सिर्फ़ चार दिन बाक़ी रह गये हैं।"

ओब्लोन्स्की ने इसकी भी व्यवस्था कर दी। लेविन ने उपवास करना शुरू कर दिया। हर उस नास्तिक की भांति, जो दूसरों की आस्तिकता का आदर करता है, लेविन के लिये भी गिरजाघर की सभी धार्मिक रस्मों में उपस्थित रहना और उनमें भाग लेना एक मुश्किल काम था। सभी चीज़ों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील और दयालुता की जिस मानसिक स्थिति में वह इस समय था, उसमें ढोंग करने की यह विवशता लेविन को न केवल बोझिल, बल्कि सर्वथा असम्भव प्रतीत हुई। अपने गौरव और उत्कर्ष की इस स्थिति में उसे या तो झूठ का सहारा लेना होगा या धर्मोल्लंघन करना पड़ेगा। वह अपने को दोनों में से कोई भी चीज़ करने की स्थिति में अनुभव नहीं कर रहा था। किन्तु उसने ओब्लोन्स्की से चाहे कितना ही क्यों न यह पूछा कि व्रत-उपवास किये बिना क्या प्रमाण-पत्र नहीं मिल सकता, ओब्लोन्स्की ने यही जवाब दिया कि ऐसा करना असम्भव है।

"इसमें तुम्हारे लिये कौन बड़ी मुसीबत है – दो दिन की ही तो बात है? और वह बूढ़ा पादरी भला तथा समझदार आदमी है। वह इस दुखते दांत को ऐसे निकाल देगा कि तुम्हें पता भी नहीं चलेगा।"

गिरजे में पहली प्रार्थना के समय खड़े हुए लेविन ने अपने दिल में किशोरावस्था की उन तीव्र धार्मिक भावनाओं की स्मृतियों को ताज़ा करने की कोशिश की, जो उसने सोलह से सत्रह वर्ष तक अनुभव की थीं। किन्तु उसे फ़ौरन इस बात का यक़ीन हो गया कि उसके लिये ऐसा करना बिल्कुल असम्भव है। उसने इस सब को लोगों से मिलने-जुलने के लिये जाने की महत्वहीन रस्म की तरह मानना चाहा, लेकिन अनुभव किया कि उसके लिये ऐसा करना भी किसी तरह सम्भव नहीं। अपने अन्य समकालीनों की भांति, धर्म के मामले में लेविन भी सर्वथा अनिश्चित स्थिति में था। भगवान में उसकी आस्था तो हो नहीं सकती

थी, किन्तु साथ ही उसे इस बात का भी पक्का यक़ीन नहीं था कि यह सब अनुचित है। इसलिये जो कुछ वह कर रहा था, उसके महत्त्व को स्वीकारने और साथ ही उसे निरी औपचारिकता मानते हुए उसके प्रति उदासीनता का भाव अपनाने की स्थिति में भी न होने के कारण समझ में न आनेवाली रस्में पूरी करते समय उसे अटपटापन और लज्जा तथा इसी कारण, जैसे कि उसकी अन्तर्रात्मा उससे कहती, झूठ और बुराई की सी अनुभूति होती।

उपासना के समय वह कभी तो प्रार्थना को ऐसा अर्थ प्रदान करने का प्रयास करते हुए, जो उसके दृष्टिकोण से भिन्न न हो, तो कभी यह अनुभव करते हुए कि वह इन प्रार्थनाओं को समझने में असमर्थ है और उसे इनकी भर्त्सना करनी चाहिये, उन्हें अनसुना करने की कोशिश में अपने विचारों, निरीक्षणों तथा संस्मरणों में खो जाता, जो गिरजे में बेकार खड़े रहने की हालत में अत्यधिक सजीवता से उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे।

उसने दोपहर, तीसरे पहर की उपासना तथा भजन को जैसे-तैसे बर्दाश्त किया और अगले दिन, रोज़मर्रा के मुक़ाबले में कुछ पहले उठकर नाश्ता किये बिना, आठ बजे ही सुबह की प्रार्थना सुनने और दीक्षा लेने के लिये गिरजे में पहुंच गया।

फ़ौजी-भिखमंगों, दो बुढ़ियाओं और पादरियों, आदि के सिवा गिरजे में कोई नहीं था।

पतला-सा अंगरखा पहने, जिसके नीचे लम्बी पीठ के दोनों भाग बहुत स्पष्ट रूप से नज़र आ रहे थे, एक नौजवान डीकन ने लेविन का स्वागत किया और तुरंत दीवार से सटी छोटी-सी मेज़ के पास जाकर प्रार्थना पढ़ने लगा। प्रार्थना के पाठ के समय, विशेषतः "भगवान दया करें" शब्दों के बार-बार और तेज़ी से दोहराये जाने पर, जो "भगव दया करें" सुनाई देते थे, लेविन ने अनुभव किया कि उसका चिन्तन-द्वार बन्द है, उसपर मुहर लगी है और इस समय इसे छेड़ना तथा हिलाना-डुलाना उचित नहीं होगा, वरना मस्तिष्क में सब कुछ गड्डमड्ड हो जायेगा। इसलिये वह डीकन के पीछे खड़ा रहकर कुछ सुने और समझे बिना अपने ही विचारों में खोया रहा। "अद्भुत रूप से अभिव्यक्तिपूर्ण है उसका हाथ," यह याद करते हुए कि कैसे वे

एक दिन पहले कोनेवाली मेज़ के पास बैठे रहे थे, वह सोच रहा था। जैसा कि लगभग हमेशा ही इस समय होता था, उनके बीच बात करने को कुछ नहीं था और कीटी मेज़ पर अपना हाथ रखकर उसे बन्द करती तथा खोल रही थी तथा उसके हिलने-डुलने को देखते हुए ख़ुद ही हंस पड़ी थी। उसे याद आया कि कैसे उसने इस हाथ को चूमा था और बाद में कैसे उसने गुलाबी हाथ पर एक मिलन-बिन्दु की ओर बढ़ती रेखाओं को ध्यान से देखा था। "फिर भगव दया करें," लेविन ने सलीब बनाते, झुकते और झुकनेवाले डीकन की पीठ की लचीली गतिविधि को देखते हुए सोचा। "इसके बाद उसने मेरा हाथ लेकर रेखाओं को देखा। 'तुम्हारा हाथ बहुत अच्छा है,' उसने कहा था।" और उसने अपने तथा डीकन के छोटे-से हाथ को देखा। "हां, अब जल्द ही प्रार्थना ख़त्म हो जायेगी," उसने अनुमान लगाया। "नहीं, लगता है कि फिर शुरू से दोहराने लगा है," प्रार्थनाओं को सुनते हुए उसने सोचा। "नहीं ख़त्म कर रहा है – वह अब ज़मीन की ओर बहुत झुककर प्रणाम कर रहा है। ऐसा तो हमेशा समाप्ति के पहले होता है।"

डीकन ने मख़मली कफ़ के नीचे से उसके हाथ में खोंसा गया तीन रूबल का नोट चुपके से लेकर लेविन से कहा कि वह पाप-स्वीकृति के लिये लेविन का नाम लिख देगा और ख़ाली गिरजे के फ़र्श की सिलों पर अपने घुटनों तक के नये जूतों को ज़ोर से पटकता हुआ वेदी की ओर चल दिया। क्षण भर बाद उसने वहां से सिर बाहर निकाला और लेविन को उधर आने का इशारा किया। लेविन के मस्तिष्क में अब तक बन्द पड़ा हुआ विचार हिला-डुला, मगर उसने जल्दी से उसे दूर खदेड़ दिया। "किसी तरह बात बन ही जायेगी," उसने सोचा और वेदी के बग़लवाले चबूतरे की ओर चल दिया। वह वेदी पर चढ़ा और दायीं तरफ़ मुड़ने पर उसे पादरी दिखाई दिया। अध-पकी, विरली दाढ़ी और थकी हुई दयालु आंखों वाला बूढ़ा पादरी डेस्क के पीछे खड़ा हुआ प्रार्थना-पुस्तक के पृष्ठ उलट रहा था। तनिक सिर झुकाकर लेविन का अभिवादन करने के फ़ौरन बाद वह अभ्यस्त स्वर में प्रार्थनाओं का पाठ करने लगा। प्रार्थनायें समाप्त करके उसने भूमि की ओर झुकते हुए प्रणाम किया और फिर लेविन को सम्बोधित किया।

"यहां अदृश्य रूप से उपस्थित भगवान ईसा मसीह आपकी पाप-स्वीकृति को क़बूल करते हैं," पादरी ने सलीबी मौतवाले ईसा के चित्र की ओर संकेत करके कहा। "हमारा पावन ईसाई धर्म जो शिक्षा देता है, आप उसमें विश्वास करते हैं या नहीं?" पादरी ने लेविन के चेहरे से नज़रें हटाते और चोग़े के नीचे हाथ छिपाते हुए पूछा।

"मैं सन्देह करता था, मैं हर चीज़ में सन्देह करता हूं," लेविन ने अपने को अप्रिय प्रतीत होनेवाली आवाज़ में कहा और चुप हो गया।

पादरी इसलिये कुछ क्षण तक ख़ामोश रहा कि लेविन कुछ और कहता है या नहीं और फिर आंखें मूंदकर व्लादीमिर क्षेत्र के लोगों की तरह अपने उच्चारण में अत्यधिक "ओ" का उपयोग करते हुए कहता गया –

"सन्देह मानव की दुर्बलता है, किन्तु हमें प्रार्थना करनी चाहिये कि दयालु भगवान हमें शक्ति प्रदान करें। कौनसे विशेष पाप किये हैं?" पादरी ने विराम के बिना, मानो इस बात का यत्न करते हुए कि समय बरबाद न हो, पूछा।

"मेरा मुख्य पाप सन्देह है। मैं हर चीज़ में सन्देह करता हूं और अधिकतर सन्देह की स्थिति में रहता हूं।"

"सन्देह मानव की दुर्बलता है," पादरी ने वही शब्द दोहराये। "किन्तु मुख्यतः आप किस बात में सन्देह करते हैं?"

"मैं सभी चीज़ों में सन्देह करता हूं। कभी-कभी मुझे भगवान के अस्तित्व के बारे में भी सन्देह होने लगता है," लेविन ने अनचाहे ही कहा और अपने शब्दों की अशिष्टता से स्तम्भित रह गया। किन्तु, जैसाकि प्रतीत हुआ, लेविन के शब्दों का पादरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

"भगवान के अस्तित्व के बारे में भला कैसे सन्देह हो सकता है?" तनिक दिखाई देनेवाली मुस्कान के साथ पादरी ने जल्दी से पूछा।

लेविन चुप रहा।

"स्रष्टा के अस्तित्व के बारे में आपको क्या सन्देह हो सकता है, जब आप उसकी रची हुई सृष्टि अपने सामने देखते हैं?" पादरी जल्दी-जल्दी बोलने के अपने अभ्यस्त ढंग में कहता गया। "आकाश की मेहराब को किसने दीपों से सजाया है? किसने पृथ्वी को उसका सौन्दर्य

प्रदान किया है? स्रष्टा के बिना यह कैसे हो सकता है?" उसने प्रश्न-सूचक दृष्टि से लेविन की ओर देखते हुए कहा।

लेविन ने अनुभव किया कि पादरी के साथ दार्शनिक वाद-विवाद करना उचित नहीं होगा और इसलिये केवल प्रश्न से सम्बन्धित बात का ही जवाब दिया।

"मैं नहीं जानता," उसने कहा।

"नहीं जानते? तो फिर आप इस बात में सन्देह क्यों करते हैं कि भगवान ने ही सारी रचना की है?" पादरी ने प्रफुल्लतापूर्ण आश्चर्य के साथ जानना चाहा।

"मैं कुछ भी नहीं समझता," लेविन ने शर्म से लाल होते और यह अनुभव करते हुए कहा कि उसके शब्द बेतुके हैं तथा ऐसी परिस्थिति में इसके अलावा और कुछ नहीं हो सकते।

"भगवान का नाम लीजिये और उनसे अनुनय-विनती कीजिये। पावन पादरियों के हृदयों में भी सन्देह थे और उन्होंने भगवान से अपनी आस्था की पुष्टि का अनुरोध किया। शैतान बहुत बड़ी ताक़त रखता है और हमें उसके सामने झुकना नहीं चाहिये। भगवान का नाम लीजिये, उनसे विनय-अनुनय कीजिये। भगवान का नाम लीजिये," उसने जल्दी-जल्दी दोहराया।

पादरी मानो सोचते हुए कुछ क्षण तक चुप रहा।

"जैसा कि मैंने सुना है, आप मेरे गिरजे से सम्बन्धित और मेरे धर्म-पुत्र, प्रिंस श्चेर्बात्स्की की बेटी से विवाह करने जा रहे हैं?" उसने मुस्कराते हुए इतना और कहा। "बड़ी अच्छी लड़की है।"

"हां," पादरी के लिये लज्जारुण होते हुए लेविन ने उत्तर दिया। "पाप-स्वीकृति के समय वह किसलिये यह पूछ रहा है?" लेविन ने सोचा।

उसके इस विचार का मानो उत्तर देते हुए पादरी ने कहा –

"आप शादी करने जा रहे हैं और बहुत सम्भव है कि भगवान आपको सन्तान का वरदान दें, ठीक है न? अगर अनास्था की ओर आकर्षित करनेवाले शैतान के आकर्षण पर आप स्वयं विजय नहीं पायेंगे, तो आप अपने बच्चों को क्या शिक्षा देंगे?" उसने नम्र भर्त्सना के साथ कहा। "अगर आप अपने बच्चों को प्यार करते हैं, तो एक

अच्छे पिता के नाते अपने बच्चों के लिये केवल दौलत, ऐश-आराम और मान-सम्मान की ही कामना नहीं करेंगे, आप उनकी आत्मिक मुक्ति, सत्य के प्रकाश से उनकी आत्मा की दीप्ति भी चाहेंगे। ठीक है न? जब आपका बच्चा आपसे यह सवाल करेगा कि 'पिता जी, इस दुनिया में मुझे मोहित करनेवाली सभी चीज़ें – पृथ्वी, जल, सूरज, फूल, घास – किसने बनायी हैं,' तो आप क्या जवाब देंगे? क्या आप उससे यह कहेंगे – 'मुझे मालूम नहीं?' जब भगवान ने अपनी परम अनुकम्पा से आपको यह स्पष्ट कर दिया है, तो ऐसा नहीं हो सकता कि आपको यह मालूम न हो। या फिर जब आपका बच्चा यह पूछेगा – 'मरने के बाद मेरा क्या होगा?' जब आप ख़ुद कुछ नहीं जानते, तो उसे क्या बतायेंगे? कैसे जवाब देंगे उसे? उसे दुनिया के आकर्षणों और शैतान के रहम पर छोड़ देंगे? यह तो अच्छी बात नहीं होगी!" पादरी ने कहा, चुप हो गया और अपना सिर एक ओर को झुकाकर दयालु और विनयी आंखों से लेविन को देखने लगा।

लेविन ने इस बार इस कारण कोई जवाब नहीं दिया कि पादरी से वाद-विवाद करना अनुचित समझता था, बल्कि इसलिये कि उससे किसी ने ऐसे सवाल नहीं किये थे। जब बच्चे ऐसे सवाल करेंगे, तो क्या जवाब दिया जाये, यह सोचने को काफ़ी वक़्त होगा।

"आप ज़िन्दगी की ऐसी दहलीज़ पर क़दम रख रहे हैं, जब रास्ता चुनना और उसी पर बने रहना चाहिये," पादरी ने अपना कथन जारी रखा। "भगवान का नाम लीजिये, ताकि वह अपनी अनुकम्पा-अनुग्रह से आपकी सहायता और आप पर दया करें," उसने अपनी बात समाप्त की। "हमारे प्रभु और भगवान ईसा मसीह, पूरी मानव-जाति के प्रति अपनी दया और अनुकम्पा से अपनी सन्तान को क्षमा करें" और पाप-मुक्ति की प्रार्थना समाप्त करके पादरी ने उसे आशीर्वाद देकर जाने को कहा।

उस दिन घर लौटने पर लेविन को इस बात की सुखद अनुभूति हुई कि अटपटी स्थिति का अन्त हो गया और वह भी इस ढंग से कि उसे झूठ नहीं बोलना पड़ा। इसके अलावा उसके दिमाग़ में इस बात की धुंधली-सी अनुभूति रह गयी कि उस दयालु और प्यारे बूढ़े ने जो कुछ कहा था, वह इतना बेतुका नहीं था, जितना उसे शुरू में प्रतीत

हुआ था, और इस मामले में कुछ ऐसा है, जिस पर सोच-विचार करना चाहिये।

"ज़ाहिर है कि अभी नहीं," लेविन ने सोचा, "मगर कभी बाद में।" पहले किसी भी समय की तुलना में लेविन अब यह अनुभव कर रहा था कि उसकी आत्मा में कुछ अस्पष्टता और मलिनता है तथा धर्म के मामले में उसकी वैसी ही स्थिति है, जिसे वह साफ़ तौर पर दूसरों में देखता और नापसन्द करता था और जिसके लिये अपने दोस्त स्वियाज्स्की को भला-बुरा कहता था।

इस दिन की शाम उसने अपनी मंगेतर के साथ डौली के यहां बितायी। लेविन बहुत ही अधिक उल्लासित था और ओब्लोन्स्की को अपनी हर्षोन्माद की (यी) स्थिति स्पष्ट करते हुए उसने कहा कि वह उस कुत्ते जैसी ख़ुशी महसूस कर रहा है, जिसे चक्र में से कूदना सिखाया जाता है और जो आख़िर उससे अपेक्षित बात समझकर उसे पूरा करने के बाद ख़ुशी से भौंकता है और दुम हिलाते हुए बड़ी उमंग में मेज़ और खिड़की के दासे पर उछलता-कूदता है।

(२)

शादी के दिन रिवाज के मुताबिक़ (कीटी की मां और डौली ने रीति-रिवाजों का कड़ाई से पालन करने का अनुरोध किया) लेविन अपनी मंगेतर से नहीं मिला और उसने होटल के अपने कमरे में ही संयोग से जमा हो जानेवाले तीन छड़ों के साथ खाना खाया। ये तीन अविवाहित थे – कोज़्निशेव, विश्वविद्यालय की पढ़ाई के ज़माने का लेविन का साथी और अब प्राकृतिक विज्ञान का प्रोफ़ेसर कातावासोव, जिससे सड़क पर लेविन की अचानक मुलाक़ात हो गयी थी और वह उसे अपने कमरे में खींच लाया था, तथा दूल्हे का साथी, मास्को का एक न्यायाधीश और शिकार का साथी चीरिकोव। भोजन प्रफुल्लता के वातावरण में हुआ। कोज़्निशेव बहुत रंग में था और कातावासोव की मौलिकता का बड़ा मज़ा ले रहा था। कातावासोव यह अनुभव करते हुए कि उसकी मौलिकता का ऊंचा मूल्यांकन हो रहा है, उसे समझा जा रहा है, उसका प्रदर्शन कर रहा था। चीरिकोव

बड़ी ख़ुशी और ज़िन्दादिली से सारी बातचीत में हिस्सा ले रहा था।

"हां तो," कातावासोव ने व्याख्यान देने की अपनी आदत के मुताबिक़ शब्दों को खींचते हुए कहा, "कितना योग्य व्यक्ति था हमारा दोस्त कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच लेविन। मैं अनुपस्थितों की चर्चा कर रहा हूं, क्योंकि वह तो अब यहां रहा ही नहीं। विश्वविद्यालय छोड़ने के समय उसे विज्ञान से लगाव था और उसकी मानवीय रुचियां थीं। अब उसकी योग्यता का आधा भाग इस दिशा में निर्देशित है कि अपने को धोखा दे और दूसरा आधा भाग इस धोखे की सफ़ाई पेश करने में।"

"आपके समान शादी का कट्टर दुश्मन मैंने आज तक कोई दूसरा जाना-देखा ही नहीं," कोज़्निशेव ने कहा।

"नहीं, मैं शादी का दुश्मन नहीं हूं। मैं श्रम-विभाजन का हिमायती हूं। जो लोग और कुछ नहीं कर सकते, वे नसल बढ़ायें, और बाक़ी उनको शिक्षित तथा सुखी बनाने में हाथ बंटायें। मेरा तो ऐसा दृष्टिकोण है। इन दो धंधों को आपस में मिला देने की इच्छा रखनेवाले बड़ी संख्या में हैं, मगर मैं उनमें से नहीं हूं।"

"कितनी ख़ुशी होगी मुझे उस दिन, जब यह पता चलेगा कि आप प्रेम-जाल में फंस गये हैं!" लेविन ने कहा। "कृपया मुझे शादी में ज़रूर बुलाइयेगा।"

"मैं तो पहले से ही फंसा हुआ हूं।"

"हां, मसिक्षेपी मछलियों के प्रेम-जाल में। जानते हो," लेविन ने भाई को सम्बोधित किया, "मिख़ाईल सेम्योनोविच एक निबन्ध लिख रहे हैं मसिक्षेपियों के भोजन और..."

"ख़ैर, गड़बड़ नहीं कीजिये! इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि किस बारे में। बात यह है कि मैं तो सचमुच ही मसिक्षेपियों को प्यार करता हूं।"

"किन्तु वे आपके बीवी को प्यार करने में बाधा नहीं डालेंगी।"

"वे तो बाधा नहीं डालेंगी, मगर बीवी बाधा डाल देगी।"

"वह क्यों?"

"देख लीजियेगा। आपको खेतीबारी और शिकार पसन्द है न, देख लीजियेगा!"

"आज आर्खीप आया था, कहता था कि प्रूद्नी जंगल में बहुत सारे हिरन और दो भालू भी हैं," चीरिकोव ने कहा।

"तो आप मेरे बिना ही उनका शिकार कीजिये।"

"लो, सचाई सामने आ गयी," कोज़्निशेव ने कहा। "पहले से ही भालुओं के शिकार को अलविदा कह देना चाहिये – बीवी इसके लिये जाने नहीं देगी!"

लेविन मुस्करा दिया। इस बात की कल्पना कि बीवी जाने नहीं देगी, उसे इतनी प्रिय लगी कि वह भालुओं को देख पाने की ख़ुशी से हमेशा के लिये इन्कार करने को तैयार था।

"फिर भी अफ़सोस की बात है कि इन दो भालुओं का आपके बिना शिकार किया जायेगा। याद है ख़ापीलोवो में हमारा आख़िरी शिकार? कितना अच्छा शिकार होगा," चीरिकोव ने कहा।

लेविन यह कहकर कि कीटी के बिना कहीं, कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता, उसे निराश नहीं करना चाहता था, इसलिये ख़ामोश रहा।

"छड़े की ज़िन्दगी से विदा लेने की परम्परा यों ही नहीं चली है," कोज़्निशेव ने कहा। "आदमी कितना ही सुखी क्यों न हो जाये, फिर भी आज़ादी गंवाने का दुख तो होता ही है।"

"आप यह स्वीकार करें कि गोगोल के नाटक के एक पात्र की तरह खिड़की से बाहर कूद जाने को मन होता है?"

"होता तो होगा, मगर वह मानेगा नहीं!" कातावासोव ने कहा और ठठाकर हंस दिया।

"खिड़की तो खुली हुई है... अभी त्वेर चलते हैं! एक मादा भालू भी है, मांद तक जाया जा सकता है। सच, पांच बजे की गाड़ी से चलते हैं! यहां वे जो चाहें, करते रहें," चीरिकोव ने मुस्कराकर कहा।

"क़सम खाकर कहता हूं," लेविन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मैं अपनी आत्मा में आज़ादी खोने का ज़रा भी अफ़सोस महसूस नहीं कर रहा हूं!"

"हां, आपकी आत्मा में अब ऐसा गड़बड़-झाला है कि कुछ भी महसूस नहीं होगा वहां आपको," कातावासोव ने कहा। "कुछ सब्र करें, तब आपको यह महसूस होने लगेगा।"

"नहीं, अगर ऐसा होता, तो मैंने अपनी सुख-भावना (वह उसकी उपस्थिति में प्रेम-भावना नहीं कहना चाहता था) के अतिरिक्त अपनी आज़ादी खोने का कुछ तो दुख अनुभव किया होता... इसके विपरीत मैं इस आज़ादी को खोने से ख़ुश हूं।"

"यह तो बुरी बात है! बिल्कुल लाइलाज मरीज़ है!" कातावासोव ने कहा। "आइये, इसके स्वस्थ होने का जाम पियें और यह कामना करें कि इसके सपनों का कम से कम सौवां भाग ही साकार हो जाये! यह ऐसा सुख होगा, जैसा कभी पृथ्वी पर नहीं हुआ!"

मेहमान खाना ख़त्म होने के फ़ौरन बाद चले गये, ताकि शादी में शामिल होने के लिये कपड़े बदल आयें।

अकेला रह जाने पर इन छड़ों की बातों को याद करते हुए लेविन ने एक बार फिर अपने से पूछा – क्या वह अपनी आत्मा में उस आज़ादी के खो जाने का अफ़सोस महसूस करता है, जिसकी वे चर्चा कर रहे थे? इस सवाल पर वह मुस्करा दिया। "आज़ादी? किसलिये चाहिये मुझे आज़ादी? सुख इसी में है कि आदमी प्यार करे और उसके हृदय में कामना हो, किसी की इच्छाओं और विचारों के अनुरूप सोचे यानी कोई भी आज़ादी न हो – यही है सुख!"

"किन्तु क्या मैं उसके विचार, उसकी इच्छायें, उसकी भावनायें जानता हूं?" अचानक उसे किसी आवाज़ की फुसफुसाहट सुनाई दी। उसके चेहरे से मुस्कान ग़ायब हो गयी और वह सोच में डूब गया। सहसा एक अजीब-सी भावना उसपर हावी हो गयी। उसे भय और शंका, सभी चीज़ों के बारे में शंका ने आ घेरा।

"मान लो, वह मुझे प्यार न करती हो? मान लो, वह केवल शादी करने के लिये ही ऐसा कर रही हो? अगर वह ख़ुद ही यह न जानती हो कि क्या कर रही है?" उसने अपने आपसे पूछा। "हो सकता है कि वह होश में आये और शादी होने के बाद ही यह समझे कि मुझे प्यार नहीं करती और कर भी नहीं सकती थी।" और बहुत अजीब, बहुत बुरे विचार उसके दिमाग़ में आने लगे। कीटी को लेकर उसे व्रोन्स्की से एक साल पहले की तरह ही ईर्ष्या होने लगी, मानो वह शाम, जब उसने कीटी को व्रोन्स्की के साथ देखा था, कल की ही बात हो। उसे शंका हुई कि कीटी ने उससे सब कुछ नहीं कहा।

वह तेज़ी से उछलकर खड़ा हो गया। "नहीं, ऐसे नहीं चल सकता!" उसने हताश होते हुए अपने आपसे कहा। "उसके पास जाता हूं, उससे उसके दिल की बात पूछूंगा, आख़िरी बार उससे कहूंगा – हम आज़ाद हैं और क्या यह सब कुछ यहीं रोक देना ठीक नहीं होगा? स्थायी दुख, लज्जा और बेवफ़ाई से तो सभी कुछ बेहतर है!" बुरी तरह हताश होता और सभी लोगों पर, अपने पर, कीटी पर भुनभुनाता हुआ वह होटल से निकला और कीटी के घर की तरफ़ चल दिया।

कीटी उसे पीछे वाले कमरों में मिली। वह सन्दूक़ पर बैठी थी और कुर्सियों की टेकों पर लटके तथा फ़र्श पर रखे हुए ढेर सारे रंग-बिरंगे फ़ाकों को छांटती हुई नौकरानी को कुछ हिदायतें दे रही थी।

"ओह!" लेविन को देखकर वह कह उठी तथा ख़ुशी से उसका रोम-रोम पुलकित हो गया। "कैसे आये हो तुम, कैसे आना हुआ आपका (विवाह के दिन तक वह उसे कभी "तुम" और कभी "आप" कहती थी)? इसकी आशा नहीं की थी! मैं अपने पुराने फ़ाकों को छांट रही हूं, किसे कौन-सा दूं..."

"ओह! यह तो बड़ी अच्छी बात है!" उदासी से नौकरानी की तरफ़ देखते हुए उसने जवाब दिया।

"दुन्याशा, तुम जाओ, मैं तुम्हें बाद में बुला लूंगी," कीटी ने कहा। "क्या हुआ है तुम्हें?" नौकरानी के जाने पर कीटी ने दृढ़ता से "तुम" का उपयोग करते हुए पूछा। कीटी का उसके अजीब, उदास और परेशान चेहरे की तरफ़ ध्यान गया और उसे भय ने जकड़ लिया।

"कीटी! मैं बहुत व्यथित हूं। मैं अकेला यातना नहीं सह सकता," उसने कीटी के सामने रुककर अनुनय से उसकी ओर देखते हुए बहुत दुखी आवाज़ में कहा। कीटी के प्यार भरे और निश्छल चेहरे से उसे यह साफ़ नज़र आ रहा था कि वह जो कुछ उससे कहना चाहता है, उसका कुछ भी नतीजा नहीं निकलेगा। किन्तु फिर भी वह चाहता था कि ख़ुद कीटी उसके ग़लत होने की पुष्टि कर दे। "मैं यह कहने आया हूं कि अभी भी वक़्त है। यह सब कुछ ख़त्म और ठीक-ठाक किया जा सकता है।"

"क्या? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। तुम्हें हुआ क्या है?"

"मैं तुमसे पहले भी हज़ार बार कह चुका हूं और इस बारे में सोचे बिना नहीं रह सकता... यही कि मैं तुम्हारे लायक़ नहीं हूं। तुम मुझसे शादी करने को राज़ी नहीं हो सकती थीं। तुम सोच-विचार लो। तुमसे भूल हुई है। तुम अच्छी तरह ग़ौर कर लो। तुम मुझसे प्यार नहीं कर सकतीं। अगर... बेहतर यही है कि कह दो," उसकी ओर देखे बिना उसने कहा। "मुझे बहुत दुख होगा। लोग जो चाहें, कहते रहें। मानसिक यातना से सभी कुछ बेहतर होगा... अभी, जब तक समय है, सभी कुछ बेहतर है..."

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा," कीटी ने सहमते हुए जवाब दिया, "मेरा मतलब है कि क्या तुम इन्कार करना चाहते हो... नहीं चाहते?"

"हां, अगर तुम मुझे प्यार नहीं करतीं।"

"तुम पागल हो गये हो!" झल्लाहट से लाल होते हुए उसने कहा।

किन्तु लेविन का चेहरा इतना दयनीय था कि कीटी ने अपनी खीझ पर क़ाबू पा लिया और कुर्सी से फ़्राक नीचे गिराकर उसकी बग़ल में जा बैठी।

"तुम क्या सोच रहे हो? सब कुछ कहो मुझसे।"

"मैं सोच रहा हूं कि तुम मुझे प्यार नहीं कर सकतीं। किसलिये तुम प्यार कर सकती हो मुझे?"

"हे भगवान! मैं क्या कर सकती हूं?.." कीटी ने कहा और रो पड़ी।

"ओह, यह क्या कर डाला मैंने!" लेविन ज़ोर से कह उठा और कीटी के सामने घुटनों के बल खड़े होकर उसके हाथ चूमने लगा।

कीटी की मां जब पांच मिनट बाद कमरे में आई, तो इन दोनों के बीच पूरी सुलह हो चुकी थी। कीटी ने उसे केवल यही विश्वास नहीं दिला दिया था कि वह उसे प्यार करती है, बल्कि किसलिये प्यार करती है, ऐसा करने का कारण भी स्पष्ट कर दिया था। उसने कहा था कि वह इसलिये उसको प्यार करती है कि सम्पूर्ण रूप में उसे समझती है, इसलिये कि जानती है कि उसे क्या कुछ पसन्द है और जो पसन्द है, वह सब अच्छा है। लेविन को यह पूरी तरह स्पष्ट प्रतीत हुआ। कीटी की मां जब कमरे में दाख़िल हुई, तो वे दोनों एक-दूसरे के पास बैठे हुए फ़्राकों को छांट रहे थे तथा उन पर इस बात की बहस

हो रही थी कि कीटी दुन्याशा को कत्थई रंग का वह फ़ाक देना चाहती थी, जो वह उस दिन पहने थी, जब लेविन ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया था, और लेविन उसे किसी को न देने का आग्रह कर रहा था तथा दुन्याशा को आसमानी रंग का फ़ाक देने को कह रहा था।

"तुम समझते क्यों नहीं? वह श्यामकेशी है और उसे यह फ़ाक जंचेगा नहीं... मैंने ऐसी सभी बातों को ध्यान में रखा है।"

यह जानकर कि लेविन किसलिये आया है, प्रिंसेस कुछ नाराज़गी और कुछ मज़ाक़ में उसपर बिगड़ीं और कपड़े बदलने के लिये घर जाने तथा कीटी के केश-विन्यास में बाधा न डालने को कहा, क्योंकि शार्ल नाम का हेयर-ड्रेसर जल्द ही आनेवाला था।

"वह तो वैसे ही इन पिछले कुछ दिनों में कुछ भी खा-पी नहीं रही तथा उसका चेहरा उतर गया है। तुम अपनी बेवक़ूफ़ी की बातों से उसे और परेशान कर रहे हो," प्रिंसेस ने लेविन से कहा। "जाओ, जाओ, मेहरबानी करो।"

अपराधी और लज्जित-सा, किन्तु शान्त मन से लेविन अपने होटल में लौट आया। उसका भाई, डौली और ओब्लोन्स्की पूरी तरह सजे-धजे हुए उसकी राह देख रहे थे, ताकि देव-प्रतिमा के साथ उसे आशीर्वाद दें। वक़्त बहुत कम था। डौली को अभी घर जाना था, ताकि सुगन्धित तथा घुंघराले बनाये गये बालों वाले बेटे को साथ ले ले। इसी बेटे को देव-प्रतिमा लेकर दुलहन के साथ बग्घी में जाना था। इसके बाद दूल्हे के साथी के लिये बग्घी भेजनी थी और कोज़्निशेव को ले जानेवाली बग्घी को वापस लौटाना था... कुल मिलाकर सभी तरह के जटिल प्रबन्ध करने थे। हां, एक बात निश्चित थी कि देर नहीं करनी चाहिये, क्योंकि साढ़े छः बज चुके थे।

देव-प्रतिमा के साथ आशीर्वाद देने की रस्म कुछ ढंग से पूरी नहीं हुई। ओब्लोन्स्की अपनी पत्नी की बग़ल में हास्यपूर्ण गम्भीर मुद्रा बनाकर खड़ा हो गया, उसने देव-प्रतिमा हाथ में ली, लेविन को पृथ्वी की ओर सिर झुकाने को कहा, दयालु और व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ उसे आशीर्वाद दिया और तीन बार चूमा। डौली ने भी ऐसा ही किया, जल्दी से जाना चाहा और बग्घियों की व्यवस्था के बारे में फिर से गड़बड़-झाले में उलझ गयी।

"तो हम ऐसा करेंगे – तुम हमारी बग्घी में इसे लेने आ जाना और कोज़्निशेव अगर इतनी मेहरबानी करे, तो बग्घी में वहां पहुंचकर उसे वापस भेज दे।"

"मैं ख़ुशी से ऐसा करूंगा।"

"और हम अभी इसके साथ पहुंच जायेंगे। चीज़ें भिजवा दी हैं?" ओब्लोन्स्की ने पूछा।

"हां, भिजवा दी हैं," लेविन ने जवाब दिया और कुज़्मा से अपने पहनने के कपड़े देने को कहा।

(३)

विवाह के लिये रोशनी से जगमगाते गिरजाघर को लोगों की भीड़, विशेषतः नारियां बड़ी संख्या में घेरे थीं। जो लोग भीतर नहीं जा सके थे, वे खिड़कियों के आस-पास जमा थे, रेल-पेल कर रहे थे, झगड़ रहे थे और जंगले में से झांक रहे थे।

पुलिस वाले बीस से अधिक बग्घियों को सड़क पर पार्क करवा चुके थे। पुलिस का अफ़सर पाले की परवाह न करता और अपनी वर्दी की लौ देता हुआ दरवाज़े के पास खड़ा था। बग्घियां अभी भी लगातार आती चली जा रही थीं। सिर पर फूल लगाये तथा पोशाक के लटकते दामन ऊपर उठाये महिलायें या टोपियां अथवा काले टोप उतारे हुए पुरुष गिरजे में दाखिल होते। गिरजे में दोनों झाड़-फ़ानूस और देव-प्रतिमाओं के सामने सभी शमादान जले हुए थे। देव-प्रतिमाओं वाली दीवार की लाल पृष्ठभूमि पर सुनहरी चमक, देव-प्रतिमाओं की सुनहरी नक़्क़ाशी, धूपदानों और शमादानों की चांदी, फ़र्श की सिलें, क़ालीन, गायक-मण्डली के ऊपर सन्त-चित्रोंवाला ध्वज, वेदी की ओर जानेवाली पैड़ियां, पुरानी तथा काली पड़ चुकी पुस्तकें, केसाक और पादरियों के सफ़ेद जाम – सभी कुछ रोशनी में जगमगा रहा था। अच्छे ढंग से गर्माये हुए गिरजे के दायीं ओर फ़्राक कोटों और सफ़ेद टाइयों, वर्दियों और ज़रीदार पोशाकों, मख़मल, साटिन, बालों, फूलों, नंगे कंधों और बांहों तथा लम्बे दस्तानों वाली भीड़ में संयत तथा सजीव बातचीत हो रही थी और गिरजे के ऊंचे गुम्बज से वह अजीब ढंग

से प्रतिध्वनित होती थी। हर बार जैसे ही दरवाज़ा खुलने की चीं-चर्र होती, भीड़ में बातचीत बन्द हो जाती और सभी दूल्हा-दुलहन को देखने की उम्मीद से मुड़कर दरवाज़े की तरफ़ देखते। किन्तु दरवाज़ा दस से अधिक बार खुल चुका था और हर बार या तो देर से आनेवाला कोई मेहमान भीतर आता और दायीं ओर खड़े आमंत्रित अतिथियों में शामिल हो जाता या फिर कोई तमाशबीन औरत होती, जो पुलिस अफ़सर की आंख में धूल झोंककर अथवा उसकी मिन्नत-समाजत करके बायीं ओर खड़े अजनबियों की भीड़ में मिल जाती। सगे-सम्बन्धी और पराये लोग भी राह देखते-देखते तंग आ चुके थे।

शुरू में ऐसा मानते हुए कि वर-वधू किसी भी क्षण आ जायेंगे, इस देरी की तरफ़ किसी ने ध्यान नहीं दिया। इसके बाद बार-बार दरवाज़े की ओर देखने तथा यह कहने लगे कि कहीं कोई बात तो नहीं हो गयी। इसके पश्चात् यह देरी अटपटी मालूम होने लगी और सगे-सम्बन्धी तथा मेहमान यह दिखावा करने लगे कि वे दूल्हे के बारे में नहीं सोच रहे हैं और अपनी बातचीत में व्यस्त हैं।

बड़ा डीकन मानो अपने समय के बहुमूल्य होने की याद दिलाते हुए बेचैनी से खांसता था, जिससे खिड़कियों के शीशे कांप उठते थे। गायक-मण्डली में से कभी तो कोई अपने स्वर को जांचता या ऊब अनुभव करते हुए नाक सिनकता। पादरी लगातार कभी तो अपने सहायक और कभी डीकन को यह जानने के लिये भेजता कि दूल्हा आया या नहीं और ख़ुद बैंगनी रंग का जामा पहने तथा कशीदे वाली पेटी बांधे हुए दूल्हे की प्रतीक्षा में बार-बार बग़ल के दरवाज़ों से बाहर जाता। आख़िर एक महिला ने अपनी घड़ी पर नज़र डालकर कहा – "कुछ भी हो, है यह बड़ी अजीब बात!" और सभी मेहमान बेचैन हो उठे तथा अपना आश्चर्य और असन्तोष प्रकट करने लगे। दूल्हे का साथी यह मालूम करने चला गया कि क्या मामला है। इसी बीच कीटी, जो कभी से सफ़ेद फ़्राक पहने, लम्बा पर्दा डाले तथा सफ़ेद रंग का पुष्प-चक्र लगाये अपनी धर्म-माता और बहन ल्वोवा के साथ अपने घर के हॉल में खड़ी खिड़की से बाहर झांक रही थी और आधे घण्टे से अधिक समय से अपने दूल्हे के साथी से दूल्हे के गिरजे में आने की ख़बर सुनने की बेक़रारी से राह देख रही थी।

दूसरी ओर, लेविन पतलून पहने, किन्तु कोट और वास्कट के बिना, अपने कमरे में इधर-उधर आ-जा रहा था, लगातार दरवाज़े से सिर बाहर निकालकर गलियारे में झांकता था। मगर लेविन जिसकी राह देख रहा था, गलियारे में वह नज़र न आता। लेविन निराश होकर लौटता तथा हाथ झटककर इतमीनान से सिगरेट पीते हुए ओब्लोन्स्की को सम्बोधित करता।

"कभी किसी आदमी ने अपने को ऐसी बेहूदा स्थिति में भी पाया होगा!" वह कहता।

"हां, बेहूदा स्थिति है," ओब्लोन्स्की उसे शान्त करती हुई मुस्कान के साथ जवाब देता। "पर तुम शान्त हो जाओ, अभी आ जायेगा।"

"ख़ाक आ जायेगा!" लेविन दबे-दबे ग़ुस्से से जवाब देता। "और ये नीची काट की बेहूदा वास्कटें! क्या हिमाकत है!" अपनी सिलवटें पड़ी क़मीज़ को देखते हुए वह कहता। "और अगर चीज़ें स्टेशन पर भेज दी गयी होंगी, तो!" वह हताशा से चिल्लाता।

"तब मेरी पहन लेना।"

"बहुत पहले से ही ऐसा कर लेना चाहिये था।"

"अपना मज़ाक़ उड़वाने में क्या तुक है... ज़रा सब्र करो! सब ठीक हो जायेगा!"

बात यह थी कि लेविन ने जब अपनी पोशाक देने को कहा, तो लेविन का बूढ़ा नौकर कुज़्मा फ़्राक कोट, वास्कट और बाक़ी सभी कुछ ले आया।

"और क़मीज़ कहां है!" लेविन ने चिल्लाकर पूछा।

"क़मीज़ आप पहने हुए हैं," कुज़्मा ने शान्त मुस्कान के साथ जवाब दिया।

कुज़्मा को धुली हुई क़मीज़ रखने का ख़्याल नहीं आया और यह हुक्म मिलने पर कि सभी चीज़ें पैक करके श्चेर्बात्स्की परिवार के यहां पहुंचा दी जायें, जहां से नवदम्पति उसी शाम को गांव के लिये रवाना होनेवाले थे, कुज़्मा ने सूट को छोड़कर बाक़ी सभी चीज़ें पैक कीं और पहुंचा दीं। सुबह से पहनी हुई क़मीज़ में सिलवटें पड़ गयी थीं और नीची काट के फ़ैशन वाली वास्कट के साथ उसे पहनना असम्भव था।

श्चेर्बात्स्की परिवार का घर बहुत दूर था और इसलिये वहां से क़मीज़ लाने की बात बेतुकी थी। नौकर को क़मीज़ खरीदने के लिये भेजा गया। उसने लौटकर जवाब दिया कि इतवार होने की वजह से सभी दुकानें बन्द हैं। ओब्लोन्स्की के घर किसी को भेजा, क़मीज़ आ गयी, मगर वह बहुत ही चौड़ी और छोटी थी। आख़िर श्चेर्बात्स्की परिवार के यहां किसी को भेजा गया ताकि वह सामान खोलकर वहां से क़मीज़ ले आये। दूल्हे का गिरजे में इन्तज़ार हो रहा था और वह पिंजरे में बन्द जानवर की तरह कमरे में इधर-उधर आ-जा रहा था, गलियारे में झांक रहा था तथा हताश और बेहद परेशान होते हुए यह याद कर रहा था कि उसने कीटी से क्या कुछ कह दिया था और अब उसके दिमाग़ में कैसे-कैसे ख़्याल आ सकते हैं।

आख़िर बुरी तरह से हांफता हुआ दोषी कुज़्मा क़मीज़ लेकर कमरे में भागा आया।

"यही अच्छा हुआ कि ठीक वक़्त पर पहुंच गया। सामान छकड़े पर लादा जा रहा था," कुज़्मा ने कहा।

तीन मिनट बाद घड़ी पर नज़र डाले बिना, ताकि घाव पर नमक छिड़कनेवाली बात न हो, लेविन गलियारे में से नीचे भाग चला।

"इससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ेगा," ओब्लोन्स्की ने इतमीनान से उसके पीछे-पीछे जाते हुए कहा। "सब ठीक हो जायेगा, सब ठीक हो जायेगा... कह रहा हूं न।"

(४)

"आ गये! वह रहा! कौन-सा? जो अधिक जवान है? और उस बेचारी का तो दम निकला जा रहा है!" भीड़ में यह सुनाई दिया, जब लेविन दरवाज़े के पास दुल्हन से मिलकर उसके साथ गिरजे में दाख़िल हुआ।

ओब्लोन्स्की ने अपनी पत्नी को देर होने का कारण बताया और मेहमान मुस्कराते हुए आपस में खुसर-फुसर करने लगे। लेविन किसी व्यक्ति और किसी चीज़ की तरफ़ ध्यान नहीं दे रहा था, एकटक अपनी दुल्हन को देख रहा था।

सभी यह कह रहे थे कि पिछले कुछ दिनों में कीटी का रूप-रंग काफ़ी फीका पड़ गया है और शादी के दिन वह वैसी अच्छी नहीं लग रही है, जैसी आम दिन लगती थी। किन्तु लेविन को ऐसा नहीं प्रतीत हो रहा था। वह जाली के लम्बे सफ़ेद पर्दे और सफ़ेद फूलों सहित कीटी के ऊंचे केश-विन्यास, घेरदार ऊंचे और खड़े कालर को, जो ख़ास लड़कियों के अन्दाज़ में उसकी लम्बी गर्दन को अगल-बग़ल से ढके हुए तथा सामने से खोले था, और आश्चर्यजनक रूप से पतली कमर को देख रहा था तथा उसे लग रहा था कि वह पहले किसी भी समय की तुलना में आज अधिक सुन्दर थी। सो भी इसलिये नहीं कि ये फूल, यह जाली का पर्दा और पेरिस से मंगवाया गया फ़ाक उसके सौन्दर्य को कुछ बढ़ा रहे थे, बल्कि इसलिये कि इस बड़ी सज-धज के बावजूद उसके प्यारे चेहरे, उसकी दृष्टि और होंठों पर भोली-भाली सचाई का वही भाव झलक रहा था।

"मैं सोचने लगी थी कि तुम भाग गये हो," कीटी ने कहा और उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

"मेरे साथ जो हुआ वह इतना बेहूदा था कि बताते हुए शर्म आती है!" उसने लज्जारुण होते हुए कहा और अपने पास आनेवाले कोज़्निशेव की तरफ़ उसे ध्यान देना पड़ा।

"तुम्हारा यह क़मीज़ वाला क़िस्सा भी ख़ूब रहा!" कोज़्निशेव ने सिर हिलाते और मुस्कराते हुए कहा।

"हां, हां," लेविन ने यह न समझते हुए कि उससे क्या कहा जा रहा है, उत्तर दिया।

"सुनो, कोस्त्या, अब एक महत्त्वपूर्ण सवाल का हल ढूंढ़ना चाहिये," ओब्लोन्स्की ने बनावटी तौर पर सहमी-सी सूरत बनाते हुए कहा। "अब तुम पूरी तरह उसकी महत्ता को समझने की स्थिति में हो। मुझसे पूछा जा रहा है कि इस्तेमाल की हुई मोमबत्तियां जलाई जायें या नयी, बिना इस्तेमाल की हुई? फ़र्क़ दस रूबल का है," उसने इतना और जोड़ते हुए होंठों पर मुस्कान चस्पां कर ली। "मैंने इसका फ़ैसला तो कर लिया है, मगर डरता हूं कि तुम सहमत नहीं होगे।"

लेविन समझ गया कि यह मज़ाक़ है, मगर मुस्करा नहीं सका।

"तो क्या किया जायें? इस्तेमाल की हुई या नई? यह सवाल है।"

"हां, हां! नई।"

"मैं बहुत खुश हूं। मामला तय हो गया!" ओब्लोन्स्की ने मुस्कराकर कहा। "फिर भी इस स्थिति में लोग कैसे बुद्धू-से हो जाते हैं," उसने चीरिकोव से कहा, जब लेविन खोयी-खोयी नज़र से उसकी तरफ़ देखकर दुल्हन की ओर बढ़ गया।

"देखो, कीटी, क़ालीन पर तुम ही पहले खड़ी होना," काउंटेस नोर्डस्टोन ने पास आकर कहा। "खूब आदमी हैं आप!" उसने लेविन को सम्बोधित किया।

"क्यों, घबरा तो नहीं रही हो?" बूढ़ी मौसी मार्या द्मीत्रियेव्ना ने पूछा।

"तुम्हें ठण्ड तो नहीं लग रही? तुम्हारे चेहरे का रंग उड़ा हुआ है। रुको, ज़रा भुको तो!" कीटी की बहन ल्वोवा ने कहा और अपने गदराये सुन्दर हाथों को ऊपर उठाकर मुस्कराते हुए कीटी के सिर पर फूलों को ठीक कर दिया।

डौली क़रीब आई, उसने कुछ कहना चाहा, मगर कह न सकी, रो पड़ी और अस्वाभाविक ढंग से हंस दी।

कीटी भी लेविन की तरह सभी को बेध्यान-सी देख रही थी। उससे जो कुछ भी कहा या पूछा जाता था, उसके जवाब में वह सुख की द्योतक मुस्कान ही, जो अब उसके लिये इतनी स्वाभाविक थी, होंठों पर ले आती थी।

इसी बीच गिरजे के लोगों ने अपने जामे-चोग़े पहन लिये और डीकन को साथ लेकर पादरी डेस्क के पास, जो दरवाज़े के पास था, आ गया। पादरी ने लेविन को सम्बोधित करके कुछ कहा। लेविन को यह सुनाई नहीं दिया।

"दुल्हन का हाथ थामकर आगे बढ़िये," दूल्हे के साथी ने कहा।

लेविन बहुत देर तक यह नहीं समझ पाया कि उससे क्या अपेक्षा की जा रही है। देर तक लोग उसकी भूल सुधारते रहे और आख़िर निराश होकर उन्होंने इस प्रयास को त्यागना चाहा – कारण कि वह दुल्हन को या तो ठीक हाथ से नहीं पकड़ता था या फिर उसका ठीक

हाथ नहीं पकड़ता – और तभी वह यह समझ गया कि अपनी स्थिति बदले बिना उसे अपने दायें हाथ से दुल्हन का दायां हाथ ही थामना है। अन्त में जब उसने दुल्हन का हाथ वैसे ही थाम लिया, जैसे थामना चाहिये था, तो पादरी उनसे कुछ क़दम आगे बढ़कर डेस्क के पास रुक गया। खुसर-फुसर की भनक और महिलाओं की पोशाकों के लटकते दामनों की सरसराहट करती हुई सगे-सम्बन्धियों और परिचितों की भीड़ उनके पीछे-पीछे बढ़ने लगी। किसी ने झुककर दुल्हन की पोशाक का लटकता दामन ठीक किया। गिरजाघर में ऐसी ख़ामोशी छा गयी कि मोमबत्तियों से टपकती हुई मोम की बूंदों की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी।

सिर पर ऊंची टोपी पहने नाटे-से बूढ़े पादरी ने, जिसके सफ़ेद बालों की सुन्दर लटें दोनों ओर कानों के पीछे सिमटी हुई थीं, पीठ पर सुनहरी सलीब वाले भारी रुपहले जामे के नीचे से अपने बुढ़ाये हुए छोटे-छोटे हाथ बाहर निकाले और डेस्क पर कुछ उलटने-पलटने लगा।

ओब्लोन्स्की सावधानी से उसके पास गया, फुसफुसाकर कुछ कहा, लेविन को आंख मारकर कुछ संकेत किया और अपनी जगह वापस चला गया।

पादरी ने फूलों से सजी और बायें हाथ में टेढ़ी पकड़ी हुई, ताकि उनसे मोम की बूंदें धीरे-धीरे गिरें, दो मोमबत्तियां जलायीं और वर-वधू की ओर मुंह किया। पादरी वही था, जिसने लेविन से पाप-स्वीकृति करवायी थी। उसने थकी-थकी और उदास दृष्टि से वर-वधू की ओर देखा, गहरी सांस ली और जामे के नीचे से दायां हाथ निकाल-कर दूल्हे को आशीर्वाद दिया और इसी भांति, सावधानीपूर्ण स्नेह की झलक के साथ, कीटी के झुके हुए सिर पर अपनी उंगलियां रखीं। इसके बाद उसने इन दोनों को मोमबत्तियां पकड़ा दीं और धूपदान हाथ में लेकर इनसे दूर हट गया।

"क्या यह हक़ीक़त है?" लेविन ने सोचा और मुड़कर दुल्हन की ओर देखा। कुछ ऊंचाई से उसे कीटी की आकृति की झलक मिली और उसके होंठों तथा बरौनियों के तनिक हिलने-डुलने से उसने जान लिया कि कीटी ने उसकी नज़र को भांप लिया है। कीटी ने मुड़कर

नहीं देखा, मगर उसका घेरदार ऊंचा कालर हिला-डुला और उसके छोटे-से गुलाबी कान तक ऊंचा उठ गया। उसने देखा कि गहरी सांस कीटी की छाती में ही दबकर रह गयी और लम्बा दस्ताना पहने तथा मोमबत्ती थामे छोटा-सा हाथ कांप गया।

क़मीज़ को लेकर सारी परेशानी, देर, जान-पहचान के लोगों और सगे-सम्बन्धियों से हुई बातचीत, उनकी अप्रसन्नता, उसकी हास्यास्पद स्थिति – यह सब कुछ अचानक ग़ायब हो गया और उसे ख़ुशी तथा भय की अनुभूति हुई।

रुपहला चोग़ा पहने ऊंचे क़द का सुन्दर बड़ा डीकन, जिसके घुंघराले बाल सिर के दोनों ओर संवरे हुए थे, तेज़ी से आगे बढ़ा और अभ्यस्त ढंग से लम्बे-से रिबन को अपनी दो उंगलियों पर उठाकर पादरी के सामने पेश किया।

"हम पर कृपा करें, देव," हवा को थरथराती हुई एक के बाद एक गम्भीर आवाज़ें धीरे-धीरे गिरजे में प्रतिध्वनित हो उठीं।

"भला हो हमारे भगवान का, अब, आगे और चिरकाल तक!" बूढ़े पादरी ने डेस्क पर अभी कुछ उलटते-पलटते इसके जवाब में धीमे और गाने के अन्दाज़ में कहा। और खिड़कियों से मेहराबदार छत तक पूरे गिरजे को गुंजाता हुआ अदृश्य सहगायकों द्वारा गाया जानेवाला सहगान पूरे विस्तार में फैला, ज़ोर से उभरा, क्षण भर को रुका और धीरे-धीरे लुप्त हो गया।

सदा की भांति दूसरी दुनिया और मुक्ति, उच्च धर्म-परिषद और सम्राट के बारे में प्रार्थनायें की गयीं, प्रभु-सेवकों कोन्स्तान्तीन और येकातेरीना, जिनकी उस दिन शादी हो रही थी, के सम्बन्ध में भी प्रार्थना की गयी।

"हे प्रभु आप से अनुरोध है, आप इन्हें पूर्ण प्रेम, शान्ति और अपनी सहायता दें," सारा गिरजा बड़े डीकन की आवाज़ से भरपूर-सा प्रतीत हो रहा था।

लेविन ये शब्द सुन रहा था और आश्चर्यचकित हो रहा था। "कैसे इन्होंने यह अनुमान लगा लिया कि सहायता, हां सहायता की आवश्यकता है?" कुछ ही समय पहले के अपने सारे भय और सन्देहों को स्मरण करते हुए वह सोच रहा था। "मैं क्या जानता हूं? बिना

मदद के मैं क्या कर सकता हूं इस भयानक मामले में?" वह सोच रहा था। "हां, अब मुझे सहायता की ही आवश्यकता है।"

डीकन ने जब प्रार्थना समाप्त कर ली, तो पादरी ने पुस्तक हाथ में लेकर वर-वधू को सम्बोधित किया –

"अजर-अमर ईश्वर, आपने बिछुड़े हुओं को मिलाया," अपने धीमे और गाने के से स्वर में वह पढ़ रहा था, "और इनके लिये प्यार का अटूट बन्धन निर्धारित किया है।"

"'अजर-अमर ईश्वर, आपने बिछुड़े हुओं को मिलाया और इनके प्यार का अटूट बन्धन निर्धारित किया है,' कितने गहन अर्थ से परिपूर्ण हैं ये शब्द और कितने अनुरूप हैं उस भावना के, जो इस क्षण अनुभव हो रही है!" लेविन सोच रहा था। "क्या उसे भी मेरी ही जैसी अनुभूति हो रही है?"

लेविन ने मुड़कर देखा और कीटी से उसकी नज़रें मिलीं।

कीटी की आंखों की भावाभिव्यक्ति से उसने यह निष्कर्ष निकाला कि उसे भी उसके समान ही अनुभूति हो रही है। मगर यह सही नहीं था। वह प्रार्थना के शब्दों को लगभग नहीं समझती थी और विवाह की रस्म के समय उन्हें सुन भी नहीं रही थी। वह इन शब्दों को सुन और समझ नहीं सकती थी – इतनी प्रबल थी वह एक भावना, जो उसकी आत्मा में पूरी तरह व्याप्त थी और अधिकाधिक तीव्र होती जा रही थी। यह भावना थी उस चीज़ की पूर्ण सफलता की ख़ुशी की, जिसने डेढ़ महीना पहले उसकी आत्मा में जन्म लिया था और जो इन छः सप्ताहों के दौरान उसे प्रसन्नता और यातना देती रही थी। उस दिन, जब वह कत्थई रंग का फ़्राक पहने हुए अपने अर्बात सड़क वाले घर के हॉल में चुपचाप उसके पास आई थी और अपने को उसे समर्पित कर दिया था – उस दिन, उस घड़ी उसकी आत्मा में पहले के जीवन से उसका पूरा नाता टूट गया था और सर्वथा दूसरे तथा उसके लिये सर्वथा नये जीवन का श्रीगणेश हुआ था, किन्तु वास्तव में पुराना जीवन ही जारी रहा था। ये छः सप्ताह उसके लिये सबसे अधिक सुख और सर्वाधिक यातना का समय रहे थे। उसका पूरा जीवन, उसकी सारी इच्छायें और आशायें उसके लिये अभी तक अनबूझ इस एक व्यक्ति पर केन्द्रित रही थीं, जिसके साथ उसे वह भावना जोड़ रही

थी, जो इस व्यक्ति से भी अधिक अनबूझ थी और जो कभी उसे उसके निकट ले जाती थी और कभी दूर हटाती थी, तथा साथ ही वह पहले के जीवन की परिस्थितियों में रहती जा रही थी। पुरानी ज़िन्दगी जीते हुए खुद अपने से, अपने अतीत की सभी चीज़ों, सभी आदतों, सभी लोगों के प्रति, जो उसे प्यार करते थे और करते हैं, अपनी पूर्ण अदम्य उदासीनता से, इस उदासीनता के कारण दुखी मां तथा प्यारे और स्नेहपूर्ण पिता के प्रति, जिन्हें वह पहले सबसे अधिक प्यार करती थी, अपनी इस उदासीनता से वह दहल उठती थी। अपनी इस उदासीनता से कभी वह कांप उठती, तो कभी उस कारण से खुश होती, जिससे यह उदासीनता आई थी। इस व्यक्ति के बिना वह न तो कुछ सोच और न चाह सकती थी। किन्तु यह नया जीवन अभी अस्तित्व में नहीं आया था और वह अपने लिये उसकी स्पष्ट कल्पना भी नहीं कर सकती थी। केवल प्रतीक्षा ही थी – नये और अज्ञात का भय और खुशी ही थी। बस, कुछ क्षण बाद यह प्रतीक्षा और अस्पष्टता, पश्चाताप तथा पहले जीवन को तिलांजली – यह सब समाप्त हो जायेगा तथा नया जीवन आरम्भ होगा। अपनी अस्पष्टता के कारण इस नये का भयावह होना अनिवार्य था। किन्तु भयावह हो या न हो – वह तो छः हफ़्ते पहले ही उसकी आत्मा में घट चुका था। अब उस चीज़ को केवल धार्मिक पुष्टि प्रदान की जा रही थी, जो बहुत पहले उसकी आत्मा में हो चुकी थी।

फिर से डेस्क के पास आकर पादरी ने कठिनाई से कीटी की छोटी-सी अंगूठी हाथ में पकड़ी, लेविन को अपना हाथ बढ़ाने को कहा, उसकी उंगली के सिरे पर उसे पहनाया और कहा – "प्रभु-सेवक कोन्स्तान्तीन की प्रभु-सेविका येकातेरीना से शादी होती है," तथा लेविन की बड़ी अंगूठी को कीटी की गुलाबी, छोटी और दुर्बल होने के कारण दयनीय उंगली में पहनाकर पादरी ने फिर से यही शब्द दोहराये।

वर-वधू ने कई बार यह अनुमान लगाने का प्रयास किया कि उनसे क्या करने की अपेक्षा की जाती है और हर बार उनसे भूल हुई तथा पादरी ने उनकी भूल सुधारी। आखिर वह करने के बाद, जो अपेक्षित था, और अंगूठियों से उनके ऊपर सलीब बनाकर उसने फिर से कीटी

को बड़ी और लेविन को छोटी अंगूठी दे दी। फिर से उन दोनों ने मामला गड़बड़ कर दिया, दो बार अंगूठियों को एक-दूसरे को दिया, फिर भी वह नहीं हुआ, जो होना चाहिये था।

डौली, चीरिकोव और ओब्लोन्स्की उन्हें सही बात सुझाने के लिये आगे बढ़ आये। इससे मामला और भी गड़बड़ा गया, खुसर-फुसर होने लगी, मुस्कानें उभरीं। किन्तु वर-वधू के चेहरे का गम्भीर और मधुर भाव नहीं बदला। इसके विपरीत, हाथों के गड़बड़ाने से वे पहले की तुलना में और भी अधिक गम्भीर और संजीदा दिख रहे थे और ओब्लोन्स्की ने जिस मुस्कान के साथ फुसफुसाकर उनसे यह कहा कि वे अब अपनी-अपनी अंगूठियां पहन लें, वह अनचाहे ही उसके होंठों से ग़ायब होकर रह गयी। उसने अनुभव किया कि किसी भी तरह की मुस्कान से उनके दिलों को ठेस लगेगी।

लेविन अधिकाधिक यह अनुभव कर रहा था कि विवाह के बारे में उसके सारे विचार, उसकी सारी कल्पनायें कि वह अपने जीवन को कैसा रूप देगा – यह सब कुछ बचकाना बातें थीं और यह कुछ ऐसी चीज़ है, जिसे वह अब तक नहीं समझता था तथा अब और भी कम समझता है, यद्यपि यह हो उसी के साथ रहा है। उसे अपना गला अधिकाधिक रुंधता प्रतीत हुआ और उसकी आखों में बरबस आंसू छलछला आये।

(५)

सारा मास्को गिरजे में आया हुआ था, रिश्तेदार और जान-पहचान के सभी लोग। रोशनी से जगमगाते गिरजे में विवाह की रस्म के वक़्त सजी-धजी महिलाओं और लड़कियों, सफ़ेद टाइयां, फ़्राक कोट तथा वर्दियां पहने पुरुषों के हलक़े में लगातार धीमी-धीमी बातचीत चलती रही, जिसे मुख्यतः मर्द ही जारी रख रहे थे। इसी बीच नारियां सभी धार्मिक रस्मों को देखने में डूबी हुई थीं, जिनमें उनकी हमेशा गहरी रुचि रहती है।

लोगों के इस घेरे में दुल्हन की दो बहनें – डौली और विदेश से आयी शान्त सुन्दरी ल्वोवा – उसके निकटतम् खड़ी थीं।

"शादी के मौक़े पर मारी बिल्कुल काली-सी लगनेवाली बैंगनी पोशाक क्यों पहने है?" कोर्सून्स्काया ने पूछा।

"उसके चेहरे के रंग के लिये यही ठीक है..." द्रुबेत्स्काया ने उत्तर दिया। "मुझे हैरानी हो रही है कि वे शाम के वक़्त शादी क्यों कर रहे हैं। ऐसा तो व्यापारियों-सेठों के यहां होता है..."

"अधिक सुन्दर लगता है। मेरी शादी भी शाम को हुई थी," कोर्सून्स्काया ने उत्तर दिया और यह याद करके आह भरी कि उस दिन वह कितनी प्यारी लग रही थी, उसका दीवाना पति कितना हास्यास्पद था और अब कैसे सब कुछ बदल गया है।

"कहते हैं कि जो दस से अधिक बार दूल्हे का साथी बनता है, उसकी कभी शादी नहीं होती। मैं दसवीं बार ऐसा करना चाहता था, ताकि मेरे लिये ऐसा सुनिश्चित हो जाता, मगर जगह ख़ाली नहीं थी," काउंट सिन्याविन प्यारी-सी प्रिंसेस चारस्काया से कह रहा था, जो उसपर उम्मीद लगाये थी।

चारस्काया ने उत्तर में केवल मुस्करा दी। वह यह सोचती हुई कीटी की तरफ़ देख रही थी कि कब कीटी की तरह काउंट सिन्याविन की बग़ल में खड़ी होगी और कैसे तब उसे उसका यह मज़ाक़ याद दिलायेगी।

युवा श्चेर्बात्स्की बूढ़ी दरबारी परिचारिका निकोलायेवा से कह रहा था कि वह कीटी के पराये बालों के जूड़े पर सेहरा बांधना चाहता है, ताकि वह सौभाग्यशालिनी हो।

"उसे पराये बालों का जूड़ा सिर पर नहीं रखना चाहिये था," निकोलायेवा ने उत्तर दिया, जिसने यह निर्णय कर रखा था कि अगर वह बूढ़ा विधुर, जिसे वह फांसना चाह रही थी, उससे शादी करेगा, तो शादी बहुत ही सीधी-सादी होगी। "मुझे ऐसी तड़क-भड़क पसन्द नहीं है।"

कोज़्निशेव दार्या द्मीत्रियेव्ना से बात कर रहा था और मज़ाक़ करते हुए उसे यह यक़ीन दिला रहा था कि शादी के फ़ौरन बाद नवदम्पति के चले जाने की परम्परा इसलिये फैलती जा रही है कि उन्हें हमेशा कुछ शर्म महसूस होती है।

"आपका भाई गर्व कर सकता है। वह एक अजूबे-सी मोहिनी है। मेरे ख़्याल में आपको ईर्ष्या हो रही होगी?"

"मेरे लिये यह बात पुरानी हो चुकी है, दार्या द्मीत्रियेव्ना," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया और उसका चेहरा अप्रत्याशित ही उदास और गम्भीर हो गया।

ओब्लोन्स्की अपनी साली को तलाक़ के बारे में चुटकुला सुना रहा था।

"उसके सिर पर पुष्प-चक्र को ठीक करना चाहिये," उसकी बात पर कान न देते हुए उसने कहा।

"कितने अफ़सोस की बात है कि पिछले दिनों में कीटी का रंग-रूप इतना बिगड़ गया है," काउंटेस नोर्डस्टोन कीटी की बड़ी बहन ल्वोवा से कह रही थी। "फिर भी लेविन उसकी जूती की नोक के बराबर नहीं है। ठीक है न?"

"नहीं, वह मुझे बहुत पसन्द है। इसलिये नहीं कि वह मेरा भावी beau-frère* है," ल्वोवा ने उत्तर दिया। "इसलिये कि वह कैसे अच्छे ढंग से अपने को पेश कर रहा है! ऐसी स्थिति में अपना सन्तुलन बनाये रखना, हास्यास्पद न होना, बड़ा मुश्किल होता है। और वह न तो हास्यास्पद है, न तनाव की स्थिति में है, नज़र आ रहा है कि भाव-विह्वल है।"

"लगता है कि आप ऐसी ही आशा कर रही थीं।"

"लगभग। कीटी हमेशा ही उसे प्यार करती रही है।"

"देखेंगे कि इनमें से कौन पहले क़ालीन पर पांव रखता है। मैंने कीटी को ऐसा करने की सलाह दी है।"

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," ल्वोवा ने जवाब दिया। "हम सभी पति की बात माननेवाली पत्नियां हैं, यह हमारे ख़ून में है।"

"लेकिन मैं तो जान-बूझकर वसीली से पहले क़ालीन पर खड़ी हुई थी। और डौली आप?"

डौली इनके क़रीब खड़ी थी, इनकी बातें सुन रही थी, मगर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बहुत द्रवित थी। आंसू उसकी पलकों तक आये हुए थे और रोये बिना वह कुछ भी न कह पाती। वह कीटी और लेविन के लिये ख़ुश हो रही थी और मन ही मन अपनी शादी

---

* बहनोई। (फ़्रांसीसी)

की ओर लौटते हुए खिले चेहरे वाले ओब्लोन्स्की को देख रही थी, वर्त्तमान का सब कुछ भूलकर अपने पहले, निश्छल प्रेम को ही याद कर रही थी। उसे केवल अपनी ही नहीं, बल्कि अपनी नज़दीकी और जान-पहचान की सभी नारियों की याद आई। उसे उनके जीवन के एकमात्र उस समारोही समय की याद आई, जब कीटी की भांति वे भी हृदय में प्यार, आशा और भय लिये हुए वेदी पर खड़ी थीं, अतीत से नाता तोड़ रही थीं और रहस्यपूर्ण भविष्य से अपना सम्बन्ध जोड़ रही थीं। इस तरह की जिन दुल्हनों का उसे स्मरण हो आया, उनमें उसकी प्यारी आन्ना भी थी, जिसके सम्भव तलाक़ की तफ़सीलें उसे कुछ समय पहले सुनने को मिली थीं। वह भी सफ़ेद रंग के फूलों से सजी और जाली का पर्दा डाले ऐसी मासूम और निर्मल-सी खड़ी थी। लेकिन अब?

"बहुत अजीब बात है," वह बुदबुदायी।

केवल कीटी की बहनें, सहेलियां और रिश्तेदारिनें ही धार्मिक रस्म की हर तफ़सील को बहुत ध्यान से नहीं देख रही थीं, परायी तमाशबीन औरतें भी बड़ी उत्तेजित होकर तथा सांस रोककर सब कुछ देख रही थीं, किसी भी गतिविधि, वर या वधू के चेहरे के किसी भी भाव को नज़र से ओझल नहीं होने देना चाहती थीं और मज़ाक़ तथा इधर-उधर की टीका-टिप्पणियां करनेवाले उदासीन पुरुषों की बातों के न केवल जवाब नहीं देती थीं, बल्कि अक्सर उन्हें सुनती ही नहीं थीं।

"वह इतनी रोयी हुई क्यों है? क्या इच्छा के विरुद्ध शादी की जा रही है?"

"ऐसे सुन्दर जवान के साथ इच्छा के विरुद्ध शादी का क्या सवाल हो सकता है? कोई प्रिंस है क्या?"

"सफ़ेद साटिन की पोशाक पहने हुए क्या बहन है? सुनो तो, यह डीकन कैसे चीख़ रहा है – 'पति की बात मानना!'"

"यह चुदोव्स्की मठ की भजन-मण्डली है क्या?"

"उच्च धर्म-परिषद की।"

"मैंने नौकर से बात की थी। उसने बताया कि अभी अपनी जागीर पर उसे ले जायेगा। कहते हैं कि बड़ा ही मालदार है। इसीलिये तो इससे शादी की है।"

"नहीं, अच्छी जोड़ी है।"

"मार्या व्लास्येव्ना, आप मुझसे बहस कर रही थीं कि बुकरम वाले फूले घाघरों का रिवाज है। उसकी तरफ़ देखिये, वह जो गहरे भूरे रंग वाला फ़ाक पहने है। कहते हैं किसी राजदूत की पत्नी है... उसका घाघरा फूलता नहीं है..."

"दुल्हन तो कितनी प्यारी है, जिबह करने के लिये सजाई गयी भेड़ की तरह! कोई कुछ भी क्यों न कहे, हमें अपनी इस बहन के लिये अफ़सोस हुए बिना नहीं रह सकता।"

गिरजे के दरवाज़े से घुस आनेवाली औरतों की भीड़ में कुछ इस तरह की बातें हो रही थीं।

(६)

जब अंगूठियां बदलने की रस्म पूरी हो गयी, तो गिरजे के एक कर्मचारी ने गिरजे के मध्य में डेस्क के सामने गुलाबी रंग के रेशमी कपड़े का एक टुकड़ा बिछा दिया। भजन-मण्डली ने बड़ी दक्षता से एक जटिल भजन गाना आरम्भ किया, जिसमें मन्द और तार सप्तक के स्वर एक-दूसरे के बाद उभरते थे। पादरी ने पीछे मुड़कर वर-वधू को बिछे हुए गुलाबी रेशमी कपड़े की ओर संकेत किया। बेशक इन दोनों ने इस रस्म के बारे में अक्सर और बहुत अधिक सुना था कि जो पहले क़ालीन पर पांव रखेगा, वही परिवार का मुखिया होगा, फिर भी इसकी ओर कुछ क़दम बढ़ाते हुए न तो कीटी और न लेविन ने ही इस चीज़ की तरफ़ कोई ध्यान दिया। उन्होंने ऊंची टीका-टिप्पणियां और इस बारे में बहस भी नहीं सुनी कि कुछ के मुताबिक़ लेविन ने क़ालीन पर पहले क़दम रखा और दूसरों के मतानुसार दोनों ने एक साथ ऐसा किया।

एक-दूसरे के साथ शादी के बन्धन में बंधने की उनकी इच्छा तथा यह कि किसी अन्य को तो उन्होंने ऐसा वचन नहीं दिया और ख़ुद अपने को अजीब-से सुनाई देनेवाले उत्तरों के बाद नयी प्रार्थना शुरू हुई। कीटी प्रार्थना के शब्दों का भाव समझने की उत्सुकता से उन्हें सुन रही थी, मगर समझ नहीं पाई। जैसे-जैसे यह रस्म आगे

बढ़ती जाती थी, समारोही वातावरण और उल्लास की भावना उसकी आत्मा को अधिकाधिक अभिभूत करती जाती थी और उसके लिये ध्यान को केन्द्रित करना कठिन होता जा रहा था।

प्रार्थना में कहा जा रहा था – "योनि के फल के लाभ के लिये वे पवित्र जीवन व्यतीत करें और इन्हें बेटे-बेटियों का सुख मिले।" प्रार्थना में इस बात का भी उल्लेख किया गया कि नारी को आदम की पसली से बनाया गया है और "इसलिये पुरुष अपने मां-बाप को छोड़कर अपनी पत्नी से चिपक जायेगा, दो तन एक प्राण हो जायेंगे" तथा "यह एक महान रहस्य" है। आराधना की जा रही थी कि प्रभु इन्हें सन्तान-सुख दें और वैसे ही इनपर कृपा करें, जैसे उन्होंने इसहाक और रेबेका, यूसुफ़, मूसा और ज़िप्पोराह पर की थी तथा ये अपने बच्चों के बच्चे देखें। "यह सब कुछ बहुत अद्भुत है," इन शब्दों को सुनते हुए कीटी सोच रही थी, "इससे भिन्न कुछ हो भी नहीं सकता," और ख़ुशीभरी मुस्कान, जिसने अपने आप ही उसकी ओर देखनेवाले दूसरे लोगों को भी प्रभावित किया, उसके चमकते चेहरे पर खिल उठी।

"पहन लीजिये!" जब पादरी ने उन्हें सेहरे पहनाये, तो लोगों के परामर्श सुनाई दिये और श्चेर्बात्स्की तीन बटनों वाले दस्ताने में कांपते हाथ से कीटी के सिर के काफ़ी ऊपर सेहरा थामे रहा।

"पहन लीजिये!" कीटी मुस्कराते हुए फुसफुसायी।

लेविन ने मुड़कर कीटी की तरफ़ देखा और ख़ुशी की उस चमक से चकित रह गया, जो कीटी के चेहरे पर दिखाई दे रही थी और इस भावना ने अनचाहे ही उसे वशीभूत कर लिया। कीटी की भांति वह भी प्रसन्नता और उल्लास से तरंगित हो गया।

इन दोनों को ईसा के शिष्य का संदेश और आख़िरी पंक्तियों के साथ बड़े डीकन की आवाज़ की गूंज सुनना, जिसकी पराये लोग बड़ी बेसब्री से राह देख रहे थे, बड़ा अच्छा लगा। चपटे प्याले से पानी में मिली गुनगुनी लाल सुरा पीना बहुत रुचा और इससे भी ज़्यादा मज़ा तब आया, जब पादरी ने अपने चोग़े को पीछे हटाकर उनके हाथों को अपने हाथ में लिया और भारी आवाज़ में गायी जानेवाली इस पंक्ति "ईसाया ख़ुशी मनाओ" के साथ इन्हें डेस्क के गिर्द चक्कर

दिलवाने लगा। सेहरे उठाये हुए श्चेर्बात्स्की और चीरिकोव दुल्हन के लटकते दामन में उलझते और किसी कारणवश मुस्कराते तथा खुश होते हुए कभी पीछे रह जाते और कभी पादरी के रुक जाने पर वर-वधू से टकरा जाते। खुशी की लौ ने, जो कीटी के अन्तर में जल उठी थी, गिरजे में उपस्थित सभी लोगों को खुशी का यह रंग प्रदान कर दिया। लेविन को लगा कि उसकी भांति पादरी और डीकन भी मुस्कराना चाहते हैं।

इन दोनों के सिरों पर से सेहरे उतारकर पादरी ने अन्तिम प्रार्थना पढ़ी और युवा दम्पति को बधाई दी। लेविन ने कीटी की ओर देखा। आज तक कभी भी उसे वह ऐसी नहीं लगी थी। सौभाग्य की उस कान्ति से, जो उसके चेहरे पर झलक रही थी, वह बहुत सुन्दर लग रही थी। लेविन का उससे कुछ कहने को मन हुआ, मगर उसे मालूम नहीं था कि रस्म पूरी हो चुकी या नहीं। पादरी ने उसकी यह मुश्किल हल कर दी। अपने दयालु मुंह पर मुस्कान लाकर उसने धीमे-से कहा — "पत्नी को चूमिये और आप पति को," तथा उनके हाथों से मोमबत्तियां ले लीं।

लेविन ने कीटी के मुस्कराते होंठों को सावधानी से चूमा, उसकी ओर अपनी बांह बढ़ा दी और एक नयी तथा अजीब-सी निकटता अनुभव करते हुए गिरजे से बाहर चल दिया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था, वह विश्वास करने में असमर्थ था कि यह सब सत्य है। उनकी चकित और झेंपती नज़रों के मिलने पर ही उसे इसका विश्वास हुआ, क्योंकि उसने अनुभव किया कि वे दोनों एक हो चुके हैं।

रात के खाने के बाद ये दोनों गांव के लिये रवाना हो गये।

(७)

आन्ना और व्रोन्स्की तीन महीनों से यूरोप-यात्रा कर रहे थे। वे वेनिस, रोम और नेपल्स हो आये थे और कुछ समय पहले इटली के एक छोटे-से शहर में पहुंचे, जहां कुछ अर्से तक रहना चाहते थे।

बहुत सुन्दर-सा मैनेजर, जिसके तेल लगे घने बालों की मांग गुद्दी से शुरू होती थी, जो फ़्राक कोट तथा चौड़ी, सफ़ेद लॉन क़मीज़

पहने था और जिसके गोल पेट पर सजावटी कुण्डल सहित ज़ंजीर लटक रही थी, जेबों में हाथ डाले अपने सामने खड़े हुए महाशय को तिरस्कार-पूर्वक आंखें सिकोड़कर और कड़ाई से जवाब दे रहा था। प्रवेश-द्वार के दूसरी ओर ज़ीने के पास से पैरों की आहट पाकर बड़ा वेटर उधर मुड़ा और अपने होटल के सबसे अच्छे कमरे किराये पर लेनेवाले रूसी काउंट को देखकर आदरपूर्वक जेब से हाथ बाहर निकाल लिये और सिर झुकाकर यह बताया कि सन्देशवाहक आ चुका है और मकान किराये पर लेने का मामला तय हो गया है। दलाल क़रारनामे पर हस्ताक्षर करने को तैयार था।

"अच्छा! मैं बहुत खुश हूं," व्रोन्स्की ने कहा। "श्रीमती कमरे में हैं या नहीं?"

"वे घूमने गयी थीं, मगर अब लौट आयी हैं," मैनेजर ने जवाब दिया।

व्रोन्स्की ने बड़े किनारों वाला नरम-सा टोप सिर पर से उतारा और पसीने से तर माथे तथा आधे कानों को ढकते, पीछे को संवारे हुए और इस तरह उसकी चांद को छिपानेवाले बालों को रूमाल से पोंछा। अभी तक वहां खड़े और उसकी ओर देखते हुए महाशय पर बेख़्याली से नज़र डालकर उसने जाना चाहा।

"ये सज्जन रूसी हैं और आपके बारे में पूछ रहे थे," मैनेजर ने कहा।

परिचितों से कहीं भी चैन नहीं मिलता, इस झल्लाहट तथा एक ही ढर्रे की ज़िन्दगी में कुछ दिलचस्पी लाने की मिली-जुली भावना से व्रोन्स्की ने कुछ दूर हटकर खड़े हो गये महाशय को एक बार फिर ग़ौर से देखा और एक साथ ही दोनों की आंखें चमक उठीं।

"गोलेनीश्चेव!"

"व्रोन्स्की!"

सचमुच ही यह शाही सैनिक स्कूल के ज़माने का व्रोन्स्की का साथी गोलेनीश्चेव था। स्कूल के दिनों में गोलेनीश्चेव उदारतावादी था, कोई नागरिक पद लेकर उसने स्कूल छोड़ दिया और कहीं भी काम नहीं करता था। स्कूल छोड़ने के बाद दोनों साथी एक-दूसरे से बिल्कुल बिछुड़ गये और बाद में केवल एक बार ही उनकी मुलाक़ात हुई।

उस मुलाक़ात के वक़्त व्रोन्स्की यह समझ गया कि गोलेनीश्चेव ने अपने लिये कोई उच्च बौद्धिक उदारतावादी गतिविधि चुन ली है और इसके परिणामस्वरूप वह व्रोन्स्की के कार्य-कलापों तथा व्यवसाय को तिरस्कार की दृष्टि से देखना चाहता था। इसलिये व्रोन्स्की ने भेंट के समय गोलेनीश्चेव के प्रति वह रूखा और गर्वीला रुख अपनाया, जो वह अपनाने में समर्थ था और जिसका भाव यह था – "आपको मेरा जीवन-ढंग पसन्द है या नहीं, मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अगर आप मुझसे वास्ता रखना चाहते हैं, तो आपको मेरा आदर करना होगा।" व्रोन्स्की के इस अन्दाज़ के प्रति गोलेनीश्चेव तिरस्कार-पूर्वक उदासीन रहा। इसलिये ऐसा प्रतीत हो सकता था कि इस भेंट से उनके बीच की दूरी और बढ़ जायेगी। किन्तु अब एक-दूसरे को पहचानकर वे दोनों ख़ुशी से खिल और चिल्ला उठे। व्रोन्स्की को कभी यह आशा नहीं थी कि गोलेनीश्चेव से मिलने पर उसे इतनी अधिक ख़ुशी होगी, किन्तु सम्भवतः वह ख़ुद यह नहीं जानता था कि उसे कितनी अधिक ऊब महसूस हो रही थी। वह पिछली भेंट की अप्रिय अनुभूति को भूल गया और निश्छलता तथा ख़ुशी से चमकते चेहरे के साथ उसने अपने इस भूतपूर्व साथी की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया। गोलेनीश्चेव के पहले के चिन्तातुर चेहरे पर भी ख़ुशी का ऐसा ही भाव आ गया।

"कितनी ख़ुशी हुई है मुझे तुमसे मिलकर!" व्रोन्स्की ने मैत्रीपूर्ण ढंग से मुस्कराते और अपने मज़बूत सफ़ेद दांत दिखाते हुए कहा।

"मैंने सुना कि व्रोन्स्की यहां आया है, लेकिन कौन-सा – नहीं जानता था। बहुत, बहुत ही ख़ुश हूं मैं!"

"आओ, भीतर चलें। तो तुम क्या कर रहे हो?"

"मुझे दूसरा साल चल रहा है यहां रहते हुए। काम कर रहा हूं।"

"ओह!" व्रोन्स्की ने दिलचस्पी से कहा। "आओ, भीतर चलें।"

रूसी व्यक्ति जब नौकर से कुछ छिपाना चाहता है, तो वह फ़्रांसीसी बोलता है। इस आम आदत के मुताबिक़ व्रोन्स्की ने रूसी में बात करने के बजाय फ़्रांसीसी में बोलना शुरू कर दिया।

"तुम कारेनिना से परिचित हो? हम दोनों साथ-साथ यात्रा कर रहे हैं। मैं उसी के पास जा रहा हूं," गोलेनीश्चेव के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए उसने फ़्रांसीसी में कहा।

"अच्छा। मुझे मालूम नहीं था" (यद्यपि वह जानता था), गोलेनीश्चेव ने उदासीनता से उत्तर दिया। "बहुत दिन हो गये क्या तुम्हें यहां आये हुए?" उसने इतना और पूछ लिया।

"मुझे? चौथा दिन है," अपने साथी के चेहरे को एक बार फिर ध्यान से देखते हुए व्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

"हां, वह सलीके का आदमी है और इस मामले के प्रति उसका वैसा ही रवैया है जैसा होना चाहिये," गोलेनीश्चेव के चेहरे के भाव और उसके बात बदलने के महत्त्व को समझते हुए व्रोन्स्की ने अपने आपसे कहा। "आन्ना से उसका परिचय कराया जा सकता है, इस मामले की ओर उसका वैसा ही रवैया है, जैसा होना चाहिये।"

आन्ना के साथ विदेश-यात्रा के इन तीन महीनों के दौरान नये लोगों के साथ भेंट होने पर व्रोन्स्की हमेशा अपने से यह सवाल करता था कि आन्ना के साथ उसके सम्बन्धों के बारे में इस नये व्यक्ति का क्या रवैया है और मर्दों में अक्सर वैसी ही समझ-बूझ का परिचय मिलता था, जैसा कि होना चाहिये था। किन्तु यदि उससे और उनसे, जिनका इस मामले के प्रति सही रवैया था, यह पूछा जाता कि इस सही रवैये का वे क्या अर्थ समझते हैं, तो उन्हें इसका जवाब देने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता।

व्रोन्स्की जिन लोगों को यह श्रेय देता था कि वे इस मामले को "सही ढंग" से समझते हैं, वे वास्तव में इसे नहीं समझते थे और कुल मिलाकर शिष्ट लोगों जैसा वही व्यवहार करते थे, जो वे जीवन के सभी जटिल और हल न होनेवाले प्रश्नों के मामले में करते हैं। वे किसी भी तरह के संकेतों और अप्रिय प्रश्नों से बचते हुए शिष्ट व्यवहार का परिचय देते। वे ऐसा दिखावा करते कि बहुत अच्छी तरह इस स्थिति का महत्त्व और अर्थ समझते हैं, इसे स्वीकार और इसका अनुमोदन भी करते हैं, किन्तु यह सब स्पष्ट करना अनुचित और बेकार मानते हैं।

व्रोन्स्की ने तत्काल यह अनुमान लगा लिया कि गोलेनीश्चेव ऐसे ही लोगों में से है और इसलिये उसके मिलने पर उसे दुगुनी खुशी हुई। व्रोन्स्की जब उसे कारेनिना के पास ले गया, तो गोलेनीश्चेव ने वैसा ही व्यवहार किया, जैसा कि व्रोन्स्की चाहता था। किसी भी तरह

के प्रयास के बिना वह ऐसी बातचीत से बचता रहा, जिससे झेंप महसूस हो सकती हो।

गोलेनीश्चेव पहले से आन्ना को नहीं जानता था और उसकी सुन्दरता तथा उसकी उस सहजता से और भी चकित रह गया, जिससे वह अपनी स्थिति को स्वीकार करती थी। व्रोन्स्की उसे साथ लेकर जब उसके कमरे में गया, तो उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और उसके निश्छल तथा सुन्दर चेहरे की यह लालिमा उसे बहुत रुची। किन्तु उसे सबसे ज़्यादा यह बात अच्छी लगी कि उसने उसी क्षण, मानो जान-बूझकर कि पराये व्यक्ति के सामने किसी प्रकार की ग़लतफ़हमी न हो, व्रोन्स्की को केवल अलेक्सेई कहकर सम्बोधित किया और यह बताया कि वे किराये पर लिये हुए एक घर में, जिसे यहां पालाज़्ज़ो कहा जाता है, जाकर रहनेवाले हैं। अपनी परिस्थिति के बारे में यह सीधा-सादा रवैया गोलेनीश्चेव को अच्छा लगा। आन्ना के ख़ुशमिज़ाजी के इस उत्साहपूर्ण रंग-ढंग को देखते, कारेनिन और व्रोन्स्की से परिचित होने के कारण उसे लगा कि वह आन्ना को अच्छी तरह समझता है। उसे लगा कि वह उस चीज़ को समझता है, जिसे आन्ना किसी तरह नहीं समझती थी, यानी पति को दुख देकर, उसे और बेटे को छोड़कर तथा अपनी नेकनामी गंवाकर वह कैसे इतनी उत्साहपूर्ण, ख़ुश और सौभाग्यशालिनी हो सकती थी।

"गाइड में उसका ज़िक्र है," गोलेनीश्चेव ने इस मकान के बारे में कहा। "वहां बढ़िया तिन्तोरेत्तो है। अपने अन्तिम दिनों का।"

"एक बात कहूं? मौसम बड़ा सुहाना है, आइये एक बार फिर वहां चलकर उसे देख लें," व्रोन्स्की ने आन्ना को सम्बोधित करते हुए कहा।

"बड़ी ख़ुशी से, मैं अभी टोपी पहनकर आती हूं। आपका कहना है कि गर्मी है?" आन्ना ने दरवाज़े के क़रीब रुककर व्रोन्स्की को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए कहा। फिर से उसके चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ गयी।

आन्ना की दृष्टि से व्रोन्स्की समझ गया कि वह यह नहीं जानती कि गोलेनीश्चेव के साथ उसका कैसे सम्बन्ध रखने का इरादा है और चिन्तित है कि उसने वैसा ही व्यवहार किया है या नहीं, जैसा वह चाहता था।

व्रोन्स्की ने देर तक प्यार भरी नज़र से उसकी तरफ़ देखा।

"नहीं, बहुत गर्मी नहीं है," उसने जवाब दिया।

आन्ना को लगा कि वह सब कुछ समझ गयी है और मुख्य बात यह है कि व्रोन्स्की उससे ख़ुश है। वह उसकी ओर देखकर मुस्कराई और तेज़ क़दमों से बाहर चली गयी।

दोनों मित्रों ने एक-दूसरे की आंखों में झांका और दोनों झेंप गये, मानो गोलेनीश्चेव स्पष्टतः आन्ना की प्रशंसा करते हुए कुछ कहना चाहता था, मगर नहीं जानता था कि क्या कहे, जबकि व्रोन्स्की भी ऐसा चाहता था और इसी चीज़ से डरता था।

"तो यह मामला है," व्रोन्स्की ने कोई बात शुरू करने के लिये कहना आरम्भ किया। "तो तुम यहां बस गये हो? तो तुम अपना पहले वाला काम कर रहे हो?" उसने यह याद करते हुए कि उसे बताया गया था कि गोलेनीश्चेव कुछ लिखता है, कहा।

"हां, मैं 'दो सिद्धान्त' पुस्तक का दूसरा भाग लिख रहा हूं," ऐसा पूछा जाने पर ख़ुशी से फड़कते हुए गोलेनीश्चेव ने उत्तर दिया, "मेरा मतलब है कि अगर सही तौर पर कहा जाये, तो मैं अभी लिख नहीं रहा हूं, बल्कि तैयारी कर रहा हूं, सामग्री जुटा रहा हूं। यह पुस्तक कहीं अधिक विस्तृत होगी, लगभग सभी पक्षों को समेट लेगी। हमारे यहां रूस में लोग यह नहीं समझना चाहते कि हम बेज़न्तीनी सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं," उसने लम्बा और जोशीला स्पष्टीकरण शुरू कर दिया।

व्रोन्स्की को शुरू में इस कारण अटपटापन महसूस हुआ कि वह 'दो सिद्धान्त' के पहले भाग के बारे में भी कुछ नहीं जानता था और लेखक उसकी विख्यात रचना के रूप में चर्चा कर रहा था। किन्तु बाद में गोलेनीश्चेव जब अपने विचार प्रस्तुत करने और व्रोन्स्की उन्हें समझने लगा, तो उसे दिलचस्पी अनुभव होने लगी, क्योंकि गोलेनीश्चेव अच्छे ढंग से बोल रहा था। किन्तु व्रोन्स्की को उस खीझ भरी उत्तेजना के कारण, जिससे वह अपने विषय की चर्चा कर रहा था, आश्चर्य तथा दुख हो रहा था। वह जितना अधिक आगे बढ़ता जाता था, उसकी आंखों में गुस्से की आग उतनी ही बढ़ती जाती थी, उतनी अधिक बेचैनी से वह काल्पनिक प्रतिद्वन्द्वियों का विरोध करता था,

उसके चेहरे का भाव उतना ही अधिक चिन्तापूर्ण और चोट खाया-सा होता जाता था। दुबले-पतले, ज़िन्दादिल, दयालु और दूसरों की भलाई करनेवाले लड़के के रूप में गोलेनीश्चेव की याद करते हुए, जो हमेशा शाही सैनिक स्कूल की पढ़ाई में सबसे आगे रहता था, व्रोन्स्की किसी तरह उसकी इस झल्लाहट का कारण नहीं समझ पा रहा था और उसे यह अच्छी भी नहीं लग रही थी। उसे ख़ास तौर पर यह पसन्द नहीं था कि ऊंचे समाज और अच्छे वातावरण में जन्मा-पला गोलेनीश्चेव मामूली से क़लम घसीटनेवालों की क़तार में जा खड़ा हुआ था, जो उसमें खीझ पैदा करते थे और वह उनपर झल्लाता था। क्या यह इस लायक़ था? व्रोन्स्की को यह पसन्द नहीं था, मगर इसके बावजूद यह महसूस करते हुए कि गोलेनीश्चेव दुखी है, उसे उसपर दया आई। उसके भावपूर्ण और ख़ासे सुन्दर चेहरे पर दुख, लगभग पागलपन की सी हालत तब भी नज़र आ रही थी, जब आन्ना के कमरे में वापस आने की ओर भी उसका ध्यान नहीं गया और वह जल्दी-जल्दी तथा जोश में अपने विचारों को व्यक्त करता रहा।

आन्ना जब टोपी और झब्बा पहने और अपने सुन्दर हाथ की फुर्तीली गतिविधि से छतरी से खिलवाड़ करती हुई व्रोन्स्की के पास आकर रुकी, तो उसने राहत की सांस लेते हुए अपने चेहरे पर जमी तथा शिकायत करती हुई गोलेनीश्चेव की नज़रों से अपनी नज़रें हटायीं और अपनी अतीव सुन्दर तथा जीवन और ख़ुशी से भरपूर सहेली की तरफ़ नूतन प्यार की दृष्टि से देखा। गोलेनीश्चेव कठिनाई से सम्भला और शुरू में उदास तथा मुरझाया-सा रहा, किन्तु सभी के प्रति स्नेहपूर्ण आन्ना (जैसी कि वह इस समय थी) अपने सीधे-सरल और प्रसन्नतापूर्ण व्यवहार से उसे रंग में ले आई। विभिन्न विषयों पर बातचीत चलाने की कोशिश करने के बाद आख़िर आन्ना ने चित्रकारी की चर्चा शुरू की, जिसके बारे में वह बहुत अच्छे ढंग से बोलता था, और आन्ना ध्यान से उसकी बातें सुनती रही। वे पैदल ही किराये पर लिये जानेवाले घर तक पहुंच गये और उन्होंने उसे अच्छी तरह देखा।

"मुझे एक बात की बड़ी ख़ुशी है," आन्ना ने वापस जाते समय गोलेनीश्चेव से कहा।

"अलेक्सेई का atelier* अच्छा होगा। तुम अवश्य ही वह कमरा ले लेना," उसने व्रोन्स्की से रूसी में और जान-बूझकर "तुम" कहा, क्योंकि वह समझ चुकी थी कि उनके एकान्त जीवन में गोलेनीश्चेव निकट का व्यक्ति हो जायेगा और उसके सामने कुछ छिपाने की ज़रूरत नहीं रहेगी।

"तुम क्या चित्रकारी करते हो?" गोलेनीश्चेव ने जल्दी से व्रोन्स्की को सम्बोधित करते हुए पूछा।

"हां, मैं बहुत पहले ऐसा करता था और अब फिर से उसे शुरू कर दिया है," व्रोन्स्की ने शर्म से लाल होते हुए कहा।

"बहुत प्रतिभा है उसमें," आन्ना ने ख़ुशी भरी मुस्कान के साथ कहा। "ज़ाहिर है कि मैं इस मामले में पारखी नहीं हूं, किन्तु परख रखनेवालों ने भी ऐसा ही ख़्याल ज़ाहिर किया है।"

(८)

अपनी स्वतन्त्रता और तीव्र स्वास्थ्यलाभ के पहले समय में आन्ना ने अपने को अक्षम्य रूप से सुखी और जीवन की ख़ुशी से ओत-प्रोत अनुभव किया। पति के दुर्भाग्य की स्मृति उसके सौभाग्य को विषाक्त नहीं करती थी। यह स्मृति एक ओर तो इतनी भयानक थी कि उसके बारे में सोचा ही नहीं जा सकता था और दूसरी ओर, पति के दुर्भाग्य ने उसे इतना सौभाग्य प्रदान किया था कि पश्चात्ताप नहीं हो सकता था। बीमारी के बाद उसके साथ जो कुछ हुआ – पति के साथ सुलह, सम्बन्ध-विच्छेद, व्रोन्स्की के घायल होने का समाचार, उसका घर पर आना, तलाक़ की तैयारी, पति का घर छोड़ना, बेटे से विदा लेना – उसे ये सभी बातें तेज़ ज्वर की भयानक नींद-सी प्रतीत हुईं और व्रोन्स्की के साथ विदेश में अकेली रह जाने पर ही मानो वह जागी। पति के साथ की गयी बुराई की याद उसके दिल में ऐसी घृणा-सी पैदा करती, जैसी डूबता हुआ वह आदमी अनुभव करता है, जो अपने साथ चिपक जानेवाले आदमी को झकझोर कर अपने से अलग कर देता है। वह

---

* स्टूडियो। (फ़्रांसीसी)

आदमी डूब गया। निश्चय ही यह बहुत बुरा काम था, किन्तु अपने बचाव का यही एक साधन था और इन भयानक तफ़सीलों को याद न करना ही बेहतर था।

पति को छोड़ने के फ़ौरन बाद ही अपने व्यवहार के सम्बन्ध में दिल को तसल्ली देनेवाला एक विचार आन्ना के मन में आया था, और अब जब वह बीती हुई सभी बातों को याद कर रही थी, तो यह विचार भी उसे याद हो आया। "मैंने निश्चय ही उस व्यक्ति को दुख दिया है, किन्तु मैं उसके दुर्भाग्य से लाभ नहीं उठाना चाहती हूं," वह सोचती थी। "मैं भी दुखी हूं और दुखी रहूंगी। मैं उससे वंचित हो रही हूं, जो मुझे सबसे अधिक प्रिय था – अपने नेक नाम और बेटे से वंचित हो गयी हूं। मैंने बुराई की है और इसलिये सुख नहीं चाहती, तलाक़ नहीं चाहती और लोक-अपमान तथा बेटे से जुदाई की पीड़ा सहूंगी।" किन्तु आन्ना ने चाहे कितने भी सच्चे मन से पीड़ित होना चाहा, वह पीड़ित नहीं हो पायी। बेइज़्ज़ती किसी तरह की नहीं हुई। विदेश में वे रूसी महिलाओं से दूर रहते थे, उस सूझ-बूझ से, जो इन दोनों के पास पर्याप्त मात्रा में थी, वे कभी भी अपने को अटपटी स्थिति में नहीं डालते थे और हर जगह ऐसे लोगों से मिलते थे, जो यह दिखावा करते थे कि जितना वे ख़ुद समझते हैं, उससे भी ज़्यादा अच्छी तरह वे उनकी आपसी स्थिति को समझते हैं। शुरू में बेटे की जुदाई ने भी, जिसे वह प्यार करती थी, उसे परेशान नहीं किया। बच्ची, व्रोन्स्की से हुई बेटी, बहुत प्यारी थी, और चूंकि उसके पास सिर्फ़ यही बच्ची रह गयी थी, इसलिये उसके साथ आन्ना को इतना अधिक लगाव हो गया था कि बेटे की उसे बहुत कम याद आती थी।

जीने की इच्छा, जो उसके स्वस्थ होने से बढ़ गयी थी, इतनी अधिक तीव्र थी और जीवन की परिस्थितियां इतनी नयी और मधुर थीं कि आन्ना अपने को अक्षम्य रूप से सुखी अनुभव करती थी। वह व्रोन्स्की को जितना अधिक जानती जा रही थी, उसे उतना ही अधिक प्यार करती थी। वह उसे ख़ुद उसके लिये और अपने प्रति उसके प्यार के लिये भी प्यार करती थी। उसपर पूर्णाधिकार उसकी स्थायी ख़ुशी का स्रोत था। उसकी निकटता आन्ना को सदा सुखद लगती। व्रोन्स्की के

चरित्र के सभी लक्षण, जिन्हें वह अधिकाधिक जानती जा रही थी, उसे इतने अधिक प्यारे लगते थे कि बयान से बाहर। उसकी शक्ल-सूरत, जो असैनिक पोशाक में कुछ बदल गयी थी, उसके लिये वैसे ही आकर्षक थी, जैसे किसी प्रेम-दीवानी नवयुवती के लिये हो सकती है। वह जो कुछ भी कहता, सोचता और करता, आन्ना को उस सबमें कुछ महानता और उदात्तता की अनुभूति होती। व्रोन्स्की के प्रति अपने प्रशंसाभाव से वह बहुधा स्वयं भय अनुभव करती – वह उसमें कुछ असुन्दर ढूंढ़ती, मगर ढूंढ़ न पाती। उसके सम्मुख अपनी तुच्छता की चेतना प्रदर्शित करने का वह साहस नहीं कर सकती थी। आन्ना को लगता था कि ऐसा जान जाने पर वह जल्द ही उसे प्यार करना छोड़ देगा, और आन्ना उसका प्यार खोने से अधिक अन्य किसी चीज़ से नहीं डरती थी, यद्यपि उसके ऐसे भय के लिये कोई कारण नहीं था। किन्तु वह अपने प्रति उसके व्यवहार के लिये आभारी हुए बिना तथा यह ज़ाहिर किये बिना नहीं रह सकती थी कि वह इसे कितना मूल्यवान मानती है। उसके मतानुसार राजकीय क्षेत्र में प्रमुख भूमिका अदा कर सकने की क्षमता रखनेवाले व्रोन्स्की ने उसकी ख़ातिर अपनी महत्त्वाकांक्षा को त्याग दिया था और इसके लिये कभी ज़रा-सा अफ़सोस ज़ाहिर नहीं किया था। वह पहले की तुलना में आन्ना के साथ अधिक प्यार और आदर से पेश आता था और उसे हर समय इस बात का ध्यान रहता था कि आन्ना अपनी स्थिति के अटपटेपन को कभी महसूस न करे। वह, जो इतना दबंग व्यक्ति था, न केवल आन्ना की बात को कभी नहीं काटता था, बल्कि अपनी मनमर्ज़ी भी नहीं करता था तथा ऐसे लगता था कि आन्ना की इच्छा का अनुमान लगाने का ही यत्न करता रहता था। आन्ना इसको ऊंचा आंके बिना नहीं रह सकती थी, यद्यपि उसके प्रति उसके इतना अधिक ध्यान देने का तनाव, उसके द्वारा इतनी अधिक चिन्ता करने का वातावरण, उसके लिये कभी-कभी बोझिल हो जाता था।

इसी बीच व्रोन्स्की उस चाह की पूर्ण तृप्ति के बावजूद, जिसके लिये वह इतने अधिक समय से इच्छुक रहा था, पूरी तरह सुखी नहीं था। उसने जल्द ही यह महसूस किया कि उसकी इच्छा की पूर्ति से उसे सुख के उस पर्वत की, जिसकी उसने आशा की थी, एक कणिका

ही प्राप्त हुई है। इस इच्छा-पूर्त्ति ने उसे लोगों की यह शाश्वत भूल स्पष्ट कर दी, जो यह मानते हैं कि इच्छाओं की पूर्त्ति में ही सुख निहित है। आन्ना के साथ अपना भाग्य जोड़ लेने और असैनिक पोशाक पहनने पर शुरू में उसने आज़ादी के उस सारे मज़े को अनुभव किया, जिससे वह पहले अपरिचित था, और प्यार की स्वतन्त्रता को भी। उसने ख़ुशी महसूस की, मगर कुछ देर को ही। जल्द ही उसने अनुभव किया कि उसकी आत्मा में इच्छाओं की इच्छा ने, ऊब ने सिर उठा लिया है। अपनी इच्छा के विरुद्ध वह हर क्षणिक सनक को चाह और लक्ष्य मानने लगा। हर दिन के सोलह घण्टों को किसी न किसी चीज़ में लगाना ज़रूरी था, चूंकि वे विदेश में पूरी आज़ादी का जीवन बिताते थे और उस सामाजिक जीवन के घेरे से बाहर थे, जो पीटर्सबर्ग में उन्हें व्यस्त रखता था। विदेश में अकेले यात्रायें करते हुए उसने पहले जो मज़े लूटे थें, अब उनका तो ख़्याल तक भी दिमाग़ में नहीं लाया जा सकता था। कारण कि कुछ परिचितों के साथ रात को देर तक भोजन करने के ऐसे एक प्रयास के फलस्वरूप आन्ना अप्रत्याशित रूप से इस अपराध की तुलना में कहीं अधिक उदास और दुखी हुई थी। उन दोनों की स्थिति की अनिश्चितता के कारण स्थानीय लोगों और रूसियों के साथ भी मिला-जुला नहीं जा सकता था। जहां तक दर्शनीय स्थानों-वस्तुओं का सम्बन्ध था, तो न केवल वह उन्हें पहले देख चुका था, बल्कि रूसी और समझदार व्यक्ति होने के नाते उन्हें वह महत्त्व नहीं दे सकता था, जो अंग्रेज़ लोग देते हैं और जिसे समझना आसान नहीं।

जैसे भूखा पशु चारा पाने की उम्मीद से हर चीज़ पर झपटता है, वैसे ही व्रोन्स्की भी किसी तरह की सजगता के बिना कभी तो राजनीति, कभी किताबों और कभी तस्वीरों की तरफ़ लपकता।

चूंकि जवानी के दिनों से चित्रकारी की तरफ़ उसका रुझान था और चूंकि वह यह नहीं जानता था कि अपना पैसा कहां ख़र्च करे, उसने रेखाचित्र एकत्रित करना आरम्भ कर दिया था और इस तरह चित्रकारी को चुना तथा उसी पर अपनी अतृप्त इच्छाओं का वह भण्डार ख़र्च करने लगा, जो तृप्ति की मांग करती थीं।

व्रोन्स्की में कला को समझने और उसकी बिल्कुल सही तथा सुरुचिपूर्ण नक़ल करने की क्षमता थी, और इसलिये उसने सोचा कि

उसमें चित्रकार के लिये अपेक्षित गुण विद्यमान हैं। कुछ समय तक इस मामले में डांवांडोल रहकर कि वह चित्रकारी की धार्मिक, ऐतिहासिक या यथार्थवादी शैली चुने, उसने चित्रकारी शुरू कर दी। वह इन सभी शैलियों को समझता था और किसी से भी प्रेरित हो सकता था, किन्तु यह कल्पना तक करने में असमर्थ था कि चित्रकारी की शैलियों को जाने बिना प्रत्यक्षतः उसी से प्रेरणा पा सकता था, जो उसकी आत्मा में था और उसे इस बात की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं थी कि उसकी चित्रकारी किसी शैली के अन्तर्गत आती है या नहीं। पर चूंकि वह यह नहीं जानता था और जीवन से सीधे प्रेरणा न लेकर कला के रूप में मूर्त्त हुए जीवन से अप्रत्यक्ष प्रेरणा पाता था, इसलिये बहुत जल्दी और आसानी से प्रेरित हो जाता था तथा जो चित्रित करता था उसे ऐसी ही तीव्रता और सुगमता से पूरा कर लेता था और जिस शैली की नक़ल करना चाहता था, उसके चित्र उससे मिलते-जुलते होते थे।

अन्य सभी शैलियों की तुलना में उसे सजीली और प्रभावपूर्ण फ़्रांसीसी शैली ज़्यादा पसन्द थी, और उसने इसी शैली में इतालवी पोशाक पहने हुए आन्ना का छविचित्र बनाना शुरू किया। ख़ुद उसे और अन्य सभी को, जिन्होंने यह छविचित्र देखा, यह बहुत सफल प्रतीत हुआ।

(९)

पलस्तर की ऊंची छतों, दीवारों पर चित्रकारी, फ़र्शों पर पच्चीकारी, ऊंची-ऊंची खिड़कियों पर पीले रंग के भारी-भारी रेशमी पर्दों, ताकों और अंगीठियों पर फूलदानों, नक़्क़ाशीदार दरवाज़ों और चित्रों से सजे अंधेरे-उदास हॉलों वाले इस पुराने और उपेक्षित पालाज़्ज़ो में आने के बाद से यह मकान ही अपने बाहरी रंग-रूप से व्रोन्स्की के दिल में यह मधुर ग़लतफ़हमी पैदा करता था कि वह रूसी जागीरदार और नौकरी के बिना ऊंचे पद के दरबारी होने की तुलना में कहीं अधिक प्रबुद्ध कला-प्रेमी और कला-संरक्षक तथा ख़ुद एक मामूली-सा चित्रकार है, जिसने अपनी प्रेमिका के लिये दुनिया, सम्बन्ध-सम्पर्कों और महत्त्वाकांक्षाओं से मुंह फ़ेर लिया है।

पालाज़्ज़ो में आने के बाद व्रोन्स्की ने जो भूमिका अपनाई थी, वह पूरी तरह सफल रही और गोलेनीश्चेव के ज़रिये कुछ दिलचस्प लोगों से जान-पहचान हो जाने पर शुरू में उसने अपने को शान्त अनुभव किया। चित्रकारी के इतालवी प्रोफ़ेसर की देख-रेख में वह प्रकृति-चित्रण और मध्ययुगीन इतालवी जीवन का अध्ययन करता था। पिछले कुछ अर्से में मध्ययुगीन जीवन में व्रोन्स्की की रुचि इतनी अधिक बढ़ गयी थी कि वह उस ज़माने के मुताबिक़ टोपी पहनने और कंधे के पीछे झब्बा लटकाने लगा और ये दोनों चीज़ें उसे बहुत जंचती थीं।

"हम यहां रहते हैं और हमें कुछ भी ख़बर नहीं," व्रोन्स्की ने एक दिन सुबह के समय अपने यहां गोलेनीश्चेव के आने पर उससे कहा। "तुमने मिख़ाइलोव का चित्र देखा है?" उसने सुबह ही प्राप्त हुआ रूसी अख़बार उसे देते और उसी शहर में रहनेवाले रूसी चित्रकार के बारे में लेख की ओर इंगित करते हुए कहा। इस चित्रकार ने वह चित्र पूरा कर लिया था, जिसकी बहुत पहले से चर्चा हो रही थी और जिसे पहले से ही ख़रीदा जा चुका था। लेख में सरकार और अकादमी की इस बात के लिये भर्त्सना की गयी थी कि इतने अच्छे चित्रकार को किसी भी तरह का प्रोत्साहन और सहायता नहीं दी गयी थी।

"उसका चित्र देखा है," गोलेनीश्चेव ने उत्तर दिया। "ज़ाहिर है कि उसमें प्रतिभा है, मगर उसकी कला-दिशा बिल्कुल ग़लत है। ईसा और धार्मिक चित्रकला के प्रति उसका वही इवानोव-श्त्राउस-रेनान वाला रवैया है।"

"चित्र का विषय क्या है?" आन्ना ने पूछा।

"पीलातुस के सम्मुख ईसा। ईसा को नई कला-शैली के पूरे यथार्थवाद से यहूदी के तौर पर प्रस्तुत किया गया है।"

चित्र की विषय-वस्तु के प्रश्न से गोलेनीश्चेव अपने मनपसन्द क्षेत्र में आ गया और अपने विचार प्रकट करने लगा –

"मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे ये लोग ऐसी भयानक भूल कर सकते हैं। पुराने महान चित्रकारों की कृतियों में ईसा पहले ही एक निश्चित रूप पा चुके हैं। इसलिये अगर वे भगवान को नहीं, बल्कि एक क्रान्तिकारी या बुद्धिमान व्यक्ति को चित्रित करना चाहते

हैं, तो इतिहास से सुकरात, फ़्रैंकलिन या शार्लोते कोर्दे को ले सकते हैं, लेकिन ईसा को नहीं। वे उसी व्यक्ति को कला के लिये चुनते हैं, जिसे कलाकृति के हेतु नहीं चुनना चाहिये और फिर ..."

"क्या यह सच है कि मिख़ाइलोव अत्यधिक ग़रीबी की ज़िन्दगी बिता रहा है?" व्रोन्स्की ने यह सोचते हुए पूछा कि रूसी कला-संरक्षक के नाते उसे चित्रकार की मदद करनी चाहिये, चाहे उसका चित्र अच्छा हो या बुरा।

"शायद ही। वह बहुत बढ़िया छविचित्रकार है। आपने उसके द्वारा बनाया गया वासीलचिकोवा का चित्र देखा है न? किन्तु लगता है कि वह और अधिक छविचित्र नहीं बनाना चाहता और इसलिये सम्भव हो सकता है कि तंगदस्ती में हो। मैं कहता हूं कि ..."

"क्या उससे आन्ना अर्कादयेव्ना का छविचित्र बनाने के लिये अनुरोध नहीं किया जा सकता?" व्रोन्स्की ने पूछा।

"मेरा छविचित्र किसलिये?" आन्ना ने पूछा। "तुम्हारे द्वारा बनाये गये मेरे छविचित्र के बाद मैं अपना और छविचित्र नहीं चाहती। आनी" (अपनी बिटिया को वह ऐसे ही बुलाती थी) "का छविचित्र बनवाना बेहतर होगा। वह रही हमारी बिटिया," उसने खिड़की में से सुन्दर इतालवी धाय की ओर देखते हुए कहा, जो बच्ची को बाग़ में ले जा रही थी, और उसी समय उसने व्रोन्स्की पर चोरी-छिपे नज़र डाली। सुन्दर इतालवी धाय, व्रोन्स्की जिसके सिर का चित्र बना रहा था, आन्ना के जीवन की एकमात्र गुप्त कसक थी। उसका चित्र बनाते हुए व्रोन्स्की ने उसकी सुन्दरता और मध्ययुगीनता की प्रशंसा की थी। आन्ना अपने आपसे यह स्वीकार करने का साहस नहीं कर पा रही थी कि वह इस धाय से ईर्ष्या करने से डरती थी और इसीलिये उसके साथ विशेष दयालुता से पेश आती थी तथा उसे और उसके छोटे-से बेटे को लाड़ से बिगाड़ती थी।

व्रोन्स्की ने भी खिड़की से बाहर और आन्ना की आंखों में झांका और उसी क्षण गोलेनीश्चेव को सम्बोधित करते हुए पूछा –

"तुम मिख़ाइलोव को जानते हो?"

"मैं उससे मिला हूं। वह सनकी और बिल्कुल अनपढ़ आदमी है। उन नये, उजड्ड लोगों में से है, जो आजकल देखने को मिलते

हैं, उन स्वतन्त्र विचार वालों में से है, जो d'emblée* अनास्था, नास्तिकवाद और भौतिकवाद की धारणाओं से शिक्षित हैं। पहले ऐसा होता था," गोलेनीश्चेव इस बात की ओर ध्यान दिये बिना अथवा ध्यान न देना चाहकर कि आन्ना और व्रोन्स्की भी कुछ कहना चाहते हैं, कहता गया, "पहले स्वतन्त्र विचारों वाला व्यक्ति वह होता था, जो धर्म, क़ानून और नैतिकता की भावनाओं के अनुरूप शिक्षा पाता था और आन्तरिक संघर्ष तथा श्रम से स्वतन्त्र विचारों की सीमा तक पहुंचता था। किन्तु अब नये ढंग के जन्मजात स्वतन्त्र विचारों वाले लोग सामने आते हैं, जो इतना सुने बिना ही ऐसे बन जाते हैं कि धार्मिक नैतिकता के नियम भी होते थे, कि अधिकारी भी होते थे, बल्कि जो सभी कुछ से इन्कार करने की धारणाओं से यानी जंगलियों की तरह बड़े होते हैं। वह भी ऐसा ही है। लगता है कि वह मास्को के किसी दरबारी नौकर-चाकर का बेटा है और उसे किसी तरह की तालीम नहीं मिली। अकादमी में आने और ख्याति पाने के बाद एक समझदार आदमी के नाते उसने शिक्षित होना चाहा। इसके लिये उसने उस चीज़ की तरफ़ ध्यान दिया, जो उसे शिक्षा-स्रोत प्रतीत हुआ यानी पत्र-पत्रिकाओं की तरफ़। पुराने ज़माने में शिक्षित होने का इच्छुक व्यक्ति, मान लो कोई फ़्रांसीसी, यदि ऐसा करना चाहता, तो सारे क्लासिकल लेखकों, धर्मशास्त्रियों, त्रासदी-लेखकों, इतिहासज्ञों और दर्शनशास्त्रियों को पढ़ता और इसके लिये उसे कितना अधिक मानसिक श्रम करना पड़ता। लेकिन अब उसने नास्तिकवादी साहित्य को उठा लिया, नास्तिकवाद के पूरे सार को जल्दी से समझ लिया और बस, शिक्षित हो गया। इतना ही नहीं – बीस साल पहले उसे इस साहित्य में अधिकारियों और सदियों पुराने दृष्टिकोणों के साथ संघर्ष के चिह्न दिखाई देते और उसने इस संघर्ष से समझ लिया होता कि कभी कोई दूसरा दृष्टिकोण भी था। किन्तु अब तो उसका सीधे ऐसे साहित्य से वास्ता पड़ता है, जो पुराने विचारों का खण्डन भी नहीं करता और साफ़-साफ़ यही कहता है – évolution,** प्राकृतिक चयन और अस्तित्व

---

* एकदम। (फ़्रांसीसी)

** विकासक्रम। (फ़्रांसीसी)

के लिये संघर्ष के सिवा कुछ भी नहीं। मैंने अपने लेख में..."

"एक बात कहूं," आन्ना ने उसे टोका, जो काफ़ी देर से बड़ी सावधानी से व्रोन्स्की की आंखों में झांक रही थी और यह जानती थी कि व्रोन्स्की को इस चित्रकार की शिक्षा में कोई दिलचस्पी नहीं है और वह केवल उसकी मदद करने के लिये उससे छविचित्र बनवाना चाहता है। "एक बात कहूं?" आन्ना ने गोलेनीश्चेव को दृढ़तापूर्वक टोक दिया। "आइये, उसके यहां चलें!"

गोलेनीश्चेव चौंका और ख़ुशी से राज़ी हो गया। पर चूंकि चित्रकार का घर दूर था, इसलिये सवारी से जाने का निर्णय किया गया।

बग्घी, जिसमें आन्ना और गोलेनीश्चेव तथा व्रोन्स्की आमने-सामने बैठे थे, एक घण्टे बाद दूरी पर स्थित, सुन्दर और नये मकान के सामने पहुंची। घर की देखभाल करनेवाले की बीवी से यह मालूम होने पर कि मिख़ाइलोव लोगों को अपने स्टूडियो में आने देता है, मगर इस समय वह कुछ क़दमों की दूरी पर अपने फ़्लैट में है, उन्होंने उसे अपने परिचय-कार्ड देकर इस अनुरोध के साथ वहां भेजा कि वह उन्हें उसके चित्र देखने की अनुमति दें।

(१०)

चित्रकार मिख़ाइलोव को जब काउंट व्रोन्स्की और गोलेनीश्चेव के परिचय-कार्ड दिये गये, तो वह हमेशा की भांति अपने काम में लगा हुआ था। सुबह के वक़्त वह एक बड़े चित्र पर अपने स्टूडियो में काम करता रहा था। घर आने पर वह पत्नी से इस कारण नाराज़ हो गया था कि वह मकान का किराया मांगनेवाली मालिकिन को टाल नहीं पाई थी।

"बीसियों बार तुमसे कह चुका हूं कि उससे बहस मत किया करो। तुम वैसे ही मूर्ख हो और जब बहस करने लगती हो, तो तीन गुना मूर्ख हो जाती हो," लम्बे झगड़े के बाद उसने उससे कहा।

"तो तुम किराया देने में देर न किया करो, मेरा क़सूर नहीं है। अगर मेरे पास पैसे होते, तो..."

"भगवान के लिये मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।" मिख़ाइलोव

ने रुआंसी आवाज़ में कहा और कान बन्द करके विभाजन-दीवार के पीछे अपने कार्य-कक्ष में जाकर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। "बुद्धू कहीं की!" उसने अपने आपसे कहा, मेज़ पर बैठ गया, फ़ाइल खोलकर आरम्भ किये हुए रेखाचित्र पर बड़े जोश से काम करने लगा।

उसके जीवन की गाड़ी जब बुरे ढंग से चलती थी और ख़ास तौर पर जब पत्नी से उसका झगड़ा हो जाता था, तो वह जितने जोश और कामयाबी से काम करता था, उतना और कभी नहीं कर पाता था। "ओह, कहीं ग़ारत हो जाता!" वह काम करते हुए सोच रहा था। वह ग़ुस्से के दौरे का शिकार हुए आदमी की आकृति का ख़ाका बना रहा था। ख़ाका पहले से बनाया जा चुका था, मगर वह उससे असन्तुष्ट था। "नहीं, वह बेहतर था... वह कहां है?" वह पत्नी के पास गया, माथे पर बल डाले और उसकी तरफ़ देखे बिना उसने बड़ी बेटी से यह पूछा कि वह काग़ज़ कहां है, जो उसने उन्हें दिया था। फेंक दिये गये ख़ाके वाला क़ाग़ज़ मिल गया, मगर उसपर धब्बे पड़े हुए थे और चिकनाई लग गयी थी। फिर भी उसने वह ख़ाका ले लिया, मेज़ पर रखा तथा कुछ हटकर आंखें सिकोड़ते हुए उसे देखने लगा। वह अचानक मुस्कराया और उसने ख़ुशी से हाथ लहराये।

"हां, हां!" वह कह उठा और उसी क्षण पेंसिल लेकर जल्दी-जल्दी रेखाचित्र बनाने लगा। चिकनाई के धब्बे ने व्यक्ति को एक नई मुद्रा प्रदान कर दी थी।

वह यह नई मुद्रा बना रहा था कि अचानक उसे बड़ी ठोड़ी वाले उस व्यापारी के उत्साहपूर्ण चेहरे का ध्यान हो आया, जिससे वह सिगार ख़रीदता था। उसने इसी चेहरे और इसी ठोड़ी वाली आकृति बना दी। वह ख़ुशी से हंस पड़ा। निर्जीव और काल्पनिक आकृति की जगह वह सजीव और ऐसी बन गयी, जिसे बदला नहीं जा सकता था। इस आकृति में सजीवता थी और वह एक सुनिश्चित रूप रखती थी। इस ख़ाके को इस आकृति की मांगों के अनुरूप ठीक-ठाक किया जा सकता था। टांगों को दूसरे ढंग से दिखाया जा सकता था और दिखाना चाहिये था, बायें हाथ की स्थिति को पूरी तरह बदला जा सकता था और बालों को पीछे की ओर किया जा सकता था। किन्तु ऐसे सुधार करते हुए उसने आकृति को नहीं बदला, बल्कि उन्हीं चीज़ों को हटा

दिया, जो आकृति को छिपा रही थीं। उसने मानो वे आवरण हटा दिये, जिनके कारण वह पूरी तरह से नज़र नहीं आ रही थी। उसकी पेंसिल की हर गतिविधि से पूरी आकृति अपनी सारी शक्ति से उभरती आ रही थी, ऐसी बनती जा रही थी, जैसी चिकनाई के धब्बे से अचानक वह उसके सामने प्रकट हुई थी। जब उसे परिचय-कार्ड लाकर दिये गये, तो वह इस आकृति को सावधानी से समाप्त कर रहा था।

"अभी, अभी!"

वह बीवी के पास गया।

"बस, काफ़ी है, नाराज़ नहीं होओ, साशा!" उसने सहमी-सी आवाज़ में प्यार से मुस्कराकर कहा। "तुम दोषी थीं। मैं दोषी था। मैं सब कुछ ठीक-ठाक कर दूंगा।" और पत्नी से सुलह करके मख़मली कालर वाला ज़ैतूनी रंग का ओवरकोट तथा टोप पहनकर स्टूडियो में चला गया। सफल आकृति के बारे में वह भूल चुका था। इस समय बग्घी में बैठकर आनेवाले और उसके स्टूडियो को देखने के इच्छुक इन महत्त्वपूर्ण रूसियों के कारण उसे उत्तेजना और ख़ुशी महसूस हो रही थी।

उस चित्र के बारे में, जो इस समय उसके चित्राधार पर रखा था, उसके दिल की गहराई में यह विचार विद्यमान था कि ऐसा चित्र कभी किसी ने नहीं बनाया है। वह ऐसा नहीं समझता था कि उसका चित्र राफ़ायल के सभी चित्रों से बढ़-चढ़कर है, किन्तु इतना जानता था कि इस चित्र में वह जो भाव व्यक्त करना चाहता था और कर पाया है, कभी किसी ने उसे व्यक्त नहीं किया है। वह यक़ीनी तौर पर यह जानता था, बहुत पहले से, तब से जानता था, जब उसने यह चित्र बनाना शुरू किया था। किन्तु लोगों के विचार, वे चाहे किसी के भी क्यों न हों, उसके लिये बहुत महत्त्व रखते थे और उसके दिल की गहराई तक को छू लेते थे। हर टीका-टिप्पणी, बहुत मामूली-सी भी, जो यह ज़ाहिर करती कि आलोचक इस चित्र में उस चीज़ का ज़रा-सा अंश भी देख पाता है, जो वह ख़ुद देखता था, उसकी आत्मा की गहराई को विह्वल कर देती थी। अपने आलोचकों को वह हमेशा अपने से ज़्यादा गहरी समझ रखनेवाला मानता था और उनसे सदैव कुछ ऐसा देख पाने की आशा रखता था, जो ख़ुद वह अपने चित्र में

नहीं देख पाता था। उसे लगता था कि दर्शकों की टीका-टिप्पणियों में उसे अक्सर कुछ ऐसा मिल जाता है।

वह तेज़ क़दमों से अपने स्टूडियो के दरवाज़े की तरफ़ आ रहा था और उत्तेजना के बावजूद प्रवेशद्वार की छाया में खड़ी और बड़े जोश से कुछ कह रहे गोलेनीश्चेव की बातें सुनती तथा स्पष्टत: साथ ही निकट आते चित्रकार को देखने की इच्छुक आन्ना की आकृति की कोमल चमक ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया। चित्रकार को ख़ुद यह नहीं पता चला कि कैसे इनके क़रीब आने पर उसने इस प्रभाव को ग्रहण कर लिया और सिगार बेचनेवाले दुकानदार की ठोड़ी की तरह उसे कहीं अपने भीतर छिपा लिया, जहां से वह ज़रूरत होने पर उसे बाहर निकाल लेगा। व्रोन्स्की और आन्ना चित्रकार के बारे में गोलेनीश्चेव के वर्णन से पहले से ही निराश हो चुके थे और उसके बाहरी रंग-रूप ने उन्हें और भी अधिक निराश कर दिया। मंझोले क़द, स्थूल काय और ढीली-ढाली चाल वाले मिख़ाइलोव ने, जो कत्थई रंग का टोप तथा ज़ैतूनी हरे रंग का ओवरकोट तथा तंग पायंचों का पतलून पहने था, जबकि बहुत समय से चौड़े पायंचों का चलन था, और ख़ास तौर पर उसके साधारण, चौड़े-से चेहरे और भीरुता के भाव तथा अपनी गरिमा बनाये रखने को उत्सुक इस व्यक्ति ने अप्रिय छाप छोड़ी।

"कृपया पधारिये," उसने उदासीनता-सी दिखाने का यत्न करते हुए कहा, ड्योढ़ी में जाकर जेब से चाबी निकाली और दरवाज़ा खोला।

(११)

स्टूडियो में दाख़िल होने पर मिख़ाइलोव ने फिर से मेहमानों पर नज़र डाली और अपनी कल्पना में व्रोन्स्की के चेहरे, विशेषकर उसके जबड़ों को, फिर से अंकित कर लिया। उसकी चित्रकार की चेतना बेशक लगातार काम करती हुई सामग्री जुटा रही थी, बेशक उसकी कला की आलोचना के क्षण के निकट आने के कारण वह बेचैनी अनुभव कर रहा था, फिर भी वह बड़ी तेज़ी और सूक्ष्मता से, बड़ी मुश्किल से लक्षित होनेवाले चिह्नों के आधार पर इन तीनों व्यक्तियों के

बारे में अपनी धारण बनाता जा रहा था। वह (गोलेनीश्चेव) यहीं रहनेवाला रूसी था। मिख़ाइलोव को न तो उसका कुलनाम याद था, न यह कि कहां उससे उसकी मुलाक़ात हुई थी और उसके साथ उसने क्या बातचीत की थी। उन सभी चेहरों की भांति, जो उसने कभी देखे थे, उसे केवल उसका चेहरा ही याद था, मगर उसे यह भी स्मरण था कि यह उन चेहरों में से था, जो उसकी कल्पना में दिखावटी महत्त्व और अभिव्यक्ति की हीनता वाले बहुत बड़े विभाग में एक ओर को रख दिये गये थे। बड़े-बड़े बाल और बहुत चौड़ा माथा चेहरे को बाहरी महत्त्व प्रदान करते थे, और चेहरे पर एक छोटा-सा बचकाना, चंचल भाव था, जो संकरे-से नासिका-पुल पर केन्द्रित था। मिख़ाइलोव के अनुमानानुसार व्रोन्स्की तथा आन्ना जाने-माने और अमीर रूसी होने चाहिये थे, जो सभी धनी रूसियों की भांति कला के बारे में कुछ नहीं समझते होंगे, मगर जो अपने को कला-प्रेमी और कला-पारखी ज़ाहिर करते हैं। "निश्चय ही इन्होंने सारी पुरानी कला को देख लिया होगा और अब नये चित्रकारों के स्टूडियो के चक्कर लगा रहे हैं, ढोंगी जर्मन और राफ़ायल-पूर्व शैली के उल्लू अंग्रेज़ के यहां जाने के बाद अपना पूरा धारणा-चित्र बनाने के लिये मेरे यहां आये हैं," वह सोच रहा था। वह ऐसे कला-प्रेमियों के इस अन्दाज़ को बहुत अच्छी तरह से जानता था (वे जितने अधिक समझदार थे, उतना ही बुरा था) कि वे केवल यह कहने का अधिकार पाने के उद्देश्य से ही आधुनिक चित्रकारों के स्टूडियो देखते थे कि कला का स्तर गिर गया है और जितना अधिक नयी कला को देखते हैं, उतना अधिक यह स्पष्ट होता जाता है कि प्राचीन महान चित्रकारों की कला की कोई बराबरी नहीं हो सकती। वह इस सब की आशा कर रहा था, उनके चेहरों पर यह सब देख रहा था, उस उदासीनतापूर्ण उपेक्षा भाव को अनुभव कर रहा था, जिससे वे आपस में बातचीत कर रहे थे, पुतलों और आवक्ष मूर्त्तियों को देख रहे थे तथा लापरवाही से इधर-उधर आते-जाते हुए यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह चित्र पर से पर्दा हटाये। जब वह अपने रेखाचित्रों को उलट-पलट रहा था, पर्दे ऊपर उठा रहा था और चादर को अलग कर रहा था, तो बड़ी विह्वलता अनुभव कर रहा था। उसकी यह उत्तेजना इसलिये और भी अधिक थी कि उसकी इस धारणा

के बावजूद कि सभी जाने-माने और धनी रूसी पशु तथा उल्लू होने चाहिये, उसे व्रोन्स्की और ख़ास तौर पर आन्ना बहुत अच्छे लग रहे थे।

"इसे देखियेगा?" ढीली-ढाली चाल से एक ओर को हटते और चित्र की तरफ़ संकेत करते हुए उसने पूछा। "यह पीलातुस का सम्बोधन है, मत्ती, २७ वां अध्याय," उसने यह अनुभव करते हुए कि उसके होंठ उत्तेजना से कांप रहे हैं, कहा। वह कुछ हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया।

इन कुछ क्षणों के दौरान, जब मेहमान चित्र को देख रहे थे, ख़ुद मिख़ाइलोव भी उसे देख रहा था और सो भी उदासीनता तथा एक पराये व्यक्ति की नज़र से। इन कुछ क्षणों में वह पहले से ही ऐसा मान रहा था कि यही, यही दर्शक, जिन्हें एक मिनट पहले वह तिरस्कार की दृष्टि से देख रहा था, उसके चित्र के बारे में उच्चतम और अधिकतम न्यायपूर्ण राय ज़ाहिर करेंगे। वह भूल गया कि उन तीन सालों के दौरान, जब वह इस चित्र पर काम करता रहा था, उसके बारे में क्या सोचता था। वह उसकी उन सारी ख़ूबियों को भूल गया, जिनके बारे में उसे कोई सन्देह नहीं था। वह इन दर्शकों की उदासीन, परायी और नई दृष्टि से अपने चित्र को देख रहा था और उसे उसमें कुछ भी अच्छा नज़र नहीं आ रहा था। चित्र के अग्र भाग में उसे पीलातुस का खिन्न और ईसा का शान्त चेहरा दिखाई दे रहा था और पीछे की तरफ़ पीलातुस के नौकर तथा जो कुछ हो रहा था, उसे देखते हुए यूहन्ना का चेहरा नज़र आ रहा था। हर चेहरा, जो इतनी खोज, इतनी भूलों और सुधारों के बाद अपने विशेष चरित्र के साथ उसके अन्तर में बना था, जिसने इतनी यातना और ख़ुशी प्रदान की थी और ये सभी चेहरे, जिनके समूचे रूप के सन्तुलित प्रभाव को बनाये रखने के लिये बार-बार स्थानान्तरित करके बड़ी मुश्किल से उनके अन्दाज़ों और रंगाभासों को प्राप्त किया गया था – यह सब इन पराये लोगों की नज़रों से देखे जाने पर बहुत घटिया और हज़ारों बार दोहराया हुआ सा प्रतीत हो रहा था। उसके लिये सबसे प्यारा, ईसा मसीह का चेहरा भी, जो चित्र का केन्द्र-बिन्दु था और जिसकी खोज कर लेने पर उसे इतनी अधिक ख़ुशी हुई थी, इन लोगों की नज़र से देखने पर महत्वहीन-सा हो गया था। उसे अच्छे ढंग से चित्रित (अच्छे ढंग से

चित्रित भी नहीं था, क्योंकि उसे इसमें बहुत से दोष नज़र आ रहे थे) उन्हीं सैनिकों और उसी पीलातुस के साथ तित्सियान, राफ़ायल, रूबेन्स के अनगिनत रूप से दोहराये हुए ईसा नज़र आ रहे थे। यह सब कुछ तुच्छ, घटिया और पुराने ढंग से चित्रित – अत्यधिक रंगीन और प्रभावहीन प्रतीत हो रहा था। उनका चित्रकार की उपस्थिति में कुछ झूठी और नम्र बातें कहना और अकेले रह जाने पर उसका मज़ाक़ उड़ाना तथा उसके प्रति दया दिखाना बिल्कुल उचित होगा।

यह ख़ामोशी (यद्यपि यह एक मिनट से अधिक नहीं थी) उसके लिये बहुत बोझिल हो गयी। इसे भंग करने और यह दिखाने के लिये कि वह उत्तेजित नहीं है, उसने अपने पर क़ाबू पाते हुए गोलेनीश्चेव को सम्बोधित किया।

"ऐसा लगता है कि मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है," उसने बेचैनी से कभी आन्ना और कभी व्रोन्स्की की ओर देखते हुए कहा, ताकि उनके चेहरों का एक भी भाव उसकी नज़र से न बच सके।

"मिले कैसे नहीं! हम रोस्सी के यहां मिले थे, जहां उस इतालवी लड़की – नयी राशेल – ने कविता-पाठ किया था," गोलेनीश्चेव ने किसी भी तरह के अफ़सोस के बिना चित्र से दृष्टि हटाते हुए कहना आरम्भ किया।

फिर भी यह देखकर कि मिख़ाइलोव अपने चित्र के बारे में राय जानने को उत्सुक है, उसने कहा –

"पिछली बार जब मैंने आपका यह चित्र देखा था, तब से वह काफ़ी आगे बढ़ चुका है। जैसे तब, वैसे ही अब भी मुझे पीलातुस की आकृति आश्चर्यचकित कर रही है। यह दयालु और भला आदमी, जो दिल की गहराई तक नौकरशाह है तथा यह नहीं समझता कि क्या कर रहा है, बिल्कुल अच्छी तरह से समझा जा सकता है। किन्तु मुझे लगता है कि ..."

मिख़ाइलोव का भावनापूर्ण चेहरा अचानक खिल उठा, आंखों में चमक आ गयी। उसने कुछ कहना चाहा, मगर भावावेश के कारण कुछ भी न कह पाया और उसने ऐसे ज़ाहिर किया मानो खांसकर गला साफ़ किया हो। कला को समझने-परखने की गोलेनीश्चेव की क्षमता का चाहे वह कितना कम मूल्यांकन क्यों नहीं करता था, नौकरशाह

के रूप में पीलातुस के चेहरे के भाव के बारे में उसकी न्यायपूर्ण टिप्पणी चाहे कितनी ही मामूली क्यों न थी, सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ों का उल्लेख करने के पहले ऐसी मामूली टिप्पणी की चर्चा करने से उसे चाहे कितनी भी ठेस क्यों न लगी, इस टिप्पणी से मिख़ाइलोव की बाछें खिल गयीं। पीलातुस की आकृति के बारे में ख़ुद उसका भी वही विचार था, जो गोलेनीश्चेव ने व्यक्त किया था। यह उन लाखों-करोड़ों अन्य सम्मतियों में से एक थी, जो मिख़ाइलोव निश्चित रूप से जानता था कि ऐसे ही सही होंगी, फिर भी इससे गोलेनीश्चेव की सम्मति का उसके लिये महत्त्व कम नहीं हो जाता था। इस टिप्पणी से उसके मन में गोलेनीश्चेव के लिये स्नेह उमड़ पड़ा और उदासी की जगह वह अचानक ख़ुशी की तरंग में आ गया। इसी क्षण उसका सारा चित्र समूचे सप्राण जगत की अवर्णनीय जटिलता के साथ सजीव हो उठा। मिख़ाइलोव ने फिर से यह कहने की कोशिश की कि पीलातुस को उसने इसी रूप में समझा है, किन्तु उसके होंठ वश में न रहते हुए कांप रहे थे और वह कुछ भी न कह पाया। व्रोन्स्की और आन्ना भी ऐसी धीमी आवाज़ में कुछ कह रहे थे, जो किसी हद तक इसलिये धीमी थी कि चित्रकार का किसी तरह अपमान न हो जाये और किसी हद तक इसलिये कि ऊंची आवाज़ में कोई बेवक़ूफ़ी की बात न कह दें, जो कला की चर्चा करते हुए आसानी से कही जा सकती है और जो चित्र-प्रदर्शनियों में सामान्यतः कही जाती है। मिख़ाइलोव को लगा कि चित्र ने उन्हें भी प्रभावित किया है। वह उनके पास गया।

"ईसा के चेहरे का भाव कितना अद्भुत है!" आन्ना ने कहा। उसने जो कुछ देखा, उसमें यह भाव ही उसे सबसे अधिक अच्छा लगा था। उसने अनुभव किया कि यही चित्र का केन्द्र-बिन्दु है और इसलिये यह प्रशंसा चित्रकार को अच्छी लगेगी। "साफ़ नज़र आ रहा है कि उसे पीलातुस पर दया आ रही है।"

यह भी उन लाखों-करोड़ों सही विचारों में से था, जो उसके चित्र और ईसा की आकृति के बारे में व्यक्त किये जा सकते थे। आन्ना ने कहा था कि ईसा को पीलातुस पर दया आ रही है। ईसा के भाव में दया का होना तो लाज़िमी था, क्योंकि उसमें प्रेम का भाव है, अलौकिक शान्ति है, मृत्यु की तत्परता और शब्दों की निस्सारता की

चेतना है। ज़ाहिर है कि पीलातुस में नौकरशाह और ईसा में दया का भाव है, क्योंकि एक दैहिक और दूसरा आत्मिक जीवन का मूर्त्त रूप है। यह सब और अन्य बहुत कुछ मिख़ाइलोव के मस्तिष्क में कौंध गया और फिर से उसका चेहरा ख़ुशी से चमक उठा।

"हां, और कितने अच्छे ढंग से बनायी गयी है यह आकृति, इसमें कितनी हवा विद्यमान है। इसके गिर्द चक्कर लगाया जा सकता है," गोलेनीश्चेव ने कहा और अपनी इस टिप्पणी से उसने स्पष्टतः यह प्रकट करना चाहा कि वह आकृति के विषय और भावों का अनुमोदन नहीं करता है।

"हां, अद्भुत कला-पारंगतता है!" व्रोन्स्की ने कहा। "पीछे वाली आकृतियां कितनी स्पष्टता से उभरी हुई हैं! इसे कहते हैं तकनीक," उसने गोलेनीश्चेव को सम्बोधित करते हुए कहा और इस तरह उनके बीच हुई उस बातचीत की ओर संकेत किया कि व्रोन्स्की शायद ही कभी ऐसी पारंगतता प्राप्त कर सकेगा।

"हां, हां, अद्भुत है!" गोलेनीश्चेव और आन्ना ने पुष्टि की। इस चीज़ के बावजूद कि मिख़ाइलोव ख़ुशी से उत्तेजित था, तकनीक-सम्बन्धी टिप्पणी से उसके दिल को ठेस लगी और व्रोन्स्की की तरफ़ ग़ुस्से से देखकर उसने नाक-भौंह सिकोड़ ली। उसने यह तकनीक शब्द अक्सर सुना था और निश्चित रूप से यह नहीं जानता था कि इसका क्या अर्थ है। वह जानता था कि इस शब्द के अन्तर्गत विषय की तनिक भी परवाह न करते हुए यन्त्रवत चित्रकारी करने का भाव निहित है। इस समय की गयी व्रोन्स्की की प्रशंसा की तरह ही उसका अनेक बार इस बात की तरफ़ ध्यान गया था कि तकनीक को आन्तरिक गुण के मुक़ाबले में रखा जाता था, मानो जो बुरा था, उसका अच्छा चित्रण सम्भव था। वह जानता था कि विचारों को अनावृत्त करने और रूप देने के लिये बहुत ध्यान और सावधानी अपेक्षित थी, किन्तु जहां तक चित्रण कला या तकनीक का सम्बन्ध था, तो वह यहां बिल्कुल नहीं थी। अगर कोई बच्चा या उसकी बावर्चिन वह देख पाती, जो उसे दिखाई देता था, तो वह भी उसे अनावृत्त करने में समर्थ रहती। बहुत ही अनुभवी और कुशल चित्रकार भी, यदि विषय की सीमा-रेखायें उसे पहले से स्पष्ट न हों, यांत्रिक क्षमता के आधार पर कुछ

भी चित्रित नहीं कर सकता। इसके अलावा वह साफ़ तौर पर यह देख रहा था कि अगर तकनीक की चर्चा करनी हो, तो उसकी इसके लिये प्रशंसा नहीं की जा सकती थी। उसने जो कुछ चित्रित किया था और कर रहा था, उस सबमें उसे आंखों को अखरने वाली त्रुटियां दिखाई दे रही थीं, जो असावधानी का नतीजा थीं, जिससे उसने विचारों को अनावृत्त किया था और जिन्हें अब वह पूरी रचना को बिगाड़े बिना ठीक नहीं कर सकता था। सभी आकृतियों और चेहरों पर उसे ऐसे दोष दिखाई दे रहे थे, जो चित्र को बिगाड़ते थे।

"अगर आप अनुमति दें, तो मैं एक बात कहना चाहूंगा," गोलेनीश्चेव ने कहा।

"बड़ी खुशी से, कृपया कहिये," बनावटी मुस्कान लाते हुए मिखाइलोव ने जवाब दिया।

"यह कि आपके चित्र में मानवरूपी भगवान है, न कि भगवानरूपी मानव। वैसे मैं यह जानता हूं कि आप ऐसा ही चाहते थे।"

"मैं ऐसा ईसा चित्रित नहीं कर सकता था, जो मेरी आत्मा में नहीं है," मिखाइलोव ने उदासी से जवाब दिया।

"हां, लेकिन उस हालत में, अगर अपना विचार प्रकट करने की अनुमति दें... आपका चित्र इतना अच्छा है कि मेरी टिप्पणी से इसको कोई हानि नहीं पहुंच सकती और इसके अलावा यह मेरी व्यक्तिगत राय है। आपके मामले में दूसरी बात है। आपका विषय ही दूसरा है। किन्तु हम उदाहरण के लिये इवानोव को ले सकते हैं। मैं समझता हूं कि अगर ईसा को ऐतिहासिक व्यक्ति के स्तर तक उतार दिया गया है, तो इवानोव के लिये कोई दूसरा, ताज़ा और अछूता ऐतिहासिक विषय चुनना ज़्यादा अच्छा रहता।"

"किन्तु यदि यही कला के लिये महानतम विषय हो, तो?"

"अगर ढूंढ़े जायें, तो अन्य विषय भी मिल जायेंगे। लेकिन बात यह है कि कला विवाद और टीका-टिप्पणी को सहन नहीं करती। मगर इवानोव के चित्र के मामले में आस्तिकों और नास्तिकों के सामने यह सवाल पैदा होता है – वह भगवान है या नहीं? और इस तरह प्रभाव की एकरूपता नष्ट हो जाती है।"

"मगर क्यों? मुझे लगता है कि पढ़े-लिखे लोगों के लिये ऐसा विवाद हो ही नहीं सकता," मिख़ाइलोव ने कहा।

गोलेनीश्चेव इस बात से सहमत नहीं हुआ और कला के लिये आवश्यक प्रभाव की एकरूपता के अपने पहले विचार से चिपके रहकर उसने मिख़ाइलोव को पराजित कर दिया।

मिख़ाइलोव उत्तेजित था, मगर अपने विचार के पक्ष में कुछ नहीं कह पाया।

(१२)

आन्ना और व्रोन्स्की अपने मित्र की बुद्धिमत्तापूर्ण वाचालता के कारण खिन्न होते हुए देर से एक-दूसरे की ओर देख रहे थे और आख़िर चित्रकार के आगे बढ़ने की प्रतीक्षा किये बिना व्रोन्स्की एक अन्य, छोटे चित्र के सामने जा खड़ा हुआ।

"अहा, क्या ख़ूब है, क्या कमाल है! अजूबा है! कितना बढ़िया चित्र है!" दोनों एक स्वर में कह उठे।

"इन्हें ऐसा क्या पसन्द आ गया?" मिख़ाइलोव ने सोचा। वह तीन वर्ष पहले बनाये गये इस चित्र के बारे में भूल ही चुका था। वह उन सभी यातनाओं और परम हर्ष के उन क्षणों को भूल चुका था, जो उसने उन कई महीनों के दौरान अनुभव किये थे, जब वह दिन-रात इसी चित्र में डूबा रहा था। वह ऐसे ही भूल गया था, जैसे समाप्त किये हुए सभी चित्रों के बारे में भूल जाता था। उसे इस चित्र को देखना भी पसन्द नहीं था और केवल इसीलिये इसे लटका दिया था कि एक अंग्रेज़ ग्राहक के आने की सम्भावना थी।

"यह तो योंही बहुत पहले बनाया गया चित्र है," उसने कहा।

"कैसा कमाल है!" गोलेनीश्चेव ने भी स्पष्टतः चित्र के सौन्दर्य से प्रभावित होते हुए सच्चे मन से कहा।

विल्लो वृक्ष की छाया में दो लड़के बंसियों से मछलियां पकड़ रहे थे। उनमें से बड़े लड़के ने कुछ ही देर पहले बंसी पानी में डाली थी और पूरी तरह इसी काम में खोया हुआ बड़ी कोशिश से झाड़ियों के पीछे से कार्क को सामने ला रहा था। दूसरा, जो उससे छोटा था,

कोहनियों के बल घास पर लेटा था, अस्त-व्यस्त सुनहरे बालों वाला सिर हाथों पर टिकाये था और सोच में डूबी नीली आंखों से पानी को ताक रहा था। किस चीज़ के बारे में सोच रहा था वह?

उसके इस चित्र की अत्यधिक प्रशंसा से मिख़ाइलोव के दिल में पहले वाली उत्तेजना सिहरी, किन्तु वह अतीत की कृति के प्रति ऐसी व्यर्थ की भावना से डरता था और वह उसे पसन्द नहीं थी। इसीलिये कि बेशक उसे इन प्रशंसाओं से ख़ुशी हो रही थी, फिर भी उसने तीसरे चित्र की ओर दर्शकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहा।

किन्तु व्रोन्स्की ने पूछा कि चित्र बिकाऊ है या नहीं? मिख़ाइलोव के लिये, जो दर्शकों के कारण बहुत उत्तेजित था, इस समय पैसों की चर्चा सर्वथा अप्रिय थी।

"इसे बेचने के लिये ही लटकाया गया है," उसने माथे पर बल डालते हुए उदासी से उत्तर दिया।

दर्शकों के जाने के बाद मिख़ाइलोव पीलातुस और ईसा के चित्र के सामने बैठ गया और मन ही मन वह सब दोहराया जो उन्होंने कहा था या जो शब्दों में नहीं कहा गया था, मगर जो उनका अभिप्राय था। और अजीब बात यह थी कि जब दर्शक यहां थे और जब वह मन ही मन उनके दृष्टिकोण से सहमत हो गया था, उसके लिये अब अचानक उसका कोई महत्त्व न रहा। वह इस चित्र को अपनी चित्रकार की पूरी अबाध दृष्टि से देखने लगा और उसने अपने को त्रुटिहीनता की उस अवस्था और इसलिये अपने चित्र की महत्ता की उस अवस्था में पाया, जो शेष सभी रुचियों की अवहेलना करनेवाले उस तनाव के लिये ज़रूरी थी, केवल जिसके अन्तर्गत ही वह काम कर सकता था।

फिर भी ईसा के पांव को आगे की ओर छोटा दिखाना ठीक नहीं था। उसने रंग-पट्टिका ली और काम करने लगा। पांव को ठीक करते हुए वह लगातार पीछे की ओर बनी यूहन्ना की आकृति को देखता जाता था, जिसकी ओर दर्शकों का ध्यान नहीं गया था, मगर उसे मालूम था कि वह उसके फ़न का कमाल है। पांव को ठीक करने के बाद उसने यूहन्ना की आकृति पर काम करना चाहा, किन्तु अनुभव किया कि ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि बहुत ही अधिक भाव-विह्वल है। वह उदासीन होने पर तथा इसी प्रकार तब भी कांम नहीं कर

मक़ता था, जब बहुत ही द्रवित मनःस्थिति में होता था और सब कुछ बहुत स्पष्ट रूप से देख पाता था। उदासीनता से प्रेरणा की ओर संक्रमण के बीच केवल एक ही पैड़ी थी जब वह काम कर सकता था। इस समय वह बहुत ही विह्वल था। उसने चित्र को ढक देना चाहा, मगर चादर को हाथ से थामे हुए रुका रहा, हर्ष-मगन होकर मुस्कराता और देर तक यूहन्ना की आकृति को देखता रहा। आख़िर, मानो उदास मन से उसने चित्र से अपनी दृष्टि हटाई और थका-हारा, किन्तु बहुत ही ख़ुश-ख़ुश अपने घर को चल दिया।

व्रोन्स्की, आन्ना और गोलेनीश्चेव लौटते हुए अपने को विशेष रूप से सजीव और प्रसन्न अनुभव कर रहे थे। वे मिख़ाइलोव और उसके चित्रों की चर्चा कर रहे थे। "प्रतिभा" शब्द, जिससे उनका अभिप्राय जन्मजात, लगभग शारीरिक क्षमता थी, जो मन और मस्तिष्क पर निर्भर नहीं थी और जिसका नाम वे चित्रकार द्वारा अनुभूत हर चीज़ को देना चाहते थे, अक्सर उनकी बातचीत में सुनाई दे रहा था, क्योंकि यह शब्द उस चीज़ को अभिव्यक्ति देने के लिये ज़रूरी था, जिसे वे बिल्कुल नहीं समझते थे, मगर जिसका उपयोग करना चाहते थे। वे कह रहे थे कि उसमें प्रतिभा तो है, किन्तु शिक्षा के अभाव के कारण, जो हमारे सभी रूसी चित्रकारों का दुर्भाग्य है, उसकी प्रतिभा का विकास नहीं हो पाया है। किन्तु लड़कों के चित्र ने उनके दिल में घर कर लिया था और वे रह-रहकर उसी को याद करते थे।

"क्या कमाल का है वह चित्र! कितनी सफलता और कितनी सहजता से बनाया है उसने उसे! उसे इस बात की चेतना ही नहीं है कि कितना बढ़िया है वह। हां, उसे हाथ से निकलने नहीं देना चाहिये, ख़रीद लेना चाहिये," व्रोन्स्की ने कहा।

(१३)

मिख़ाइलोव ने अपना चित्र व्रोन्स्की को बेच दिया और आन्ना का छविचित्र बनाने को राज़ी हो गया। नियत दिन आकर उसने काम शुरू कर दिया।

पांच बैठकों के बाद छविचित्र ने सभी को, विशेषतः व्रोन्स्की को,

सो भी केवल समानता से नहीं बल्कि विशेष सौन्दर्य से आश्चर्यचकित कर दिया। "उसका यह सबसे अधिक प्यारा आत्मिक लक्षण ढूंढ़ पाने के लिये उसे उसी तरह से जानना और प्यार करना ज़रूरी था, जैसे मैं प्यार करता था," व्रोन्स्की सोच रहा था, यद्यपि इस छविचित्र की बदौलत ही वह उसके इस सबसे प्यारे आत्मिक लक्षण को जान पाया था। किन्तु यह लक्षण इतना सत्यानुरूप था कि उसे तथा अन्य लोगों को भी ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे बहुत पहले से ही उससे परिचित थे।

"मैं कितने समय से कोशिश कर रहा हूं, मगर कुछ नहीं कर पाया," उसने अपने छविचित्र के बारे में कहा, "किन्तु उसने देखा और चित्र बना डाला। इसे कहते हैं तकनीक।"

"यह आ जायेगी," गोलेनीश्चेव ने उसे तसल्ली दी, जिसके मतानुसार व्रोन्स्की प्रतिभासम्पन्न और इससे भी बढ़कर, शिक्षित है, जो कला के प्रति ऊंचा दृष्टिकोण प्रदान करता है। व्रोन्स्की की प्रतिभा के बारे में गोलेनीश्चेव के इस विश्वास को इस बात से भी बल मिलता था कि उसे अपने लेखों और विचारों के लिये व्रोन्स्की की प्रशंसा की आवश्यकता थी और वह यह अनुभव करता था कि प्रशंसा और समर्थन पारस्परिक होने चाहिये।

पराये घर और विशेषत: व्रोन्स्की के पालाज़्ज़ो में मिख़ाइलोव अपने स्टूडियो की तुलना में बिल्कुल दूसरा आदमी था। वह औपचारिक आदर से पेश आता था, मानो ऐसे लोगों के निकट होने से डरता हो, जिनकी इज़्ज़त नहीं करता था। वह व्रोन्स्की को "हुज़ूर" कहकर सम्बोधित करता और आन्ना तथा व्रोन्स्की के आमंत्रित करने पर भी भोजन करने के लिये न रुकता तथा चित्रण की बैठकों के सिवा कभी इनके यहां न आता। आन्ना दूसरों की तुलना में उसके प्रति अधिक स्नेह दिखाती और अपने छविचित्र के लिये आभारी थी। व्रोन्स्की उसके साथ कहीं अधिक नम्रता का व्यवहार करता और स्पष्टत: अपने चित्र के बारे में चित्रकार की राय जानने को उत्सुक था। गोलेनीश्चेव उसे कला का सही अर्थ समझाने का एक भी अवसर हाथ से न जाने देता। किन्तु मिख़ाइलोव इन सभी लोगों के प्रति समान रूप से उदासीन रहा। आन्ना महसूस करती कि मिख़ाइलोव को उसकी तरफ़ देखना अच्छा लगता है, मगर वह उसके साथ बातचीत करने से कतराता है। अपनी

चित्रकारी के बारे में व्रोन्स्की की चर्चा के समय वह मौन साधे रहा और जब उसे व्रोन्स्की द्वारा बनाया गया चित्र दिखाया गया, वह ख़ामोश रहा। गोलेनीश्चेव की बातों से वह स्पष्टतः ऊब गया था और उसकी किसी बात को नहीं काटता था।

कुल मिलाकर, जब इन लोगों ने मिख़ाइलोव को निकटता से जाना, तो उसके संयत, अप्रिय, यहां तक कि शत्रुतापूर्ण रवैये के कारण वह उन्हें अच्छा नहीं लगा। जब चित्र बनाने की बैठकें समाप्त हो गयीं, उनके हाथों में बहुत ही सुन्दर छविचित्र रह गया और उसने आना बन्द कर दिया, तो उन्हें ख़ुशी हुई।

गोलेनीश्चेव ने ही सबसे पहले उस विचार को व्यक्त किया, जो उन सभी के दिल में था, यानी यह कि मिख़ाइलोव व्रोन्स्की से ईर्ष्या करता है।

"चलो, मान लें कि वह ईर्ष्या नहीं करता, क्योंकि उसमें प्रतिभा है, मगर उसे इस बात से चिढ़ महसूस होती है कि एक कुलीन और अमीर आदमी, सो भी काउंट (इन सबको यह फूटी आंखों नहीं सुहाता), किसी विशेष श्रम के बिना वही कुछ, यदि उससे बेहतर नहीं, करता है, जिसे उसने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया है। मुख्य बात तो शिक्षा है, जिससे वह वंचित है।"

व्रोन्स्की मिख़ाइलोव का पक्ष लेता था, मगर अपने दिल की गहराई में वह इस पर विश्वास करता था, क्योंकि उसके मतानुसार दूसरी, नीची दुनिया के आदमी का ईर्ष्या करना लाज़िमी था।

आन्ना के छविचित्रों को, जिन्हें उन दोनों ने आन्ना को सामने बिठाकर बनाया था, व्रोन्स्की को अपने और मिख़ाइलोव के बीच का अन्तर स्पष्ट कर देना चाहिये था। किन्तु वह इस अन्तर को नहीं देख पाया। उसने तो मिख़ाइलोव के बाद केवल यह मानते हुए कि अब उसके चित्र की आवश्यकता नहीं थी, उसे बनाना बन्द कर दिया। मध्ययुगीन जीवन का अपना चित्र वह बनाता रहा। ख़ुद उसे, गोलेनीश्चेव और विशेषतः आन्ना को वह चित्र बहुत अच्छा लगता था, क्योंकि मिख़ाइलोव के चित्र की तुलना में प्रसिद्ध चित्रों से कहीं अधिक मिलता-जुलता था।

आन्ना के छविचित्र में मिख़ाइलोव का मन बेशक बहुत रम गया

था, फिर भी छविचित्र की समाप्ति पर वह इन लोगों से भी ज़्यादा ख़ुश हुआ क्योंकि उसे अब कला के बारे में गोलेनीश्चेव का विवेचन नहीं सुनना पड़ेगा तथा व्रोन्स्की की चित्रकला के बारे में वह भूल जा सकेगा। वह जानता था कि व्रोन्स्की को चित्रकारी से खिलवाड़ करने से नहीं रोका जा सकता, वह जानता था कि व्रोन्स्की और उसी तरह के दूसरे अधकचरे चित्रकार जैसे भी चाहें चित्र बना सकते हैं, मगर उसे यह अच्छा नहीं लगा। किसी आदमी को मोम की बड़ी-सी पुतली बनाने और उसे चूमने से नहीं रोका जा सकता। किन्तु यदि यह व्यक्ति अपनी पुतली लेकर किसी प्रेमी के सामने जा बैठे और उस पुतली को वैसे ही सहलाने, गले लगाने लगे, जैसे प्रेमी अपनी प्रेमिका को सहलाता है, तो प्रेमी को ज़रूर बुरा लगेगा। व्रोन्स्की की चित्रकारी देखकर मिख़ाइलोव को ऐसी ही अप्रिय अनुभूति हुई – उसे हंसी, खीझ और दया भी आई तथा बुरा भी लगा।

चित्रकला और मध्यकालीन युग में व्रोन्स्की की दिलचस्पी बहुत दिन नहीं चली। चित्रकला के प्रति उसकी ऐसी निखरी रुचि थी कि वह अपने चित्र को पूरा नहीं कर पाया। चित्र रुक गया। उसे धुंधला-सा आभास हो रहा था कि उसके चित्र की त्रुटियां, जो शुरू में कम दिखाई दे रही थीं, चित्र को जारी रखने पर बहुत ही साफ़ दिखाई देने लगेंगी। उसके साथ गोलेनीश्चेव जैसी बात हुई, जो यह महसूस करता था कि उसके पास कहने को कुछ नहीं है और लगातार यह कहकर अपने को धोखा देता रहता था कि उसका विचार परिपक्व नहीं हुआ, कि वह उसे पका रहा है और सामग्री तैयार कर रहा है। किन्तु गोलेनीश्चेव को इससे कटुता और यातना अनुभव होती थी, जबकि व्रोन्स्की अपने को धोखे तथा यातना का और विशेषत: कटुता का शिकार नहीं होने दे सकता था। उसने अपने चरित्र की दृढ़ता के अनुसार किसी तरह का स्पष्टीकरण और कोई सफ़ाई दिये बिना चित्र बनाना बन्द कर दिया।

किन्तु इस दिलचस्पी के बिना उसे अपनी और आन्ना की ज़िन्दगी, जो उसकी इस निराशा को समझने में असमर्थ थी, इस इतालवी शहर में इतनी ऊब भरी प्रतीत हुई, पालाज़्ज़ो अचानक इतना पुराना और गन्दा लगने लगा, पर्दों के धब्बे, फ़र्श की दरारें और कारनिसों

का टूटा हुआ पलस्तर इतना अखरने लगा तथा हर दिन गोलेनीश्चेव, इतालवी प्रोफ़ेसर और जर्मन यात्री की संगत इतनी खटकने लगी कि जीवन को बदलना ज़रूरी हो गया। उन्होंने रूस, अपने गांव जाने का निर्णय किया। व्रोन्स्की पीटर्सबर्ग में भाई के साथ सम्पत्ति का बंटवारा करना चाहता था और आन्ना बेटे से मिलना चाहती थी। उन्होंने व्रोन्स्की की बड़ी पैतृक जागीर पर गर्मी बिताने का इरादा बनाया।

(१४)

लेविन की शादी हुए तीन महीने हो चुके थे। वह सुखी था, किन्तु तनिक भी वैसे नहीं, जैसे उसने आशा की थी। हर क़दम पर उसे अपने पहले सपनों के बारे में निराशा होती थी और नये, अप्रत्याशित आकर्षण उसके सामने आते थे। लेविन सुखी था, मगर पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने के बाद वह हर क़दम पर यह अनुभव करता था कि सब कुछ वैसा ही नहीं था, जैसी उसने कल्पना की थी। वह हर क़दम पर वैसा ही अनुभव करता था, जैसा झील में नाव को बड़े अच्छे और सुखद ढंग से तैरते हुए देखकर मुग्ध होनेवाला व्यक्ति खुद उस नाव में बैठने पर महसूस करता है। वह देख रहा था कि इधर-उधर हिले-डुले बिना टिककर बैठना ही काफ़ी नहीं है, क्षण भर को भी यह भूले बिना कि किस दिशा में जाना है, उसे अपने दिमाग़ से काम भी लेना चाहिये, कि उसके पैरों के नीचे पानी है और उसे नाव को खेना भी है, कि नाव को तैरते हुए देखना तो आसान था, मगर ऐसा करना बहुत सुखद होते हुए भी कठिन है।

जब वह अविवाहित था, तो दूसरों के दाम्पत्य जीवन, पति-पत्नी की छोटी-छोटी चिन्ताओं, कलहों और ईर्ष्या को देखकर वह तिरस्कार-पूर्वक मुस्करा ही देता था। उसे विश्वास था कि उसके भावी दाम्पत्य जीवन में न केवल ऐसा कुछ नहीं होगा, बल्कि उसे लगता था कि उसके बाहरी रूप भी दूसरों के जीवन से सर्वथा भिन्न होंगे। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। पत्नी के साथ उसके जीवन ने न केवल विशेष रूप धारण नहीं किया, बल्कि, इसके विपरीत, सब कुछ उन तुच्छ चीज़ों पर ही आधारित हो गया, जिन्हें वह पहले इतने तिरस्कार से देखता

था और जिन्होंने अब उसकी इच्छा के विरुद्ध ऐसा असाधारण और निर्विवाद महत्त्व ग्रहण कर लिया था। लेविन अनुभव करता था कि इन छोटी-मोटी चीज़ों को व्यवस्थित करना उतना आसान नहीं था, जितना उसे पहले प्रतीत होता था। बेशक लेविन ऐसा मानता था कि पारिवारिक जीवन के बारे में उसके बहुत ही स्पष्ट विचार हैं, पर वास्तव में सभी पुरुषों की भांति वह भी अनजाने में पारिवारिक जीवन को केवल प्रणय-सुख ही समझता था, जिसमें किसी भी चीज़ को बाधा नहीं बनना चाहिये और छोटी-मोटी चिन्ताओं को जिसकी ओर से ध्यान नहीं बंटाना चाहिये। लेविन के मतानुसार उसे अपना काम करना और फिर प्रणय-सुख में उससे विश्राम पाना चाहिये। पत्नी को केवल प्रेम-पात्री होना चाहिये, बस। किन्तु सभी अन्य पुरुषों की भांति वह यह भूल जाता था कि पत्नी को भी काम करना चाहिये। उसे इस बात से हैरानी हो रही थी कि यह काव्यमयी और प्यारी कीटी दाम्पत्य जीवन के पहले सप्ताहों में ही नहीं, बल्कि पहले दिनों में ही मेज़पोशों, फ़र्नीचर, मेहमानों के लिये पलंगों, ट्रे, बावर्ची, दोपहर के भोजन, आदि के बारे में सोच सकती थी, याद रख सकती थी और चिन्ता कर सकती थी। विवाह के पहले ही वह कीटी के उस दृढ़ निश्चय से चकित रह गया था, जिससे उसने विवाह के बाद विदेश जाने से इन्कार और गांव जाने का निर्णय किया था, मानो जानती हो कि उसे क्या करना चाहिये और अपने प्यार के सिवा वह किसी और चीज़ के बारे में सोच सकती हो। लेविन को तब इससे दुख हुआ था और अब उसकी छोटी-छोटी चिन्ताओं और परेशानियों से उसके दिल को ठेस लगी। किन्तु उसने देखा कि कीटी के लिये यह सब ज़रूरी है। और उसे प्यार करने के कारण, यद्यपि वह यह नहीं समझ पाता था, कि उसे इन चिन्ताओं की क्या ज़रूरत है, यद्यपि वह इनपर हंसता भी था, फिर भी मुग्ध हुए बिना नहीं रह पाता था। उसे यह देखकर हंसी आई कि कैसे उसने मास्को से लाया गया फ़र्नीचर सजाया, कैसे उसके और अपने कमरे को नये ढंग से व्यवस्थित किया, कैसे पर्दे लटकाये, कैसे भावी मेहमानों और डौली के लिये जगह निश्चित की, अपनी नौकरानी के रहने की जगह तय की, कैसे बूढ़े बावर्ची को दोपहर का खाना बनाने की हिदायतें दीं और कैसे अगाफ़्या

मिख़ाइलोव्ना से रसद का प्रबन्ध छीनने के लिये उससे उलझी। उसने देखा कि कैसे बूढ़ा बावर्ची कीटी को मुग्ध भाव से देखते और उसकी अनुभवहीन तथा असम्भव हिदायतें सुनते हुए मुस्कराया था, कैसे रसदख़ाने में नवयुवती मालिकिन के नये प्रबन्ध के बारे में अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने सोच में डूबते हुए स्नेह से सिर हिलाया था, कि कीटी उस समय असाधारण रूप से प्यारी लगती थी, जब वह हंसते-रोते हुए उसके पास आकर यह कहती थी कि नौकरानी माशा उसे छोकरी मानने की ही आदी हो चुकी है और इसलिये कोई भी उसकी बात पर कान नहीं देता है। उसे यह प्रिय, किन्तु अजीब लगता और वह सोचता कि इसके बिना ही बेहतर होता।

लेविन कीटी की स्थिति में हुए परिवर्तन के उस भाव से अनजान था, जो वह यहां आकर अनुभव कर रही थी। मां-बाप के यहां कभी-कभी उसका क्वास के साथ पत्तागोभी खाने को मन होता या वह टॉफ़ी खाना चाहती और दोनों में से कोई भी चीज़ उसे नहीं मिलती थी। किन्तु अब वह जो भी चाहती मंगवा सकती थी, ढेर सारी टॉफ़ियां ख़रीद सकती थी, अपने पास जितने भी चाहती पैसे रख सकती थी और मनपसन्द पेस्ट्री मंगवा सकती थी।

वह अब बहुत ख़ुश होते हुए बच्चों के साथ डौली के अपने यहां आने की कल्पना कर रही थी। ख़ास तौर पर इसलिये कि वह उसके हर बच्चे के लिये उसकी मनपसन्द मिठाई मंगवायेगी और डौली उसकी नयी गृहव्यवस्था का मूल्यांकन कर सकेगी। कीटी ख़ुद नहीं जानती थी कि क्यों और किसलिये, मगर गिरस्ती की झंझटें उसे अदम्य रूप से अपनी ओर खींचती थीं। वह सहजज्ञान से वसन्त की निकटता को अनुभव कर रही थी और यह जानते हुए कि बुरे मौसम के दिन भी आयेंगे, अपने घोंसले को बना रही थी, उसे बनाने और साथ ही यह सीखने की उतावली कर रही थी कि इसे कैसे बनाया जाये।

कीटी की छुटफुट चीज़ों की यह चिन्ता, जो लेविन के प्रारम्भिक समय के ऊंचे सुख-आदर्श के इतनी प्रतिकूल थी, उसकी निराशाओं में से एक थी। यही प्यारी चिन्ता, जिसका अर्थ समझने में वह असमर्थ था, किन्तु वह जिसे पसन्द किये बिना नहीं रह सकता था, उसका एक नया आकर्षण भी थी।

उन दोनों के आपसी झगड़े दूसरी निराशा और आकर्षण थे। लेविन कभी यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसके और उसकी पत्नी के बीच बड़े नाजुक, आपसी आदर और प्रेम के अतिरिक्त कोई अन्य सम्बन्ध भी हो सकते हैं, और अचानक पहले ही दिनों में उनके बीच ऐसा मन-मुटाव हो गया कि कीटी ने लेविन से कहा कि वह उसे प्यार नहीं करता, सिर्फ़ अपने को ही प्यार करता है, वह रो पड़ी और हाथ झटककर उसे दूर हटा दिया।

उनके बीच पहला झगड़ा इस बात से हुआ कि लेविन घोड़े पर सवार होकर नया फ़ार्म देखने गया था और वहां उसे आध घण्टा ज़्यादा लग गया, क्योंकि वह छोटे रास्ते से घर लौटना चाहता था और रास्ते में भटक गया। वह केवल कीटी के बारे में, उसके प्यार और सुख के बारे में सोचता हुआ घर लौट रहा था और ज्यों-ज्यों घर के अधिक निकट आता जा रहा था, कीटी के प्रति उसकी प्रेम-भावना और अधिक तीव्र होती जा रही थी। जिस भावना के साथ वह श्चेर्बात्स्की के यहां कीटी के सामने विवाह-प्रस्ताव करने गया था, वह वैसी ही, उससे भी अधिक तीव्र भावना के साथ भागता हुआ कीटी के कमरे में दाखिल हुआ। अचानक उसे अपने सामने बहुत ही उदास, ऐसा भाव लिये हुआ चेहरा दिखाई दिया, जैसा उसने पहले कभी नहीं देखा था। लेविन ने कीटी को चूमना चाहा, मगर उसने उसे परे हटा दिया।

"क्या बात है?"

"तुम मज़े करते हो..." कीटी ने शान्त रहते, किन्तु ज़हरीला तीर छोड़ना चाहते हुए कहना शुरू किया।

किन्तु उसने मुंह खोला ही था कि बेमानी ईर्ष्या से प्रेरित भर्त्सना के शब्द और वह सभी कुछ फूट पड़ा, जो आध घण्टे तक खिड़की में निश्चल बैठे रहने पर उसे व्यथित करता रहा था। केवल इसी समय पहली बार वह बात स्पष्ट रूप से उसकी समझ में आई, जिसे शादी के बाद गिरजे से उसे घर लाते समय वह नहीं समझ पाया था। वह समझ गया कि कीटी न केवल उसके निकट थी, बल्कि यह कि अब उसे यह मालूम नहीं कि कीटी कहां समाप्त होती है और वह खुद कहां शुरू होता है। उसने दो भागों में विभाजित होने की जो यातनापूर्ण

भावना इस क्षण अनुभव की, उसी से वह यह समझ पाया। पहले क्षण में तो उसने कीटी के व्यवहार का बुरा माना, किन्तु उसी समय उसने यह अनुभव किया कि उससे नाराज़ नहीं हो सकता, क्योंकि कीटी वह ख़ुद है। पहले क्षण में उसे उस व्यक्ति जैसी अनुभूति हुई, जो पीछे से ज़ोरदार प्रहार होने पर आगबबूला होकर अपराधी से बदला लेने के लिये मुड़ता है और फिर जिसे यह विश्वास हो जाता है कि भूल से ख़ुद उसने ही अपने को चोट लगा ली है, कि वह किसी पर अपना ग़ुस्सा नहीं निकाल सकता और उसे चोट को सहन तथा अपने को शान्त करना चाहिये।

बाद में उसने इतने ज़ोर से इस चीज़ को कभी महसूस नहीं किया, किन्तु इस बार वह देर तक नहीं सम्भल पाया। उसकी सहज प्रकृति ने उससे यह मांग की कि वह अपनी सफ़ाई दे, कीटी के सामने उसकी भूल प्रमाणित करे, किन्तु उसका अपराध सिद्ध करने का यह मतलब होता कि उसे और चिढ़ाये और उस खाई को और चौड़ा कर दे, जो इस दुख का कारण थी। एक अभ्यस्त भावना उसे इस ओर आकर्षित करती थी कि अपने को अपराध-मुक्त करके कीटी को अपराधी ठहराये, किन्तु एक दूसरी, अधिक प्रबल भावना इस ओर खींचती थी कि जल्दी से, जितनी भी जल्दी हो सके, पैदा हो जानेवाली खाई को बढ़ने न देकर पाट दिया जाये। ऐसे अनुचित अपराध को चुपचाप सहना यातना-पूर्ण था, किन्तु अपनी सफ़ाई देकर कीटी को ठेस लगाना और भी अधिक बुरा था। अर्धनिद्रा में दर्द से छटपटाते व्यक्ति की भांति उसने अपनी दुखती जगह को काटकर दूर फेंक देना चाहा, किन्तु होश में आने पर उसने अनुभव किया कि कसकती जगह तो वह ख़ुद है। उसे केवल यही कोशिश करनी चाहिये थी कि दुखती जगह को दर्द सहन करने में सहायता दे और उसने यही करने की कोशिश की।

इन दोनों के बीच सुलह हो गयी। कीटी ने यह महसूस कर लिया कि क़सूर उसी का है, मगर उसे स्वीकार न करते हुए वह लेविन के प्रति अधिक स्नेहशील हो गयी और उन्होंने प्यार की एक नयी, दुगुनी ख़ुशी अनुभव की। किन्तु इससे ऐसे झगड़ों के भविष्य में दोहराये जाने और सो भी बहुत अप्रत्याशित तथा तुच्छ कारणों से ऐसा होने में कोई अन्तर नहीं पड़ा। ये झगड़े इसलिये भी अक्सर होते थे कि वे दोनों

अभी यह नहीं जानते थे कि एक-दूसरे के लिये क्या महत्त्वपूर्ण है तथा इस कारण भी कि शुरू के इस वक़्त में अक्सर दोनों का मूड ख़राब होता था। जब एक का मूड अच्छा और दूसरे का बुरा होता, तो शान्ति बनी रहती, किन्तु जब दोनों का मूड ख़राब होता, तो समझ में न आनेवाले ऐसे तुच्छ कारणों से झगड़े होते कि बाद में यह याद भी न कर पाते कि किस कारण उनके बीच झगड़ा हुआ था। यह सच है कि जब वे दोनों अच्छे मूड में होते, तो उनके जीवन की ख़ुशी दुगुनी हो जाती। फिर भी इनके जीवन का यह पहला समय बहुत बोझिल था।

शुरू के इस सारे वक़्त में वह ज़ंजीर, जिससे वे दोनों बंधे थे, कभी एक तो कभी दूसरी दिशा में खिंची हुई सी प्रतीत होती रही। कुल मिलाकर, शादी के बाद का वह मधुमास, जिससे सुनी-सुनायी बातों के आधार पर लेविन ने बहुत कुछ की उम्मीद की थी, न केवल मधुर ही नहीं था, बल्कि उन दोनों की स्मृति में उनके जीवन का सबसे बोझिल और लज्जाजनक मास बनकर रह गया। अपने बाद के जीवन में इन दोनों ने अपने स्मृति-पट से इस अटपटे समय की सभी घिनौनी और लज्जाजनक स्थितियों की, जब वे कभी-कभार ही अच्छे मूड में, बहुत कम ही अपने रंग में होते थे, स्मृतियां मिटाने की कोशिश की।

दाम्पत्य जीवन के तीसरे महीने में ही, जब वे एक महीना मास्को में रहकर लौटे, उनका जीवन ढंग से चलने लगा।

(१५)

लेविन और कीटी मास्को से लौटे ही थे तथा अकेले होने पर ख़ुश थे। लेविन अपने अध्ययन-कक्ष में मेज़ पर बैठा लिख रहा था। कीटी गहरे बैंगनी रंग का फ़्राक पहने हुए, जो शादी के फ़ौरन बाद के दिनों में पहनती थी और जो लेविन के लिये विशेष रूप से स्मरणीय तथा प्रिय था, चमड़े के उसी पुराने सोफ़े पर बैठी कशीदाकारी कर रही थी, जो लेविन के बाप और दादा के अध्ययन-कक्ष में रखा रहा था। कीटी की उपस्थिति की चेतना से ख़ुश होता हुआ लेविन सोचता और लिखता जा रहा था। खेतीबारी और किताब लिखने का काम,

जिसमें उसे खेतीबारी के नये ढंग के मूलभूत सिद्धान्त स्पष्ट करने थे, उसने नहीं छोड़ा था। किन्तु जिस तरह पहले उसे ये काम और विचार अपने पूरे जीवन पर छाये अन्धकार की तुलना में महत्त्वहीन और तुच्छ प्रतीत होते थे, उसी प्रकार अब भावी जीवन के उज्ज्वल प्रकाश से चमचमाते सुख की तुलना में भी नगन्य और महत्त्वहीन लग रहे थे। वह अपना काम जारी रख रहा था, किन्तु अब यह महसूस करता था कि उसके ध्यान का केन्द्र-बिन्दु बदल गया है और इसके फलस्वरूप अपने काम को दूसरी तथा अधिक स्पष्ट दृष्टि से देखता है। पहले यह काम उसके लिये जीवन से बचने का साधन था। पहले वह यह अनुभव करता था कि इस काम के बिना उसकी ज़िन्दगी बहुत उदास हो जायेगी। अब उसे इसलिये इस काम की ज़रूरत थी कि उसकी ज़िन्दगी एक ही ढंग से सुखी न रहे। अपनी पाण्डुलिपि को पढ़ने के बाद उसे लगा कि यह काम करने लायक़ है। यह नया और उपयोगी काम था। पहले के बहुत-से विचार उसे फालतू और अतिवादी लगे, किन्तु जब उसने सारी समस्याओं को अपनी स्मृति में ताज़ा किया, तो बहुत-सी भूलें-चूकें उसे स्पष्ट हो गयीं। अब वह रूस में बिना नफ़े की खेतीबारी की स्थिति के बारे में एक नया अध्याय लिख रहा था। वह यह सिद्ध कर रहा था कि न केवल भू-सम्पत्ति का ग़लत विभाजन और ग़लत कृषि-नीति ही रूस की ग़रीबी के कारण हैं, बल्कि पिछले कुछ समय में रूस पर कृत्रिम रूप से लादी गयी विदेशी सभ्यता, विशेषतः यातायात के साधनों, रेलवे ने भी योग दिया है, जिसके फलस्वरूप नगरों में संकेंद्रण तथा ऐश्वर्य का विकास हुआ है और जिसके नतीजे के तौर पर खेती को हानि पहुंचाते हुए फ़ैक्टरी-उद्योग, ऋण-व्यवस्था और उसके अनुगामी शेयर बाज़ार की सट्टेबाज़ी का विकास हुआ है। उसे लगता था कि किसी राज्य में धन के सामान्य विकास की स्थिति में ये सभी चीज़ें तभी होंगी, जब कृषि में काफ़ी श्रम लग चुका हो, जब कृषि सही, कम से कम एक निश्चित स्थिति प्राप्त कर चुकी हो, कि देश के धन का सन्तुलित तथा विशेषतः ऐसे ढंग से विकास होना चाहिये कि धन की दूसरी शाखायें कृषि से आगे न निकल जायें, कि कृषि की स्थिति के अनुरूप ही यातायात के साधनों का विकास करना चाहिये और हमारे यहां भूमि के ग़लत उपयोग के कारण रेलवे, जिसकी

आर्थिक के बजाय राजनीतिक आवश्यकता की वजह से व्यवस्था की गयी, समय से पहले आ गयी और वह खेतीबारी में सहायक होने के स्थान पर, जैसी कि उससे आशा की गयी थी, कृषि को पीछे छोड़ गयी तथा उद्योग और ऋण का विकास करके उसने उसकी प्रगति को रोक दिया। इसलिये, जिस तरह किसी शरीर में किसी एक अंग के एकांगी और समय से पूर्व विकास से सामान्य विकास में बाधा पड़ सकती है, उसी प्रकार रूस में धन के सामान्य विकास के लिये ऋण-व्यवस्था, यातायात के साधनों और फ़ैक्टरी-उद्योगों की वृद्धि ने, जो यूरोप के लिये निश्चय ही आवश्यक हैं, क्योंकि ठीक समय पर पनपे हैं, यहां हानि ही पहुंचाई है, क्योंकि कृषि की सुव्यवस्था के मुख्य प्रश्न को एक ओर को हटा दिया है।

इसी बीच, जब लेविन अपने विचार लिख रहा था, कीटी यह सोच रही थी कि मेरा पति नौजवान प्रिंस चार्स्की के साथ कितनी अस्वाभाविक नम्रता से पेश आया था, जो मास्को से रवाना होने की पूर्ववेला में नादानी दिखाते हुए मेरी प्रशंसा करने लगा था। "यह मेरे कारण ईर्ष्या करता है," वह सोच रही थी। "हे भगवान! कितना प्यारा और कितना बुद्धू है मेरा पति! यह मेरे कारण ईर्ष्या करता है! काश इसे मालूम होता कि मेरे लिये ये सब ऐसे ही हैं, जैसे प्योत्र बावर्ची," कीटी निजी सम्पत्ति की एक अजीब भावना से लेविन की गुद्दी और संवलायी गर्दन को देखते हुए सोच रही थी। "बेशक उसे काम से हटाते हुए दया आ रही है (लेकिन कोई बात नहीं, बाद में कर लेगा!), फिर भी उसका चेहरा देखना चाहिये। वह यह महसूस करेगा या नहीं कि मैं उसकी ओर देख रही हूं? मैं चाहती हूं कि वह मुड़कर देखे! हां, चाहती हूं!" और उसने दृष्टि के प्रभाव को तीव्र करने की इच्छा से आंखों को बहुत अधिक खोल लिया।

"हां, ये सारा रस चूस लेते हैं और झूठी चमक प्रदान करते हैं," लेविन लिखना बन्द करते हुए बुदबुदाया और यह महसूस करके कि कीटी उसकी ओर देखती हुई मुस्करा रही है, उसने मुड़कर देखा।

"क्या बात है?" लेविन ने मुस्कराते और खड़ा होते हुए पूछा।

"मुड़कर देख ही लिया," कीटी ने सोचा।

"कोई बात नहीं, मैं चाहती थी कि तुम मुड़कर देखो," कीटी ने

उसको ग़ौर से देखते और यह अनुमान लगाते हुए कहा कि उसके काम में ख़लल डालने के कारण उसे बुरा तो नहीं महसूस हुआ।

"कितना अच्छा लगता है हमें जब हम दोनों ही होते हैं! मेरा मतलब, मुझे," कीटी के क़रीब आते और ख़ुशी से मुस्कराते हुए उसने कहा।

"मैं बहुत ख़ुश हूं! मैं अब कहीं भी नहीं जाऊंगी, ख़ासकर मास्को!"

"तुम क्या सोच रही थीं?"

"मैं? मैं सोच रही थी... नहीं, नहीं, जाओ लिखो, दूसरी बातों की तरफ़ ध्यान नहीं दो," उसने होंठों पर बल डालते हुए कहा, "और मुझे अब इन सूराखों को काटना है, देखते हो न?"

कीटी ने कैंची लेकर उन्हें काटना शुरू कर दिया।

"नहीं, बताओ तो, क्या सोच रही थीं?" लेविन ने उसके पास बैठते और छोटी-सी कैंची की चक्राकार गतिविधि को देखते हुए कहा।

"ओह, तो क्या सोच रही थी मैं? मैं मास्को के बारे में, तुम्हारी गुद्दी के बारे में सोच रही थी।"

"किसलिये मुझे ऐसा सौभाग्य मिला है? यह अस्वाभाविक-सा है। सच नहीं प्रतीत होता," उसने कीटी का हाथ चूमते हुए कहा।

"मेरे लिये इसके उलट बात है, जितना अधिक सुख मिलता है, उतना ही अधिक स्वाभाविक लगता है।"

"तुम्हारी एक लट बिखरी हुई है," उसने सावधानी से उसका सिर अपनी ओर मोड़ते हुए कहा। "लट। देखती हो, यह रही। नहीं, नहीं, हमें अपना-अपना काम करना है।"

काम जारी नहीं रहा और जब नौकर कुज़्मा यह कहने के लिये आया कि चाय मेज़ पर रख दी गयी है, तो वे अपराधियों की भांति उछलकर एक-दूसरे से अलग हो गये।

"शहर से लोग वापस आ गये हैं?" लेविन ने कुज़्मा से पूछा।

"अभी-अभी आये हैं, सामान खोल रहे हैं।"

"जल्दी से आ जाओ," कीटी ने अध्ययन-कक्ष से बाहर जाते हुए कहा, "नहीं तो तुम्हारे बिना ही चिट्ठियां पढ़ लूंगी। इसके बाद हम दोनों मिलकर पियानो बजायेंगे।"

अकेला रह जाने और कीटी द्वारा खरीदे गये नये थैले में अपनी कापी रखने के बाद वह नयी चिलमची में नयी और शानदार क़िस्म की चीज़ों से, जो कीटी के आने के बाद ही इस घर में आयी थीं, हाथ धोने लगा। लेविन अपने विचारों पर मुस्करा रहा था और मानो भर्त्सना करता हुआ सिर हिला रहा था। पश्चाताप जैसा भाव उसे यातना दे रहा था। उसकी इस समय की ज़िन्दगी में उसे कुछ लज्जाजनक, पुरुषत्व के कुछ प्रतिकूल, कुछ ज़नानापन-सा, जैसी कि उसने इसे संज्ञा दी, अनुभव हो रहा था। "ऐसे जीना ठीक नहीं," वह सोच रहा था। "जल्द ही तीन महीने हो जायेंगे और मैं लगभग कुछ नहीं कर रहा हूं। आज ही मैंने पहली बार गम्भीरता से कुछ काम करना शुरू किया था और क्या नतीजा निकला? शुरू करते ही छोड़ दिया। इतना ही नहीं, अपने सामान्य काम-काज की भी मैं लगभग अवहेलना कर रहा हूं। खेतीबारी की देखभाल के लिये भी मैं लगभग नहीं जाता हूं। या तो कीटी को अकेली छोड़ते हुए मेरे दिल को कुछ होता है या फिर देखता हूं कि उसे ऊब महसूस हो रही है। लेकिन मैं तो यह सोचता था कि शादी के पहले की ज़िन्दगी यों ही होती है, उसकी कोई गिनती नहीं की जाती और शादी के बाद ही असली ज़िन्दगी शुरू होती है। अब जल्द ही तीन महीने हो जायेंगे और मैंने पहले कभी ऐसी काहिली में और इतना अनुपयोगी समय नहीं बिताया था। नहीं, यह ठीक नहीं, मुझे काम शुरू करना चाहिये। ज़ाहिर है कि कीटी का उसमें कोई दोष नहीं। उसकी किसी भी चीज़ के लिये भर्त्सना नहीं की जा सकती। खुद मुझे ही अधिक दृढ़ होना चाहिये, पुरुषोचित स्वतन्त्रता की रक्षा करनी चाहिये। नहीं तो मैं खुद भी इसका आदी हो जाऊंगा और उसे भी इसका आदी बना दूंगा... ज़ाहिर है कि उसका कोई दोष नहीं," उसने अपने आपसे कहा।

किन्तु असन्तुष्ट व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की, उसी की, जो उसके सबसे अधिक निकट होता है, अपने असन्तोष के लिये भर्त्सना किये बिना नहीं रह सकता। लेविन के दिमाग़ में धुंधला-सा यह विचार आता था कि कीटी खुद तो दोषी नहीं (वह किसी बात के लिये भी दोषी नहीं हो सकती थी), मगर उसका पालन-शिक्षण, जो बहुत सतही और बेमानी था, इसके लिये ज़िम्मेदार था ("उस उल्लू चार्स्की

को ही ले लो – मैं जानता हूं कि कीटी उसे रोकना चाहती थी, किन्तु ऐसा नहीं कर सकी")। "हां, घर में दिलचस्पी लेने के अलावा (यह तो उसमें थी), अपनी पोशाकों और कशीदाकारी के सिवा उसकी कुछ भी गम्भीर रुचियां नहीं हैं। उसे मेरे काम, खेतीबारी, किसानों, संगीत, जिसमें वह काफ़ी प्रवीण है, और किताबों में भी रुचि नहीं है। वह कुछ नहीं करती और बिल्कुल सन्तुष्ट है।" लेविन मन ही मन इसकी भर्त्सना करता था और अभी यह नहीं समझता था कि कीटी अपने को क्रियाशीलता के उस समय के लिये तैयार कर रही थी, जब वह एक साथ ही अपने पति की पत्नी और गृह-स्वामिनी होगी, बच्चों को जन्म देगी, उन्हें अपना दूध पिलायेगी और उनका पालन-शिक्षण करेगी। उसने यह नहीं सोचा कि कीटी सहज ज्ञान से यह जानती है और अपने को इस भयानक श्रम के लिये तैयार करते हुए मस्ती और प्रणय-सुख के उन क्षणों के लिये अपनी भर्त्सना नहीं करती है, जिनसे उल्लासपूर्वक भावी घोंसला बनाते हुए वह इस समय आनन्दित होती है।

(१६)

लेविन जब ऊपर वाले कमरे में दाख़िल हुआ, तो उसकी बीवी चांदी के नये समोवार और चाय के नये बर्तनों के पास बैठी थी। बूढ़ी अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना को चाय का प्याला देकर उसने उसे छोटी मेज़ पर बिठा दिया था और ख़ुद डौली का ख़त पढ़ रही थी, जिसके साथ उसका लगातार और अक्सर पत्रव्यवहार होता रहता था।

"देखिये, आपकी श्रीमती जी ने मुझे यहां बिठा दिया है, अपने साथ बैठने को कहा है," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने स्नेहपूर्ण मुस्कान से कीटी की ओर देखते हुए कहा।

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना के इन शब्दों से लेविन को उस नाटक के अन्त की अनुभूति हुई, जो पिछले कुछ अर्से से अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना और कीटी के बीच खेला जा रहा था। उसने महसूस किया कि नयी गृह-स्वामिनी यानी कीटी ने गृह-प्रबन्ध की बागडोर छीनकर अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना के दिल को जो ठेस लगायी थी, उसके बावजूद कीटी

ने उसका मन जीत लिया है और उसे अपने को प्यार करने के लिये विवश कर दिया है।

"तो मैंने तुम्हारा खत पढ़ लिया," लेविन को गंवारू ढंग से लिखा पत्र देते हुए कीटी ने कहा। "लगता है उसी, तुम्हारे भाई वाली औरत का है..." कीटी ने कहा। "मैंने इसे पढ़ा नहीं। यह पत्र घर से आया है और यह डौली का है। तुम कल्पना करो! डौली ग्रीशा और तान्या को सारमात्स्की परिवार में आयोजित बच्चों के बॉल में ले गयी थी। तान्या फ़ांसीसी मार्कीज़ बनकर वहां गयी थी।"

किन्तु लेविन उसकी बात नहीं सुन रहा था। उसने लज्जारुण होते हुए अपने भाई निकोलाई की भूतपूर्व प्रेमिका मारीया निकोलायेव्ना का पत्र लेकर उसे पढ़ना शुरू कर दिया। मारीया निकोलायेव्ना का यह दूसरा पत्र था। अपने पहले पत्र में उसने लिखा था कि लेविन के भाई ने किसी अपराध के बिना ही उसे अपने से दूर भगा दिया था और मर्मस्पर्शी भोलेपन से इतना और जोड़ दिया था कि यद्यपि वह फिर से तंगदस्ती का शिकार है, तो भी कोई मदद और कुछ भी नहीं चाहती तथा यही एक विचार उसे खाये जा रहा है कि बेहद बुरी सेहत की वजह से उसके बिना निकोलाई द्मीत्रियेविच की जान नहीं बच पायेगी। उसने लेविन से भाई की चिन्ता करने का अनुरोध किया था। इस बार उसने दूसरी ही बात लिखी थी। उसने निकोलाई द्मीत्रियेविच को ढूंढ़ लिया था, फिर से मास्को में उसकी संगिनी बन गयी थी और गुबेर्निया के एक शहर में, जहां निकोलाई को नौकरी मिल गयी थी, उसके साथ गयी थी। किन्तु निकोलाई का वहां अपने संचालक से झगड़ा हो गया और वे मास्को लौट चले। किन्तु रास्ते में वह इतना सख्त बीमार हो गया कि अब शायद ही कभी बिस्तर से उठ पाये। "आपको ही याद करते रहते हैं और अब पैसे भी नहीं हैं।"

"लो पढ़ो, डौली ने तुम्हारे बारे में लिखा है," कीटी ने मुस्कराते हुए कहना शुरू किया, मगर पति के चेहरे का भाव-परिवर्तन देखकर अचानक चुप हो गयी।

"क्या बात है? क्या लिखा है इस खत में?"

"उसने लिखा है कि मेरा भाई निकोलाई मरनेवाला है। मैं जाऊंगा।"

कीटी के चेहरे का भाव एकदम बदल गया। तान्या के मार्कीज़ बनने तथा डौली के बारे में आनेवाला विचार तुरंत लुप्त हो गया।

"कब जाओगे?" कीटी ने पूछा।

"कल।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चल सकती हूं?" उसने पूछा।

"कीटी! यह क्या क़िस्सा है?" लेविन ने धिक्कारते हुए कहा।

"क्या कहना चाहते हो तुम?" कीटी ने इस बात का बुरा माना कि लेविन उसके प्रस्ताव के प्रति अनिच्छा और खीझ प्रकट कर रहा है। "मैं क्यों नहीं चल सकती? मैं तुम्हारे आड़े नहीं आऊंगी। मैं ..."

"मैं इसलिये जा रहा हूं कि मेरा भाई मर रहा है," लेविन ने कहा। "मगर तुम किसलिये ..."

"किसलिये? उसीलिये, जिसलिये तुम।"

"मेरे लिये इतने गम्भीर क्षण में भी वह यही सोच रही है कि उसे अकेली रहने पर ऊब महसूस होगी," लेविन ने सोचा। ऐसे गम्भीर मामले में कीटी के ऐसे रवैये पर वह झल्ला उठा।

"यह सम्भव नहीं," उसने कड़ाई से कहा।

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने यह देखकर कि मामला झगड़े की हद तक पहुंच रहा है, धीरे से प्याला मेज़ पर रख दिया और बाहर चली गयी। कीटी का तो उसकी ओर ध्यान भी नहीं गया। पति ने जिस अन्दाज़ में अन्तिम शब्द कहे थे, उससे उसको ख़ास तौर पर इसलिये ठेस लगी थी कि वह स्पष्टतः उस बात का विश्वास नहीं कर रहा था, जो उसने कही थी।

"और मैं तुमसे यह कह रही हूं कि अगर तुम जाओगे, तो मैं भी तुम्हारे साथ जाऊंगी, ज़रूर जाऊंगी," कीटी ने जल्दी-जल्दी और ग़ुस्से से कहा। "क्यों यह सम्भव नहीं? तुम क्यों कहते हो कि सम्भव नहीं?"

"क्योंकि ख़ुदा ही जानता है कि कहां-कहां और किन-किन रास्तों से, कैसे-कैसे होटलों में जाना होगा। तुम मेरे लिये परेशानी बनी रहोगी," लेविन ने शान्त रहने की कोशिश करते हुए कहा।

"ज़रा भी परेशान नहीं करूंगी तुम्हें। मुझे कुछ भी नहीं चाहिये। जहां तुम हो सकते हो, वहीं मैं भी ..."

"केवल इस एक कारण से ही कि वहां वह औरत होगी, जिसकी निकटता तुम्हें अच्छी नहीं लगेगी।"

"मैं कुछ नहीं जानती और जानना नहीं चाहती कि वहां कौन और क्या है। मैं जानती हूं कि मेरे पति का भाई मर रहा है, पति उसके पास जा रहा है और मैं पति के साथ जा रही हूं, ताकि..."

"कीटी! बुरा नहीं मानो। लेकिन तुम सोचो, यह इतना गम्भीर मामला है और मुझे इस ख़्याल से दुख हो रहा है कि तुम अपनी कमज़ोरी को बीच में ला रही हो, अकेली नहीं रहना चाहती हो। तुम्हें अकेली रह जाने पर ऊब अनुभव होगी, तो तुम मास्को चली जाओ।"

"तुम हमेशा बुरे और कमीने विचारों को मेरे साथ जोड़ देते हो," कीटी अपमान और क्रोध के आंसू छलकाते हुए कह उठी। "ऐसी कोई बात नहीं है, कोई कमज़ोरी, कुछ नहीं है... मैं अनुभव करती हूं कि दुख-मुसीबत के वक़्त पति के साथ होना मेरा कर्त्तव्य है। लेकिन तुम जान-बूझकर मेरा दिल दुखाना चाहते हो, जान-बूझकर यह समझना नहीं चाहते..."

"नहीं, यह बड़ी भयानक बात है! किसी का ग़ुलाम होना!" लेविन उठते हुए चिल्ला पड़ा। वह अब अपने ग़ुस्से को वश में रखने में असमर्थ था। किन्तु इसी क्षण उसने अनुभव किया कि ख़ुद अपने पर चोट कर रहा है।

"तो तुमने शादी क्यों की? आज़ाद रहते। अगर तुम्हें पश्चाताप हो रहा है, तो शादी क्यों की?" कीटी ने कहा, उछलकर खड़ी हुई और मेहमानख़ाने की तरफ़ भाग गयी।

लेविन जब मेहमानख़ाने में उसके पास गया, तो आंसुओं से कीटी का गला रुंधा जा रहा था।

लेविन ने ऐसे शब्द खोजने की कोशिश करते हुए बोलना शुरू किया, जिनसे कीटी अपनी राय बदलने के बजाय शान्त हो जाये। किन्तु वह उसकी बात नहीं सुन रही थी और किसी भी चीज़ से सहमत नहीं हो रही थी। लेविन ने कीटी की ओर झुककर उसका विरोध करता हुआ हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसने उसका हाथ चूमा, बाल चूमे, फिर से उसका हाथ चूमा – कीटी ख़ामोश ही रही। किन्तु

जब लेविन ने दोनों हाथों से उसका चेहरा साधकर "कीटी" कहा, तो वह अचानक सम्भली, रो पड़ी और उसने उससे सुलह कर ली।

यह तय हुआ कि अगले दिन वे दोनों एक साथ जायेंगे। लेविन ने पत्नी से कहा कि वह ऐसा मानता है कि उपयोगी सिद्ध होने के लिये ही वह उसके साथ चल रही है और सहमत हो गया कि मारीया निकोलायेव्ना का उसके भाई के निकट उपस्थित रहना कोई अशिष्ट बात नहीं है। किन्तु दिल की गहराई में वह कीटी और ख़ुद अपने से असन्तुष्ट था। कीटी से वह इसलिये असन्तुष्ट था कि जब ऐसा करना ज़रूरी था, तब भी वह उसे जाने देने के लिये अपने को राज़ी नहीं कर सकी (और यह सोचना कितना अजीब था कि कुछ ही समय पहले वह ऐसे सौभाग्य पर विश्वास नहीं कर सकता था कि कीटी उसे प्यार कर सकती है और अब इसलिये दुखी था कि वह उसे कुछ अधिक ही प्यार करती है!)। और अपने से इसलिये असन्तुष्ट था कि चरित्र की दृढ़ता नहीं दिखा सका। इसके अलावा वह अपनी आत्मा में इस बात से भी सहमत नहीं था कि भाई के साथ रहनेवाली औरत की उपस्थिति से उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता और यह कल्पना करके उसका दिल कांप उठा कि उनके बीच कैसी ज़ोरदार झड़पें हो सकती हैं। केवल यही ख़्याल कि उसकी पत्नी, उसकी कीटी एक वेश्या के साथ एक ही कमरे में रहेगी, उसे घृणा तथा भय से कांपने के लिये विवश करता था।

(१७)

निकोलाई लेविन गुबेर्निया के मुख्य नगर के जिस होटल में बिस्तर पर पड़ा था, गुबेर्निया के ऐसे होटलों में से था, जो नवीनतम सुधारों के आधार पर सफ़ाई, सुविधा, यहां तक कि सुन्दरता से बनाये जाते हैं, मगर जो उनमें रहनेवाले लोगों के कारण बहुत् जल्दी से आधुनिक सुधारों का दावा करनेवाली गन्दी सरायों में बदल जाते हैं और आधुनिकता के ऐसे दावों के कारण ही पुराने, गन्दे होटलों से भी बुरे हो जाते हैं। यह होटल ऐसी ही अवस्था को पहुंच चुका था। गन्दी वर्दी पहने हुए फ़ौजी, जो दरवाज़े पर खड़ा सिगरेट पी रहा था और द्वारपाल

का काम पूरा करता था, कच्चे लोहे की भोंडी सजावटवाली उदास और अप्रिय-सी सीढ़ी, मैले फ़ाक-कोट में गुस्ताख़-सा वेटर, सामान्य हॉल की मेज़ पर रखा और धूल से ढका हुआ मोम के फूलों का गुलदस्ता, सभी जगह पर नज़र आ रही गन्दगी, धूल और गड़बड़ी, तथा इसके साथ ही रेलवे स्टेशन जैसी आधुनिक और आत्मतुष्ट चहल-पहल – इन सभी चीज़ों ने लेविन दम्पति पर ताज़ा घरेलू जीवन के बाद बहुत बुरा प्रभाव डाला, विशेषतः इसलिये कि होटल द्वारा पैदा किया गया झूठा प्रभाव उससे बिल्कुल मेल नहीं खाता था, जो उनकी राह देख रहा था।

जैसा कि हमेशा होता है, यह पूछे जाने के बाद कि उन्हें कितने किराये का कमरा चाहिये, यह पता चला कि एक भी अच्छा कमरा ख़ाली नहीं है। एक अच्छे कमरे में रेलवे का इन्स्पेक्टर ठहरा हुआ था, दूसरे में मास्को से आया हुआ वकील और तीसरे में गांव से आई हुई प्रिंसेस आस्ताफ़्येवा। एक गन्दा-सा कमरा ख़ाली था, जिसकी बग़ल में शाम तक एक और कमरा ख़ाली हो जाने का विश्वास दिलाया गया। इस बात के लिये बीवी पर क्रुद्ध होते हुए कि उसने जैसी आशा की थी, वही हो रहा है, यानी यहां आने पर जब उसका हृदय इसलिये अत्यधिक विह्वल है कि भाई की कैसी हालत है, फ़ौरन भाई के पास भाग जाने के बजाय उसे पत्नी की चिन्ता करनी पड़ रही है, लेविन पत्नी को उस कमरे में ले गया, जो उन्हें दिया गया था।

"तुम जाओ, भाई के पास जाओ!" कीटी ने सहमी-सहमी और अपराधी की सी दृष्टि से लेविन की ओर देखते हुए कहा।

लेविन चुपचाप कमरे से बाहर निकला और दरवाज़े पर ही मारीया निकोलायेव्ना से उसकी भेंट हो गयी, जिसे उसके आने की ख़बर मिल गयी थी और जो उसके कमरे में दाख़िल होने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। मारीया निकोलायेव्ना बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी लेविन ने उसे मास्को में देखा था। वह कफ़-कालरों के बिना वही ऊनी फ़ाक पहने थी और उसके कुछ कुछ भर गये चेचकरू चेहरे पर वही सौजन्यपूर्ण तथा जड़ता का सा भाव था।

"तो? कैसा है मेरा भाई? कैसा है?"

"बहुत बुरी हालत है। उठ नहीं पाते। लगातार आपकी ही

राह देख रहे हैं। वे भी ... आप ... पत्नी के साथ आये हैं।"

लेविन शुरू में यह समझ नहीं पाया कि उसे किस चीज़ से परेशानी हो रही है, किन्तु मारीया निकोलायेव्ना ने तत्काल बात स्पष्ट कर दी।

"मैं चली जाऊंगी, मैं रसोईघर में चली जाऊंगी," उसने कहा। "आपके भाई खुश होंगे। उन्होंने उनके आने के बारे में सुना है, उन्हें जानते हैं और उनसे विदेश में हुई भेंट याद है।"

लेविन समझ गया कि उसका अभिप्राय कीटी से है और नहीं समझ पा रहा था कि क्या जवाब दे।

"आइये चलें, वहां चलें!" लेविन ने कहा।

किन्तु उसने क़दम बढ़ाया ही था कि उसके कमरे का दरवाज़ा खुला और कीटी ने बाहर झांका। लेविन अपनी बीवी के कारण, जिसने अपने को और उसे ऐसी अटपटी स्थिति में डाल दिया था, शर्म और गुस्से से लाल हो उठा। किन्तु मारीया निकोलायेव्ना की और भी अधिक बुरी हालत थी। वह सिमटती-सिकुड़ती जा रही थी, शर्म से लाल हो गयी थी और उसकी आंखें तक डबडबा आईं। यह न जानते हुए कि क्या कहे तथा क्या करे, वह दोनों हाथों से रूमाल के सिरे पकड़कर अपनी लाल उंगलियों से उन्हें घुमाने लगी।

पहले क्षण में लेविन को कीटी की उस दृष्टि में, जिससे वह इस समझ में न आनेवाली और भयानक नारी को देख रही थी, अत्यधिक जिज्ञासा की झलक मिली। किन्तु यह केवल एक क्षण तक ही बनी रही।

"तो? कैसे हैं वे?" उसने पति और फिर मारीया निकोलायेव्ना को सम्बोधित किया।

"यह बात करने की जगह नहीं है!" लेविन ने झल्लाहट से उस महाशय की ओर मुड़कर देखते हुए कहा, जो इसी समय टांगों को डोलाते हुए मानो अपने काम से गलियारे में से जा रहा था।

"तो भीतर आ जाइये," कीटी ने अब तक सम्भल चुकी मारीया निकोलायेव्ना से कहा, किन्तु पति का डरा-सा चेहरा देखकर बोली – "या फिर जाइये, वहां जाइये और मुझे बुलवा भेजिये," और अपने कमरे में लौट गयी। लेविन भाई की ओर चल दिया।

भाई के कमरे में जाकर उसने जो कुछ देखा और अनुभव किया, लेविन ने उसकी कभी आशा नहीं की थी। उसे उम्मीद थी कि वह

आत्म-प्रवंचना की वही स्थिति पायेगा, जो, जैसा कि उसने सुना था, तपेदिक़ के मरीज़ों में अक्सर पायी जाती है और जिससे वह पतझर में भाई के अपने यहां आने पर बहुत चकित हुआ था। उसने आशा की थी कि मृत्यु की निकटता के शारीरिक लक्षण – बड़ी कमज़ोरी, बेहद दुबलापन – नज़र आयेंगे, किन्तु फिर भी वही पहले जैसी अवस्था होगी। उसने उम्मीद की थी कि वह ख़ुद प्यारे भाई के न ज़िन्दा रहने और मौत के उसी भय को अनुभव करेगा, जो उसने तब अनुभव किया था, किन्तु यह अनुभूति कुछ अधिक तीव्र होगी। वह इसके लिये अपने को तैयार करता रहा था, मगर वहां उसने बिल्कुल दूसरी ही चीज़ पायी।

एक छोटे-से गन्दे कमरे में, जिसकी दीवारों के रंगीन खण्ड थूकने से ख़राब हो गये थे, जिसकी हवा गन्दी और सड़ी हुई थी और जिसे पतली-सी विभाजन-दीवार द्वारा दूसरे कमरे से अलग किया गया था तथा जहां से लोगों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, दीवार से हटे हुए पलंग पर कम्बल से ढका हुआ एक शरीर था। इस शरीर की एक बांह कम्बल के ऊपर थी और इस बांह का पांचे जैसा बड़ा हाथ समझ में न आनेवाले ढंग से पतले, आरम्भ से कोहनी तक सामान आकार के और लम्बे तकुए के साथ जुड़ा हुआ था। सिर एक ओर को तकिये पर टिका हुआ था। लेविन को कनपटियों पर पसीने से तर विरले बाल और पतली, मानो पारदर्शी त्वचा वाला माथा दिखाई दे रहा था।

"ऐसा नहीं हो सकता कि यह भयानक शरीर मेरा भाई निकोलाई ही है," लेविन ने सोचा। किन्तु वह निकट गया, उसने चेहरे को देखा और सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं रही। चेहरे के भयानक परिवर्तन के बावजूद लेविन के लिये उसके भीतर आने पर ऊपर उठनेवाली सजीव आंखों को देखना, चिपचिपी मूंछों के नीचे मुंह की हल्की-सी हरकत की तरफ़ ध्यान देना ही इस भयानक सत्य को समझने के हेतु पर्याप्त था कि यह मृत शरीर उसका जीवित भाई है।

निकोलाई की चमकती आंखों ने कमरे में दाखिल होते भाई को भर्त्सना और कठोरता से देखा। इस नज़र से फ़ौरन जीवितों के बीच जीवित सम्बन्ध स्थापित हो गया। लेविन ने अपने पर टिकी हुई नज़र में तत्काल भर्त्सना और अपने सुख-सौभाग्य के लिये पश्चाताप अनुभव किया।

लेविन ने जब उसका हाथ अपने हाथ में लिया, तो निकोलाई मुस्करा दिया। यह मुस्कान हल्की, तनिक दिखाई देनेवाली थी, मगर मुस्कान के बावजूद आंखों के कठोर भाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

"तुमने मुझे इस रूप में पाने की आशा नहीं की होगी," निकोलाई ने बड़ी मुश्किल से कहा।

"हां ... नहीं," लेविन ने शब्दों को गड़बड़ाते हुए उत्तर दिया। "तुमने पहले ही यानी मेरी शादी के वक़्त अपने बारे में सूचना क्यों नहीं दी? मैंने हर जगह तुम्हारे बारे में जानकारी पाने की कोशिश की।"

मौन न रहा जाये, इसलिये कुछ कहना ज़रूरी था, मगर लेविन समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहे, ख़ास तौर पर इसलिये कि भाई कोई जवाब दिये बिना सिर्फ़ टकटकी बांधकर देखता जा रहा था और स्पष्टतः हर शब्द के अर्थ को समझने का यत्न कर रहा था। लेविन ने भाई को बताया कि उसकी पत्नी भी साथ आई है। निकोलाई ने ख़ुशी ज़ाहिर की, मगर कहा कि अपनी ऐसी स्थिति से वह उसे डराते हुए घबराता है। इसके बाद ख़ामोशी छा गयी। निकोलाई अचानक हिला-डुला और कुछ कहने लगा। लेविन ने भाई के चेहरे के भाव से कुछ बहुत ही अर्थपूर्ण और महत्त्वपूर्ण बात की आशा की, किन्तु निकोलाई ने अपने स्वस्थ्य की चर्चा की। उसने डाक्टर को दोष दिया, अफ़सोस ज़ाहिर किया कि मास्को का नामी डाक्टर उसके इलाज के लिये यहां नहीं है और लेविन समझ गया कि वह अभी भी ज़िन्दा रह पाने की उम्मीद कर रहा है।

ख़ामोशी के पहले क्षण का ही लाभ उठाते हुए लेविन उठकर खड़ा हो गया, ताकि बेशक घड़ी भर को ही यातनापूर्ण भावना से मुक्ति पा सके और उसने भाई से कहा कि अपनी पत्नी को लेकर आता है।

"अच्छी बात है और मैं यहां सफ़ाई करने को कह देता हूं। मेरे ख़्याल में तो यहां बहुत गन्दगी है और बदबू आती है। माशा! यहां सफ़ाई कर दो," रोगी ने बड़ी मुश्किल से कहा। "और सफ़ाई करते ही ख़ुद भी यहां से चली जाओ," उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से भाई की ओर देखते हुए इतना और जोड़ दिया।

लेविन ने कोई जवाब नहीं दिया। गलियारे में आकर वह रुक

गया। उसने कहा था कि पत्नी को लेकर आ रहा है, किन्तु अब उस भावना का विश्लेषण करने पर, जो वह अनुभव कर रहा था, उसने तय किया कि उल्टे पत्नी को रोगी के निकट न आने के लिये राज़ी करने की कोशिश करेगा। "मेरी तरह भला वह क्यों यातना सहे?" उसने सोचा।

"कहो? कैसी तबीयत है?" कीटी ने, जिसके चेहरे पर भय अंकित था, पूछा।

"ओह, बहुत भयानक, बहुत भयानक! तुम क्यों यहां आई हो?" लेविन ने कहा।

कीटी कुछ क्षण तक सहमी और दयापूर्ण दृष्टि से पति की ओर देखती हुई चुप रही, इसके बाद उसके क़रीब गयी और दोनों हाथों से उसकी कोहनी थाम ली।

"कोस्त्या! मुझे उसके पास ले चलो, हम दोनों के लिये यह सहन करना अधिक आसान होगा। तुम केवल मुझे वहां ले चलो, कृपया ले चलो और चले जाओ," उसने कहा। "तुम इस बात को समझो कि मेरे लिये तुम्हें देखना और उसे न देखना कहीं अधिक कष्टप्रद है। सम्भव है कि वहां मैं तुम्हारे और तुम्हारे भाई के लिये कुछ उपयोगी सिद्ध हो सकूं। कृपया, मुझे ले चलो!" वह पति की ऐसे मिन्नत-समाजत कर रही थी मानो इसी पर उसके जीवन का सुख-सौभाग्य निर्भर हो।

लेविन को राज़ी होना पड़ा और सम्भल कर तथा मारीया निकोलायेव्ना के बारे में पूरी तरह भूलकर वह कीटी को साथ लिये हुए फिर से भाई की तरफ़ चल दिया।

फुर्ती से क़दम उठाती और पति को एकटक देखती तथा अपने चेहरे पर दिलेरी और सहानुभूति से ओत-प्रोत भाव लाते हुए उसने रोगी के कमरे में प्रवेश किया और धीरे से घूमकर आहट किये बिना दरवाज़ा बन्द कर दिया। वह दबे पांव तेज़ी से रोगी के बिस्तर के क़रीब ऐसे गयी कि उसे अपना सिर न मोड़ना पड़े, उसके बहुत बड़े हड़ीले हाथ को उसने अपने ताज़ा और जवान हाथ में ले लिया, धीरे से दबाया और केवल नारियों के लिये ही सम्भव, नाराज़ न करनेवाले, सहानुभूतिपूर्ण और हल्की सजीवतावाले अन्दाज़ में उससे बात करने लगी।

"हम सोडेन में मिले थे, मगर तब हमारा परिचय नहीं हुआ था," कीटी ने कहा। "आपने सोचा भी नहीं होगा कि मैं आपकी छोटी भाभी बन जाऊंगी।"

"आप तो मुझे पहचान न पातीं," निकोलाई ने कीटी के आने पर अपनी खिली मुस्कान के साथ कहा।

"नहीं, मैंने पहचान लिया होता। आपने कितना अच्छा किया कि हमें ख़बर भिजवा दी। कोस्त्या हर दिन ही आपको याद और आपके बारे में चिन्ता करता था।"

किन्तु रोगी की सजीवता कुछ ही देर तक बनी रही।

कीटी ने अपनी बात ख़त्म भी नहीं की थी कि निकोलाई के चेहरे पर जीवित के प्रति मरते हुए व्यक्ति की ईर्ष्या का कठोर और भर्त्सनापूर्ण भाव फिर से झलक उठा।

"मुझे लगता है कि यह कमरा आपके लिये काफ़ी अच्छा नहीं है," कीटी ने निकोलाई की बेधती दृष्टि से बचते और कमरे में नज़र घुमाते हुए कहा। "होटल के मालिक से दूसरे कमरे के लिये कहना होगा," कीटी ने पति से कहा, "सो भी हमारे नज़दीक ही।"

(१८)

लेविन शान्त भाव से भाई की ओर नहीं देख सकता था, उसकी उपस्थिति में ख़ुद भी शान्त नहीं रह सकता था। जब वह रोगी के कमरे में जाता, तो अनजाने ही उसकी आंखों और उसके ध्यान पर पर्दा-सा पड़ जाता और वह भाई की स्थिति की तफ़सीलों को नहीं देख पाता था। वह भयानक बदबू महसूस करता, गन्दगी, गड़बड़, यातनापूर्ण स्थिति देखता और आह-कराह सुनता तथा महसूस करता कि इस मामले में कुछ नहीं किया जा सकता। उसके दिमाग़ में यह ख़्याल तक नहीं आया कि रोगी की स्थिति की तफ़सीलों का विश्लेषण करे, यह सोचे कि कम्बल के नीचे यह शरीर किस स्थिति में है, उसकी सूखी हुई टांगें, कमर और पीठ कैसी टेढ़ी-मेढ़ी हालत में हैं और क्या उनको कुछ बेहतर ढंग से नहीं टिकाया जा सकता, कुछ तो ऐसा किया जाये कि अगर स्थिति बहुत बेहतर न हो सके, तो इतनी बुरी भी न रहे।

वह जब इन सभी तफ़सीलों के बारे में सोचने लगता, तो उसके रोंगटे खड़े हो जाते। उसे पूरी तरह से यक़ीन हो चुका था कि न तो भाई की ज़िन्दगी को बढ़ाने और न ही उसकी यातना को कम करने के लिये कुछ करना सम्भव है। किन्तु उसकी इस बात की चेतना को कि कुछ भी नहीं किया जा सकता, रोगी महसूस करता और उसे इस कारण झल्लाहट होती। इसलिये लेविन पर और भी भारी गुज़रती। उसके लिये रोगी के कमरे में होना यातना था और वहां न होना और भी अधिक यातनाप्रद था। और वह अकेला रहने में असमर्थ होने के कारण तरह-तरह के बहानों से लगातार इस कमरे में आता और बाहर जाता।

किन्तु कीटी न तो ऐसे सोचती, न ऐसे महसूस करती थी और उसकी गतिविधि भी ऐसी नहीं थी। रोगी को देखकर उसे उसपर दया आई। इस दया ने उसके नारी-हृदय में अरुचि और घिन का वह भाव पैदा नहीं किया, जो उसने उसके पति के हृदय में पैदा किया था, बल्कि क्रियाशीलता, उसकी स्थिति की सारी तफ़सीलें जानने और मदद करने के लिये प्रेरित किया। चूंकि उसके दिल में इस बात का तनिक भी सन्देह नहीं था कि उसे उसकी मदद करनी चाहिये, इसलिये उसे इस बात का भी सन्देह नहीं था कि ऐसा किया जा सकता है और वह फ़ौरन इस काम में जुट गयी। उसका पति जिन तफ़सीलों के बारे में सोचने भर से कांप उठता था, उसने फ़ौरन उनकी ओर ध्यान दिया। उसने डाक्टर को बुलवा भेजा, दवाफ़रोश के यहां किसी को भिजवाया और अपने साथ आनेवाली नौकरानी तथा मारीया निकोलायेव्ना को झाड़ने-बुहारने, धोने, सफ़ाई करने के काम में जुटाया, ख़ुद भी कुछ रगड़ा और धो डाला तथा कम्बल के नीचे कुछ लगा दिया। उसकी हिदायत के मुताबिक़ रोगी के कमरे में कुछ लाया और वहां से कुछ हटाया गया। वह सामने से आते हुए महानुभावों की कुछ परवाह न करते हुए कई बार अपने कमरे में गयी, वहां से चादरें, तकिये के गिलाफ़, तौलिये और कुरते, आदि लाई।

सामान्य हॉल में इंजीनियरों को भोजन करानेवाला नौकर कीटी के बुलाने पर कई बार झल्लायी हुई सी सूरत बनाये हुए आया और उसके आदेशों को पूरा करने से इन्कार नहीं कर सका, क्योंकि वह ऐसे स्नेहपूर्ण अनुरोध से ऐसा करती थी कि उन्हें टालना मुश्किल था।

लेविन इन सब बातों का अनुमोदन नहीं करता था, उसे यह विश्वास नहीं था कि इससे रोगी को कुछ लाभ हो सकता है। सबसे ज़्यादा उसे इस बात का डर था कि रोगी न झल्ला उठे। किन्तु यद्यपि ऐसा लगता था कि रोगी इन सब चीज़ों के प्रति उदासीन है, फिर भी खीझता नहीं, केवल लज्जित होता है, कुल मिलाकर, कीटी जो कुछ कर रही थी, उसमें दिलचस्पी लेता है। डाक्टर के यहां से लौटने पर, जहां कीटी ने उसे भेजा था, लेविन ने उसी वक़्त दरवाज़ा खोला, जब कीटी के आदेशानुसार रोगी की क़मीज़ बदली जा रही थी। बड़ी-बड़ी और उभरी हुई स्कंधास्थियों, सूखी पसलियों और रीढ़ की हड्डी वाली सफ़ेद पीठ का पंजर नग्न था और मारीया निकोलायेव्ना तथा नौकर रोगी की लम्बी और लटकती-सी बांह को आस्तीन में नहीं डाल पा रहे थे। कीटी ने लेविन के भीतर आ जाने पर जल्दी से दरवाज़ा बन्द कर दिया और उस तरफ़ नहीं देख रही थी। किन्तु रोगी कराह उठा और वह फुर्ती से उसकी तरफ़ बढ़ गयी।

"जल्दी करो," कीटी ने कहा।

"यहां नहीं आइये," रोगी झल्लाकर कह उठा। "मैं ख़ुद ..."

"क्या कहा आपने?" मारीया निकोलायेव्ना ने पूछा।

किन्तु कीटी ने रोगी की बात सुन ली थी और वह समझ गयी थी कि उसे उसके सामने नग्न दिखते हुए शर्म आ रही है और बुरा लग रहा है।

"मैं नहीं देख रही हूं, नहीं देख रही हूं!" कीटी ने बांह को आस्तीन में डालते हुए कहा। "मारीया निकोलायेव्ना, आप उस तरफ़ से जाकर ठीक कर दीजिये," उसने इतना और जोड़ दिया।

"कृपया ज़रा जाकर मेरे छोटे थैले में से शीशी ले आओ," उसने पति को सम्बोधित किया, "बग़ल वाली छोटी-सी जेब में है। कृपया ले आओ और इसी बीच यहां पूरी तरह सब कुछ ठीक-ठाक कर दिया जायेगा।"

लेविन जब शीशी लेकर लौटा, तो उसने देखा कि रोगी को लिटा दिया गया है और उसके इर्द-गिर्द सब कुछ पूरी तरह से बदल चुका है। गन्दी हवा की जगह अब इत्र के साथ मिले सिरके की सुगन्ध फैली हुई थी, जिसे कीटी होंठों को आगे की ओर फैलाकर तथा लाल-लाल

गालों को फुलाकर नली से सभी ओर छिड़क रही थी। धूल-मिट्टी कहीं दिखाई नहीं दे रही थी और पलंग के नीचे चटाई बिछी हुई थी। मेज़ पर ढंग से शीशियां तथा सुराही, ज़रूरत के कपड़े और कीटी का कशीदाकारी का काम रखा हुआ था। रोगी के पलंग की बग़ल वाली मेज़ पर पेय, मोमबत्ती और दवाइयों की पुड़ियां रखी थीं। ख़ुद रोगी, जिसके हाथ-मुंह धुले और बाल संवरे हुए थे, धुली चादरों पर लेटा था और उसका सिर ऊंचे तकियों पर टिका था। वह सफ़ेद क़मीज़ पहने था, जिसका सफ़ेद कालर अस्वाभाविक रूप से पतली गर्दन के निकट दिख रहा था और वह आशा के नये भाव मे टकटकी बांधकर कीटी की तरफ़ देख रहा था।

लेविन जिस डाक्टर को क्लब में से ढूंढ़कर लाया था, वही नहीं था, जो अब निकोलाई का इलाज कर रहा था और जिससे वह असन्तुष्ट था। नये डाक्टर ने स्टेथास्कोप लगाकर रोगी के फेफड़े जांचे, सिर हिलाया, दवाई का नुसख़ा लिखा और ख़ास विस्तार से पहले यह बताया कि दवाई कैसे पी जाये और फिर यह कि क्या खाया-पिया जाये। उसने सलाह दी कि अंडा कच्चा या ज़रा उबला हुआ खाया जाये और विशेष ताप वाले कच्चे, ताज़ा दूध में खनिज-जल मिलाकर पिया जाये। डाक्टर के जाने के बाद रोगी ने भाई से कुछ कहा, मगर लेविन को केवल यही अन्तिम शब्द "तुम्हारी कात्या" सुनाई दिये, पर उस दृष्टि से, जिससे उसने कीटी की तरफ़ देखा, लेविन समझ गया कि वह उसकी प्रशंसा कर रहा है। उसने कात्या को, जैसे वह कीटी को बुलाता था, अपने पास बुलाया।

"मेरी तबीयत अभी काफ़ी अच्छी हो गयी है," उसने कहा। "आपके साथ होने पर तो मैं कभी का स्वस्थ हो गया होता। कितना अच्छा लग रहा है!" उसने कीटी का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे होंठों तक बढ़ाया, किन्तु मानो डरते हुए कि उसे अच्छा नहीं लगेगा, अपना विचार बदल लिया, हाथ छोड़ा और उसे केवल सहला ही दिया। कीटी ने उसके हाथ को अपने दोनों हाथों में लेकर उसे स्नेह से दबाया।

"अब मुझे बायीं करवट लिटा दो और तुम लोग सोने जाओ," निकोलाई ने कहा।

कीटी के सिवा और कोई उसकी बात नहीं समझ पाया। वह इसलिये समझ गयी कि लगातार इस बात की चिन्ता करती थी कि उसे किस चीज़ की ज़रूरत हो सकती है।

"दूसरी ओर करवट दिला दो," उसने पति से कहा, "वे सदा उस करवट सोते हैं। तुम ही ऐसा कर दो, वेटर को बुलाना अच्छा नहीं होगा। मैं नहीं कर सकती। आप नहीं कर सकतीं?" उसने मारीया निकोलायेव्ना से पूछा।

"मुझे डर लगता है," मारीया निकोलायेव्ना ने कहा।

लेविन के लिये इस भयानक शरीर को बांहों में भरना, कम्बल के नीचे उन जगहों को हाथ लगाना, जिनके बारे में वह जानना नहीं चाहता था, चाहे कितना ही भयानक क्यों न था, फिर भी पत्नी का अनुरोध मानते हुए वह अपने चेहरे पर संकल्प का भाव लाया, जिससे उसकी पत्नी परिचित थी, और भाई के कम्बल के नीचे हाथ घुसेड़ दिये। किन्तु अपनी ताक़त के बावजूद वह भाई के सूखे हुए अंगों के असाधारण बोझ से चकित रह गया। अपनी गर्दन के गिर्द भाई की बड़ी, दुबली बांह का स्पर्श अनुभव करते हुए लेविन जब तक करवट बदलवाता रहा, कीटी ने इसी बीच आहट किये बिना जल्दी से तकिये को ठीक करके दूसरी ओर रख दिया और रोगी का सिर तथा उसके विरले बाल, जो फिर से कनपटियों पर चिपक गये थे, ठीक कर दिये।

रोगी छोटे भाई का हाथ अपने हाथ में थामे रहा। लेविन ने अनुभव किया कि वह उसके हाथ के साथ कुछ करना चाहता है और उसे किसी तरफ़ खींच रहा है। लेविन ने धड़कते दिल से हाथ को ढीला छोड़ दिया। हां, रोगी ने उसके हाथ को अपने मुंह तक ले जाकर चूम लिया। लेविन सिसकियों के कारण सिहरा और कुछ भी कहने में असमर्थ कमरे से बाहर चला गया।

(१९)

"बुद्धिमानों से रहस्य छिपाया और बच्चों तथा बेसमझों को बताया," – इस शाम को अपनी पत्नी से बातचीत करते हुए लेविन उसके बारे में ऐसा ही सोच रहा था।

इंजील की इस पंक्ति के बारे में लेविन इसलिये नहीं सोच रहा था कि वह अपने को बुद्धिमान मानता था। वह अपने को बुद्धिमान नहीं मानता था, किन्तु इस बात से भी अनजान नहीं था कि वह अपनी पत्नी और अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना से ज़्यादा समझदार है और यह भी जानता था कि वह जब मौत के बारे में सोचता है, तो अपनी पूरी बौद्धिक शक्ति से ऐसा करता है। वह यह भी जानता था कि अनेक बड़े बुद्धिमान पुरुष, मौत के बारे में जिनके विचार उसने पढ़े थे, इस बारे में सोचते थे और वे उसका सौवां भाग भी नहीं जानते थे, जो इस सम्बन्ध में उसकी बीवी और अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना जानती थीं। ये दो नारियां, अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना और कात्या, जैसे कीटी को उसका भाई निकोलाई बुलाता था और जैसे अब लेविन को भी इसी तरह उसे पुकारना अधिक अच्छा लगता था, इस मामले में बिल्कुल समान थीं। दोनों ही निस्सन्देह यह जानती थीं कि ज़िन्दगी क्या है और मौत क्या है तथा यद्यपि उन प्रश्नों को किसी तरह भी समझ न पातीं और उनके उत्तर न दे सकतीं, जो लेविन के सामने आते थे, तथापि उन दोनों को इस घटना के महत्त्व के बारे में कुछ भी सन्देह नहीं था और दुनिया के करोड़ों अन्य लोगों की तरह उन दोनों का इस बारे में समान दृष्टिकोण था। वे दोनों निश्चित रूप से यह जानती थीं कि मौत क्या चीज़ है, इसका प्रमाण यह था कि किसी भी तरह की दुविधा के बिना उन्हें यह मालूम था कि मौत के निकट पहुंचे हुए व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये और वे उससे डरती नहीं थीं। लेविन और ऐसे ही अन्य लोग भी, यद्यपि वे मौत के बारे में बहुत कुछ कह सकते थे, स्पष्टत: उसके बारे में नहीं जानते थे, क्योंकि मौत से डरते थे और निश्चय ही उन्हें यह नहीं मालूम था कि जब लोग मरते हैं, तो उन्हें क्या करना चाहिये। अपने भाई निकोलाई के साथ अगर लेविन अकेला होता, तो वह अत्यधिक भयग्रस्त होकर उसकी ओर देखता तथा इससे भी ज़्यादा डर के साथ उसकी मौत का इन्तज़ार करता और इसके अलावा कुछ भी न कर पाता।

इतना ही नहीं, वह यह भी नहीं जानता था कि क्या कहे, कैसे और किधर देखे, कैसे चले-फिरे। इधर-उधर की बातें करना उसे ठेस लगानेवाली बात और अनुचित प्रतीत होता था, मौत या किसी दुखद

बात की चर्चा करना भी ठीक नहीं था। चुप रहना भी बुरा था। "उसकी ओर देखूं तो वह सोच सकता है कि मैं उसको बहुत ग़ौर से ताक रहा हूं, उससे डरता हूं, न देखूं – तो वह यह सोचेगा कि मैं किसी दूसरी चीज़ के बारे में सोच रहा हूं। पंजों के बल चलूं तो उसे अच्छा नहीं लगेगा, पूरे ज़ोर से चलूं तो यह अटपटा होगा।" कीटी स्पष्टत: ऐसी बातों के बारे में नहीं सोचती थी और उसे अपने बारे में सोचने का समय ही नहीं था। वह निकोलाई के बारे में सोचती थी, क्योंकि कुछ जानती थी और सब कुछ ठीक हो रहा था। वह अपने बारे में बताती थी, अपनी शादी की चर्चा करती थी, मुस्कराती थी, उसपर तरस खाती और उसे सहलाती थी तथा लोगों के स्वस्थ हो जाने की घटनाओं का उल्लेख करती थी और सब कुछ ढंग से होता जा रहा था। तो ऐसा मानना चाहिये कि वह जानती थी। कीटी और अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना की गतिविधि नैसर्गिक प्रेरणा, ऐन्द्रिक या युक्तिहीन व्यवहार का परिणाम नहीं थी, इसका प्रमाण यह था कि शारीरिक देखभाल और रोगी की पीड़ा को कम करने के अलावा वे दोनों मरते हुए व्यक्ति के लिये शारीरिक टहल-सेवा से कुछ अधिक महत्वपूर्ण और कुछ ऐसी चीज़ की मांग करती थीं, जिसका शारीरिक स्थितियों से कोई सम्बन्ध नहीं था। अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने मरनेवाले बूढ़े के बारे में कहा था: "भला हो भगवान का, उसका धार्मिक अनुष्ठान और पवित्र विलेपन संस्कार भी हुआ। ईश्वर हर किसी को ऐसी मौत दें।" कात्या ने भी ठीक इसी तरह कपड़ों, शय्या-व्रण और पेय, आदि की चिन्ता करने के अलावा पहले ही दिन रोगी को धार्मिक अनुष्ठान और पवित्र विलेपन संस्कार के लिये राज़ी कर लिया।

रात बिताने के लिये रोगी के कमरे से अपने दो कमरों में लौटने पर लेविन सिर झुकाये बैठा था और नहीं जानता था कि क्या करे। भोजन और सोने की तैयारी करने तथा यह सोचने की बात तो दूर कि आगे उन्हें क्या करना है, वह तो पत्नी से बात भी नहीं कर पा रहा था – उसे शर्म आ रही थी। इसके विपरीत, कीटी सामान्य दिनों की तुलना में अधिक क्रियाशील थी। वह सामान्य की तुलना में अधिक सजीव भी थी। उसने भोजन लाने का आदेश दिया, ख़ुद ही सामान को ठीक-ठाक किया, बिस्तर लगाने में हाथ बंटाया और उनपर कीटाणु-

नाशक पाउडर छिड़कना भी नहीं भूली। उसमें ऐसा उत्साह और जल्दी से समझ-बूझकर काम करने की वह क्षमता आ गयी थी, जो मर्दों में लड़ाई, संघर्ष के पहले, जीवन के ख़तरनाक और निर्णायक क्षणों, ऐसे क्षणों में आती है, जब मर्द अपना जौहर दिखाता है और यह कि इन क्षणों के पहले की उसकी सारी ज़िन्दगी व्यर्थ ही नहीं, बल्कि इन क्षणों की तैयारी में ही बीती थी।

कीटी का हर काम फुर्ती से हो रहा था और अभी बारह भी नहीं बजे थे कि सारा सामान बहुत अच्छे और ऐसे विशेष ढंग से व्यवस्थित कर दिया गया था कि कमरा घर जैसा, घर के कमरों जैसा दिखने लगा था। बिस्तर लग गये थे, ब्रुश, कंघे और दर्पण सजा दिये गये थे और मेज़-नेप्किन बिछा दिये गये थे।

लेविन को ऐसा प्रतीत होता था कि अब खाना-पीना, सोना और बात तक करना अक्षम्य था। वह ऐसे महसूस करता था कि उसकी हर गतिविधि अशिष्टता की द्योतक थी। इसके उलट, कीटी ब्रुशों को ढंग से रख रही थी, मगर यह सब कुछ ऐसे करती थी कि कोई भी चीज़ दिल को ठेस लगानेवाली न हो।

फिर भी वे कुछ खा-पी नहीं सके, देर तक सो नहीं पाये और सोने के लिये देर तक बिस्तर पर भी नहीं जा सके।

"मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी है कि निकोलाई को कल पवित्र विलेपन संस्कार के लिये राज़ी करने में सफल हो गयी," ब्लाउज़ पहने, तह हो जानेवाले दर्पण के सामने बैठी और बढ़िया कंघे से अपने मुलायम और सुगन्धित बाल संवारती हुई कीटी ने कहा। "मैंने संस्कार सम्पन्न होते कभी नहीं देखा, मगर जानती हूं, अम्मां ने मुझे बताया था कि इसमें रोगी के स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना होती है।"

"क्या तुम सचमुच ऐसा समझती हो कि वह स्वस्थ हो सकता है?" लेविन ने कीटी के कंघा आगे ले जाने पर उसके गोल सिर के पिछले भाग की लगातार लुप्त हो जानेवाली संकरी-सी मांग को देखते हुए कहा।

"मैंने डाक्टर से पूछा था – उसने कहा कि निकोलाई तीन दिन से अधिक जीवित नहीं रह सकता। मगर क्या डाक्टर यह सब जान सकते हैं? कुछ भी हो, मैं बहुत ख़ुश हूं कि मैंने निकोलाई को राज़ी कर लिया," बालों के पीछे से पति को कनखियों से देखते हुए उसने

कहा। "कुछ भी हो सकता है," उसने उस विशेष, कुछ चालाकी भरे भाव से कहा, जो हमेशा उसके चेहरे पर धर्म की बात करते समय होता था।

सगाई के बाद धर्म के बारे में उनके बीच हुई बातचीत के पश्चात इन दोनों में से किसी ने कभी इसकी चर्चा नहीं चलाई थी, किन्तु वह गिरजाघर जाने और प्रार्थना करने की रस्मों को इसी शान्त चेतना से करती रही कि ऐसा करना ही चाहिये। लेविन के प्रतिकूल विश्वास दिलाने पर भी कीटी को इस बात का पूरा यक़ीन था कि वह उसके जैसा और उससे भी बेहतर ईसाई है तथा इस मामले में वह जो कुछ कहता है, वह सब उसकी पुरुष-सुलभ वैसी ही हास्यास्पद सनक है, जैसी वह उसकी कशीदाकारी के बारे में यह कहकर व्यक्त करता है कि भले लोग सूराख़ों पर पैवन्द लगाते हैं और वह जान-बूझकर सूराख़ बनाती रहती है, आदि।

"हां, यह औरत मारीया निकोलायेव्ना, यह सब कुछ व्यवस्थित नहीं कर सकती थी," लेविन ने कहा। "और... मुझे यह मानना होगा, मैं बहुत ख़ुश हूं कि तुम मेरे साथ आ गयीं। तुम ऐसी पवित्रता का रूप हो कि..." उसने कीटी का हाथ अपने हाथ में लिया, मगर उसे चूमा नहीं (मृत्यु की निकटता के समय हाथ चूमना उसे उचित नहीं लगा) और कीटी की चमकती हुई आंखों में अपराधी की तरह देखा।

"तुम्हें अकेले को बहुत मुश्किल का सामना करना पड़ता," उसने कहा और हाथ ऊपर उठाकर, जिनसे ख़ुशी के मारे लाल हुए उसके गाल छिप गये, गुद्दी पर चोटियों का जूड़ा बनाकर उनमें पिन खोंस लिये। "नहीं," वह कहती गयी, "उसे यह सब मालूम नहीं है... सौभाग्य से मैंने सोडेन में बहुत कुछ सीख लिया था।"

"क्या वहां ऐसे रोगी थे?"

"इससे भी बुरी हालत में।"

"मेरे लिये सबसे भयानक बात यह है कि मैं उसे उस रूप में देखे बिना नहीं रह सकता, जैसा वह जवानी के दिनों में था... तुम तो यह विश्वास नहीं कर सकोगी कि वह कैसा सुन्दर नौजवान था, मगर तब मैं उसे नहीं समझता था।"

"बहुत, बहुत विश्वास करती हूं। मुझे अनुभव होता है कि मैं और निकोलाई बहुत ही अच्छे मित्र हो सकते थे," कीटी ने कहा, अपने शब्दों से भयभीत होकर पति की ओर देखा तथा उसकी आंखों में आंसू आ गये।

"हां, हो सकते थे," उसने उदासी से कहा। "वह वास्तव में ही ऐसे लोगों में से है, जिनके बारे में यह कहा जाता है कि वे इस दुनिया के लिये नहीं बने हैं।"

"ख़ैर, हमारे सामने अभी बहुत-से कठिन दिन हैं, हमें सोना चाहिये," कीटी ने अपनी छोटी-सी घड़ी पर नज़र डालते हुए कहा।

(२०)

मृत्यु

अगले दिन रोगी के लिये धार्मिक अनुष्ठान और पवित्र विलेपन संस्कार हुआ। इस समय निकोलाई लेविन ने बड़े जोश से प्रार्थना की। रंगीन मेज़पोश से ढकी मेज़ पर रखी देव-प्रतिमा पर टिकी हुई उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में ऐसा उत्साह और आशा की ऐसी झलक थी कि लेविन को इसे देखते हुए भय की अनुभूति हो रही थी। लेविन जानता था कि ऐसी उत्साहपूर्ण प्रार्थना और यह आशा उसके लिये जीवन से विदा लेना, जिसे वह इतना अधिक प्यार करता था, और भी अधिक कठिन बना देंगी। लेविन अपने भाई और उसकी चिन्तन-धारा से परिचित था। उसे मालूम था कि ईश्वर के प्रति उसकी अनास्था का यह कारण नहीं था कि उसके लिये आस्थाहीन होकर जीना आसान था, बल्कि इसलिये कि विश्व-रचना के आधुनिक-वैज्ञानिक स्पष्टीकरण ने धीरे-धीरे भगवान में उसकी आस्था को समाप्त कर दिया था। इसलिये वह जानता था कि इस समय की उसकी आस्था सच्ची और चिन्तन का परिणाम नहीं थी, बल्कि वक़्ती, स्वार्थपूर्ण और स्वस्थ हो पाने की विवेकहीन आशा का परिणाम थी। लेविन को यह भी मालूम था कि कीटी ने चमत्कार की तरह लोगों के स्वस्थ हो जाने के बारे में सुनी कहानियों से इस आशा को और भी तीव्र कर दिया था। लेविन यह सब जानता था और उसे प्रार्थना करते तथा आशापूर्ण दृष्टि,

हड्डी जैसे पतले और सलीब बनाने के लिये तने हुए माथे तक मुश्किल से उठते हाथ, कंधों की उभरी हड्डियों, जीवन को, जिसके लिये रोगी प्रार्थना कर रहा था, समाये रखने में असमर्थ, खोखली छाती वाले व्यक्ति को देखकर बड़ी पीड़ायुक्त यातना हो रही थी। धार्मिक अनुष्ठान के समय लेविन भी प्रार्थना कर रहा था और उसने वह सब कुछ किया, जो यह नास्तिक व्यक्ति हज़ारों बार कर चुका था। भगवान को सम्बोधित करते हुए वह कह रहा था – "यदि आपका अस्तित्व है, तो ऐसा करें कि यह व्यक्ति स्वस्थ हो जाये (आख़िर तो अनेक बार ऐसा हो चुका है) और ऐसा करके आप उसे तथा मुझे बचा लेंगे।"

पवित्र विलेपन के बाद रोगी की तबीयत अचानक बेहतर हो गयी। घण्टे भर तक उसे एक बार भी खांसी नहीं आई, वह मुस्कराता, कीटी का हाथ चूमता और आंखों में आंसू भर भरकर उसे धन्यवाद देता तथा यह कहता रहा कि उसकी तबीयत अच्छी है, कहीं दर्द नहीं हो रहा, कि उसे भूख और अपने अन्दर ताक़त महसूस हो रही है। जब उसके लिये शोरबा लाया गया, तो वह ख़ुद उठकर बैठ गया और उसने एक कटलेट भी देने को कहा। निकोलाई की स्थिति बेशक कितनी ही निराशाजनक क्यों न थी, चाहे यह कितना ही स्पष्ट क्यों न था कि वह बच नहीं पायेगा, इस वक़्त लेविन और कीटी दोनों ही ख़ुशी तथा उत्तेजना की स्थिति में और साथ ही भयभीत भी थे कि कहीं उनसे भूल न हो जाये।

"बेहतर है?" – "हां, कहीं बेहतर है।" – "हैरानी की बात है।" – "इसमें हैरानी की कोई बात नहीं।" – "फिर भी बेहतर तो है," वे फुसफुसाते तथा मुस्कराते हुए एक दूसरे से कह रहे थे।

यह भ्रांति बहुत देर तक नहीं बनी रह सकी। रोगी चैन से सो गया, मगर आध घण्टे बाद खांसी ने उसे जगा दिया। अचानक ख़ुद रोगी और उसके इर्द-गिर्द के लोगों की सभी आशाओं पर पानी फिर गया। उसकी पीड़ा की यथार्थता ने किसी सन्देह के बिना, पहले की आशाओं की स्मृति के बिना लेविन और कीटी तथा स्वयं रोगी के मन में भी उनका अन्त कर दिया।

आध घण्टा पहले उसने जिस बात पर विश्वास किया था, उसका उल्लेख किये बिना ही, मानो उसको याद करना भी लज्जाजनक हो,

उसने छिद्रयुक्त काग़ज़ से ढकी आयोडीन वाली शीशी देने को कहा। लेविन ने उसे शीशी दे दी, और धार्मिक अनुष्ठान के समय की भांति तीव्र आशा से परिपूर्ण उसकी दृष्टि यह मांग करती हुई फिर से भाई पर केन्द्रित हो गयी कि वह डाक्टर के इन शब्दों की पुष्टि कर दे कि आयोडीन को सूंघने से चमत्कार हो जाते हैं।

"क्या कात्या यहां नहीं है?" लेविन द्वारा डाक्टर के शब्दों की अनिच्छापूर्वक पुष्टि के बाद निकोलाई ने इधर-उधर नज़र दौड़ाकर खरखरी-सी आवाज़ में पूछा। "अब मैं तुमसे कह सकता हूं... उसकी ख़ातिर मैंने यह तमाशा किया था। वह इतनी प्यारी है, लेकिन हम-तुम तो अपने को धोखा नहीं दे सकते। हां, इसपर मैं विश्वास करता हूं," उसने कहा और शीशी को अपने हड़ीले हाथ में लेकर सूंघने लगा।

रात के आठ बजे लेविन और कीटी अपने कमरे में चाय पी रहे थे कि मारीया निकोलायेव्ना हांफती हुई उनके पास भागी आई। उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था और होंठ कांप रहे थे।

"मर रहे हैं," वह फुसफुसाई, "मुझे डर है कि वे अभी मर जायेंगे।"

लेविन और कीटी उसके पास भागे गये। निकोलाई एक कोहनी टेके हुए पलंग पर उठकर बैठा था, उसकी लम्बी पीठ झुकी थी और सिर लटका हुआ-सा था।

"तुम क्या महसूस कर रहे हो?" लेविन ने थोड़ी ख़ामोशी के बाद फुसफुसाकर पूछा।

"महसूस कर रहा हूं कि जा रहा हूं," निकोलाई ने कठिनाई मे, किन्तु धीरे-धीरे शब्द निकालते हुए बहुत स्पष्टता से कहा। उसने सिर ऊपर नहीं उठाया, बल्कि सिर्फ़ आंखों को ऊपर उठाया, जो भाई के चेहरे तक नहीं पहुंच सकीं। "कात्या, तुम जाओ!" उसने इतना और कह दिया।

लेविन झटपट उठा और आग्रहपूर्ण फुसफुसाहट के साथ उसने कीटी को बाहर जाने के लिये विवश कर दिया।

"जा रहा हूं," निकोलाई ने दोहराया।

"तुम ऐसा क्यों सोचते हो?" लेविन ने कुछ कहने के लिये ही यह कहा।

"इसलिये कि जा रहा हूं," उसने इस वाक्य को फिर से ऐसे दोहराया मानो उसे उससे प्यार हो गया हो। "आख़िरी वक़्त आ गया।"

मारीया निकोलायेव्ना रोगी के क़रीब आई।

"आप लेट जायें, आपको राहत मिलेगी," उसने कहा।

"जल्द ही चुपचाप लेट जाऊंगा," निकोलाई ने जवाब दिया, "मुर्दा होकर," उसने उपहासजनक ढंग से झल्लाकर कहा। "अगर चाहते हो, तो लिटा दो।"

लेविन ने भाई को चित लिटा दिया, उसके निकट बैठ गया और लगभग सांस न लेते हुए उसके चेहरे को एकटक ताकने लगा। मौत के कगार पर पहुंचा हुआ निकोलाई आंखें मूंदे लेटा था, किन्तु उसके माथे की पेशियां कभी-कभी गहन और तनावपूर्ण चिन्तन करनेवाले व्यक्ति की भांति हिलती-डुलती थीं। लेविन अनचाहे ही उसके साथ-साथ यह सोच रहा था कि अब उसके भीतर क्या हो रहा है, किन्तु उसके विचारों का साथ देने की सभी कोशिशों के बावजूद उस शान्त, गम्भीर चेहरे के भाव तथा भौंह के ऊपर मांस-पेशी के हिलने-डुलने से उसने यह अनुभव किया कि मरनेवाले के लिये वह स्पष्ट होता जा रहा है, जो उसके लिये अस्पष्ट है।

"हां, हां, ऐसे," मरनेवाले ने हर शब्द के बीच रुक-रुककर धीरे-धीरे कहा। "ज़रा रुको," वह फिर से ख़ामोश हो गया। "ऐसे!" उसने अचानक ऐसे राहत से कहा, मानो उसके लिये हर चीज़ साफ़ हो गयी हो। "हे भगवान!" वह कह उठा और उसने गहरी सांस ली।

मारीया निकोलायेव्ना ने उसके पांव छूकर देखे।

"ठण्डे हो रहे हैं," वह फुसफुसायी।

देर तक, बहुत देर तक, जैसा कि लेविन को प्रतीत हुआ, रोगी निश्चल लेटा रहा। लेकिन वह अभी भी ज़िन्दा था और कभी-कभी गहरी सांस लेता था। लेविन चिन्तन के तनाव से थक चुका था। वह महसूस कर रहा था कि दिमाग़ पर बहुत ज़ोर डालने के बावजूद वह नहीं समझ पाया था कि "ऐसे" क्या था। वह अनुभव कर रहा था कि कभी का मरनेवाले को भूल चुका है। मौत के सवाल के बारे में अब वह सोच नहीं सकता था, किन्तु अनचाहे ही उसके मन में

यह विचार ज़रूर आ रहा था कि कुछ ही देर बाद उसे क्या क्या करना होगा – मृत की आंखें बन्द करनी होंगी, उसे कपड़े पहनाने होंगे, ताबूत का आर्डर देना होगा। अजीब बात थी कि वह अपने को पूरी तरह उदासीन अनुभव कर रहा था तथा न तो किसी तरह का अफ़सोस, न भाई को खोने का दुख महसूस कर रहा था और उसके प्रति उसे दया तो और भी कम अनुभव हो रही थी। भाई के प्रति अब अगर वह कुछ अनुभव कर रहा था, तो उस ज्ञान के लिये ईर्ष्या ही, जो अब मरते हुए को प्राप्त था और जो उसे उपलब्ध नहीं हो सकता था।

वह भाई के अन्त की प्रतीक्षा करता हुआ देर तक उसके पास बैठा रहा। मगर अन्त नहीं आया। दरवाज़ा खुला और कीटी दिखाई दी। लेविन उसे भीतर आने से रोकने के लिये उठा। किन्तु जब वह उठा, तो उसे मरणासन्न भाई के हिलने-डुलने की आहट मिली।

"नहीं जाओ," निकोलाई ने कहा और उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ा दिया। लेविन ने अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया और झल्लाहट से पत्नी को जाने का इशारा किया।

मरते हुए भाई का हाथ थामे-थामे वह आध घण्टा, एक घण्टा, फिर एक घण्टा और बैठा रहा। अब वह मौत के बारे में बिल्कुल नहीं सोच रहा था। वह यह सोच रहा था कि कीटी क्या कर रही है, बग़ल के कमरे में कौन रहता है, डाक्टर का अपना घर है या नहीं। उसका कुछ खाने और सोने को मन हुआ। उसने बड़ी सावधानी से हाथ छुड़ाया और भाई की टांगों को छूकर देखा। टांगें ठण्डी थीं, मगर रोगी की सांस अभी चल रही थी। लेविन ने फिर से पंजों के बल चलते हुए बाहर निकल जाना चाहा, किन्तु रोगी फिर से हिला-डुला और उसने कहा –

"नहीं जाओ।"

. . . .

सुबह होने लगी थी। रोगी की स्थिति वैसी ही थी। लेविन ने धीरे से अपना हाथ छुड़ाया और मरते हुए व्यक्ति की ओर देखे बिना अपने कमरे में जाकर सो गया। जब वह जागा, तो भाई की मौत

की ख़बर की जगह, जिसकी वह आशा कर रहा था, उसे पता चला कि रोगी पहले जैसी स्थिति में आ गया है। वह फिर से बैठने, खांसने, खाने और बोलने लगा था, फिर से उसने मौत की चर्चा बन्द कर दी थी, फिर से स्वस्थ हो जाने की आशा प्रकट करने लगा था तथा पहले से ज़्यादा चिड़चिड़ा और खिन्नचित्त हो गया था। न तो भाई, न कीटी, कोई भी तो उसे शान्त नहीं कर पा रहा था। वह सभी पर बिगड़ रहा था, सभी से कटु बातें कह रहा था, सभी को अपनी यातनाओं के लिये भला-बुरा कह रहा था तथा यह मांग कर रहा था कि उसके लिये मास्को से प्रसिद्ध डाक्टर को बुलवाया जाये। उसकी तबीयत कैसी है, इस सम्बन्ध में पूछे जानेवाले सभी प्रश्नों का वह गुस्से और भर्त्सना के लहजे में एक जैसा ही जवाब देता –

"बेहद यातना सह रहा हूं, असह्य यातना!"

रोगी को अधिकाधिक पीड़ा सहनी पड़ रही थी, विशेषकर लेटे रहने के कारण पड़े व्रणों से, जिनका अब किसी तरह इलाज सम्भव नहीं था, हर चीज़ और ख़ास तौर पर इस बात के लिये सभी की भर्त्सना करता था कि मास्को से डाक्टर को नहीं बुलवाया गया। कीटी ने हर तरह से उसकी मदद और उसे शान्त करना चाहा, मगर सब बेसूद रहा। लेविन को साफ़ नज़र आ रहा था कि कीटी यद्यपि इसको स्वीकार नहीं करती थी, तथापि वह ख़ुद शारीरिक और मानसिक रूप से बुरी तरह थक चुकी थी। उस रात को, जब उसने भाई को बुलवाया था, जीवन से विदा लेने की बात के कारण मौत की जो भावना सब के दिल में पैदा हुई थी, वह अब खण्डित हो गयी थी। सब जानते थे कि वह अवश्य और जल्द ही मर जायेगा, कि वह आधा मर भी चुका है। सब केवल एक ही बात चाहते थे – वह जल्दी से जल्दी मर जाये और सभी इस बात को छिपाते हुए उसे शीशियों से दवाई पिलाते थे, दवाइयां और डाक्टर ढूंढ़ते थे, उसे तथा ख़ुद को और एक-दूसरे को धोखा देते थे। यह सब झूठ था, बहुत ही कटु, घृणित और निन्दापूर्ण झूठ था। अपने स्वभाव और इस कारण कि मरणासन्न भाई को वह सबसे अधिक प्यार करता था, लेविन को यह झूठ ख़ास तौर पर बहुत कसक रहा था।

बहुत समय से यह विचार लेविन के मस्तिष्क में घर किये हुए था

कि निकोलाई के मरने के पहले दोनों बड़े भाइयों के बीच सुलह करवा दे। चुनांचे उसने कोज़्निशेव को ख़त लिखा और उत्तर आने पर उसे रोगी को पढ़कर सुनाया। कोज़्निशेव ने लिखा था कि ख़ुद आने में असमर्थ है, किन्तु मर्मस्पर्शी शब्दों में उसने भाई से क्षमा मांगी थी।

रोगी ने कुछ नहीं कहा।

"तो मैं उसे क्या लिखूं?" लेविन ने पूछा। "आशा करता हूं कि तुम उससे नाराज़ नहीं हो?"

"नहीं, ज़रा भी नहीं!" निकोलाई ने दुखी मन से इस प्रश्न का उत्तर दिया। "उसे लिख दो कि वह मेरे लिये मास्को से डाक्टर भेज दे।"

यातनापूर्ण तीन दिन और बीत गये। रोगी की स्थिति वैसी ही रही। जो कोई भी उसे देखता था, अब सभी, होटल के नौकर-चाकर, मालिक, डाक्टर, मारीया निकोलायेव्ना, लेविन और कीटी उसकी मृत्यु चाह रहे थे। केवल रोगी ही इस भावना को व्यक्त नहीं करता था। इसके विपरीत, वह इस बात के लिये बिगड़ता था कि मास्को के नामी डाक्टर को नहीं बुलाया गया, दवाई पीता जाता था तथा जीवन की चर्चा करता था। केवल ऐसे विरले क्षणों में ही, जब अफ़ीम उसे उसकी अनवरत पीड़ा को भूलने के लिये विवश कर देती, वह अर्ध-निद्रा की स्थिति में कभी-कभी उस चीज़ को अभिव्यक्ति देता, जो अन्य सभी की तुलना में कहीं अधिक तीव्रता से अपनी आत्मा में अनुभव करता था – "ओह, यह सब ख़त्म हो जाये!" या "कब समाप्त होगा यह!"

धीरे-धीरे बढ़ती यातनायें अपना प्रभाव दिखाती जा रही थीं और उसे मौत के लिये तैयार कर रही थीं। कोई भी ऐसी स्थिति नहीं थी, जिसमें उसे पीड़ा न अनुभव होती हो, एक भी ऐसा क्षण नहीं होता था, जिसमें वह अपनी यातना को भूल सके, कोई भी जगह, उसके शरीर का कोई भी अंग ऐसा नहीं था, जहां दर्द न होता हो, जो उसे कष्ट न देता हो। अब इस शरीर की स्मृतियां, इससे सम्बन्धित प्रभाव और विचार भी उसमें वैसी ही वितृष्णा पैदा करते थे, जैसे स्वयं शरीर। दूसरे लोगों की उपस्थिति, उनकी बातचीत, अपनी स्मृतियां – उसके लिये यह सब यातनाप्रद था। उसके इर्द-गिर्द उपस्थित रहनेवाले लोग यह अनुभव करते थे और उसके सामने अनजाने ही

न तो आज़ादी से हिलते-डुलते थे, न बातचीत करते थे और न अपनी इच्छाओं को अभिव्यक्ति देते थे। उसका सारा जीवन अब व्यथा की एक भावना और इस व्यथा से मुक्ति पाने की इच्छा में एकीभूत हो गया था।

स्पष्टतः उसमें वह उग्र परिवर्तन हो रहा था, जो उसे मौत को अपनी इच्छाओं की पूर्ति और सुख-सौभाग्य के रूप में मानने को बाध्य करनेवाला था। पहले प्रत्येक इच्छा, जो पीड़ा या अभाव जैसे भूख, थकान और प्यास से पैदा होती थी, शरीर के किसी व्यापार से सन्तुष्ट होने पर आनन्द प्रदान करती थी। किन्तु अब अभाव और पीड़ा की तुष्टि नहीं होती थी और ऐसी तुष्टि के हर प्रयास से नयी पीड़ा उत्पन्न होती थी। इसलिये सारी इच्छायें एक ही इच्छा में एकीभूत हो गयी थीं–सभी यतनाओं और उनके स्रोत यानी शरीर से मुक्ति पा ली जाये। किन्तु मुक्ति की इस इच्छा की अभिव्यक्ति के लिये उसके पास शब्द नहीं थे और इसलिये वह इसकी चर्चा नहीं करता था, बल्कि आदत के मुताबिक़ उन इच्छाओं की पूर्ति की मांग करता था, जिनकी पूर्ति अब सम्भव नहीं थी। "मुझे दूसरी करवट लिटा दो," वह कहता और कुछ ही देर बाद यह मांग करता कि उसे पहले की तरह लिटा दिया जाये। "मेरे लिये शोरबा लाओ। शोरबा वापस ले जाओ, कोई बात सुनाइये न, आप लोग चुप क्यों हैं।" जैसे ही वे कुछ बताना शुरू करते, वह आंखें मूंद लेता और थकान, उदासीनता तथा वितृष्णा प्रकट करता।

इस शहर में आने के दस दिन बाद कीटी बीमार पड़ गयी। उसके सिर में दर्द था, उसे मतली होती थी और वह पूरी सुबह बिस्तर से नहीं उठ पायी।

डाक्टर ने बताया कि थकान और उत्तेजना से उसकी तबीयत बिगड़ गयी है और उसने उसे आराम तथा मानसिक चैन लेने के लिये कहा।

फिर भी दिन के भोजन के बाद कीटी उठी और सदा की भांति अपना कशीदाकारी का काम लेकर रोगी के कमरे की ओर चल दी। जब वह कमरे में दाख़िल हुई, तो रोगी ने उसे कड़ी नज़र से देखा और जब उसने यह कहा कि वह बीमार थी, तो तिरस्कारपूर्वक मुस्क-

गया। इस दिन वह लगातार नाक सिनक रहा था और दर्दनाक ढंग मे कराह रहा था।

"कैसी तबीयत है आपकी?" कीटी ने उससे पूछा।

"अधिक ख़राब," उसने मुश्किल से जवाब दिया। "दर्द हो रहा है!"

"कहां दर्द हो रहा है?"

"सभी जगह।"

"देख लीजियेगा, आज अन्त आ जायेगा," मारीया निकोलायेव्ना ने यद्यपि फुसफुसाकर यह बात कही थी, तथापि चूंकि, जैसा कि लेविन ने इस बात की ओर ध्यान दिया था, रोगी की श्रवण-शक्ति बहुत तीव्र थी, उसे ये शब्द सुनाई दे गये होंगे। लेविन ने हिश की और मुड़कर रोगी की तरफ़ देखा। निकोलाई ने इन शब्दों को सुन लिया था, मगर इनका उसपर कोई असर नहीं हुआ था। उसकी दृष्टि में पहले जैसा वही तिरस्कार और तनाव था।

"आप ऐसा क्यों सोचती हैं?" लेविन ने उससे तब पूछा, जब वह उसके पीछे-पीछे गलियारे में गयी।

"अपने को नोचने लगा है," मारीया निकोलायेव्ना ने जवाब दिया।

"कैसे नोचने लगा है?"

"ऐसे," अपने ऊनी फ़्राक की चुन्नटों को खींचते हुए उसने कहा। वास्तव में ही लेविन ने देखा था कि रोगी उस पूरे दिन अपने को ऐसे दबोचता रहा था मानो कुछ उखाड़ लेना चाहता था।

मारीया निकोलायेव्ना की भविष्यवाणी सही निकली। रात होते-होते रोगी हाथ ऊपर उठाने में असमर्थ हो गया और दृष्टि के संकेन्द्रित भाव को बदले बिना केवल अपने सामने ही देखता रहा। यहां तक कि जब लेविन या कीटी उसके ऊपर ऐसे झुकते कि वह उन्हें देख पाता, रोगी उसी भांति ही देखता रहता। कीटी ने पादरी को बुलवा भेजा ताकि उसके लिये मरने से पहले की प्रार्थना करवा ले।

पादरी जब तक प्रार्थना करता रहा, मरणासन्न रोगी में जीवन के कुछ भी लक्षण दिखाई नहीं दिये। उसकी आंखें मुंदी हुई थीं। लेविन, कीटी और मारीया निकोलायेव्ना उसके पलंग के पास खड़ी थीं। पादरी

ने प्रार्थना ख़त्म भी नहीं की थी कि मरते हुए रोगी ने हाथ-पांव फैलाये, गहरी सांस ली और आंखें खोल लीं। पादरी ने प्रार्थना समाप्त करके ठण्डे माथे पर सलीब रखी, फिर धीरे से उसे अपने चोग़े में लपेट लिया और एक-दो मिनट तक चुप खड़े रहने के बाद उसने ठण्डे पड़ते हुए, रक्तहीन और बड़े-बड़े हाथ को छुआ।

"अन्त हो गया, पादरी ने कहा और वहां से हटना चाहा। किन्तु मृतप्राय व्यक्ति की चिपकी हुई मूंछें सहसा हिलीं और ख़ामोशी में वक्ष की गहराई से साफ़ और तीखे शब्द सुनाई दिये:

"पूरी तरह नहीं... जल्द ही।"

एक मिनट बाद उसका चेहरा चमक उठा, होंठों के नीचे मुस्कान आ गयी और वहां जमा स्त्रियों ने सावधानी से मृत को कपड़े पहनाने शुरू किये।

भाई को ऐसी दशा में देखते और मृत्यु की उपस्थिति को अनुभव करते हुए लेविन की आत्मा में मृत्यु की अनबूझ पहेली और साथ ही उसकी निकटता तथा अनिवार्यता का वह भयावह विचार फिर से उभर आया, जिसने उसे पतझर की उस शाम को दबोच लिया था, जब बीमार भाई उसके पास आया था। अब यह विचार पहले से अधिक प्रबल था, मृत्यु का अर्थ समझने के मामले में उसने अपने को पहले की तुलना में और कम समर्थ अनुभव किया और उसकी अनिवार्यता उसे और भी अधिक भयानक प्रतीत हुई। किन्तु पत्नी की उपस्थिति की बदौलत इस भाव ने उसे हताश नहीं किया और मृत्यु के बावजूद उसने जीने और प्यार करने की आवश्यकता अनुभव की। उसने महसूस किया कि प्यार ने उसे हताशा से बचाया है और हताशा के भय की छाया में यह प्यार और अधिक शक्तिशाली और निर्मल हो गया है।

अनबूझ रहनेवाली मृत्यु की पहेली उसकी आंखों के सामने से अभी हटी ही थी कि एक अन्य ऐसी ही अनबूझ पहेली सम्मुख आ गयी, जो प्यार और जीवन का आह्वान करती थी।

डाक्टर ने कीटी के बारे में अपने अनुमान की पुष्टि कर दी। वह गर्भ रह जाने के कारण ही अस्वस्थ थी।

(२१)

बेत्सी और ओब्लोन्स्की से बातचीत करने के बाद कारेनिन जब यह समझ गया कि उससे केवल यही अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी पत्नी को उसके हाल पर छोड़ दे, अपनी उपस्थिति से उसे परेशान न करे और यह कि उसकी बीवी भी यही चाहती है, उस क्षण से वह ऐसा स्तम्भित होकर रह गया कि ख़ुद कोई भी निर्णय नहीं कर सकता था, यह नहीं जानता था कि अब वह क्या चाहता है और अपने को उनके हाथों में सौंपकर, जो अब इतनी ख़ुशी से उसके मामलों को निपटाते थे, हर चीज़ के बारे में सहमति प्रकट कर देता था। केवल तभी, जब आन्ना उसके घर से चली गयी और बेटे की अंग्रेज़ शिक्षिका ने यह पूछने के लिये उसके पास नौकर भेजा कि वह दिन का भोजन उसके साथ करे या अलग से, उसे पहली बार अपनी स्थिति का स्पष्ट आभास हुआ और वह सकते में आकर रह गया।

इस स्थिति में सबसे कठिन चीज़ यह थी कि वह अपने अतीत और वर्तमान के बीच कोई तार नहीं जोड़ सकता था, ताल-मेल नहीं बिठा सकता था। वह अतीत, जब वह पत्नी के साथ सुखी जीवन बिताता था, उसे परेशान नहीं करता था। उस अतीत से पत्नी की बेवफ़ाई की जानकारी तक का संक्रमणकाल वह भयानक व्यथा के रूप में जी चुका था। यह स्थिति बहुत बोझिल थी, मगर समझ में आती थी। यदि पत्नी अपनी बेवफ़ाई की घोषणा करके तभी चली गयी होती, तो उसे बहुत रंज होता, गहरे दुख की अनुभूति होती, किन्तु वह स्वयं को ऐसी असहाय और अस्पष्ट स्थिति में न पाता, जिसमें इस वक़्त अपने को महसूस कर रहा था। वह कुछ ही समय पहले की अपनी क्षमा, अपनी स्नेहशीलता, बीमार पत्नी और परायी बच्ची के प्रति अपने प्यार का किसी तरह उस चीज़ के साथ ताल-मेल नहीं बिठा सकता था, जो अब थी यानी इस चीज़ के साथ मानो इस सब के पुरस्कार के रूप में वह अब अपने को अकेला, अपमानित, उपहास-पात्र और ऐसा व्यक्ति महसूस कर रहा था, जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं थी और जिसे सभी तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे।

पत्नी के जाने के बाद पहले दो दिन कारेनिन ने प्रार्थियों से मुलाक़ात

की, अपने निजी सेक्रेटरी से बातचीत की, कमेटी की बैठकों में गया और भोजन करने के लिये सदा की भांति भोजन कक्ष में आया। अपने से यह प्रश्न किये बिना कि वह किसलिये ऐसा करता है, उसने इन दो दिनों में अपने मन की सारी शक्ति इसी में लगायी कि ख़ुद को शान्त, यहां तक कि उदासीन भी ज़ाहिर कर सके। आन्ना की चीज़ों और कमरों का क्या किया जाये, इन प्रश्नों के उत्तर देते समय उसने अपने को ऐसा व्यक्ति ज़ाहिर करने के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया, जिसे इस घटना के घटने का पहले से ही आभास था, कि वह इसे कोई असाधारण चीज़ नहीं मानता है। उसे अपने इस लक्ष्य में सफलता भी मिलती, कोई भी उसमें हताशा के लक्षण नहीं देख पाया। किन्तु आन्ना के जाने के तीसरे दिन, जब कोरनेई ने फ़ैशनदार पोशाकों की दुकान का एक बिल, जो आन्ना चुकाना भूल गयी थी, उसे लाकर दिया और यह कहा कि दुकान का कारिन्दा ख़ुद आया है, तो कारेनिन ने उसे अपने पास बुलवाया।

"हुज़ूर, माफ़ी चाहता हूं कि आपको परेशान करने की जुर्रत कर रहा हूं। लेकिन अगर आप यह चाहते हैं कि श्रीमती जी को ही इसके लिये कष्ट दूं, तो कृपया मुझे उनका पता बता दीजिये।"

कारिन्दे को ऐसा प्रतीत हुआ कि कारेनिन सोच में डूब गया है और फिर अचानक मुड़कर अपनी मेज़ के क़रीब जा बैठा। हाथों पर सिर टिकाकर वह देर तक इसी तरह बैठा रहा, उसने कई बार कुछ कहने की कोशिश की, मगर कह न पाया।

अपने मालिक की मानसिक स्थिति को समझते हुए कोरनेई ने कारिन्दे से किसी अन्य दिन आने को कहा। फिर से अकेला रह जाने पर कारेनिन यह समझ गया कि दृढ़ता और शान्तचित्त होने की भूमिका निभाने में वह असमर्थ है। उसने आदेश दिया कि प्रतीक्षा कर रही बग्घी के घोड़े खोल दिये जायें, किसी मुलाक़ाती को घर में न आने दिया जाये और वह भोजन करने के लिये भी अपने कमरे से बाहर नहीं निकला।

उसने अनुभव किया कि वह सभी लोगों के उस तिरस्कार तथा कठोरता के सामान्य दबाव को सहन नहीं कर सकेगा, जो उसे इस कारिन्दे, कोरनेई और किसी भी अपवाद के बिना उन सभी लोगों के

चेहरों पर साफ़ दिखायी दिया था, जिनसे इन दिनों उसकी मुलाक़ात हुई थी। वह अनुभव कर रहा था कि अपने प्रति लोगों की घृणा को दूर नहीं कर सकता, क्योंकि यह घृणा इस कारण नहीं थी कि वह बुरा है (तब तो वह अच्छा बनने की कोशिश कर सकता था), बल्कि इस कारण थी कि वह लज्जाजनक और भयानक रूप से अभागा है। वह जानता था कि इसीलिये, इसी कारण वे उसके प्रति निर्मम होंगे कि उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हो चुका है। वह महसूस कर रहा था कि लोग वैसे ही उसे मिटा डालेंगे, जैसे कुत्ते बुरी तरह घायल और दर्द के कारण चीखते-किकियाते कुत्ते को मार डालते हैं। वह जानता था कि लोगों से बचने का सिर्फ़ एक ही रास्ता है – उनसे अपने घावों को छिपाये। उसने दो दिन तक अनजाने ही ऐसा करने की कोशिश की, किन्तु अब अनुभव किया कि उसमें नाबराबरी का यह संघर्ष जारी रखने की शक्ति नहीं है।

इस चेतना से उसकी हताशा और भी बढ़ गयी कि अपने दुख में वह सर्वथा एकाकी है। सिर्फ़ पीटर्सबर्ग में ही नहीं, कहीं भी कोई ऐसा आदमी नहीं था, जिसके सामने वह अपने दिल का बोझ हल्का कर सकता, जिसे उसपर एक बड़े सरकारी अफ़सर और कुलीन के रूप में नहीं, बल्कि इसलिये तरस आता कि वह व्यथित और पीड़ित व्यक्ति है।

कारेनिन यतीम की तरह बड़ा हुआ था। वे दो भाई थे। पिता की उन्हें याद नहीं थी और मां तब चल बसी थी, जब कारेनिन दस साल का था। सम्पत्ति बहुत थोड़ी-सी थी। कारेनिन के चाचा ने, जो महत्त्वपूर्ण सरकारी अफ़सर और कभी तो दिवंगत सम्राट के स्नेह-भाजन थे, दोनों भाइयों का पालन-पोषण किया था।

पदकों के साथ हाई स्कूल और विश्वविद्यालय की पढ़ाई ख़त्म करके कारेनिन ने अपने चाचा की मदद से ऊंची सरकारी नौकरी हासिल कर ली और उसी समय से पूरी तरह नौकरी में तरक़्क़ी करने की महत्त्वाकांक्षा के फेर में पड़ गया। कारेनिन ने न तो स्कूल, न विश्वविद्यालय और न बाद में नौकरी करते हुए ही किसी के साथ दोस्ताना सम्बन्ध बढ़ाये। भाई ही उसके मन के सबसे अधिक निकट था, किन्तु वह विदेश मन्त्रालय में काम करता था, हमेशा विदेश में

रहता था और कारेनिन की शादी के कुछ ही समय बाद विदेश में ही उसका देहान्त हो गया था।

कारेनिन जिस समय एक गुबेर्निया का राज्यपाल था, तो उसी गुबेर्निया में रहनेवाली आन्ना की धनी बूआ ने अपनी भतीजी और अधेड़ व्यक्ति, किन्तु राज्यपाल के नाते जवान कारेनिन के बीच मेल-जोल बढ़ाया और उसे ऐसी स्थिति में डाल दिया कि या तो वह सगाई का प्रस्ताव करे या नगर छोड़कर चला जाये। कारेनिन देर तक दुविधा में रहा। ऐसा करने के पक्ष में जितने तर्क थे, उनके विपरीत भी उतने ही थे। ऐसा कोई निर्णायक तर्क नहीं था, जो उसे सन्देह में कोई निर्णय न करने का अपना सिद्धान्त बदलने को विवश करता। किन्तु आन्ना की बूआ ने किसी परिचित के ज़रिये उसके मन पर यह प्रभाव डलवाया कि उसने लड़की को अटपटी स्थिति में डाल दिया है और एक भले आदमी के नाते उसे रिश्ते का प्रस्ताव करना चाहिये। उसने ऐसा प्रस्ताव किया और मंगेतर तथा पत्नी के रूप में उसे अपनी वह सारी भावना अर्पित की, जो उसके लिये सम्भव थी।

आन्ना के प्रति वह जो अनुराग अनुभव करता था, उसने उसकी आत्मा में दूसरे लोगों के साथ हार्दिक सम्बन्धों की आवश्यकता को बिल्कुल समाप्त कर दिया था। अब उसके परिचितों में से किसी के भी साथ उसकी घनिष्ठता नहीं थी। सम्पर्क तो बहुतों के साथ थे, किन्तु मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध नहीं थे। ऐसे लोग बहुत थे, जिन्हें कारेनिन अपने यहां खाने पर बुला सकता था, अपनी रुचि के मामले में उनसे दिलचस्पी लेने या किसी की मदद करने का अनुरोध कर सकता था, जिनके साथ वह दूसरे लोगों और सरकार के सदस्यों के बारे में खुलकर विचार-विमर्श कर सकता था। किन्तु ऐसे लोगों के साथ उसके सम्बन्ध एक विशेष लीक में बंधे-बंधाये और आदत की ऐसी सीमा में घिरे हुए थे, जिससे बाहर निकलना सम्भव नहीं था। विश्वविद्यालय के दिनों का एक साथी ज़रूर था, जिससे बाद में उसकी घनिष्ठता हो गयी थी और जिसके साथ वह अपना सुख-दुख बांट सकता था। मगर यह साथी किसी दूरस्थ क्षेत्र में स्कूल इन्स्पेक्टर था। पीटर्सबर्ग के लोगों में उसका निजी सेक्रेटरी और डाक्टर ही निकटतम व्यक्ति थे और उन्हीं से उसके लिये बात करना सम्भव था।

निजी सेक्रेटरी मिखाईल वसील्येविच स्लूदिन सीधा-सरल, समझदार, दयालु और नैतिकतापरायण व्यक्ति था तथा कारेनिन महसूस करता था कि वह उसके प्रति सद्भावना भी रखता है। किन्तु पांच वर्ष के दफ़्तरी ढंग के सम्बन्ध दिली बातें करने के मामले में बाधा डालते थे।

काग़ज़ों पर हस्ताक्षर करने के बाद कारेनिन देर तक ख़ामोश रहकर स्लूदिन को ताकता रहा। उसने कई बार कुछ कहने की कोशिश की, मगर कह न पाया। उसने अपने मन में यह वाक्य भी तैयार कर लिया था – "आपने मेरे दुर्भाग्य के बारे में सुना है?" किन्तु सदा की भांति यह कहकर ही – "तो आप मेरे लिये ये काग़ज़ तैयार कर दें" – बात ख़त्म कर दी और उसे जाने को कहा।

दूसरा व्यक्ति डाक्टर था। वह भी उसके प्रति सद्भावना रखता था। किन्तु उन दोनों ने मानो एक मौन समझौते के अनुसार यह मान लिया था कि दोनों ही काम के बोझ से बुरी तरह दबे हुए हैं और उतावली में हैं।

अपनी नारी-मित्रों और सबसे पहले काउंटेस लीदिया इवानोव्ना का कारेनिन को ध्यान ही नहीं आया था। नारी के रूप में सभी नारियां उसके लिये भयानक और घृणित थीं।

(२२)

कारेनिन ने काउंटेस लीदिया इवानोव्ना को भुला दिया, मगर वह उसे नहीं भूली थी। एकाकीपन के इस अत्यधिक हताशा के क्षण में वह उसके पास आई और अपने आने की सूचना दिलवाये बिना उसके अध्ययन कक्ष में दाखिल हो गयी। दोनों हाथों में सिर थामे हुए वह जिस स्थिति में बैठा था, उसने उसे वैसे ही पाया।

"J'ai forcé la consigne,*" उसने तेज़ क़दमों से भीतर आते और उत्तेजना तथा तेज़ चाल के कारण हांफते हुए कहा। "मैं सब कुछ सुन चुकी हूं! अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच! मेरे दोस्त!" अपने दोनों

---

* मैंने आपके निषेध का उल्लंघन किया है। (फ़्रांसीसी)

हाथों से उसका हाथ दबाते और अपनी सुन्दर तथा स्वप्निल-सी आंखों से उसकी आंखों में झांकते हुए उसने कहा।

कारेनिन माथे पर बल डालकर खड़ा हो गया और काउंटेस के हाथों से अपना हाथ छुड़ाकर उसकी तरफ़ कुर्सी बढ़ा दी।

"बैठियेगा न, काउंटेस? मैं किसी से नहीं मिल रहा हूं काउंटेस, क्योंकि मेरी तबीयत अच्छी नहीं है," उसने कहा और उसके होंठ कांप उठे।

"मेरे दोस्त!" कारेनिन के चेहरे पर नज़र टिकाये हुए ही लीदिया इवानोव्ना ने इन शब्दों को दोहराया, उसकी भौंहें ऊपर उठ गयीं, जिससे उसके माथे पर तिकोण-सा बन गया, उसका पीला चेहरा और भी बदसूरत हो गया, किन्तु कारेनिन ने महसूस किया कि काउंटेस को उसपर तरस आ रहा है और किसी भी क्षण उसकी आंखें छलछला सकती हैं। कारेनिन द्रवित हो उठा, उसने काउंटेस का गुदगुदा-सा हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसे चूमा।

"मेरे दोस्त!" उसने भाव-विह्वलता के कारण टूटती आवाज़ में कहा। "आपको दुख को अपने पर हावी नहीं होने देना चाहिये। आपका दुख बहुत बड़ा है, मगर आपको सान्त्वना ढूंढ़नी चाहिये।"

"मैं बिल्कुल टूट गया हूं, कुचल दिया गया हूं, मैं अब इन्सान नहीं रहा!" कारेनिन ने काउंटेस का हाथ छोड़ते, किन्तु आंसुओं से तर उसकी आंखों में देखते हुए कहा। "मेरी स्थिति इसलिये भयानक है कि मुझे कहीं भी, ख़ुद अपने में भी सहारे का आधार नहीं मिल रहा है।"

"आपको सहारा मिल जायेगा। आप उसे मुझमें नहीं ढूंढ़िये, यद्यपि मेरी दोस्ती पर भरोसा करने का मैं आपसे अनुरोध करती हूं," काउंटेस ने गहरी सांस लेकर कहा। "हमारा सहारा प्यार है, वह प्यार, जो उन्होंने हमें दिया है। उनका बोझ भारी नहीं है," काउंटेस ने उस उत्साहपूर्ण दृष्टि के साथ, जिससे वह परिचित था, यह बात कही। "वे आपको सहारा देंगे और आपकी मदद करेंगे।"

इन शब्दों में व्यक्त अपनी उच्च भावनाओं से बेशक वह स्वयं द्रवित हो उठी थी और यद्यपि इनमें वह नयी, आह्लादपूर्ण तथा कुछ ही समय पहले पीटर्सबर्ग में फैलनेवाली रहस्यमयी मनःस्थिति भी थी,

जिसे कारेनिन व्यर्थ समझता था, फिर भी इस समय उसे यह सुनना अच्छा लगा।

"मुझमें शक्ति नहीं रही। मैं तबाह हो गया हूं। मैं पहले से कुछ नहीं देख पाया और अब कुछ नहीं समझ पा रहा हूं।"

"मेरे दोस्त," लीदिया इवानोव्ना ने दोहराया।

"जो कुछ अब नहीं रहा, मैं उसे हानि नहीं मानता," कारेनिन ने अपनी बात जारी रखी। "मुझे उसका अफ़सोस नहीं। किन्तु मेरी अब जो स्थिति है, उसके लिये मैं लोगों के सामने लज्जा अनुभव किये बिना नहीं रह सकता। यह बुरी बात है, मगर मैं कुछ नहीं कर सकता, कुछ नहीं कर सकता।"

"क्षमादान का वह उच्च कार्य आपने नहीं किया, जिसके लिये मैं और सभी आपकी प्रशंसा करते हैं, बल्कि उन्होंने, जो आपके हृदय में बसे हुए हैं," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने आह्लादपूर्ण ढंग से दृष्टि ऊपर उठाते हुए कहा, "और इसलिये अपने कार्य के लिये आप लज्जित नहीं हो सकते।"

कारेनिन ने माथे पर बल डाल लिये और हाथ झुकाकर उंगलियां चटकाने लगा।

"काश आपको सभी तफ़सीलें मालूम होतीं," उसने अपनी पतली-सी आवाज़ में कहा। "आदमी की ताक़त की भी कोई हद होती है और मैं अपनी इस हद तक पहुंच चुका हूं। आज दिन भर मुझे अपनी नयी, एकाकीपन की परिस्थिति के परिणामस्वरूप (उसने 'परिणाम-स्वरूप' शब्द पर ज़ोर दिया) घर के मामलों का प्रबन्ध करना पड़ा। नौकरों-चाकरों, शिक्षिका और बिलों की चिन्ता करनी पड़ी... इन छोटी-छोटी चिंगारियों ने मुझे जला डाला। मेरे लिये इन्हें सहन करना सम्भव नहीं था। दिन के खाने के वक़्त... कल मैं खाने की मेज़ से उठकर जाता-जाता रह गया। मेरा बेटा जिस तरह मेरी ओर देख रहा था, मुझसे वह सहन नहीं हो पा रहा था। जो कुछ हुआ है, उसने मुझसे उस सबका मतलब नहीं पूछा, किन्तु वह पूछना चाहता था और मैं उसकी ऐसी दृष्टि सहन नहीं कर पा रहा था। वह मेरी ओर देखते हुए घबरा रहा था, किन्तु बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है..."

कारेनिन उस बिल की चर्चा करना चाहता था, जो उसके पास

लाया गया था। मगर उसकी आवाज़ कांप गयी और वह रुक गया। नीले काग़ज़ पर लिखे टोपी और रिबनों के इस बिल को वह अपने प्रति दया अनुभव किये बिना याद नहीं कर सकता था।

"मैं समझती हूं, मेरे दोस्त," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने कहा। "मैं सब कुछ समझती हूं। सहायता और सान्त्वना आप मुझसे नहीं पायेंगे, फिर भी मैं केवल इसीलिये आयी हूं कि अगर कर सकूं, तो आपकी मदद करूं। अगर मैं आपके कंधों से इन सभी छोटी-छोटी और तिरस्कारपूर्ण चिन्ताओं का बोझ हटा सकती... मैं समझती हूं कि आपके घर में नारी के शब्दों, नारी के प्रबन्ध की आवश्यकता है। आप यह भार मुझे सौंपते हैं?"

कारेनिन ने चुप रहते हुए कृतज्ञता से उसका हाथ दबा दिया।

"सेर्योझा की हम दोनों मिलकर देखभाल करेंगे। व्यावहारिक कामों में मैं बहुत होशियार नहीं हूं, फिर भी मैं मामले को अपने हाथ में ले लूंगी, मैं आपकी गृह-प्रबन्धिका का काम करूंगी। मुझे धन्यवाद नहीं दीजियेगा। मैं ख़ुद यह नहीं कर रही हूं..."

"मैं धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता।"

"लेकिन मेरे दोस्त, अपने को उस भावना के वश में नहीं होने दीजिये, जिसकी आपने अभी चर्चा की थी, आप उस चीज़ से लज्जित हों, जो किसी ईसाई की उच्चता का शिखर-बिन्दु है–जो विनम्र है, वही ऊंचा है। आपको मुझे धन्यवाद भी नहीं देना चाहिये। उन्हीं को धन्यवाद देना और उन्हीं से सहायता की प्रार्थना करनी चाहिये। केवल उन्हीं से आपको चैन, सान्त्वना, मुक्ति और स्नेह मिलेगा," काउंटेस ने कहा तथा आकाश की ओर आंखें उठाकर, जैसा कि कारेनिन को लगा, प्रार्थना करने लगी।

कारेनिन अब काउंटेस को सुन रहा था और वे वाक्य, जो उसे पहले अप्रिय तो नहीं, किन्तु अतिशय प्रतीत होते थे, अब स्वाभाविक और सान्त्वनाप्रद लगने लगे। कारेनिन को यह नयी, आह्लादपूर्ण धारा पसन्द नहीं थी। वह आस्था रखनेवाला व्यक्ति था और मुख्यतः राजनैतिक अर्थ में ही धर्म में रुचि लेता था। किन्तु नयी धार्मिक धारा धर्म के कुछ नये अर्थ लगाने की सम्भावना देती थी और चूंकि वह विवाद तथा विश्लेषण का मार्ग खोलती थी, इसीलिये सिद्धान्त के रूप

में उसे अच्छी नहीं लगती थी। पहले तो इस शिक्षा के प्रति वह उदासीनता, यहां तक कि शत्रुता का भाव भी रखता था और लीदिया इवानोव्ना के साथ, जो इस धारा में बह गयी थी, कभी बहस नहीं करता था, बल्कि उसकी चुनौतियों को मौन रहकर टालने की कोशिश करता था। किन्तु अब पहली बार उसने बड़ी ख़ुशी से उसके शब्दों को सुना और मन में उनका विरोध नहीं किया।

"आपके कार्यों और आपके शब्दों के लिये भी मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं," काउंटेस के प्रार्थना समाप्त कर लेने पर उसने कहा।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने फिर एक बार अपने मित्र के दोनों हाथों को दबाया।

"तो मैं अब काम शुरू करती हूं," उसने कुछ देर तक चुप रहने तथा चेहरे पर से आंसुओं के शेष चिह्नों को पोंछने के बाद कहा। "मैं सेर्योझा के पास जा रही हूं। एकदम लाचार होने पर ही मैं आपसे मदद लेने को आऊंगी।" और वह उठकर बाहर चली गयी।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना सेर्योझा के कमरों वाले आधे भाग में गयी और वहां डरे-सहमे बालक के गालों को आंसुओं से तर करके उसने उससे कहा कि उसका बाप देवता है और उसकी मां मर गयी है।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने अपना वचन पूरा किया। उसने सचमुच ही कारेनिन के घर की व्यवस्था और उसे चलाने की सारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। किन्तु जब उसने यह कहा था कि व्यावहारिक कामों में वह बहुत चतुर नहीं है, तो किसी तरह की अतिशयोक्ति से काम नहीं लिया था। उसकी सभी हिदायतों को रद्द करना पड़ा, क्योंकि उन्हें अमली जामा पहनाना मुमकिन नहीं था, और यह काम कारेनिन के नौकर कोरनेई ने किया, जो अब किसी को भी इस बात का एहसास करवाये बिना कारेनिन की घर-गिरस्ती चलाता था। वह कपड़े पहनने में मदद देते समय शान्ति और सावधानी से ज़रूरत की चीज़ें मालिक को बता देता था। फिर भी लीदिया इवानोव्ना की सहायता बहुत मूल्यवान थी: पहले तो अपने प्रति उसके प्यार और आदर की चेतना ने कारेनिन को नैतिक सहारा दिया और विशेषत: इसलिये कि लीदिया इवानोव्ना ने उसे सच्चा ईसाई बना

दिया था, जिससे काउंटेस को बड़ा सन्तोष था। दूसरे शब्दों में उदासीन और उत्साहहीन आस्थावान से ईसाई धर्म की शिक्षा की उस नयी व्याख्या का ज़ोरदार और दृढ़ समर्थक बना दिया था, जिसका पिछले कुछ अर्से से पीटर्सबर्ग में प्रचार हुआ था। कारेनिन ने इसे आसानी से स्वीकार कर लिया। लीदिया इवानोव्ना और उसके समान दृष्टिकोण रखनेवाले दूसरे लोगों की भांति कारेनिन भी कल्पना की गहराई और उस आत्मिक क्षमता से वंचित था, जिसकी बदौलत कल्पना की उड़ान से जन्म लेनेवाले विचार इतने वास्तविक हो जाते हैं कि वे दूसरे विचारों और वास्तविकता से तद्नुरूपता की अपेक्षा करते हैं। उसे इस धारणा में कुछ भी असम्भव और बेतुकापन नहीं दिखाई देता था कि आस्थाहीनों के लिये विद्यमान मृत्यु का उसके लिये कोई अस्तित्व नहीं है, और चूंकि उसमें पूर्ण आस्था है, जिसके परिणाम का निर्णायक वह स्वयं है, इसलिये उसकी आत्मा में पाप भी नहीं रहा और वह यहां, इस धरती पर ही पूर्ण मुक्ति अनुभव करता है।

यह सच है कि इस धारणा के छिछलेपन और भूल का कारेनिन को धुंधला-सा आभास ज़रूर था। वह जानता था कि जब बिल्कुल यह सोचे बिना ही कि आन्ना को उसका क्षमादान किसी उच्च शक्ति का कार्य है, उसने स्वतःस्फूर्त ढंग से इस भावना को स्वीकार किया था, उसे इस समय की तुलना में कहीं अधिक सुख मिला था, जब वह हर क्षण यह सोचता था कि उसकी आत्मा में ईसा मसीह बसे हुए हैं और काग़ज़ों पर हस्ताक्षर करते हुए वह उनके आदेश का पालन करता है। किन्तु कारेनिन के लिये ऐसा सोचना ज़रूरी था, उसके लिये अपनी अपमान की स्थिति में उस ऊंचाई का, बेशक वह कल्पित ही हो, सहारा लेना ज़रूरी था, जहां से वह, जो अन्य सभी से तिरस्कृत था, दूसरों को तिरस्कार की दृष्टि से देख सके और इसीलिये वह अपनी इस बनावटी मुक्ति के साथ वास्तविक मुक्ति की तरह चिपका हुआ था।

(२३)

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना अभी बहुत ही जवान और रोमानी-सी लड़की थी जब एक धनी, कुलीन, नेकदिल और ख़ुशमिज़ाज ऐयाश

के साथ उसकी शादी कर दी गयी थी। शादी के एक महीने के बाद पति ने उसे छोड़ दिया और उसके अत्यधिक भावनापूर्ण प्रणय-निवेदन के जवाब में वह केवल व्यंग्य-बाण ही छोड़ता और शत्रुता का भाव तक दिखाता। काउंट के दयालु हृदय से परिचित और प्रेम-दीवानी लीदिया इवानोव्ना में किसी प्रकार की त्रुटियां न देख पानेवाले लोग इस बात को किसी तरह भी नहीं समझ पाते थे। तभी से, तलाक़ न होने पर भी वे दोनों अलग-अलग रहते थे और पति की जब भी पत्नी से मुलाक़ात होती, वह उसके साथ पहले जैसे विषैले, व्यंग्यपूर्ण ढंग से व्यवहार करता, जिसका कारण समझ पाना सम्भव नहीं था।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना को पति से कभी का प्यार नहीं रहा था, मगर तभी से वह किसी न किसी को अवश्य प्यार करती रही थी। वह कई पुरुषों और नारियों को एकसाथ ही प्यार कर सकती थी। किसी न किसी चीज़ में नाम पैदा करनेवाले सभी लोगों से वह मुहब्बत करती थी। ज़ार परिवार में शामिल होनेवाले सभी राजकुमारों-राजकुमारियों को वह प्यार करती थी, एक बड़े बिशप, सहायक बिशप और पादरी से भी उसे प्रेम था। एक पत्रकार, तीन स्लावों, कमिसारोव, एक मन्त्री, एक डाक्टर, एक अंग्रेज़ धर्म-प्रचारक और कारेनिन से उसे मुहब्बत थी। ये सभी प्यार, जो कभी चढ़ाव और कभी उतार पर होते थे, दरबार और ऊंचे समाज के साथ उसके बहुत ही विस्तृत और जटिल सम्बन्धों को निभाते जाने में बाधा नहीं डालते थे। किन्तु दुर्भाग्य का शिकार होने के बाद, जब से उसने कारेनिन को अपने विशेष संरक्षण में ले लिया था, जब से कारेनिन के सुख-सौभाग्य की चिन्ता करते हुए वह उसके घर की देखभाल करने लगी थी, तब से उसे ऐसा अनुभव होने लगा था कि उसके बाक़ी सभी प्यार वास्तविक नहीं थे और वह अब सचमुच ही सिर्फ़ कारेनिन को प्यार करती है। जैसी प्रणय-भावना उसे अब अनुभव होती थी, उसे लगता था कि वह पहले की सभी ऐसी भावनाओं से कहीं तीव्र है। अपनी भावना का विश्लेषण और पहली भावनाओं से इसकी तुलना करते हुए उसे यह साफ़ नज़र आता था कि अगर कमिसारोव ने ज़ार की जान न बचाई होती तो वह उसे प्यार न करती, अगर स्लाव-समस्या सामने न आती, तो रीस्तिच-कुदजीत्स्की पर उसका मन न आता, किन्तु कारेनिन को वह

स्वयं उसी के लिये, उसकी उच्च, अनबूझ आत्मा, शब्दों को लटका-लटकाकर बोलने के अन्दाज़ तथा उसे प्यारी लगनेवाली पतली आवाज़, थकी-थकी नज़र, उसके मिज़ाज और उभरी नसों वाले मुलायम, गोरे हाथों के लिये प्यार करती थी। उसे उससे भेंट होने पर सिर्फ़ ख़ुशी ही नहीं होती थी, बल्कि वह उसके चेहरे पर उस प्रभाव के चिह्न भी ढूंढ़ने की कोशिश करती थी, जो उसने उसपर डाला होता था। वह केवल शब्दों से ही नहीं, बल्कि अपने समूचे व्यक्तित्व से उसे पसन्द आना चाहती थी। पहले किसी भी समय की तुलना में अब वह अपने पहनावे की तरफ़ कहीं अधिक ध्यान देती थी। कभी-कभी वह यह कल्पना करने लगती कि अगर वह अविवाहित होती और कारेनिन बन्धन-मुक्त होता, तो क्या होता? कारेनिन के कमरे में दाख़िल होने पर वह उत्तेजना से लाल हो जाती और जब वह कोई प्यारी बात कहता, तो उसके होंठों पर बरबस ख़ुशी की मुस्कान खिल उठती।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना कई दिन से बेहद बेचैन थी। उसे पता चल गया था कि आन्ना और व्रोन्स्की पीटर्सबर्ग में हैं। कारेनिन को आन्ना से भेंट होने, यहां तक कि इस बात की यातनापूर्ण जानकारी होने से भी बचाना ज़रूरी था कि यह भयानक नारी उसी शहर में है, जहां वह है और किसी भी क्षण उसकी उससे भेंट हो सकती है।

लीदिया इवानोव्ना अपने परिचितों द्वारा इस बात का भेद पाती रही कि ये "घृणित लोग", जैसा कि वह आन्ना और व्रोन्स्की को कहती थी, क्या करने का इरादा रखते हैं और इन दिनों के दौरान अपने मित्र की सभी गतिविधियों का ऐसे निर्देशन करती रही कि उसकी आन्ना और व्रोन्स्की से भेंट न हो जाये। जवान ऐडजुटेन्ट ने, जो व्रोन्स्की का दोस्त था और जिसके ज़रिये काउंटेस सूचना प्राप्त करती थी तथा जो ख़ुद बदले में काउंटेस की मदद से कुछ लाभ पाना चाहता था, उसे बताया कि आन्ना और व्रोन्स्की ने अपने काम-काज समाप्त कर लिये हैं और अगले दिन पीटर्सबर्ग से जा रहे हैं। लीदिया इवानोव्ना शान्त होने लगी थी कि अगली ही सुबह को उसे एक ख़त लाकर दिया गया, जिसकी लिखावट को पहचानकर वह कांप उठी। यह आन्ना कारेनिना की लिखावट थी। लिफ़ाफ़ा मोटे और कड़े काग़ज़ का था, अंडाकार पीले काग़ज़ पर बहुत बड़ा नामचिह्न था और पत्र से प्यारी सुगन्ध आ रही थी।

"कौन लाया है?"

"होटल का हरकारा।"

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना पत्र को पढ़ने के लिये देर तक नहीं बैठ पायी। उत्तेजना के कारण उसे दमे का दौरा पड़ गया, जिसकी वह रोगी थी। शान्त होने पर उसने फ़्रांसीसी भाषा में यह पत्र पढ़ा।

"Madame la Comtesse,* मैं अनुभव करती हूं कि आपके हृदय को ओत-प्रोत करनेवाली ईसाई धर्म की भावनायें मुझे आपको पत्र लिखने का अक्षम्य साहस प्रदान करती हैं। पुत्र-विछोह के कारण मैं बहुत दुखी हूं। जाने से पहले एक बार उससे मिलने की अनुमति की प्रार्थना करती हूं। क्षमा चाहती हूं कि आपको अपनी याद दिला रही हूं। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के बजाय मैं आपको केवल इसलिये पत्र लिख रही हूं कि उस दयालु व्यक्ति को अपनी याद दिलाकर व्यथित नहीं करना चाहती। उनके प्रति आपकी मैत्री से परिचित हूं, इसलिये आशा करती हूं कि आप मेरी भावना को समझ जायेंगी। आप सेर्योझा को मेरे पास भेज देंगी या किसी इंगित समय पर मैं घर में जाऊंगी अथवा आप मुझे यह सूचित कर देंगी कि घर के बाहर किसी दूसरी जगह पर मैं कब और कहां उससे मिल सकती हूं? उस व्यक्ति की विशालहृदयता को जानते हुए, जिसपर यह निर्भर है, मैं इन्कार किये जाने की उम्मीद नहीं करती। बेटे से मिलने को मैं कितनी लालायित हूं, आप इसकी कल्पना भी नहीं कर सकतीं और इसलिये यह कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि आपकी सहायता का मैं कितना आभार मानूंगी।

आन्ना।"

इस पत्र की हर चीज़, इसके सार, विशालहृदयता की ओर संकेत और ख़ास तौर पर, जैसा कि काउंटेस को लगा, इसके बेतकल्लुफ़ अन्दाज़ से लीदिया इवानोव्ना को झल्लाहट महसूस हुई।

"कह दो कि उत्तर नहीं दिया जायेगा," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने जवाब दिया और उसी क्षण स्याही-चूस पैड खोलकर कारेनिन को यह लिख भेजा कि दिन के एक बजे बधाई-समारोह के समय वह उससे महल में मिलने की आशा रखती है।

---

* काउंटेस। (फ़्रांसीसी)

"मुझे एक महत्त्वपूर्ण और दुखद मामले पर आपसे बातचीत करनी है। वहां हम स्थान तय कर लेंगे। मेरे यहां ही ज़्यादा अच्छा रहेगा, जहां मैं 'आपकी' चाय तैयार करने का आदेश दे दूंगी। मुलाक़ात बहुत ज़रूरी है। वे सलीब देते हैं और वही उसे उठाने की शक्ति भी देते हैं," उसने कारेनिन को पहले से ही कुछ तैयार करने के लिये लिखा।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना आम तौर पर हर दिन दो-तीन रुक़्के कारेनिन को लिखती थी। उससे सम्पर्क बनाये रखने की यह लालित्यपूर्ण और रहस्यमय प्रक्रिया, जो उसके व्यक्तिगत सम्बन्धों में विद्यमान नहीं थी, उसे पसन्द थी।

(२४)

बधाई-समारोह समाप्त हो रहा था। जानेवाले लोग दूसरों से मिल-जुल रहे थे, नये समाचारों, नये मिले पदकों-पुरस्कारों और महत्त्वपूर्ण अधिकारियों के स्थान-परिवर्तनों की चर्चा कर रहे थे।

"कितना अच्छा होता कि काउंटेस मारीया बोरीसोव्ना को युद्ध-मन्त्री और काउंटेस वात्कोव्स्काया को सेना-प्रधान बना दिया जाता," सुनहरी कशीदाकारी से सजी वर्दी पहने, पके बालोंवाला एक बुज़ुर्ग ऊंचे क़द की सुन्दर दरबारी परिचारिका से कह रहा था, जिसने उससे सरकारी ओहदों में की गयी तब्दीलियों के बारे में पूछा था।

"और मुझे उनका एड-डी-कैम्प नियुक्त किया जाता," दरबारी परिचारिका ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"आपकी नियुक्ति तो हो भी चुकी है – धार्मिक मामलों के विभाग में और कारेनिन को आपका सहायक बनाया गया है।"

"नमस्ते, प्रिंस!" पास आनेवाले व्यक्ति से हाथ मिलाते हुए बुज़ुर्ग ने कहा।

"कारेनिन के बारे में आप क्या कह रहे थे?" प्रिंस ने पूछा।

"उसे और पुत्यातोव को अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक मिला है।"

"मेरा ख़्याल था कि उसे यह पहले से ही मिल चुका है।"

"नहीं। आप उस पर नज़र डालें," बुज़ुर्ग ने कढ़े हुए टोप से

कारेनिन की ओर संकेत किया। कारेनिन दरबारी वर्दी पहने था, उसके कंधे के गिर्द पदक का नया लाल रिबन पड़ा हुआ था और वह हॉल के दरवाज़े के पास राजकीय कमेटी के किसी प्रभावपूर्ण सदस्य से बातचीत कर रहा था। "कितना ख़ुश और कैसे खिला हुआ है," बुज़ुर्ग ने कसरती ढंग के तगड़े और सुन्दर कंचुकी से हाथ मिलाने के लिये रुकते हुए कहा।

"नहीं, वह बुढ़ा गया है," कंचुकी ने कहा।

"चिन्ताओं के कारण। वह अब परियोजनायें तैयार करता है। अब वह उस बदक़िस्मत का तब तक पिंड नहीं छोड़ेगा, जब तक सिलसिलेवार ढंग से सब मुद्दों का उल्लेख नहीं कर लेगा।"

"बुढ़ा कैसे गया? Il fait des passions.* मेरे ख़्याल में काउंटेस लीदिया इवानोव्ना अब उसकी पत्नी से जलती है।"

"अजी हटाइये! कृपया काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के बारे में कुछ भी बुरा नहीं कहियेगा।"

"यह कौन-सी बुरी बात है कि वह कारेनिन से मुहब्बत करती है?"

"क्या यह सच है कि कारेनिना यहां है?"

"यहां महल में नहीं, लेकिन पीटर्सबर्ग में है। कल मैंने उसे और अलेक्सेई व्रोन्स्की को bras dessus, bras dessous** मार्स्काया सड़क पर देखा था।

"C'est un homme qui n'a pas...***" कंचुकी ने कहना शुरू किया, मगर पास से गुज़रनेवाले ज़ार-परिवार के किसी सदस्य को रास्ता देते और सिर झुकाते हुए ख़ामोश हो गया।

तो कारेनिन पर टीका-टिप्पणी करते और उसका मज़ाक़ उड़ाते हुए ये लोग लगातार बातें करते जा रहे थे। इसी बीच कारेनिन राजकीय कमेटी के सदस्य का रास्ता रोके हुए, ताकि वह खिसक न जाये, रुके बिना उसके सामने क्रमबद्ध रूप से अपनी वित्तीय परियोजना प्रस्तुत करता जा रहा था।

---

* औरतें उसपर मरती हैं। (फ़्रांसीसी)

** बांह में बांह डाले। (फ़्रांसीसी)

*** यह ऐसा व्यक्ति है, जिसके पास नहीं है... (फ़्रांसीसी)

पत्नी जब उसे छोड़कर गयी, लगभग उसी समय कारेनिन के जीवन में नौकरीपेशा आदमी की कटुतम घटना घटी – उसकी पदोन्नति पर पूर्णविराम लग गया। पूर्णविराम लग गया था और सबको यह साफ़ नज़र आ रहा था, मगर ख़ुद कारेनिन को अभी यह चेतना नहीं हुई थी कि उसके उन्नति-मार्ग का अन्त हो चुका है। स्त्रेमोव के साथ उसका टकराव, पत्नी द्वारा उसका परित्याग या फिर केवल यही कारण रहा हो कि वह अपने लिये निर्धारित सीमा तक पहुंच गया था, किन्तु इस साल सभी को यह स्पष्ट हो चुका था कि नौकरी के क्षेत्र में वह अपनी दौड़ पूरी कर चुका है। वह अभी भी महत्त्वपूर्ण पद पर था, बहुत-से आयोगों और समितियों का सदस्य था, लेकिन उसका ज़माना लद चुका था और अब उससे कुछ भी उम्मीद नहीं की जाती थी। वह जो कुछ भी कहता, जो भी सुझाव देता, उसकी बात ऐसे सुनी जाती मानो वह जो भी प्रस्ताव कर रहा है, बहुत पहले से सबको मालूम है और वही है, जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं।

किन्तु कारेनिन इसे अनुभव नहीं करता था। इसके विपरीत, सरकारी कार्य-कलापों में अब सीधे तौर पर भाग न लेने के कारण वह दूसरों की गतिविधियों की त्रुटियों और भूलों को पहले से अधिक अच्छी तरह देखता था और उन्हें सुधारने के तरीक़े बताने को अपना कर्त्तव्य मानता था। पत्नी के जाने के फ़ौरन बाद ही उसने शासन की सभी शाखाओं से सम्बन्धित असंख्य टिप्पणियों में से, जिनकी किसी को ज़रूरत नहीं थी और जिन्हें उसे लिखना था, नयी न्याय-पद्धति के बारे में अपनी पहली टिप्पणी लिखनी शुरू कर दी थी।

कारेनिन ने सरकारी ओहदों की दुनिया में अपनी पतली हालत की तरफ़ न केवल ध्यान नहीं दिया और इससे न केवल दुखी ही नहीं हुआ, बल्कि पहले किसी भी समय की तुलना में अपने कार्य-कलापों से बहुत ख़ुश भी था।

"विवाहित सांसारिक चिन्तायें करता है, कैसे पत्नी को प्रसन्न किया जाये, अविवाहित भगवान की चिन्ता करता है, कैसे उसे प्रसन्न किया जाये," ईशदूत पावेल ने कहा है और कारेनिन, जो अब अपने कार्यों में इंजील से निर्देशित होता था, बहुधा इन शब्दों को याद करता था। उसे लगता था कि जब से पत्नी छोड़कर गयी है, वह

अपनी इन्हीं परियोजनाओं से पहले की तुलना में भगवान की कहीं अधिक सेवा करता है।

राजकीय कमेटी के सदस्य की बैचेनी से, जो खिसक जाना चाहता था, कारेनिन को स्पष्टतः कोई घबराहट नहीं हो रही थी। उसने केवल तभी बोलना बन्द किया, जब वह सदस्य ज़ार के किसी वंशज के निकट से गुज़रने के अवसर का लाभ उठाकर वहां से खिसक गया।

अकेला रह जाने पर कारेनिन ने अपने विचारों को क्रमबद्ध करते हुए सिर झुका लिया, इसके बाद अपने इर्द-गिर्द खोयी-खोयी दृष्टि डाली और फिर दरवाज़े की तरफ़ चल दिया, जहां उसे काउंटेस लीदिया इवानोव्ना से भेंट होने की आशा थी।

"ये सभी कितने तगड़े और स्वस्थ हैं," कारेनिन ने हट्टे-कट्टे कंचुकी के महकते और ढंग से संवारे हुए गलमुच्छों और कसी हुई वर्दी पहने प्रिंस की लाल गरदन को देखते हुए, जिनके पास से उसे गुज़रना था, मन ही मन सोचा। "ठीक ही कहा गया है कि दुनिया में सब बुराई ही बुराई है," कंचुकी की पिण्डलियों की ओर एक बार फिर कनखियों से देखते हुए उसने सोचा।

कारेनिन ने धीरे-धीरे क़दम बढ़ाते और थकान तथा गरिमा के सामान्य भाव से इन महानुभावों का, जो उसकी चर्चा कर रहे थे, सिर झुकाकर अभिवादन किया और दरवाज़े की ओर देखते हुए काउंटेस लीदिया इवानोव्ना को नज़रों से ढूंढ़ने की कोशिश की।

"अरे! अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच!" बुज़ुर्ग व्यक्ति ने कारेनिन के निकट आने और उदासीनता से सिर झुकाने पर अपनी आंखों में द्वेषपूर्ण चमक लाकर कहा। "मैंने अभी तक आपको बधाई नहीं दी," कारेनिन को दिये गये नये पदक की ओर संकेत करते हुए उसने कहा।

"धन्यवाद," कारेनिन ने उत्तर दिया। "कितना प्यारा दिन है आज," अपनी आदत के मुताबिक़ "प्यारा" शब्द पर ज़ोर देते हुए उसने इतना और जोड़ दिया।

वे उसका मज़ाक़ उड़ा रहे थे, कारेनिन को यह मालूम था। किन्तु वह शत्रुता के सिवा उनसे किसी और चीज़ की आशा ही नहीं करता था। वह इसका आदी हो गया था।

दरवाज़े में दाख़िल होती काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के चोली

से बाहर निकले पीले कन्धों और अपनी तरफ़ बुलाती हुई सुन्दर तथा स्वप्निल-सी आंखों की झलक मिलने पर कारेनिन अपने सफ़ेद और अभी तक मज़बूत सफ़ेद दांतों को खोलकर मुस्कराता हुआ उसके क़रीब गया।

पिछले कुछ समय की भांति आज की पोशाक का चुनाव करने में भी लीदिया इवानोव्ना को बहुत मेहनत करनी पड़ी थी। तीस साल पहले की तुलना में अब उसका पोशाक चुनने का उद्देश्य बिल्कुल उलट था। तब वह अपने को किसी भी तरह सजाना चाहती थी और जितना अधिक सजा पाती थी, उतना ही अच्छा था। अब उसे आयु और आकृति से मेल न खाते ढंग से केवल यही ध्यान में रखते हुए कपड़े पहनने होते थे कि उसके पहनावे और रूप-रंग का अन्तर बहुत भयानक न हो। कारेनिन के मामले में उसे इस उद्देश्य में सफलता मिली थी और लगता था कि वह उसके मन को छूती है। शत्रुता और व्यंग्य-उपहास के सागर में लीदिया इवानोव्ना उसके लिये न केवल सहानुभूति, बल्कि स्नेह का भी एक मात्र द्वीप थी।

उपहासजनक दृष्टियों की पांत के बीच से गुज़रते हुए वह उसकी प्यार भरी नज़र की तरफ़ स्वभावतः ऐसे खिंच रहा था, जैसे पौधा सूरज की ओर खिंचता है।

"बधाई देती हूं," काउंटेस ने नज़रों से ही पदक वाले रेशमी रिबन की ओर संकेत करते हुए कहा।

ख़ुशी की मुस्कान पर क़ाबू पाते हुए उसने आंखें मूंदकर कंधे झटक दिये मानो यह कहना चाहता हो कि इससे उसे कोई ख़ुशी नहीं हो सकती। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना अच्छी तरह जानती थी कि यद्यपि वह इसे कभी स्वीकार नहीं करेगा, तथापि यह उसकी एक मुख्य ख़ुशी है।

"तो हमारा फ़रिश्ता कैसा है?" काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने सेर्योझा के बारे में पूछा।

"यह तो नहीं कह सकता कि मैं उससे पूरी तरह सन्तुष्ट हूं," भौंहें चढ़ाते और आंखें खोलते हुए कारेनिन ने उत्तर दिया। "सीत्निकोव (यह वह शिक्षक था, जो धर्म-शिक्षा को छोड़कर बेटे को और सब-कुछ पढ़ाता था) भी उससे ख़ुश नहीं है। जैसा कि मैंने आपसे कहा था,

उसमें उन्हीं मुख्य चीज़ों के बारे में एक तरह की उदासीनता-सी है, जिन्हें हर व्यक्ति और हर बालक की आत्मा को छूना चाहिये," कारेनिन ने नौकरी के अलावा अपनी दिलचस्पी के एकमात्र इस विषय यानी बेटे के पालन-शिक्षण के प्रश्न पर अपने विचार प्रकट करने शुरू किये।

लीदिया इवानोव्ना की मदद से कारेनिन जब फिर से जीवन और क्रियाशीलता की ओर लौटा, तो उसे अनुभव हुआ कि उसके पास रह जानेवाले बेटे के शिक्षण की ओर ध्यान देना उसका कर्त्तव्य है। कारेनिन ने बच्चों के पालन-शिक्षण के प्रश्नों में चूंकि पहले कभी रुचि नहीं ली थी, इसलिये उसने इस विषय के सैद्धान्तिक अध्ययन में कुछ समय लगाया। नृवंशशास्त्र, शिक्षाशास्त्र और शिक्षाविधियों की कुछ पुस्तकें पढ़ने के बाद उसने बेटे के शिक्षण की योजना बनायी और पीटर्सबर्ग के सबसे अच्छे शिक्षक को निदेशन के लिये नियुक्त करके अपने इस काम में लग गया। इस काम की ओर वह लगातार ध्यान देता था।

"किन्तु हृदय? मुझे उसमें पिता का हृदय दिखाई देता है और ऐसे हृदय वाला बच्चा बुरा नहीं हो सकता," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने बड़े उत्साह के साथ कहा।

"हो सकता है... जहां तक मेरा सम्बन्ध है, तो मैं अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा हूं। मैं तो बस, यही कर सकता हूं।"

"आप मेरे यहां आइयेगा," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने तनिक चुप रहने के बाद कहा, "हमें आपके लिये एक दुखद मामले पर बातचीत करनी होगी। आपको कुछ स्मृतियों से बचाने के लिये मैं कोई भी क़ीमत चुकाने को तैयार हूं, किन्तु दूसरे लोग ऐसा नहीं सोचते। मुझे उसका पत्र मिला है। वह यहां, पीटर्सबर्ग में है।"

पत्नी के बारे में याद दिलाये जाने पर कारेनिन सिहर उठा, मगर उसी वक़्त उसके चेहरे पर वह मृतप्राय जड़ता आ गयी, जो इस मामले में पूर्ण विवशता को व्यक्त करती थी।

"मुझे ऐसी ही आशा थी," कारेनिन ने कहा।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने आह्लादपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा और उसकी आंखों में कारेनिन की आत्मा की महानता के प्रति श्रद्धा के द्योतक आंसू छलछला आये।

कारेनिन जब काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के छोटे-से आरामदेह कमरे में पहुंचा, जिसमें प्राचीन ढंग की चीनी मिट्टी की बढ़िया चीज़ें रखी थीं और दीवारों पर छविचित्र लटके हुए थे, गृह-स्वामिनी अभी वहां नहीं थी। वह कपड़े बदल रही थी।

मेज़पोश से ढकी हुई गोल मेज़ पर बीच में चीनी प्याले-प्लेटें और स्पिरिट से गर्म होनेवाली चांदी की केतली रखी थी। कारेनिन ने परिचित छविचित्रों को खोयी-खोयी नज़र से देखा और मेज़ के पास बैठकर वहां पड़ी हुई इंजील खोल ली। काउंटेस के रेशमी फ़ाक की सरसराहट ने उस ओर उसका ध्यान आकृष्ट किया।

"तो अब हम इतमीनान से बैठेंगे," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उत्तेजनापूर्ण मुस्कान के साथ जल्दी से मेज़ और सोफ़े के बीच से गुज़रते हुए कहा, "और चाय पीते हुए बातचीत कर लेंगे।"

ज़मीन तैयार करने के कुछ शब्दों के बाद काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने हांफते और उत्तेजना से लाल होते हुए आन्ना से मिला पत्र कारेनिन के हाथ में दे दिया।

पत्र पढ़कर वह देर तक ख़ामोश रहा।

"मेरे ख़्याल में मुझे उसे इन्कार करने का हक़ नहीं है," उसने नज़र ऊपर उठाकर कुछ घबराते हुए कहा।

"मेरे दोस्त! आपको किसी में कोई बुराई दिखाई नहीं देती!"

"इसके उलट, मुझे हर चीज में बुराई दिखती है। किन्तु ऐसा करना क्या न्यायपूर्ण होगा?"

उसके चेहरे पर दुविधा और उस मामले में सलाह, समर्थन और निर्देशन पाने का भाव झलक रहा था, जो उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

"हां, हर चीज़ की कोई हद होती है," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना कह उठी। "मैं दुराचार को समझ सकती हूं," उसने पूरी सचाई से यह नहीं कहा था, क्योंकि कभी वह चीज़ नहीं समझ सकती थी, जो नारी को दुराचार की ओर ले जाती है, "किन्तु क्रूरता को नहीं समझ सकती और वह भी किसके प्रति? आपके प्रति! कैसे

वह उस शहर में आकर रह सकती है, जहां आप हैं? जीते जाओ और सीखते जाओ। और मैं आपकी ऊंचाई तथा उसकी नीचता को जानना सीख रही हूं।"

"किन्तु पत्थर कौन फेंकेगा?"* कारेनिन ने अपनी भूमिका से स्पष्टतः प्रसन्न होते हुए कहा। "मैंने उसे सब कुछ क्षमा कर दिया है और इसलिये उसे उस चीज़ से वंचित नहीं कर सकता, जो उसके लिये उसके प्यार – बेटे के प्रति प्यार की मांग है..."

"किन्तु क्या इसे प्यार कहा जा सकता है, मेरे दोस्त? क्या यह निष्कपट है? मान लिया कि आपने क्षमा कर दिया, आप क्षमा करते हैं... मगर क्या हमें उस फ़रिश्ते की आत्मा को परेशान करने का अधिकार है? वह उसे मर चुकी मानता है। वह उसके लिये प्रार्थना करता है, भगवान से उसके पाप क्षमा कर देने का अनुरोध करता है... यही ज़्यादा अच्छा है। लेकिन उससे मुलाक़ात होने पर वह क्या सोचेगा?"

"मैंने इस चीज़ पर ग़ौर नहीं किया," कारेनिन ने सम्भवतः सहमत होते हुए कहा।

काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने हाथों से मुंह ढांप लिया और ख़ामोश हो गयी। वह प्रार्थना कर रही थी।

"अगर आप मेरी सलाह लेना चाहते हैं," उसने प्रार्थना करने के बाद चेहरे पर से हाथ हटाकर कहा, "तो मैं आपको ऐसा करने की सलाह नहीं दूंगी। क्या मैं यह नहीं देख रही हूं कि आप कितनी यातना सह रहे हैं, कैसे इससे आपके घाव फिर हरे हो गये हैं? किन्तु मान लीजिये कि आप सदा की भांति अपनी कोई चिन्ता नहीं करते। इसका क्या नतीजा होगा? यही न कि आपको नयी यातनायें सहनी होंगी, बच्चे को व्यथित होना पड़ेगा? अगर उसमें कुछ भी मानवीय बचा है, तो ख़ुद उसे ही ऐसी इच्छा नहीं व्यक्त करनी चाहिये। नहीं, मैं किसी भी तरह की शंका के बिना आपको ऐसा करने की

---

* इंजील से। अभिप्राय: क्या कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसने पाप न किया हो?

सलाह नहीं दूंगी और अगर आपकी अनुमति होगी, तो उसे पत्र लिख दूंगी।"

कारेनिन राज़ी हो गया और काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने फ़्रांसीसी भाषा में यह पत्र लिख भेजा।

"प्रिय श्रीमती जी,

"आपके बेटे को आपकी याद दिलाने से वह आपके बारे में ऐसे प्रश्न पूछ सकता है, जिनके उत्तर बच्चे के हृदय में उस बात के सम्बन्ध में, जो उसके लिये पावन होनी चाहिये, भर्त्सना के भाव पैदा किये बिना नहीं दिये जा सकते। इसलिये अनुरोध करती हूं कि आप अपने पति के इन्कार को ईसाई धर्म की श्रेयभावना के अनुरूप ही ग्रहण करें। सर्वशक्तिमान से आप पर दया करने की प्रार्थना करती हूं।

काउंटेस लीदिया।"

इस पत्र ने वह गुप्त लक्ष्य प्राप्त कर लिया, जो काउंटेस लीदिया इवानोव्ना स्वयं अपने से भी छिपा रही थी। इसने आन्ना के दिल को गहरी ठेस लगायी।

दूसरी ओर, लीदिया इवानोव्ना के यहां से लौटकर कारेनिन हर दिन के काम-काजों में अपना मन नहीं लगा सका और उसे आस्थावान तथा मुक्ति-मार्ग से परिचित उस व्यक्ति का चैन नहीं मिल सका, जो वह पहले अनुभव करता था।

पत्नी के याद दिलाये जाने से, जो उसके सम्मुख इतनी दोषी थी और जिसके सामने, जैसा कि काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उससे सही कहा था, वह देवता जैसा था, उसे परेशानी नहीं होनी चाहिये। किन्तु वह चैन अनुभव नहीं कर रहा था। वह जो किताब पढ़ रहा था, उसे समझ नहीं पा रहा था, आन्ना के साथ अपने सम्बन्धों की यातनापूर्ण स्मृतियों, उन ग़लतियों को नहीं भुला सकता था, जो, जैसा कि उसे अब प्रतीत होता था, उसने उसके मामले में की थीं। घुड़दौड़ों से लौटते समय आन्ना द्वारा अपनी बेवफ़ाई को स्वीकार करने पर उसने जो रवैया अपनाया था (विशेषकर यह कि उसने उससे बाहरी दिखावे की मांग की और व्रोन्स्की को द्वन्द्व-युद्ध के लिये नहीं ललकारा),

इसकी याद पश्चाताप की तरह उसे यातना देने लगी। ऐसे ही उस पत्र की स्मृति उसे व्यथित करने लगी, जो उसने उसे लिखा था। विशेष रूप से उसकी क्षमा, जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं थी, और पराये व्यक्ति की बच्ची के लिये उसकी चिन्ता उसके हृदय को लज्जा और पश्चाताप की आग बनकर झुलस रही थीं।

इसी प्रकार उसके साथ अपने बीते जीवन पर नज़र डालने और उन अटपटे शब्दों को याद करने से भी, जिनका उपयोग करते हुए उसने लम्बी दुविधा के बाद उसके सामने विवाह का प्रस्ताव किया था, उसे लज्जा और पश्चाताप की अनुभूति हो रही थी।

"आख़िर मेरा क्या दोष है?" उसने अपने आपसे कहा। यह प्रश्न उसके सामने हमेशा एक अन्य अर्थात यह प्रश्न खड़ा कर देता था कि क्या दूसरे लोग, ये व्रोन्स्की और ओब्लोन्स्की ... ये मोटी-मोटी पिण्डलियों वाले कंचुकी किसी भिन्न ढंग से अनुभव करते हैं, भिन्न ढंग से प्यार और दूसरे तरीक़े से शादी करते हैं? और उसकी आंखों के सामने ताज़गी से ओत-प्रोत, शक्तिशाली और कभी संशय में न पड़नेवाले अनेक लोग उभरे, जो अनजाने ही हमेशा और हर जगह उसका जिज्ञासापूर्ण ध्यान आकृष्ट करते थे। उसने इन विचारों को अपने दिमाग़ से दूर भगाया, अपने को यह विश्वास दिलाने का यत्न किया कि वह यहां के अस्थायी जीवन के लिये नहीं, बल्कि शाश्वत जीवन के लिये जी रहा है, कि उसकी आत्मा में शान्ति और प्यार है। किन्तु यही चेतना कि इस अस्थायी और तुच्छ जीवन में, जैसा कि उसे लगता था, उसने कुछ तुच्छ भूलें की हैं, उसे इस तरह व्यथित कर रही थी मानो उस शाश्वत मुक्ति का कोई अस्तित्व ही नहीं था, जिसमें वह विश्वास करता था। किन्तु आत्म-चेतना का यह प्रलोभन कुछ ही देर तक बना रहा और शीघ्र ही कारेनिन के हृदय में वह शान्ति और ऊंचाई की स्थिति लौट आई, जिसकी बदौलत वह उस चीज़ को भूल सकता था, जिसे याद नहीं करना चाहता था।

(२६)

"तो बताओ कपितोनिच," अपने जन्म-दिन की पूर्ववेला में सैर से लौटने पर लाल हुए गालों वाले और ख़ुश सेर्योझा ने लम्बे, बूढ़े

दरबान को, जो इस छोटे व्यक्ति पर झुका हुआ मुस्करा रहा था, अपना ओवरकोट देते हुए पूछा, "तो क्या आज पट्टी बंधा हुआ कर्मचारी आया था? पापा उससे मिले या नहीं?"

"मिले। जैसे ही सेक्रेटरी बाहर निकले, मैंने उसके आने की ख़बर दे दी," दरबान ने खुशमिज़ाजी से आंख मारते हुए कहा। "लाइये, मैं उतार लेता हूं।"

"सेर्योझा!" स्लाव शिक्षक ने भीतर ले जानेवाले कमरों के दरवाज़े पर रुकते हुए कहा, "ख़ुद ही उतारिये।"

किन्तु सेर्योझा ने शिक्षक की धीमी-सी आवाज़ सुन लेने के बावजूद उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। वह दरबान के पट्टे को थामे खड़ा था और उसके चेहरे को ताक रहा था।

"तो क्या पापा ने उसके लिये वह कर दिया, जो ज़रूरी था?"

दरबान ने सिर झुकाकर हामी भरी।

पट्टी बंधा हुआ कर्मचारी, जो किसी चीज़ की प्रार्थना करने के लिये सात बार कारेनिन के पास आ चुका था, सेर्योझा और दरबान के लिये दिलचस्पी का कारण बना हुआ था। सेर्योझा ने उसे एक बार ड्योढ़ी में देखा और यह कहते हुए कि वह और उसके बच्चे मर जायेंगे, कारेनिन से मुलाक़ात करवा देने के लिये दरबान की मिन्नत करते सुना था।

उसके बाद इसी कर्मचारी से ड्योढ़ी में दूसरी बार मुलाक़ात हो जाने पर सेर्योझा उसमें दिलचस्पी लेने लगा।

"तो वह बहुत ख़ुश हुआ?" सेर्योझा ने पूछा।

"ख़ुश कैसे नहीं होगा! ख़ुशी से लगभग नाचता हुआ यहां से गया।"

"कोई चीज़ आई है क्या?" कुछ देर चुप रहने के बाद सेर्योझा ने पूछा।

"हां, छोटे साहब," दरबान ने सिर झुकाते हुए फुसफुसाकर कहा, "काउंटेस के यहां से।"

सेर्योझा फ़ौरन समझ गया कि दरबान जिस चीज़ की बात कर रहा है, वह काउंटेस लीदिया इवानोव्ना का उसके जन्म-दिन के लिये भेजा हुआ उपहार है।

"सच? कहां है?"

"कोरनेई आपके पापा के पास ले गया है। कोई अच्छी चीज़ होनी चाहिये।"

"कितनी बड़ी है वह चीज़? इतनी बड़ी होगी?"

"कुछ छोटी, मगर बढ़िया है।"

"कोई किताब?"

"नहीं, कोई दूसरी चीज़ है। जाइये, वसीली लुकीच बुला रहे हैं," शिक्षक के पैरों की निकट आती आहट को सुनकर उसने सेर्योझा का दस्ताने से आधा बाहर निकला हुआ हाथ सावधानी से अपने पट्टे से हटाते, स्नेहपूर्वक आंख मारते और सिर से शिक्षक की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"अभी आ रहा हूं, वसीली लुकीच!" सेर्योझा ने उसी सुखद और प्यारी मुस्कान के साथ जवाब दिया, जो हमेशा कर्त्तव्यपरायण शिक्षक को जीत लेती थी।

सेर्योझा इतना अधिक ख़ुश, इतना अधिक उल्लास में था कि अपने दोस्त यानी दरबान को एक पारिवारिक शुभ समाचार बताये बिना नहीं रह सकता था, जो उसे ग्रीष्म-उद्यान में सैर करते हुए काउंटेस लीदिया इवानोव्ना की भतीजी से मिला था। उसे यह ख़ुशख़बरी ख़ास तौर पर इसलिये महत्त्वपूर्ण प्रतीत हो रही थी, कि कर्मचारी की ख़ुशी, अपने लिये खिलौने आने की ख़ुशी के साथ-साथ ही उसे मिली थी। सेर्योझा को ऐसा लग रहा था कि आज ऐसा दिन है, जब सभी को ख़ुश और रंग में होना चाहिये।

"तुम्हें मालूम है कि पापा को अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक मिला है?"

"मालूम कैसे नहीं होगा! लोग बधाई देने आ चुके हैं।"

"तो पापा ख़ुश हैं?"

"ज़ार की मेहरबानी पर ख़ुश हुए बिना कैसे रह सकते हैं? मतलब यह कि इसके लायक़ हैं," दरबान ने कड़ाई और गम्भीरता से कहा।

दरबान के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए, जिसकी हर छोटी से छोटी तफ़सील, ख़ास तौर पर पके गलमुच्छों के बीच लटकती ठोड़ी से वह अच्छी तरह परिचित हो चुका था, जिसे सेर्योझा के सिवा कोई

नहीं देखता था, क्योंकि वह हमेशा उसे नीचे से ऊपर की तरफ़ देखता था, वह सोच में डूब गया।

"तुम्हारी बेटी को यहां आये बहुत दिन हो गये क्या?"

दरबान की बेटी बैले-नर्तकी थी।

"काम के दिनों में भला कोई आता है? उन्हें भी शिक्षा पानी होती है। छोटे साहब, आपको भी जाकर पढ़ना चाहिये।"

कमरे में आकर पढ़ाई करने के बजाय सेर्योझा ने शिक्षक को अपना यह अनुमान बताना शुरू किया कि उसके लिये जो चीज़ लाई गयी है, वह सम्भवतः मोटर है। "क्या ख़्याल है आपका?" उसने पूछा।

किन्तु वसीली लुकीच केवल यही सोच रहा था कि अध्यापक के आने से पहले, जो दो बजे आनेवाला था, व्याकरण का पाठ तैयार कर लेना चाहिये।

"वसीली लुकीच, आप मुझे यह बतायें," सेर्योझा ने मेज़ पर बैठे तथा हाथ में किताब लिये हुए अचानक पूछा, "अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक से बड़ा कौन-सा पदक होता है? आपको मालूम है न कि पापा को अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक मिला है?"

वसीली लुकीच ने जवाब दिया कि व्लादीमिर पदक उससे बड़ा होता है।

"और उससे बड़ा?"

"सबसे बड़ा सेंट एंड्रयूज़ पदक होता है।"

"और एंड्रयूज़ से बड़ा?"

"मुझे मालूम नहीं।"

"अरे, आपको भी मालूम नहीं?" और सेर्योझा कोहनियां टिकाकर विचारों में खो गया।

उसके विचार बहुत ही जटिल और विविध थे। वह कल्पना कर रहा था कि कैसे उसके पापा को अचानक व्लादीमिर और एंड्रयूज़ पदक मिल गये हैं और इसके परिणामस्वरूप वह आज पाठ के समय कहीं अधिक दयालु होंगे और कैसे वह ख़ुद जब बड़ा होगा, तो सभी पदक पायेगा और वह भी, जिसकी एंड्रयूज़ के आगे कल्पना की जायेगी। वे लोग जैसे ही कोई ऐसा पदक सोचेंगे, वह उसी समय उसके योग्य

मान लिया जायेगा। वे उससे आगे कुछ सोचेंगे और वह फ़ौरन उसके लायक़ हो जायेगा।

इसी तरह के ख़्यालों में वक़्त बीत गया और जब अध्यापक आया तो समय, स्थान तथा प्रकारवाची क्रियाविशेषण का पाठ तैयार नहीं हुआ था और अध्यापक न केवल असन्तुष्ट, बल्कि दुखी भी हुआ। अध्यापक के इस दुख ने सेर्योझा के मन को छू लिया। वह पाठ तैयार न करने के लिये अपने को दोषी नहीं अनुभव करता था। लेकिन पूरी कोशिश करने पर भी वह ऐसा नहीं कर पाया था। जब तक अध्यापक उसे समझाता था, उसे ऐसा यक़ीन-सा होता था कि सब कुछ समझ रहा है, मगर जैसे ही अकेला रह जाता, उसे किसी तरह भी पाठ याद नहीं आता था और वह यह समझ नहीं पाता था कि "सहसा" जैसा छोटा-सा और समझ में आनेवाला शब्द प्रकारवाची क्रियाविशेषण है। फिर भी उसे इस बात के लिये अफ़सोस हो रहा था कि उसने अध्यापक का दिल दुखाया है और उसे सान्त्वना देनी चाही।

इसके लिये उसने वह क्षण चुना, जब अध्यापक चुपचाप पुस्तक देख रहा था।

"मिख़ाईल इवानोविच, आपका जन्मदिन कब होता है?" उसने अचानक पूछा।

"आपके लिये अपने काम के बारे में सोचना ज़्यादा अच्छा होगा और समझदार आदमी के लिये जन्मदिन का कोई महत्त्व नहीं होता। वह दूसरे दिनों जैसा ही होता है, जब काम करना चाहिये।"

सेर्योझा ने बहुत ध्यान से अध्यापक, उसकी विरली दाढ़ी और चश्मे की तरफ़ देखा, जो नाक पर छोड़े गये निशान से नीचे खिसक गया था और विचारों में इस तरह डूब गया कि अध्यापक उसे जो कुछ समझा रहा था, कुछ भी नहीं सुन रहा था। वह समझ रहा था कि अध्यापक जो कुछ कह रहा है, वैसा ही सोचता नहीं है। उसके कहने के अन्दाज़ से उसने यह अनुभव किया। "लेकिन इन सबने एक ही ढंग से और बेहद ऊबानेवाली तथा अनावश्यक बातें करने का षड्यन्त्र क्यों रच रखा है? वह मुझे अपने से दूर क्यों कर रहा है, किसलिये वह

मुझे नहीं चाहता?" उसने उदासी से अपने आपसे पूछा और इसका उसे कोई जवाब नहीं मिला।

(२७)

अध्यापक के बाद सेर्योझा को पापा के पास बैठकर पढ़ना था। पापा के आने तक सेर्योझा मेज़ के क़रीब बैठकर छोटे-से चाकू से खेलने और सोचने लगा। सैर के समय अपनी मां को ढूंढ़ना सेर्योझा के प्यारे कामों में एक था। उसे सामान्य रूप से मौत पर, और विशेषतः मां की मौत पर विश्वास नहीं था, यद्यपि लीदिया इवानोव्ना और पापा इसकी पुष्टि कर चुके थे। इसलिये उससे यह कहे जाने के बाद कि वह मर चुकी, वह सैर के वक़्त उसे खोजता रहता था। गदराये बदन की, सुन्दर और काले बालों वाली हर नारी उसे अपनी मां लगती थी। ऐसी किसी भी नारी के सामने आने पर उसके हृदय में ऐसे प्रेम उमड़ता कि उसका गला रुंध जाता और आंखें डबडबा आ आतीं। उसे लगता कि वह अभी-अभी उसके पास आयेगी और अपने चेहरे पर से जाली का परदा उठा देगी। तब उसका पूरा चेहरा दिखाई देगा, वह मुस्करायेगी, उसे बांहों में भर लेगी, वह उसकी सुगंध को अनुभव करेगा, उसे उसके हाथों की कोमलता की अनुभूति होगी और वह हर्ष-विभोर होकर रो पड़ेगा। ठीक वैसे ही, जैसे एक बार शाम को वह उसके पैरों पर लेट गया था, वह उसे गुदगुदाती रही थी, वह ज़ोर से ठहाके लगाता और उसके अंगूठियां पहने गोरे हाथों को काटता रहा था। बाद में जब उसे संयोगवश अपनी धाय से यह पता चला कि उसकी मां मरी नहीं है और पापा तथा लीदिया इवानोव्ना ने उसे यह स्पष्ट किया कि वह उसके लिये मर गयी है, क्योंकि बुरी है (जिसे वह किसी हालत में भी मानने को तैयार नहीं था, क्योंकि उसे प्यार करता था), वह इसी भांति उसे ढूंढ़ता और उसकी राह देखता रहा। आज ग्रीष्म-उपवन में जाली के बैंगनी पर्दे से मुंह ढके एक महिला उसे दिखाई दी थी और यह आशा करते हुए कि वह मां ही है, सेर्योझा उस समय उसपर नज़र टिकाये रहा था, जब वह पगडंडी पर बढ़ती हुई उनकी तरफ़ आ रही थी। यह महिला उसके क़रीब नहीं आई

और कहीं ग़ायब हो गयी। किसी और समय की तुलना में उसके प्रति कहीं अधिक स्नेह-वेग अनुभव करते हुए वह विचारों में खो गया और पापा का इन्तज़ार करते, अपनी चमकती आंखों को सामने टिकाये और उसके बारे में सोचते हुए उसने मेज़ का सारा कोना चाक़ू से खुरच डाला।

"पापा आ रहे हैं!" वसीली लुकीच ने उसकी विचार-शृंखला को भंग किया।

सेर्योझा उछलकर खड़ा हुआ, पापा के पास गया और उसका हाथ चूमने के बाद उसने उस ख़ुशी का चिह्न ढूंढ़ने के लिये, जो अलेक्सान्द्र नेव्स्की पदक मिलने से उसे हुई होगी, बड़े ध्यान से उसके चेहरे पर नज़र डाली।

"तुमने अच्छी तरह से सैर की?" कारेनिन ने अपनी आरामकुर्सी पर बैठते और पुराने नियमों की बाइबल की पुस्तक को अपने पास खींचते तथा खोलते हुए पूछा। कारेनिन ने सेर्योझा से बेशक यह कहा था कि हर ईसाई को धर्म-इतिहास का बहुत अच्छी तरह से ज्ञान होना चाहिये, फिर भी वह स्वयं बहुधा पुस्तक की सहायता से ही पुराने नियमों से पार पाता था और सेर्योझा की नज़र से यह बात बच नहीं पायी थी।

"हां, बहुत मज़ा रहा, पापा," सेर्योझा ने कुर्सी पर टेढ़ा बैठते हुए और उसे झुलाते हुए, जिसकी उसे मनाही थी, जवाब दिया। "मेरी नाद्या से भेंट हुई" (नाद्या लीदिया इवानोव्ना की भतीजी थी और उसी के यहां उसका पालन-पोषण हो रहा था)। "उसने मुझे बताया कि आपको नया पदक मिला है। आप ख़ुश हैं, पापा?"

"पहली बात तो यह है कि कुर्सी को नहीं झुलाओ," कारेनिन ने कहा। "और दूसरी बात यह है कि इनाम नहीं, बल्कि काम अधिक मूल्यवान होता है। मैं चाहता हूं कि तुम इस बात को समझो। अगर तुम इसलिये मेहनत करोगे, इसलिये पढ़ोगे कि तुम्हें उसका इनाम मिले, तो तुम्हारा श्रम तुम्हें बोझिल लगेगा। किन्तु जब तुम श्रम करोगे," कारेनिन ने यह याद करते हुए कहा कि उस सुबह को उसने कर्त्तव्य-चेतना से एक सौ अठारह काग़ज़-पत्रों पर हस्ताक्षर करने का नीरस काम पूरा किया था, "श्रम को प्यार करने से तुम्हें उसी में उसका पुरस्कार मिल जायेगा।"

प्यार और ख़ुशी से चमकती हुई सेर्योझा की आंखों की लौ बुझ गयी और पापा की नज़र के सामने आंखें झुक गयीं। सेर्योझा को हमेशा ऐसे ही सम्बोधित करने का पापा का यह वही अन्दाज़ था, जिससे सेर्योझा बहुत पहले से ही परिचित था और वह ख़ुद को उसके मुताबिक़ ढालने का आदी हो चुका था। पापा हमेशा ऐसे बात करते थे मानो वे किसी काल्पनिक, किसी ऐसे लड़के से बात कर रहे हों, जो किताबों में होते हैं और सेर्योझा के साथ जिनकी बिल्कुल कोई समानता नहीं होती। सेर्योझा अपने पापा के साथ हमेशा पुस्तक का यही लड़का होने का ढोंग करता था।

"मुझे आशा है कि तुम यह बात समझते हो?" पापा ने पूछा।

"हां, पापा," उस काल्पनिक लड़के का ढोंग करते हुए सेर्योझा ने उत्तर दिया।

पाठ इंजील की कुछ कविताओं को मुंहज़बानी याद करने और पुराने नियमों के मुख्य सूत्रों को दोहराने से सम्बन्धित था। इंजील की कवितायें सेर्योझा को ख़ासी अच्छी तरह से याद थीं, किन्तु उन्हें सुनाते समय उसका ध्यान पापा के माथे की उस हड्डी में खो गया, जो कनपटी की ओर इतनी अधिक झुक गयी थी कि वह गड़बड़ा गया और एक जैसे शब्द पर उसने एक कविता का अन्त दूसरी कविता के आरम्भ के साथ जोड़ दिया। कारेनिन के लिये यह बिल्कुल स्पष्ट था कि सेर्योझा जो कुछ कह रहा था, उसे समझता नहीं था और इस कारण उसे झल्लाहट हुई।

कारेनिन के माथे पर बल पड़ गये और वह वही स्पष्ट करने लगा, जो सेर्योझा अनेक बार सुन चुका था और कभी याद नहीं रख पाया था, क्योंकि बहुत ही साफ़ तौर पर इसे समझता था। यह तो "सहसा" के प्रकारवाची क्रियाविशेषण होने जैसी बात थी। सेर्योझा सहमी-सहमी नज़र से पापा को देख और केवल यही सोच रहा था – पापा उसके द्वारा सुनाई गयी कविता को दोहराने के लिये, जैसा कि कभी-कभी होता था, उसे विवश करेंगे या नहीं। इस विचार से सेर्योझा इतना भयभीत था कि अब कुछ भी उसके पल्ले नहीं पड़ रहा था। किन्तु पापा ने दोहराने के लिये विवश नहीं किया और पुराने नियमों के पाठ पर आ गये। सेर्योझा ने स्वयं घटनायें तो अच्छी तरह सुनायीं,

किन्तु जब इस बारे में प्रश्नों के उत्तर देने पड़े कि कुछ घटनाओं में क्या सार निहित है, तो इस चीज़ के बावजूद कि इसी पाठ के लिये उसे दण्ड दिया जा चुका था, वह कुछ भी जवाब न दे पाया। जहां उससे जवाब देते नहीं बना और वह गड़बड़ाने लगा, मेज़ को खुरचने और कुर्सी को झुलाने लगा, वह जल-प्लावन के पहले के पैग़म्बरों का प्रसंग था। इनमें से हनोक के अलावा, जिसे ज़िन्दा ही स्वर्ग ले जाया गया था, अन्य किसी के बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं था। पहले तो उसे सभी नाम याद थे, किन्तु इस समय वह उन्हें बिल्कुल भूल गया, विशेषतः इसलिये कि सारे पुराने नियमों में हनोक उसका प्रिय पात्र था और उसके जीवित स्वर्ग ले जाये जाने की घटना को लेकर उसके दिमाग़ में विचारों की एक लम्बी शृंखला-सी बन गयी, जिसमें वह खो गया और उसकी नज़रें पापा की घड़ी की ज़ंजीर और वास्कट के अधखुले बटन पर जमकर रह गयीं।

मृत्यु के अस्तित्व पर, जिसकी बहुधा सेर्योझा से चर्चा की जाती थी, वह बिल्कुल विश्वास नहीं करता था। उसे यह यक़ीन नहीं होता था कि वे लोग, जिन्हें वह प्यार करता है, मर सकते हैं और ख़ास तौर पर यह कि वह ख़ुद मर जायेगा। उसके लिये यह बिल्कुल असम्भव था और वह इसे समझने में असमर्थ था। किन्तु उससे कहा जाता था कि सभी मर जायेंगे। उसने उन लोगों से भी पूछा, जिन पर विश्वास करता था और उन्होंने भी इसकी पुष्टि की। आया भी ऐसा कहती थी, यद्यपि मन मारकर। किन्तु हनोक नहीं मरा। इसका मतलब यह हुआ कि सभी नहीं मरते। "भला क्यों हर कोई भगवान की नज़र में ऐसा नहीं बन सकता और जीवित स्वर्ग में ले जाया जा सकता?" सेर्योझा सोच रहा था। बुरे लोग, यानी वे, जिन्हें सेर्योझा प्यार नहीं करता था, मर सकते थे, किन्तु सभी अच्छे लोग हनोक जैसे हो सकते हैं।

"तो कौन थे पैग़म्बर?"

"हनोक, एनोश।"

"यह तो तुम कह ही चुके हो। बुरी बात है, सेर्योझा, बहुत बुरी बात है। अगर तुम वह जानने की कोशिश नहीं करोगे, जो किसी ईसाई के लिये जानना सबसे अधिक ज़रूरी है," पापा ने उठते हुए

कहा, "तो किस चीज़ में तुम्हारी दिलचस्पी हो सकती है? मैं तुमसे नाखुश हूं और प्योत्र इग्नात्येविच" (मुख्य अध्यापक) "भी तुमसे नाखुश हैं... मुझे तुम्हें सज़ा देनी होगी।"

पापा और अध्यापक, दोनों ही सेर्योझा से अप्रसन्न थे, और वास्तव में वह पढ़ाई में ढीला था। किन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं कहा जा सकता था कि उसमें योग्यता नहीं थी। इसके उलट, वह उन लड़कों की तुलना में कहीं अधिक योग्य था, जिन्हें अध्यापक उदाहरण के रूप में सेर्योझा के सामने प्रस्तुत करता था। पापा के मतानुसार उसे जो कुछ सिखाया जाता था, वह उसे सीखने का इच्छुक नहीं था। किन्तु वास्तव में वह उसे सीख नहीं सकता था। वह इसलिये कि उसका दिल, उन चीज़ों के बजाय, जो पापा और अध्यापक उसपर लादते थे, कुछ दूसरी ही चीज़ों की मांग करता था। उसके दिल की ये मांगें बिल्कुल उलट थीं और इसलिये वह अपने शिक्षकों के विरुद्ध संघर्ष करता था।

उसकी उम्र नौ बरस थी, वह बालक था, किन्तु अपनी आत्मा को पहचानता था। वह उसे प्यारी थी, वह उसकी वैसे ही रक्षा करता था, जैसे पलक आंख की, और प्यार की कुंजी के बिना किसी को भी उसमें प्रवेश नहीं करने देता था। शिक्षा देनेवाले यह शिकायत करते थे कि वह पढ़ना नहीं चाहता, किन्तु उसकी आत्मा ज्ञान-पिपासा से ओत-प्रोत थी। और यह ज्ञान वह प्राप्त करता था दरबान कपितोनिच से, आया, नाद्या और वसीली लुकीच से, किन्तु अध्यापकों से नहीं। पापा और अध्यापक जिस जल-धारा को अपनी दिशा में लाना चाहते थे, वह कभी की दूसरी दिशा में मुड़ चुकी थी और वहां अपना प्रभाव दिखा रही थी।

पापा ने उसे यह सज़ा दी कि वह लीदिया इवानोव्ना की भतीजी नाद्या के पास न जाये। मगर सेर्योझा के लिये यह सज़ा खुशक़िस्मती साबित हुई। वसीली लुकीच अच्छे मूड में था और उसने उसे पवन-चक्की बनाने का ढंग सिखाया। सारी शाम यह काम करते और ये सपने देखते बीत गयी कि ऐसी पवन-चक्की कैसे बनायी जाये, जिसके पंखों को हाथों से पकड़कर या जिसके साथ अपने को बांधकर उसपर चक्कर खाये जा सकें। सेर्योझा को सारी शाम मां का ध्यान नहीं

आया, किन्तु बिस्तर पर लेटते ही उसे उसकी याद आ गयी और उसने अपने शब्दों में यह प्रार्थना की कि अगले दिन, उसके जन्म-दिन पर, उसकी मां उससे छिपी न रहकर उसके पास आ जाये।

"वसीली लुकीच, जानते हैं कि मैंने किस बात के लिये एक ज़्यादा प्रार्थना की है?"

"कि आप अच्छी तरह से पढ़ाई करें?"

"नहीं।"

"खिलौनों के लिये?"

"नहीं। आप नहीं भांप सकेंगे। बहुत ही उद्भुत बात है, किन्तु अभी रहस्य है! जब वह सच हो जायेगी, तो आपको बता दूंगा। नहीं अनुमान लगा सके न?"

"नहीं, मैं अनुमान नहीं लगा पा रहा हूं। आप बता दीजिये," वसीली लुकीच ने मुस्कराकर कहा, जैसा कि उसके साथ बहुत कम होता था। "ख़ैर, सो जाइये, मैं मोमबत्ती बुझा देता हूं।"

"मुझे मोमबत्ती के बिना वह और भी अधिक अच्छी तरह दिखाई देता है, जो मैं देखता हूं और जिसके लिये मैंने प्रार्थना की है। लीजिये, मैंने तो अपना रहस्य लगभग बता दिया!" सेर्योझा ने ख़ुशमिज़ाजी से हंसते हुए कहा।

जब मोमबत्ती वहां से हटा दी गयी, तो सेर्योझा मानो अपनी मां की आवाज़ सुनने और उसकी उपस्थिति अनुभव करने लगा। वह मानो उसके ऊपर झुकी हुई थी और प्यारभरी दृष्टि से उसे सहला रही थी। किन्तु तभी कुछ देर तक पवन-चक्कियां और फिर चाक़ू दिखाई दिया, सब गड्ड-मड्ड हो गया और वह सो गया।

(२८)

व्रोन्स्की और आन्ना पीटर्सबर्ग आकर एक सबसे अच्छे होटल में ठहरे। व्रोन्स्की नीचेवाली मंज़िल पर अलग से और आन्ना बच्ची, धाय और नौकरानी के साथ ऊपर की मंज़िल पर चार कमरों वाले बड़े सेट में।

पीटर्सबर्ग पहुंचने के दिन ही व्रोन्स्की अपने भाई के यहां गया।

वहां काम-काज के सिलसिले में मास्को से आई हुई अपनी मां से उसकी भेंट हो गयी। मां और भाभी उसके साथ सामान्य ढंग से मिलीं, उन्होंने उससे विदेश-यात्रा के बारे में पूछ-ताछ और साझे परिचितों की चर्चा की, किन्तु आन्ना के साथ उसके सम्बन्ध की बात ज़बान पर नहीं लायीं। बड़े भाई ने अगले दिन होटल में आने पर ख़ुद उससे आन्ना के बारे में पूछा और अलेक्सेई ने साफ़ ही कह दिया कि कारेनिना के साथ अपने सम्बन्ध को वह विवाह सम्बन्ध मानता है, कि वह उसके तलाक़ की व्यवस्था करवा लेगा और तब उससे शादी कर लेगा तथा तब तक उसे किसी भी दूसरी पत्नी की तरह अपनी पत्नी ही समझता है और अनुरोध करता है कि मां तथा अपनी पत्नी से वह ऐसे ही कह दे।

"अगर ऊंचा समाज इसे स्वीकार नहीं करता, तो मुझे इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता," व्रोन्स्की ने कहा, "किन्तु यदि मेरे सगे-सम्बन्धी मेरे साथ अपने ख़ून के रिश्ते बनाये रखना चाहते हैं, तो उन्हें मेरी पत्नी के साथ भी वैसे ही सम्बन्ध निभाने होंगे।"

बड़ा भाई, जो हमेशा ही छोटे के विचारों का आदर करता था, यह बात अच्छी तरह से नहीं जानता था कि जब तक ऊंचा समाज इस मामले को तय न कर दे, उसके भाई की बात ठीक है या नहीं। किन्तु अपनी ओर से उसे इसमें कोई आपत्ति नहीं थी और वह अलेक्सेई के साथ आन्ना से मिलने गया।

पराये लोगों की उपस्थिति के समय की भांति व्रोन्स्की भाई के सामने भी आन्ना को "आप" कहता और घनिष्ठ परिचिता की भांति उससे बातचीत करता रहा, किन्तु यह स्वतः स्पष्ट था कि भाई उनके सम्बन्धों के बारे में जानता है और उन्होंने आन्ना के व्रोन्स्की की जागीर पर जाकर रहने के बारे में चर्चा की।

ऊंचे समाज के जीवन के बारे में अपने सारे अनुभव के बावजूद व्रोन्स्की, उस नयी स्थिति के परिणामस्वरूप, जिसमें वह अब था, अजीब ग़लतफ़हमी का शिकार बना हुआ था। ऐसा प्रतीत हो सकता था, उसे यह समझ जाना चाहिये था कि उसके और आन्ना के लिये ऊंचे समाज के दरवाज़े बन्द हैं। किन्तु अब उसके दिमाग़ में ये अस्पष्ट विचार पैदा हो गये कि ऐसा पहले होता था और अब, द्रुत प्रगति के युग में (वह अनजाने ही अब सभी तरह की प्रगति का समर्थक

बन गया था) समाज का दृष्टिकोण बदल गया है और यह कि उन्हें समाज में स्वीकारा जायेगा या नहीं, यह प्रश्न अभी तय नहीं हुआ है। "ज़ाहिर है," वह सोचता था, "कि राज-दरबार से सम्बन्धित कुलीन समाज आन्ना को स्वीकार नहीं करेगा, किन्तु घनिष्ठ लोग इस स्थिति को सही ढंग से समझ सकते हैं और उन्हें इसे ऐसे ही समझना चाहिये।"

कोई आदमी घण्टों तक पालथी मारे बैठा रह सकता है, अगर उसे यह मालूम हो कि इच्छा होने पर वह अपनी स्थिति को बदल सकता है। किन्तु यदि वह यह जानता हो कि उसे इसी तरह बैठे रहना होगा, तो उसकी टांगें सुन्न होने लग जाती हैं, उस जगह की ओर खिंचने तथा तनने लगती हैं, जहां वह उन्हें फैलाना चाहेगा। ऊंचे समाज के मामले में व्रोन्स्की ऐसा ही अनुभव कर रहा था। दिल की गहराई में वह बेशक यह जानता था कि ऊंचे समाज के द्वार उनके लिये बन्द हैं, वह यह आज़माकर देखना चाहता था कि यह समाज अब बदलता है या नहीं और उन्हें स्वीकारता है या नहीं। किन्तु बहुत जल्द ही उसने यह महसूस कर लिया कि ऊंचे समाज के दरवाज़े ख़ुद उसके लिये तो बेशक खुले थे, मगर आन्ना के लिये बन्द थे। बिल्ली-चूहे के खेल की भांति उसके लिये ऊपर उठे हुए हाथ आन्ना के सामने आते ही नीचे गिर जाते थे।

पीटर्सबर्ग के ऊंचे समाज की जिस पहली महिला से व्रोन्स्की की भेंट हुई, वह उसकी चचेरी बहन बेत्सी थी।

"आख़िर तो तुम दिखाई दिये!" उसने बहुत प्रसन्न होते हुए उसका स्वागत किया। "और आन्ना? कितनी ख़ुश हूं मैं! कहां ठहरे हो तुम लोग? मैं कल्पना कर सकती हूं कि तुम्हारी बढ़िया यात्रा के बाद तुम्हें हमारा पीटर्सबर्ग कैसा भयानक लग रहा होगा। रोम में तुम दोनों के मधु-मास की मैं कल्पना कर सकती हूं। हां, तलाक़ का क्या हुआ? यह सब तुमने कर डाला न?"

व्रोन्स्की ने इस बात की तरफ़ ध्यान दिया कि बेत्सी को जब यह मालूम हुआ कि तलाक़ अभी होना बाक़ी है, तो उसका उत्साह कुछ ठण्डा पड़ गया।

"मैं जानती हूं कि मुझ पर कीचड़ उछाला जायेगा," बेत्सी ने

कहा, "मगर मैं आन्ना से मिलने आऊंगी, ज़रूर आऊंगी। बहुत दिन नहीं रुकेंगे यहां?"

वह सचमुच उसी दिन आन्ना के पास आई, मगर उसका अन्दाज़ पहले वाला नहीं था। वह अपने साहस पर स्पष्टतः गर्व कर रही थी और चाहती थी कि आन्ना उसकी मैत्री-निष्ठा का ऊंचा मूल्यांकन करे। वह ऊंचे समाज की ख़बरों की चर्चा करते हुए दस मिनट से ज़्यादा नहीं रुकी और जाते-जाते बोली –

"तुमने मुझे नहीं बताया कि तलाक़ कब होगा। चलो, मैंने तो कुछ परवाह नहीं की, लेकिन हमारे कुलीन लोग तुम्हें तब तक सीधा मुंह नहीं देंगे, जब तक तुम लोग शादी नहीं कर लोगे। और अब यह चीज़ बड़ी मामूली है। Ça se fait.* तो आप लोग शुक्र के दिन जा रहे हैं? दुख की बात है कि हमारी फिर मुलाक़ात नहीं हो सकेगी।"

बेत्सी के अन्दाज़ से व्रोन्स्की को यह समझ जाना चाहिये था कि ऊंचे समाज से उसे क्या आशा करनी चाहिये। फिर भी उसने अपने परिवार में एक कोशिश की। अपनी मां से तो उसे कुछ उम्मीद नहीं थी। वह जानता था कि आन्ना के साथ अपने पहले परिचय के समय उस पर मुग्ध हो जानेवाली मां अब उससे इसलिये बेहद नाराज़ थी कि उसी ने उसके बेटे की उन्नति में बाधा डाली थी। किन्तु बड़े भाई की पत्नी, भाभी वार्या से उसे कहीं अधिक आशा थी। उसे लगता था कि वह किसी तरह का कीचड़ नहीं उछालेगी और अपनी सरलता तथा दृढ़ता से आन्ना के पास जायेगी और उसे अपने यहां बुलायेगी।

पीटर्सबर्ग आने के अगले दिन व्रोन्स्की उसके पास गया और उसे अकेली पाकर उसने बिल्कुल साफ़-साफ़ ही अपनी इच्छा प्रकट कर दी।

"तुम जानते ही हो," उसकी बात सुनने के बाद वार्या ने कहा, "कि मैं तुम्हें कितना अधिक प्यार करती हूं और तुम्हारे लिये सब कुछ करने को तैयार रहती हूं। किन्तु मैं चुप रही, क्योंकि जानती थी कि तुम्हारे और आन्ना आर्कादयेव्ना के लिये कुछ नहीं कर सकती," उसने "आन्ना आर्कादयेव्ना" पर विशेष ज़ोर देते हुए कहा। "कृपया यह नहीं सोचना कि मैं भर्त्सना करती हूं। कभी भी नहीं। शायद उसकी

---

* आम बात है। (फ़्रांसीसी)

जगह मैंने भी यही किया होता। मैं इस मामले के ब्योरे में नहीं जाती और जा भी नहीं सकती," सहमी-सहमी नज़र से व्रोन्स्की के उदास चेहरे को ग़ौर से देखते हुए उसने कहा। "लेकिन जो बात जैसी है, उसे उसी तरह कहना चाहिये। तुम चाहते हो कि मैं उसके पास जाऊं, उसे अपने यहां बुलाऊं और इस तरह उसे फिर से समाज की नज़रों में ऊंचा उठा दूं। मगर तुम इस बात को समझो कि मैं ऐसा नहीं कर सकती। मेरी बेटियां बड़ी हो रही हैं और मुझे पति की ख़ातिर समाज में अपना मुंह बनाये रखना है। मान लो कि मैं आन्ना आर्कादियेव्ना के पास जाती हूं। वह समझ जायेगी कि मैं उसे अपने यहां नहीं बुला सकती या फिर मुझे यह ऐसे करना होगा कि उन लोगों से उसकी मुलाक़ात न हो पाये, जो दूसरा दृष्टिकोण रखते हैं। इससे उसी को ठेस लगेगी। मैं उसे ऊपर उठाने में असमर्थ हूं..."

"लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता कि वह उन सैकड़ों नारियों से अधिक नीचे गिर गयी है, जिनको आप लोग अपने यहां बुलाते हैं!" व्रोन्स्की ने और भी अधिक उदासी से उसकी बात काटी और यह समझते हुए चुपचाप उठ खड़ा हुआ कि भाभी का निर्णय नहीं बदलेगा।

"अलेक्सेई! तुम मुझसे नाराज़ नहीं होओ। कृपया इतना समझो कि मेरा कोई दोष नहीं है," वार्या ने सहमी-सी मुस्कान के साथ उसकी ओर देखकर कहा।

"मैं तुमसे नाराज़ नहीं हो रहा हूं," व्रोन्स्की ने उसी तरह उदासी से कहा। "किन्तु मुझे दोहरा दुख हो रहा है। मुझे इस बात का भी दुख है कि इससे हमारी दोस्ती टूट रही है। अगर वह टूट नहीं रही, तो कमज़ोर ज़रूर हो रही है। तुम तो समझती हो कि मेरे लिये कोई दूसरा रास्ता नहीं हो सकता।"

इतना कहकर वह वहां से चला गया।

व्रोन्स्की समझ गया कि और कोशिश करके देखना बेकार है और पीटर्सबर्ग में ये कुछ दिन ऐसे बिताने चाहिये, जैसे किसी पराये शहर में। उसे ऊंचे समाज के अपने पूर्वपरिचितों ने नहीं मिलना-जुलना चाहिये, ताकि कटुता और अपमान के घूंट न पीने पड़ें, जो उसके लिये इतने यातनाप्रद थे। पीटर्सबर्ग की स्थिति का एक प्रमुख अप्रिय लक्षण यह था कि कारेनिन और उसका नाम मानो हर जगह था।

किसी बात की भी चर्चा चलाने पर वह कारेनिन की ओर मुड़ जाती थी, कहीं भी जाना सम्भव नहीं था कि उससे भेंट न हो। कम से कम व्रोन्स्की को तो ऐसे ही लगता था। ठीक उसी तरह, जैसे घायल उंगली वाले व्यक्ति को यह लगता है कि उसकी इसी उंगली को हर जगह चोट लगती है।

पीटर्सबर्ग में अपना आना व्रोन्स्की को इसलिये और भी अधिक बोझिल प्रतीत हो रहा था कि इस सारे समय के दौरान वह आन्ना में कोई नयी, अनबूझ-सी मनःस्थिति देख रहा था। कभी तो वह उसके प्रेम में डूबी-सी लगती, तो कभी उदासीन और चिड़चिड़ी-सी हो जाती और कभी अभेद्य-सी। वह कोई यातना सह रही थी, उससे कुछ छिपा रही थी और मानो उन अपमानों की ओर कोई ध्यान नहीं दे रही थी, जो व्रोन्स्की के जीवन को विषाक्त कर रहे थे और उसके जैसी संवेदनशील नारी के लिये और भी अधिक यातनापूर्ण होने चाहिये थे।

(२९)

आन्ना के लिये रूस लौटने का एक उद्देश्य बेटे से मिलना था। इटली से रवाना होने के दिन से यह विचार उसे लगातार बेचैन करता जा रहा था। वह जैसे-जैसे पीटर्सबर्ग के निकट पहुंचती जा रही थी, इस मिलन की ख़ुशी और महत्त्व की वह अधिकाधिक कल्पना कर रही थी। उसने अपने से यह प्रश्न ही नहीं किया कि वह इस मिलन की व्यवस्था कैसे करेगी। एक ही शहर में होने पर बेटे से मिलना उसे बिल्कुल स्वाभाविक और साधारण बात प्रतीत हुई। किन्तु पीटर्सबर्ग पहुंचने पर उसे सहसा समाज में अपनी आज की स्थिति का आभास हुआ और वह समझ गयी कि बेटे के साथ मुलाक़ात की व्यवस्था करना मुश्किल होगा।

उसे पीटर्सबर्ग में आये हुए दो दिन हो गये थे। क्षणभर को भी बेटे का विचार उसके मन से नहीं निकलता था, मगर वह उससे अभी तक मिल नहीं पायी थी। वह अनुभव करती थी कि इस बात का उसे अधिकार नहीं है कि सीधे उस घर में चली जाये, जहां कारेनिन से

उसकी मुलाक़ात हो सकती थी। उसे भीतर जाने से रोका जा सकता था, उसका अपमान किया जा सकता था। पति को पत्र लिखने और उसके साथ किसी तरह का सम्पर्क स्थापित करने का विचार तक उसे यातनाप्रद प्रतीत होता था। उसे तभी चैन की अनुभूति होती थी, जब वह पति के बारे में नहीं सोचती थी। यह मालूम करके कि बेटा कब और किस जगह सैर को जाता है, वह उससे वहां मिल ले, उसके लिये यह काफ़ी नहीं था। वह इस मिलन की इतनी प्रतीक्षा करती रहती थी, उसे बेटे से इतना कुछ कहना था, वह जी भरकर उसे बांहों में भरना और चूमना चाहती थी। सेर्योझा की बूढ़ी धाय उसकी मदद कर सकती थी, उसे रास्ता सुझा सकती थी। किन्तु धाय अब कारेनिन के घर में नहीं थी। इसी तरह की दुविधा और धाय की खोज में दो दिन बीत गये।

कारेनिन के साथ काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के घनिष्ठ सम्बन्धों के बारे में जानने के बाद आन्ना ने तीसरे दिन उसे वह पत्र लिखने का निर्णय किया, जिसके लिये उसे बड़ा मानसिक श्रम करना पड़ा। उसमें उसने जान-बूझकर यह लिखा था कि बेटे से मिलने की अनुमति पति की विशालहृदयता पर निर्भर है। वह जानती थी कि पत्र यदि पति को दिखाया जायेगा, तो वह अपनी उदारता की भूमिका जारी रखते हुए उसे इन्कार नहीं करेगा।

ख़त ले जानेवाले हरकारे ने लौटकर उसे बहुत ही कठोर और अप्रत्याशित यह उत्तर दिया कि उसके ख़त का कोई जवाब नहीं मिलेगा। हरकारे को बुलाकर जब उसने तफ़सील से यह सुना कि कैसे वह देर तक इन्तज़ार करता रहा और फिर उससे यह कहा गया – "जवाब नहीं दिया जायेगा," तो उसने अपने को इतना अपमानित अनुभव किया, जितना पहले कभी नहीं किया था। आन्ना अपने को अपमानित और तिरस्कृत अनुभव कर रही थी, किन्तु वह यह समझती थी कि अपने दृष्टिकोण से लीदिया इवानोव्ना सही है। उसका दुख इसलिये और भी ज़्यादा था कि वह उसे किसी के साथ बांट नहीं सकती थी। वह व्रोन्स्की के साथ उसे न तो बांट सकती थी और न ऐसा करना ही चाहती थी। वह जानती थी कि वही उसके दुर्भाग्य का मुख्य कारण है, फिर भी उसे बेटे के साथ उसके मिलन का प्रश्न सबसे कम महत्त्वपूर्ण

प्रतीत होगा। वह जानती थी कि व्रोन्स्की उसकी यातना की गहराई को कभी पूरी तरह नहीं समझ सकेगा। वह जानती थी कि इस बात की याद दिलाने पर उसके उदासीनता के अन्दाज़ से वह उसे घृणा करने लगेगी। इस स्थिति से वह दुनिया में सबसे ज़्यादा डरती थी और इसलिये बेटे से सम्बन्धित हर बात को उससे छिपाती थी।

दिन भर होटल के कमरे में बैठी रहकर वह बेटे से मिलन का मार्ग खोजती रही और आख़िर उसने पति को पत्र लिखने का निर्णय किया। वह यह पत्र लिख रही थी, जब लीदिया इवानोव्ना का पत्र उसे लाकर दिया गया। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना की चुप्पी ने उसे विनीत और पराभूत कर दिया था, किन्तु उसके पत्र और पंक्तियों के छिपे अर्थ ने उसमें ऐसी झुंझलाहट पैदा की, बेटे के प्रति अपने तीव्रानुराग और क़ानूनी प्यार की तुलना में उसे यह दुर्भावना इतनी अन्यायपूर्ण लगी कि उसे दूसरों पर ग़ुस्सा आ गया और उसने अपने को दोष देना बन्द कर दिया।

"यह कठोरता – भावनाओं का ढोंग है," उसने अपने आपसे कहा। "वे केवल मेरा अपमान करना और बच्चे को यातना देना चाहते हैं और मैं इनके सामने घुटने टेकूंगी! किसी हालत में नहीं! वह मुझसे बुरी है। मैं कम से कम ढोंग नहीं करती।" इसी समय उसने यह तय कर लिया कि अगले ही दिन, सेर्योझा के जन्म-दिन पर वह सीधे पति के घर जायेगी, नौकरों-चाकरों को रिश्वत देगी, छल-कपट करेगी, मगर हर हालत में बेटे से मिलेगी और उस घिनौने फ़रेब के जाल को तार-तार कर डालेगी, जो उन्होंने उस बदक़िस्मत बच्चे के इर्द-गिर्द बुन रखा है।

खिलौनों की दुकान पर जाकर उसने खिलौने ख़रीद लिये और अपनी कार्रवाई की योजना तैयार कर ली। वह सुबह, आठ बजे वहां पहुंचेगी, जब तक कारेनिन निश्चय ही बिस्तर से नहीं उठा होगा। उसके हाथ में पैसे होंगे, जो वह दरबान और नौकर को भीतर जाने की अनुमति देने के लिये देगी। चेहरे को जाली के पर्दे से ढके हुए ही वह यह कहेगी कि सेर्योझा के धर्म-पिता ने उसे बधाई देने भेजा है और उससे यह कहा गया है कि खिलौने बेटे के पलंग के पास रखकर आये। आन्ना सिर्फ़ वही शब्द नहीं सोच सकी,

जो बेटे से कहेगी। इस बारे में उसने चाहे कितना ही क्यों न सोचा, वह कुछ भी नहीं सोच पायी।

अगले दिन सुबह के आठ बजे आन्ना किराये की बग्घी में से अकेली बाहर निकली और उसने अपने भूतपूर्व घर के बड़े दरवाज़े की घण्टी बजायी।

"जाओ, जाकर पूछो कि उन्हें क्या चाहिये। कोई महिला हैं," कपितोनिच ने, जो अभी सिर्फ़ ओवरकोट और गैलोश पहने था, खिड़की में से बाहर झांकते और जाली से मुंह ढंके हुए दरवाज़े के पास खड़ी महिला को देखकर अपने सहायक से कहा।

दरबान के नौजवान सहायक ने, आन्ना जिससे अपरिचित थी, ज्योंही दरवाज़ा खोला, वह फ़ौरन भीतर घुस गयी और अपने कफ़ में से तीन रूबल का नोट निकालकर उसके हाथ में ठूंस दिया।

"सेर्योझा... सेर्गेई अलेक्सेयेविच," उसने कहा और आगे बढ़ चली। नोट को ग़ौर से देखने के बाद दरबान के सहायक ने उसे शीशे के दूसरे दरवाज़े के पास रोका।

"किससे मिलना है आपको?" उसने पूछा।

आन्ना ने उसके शब्द नहीं सुने और कोई जवाब नहीं दिया।

अपरिचिता की उलझन को देखकर कपितोनिच ख़ुद बाहर आया, दरवाज़ा खोलकर उसे भीतर जाने दिया और पूछा कि क्या चाहिये।

"प्रिंस स्कोरोदूमोव ने सेर्गेई अलेक्सेयेविच के पास भेजा है," आन्ना ने जवाब दिया।

"छोटे साहब तो अभी उठे नहीं," बहुत ध्यान से आन्ना को देखते हुए दरबान ने कहा।

आन्ना ने कभी यह आशा नहीं की थी कि उस घर की ड्योढ़ी का, जहां उसने नौ बरस बिताये थे, पूरी तरह से पहले जैसा वातावरण उसके दिल पर इतना गहरा प्रभाव डालेगा। एक के बाद एक, ख़ुशी भरी और यातनापूर्ण स्मृतियां उसकी आत्मा में सजीव हो उठीं और वह घड़ी भर को यह भूल गयी कि किसलिये यहां आई है।

"इन्तज़ार करेंगी?" कपितोनिच ने उसके कंधों पर से फ़र-कोट उतारते हुए पूछा।

फ़र-कोट उतारने के बाद कपितोनिच ने ग़ौर से आन्ना

के चेहरे को देखा, उसने उसे पहचान लिया और चुपचाप सिर नीचे झुका दिया।

"पधारिये, मालकिन," उसने आन्ना से कहा।

आन्ना ने कुछ कहना चाहा, मगर उसके मुंह से एक भी शब्द न निकला, उसने गिड़गिड़ाती नज़र से बूढ़े की तरफ़ देखा और तेज़, फुर्तीले क़दम रखती हुई ज़ीने की तरफ़ बढ़ चली। आगे को झुका और सीढ़ियों पर गैलोशों को पैरों में सम्भालता हुआ कपितोनिच उससे आगे निकलने के लिये उसके पीछे-पीछे भागा।

"शिक्षक वहां हैं, शायद वह कपड़े न पहने हों। मैं अभी सूचना दे देता हूं।"

आन्ना जाने-पहचाने ज़ीने पर चढ़ती जा रही थी और बूढ़ा दरबान जो कुछ कह रहा था, कुछ नहीं समझ रही थी।

"इधर, कृपया बायीं ओर। क्षमा कीजिये, यहां सफ़ाई नहीं की गयी। छोटे साहब अब पहलेवाले दीवानख़ाने में हैं," दरबान ने हांफते हुए कहा। "ज़रा रुक जाइये, मालकिन, मैं भीतर देख आता हूं," उसने कहा और आन्ना से आगे निकलकर ऊंचा दरवाज़ा खोला तथा उसके पीछे ग़ायब हो गया। आन्ना इन्तज़ार करने लगी। "छोटे साहब अभी जागे हैं," दरबान ने दरवाज़े से बाहर आते हुए कहा।

दरबान जब यह कह रहा था, उसी वक़्त आन्ना को बालक के जम्हाई लेने की आवाज़ सुनाई दी। जम्हाई की इस आवाज़ से ही उसने बेटे को पहचान लिया और मानो उसे अपने सामने सजीव रूप में अनुभव किया।

"जाने दो, मुझे भीतर जाने दो, तुम जाओ!" वह कह उठी और ऊंचे दरवाज़े को लांघ गयी। दरवाज़े के दायीं ओर एक पलंग था, जिसपर सिर्फ़ एक क़मीज़ पहने, जिसके बटन खुले थे, एक लड़का बैठा था और अपने शरीर को पीछे की तरफ़ झुकाये तथा अंगड़ाई लेता हुआ अपनी जम्हाई ख़त्म कर रहा था। उसके होंठों के मिलने के क्षण में उन्होंने सुखद और ऊंघ भरी मुस्कान का सा रूप ले लिया और वह फिर धीरे तथा मज़े से पीछे को गिर गया।

"सेर्योझा!" दबे पांव उसके क़रीब जाकर वह फुसफुसाई।

बेटे के साथ विछोह और स्नेह के तीव्रावेग के दौरान, जिसकी

पिछले कुछ अर्से से उसे अनुभूति हुई थी, चार साल के बालक के रूप में ही, जिस रूप में उसे सबसे अधिक प्यार करती थी, वह सेर्योझा की कल्पना करती रही थी। अब तो वह वैसा भी नहीं था, जैसा वह उसे छोड़कर गयी थी। चार साल के बालक की तुलना में वह और बड़ा और दुबला हो गया था। अरे, यह मैं क्या देख रही हूं! उसका चेहरा कितना दुबला है, बाल कितने छोटे हैं! बांहें कितनी लम्बी हैं! मेरे जाने के बाद से कितना बदल गया है वह! फिर भी वह सेर्योझा ही था, सिर और होंठों की विशिष्ट बनावट वाला, उसी मुलायम गर्दन और चौड़े कंधोंवाला।

"सेर्योझा!" वह बच्चे के ठीक कान के ऊपर दुबारा फुसफुसायी।

सेर्योझा फिर से कोहनियों के सहारे उचका, मानो कुछ खोजते हुए बिखरे बालों वाला सिर इधर-उधर घुमाया और आंखें खोल लीं। उसने अपने सामने खड़ी मां को चुपचाप और प्रश्नसूचक दृष्टि से कुछ क्षण तक ग़ौर से देखा, सहसा हर्ष-मगन होकर मुस्कराया और मानो नींद के कारण चिपकी जाती आंखों को फिर से मूंदकर पीछे की तरफ़ नहीं, बल्कि आगे की ओर उसकी बांहों में जा गिरा।

"सेर्योझा! मेरे प्यारे बच्चे!" आन्ना ने बेदम होते और उसके गुदगुदे शरीर को बांहों में भरते हुए कहा।

"अम्मां!" वह कह उठा और आन्ना के हाथों के नीचे अपने को हिलाने-डुलाने लगा ताकि उसके शरीर के विभिन्न अंग मां के हाथों का स्पर्श अनुभव कर सकें।

नींद में मुस्कराता और अभी भी आंखें मूंदे हुए उसने अपने गुदगुदे हाथों से पलंग की टेक छोड़कर मां के कंधों को थाम लिया, उसके साथ चिपक गया और उसे नींद की उस प्यारी गंध तथा गर्माहट की अनुभूति कराते हुए, जो सिर्फ़ बच्चों में होती है, उसकी गर्दन तथा कंधों से अपना मुंह रगड़ने लगा।

"मैं जानता था," उसने आंखें खोलते हुए कहा। "आज मेरा जन्म-दिन है। मैं जानता था कि तुम आओगी। मैं अभी उठता हूं।"

और यह कहते हुए वह सोता जा रहा था।

आन्ना बड़ी उत्सुकता से बेटे को देख रही थी। उसे साफ़ नज़र आ रहा था कि उसकी अनुपस्थिति में वह कितना बड़ा हो गया है

और बदल गया है। वह कम्बल से बाहर निकली हुई उसकी नंगी और अब इतनी बड़ी हो गयी टांगों को, दुबला गये गालों, गुद्दी पर के कटे हुए छोटे-छोटे घुंघराले बालों को, जिन्हें वह अक्सर चूमा करती थी, पहचान भी रही थी और नहीं भी पहचान रही थी। वह इन सब जगहों पर उसे छू रही थी और कुछ भी कह नहीं पा रही थी – आंसुओं से उसका गला रुंधा जा रहा था।

"तुम किसलिये रो रही हो, अम्मां?" पूरी तरह से जागकर उसने पूछा। "किसलिये रो रही हो तुम, अम्मां?" वह रुआंसी आवाज़ में चिल्ला उठा।

"मैं? नहीं रोऊंगी मैं... मैं ख़ुशी के कारण रो रही हूं। इतने अर्से से मैंने तुम्हें देखा जो नहीं। नहीं रोऊंगी, नहीं रोऊंगी," उसने आंसू पीते और दूसरी ओर मुंह फेरते हुए कहा। "तुम्हें अब कपड़े पहनने चाहिये," कुछ क्षण चुप रहकर सम्भलने के बाद उसने कहा और उसके हाथ थामे हुए पलंग के पास कुर्सी पर बैठ गयी, जहां उसके लिये तैयार किये हुए कपड़े रखे थे।

"मेरे बिना तुम कैसे कपड़े पहनते हो? कैसे..." उसने सरलता और ख़ुशमिज़ाजी से कहना चाहा, किन्तु ऐसा नहीं कर पायी और फिर से मुंह दूसरी ओर कर लिया।

"मैं ठण्डे पानी से नहीं नहाता हूं, पापा ने इसकी मनाही कर दी है। वसीली लुकीच से तुम नहीं मिलीं? वे अभी आयेंगे। तुम तो मेरे कपड़ों पर बैठ गयीं!"

सेर्योझा ठठाकर हंस पड़ा। आन्ना उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

"अम्मां, मेरी प्यारी, बेहद प्यारी अम्मां!" फिर से आन्ना की ओर लपकते और उसे बांहों में भरते हुए वह चिल्ला उठा। मानो केवल अभी उसकी मुस्कान देखकर वह साफ़ तौर पर यह समझ पाया हो कि क्या हो गया है। "इसकी ज़रूरत नहीं है," मां की टोपी उतारते हुए उसने कहा। और मानो टोपी के बिना आन्ना को नये सिरे से देखकर वह फिर से उसे चूमने को लपका।

"तो तुम क्या सोचते रहे मेरे बारे में? तुमने ऐसा तो नहीं सोचा कि मैं मर गयी?"

"कभी भी मैंने यह विश्वास नहीं किया।"

"विश्वास नहीं किया न, मेरे लाड़ले?"

"मैं जानता था, मैं जानता था!" उसने अपना मनपसन्द वाक्य दोहराया और आन्ना का हाथ पकड़कर, जिससे वह उसके बाल सहला रही थी, तथा उसकी हथेली को अपने मुंह के साथ सटाकर चूमने लगा।

(३०)

इसी बीच वसीली लुकीच अजीब उलझन में पड़ा रहा। शुरू में वह यह नहीं समझ पाया कि वह महिला कौन है। दूसरों की बातचीत से यह मालूम होने पर कि यह वही मां थी, जिसने अपने पति को छोड़ दिया था और जिससे वह परिचित नहीं था, क्योंकि उसके जाने के बाद ही इस घर में आया था, वह इस दुविधा में पड़ गया कि भीतर जाये या न जाये या फिर कारेनिन को इसकी सूचना दे या न दे। आख़िर इस नतीजे पर पहुंचकर कि एक नियत समय पर सेर्योझा को उठा देना उसका कर्त्तव्य है और इसलिये इस बात की परवाह किये बिना कि वहां मां या कोई अन्य व्यक्ति बैठा है, अपना यह कर्त्तव्य पूरा करना चाहिये, उसने कपड़े पहने, दरवाज़े के पास गया और उसे खोला।

किन्तु मां-बेटे का लाड़-दुलार, उनकी आवाज़ों और वे जो कुछ कह रहे थे – इन सभी चीज़ों ने उसे अपना इरादा बदलने को मजबूर कर दिया। उसने सिर हिलाया, गहरी उसांस छोड़ी और दरवाज़ा बन्द कर दिया। "दस मिनट और रुक जाता हूं," उसने खांसकर गला साफ़ करते और आंसू पोंछते हुए अपने आपसे कहा।

इसी समय घर के नौकर-चाकरों में बड़ी उत्तेजना फैली हुई थी। सभी को यह पता चल गया था कि मालकिन आयी हैं, कि कपितोनिच ने उन्हें भीतर जाने दिया, कि इस समय वे सेर्योझा के कमरे में हैं, कि नौ बजे ख़ुद मालिक भी वहां जाते हैं और सभी इस बात को समझते थे कि पति-पत्नी की भेंट नहीं होनी चाहिये और किसी न किसी तरह इस स्थिति को बचाना चाहिये। गृह-प्रबन्धक कोरनेई ने द्वारपालों के कमरे में जाकर यह पूछा कि किसने और कैसे मालकिन को भीतर जाने दिया और यह मालूम होने पर कि कपितोनिच ने उनका स्वागत

किया और उन्हें ऊपर तक पहुंचा आया, उसने बूढ़े को भला-बुरा कहा। दरबान चुप्पी साधे रहा। किन्तु जब कोरनेई ने यह कहा कि इसके लिये उसे निकाल दिया जाना चाहिये, तो कपितोनिच लपककर उसके सामने गया और कोरनेई के मुंह के सामने हाथ लहराकर कह उठा –

"और तुम उन्हें भीतर जाने से रोक लेते। दस साल हो गये काम करते और सिर्फ़ मेहरबानी ही मेहरबानी जानी। तुम ही क्या अब जाकर यह कह सकते हो कि जाइये यहां से! तुम अपना उल्लू तो सीधा करना जानते हो! यह बात है! तुम अपनी फ़िक्र करो कि कैसे मालिक को निचोड़ा जाये और उनके फ़र-कोट उड़ाये जायें!"

"देहाती!" कोरनेई ने तिरस्कारपूर्वक कहा और भीतर आती हुई आया को सम्बोधित करते हुए बोला: "ज़रा सोचिये तो, मारीया येफ़ीमोव्ना – उन्हें भीतर जाने दिया और किसी को कुछ भी नहीं बताया। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच अभी बाहर आयेंगे और छोटे मालिक के कमरे में जायेंगे।"

"मुसीबत, मुसीबत," आया ने जवाब दिया। "कोरनेई वसील्येविच, आप किसी तरह मालिक को तो उनके कमरे में रोके रहें और मैं भागकर वहां जाती हूं, किसी तरह से मालकिन को वहां से बाहर ले आती हूं। मुसीबत, मुसीबत!"

आया जब वहां पहुंची, तो सेर्योझा अपनी मां को यह बता रहा था कि नाद्या के साथ वे दोनों टीले पर कैसे गिरे, कैसे लुढ़कते रहे और उन्होंने तीन-तीन कलाबाज़ियां खायीं। आन्ना बेटे की आवाज़ सुन रही थी, उसके चेहरे और चेहरे के भावों को देख रही थी, उसके हाथ को अनुभव कर रही थी, किन्तु वह जो कुछ कह रहा था, उसे समझ नहीं रही थी। उसे जाना चाहिये, बेटे को छोड़कर जाना चाहिये – वह सिर्फ़ यही सोच और अनुभव कर रही थी। उसे दरवाज़े के पास आते और खांसते हुए वसीली लुकीच के पैरों की आहट मिल रही थी, क़रीब आती आया के पैरों की भी आवाज़ सुनाई दे रही थी, किन्तु वह पत्थर बनी बैठी थी, न बोल पा रही थी, न उठने में समर्थ थी।

"प्यारी मालकिन!" आया ने आन्ना के क़रीब जाकर उसके

हाथों और कंधों को चूमते हुए कहा। "हमारे छोटे मालिक के जन्म-दिन पर भगवान कैसी ख़ुशी लाया है! आप तो ज़रा भी नहीं बदलीं।"

"ओह, प्यारी आया, मुझे मालूम नहीं था कि आप यहीं हैं," घड़ी भर को होश में आते हुए आन्ना ने कहा।

"मैं यहां नहीं रहती हूं, बेटी के साथ रहती हूं, बधाई देने आई हूं, प्यारी आन्ना आर्कादियेव्ना!"

आया अचानक रो पड़ी और फिर से आन्ना का हाथ चूमने लगी।

ख़ुशी से चमकती आंखें और होंठों पर मुस्कान लिये तथा एक हाथ से मां और दूसरे से आया को थामे हुए सेर्योझा अपने गुदगुदे नंगे पैरों से क़ालीन पर कूद रहा था। मां के प्रति प्यारी आया के स्नेह से उसे बेहद ख़ुशी हो रही थी।

"अम्मां! वह अक्सर मेरे पास आती है और जब आती है तो..." उसने कहना शुरू किया, किन्तु यह देखकर कि आया ने फुसफुसाकर मां से कुछ कहा है और मां के चेहरे पर भय और शर्म जैसा कोई भाव आ गया है, जो उसे बिल्कुल नहीं जंचता था, वह चुप हो गया।

आन्ना बेटे के क़रीब गयी।

"मेरे लाड़ले!" उसने कहा।

वह यह नहीं कह सकी "मैं जा रही हूं," किन्तु उसके चेहरे के भाव ने यह कह दिया और सेर्योझा समझ गया। "मेरे प्यारे, प्यारे छौने!" उसने वह नाम लेकर कहा, जिससे बचपन में उसे पुकारती थी। "तुम मुझे नहीं भूलोगे न? तुम..." मगर इसके बाद वह एक भी शब्द नहीं कह पायी।

बाद को न जाने कितने शब्द उसके दिमाग़ में आये, जो वह बेटे से कह सकती थी। लेकिन इस वक़्त उसे कुछ भी नहीं सूझा, उससे कुछ भी कहते नहीं बना। किन्तु सेर्योझा वह सब कुछ समझ गया, जो मां कहना चाहती थी। वह समझ गया कि मां दुखी है और उसे प्यार करती है। आया ने फुसफुसाकर जो कहा था, वह भी उसकी समझ में आ गया था। उसने ये शब्द "हमेशा नौ बजे" सुन लिये थे और वह समझ गया था कि पापा के बारे में ही ऐसा कहा गया था और मां तथा पापा को मिलना नहीं चाहिये। यह तो वह समझता था, मगर एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि मां के

चेहरे पर भय या शर्म का भाव क्यों दिखाई दिया था?.. वह दोषी नहीं है, मगर उससे डरती है और किसी कारण शर्म महसूस करती है। वह एक सवाल पूछना चाहता था, जिससे उसका यह सन्देह दूर हो जाता, लेकिन उसे ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई। वह साफ़ देख रहा था कि मां व्यथित है और उसे उसपर दया आ रही थी। वह चुपचाप उसके साथ लिपट गया और फुसफुसाया –

"अभी नहीं जाओ। वह अभी नहीं आयेंगे।"

मां ने उसे अपने से कुछ दूर हटा दिया, ताकि यह समझ सके कि वह जो कुछ कह रहा है, वैसा ही सोचता भी है या नहीं, और बेटे के चेहरे के सहमे हुए भाव से उसने यह समझ लिया कि वह पापा की केवल बात ही नहीं कर रहा है, बल्कि उससे यह भी पूछ रहा है कि पापा के सम्बन्ध में क्या सोचे।

"सेर्योझा, मेरे प्यारे बेटे," आन्ना बोली, "पापा को प्यार करना, वे मुझसे अच्छे और अधिक दयालु हैं और मैं उनके सामने अपराधिनी हूं। बड़े होने पर तुम ख़ुद निर्णय कर लेना।"

"तुमसे अच्छा कोई नहीं!" सेर्योझा रोता हुआ हताशा से चिल्ला उठा और उसके कंधे पकड़कर उसने अपनी पूरी ताक़त, तनाव के कारण कांपते हाथों से उसे अपने साथ चिपका लिया।

"मेरे नन्हे, मेरी जान!" आन्ना ने कहा और बच्चों की तरह, वैसे ही जैसे सेर्योझा रो रहा था, धीरे-धीरे रोने लगी।

इसी वक़्त दरवाज़ा खुला और वसीली लुकीच भीतर आया। दूसरे दरवाज़े के क़रीब पैरों की आहट सुनाई दी और आया ने सहमी-सी फुसफुसाहट से कहा – "आ रहे हैं!" और आन्ना को उसकी टोपी दे दी।

सेर्योझा बिस्तर पर जा गिरा और हाथों से मुंह ढककर सिसकने लगा। आन्ना ने उसके हाथ हटाये, फिर से उसका आंसू-भीगा चेहरा चूमा और तेज़ क़दमों से बाहर चल दी। कारेनिन सामने से आ रहा था। आन्ना को देखकर वह रुका और उसने सिर झुका दिया।

कुछ ही क्षण पहले उसने सेर्योझा से यह कहा था कि वह उससे बेहतर और दयालु है, फिर भी उड़ती-सी एक नज़र में ही, जिससे उसने हर तफ़सील के साथ उसकी सारी आकृति की थाह ले ली, वह उसके प्रति घृणा और द्वेष तथा बेटे के लिये ईर्ष्या की भावना

से भर उठी। आन्ना ने जालीदार परदा एक झटके से मुंह पर गिरा लिया और तेज़ चाल से, लगभग भागते हुए कमरे से बाहर चली गयी।

उन खिलौनों को, जो पिछली शाम उसने उदासी अनुभव करते हुए दुकान से इतने प्यार से ख़रीदे थे, वह बाहर नहीं निकाल पायी और उसी तरह अपने साथ घर वापस ले गई।

(३१)

बेटे से मिलने को आन्ना चाहे कितनी भी उत्सुक क्यों न थी, वह चाहे कितने ही अर्से से इसके बारे में सोच और इसके लिये अपने को तैयार कर रही थी, फिर भी उसने कभी यह उम्मीद नहीं की थी कि इस मिलन का उसके मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ेगा। होटल के अपने अलग सेट में लौटने पर वह देर तक यह नहीं समझ पाई कि किसलिये यहां है। "हां, यह सब ख़त्म हो गया और मैं फिर अकेली हूं," उसने अपने आपसे कहा और टोपी उतारे बिना अंगीठी के क़रीब रखी आराम कुर्सी पर बैठ गयी। खिड़कियों के बीच मेज़ पर रखी कांसे की घड़ी को एकटक देखते हुए वह विचारों में खो गयी।

फ़्रांसीसी नौकरानी, जिसे वे विदेश से अपने साथ लाये थे, कमरे में आई और उसने आन्ना से कपड़े बदलने को कहा। उसने हैरानी से उसकी तरफ़ देखा और बोली:

"बाद में।"

नौकर ने पूछा कि वह कॉफ़ी लाये।

"बाद में," आन्ना ने उत्तर दिया।

इतालवी धाय बच्ची को तैयार करके आन्ना के पास लाई। ख़ूब अच्छी देखभाल से गुदगुदी हुई बच्ची ने मां को देखते ही नंगे हाथों को, जो इतने मोटे थे मानो उन पर धागे बंधे हो, सदा की भांति हथेलियों को नीचे मोड़ लिया और पोपले मुंह से मुस्कराते हुए उन्हें मछली के पंखों की भांति हिलाने और उनसे अपने कढ़े हुए फ़्राक की कलफ़ लगी तहों को सरसराने लगी। उसे देखकर मुस्कराये बिना, चूमे बिना नहीं रहा जा सकता था, उसकी ओर उंगली बढ़ाये बिना नहीं रहा जा सकता था, जिसे वह किलकारियां मारते और ऊपर

उछलते हुए पकड़ना चाहती थी और उसकी ओर होंठ न बढ़ाना भी सम्भव नहीं था, जिसे उसने चुम्बन के रूप में अपने मुंह में ले लिया। आन्ना ने यह सब कुछ किया, उसे हाथों में लिया, उछाला, उसके प्यारे गालों और नंगी कोहनियों को चूमा। किन्तु इस बच्ची के सामने आने पर उसे यह और भी स्पष्ट हो गया कि उसके प्रति वह जो भावना अनुभव करती थी, वह सेर्योझा के प्रति अनुभव होनेवाली भावना की तुलना में प्रेम भी नहीं थी। इस बच्ची में सभी कुछ बहुत प्यारा था, किन्तु न जाने क्यों, यह सब उसके हृदय को नहीं छूता था। पहले बच्चे पर, बेशक वह ऐसे व्यक्ति से था, जिससे उसे प्रेम नहीं था, वह सारा प्यार लुटाया गया था, जिसकी तुष्टि नहीं हो पायी थी। दूसरी ओर, यह बच्ची बहुत ही जटिल परिस्थितियों में पैदा हुई थी और पहले बच्चे के लिये जितनी चिन्ता की गयी थी, उसका सौवां भाग भी इसे नहीं मिला था। इसके अलावा बच्ची को तो अभी भविष्य में व्यक्ति बनना था, जबकि सेर्योझा लगभग व्यक्ति बन चुका था, सो भी प्यारा व्यक्ति; उसमें विचारों और भावनाओं का द्वन्द्व होने लगा था; वह समझता था, प्यार करता था, उसकी आलोचना करता था, बेटे के शब्दों और नज़रों को याद करके वह सोच रही थी। वह केवल शारीरिक दृष्टि से नहीं, मानसिक दृष्टि से भी सदा के लिये उससे अलग हो गयी थी और इस स्थिति को सुधारना उसके बस की बात नहीं थी।

आन्ना ने बच्ची धाय को दे दी, उसे जाने को कहा और वह लाकेट खोला, जिसमें सेर्योझा का लगभग उसी उम्र में खींचा गया छविचित्र लगा हुआ था, जिस उम्र की यह बच्ची थी। वह उठी और टोपी उतारकर उसने मेज़ पर वह एल्बम रख लिया, जिसमें उम्र के दूसरे वक़्तों पर लिये गये सेर्योझा के छायाचित्र थे। उसने इनकी तुलना करनी चाही और उन्हें एल्बम में से निकालने लगी। उसने उन सभी को निकाल लिया, सिर्फ़ एक, आख़िरी और सबसे अच्छा फ़ोटो ही रह गया। इस फ़ोटो में वह सफ़ेद क़मीज़ पहने हुए कुर्सी पर बैठा था, उसकी भौंहें चढ़ी हुई थीं और होंठ मुस्करा रहे थे। यह उसके चेहरे का विशेष और सबसे अच्छा भाव था। अपने छोटे-छोटे फुर्तीले हाथों से, जिनकी गोरी, पतली उंगलियां आज ख़ास तौर पर तनाव

से हिल-डुल रही थीं, उसने कई बार फ़ोटो का सिरा पकड़ा, मगर वह हाथ से निकल गया और वह उसे निकाल नहीं पायी। काग़ज़-काट छुरी मेज़ पर नहीं थी और इसलिये इस फ़ोटो के पासवाला फ़ोटो निकालकर (जो गोल टोपी पहने और लम्बे बाल रखे हुए व्रोन्स्की का इटली में खींचा गया फ़ोटो था) उससे बेटे का फ़ोटो आगे को खिसकाया। "यह रहा वह!" व्रोन्स्की के फ़ोटो को देखकर आन्ना कह उठी और अचानक उसे यह याद हो आया कि उसके इस समय के दुख के लिये कौन ज़िम्मेदार है। आज सुबह से एक बार भी उसे व्रोन्स्की का ध्यान नहीं आया था। किन्तु अब वह साहसपूर्ण, उदात्त, इतना परिचित और प्यारा चेहरा देखकर उसे अप्रत्याशित ही उसके लिये अपने हृदय में प्यार की बाढ़-सी उमड़ती प्रतीत हुई।

"कहां है वह? मेरी व्यथाओं के साथ कैसे वह मुझे मेरे ही हाल पर छोड़ देता है?" अचानक भर्त्सना की भावना से उसने उसके बारे में सोचा और यह भूल गयी कि बेटे से सम्बन्धित सभी बातों को उसने ख़ुद ही उससे छिपाया है। उसने किसी को यह कहने के लिये भेजा कि वह फ़ौरन उसके पास आये। वह उन शब्दों को, जिनका उपयोग करते हुए उसे सब कुछ बतायेगी, और व्रोन्स्की की उन प्रेम-अभिव्यक्तियों के बारे में सोचते हुए, जिनसे वह उसे तसल्ली देगा, धड़कते दिल से उसका इन्तज़ार करने लगी। नौकर यह जवाब लेकर लौटा कि साहब के पास कोई मेहमान आया हुआ है, मगर वे अभी आयेंगे और उन्होंने यह पूछने को कहा है कि क्या वे पीटर्सबर्ग आनेवाले प्रिंस याश्विन के साथ उनके कमरे में आ सकते हैं। "अकेला नहीं आयेगा और कल शाम के खाने के बाद से हमारी मुलाक़ात नहीं हुई है," वह सोचने लगी, "ऐसे नहीं आयेगा कि मैं उसे सब कुछ बता सकूं, बल्कि याश्विन के साथ आयेगा।" सहसा एक अजीब-सा ख़्याल उसके दिमाग़ में कौंध गया – अगर उसे मुझसे प्यार नहीं रहा, तो?

और पिछले दिनों की घटनाओं पर ग़ौर करते हुए उसे ऐसा लगा कि वे उसके इस भयानक विचार की पुष्टि करती हैं – उसने कल तीसरे पहर का खाना घर पर नहीं खाया, इस बात के लिये ज़िद्द की कि पीटर्सबर्ग में अलग-अलग कमरों में रहें और अब अकेला उसके पास नहीं आना चाहता था मानो नज़र मिलाने से कतरा रहा था।

"लेकिन उसे मुझसे यह कह देना चाहिये। मुझे यह मालूम होना चाहिये। अगर मुझे यह पता चल जायेगा, तो मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना चाहिये," उसने अपने आपसे कहा। वह उस स्थिति की कल्पना करने में असमर्थ थी, जिसमें उसकी उदासीनता का विश्वास होने पर वह अपने को पायेगी। वह सोच रही थी कि व्रोन्स्की को उससे प्यार नहीं रहा, वह अपने को हताशा की सी अवस्था में अनुभव कर रही थी और इसलिये विशेष रूप से उत्तेजित महसूस कर रही थी। उसने घण्टी बजाकर नौकरानी को बुलाया और शृंगार-कक्ष में चली गयी। पिछले सभी दिनों की तुलना में आज उसने अपने बनाव-शृंगार में कहीं अधिक समय लगाया मानो मन से उतर जाने पर भी वह फिर से उसे इसलिये प्यार करने लगेगा कि उसका फ़्राक और केशविन्यास ऐसा होगा, जो उसे अधिक जंचता-फबता है।

वह पूरी तरह से तैयार नहीं हो पायी थी कि दरवाज़े की घण्टी बज उठी।

मेहमानख़ाने में जाने पर व्रोन्स्की के बजाय याश्विन की नज़र ने उसका स्वागत किया। व्रोन्स्की उसके बेटे के फ़ोटो देख रहा था, जिन्हें वह मेज़ पर से उठाना भूल गयी थी, और उसने आन्ना की ओर देखने की कोई जल्दी नहीं की।

"हम एक-दूसरे से परिचित हैं," सकपकाये हुए याश्विन (जो उसके बहुत ही लम्बे क़द और साधारण नाक-नक़्शे को ध्यान में रखते हुए अजीब बात थी) के बहुत बड़े हाथ से अपना छोटा-सा हाथ मिलाते हुए आन्ना ने कहा। "पिछले साल घुड़दौड़ों के वक़्त जान-पहचान हुई थी। इन्हें दे दीजिये," अर्थपूर्ण चमकती आंखों से व्रोन्स्की की ओर देखते हुए उसने फुर्ती से वे फ़ोटो ले लिये, जिन्हें वह देख रहा था। "इस साल घुड़दौड़ें अच्छी रहीं? मैंने उनकी जगह रोम में कोर्सो पर दौड़ें देखीं। वैसे, आप तो विदेश का जीवन पसन्द नहीं करते," उसने सस्नेह मुस्कराते हुए कहा। "बेशक आपसे बहुत कम ही मिलना-जुलना हुआ, फिर भी मैं आपको और आपकी सभी दिलचस्पियों को अच्छी तरह जानती हूं।"

"मुझे इसका बहुत अफ़सोस है, क्योंकि मेरी ज़्यादातर दिलचस्पियां ख़ासी बुरी हैं," याश्विन ने अपनी बायीं मूंछ को चबाते हुए जवाब दिया।

कुछ देर तक आन्ना के साथ बातचीत करने और यह देखने के बाद कि व्रोन्स्की ने घड़ी पर नज़र डाली है, उसने पूछा कि क्या वह काफ़ी दिनों तक पीटर्सबर्ग में रहेंगी और अपने लम्बे-तड़ंगे शरीर को सीधा करके उसने टोपी उठा ली।

"लगता है कि बहुत दिन तो नहीं," आन्ना ने व्रोन्स्की की ओर देखकर उधेड़बुन में पड़ते हुए उत्तर दिया।

"तो क्या फिर मुलाक़ात नहीं हो सकेगी?" याश्विन ने उठते और फिर व्रोन्स्की को सम्बोधित करते हुए कहा। "दिन का खाना कहां खा रहे हो?"

"यहां आ जाइये दिन का खाना खाने," आन्ना ने दृढ़तापूर्वक कहा मानो अपनी उधेड़बुन के लिये खुद पर झल्ला रही हो। पर साथ ही हमेशा की भांति, जब उसे किसी नये व्यक्ति के सामने अपनी स्थिति स्पष्ट करनी होती थी, वह लज्जारुण हो गयी। "खाना यहां बहुत अच्छा नहीं मिलता, लेकिन कम से कम आप दोनों साथ तो हो सकेंगे। पलटन के अपने साथियों में से अलेक्सेई और किसी को भी आपके समान प्यार नहीं करता।"

"बड़ी ख़ुशी से," याश्विन ने मुस्कराकर कहा, जिससे व्रोन्स्की को यह स्पष्ट हो गया कि आन्ना उसे बहुत अच्छी लगी है।

याश्विन विदा लेकर बाहर चला गया, व्रोन्स्की कमरे में रुक गया।

"तुम भी जा रहे हो?" आन्ना ने पूछा।

"मुझे तो देर भी हो चुकी है," उसने जवाब दिया। "तुम चलो! मैं अभी तुम्हारे साथ आ मिलूंगा," उसने याश्विन से ऊंचे कहा।

आन्ना ने उसका हाथ थाम लिया और उसे एकटक देखते हुए यह सोचने लगी कि उसे रोके रखने के लिये क्या कहे।

"रुको तो, मुझे तुमसे कुछ कहना है," उसके हाथ को अपनी गर्दन पर रखते हुए वह बोली। "तुमने बुरा तो नहीं माना कि मैंने उसे खाने के लिये बुला लिया?"

"बहुत अच्छा किया," उसने अपनी शान्त मुस्कान के साथ सुन्दर दांतों की झलक देते और आन्ना का हाथ चूमते हुए उत्तर दिया।

"अलेक्सेई, तुम मेरे प्रति बदल तो नहीं गये हो?" अपने दोनों हाथों से उसका हाथ दबाते हुए आन्ना ने सवाल किया।

"अलेक्सेई, मैं यहां बहुत दुखी हो गयी हूं। कब जायेंगे हम यहां से?"

"जल्द, बहुत जल्द। तुम यक़ीन नहीं करोगी कि मेरे लिये भी यहां की ज़िन्दगी कितनी बोझिल है," उसने कहा और अपना हाथ खींच लिया।

"तो जाओ, जाओ!" आन्ना ने बुरा मानते हुए कहा और झटपट उससे दूर चली गयी।

(३२)

व्रोन्स्की जब होटल में लौटा, तो आन्ना अभी तक नहीं आई थी। उसे बताया गया कि उसके जाने के फ़ौरन बाद कोई महिला उसके पास आई और वह उसके साथ कहीं चली गयी। यह बताये बिना कि कहां जा रही है, वह चली गयी थी, कि वह अब तक लौटी नहीं थी, कि सुबह भी उससे कुछ कहे बिना कहीं गयी थी – इन सब चीज़ों और साथ ही आज सुबह उसके चेहरे के अजीब उत्तेजित भाव और उस शत्रुतापूर्ण अन्दाज़ की याद ने, जिससे उसने बेटे के फ़ोटो उसके हाथ से लगभग छीन लिये थे, उसे सोचने के लिये विवश कर दिया। उसने तय किया कि उसे खुलकर आन्ना से बात करनी चाहिये। इसलिये वह मेहमानख़ाने में बैठकर उसकी राह देखने लगा। किन्तु आन्ना अकेली नहीं लौटी, बल्कि अपनी बूआ, बूढ़ी अविवाहिता प्रिंसेस ओब्लोन्स्काया के साथ। यही बूआ सुबह के वक़्त आई थी और आन्ना के साथ ख़रीदारी करने गयी थी। व्रोन्स्की के चेहरे के चिन्तामय और प्रश्नसूचक भाव की ओर मानो आन्ना का ध्यान नहीं गया और वह बहुत रंग में उसे यह बताती रही कि उसने आज सुबह क्या कुछ ख़रीदा है। व्रोन्स्की ने देखा कि आन्ना के भीतर कोई ख़ास बात हो रही है – चमकती हुई आंखों में, जब वे क्षण भर को उसके चेहरे पर रुकीं, उसे तनावपूर्ण एकाग्रता की झलक मिली और उसके बोलने के ढंग और हाव-भाव में घबराहट लिये हुए वह तेज़ी और सजीलापन था, जो उन दोनों की निकटता के पहले समय में उसे बहुत अच्छे लगता था और अब चिन्ता तथा भय पैदा करता था।

चार आदमियों के लिये खाना लगाया गया। वे सभी भोजन-कक्ष

में जानेवाले ही थे कि तुश्केविच आन्ना के नाम प्रिंसेस बेत्सी का एक सन्देश लेकर आ गया। प्रिंसेस बेत्सी ने इस बात के लिये क्षमा करने का अनुरोध किया था कि वह उससे विदा लेने नहीं आई, उसकी तबीयत अच्छी नहीं थी और उसने आन्ना से शाम के साढ़े छः और नौ बजे के बीच आने की प्रार्थना की थी। इस विशेष समय की बात सुनकर व्रोन्स्की ने आन्ना की ओर देखा। ज़ाहिर था कि इस बात की पूरी सावधानी बरती गयी है कि उस वक़्त वहां आन्ना की अन्य किसी से भेंट न हो सके। किन्तु आन्ना ने मानो इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"बड़े अफ़सोस की बात है कि मैं शाम के साढ़े छः बजे और नौ बजे के बीच ही नहीं जा सकती," उसने ज़रा मुस्कराकर कहा।

"प्रिंसेस को बहुत दुख होगा।"

"मुझे भी।"

"आप शायद पात्ती का गायन सुनने जा रही हैं?" तुश्केविच ने पूछा।

"पात्ती का गायन? आप मुझे अच्छी बात सुझा रहे हैं। अगर बाक्स हासिल करना मुमकिन हो, तो मैं ज़रूर चली जाती।"

"बाक्स मैं हासिल कर दूंगा," तुश्केविच ने तत्परता प्रकट की।

"आपका बहुत-बहुत आभार मानूंगी," आन्ना ने कहा। "हमारे साथ भोजन करना नहीं पसन्द करेंगे?"

व्रोन्स्की ने ऐसे धीरे से कंधे झटके कि किसी का ध्यान न जाये। वह बिल्कुल यह नहीं समझ पा रहा था कि आन्ना क्या कर रही है। किसलिये वह बूढ़ी प्रिंसेस को अपने साथ ले आई, किसलिये तुश्केविच को खाने के लिये रोक रही है और सबसे ज़्यादा हैरानी की बात यह थी कि किसलिये उसे थियेटर में बाक्स हासिल करने को भेजना चाहती थी? अपनी वर्त्तमान स्थिति में वह पात्ती को ऑपेरा में सुनने के लिये जाने की बात भला सोच ही कैसे सकती थी, जहां उसकी जान-पहचान का पूरा ऊंचा समाज होगा? उसने गम्भीर दृष्टि से आन्ना की ओर देखा, किन्तु उसने वैसी ही चुनौती देती या फिर ख़ुशी, अथवा कुछ हताशा से भरपूर नज़र से जवाब दिया, जिसका अर्थ उसकी समझ में नहीं आया। खाने की मेज़ पर आन्ना ने ज़्यादती करने की हद तक

ख़ुशमिज़ाजी दिखाई – वह तो तुश्केविच और याश्विन के साथ मानो चोंचलेबाज़ी करती रही। खाना ख़त्म होने पर जब तुश्केविच बाक्स हासिल करने चला गया और याश्विन सिगरेट पीने के लिये नीचे चल दिया, तो व्रोन्स्की भी उसके साथ अपने कमरे में चला गया। कुछ देर वहां बैठने के बाद वह भागता हुआ ऊपर लौटा। आन्ना मख़मल से सजी, नीची चोलीवाली हल्के रंग की रेशमी पोशाक पहने थी, जो उसने पेरिस में सिलवाई थी, सिर पर महंगे क़िस्म की सफ़ेद लेस बंधी थी, जिससे उसका चेहरा चौखटे में जड़ा-सा लगता था और जिससे उसकी चकाचौंध करती सुन्दरता को चार चांद लग गये थे।

"आप क्या सचमुच ही थियेटर जा रही हैं?" आन्ना से नज़र न मिलाने की कोशिश करते हुए उसने पूछा।

"आप ऐसे सहमे-सहमे से क्यों पूछ रहे हैं?" फिर से इस बात का बुरा मानते हुए कि वह उससे नज़र क्यों नहीं मिला रहा है, उसने जवाब दिया। "क्यों न जाऊं मैं थियेटर?"

आन्ना मानो उसके शब्दों का अर्थ नहीं समझ रही थी।

"ज़ाहिर है कि ऐसा कोई कारण नहीं है," व्रोन्स्की ने माथे पर बल डालते हुए कहा।

"मैं भी यही कह रही हूं," जानबूझकर व्रोन्स्की के व्यंग्यपूर्ण ढंग की अवहेलना करते हुए वह बोली और बड़े इतमीनान से अपना खुशबू से महकता हुआ लम्बा दस्ताना हाथ पर चढ़ाने लगी।

"आन्ना, भगवान के लिये यह बताइये कि आपको क्या हुआ है?" व्रोन्स्की ने उसी तरह अपील करते हुए, जैसे कभी आन्ना का पति कहता था, उससे कहा।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि आप क्या पूछ रहे हैं।"

"आप जानती हैं कि वहां जाना ठीक नहीं।"

"वह क्यों? मैं अकेली नहीं जाऊंगी। प्रिंसेस वर्वारा कपड़े पहनने गयी है, वह मेरे साथ जायेगी।"

व्रोन्स्की ने हैरानी और हताशा प्रकट करते हुए कंधे झटके।

"लेकिन क्या आप यह नहीं जानतीं..." उसने कहना शुरू किया।

"मैं कुछ जानना नहीं चाहती!" आन्ना लगभग चिल्ला उठी। "नहीं चाहती। मैंने जो कुछ किया है, क्या मैं उसके लिये पछता

रही हूं? नहीं, नहीं, एक बार फिर नहीं। अगर फिर शुरू से यही होता तो मैं फिर ऐसा ही करती। हमारे लिये, मेरे और आपके लिये, सिर्फ़ यही महत्त्वपूर्ण है – हम एक-दूसरे को प्यार करते हैं या नहीं। दूसरी कोई भी चीज़ मानी नहीं रखती। किसलिये हम यहां अलग-अलग कमरों में रहते हैं और मिलते-जुलते नहीं? क्यों मैं थियेटर नहीं जा सकती? मैं तुम्हें प्यार करती हूं और बाक़ी मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं," आन्ना ने एक ख़ास, व्रोन्स्की की समझ में न आनेवाली चमक आंखों में लाकर उसकी तरफ़ देखते हुए रूसी में कहा, "हां, अगर तुम्हारा मन नहीं बदल गया। तुम मेरी तरफ़ क्यों नहीं देखते?"

व्रोन्स्की ने आन्ना की तरफ़ देखा। उसने उसके चेहरे की सारी सुन्दरता और सज-धज को देखा, जो हमेशा उसे इतनी अधिक जंचती थीं। किन्तु अब यही सुन्दरता और सजीलापन उसमें झुंझलाहट पैदा कर रहे थे।

"आप जानती ही हैं कि आपके प्रति मेरी भावना में परिवर्तन नहीं हो सकता, किन्तु मैं आपसे अनुरोध करता हूं, आपकी मिन्नत करता हूं कि नहीं जाइये," व्रोन्स्की ने अपनी आवाज़ में अनुनय, किन्तु दृष्टि में रुखाई के साथ फिर फ़्रांसीसी में कहा।

आन्ना ने उसके शब्द नहीं सुने, किन्तु दृष्टि की रुखाई को देखा और चिढ़कर जवाब दिया –

"मैं आपसे यह बताने का अनुरोध करती हूं कि मैं क्यों न जाऊं।"

"इसलिये कि इससे आपको..." वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका।

"कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ रहा। याश्विन n'est pas compromettant* और प्रिंसेस वर्वारा दूसरों से किसी तरह बुरी नहीं। लो, आ गयी वह।"

(३३)

व्रोन्स्की को आन्ना के विरुद्ध झल्लाहट, जान-बूझकर अपनी स्थिति को न समझने के लिये लगभग क्रोध की पहली बार अनुभूति

---

* अटपटी स्थिति में नहीं डाल सकता। (फ़्रांसीसी)

हुई। यह क्रोध-भावना इसलिये और भी अधिक तीव्र हो गयी कि वह उसे अपनी झल्लाहट का कारण नहीं बता सकता था। वह जो कुछ सोच रहा था, अगर उसे साफ़-साफ़ कह देता, तो उसने आन्ना से यह कहा होता: "ऐसी सज-धज और प्रिंसेस के साथ, जिसे सभी जानते हैं, थियेटर में जाने का मतलब न सिर्फ़ पतित नारी के रूप में अपनी स्थिति को स्वीकार करना होगा, बल्कि ऊंचे समाज को चुनौती देना भी होता यानी सदा के लिये उससे नाता तोड़ लेना होगा।"

वह आन्ना से यह नहीं कह सकता था। "मगर वह समझती क्यों नहीं और उसकी आत्मा में हो क्या रहा है?" वह अपने आपसे कह रहा था। उसे अनुभव हो रहा था कि जहां आन्ना के प्रति उसका आदर भाव कम हो रहा था, वहां उसके सौन्दर्य की चेतना बढ़ रही थी।

व्रोन्स्की नाक-भौंह सिकोड़े हुए अपने कमरे में आया और याश्विन के क़रीब बैठ गया, जो कुर्सी पर अपनी लम्बी टांगें फैलाये हुए सोडे में ब्रांडी मिलाकर पी रहा था। उसने अपने लिये भी वही लाने को कह दिया।

"तुम लान्कोव्स्की घोड़े की बात कर रहे थे। वह अच्छा घोड़ा है और मैं तुम्हें उसे ख़रीदने की सलाह देता हूं," याश्विन ने अपने दोस्त के उदास चेहरे पर नज़र डालकर कहा। "उसके पुट्ठे कुछ अच्छे नहीं हैं, लेकिन टांगें और सिर तो ऐसे हैं कि बेहतर की कल्पना नहीं की जा सकती।"

"मेरे ख़्याल में मैं उसे ख़रीद लूंगा," व्रोन्स्की ने जवाब दिया।

घोड़ों से सम्बन्धित बातचीत में वह दिलचस्पी ले रहा था, लेकिन क्षण भर को भी आन्ना को नहीं भूल पा रहा था, अनचाहे ही बरामदे में पैरों की आहट पर कान लगाये रहा और आतिशदान पर रखी घड़ी पर नज़र डालता रहा।

"आन्ना आर्कादृयेव्ना ने मुझे यह कहने को भेजा है कि वे थियेटर जा रही हैं।"

याश्विन ने सोडे में ब्रांडी का एक गिलास और मिलाया, उसे गले के नीचे उतारा और खड़े होकर बटन बन्द करने लगा।

"तो? चलें?" उसने मूंछों के नीचे होंठों पर तनिक मुस्कान लाते और इससे यह ज़ाहिर करते हुए कहा कि वह व्रोन्स्की

की उदासी का कारण समझता है, किन्तु इसे कोई महत्त्व नहीं देता।

"मैं नहीं जाऊंगा," व्रोन्स्की ने उदासी से कहा।

"लेकिन मुझे जाना होगा, मैंने वादा किया है। तो अलविदा। तुम स्टाल में आकर बैठ सकते हो। क्रासींस्की की कुर्सी पर," याश्विन ने बाहर जाते हुए कहा।

"नहीं, मुझे कुछ और काम है।"

"बीवी के साथ झंझट होती है और अगर वह बीवी न हो, तो और भी ज़्यादा मुसीबत रहती है," याश्विन होटल से निकलते हुए सोच रहा था।

अकेला रह जाने पर व्रोन्स्की कुर्सी से उठा और कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाने लगा।

"तो आज क्या खेल है थियेटर में? सीज़न का चौथा टिकट... येगोर अपनी पत्नी के साथ वहां होगा और शायद मां भी। इसका मतलब यह हुआ—सारा पीटर्सबर्ग ही वहां है। अब वह थियेटर में पहुंच चुकी है, उसने फ़र-कोट उतार दिया है और रोशनी में निकल आई है। तुश्केविच, याश्विन, प्रिंसेस वर्वारा..." वह कल्पना कर रहा था। "और अपने बारे में मुझे क्या कहना है? या तो मैं डरता हूं या फिर मैंने उसे तुश्केविच के संरक्षण में दे दिया? किसी भी दृष्टि से क्यों न देखा जाये, यह मूर्खता है, मूर्खता है... क्यों उसने मुझे ऐसी स्थिति में डाल दिया है?" उसने हाथ झटकते हुए कहा।

ऐसा करने पर उसका हाथ उस छोटी मेज़ से जा टकराया, जिसपर सोडा वाटर और ब्रांडी वाली सुराही रखी थी, जिसे उसने लगभग नीचे गिरा दिया। उसने उसे सम्भालना चाहा, वह उसके हाथ से निकल गयी और तब ग़ुस्से में मेज़ को ठोकर मारकर उसने घण्टी बजायी।

"अगर तुम मेरे यहां अपनी नौकरी बनाये रखना चाहते हो," उसने भीतर आनेवाले नौकर से कहा, "तो तुम्हें अपने काम का ध्यान रखना चाहिये। फिर ऐसा नहीं होना चाहिये। यह सब साफ़ कर देना चाहिये था।"

नौकर ने अपने को निर्दोष अनुभव करते हुए अपनी सफ़ाई देनी चाही, किन्तु मालिक के चेहरे पर नज़र डालने से वह समझ गया

कि उसे चुप ही रहना चाहिये तथा झटपट क़ालीन पर बैठकर साबूत और टूटे हुए जाम तथा बोतलें उठाने लगा।

"यह तुम्हारा काम नहीं है, वेटर को यहां सफ़ाई करने के लिये भेज दो और तुम मेरा फ़ाक-कोट तैयार करो।"

रात के साढ़े आठ बजे व्रोन्स्की थियेटर में दाख़िल हुआ। ऑपेरा का ख़ूब समां बंधा हुआ था। बाक्स के पास हाज़िरी बजानेवाले बूढ़े ने उसका फ़र-कोट उतरवाया और उसे पहचानकर "हुज़ूर" कहा और यह सुझाव दिया कि फ़र-कोट टांगने के लिये टोकन लेने की ज़रूरत नहीं, बल्कि वह फ़्योदोर को बुलाकर उसे अपना कोट दे दे। हाज़िरी बजानेवाले इस बूढ़े और हाथों में फ़र-कोट उठाये तथा दरवाज़े के पास खड़े होकर ऑपेरा सुन रहे दो नौकरों के सिवा रोशन बरामदे में और कोई नहीं था। तनिक खुले हुए दरवाज़े के पीछे से बड़ी सावधानी से भिन्न सुरों में संगत करते आर्केस्ट्रा और एक नारी-कण्ठ की आवाज़ सुनाई दे रही थी, जो स्वरबद्ध वाक्य का बहुत स्पष्ट उच्चारण कर रही थी। बूढ़े नौकर के भीतर जाने के लिये दरवाज़ा खुला और समाप्त होता हुआ गायन व्रोन्स्की को स्पष्ट सुनाई दिया। किन्तु दरवाज़ा उसी वक़्त बन्द हो गया और व्रोन्स्की गायन का अन्त नहीं सुन सका, किन्तु दरवाज़े के पीछे से तालियों के ज़ोरदार शोर से यह समझ गया कि गायन समाप्त हो गया। जब वह झाड़-फ़ानूसों और कांसे की गैस-ब्रेकटों की रोशनी से जगमगाते हॉल में दाख़िल हुआ, तो प्रशंसकों का शोर अभी तक जारी था। रंगमंच पर अपने नंगे कंधों और हीरों की लौ देती, झुकती और मुस्कराती हुई गायिका तार सप्तक के अपने सह-गायक की मदद से, जो उसका हाथ थामे था, फ़ुट-लाइटों के ऊपर से रंगमंच पर अटपटे ढंग से गिरनेवाले गुलदस्तों को उठा रही थी और चमकते बालों के बीच मांग काढ़े हुए उस महानुभाव की ओर बढ़ रही थी, जो अपनी लम्बी बांहों को फ़ुट-लाइटों के ऊपर से फैलाकर उसकी तरफ़ कोई उपहार बढ़ा रहा था, और स्टालों तथा बाक्सों के सभी दर्शकगण उत्तेजना से हिल-डुल तथा आगे को झुक रहे थे, शोर मचा तथा तालियां बजा रहे थे। वाद्यवृन्द-निदेशक ने अपनी ऊंची सीट से यह उपहार गायिका तक पहुंचाने में मदद दी और अपनी सफ़ेद टाई ठीक की। व्रोन्स्की स्टाल के मध्य में गया और

वहां रुककर इधर-उधर नज़र दौड़ाने लगा। अन्य किसी समय की तुलना में आज उसने इस परिचित वातावरण, इस रंगमंच, इस कोलाहल और खचाखच भरे थियेटर में एकत्रित जानी-पहचानी, ग़ैरदिलचस्प और रंग-बिरंगी पोशाकें पहने दर्शकों की भीड़ की ओर कहीं कम ध्यान दिया।

सदा की भांति बाक्सों में वही नारियां और उनके पीछे वही अफ़सर बैठे थे। वही – भगवान जाने कौन – रंग-रंगीली पोशाकें पहने नारियां थीं, वही वर्दियां और फ़्राक-कोट थे, गैलरी में गन्दे लोगों की वही भीड़ थी, और इस सारी भीड़ में बाक्सों तथा पहली क़तारों में लगभग चालीस "वास्तविक" महिलायें और पुरुष थे। व्रोन्स्की ने फ़ौरन इन्हीं "नखलिस्तानों" की ओर ध्यान दिया और तत्काल इनके साथ सम्बन्ध-तार जोड़ लिया।

व्रोन्स्की के भीतर आते ही अंक समाप्त हुआ और इसलिये बड़े भाई के बाक्स में जाने के बजाय वह पहली क़तार में जाकर फ़ुट-लाइटों के क़रीब सेर्पुख़ोव्स्कोई के साथ खड़ा हो गया, जो अपना घुटना झुकाये हुए आर्केस्ट्रा की दीवार पर एड़ी बजा रहा था और व्रोन्स्की को दूर से देखकर उसे मुस्कान द्वारा अपने पास आने का संकेत किया था।

व्रोन्स्की ने अभी तक आन्ना को नहीं देखा था, जान-बूझकर उसकी तरफ़ नज़र नहीं डाली थी। किन्तु जिस दिशा में अधिकतर नज़रें टिकी थीं, वह जानता था कि आन्ना वहीं है। उसने चोरी-छिपे अपनी नज़र घुमाई, मगर आन्ना को नहीं खोजा। अधिक बुरी आशा करते हुए उसने कारेनिन को ढूंढ़ना चाहा। किन्तु उसकी ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि इस दिन वह थियेटर में नहीं था।

"कितने कम फ़ौजी रह गये हो तुम!" सेर्पुख़ोव्स्कोई ने उससे कहा। "कूटनीतिज्ञ, कलाकार या ऐसे ही कुछ और हो सकते हो।"

"हां, मैंने स्वदेश लौटते ही फ़्राक-कोट पहन लिया," व्रोन्स्की ने मुस्कराते और धीरे से दूरबीन निकालते हुए जवाब दिया।

"स्वीकार करता हूं कि इस चीज़ के लिये मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। मैं जब विदेश से लौटकर यह पहनता हूं," उसने पद-चिह्नों को हाथ लगाया, "तो मुझे अपनी आज़ादी के लिये अफ़सोस होता है।"

सेना में व्रोन्स्की की पदोन्नति के बारे में सेर्पुख़ोव्स्कोई कभी का

निराश हो चुका था, किन्तु वह उसे पहले की तरह प्यार करता था और अब ख़ास तौर पर उसके साथ अच्छे ढंग से पेश आया।

"दुख की बात है कि तुम पहले अंक में यहां नहीं थे।"

व्रोन्स्की स्टालों से बाक्सों की ओर अपनी दूरबीन घुमाते हुए सेर्पुख़ोव्स्कोई की बातों को बेध्यान-सा सुन रहा था। पगड़ी वाली महिला और उस गंजे बूढ़े के क़रीब, जो व्रोन्स्की की दूरबीन के शीशे के उस पर केन्द्रित होने के समय क्रोध से पलकें झपका रहा था, उसे अचानक आन्ना के गर्वीले, आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर और लेसों के चौखटे में मुस्कराते हुए चेहरे की झलक मिली। वह उससे कोई बीस क़दम की दूरी पर पांचवें बाक्स में थी। वह आगे की ओर बैठी थी और तनिक सिर घुमाकर याश्विन से कुछ कह रही थी। सुन्दर और चौड़े कंधों पर उसके सिर का अन्दाज़ और उसकी आंखों की संयत-उत्तेजित चमक और उसके पूरे चेहरे ने उसे एकदम उसी रूप में उसकी याद दिला दी, जिस रूप में उसने उसे मास्को के बॉल में देखा था। किन्तु अब वह इस सुन्दरता को दूसरे ही रूप में अनुभव कर रहा था। आन्ना के प्रति उसकी भावना में अब कुछ भी रहस्यपूर्ण नहीं था और इसलिये उसकी सुन्दरता चाहे पहले से अधिक अपनी ओर खींचती थी, लेकिन साथ ही वह उसके दिल को ठेस भी लगाती थी। आन्ना उसकी ओर नहीं देख रही थी, मगर व्रोन्स्की ने महसूस किया कि वह उसे देख चुकी है।

व्रोन्स्की ने जब फिर से अपनी ऑपेरा-दूरबीन उस दिशा में घुमायी, तो उसने देखा कि प्रिंसेस वर्वारा का चेहरा बेहद लाल है, वह अस्वाभाविक ढंग से हंस रही है और लगातार मुड़-मुड़कर पासवाले बाक्स की ओर देख रही है। आन्ना अपने पंखे को बन्द करके उसे बाक्स की लाल मख़मल पर धीरे-धीरे मार रही है, टकटकी बांधकर कहीं देख रही है, किन्तु बग़ल के बाक्स में जो कुछ हो रहा है, उसे नहीं देख रही और स्पष्टतः देखना नहीं चाह रही है। याश्विन के चेहरे पर वही भाव था, जो जुए में हारने के वक़्त उसके चेहरे पर होता था। माथे पर बल डाले हुए वह अपनी बायीं मूंछ को अधिकाधिक मुंह में डालता जा रहा था और उसी बग़लवाले बाक्स की तरफ़ कनखियों से देख रहा था।

बायीं ओर के इस बाक्स में कार्तासोव दम्पति बैठे थे। व्रोन्स्की उन्हें जानता था और उसे मालूम था कि आन्ना उनसे परिचित है। नाटी और दुबली-पतली कार्तासोवा आन्ना की ओर पीठ किये हुए अपने बाक्स में खड़ी थी और पति द्वारा पहनाया जानेवाला कैप पहन रही थी। उसका चेहरा पीला और झल्लाया हुआ था और वह उत्तेजित होकर कुछ कह रही थी। उसका मोटा और गंजा पति यानी श्रीमान कार्तासोव लगातार मुड़-मुड़कर आन्ना की तरफ़ देखता हुआ पत्नी को शान्त करने की कोशिश कर रहा था। बीवी के बाक्स से बाहर चले जाने पर वह आन्ना से नज़र मिलाने और सम्भवत: उसका अभिवादन करने की इच्छा से देर तक वहीं खड़ा रहा। किन्तु आन्ना जान-बूझकर उसकी अवहेलना करते हुए पीछे की ओर मुड़कर याश्विन से कुछ कह रही थी, जिसका छोटे-छोटे बालों वाला सिर उसकी तरफ़ झुका हुआ था। कार्तासोव अभिवादन किये बिना ही बाहर चला गया और बाक्स ख़ाली हो गया।

व्रोन्स्की यह नहीं समझ पाया कि कार्तासोव दम्पति और आन्ना के बीच क्या हुआ है, किन्तु इतना समझ गया कि आन्ना के लिये कोई अपमानजनक बात हुई है। उसने जो कुछ देखा था, उससे और इससे भी अधिक आन्ना के चेहरे से वह यह समझ गया। वह जानता था कि आन्ना अपनी बची-खुची शक्ति बटोर रही थी, ताकि उस भूमिका को निभा सके, जो वह निभा रही थी। और बाहरी तौर पर शान्त बने रहने की इस भूमिका में उसे पूरी सफलता मिली थी। जो आन्ना और उसके परिचितों के घेरे को नहीं जानता था, जिन्होंने उसके ऊंचे समाज में प्रकट होने, सो भी लेसों के ऐसे ठाट-बाट और अपनी पूरी सुन्दरता के साथ प्रकट होने पर सहानुभूति, क्रोध और आश्चर्य के द्योतक नारियों के उद्गारपूर्ण शब्द नहीं सुने थे, ऐसे लोग इस नारी की शान्त मुख मुद्रा और सुन्दरता पर मुग्ध हो रहे थे और उन्हें इस बात का भ्रम तक नहीं हो सकता था कि वह अपने को उसी व्यक्ति के समान अनुभव कर रही है, जिसे अपमानित करने के लिये अपराधी-स्तम्भ के साथ बांध दिया गया है।

यह जानते हुए कि कोई अटपटी बात हो गयी है, मगर यह न जानते हुए कि क्या बात हुई है, व्रोन्स्की यातनापूर्ण बेचैनी महसूस

कर रहा था और कुछ न कुछ मालूम कर पाने की उम्मीद से भाई के बाक्स की तरफ़ चल दिया। उसने जान-बूझकर आन्ना के बाक्स के सामने की ओर स्टाल से बाहर जाने का रास्ता चुना और दरवाज़े पर उसकी अपने भूतपूर्व रेजिमेन्ट-कमांडर से भेंट हो गयी, जो अपने दो परिचितों से बातचीत कर रहा था। व्रोन्स्की ने उन्हें कारेनिन-दम्पति का नाम लेते सुना और इस बात की तरफ़ भी उसका ध्यान गया कि अपने साथियों की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए रेजिमेन्ट-कमांडर ने उसे कैसे जल्दी से ऊंचे पुकारा।

"अरे, व्रोन्स्की! रेजिमेन्ट में कब आ रहे हो? दावत के बिना हम तुम्हें नहीं जाने देंगे। तुम तो हमारे सबसे पुराने साथियों में से हो," रेजिमेन्ट-कमांडर ने कहा।

"अफ़सोस की बात है कि अब ऐसा नहीं कर पाऊंगा, फिर कभी सही," व्रोन्स्की ने जवाब दिया और भाई के बाक्स में पहुंचने के लिये भागते हुए सीढ़ियां चढ़ने लगा।

रुपहले घुंघराले बालोंवाली व्रोन्स्की की मां, बूढ़ी काउंटेस, भाई के बाक्स में बैठी थी। वार्या और प्रिंसेस सोरोकिना के साथ व्रोन्स्की की बरामदे में भेंट हो गयी।

प्रिंसेस सोरोकिना को व्रोन्स्की की मां के पास पहुंचाकर वार्या ने अपने देवर से हाथ मिलाया और उसी क्षण उससे उसकी दिलचस्पी के मसले पर बात करने लगी। व्रोन्स्की ने बहुत कम ही उसे ऐसे उत्तेजित देखा था।

"मैं इसे बेहद कमीनी और घटिया बात मानती हूं और मदाम कार्तासोवा को ऐसा करने का कोई हक़ नहीं था। मदाम कारेनिना..." उसने कहना शुरू किया।

"लेकिन हुआ क्या है? मुझे कुछ मालूम नहीं।"

"क्या तुमने कुछ नहीं सुना?"

"तुम समझती ही हो कि मैं सबसे बाद में यह सुन पाऊंगा।"

"उस कार्तासोवा से बुरा व्यक्ति भी कोई हो सकता है?"

"लेकिन उसने किया क्या है?"

"मेरे पति ने मुझे बताया है... उसने कारेनिना का अपमान किया है। उसका पति बग़लवाले बाक्स में बैठी कारेनिना से बात

करने लगा और कार्तासोवा ने उसे नाटक कर दिखाया। कहते हैं कि उसने ऊंची आवाज़ में कोई अपमानजनक बात कही और वहां से चली गयी।"

"काउंट, आपकी मां आपको बुला रही हैं," प्रिंसेस सोरोकिना ने बाक्स के दरवाज़े के पीछे से झांकते हुए कहा।

"मैं कब से तुम्हारी राह देख रही हूं," मां ने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा। "तुम नज़र ही नहीं आते।"

बेटे ने देखा कि वह अपनी ख़ुशी भरी मुस्कान को छिपा नहीं पा रही है।

"नमस्ते, maman, मैं आपके पास आ रहा था," उसने रुखाई से कहा।

"तुम faire la cour à madame Karenine?*" उसने प्रिंसेस सोरोकिना के बाहर जाने पर पूछा। "Elle fait sensation. On oublie la Patti pour elle.**"

"Maman, मैंने आपसे इस बारे में चर्चा न करने का अनुरोध किया था," व्रोन्स्की ने तेवर चढ़ाकर जवाब दिया।

"मैं वही कह रही हूं, जो सब कहते हैं।"

व्रोन्स्की ने कोई उत्तर नहीं दिया और प्रिंसेस सोरोकिना से थोड़ी बातचीत करके बाहर आ गया। दरवाज़े पर बड़े भाई से उसकी मुलाक़ात हो गयी।

"अरे, अलेक्सेई!" भाई ने कहा। "कैसी कमीनी बात है! वह औरत निरी उल्लू है... मैं अभी उसके पास जाना चाह रहा था। आओ, दोनों साथ चलें।"

व्रोन्स्की उसकी बात पर कान नहीं दे रहा था। वह तेज़ी से नीचे चला गया – वह महसूस कर रहा था कि उसे कुछ करना चाहिये, लेकिन क्या, यह नहीं जानता था। उसे इस बात का ग़ुस्सा आ रहा था कि आन्ना ने ख़ुद को और उसे भी ऐसी अटपटी स्थिति में डाल

---

* मदाम कारेनिना की ख़िदमत में क्यों नहीं हो? (फ़्रांसीसी)

** वह सनसनी पैदा करती है। उसके कारण लोग गायिका पात्ती को भी भूल जाते हैं। (फ़्रांसीसी)

दिया है, लेकिन साथ ही उसकी पीड़ा के लिये दया भी आ रही थी और इसलिये वह बहुत उत्तेजित था। वह नीचे स्टाल में पहुंचा और सीधे आन्ना के बाक्स की तरफ़ चल दिया। बाक्स के क़रीब स्त्रेमोव खड़ा हुआ आन्ना से बात कर रहा था –

"तार सप्तक के गायक अब नहीं रहे। Le moule en est brisé.*"

व्रोन्स्की ने आन्ना का अभिवादन किया और स्त्रेमोव से दुआ-सलाम करते हुए रुक गया।

"लगता है आप देर से आये और सबसे अच्छा आरिया नहीं सुन सके," आन्ना ने, जैसा कि व्रोन्स्की को प्रतीत हुआ, उपहासजनक ढंग से उसकी ओर देखकर कहा।

"मैं अच्छा पारखी नहीं हूं," व्रोन्स्की ने उसकी ओर कड़ाई से देखते हुए कहा।

"प्रिंस याश्विन की तरह," आन्ना मुस्कराते हुए बोली, "जिसका यह ख़्याल है कि पात्ती बहुत ही ऊंचा गाती है।"

"धन्यवाद," लम्बे दस्ताने से ढके अपने छोटे से हाथ में व्रोन्स्की द्वारा उठा कर दिया जानेवाला कार्यक्रम-पत्र लेते हुए आन्ना ने कहा और इसी क्षण अचानक उसका सुन्दर चेहरा सिहर उठा। वह उठकर बाक्स के पृष्ठ भाग में चली गयी।

यह देखकर कि अगले अंक में आन्ना का बाक्स ख़ाली पड़ा है, व्रोन्स्की दर्शकों की दबी-दबी हिश-हिश की आवाज़ के बीच, जो "कवातीना" की ध्वनियां उभरते ही शान्त हो गये थे, स्टाल से बाहर निकला और घर की ओर रवाना हो गया।

आन्ना होटल में पहुंच चुकी थी। व्रोन्स्की जब उसके कमरे में गया, तो वह उसी पोशाक में, जिसमें थियेटर गयी थी, अकेली थी। वह दीवार के क़रीब वाली पहली आरामकुर्सी पर बैठी हुई अपने सामने एकटक देख रही थी। उसने व्रोन्स्की पर एक नज़र डाली और उसी क्षण पहले की मुद्रा में बैठ गयी।

"आन्ना," व्रोन्स्की ने कहा।

---

* वे लुप्त हो गये। (फ़्रांसीसी)

"तुम, तुम ही हर चीज़ के लिये दोषी हो!" वह उठते हुए हताशा और क्रोधभरे स्वर में आंसू बहाती हुई चिल्ला उठी।

"मैंने तुमसे न जाने का अनुरोध किया था, तुम्हारी मिन्नत की थी। मुझे मालूम था कि वहां तुम्हें कुछ नागवार लगेगा..."

"नागवार!" वह चिल्लाई। "भयानक! जब तक मैं ज़िन्दा रहूंगी, कभी यह नहीं भूल सकूंगी। उसने कहा कि मेरे क़रीब बैठना उसका अपमान है।"

"ये एक मूर्ख औरत के शब्द हैं," व्रोन्स्की ने कहा। "लेकिन ऐसा मौक़ा क्यों दिया जाये, लोगों को उकसाया ही क्यों जाये..."

"तुम्हारी इस शान्ति से मैं घृणा करती हूं। तुम्हें मुझे इस स्थिति तक नहीं पहुंचाना चाहिये था। अगर तुम मुझे प्यार करते..."

"आन्ना! मेरे प्यार का यहां क्या सवाल पैदा होता है..."

"हां, अगर तुम मुझे वैसे ही प्यार करते होते, जैसे मैं तुम्हें करती हूं, अगर तुम भी मेरी तरह यातना सहते होते..." आन्ना ने व्रोन्स्की की ओर देखते हुए सहमे-सहमे ढंग से कहा।

व्रोन्स्की को उसपर दया और साथ ही ग़ुस्सा भी आ रहा था। उसने उसे अपने प्यार का विश्वास दिलाया, क्योंकि वह देख रहा था कि केवल इसी से अब उसे शान्ति मिल सकती है। उसने शब्दों में नहीं, मगर मन ही मन उसकी भर्त्सना अवश्य की।

प्यार के सम्बन्ध में दिये जानेवाले आश्वासन, जो व्रोन्स्की को इतने तुच्छ प्रतीत हो रहे थे कि उन्हें मुंह से निकालते हुए भी उसे शर्म आ रही थी, आन्ना इन्हीं आश्वासनों की मस्ती में डूबती और धीरे-धीरे शान्त होती जा रही थी। इस घटना के एक दिन बाद उनके बीच पूरी तरह सुलह हो गयी और वे गांव चले गये।

छठा भाग

(१)

डौली बच्चों के साथ पोक्रोव्स्कोये गांव में अपनी बहन कीटी लेविना के यहां गर्मी बिता रही थी। डौली की जागीर पर घर बिल्कुल ढह गया था और लेविन तथा कीटी ने उसे अपने साथ गर्मी बिताने के लिये राज़ी कर लिया। ओब्लोन्स्की ने पूरी तरह इस बात का समर्थन किया। उसने इस बात के लिये बहुत अफ़सोस ज़ाहिर किया कि उसकी नौकरी परिवार के साथ गांव में गर्मी बिताने में, जो उसके लिये सबसे बड़े सुख की बात होती, बाधा डालती है, और इस तरह मास्को में ही रहते हुए वह कभी-कभार एक-दो दिन के लिये गांव आ जाता। ओब्लोन्स्की परिवार के सभी बच्चों और शिक्षिका के अलावा बूढ़ी प्रिंसेस भी, जो ऐसी स्थिति में अनुभवहीन बेटी के पास होना अपना कर्त्तव्य मानती थीं, लेविन-दम्पति के यहां आई हुई थीं। इसके अलावा विदेश में कीटी की सहेली बननेवाली वारेन्का भी कीटी को दिया हुआ अपना यह वादा पूरा करने के लिये कि जब कीटी की शादी हो जायेगी, तो वह उसके पास आकर रहेगी, अब अपनी सहेली के यहां आई हुई थी। ये सभी लोग लेविन की पत्नी यानी कीटी के रिश्तेदार और मित्र थे। लेविन बेशक इन सबको चाहता था, फिर भी उसे अपनी लेविनी दुनिया और व्यवस्था के अभाव से कुछ अफ़सोस हो रहा था, जो इस, जैसा कि वह कहता था, "श्चेर्बात्स्की तत्त्व" की बाढ़ के कारण खो गयी थी। इस गर्मी में उसके रिश्तेदारों में से सिर्फ़ कोज़्निशेव ही उनके

यहां आया हुआ था। किन्तु वह भी लेविन नहीं, बल्कि कोज़्निशेव सांचे का आदमी था और इस तरह लेविनी आत्मा बिल्कुल लुप्त हो गयी थी।

एक ज़माने से ख़ाली पड़े लेविन के घर में अब इतने अधिक लोग थे कि लगभग सभी कमरे भर गये थे और बूढ़ी प्रिंसेस को खाने की मेज़ पर बैठने के समय लगभग हर दिन ही सबकी गिनती करनी पड़ती थी और तेरहवें नाती या नातिन को अलग मेज़ पर बिठाना पड़ता था। कीटी को, जो घर-गिरस्ती के मामले में बड़ी यत्नशील थी, मुर्ग़ियां, टर्की मुर्ग़े और बत्तख़ें हासिल करने में, जिनकी बड़ी मात्रा में ज़रूरत होती थी, काफ़ी झंझट का सामना करना पड़ता था।

परिवार के सभी लोग खाने की मेज़ पर बैठे हुए थे। डौली के बच्चे अपनी शिक्षिका और वारेन्का के साथ यह योजना बना रहे थे कि खुमियां बटोरने के लिये वे कहां जायें। सभी मेहमान, जो सूझ-बूझ और विद्वत्ता के लिये कोज़्निशेव का इतना अधिक आदर करते थे कि वह श्रद्धा की सीमा तक पहुंच जाता था, खुमियों से सम्बन्धित बातचीत में कोज़्निशेव के दख़ल देने पर हैरान रह गये।

"मुझे भी साथ ले चलेंगे। खुमियां बटोरने के लिये जाना मुझे बहुत पसन्द है," वारेन्का की ओर देखते हुए उसने कहा। "मुझे इसमें बड़ा मज़ा आता है।"

"हमें बड़ी ख़ुशी होगी," वारेन्का ने शर्म से लाल होते हुए जवाब दिया। कीटी ने अर्थपूर्ण दृष्टि से डौली की तरफ़ देखा। खुमियां बटोरने के लिये वारेन्का के साथ जाने के विद्वान और बुद्धिमान कोज़्निशेव के सुझाव ने कीटी के उन अनुमानों की पुष्टि कर दी, जो पिछले कुछ समय से उसकी ख़ास दिलचस्पी का कारण बने हुए थे। वह झटपट अपनी मां से बात करने लगी, ताकि उसकी अर्थपूर्ण दृष्टि पकड़ में न आ जाये। दिन के खाने के बाद कोज़्निशेव अपना कॉफ़ी का प्याला लेकर मेहमानख़ाने की खिड़की के पास जा बैठा और भाई के साथ शुरू हुई अपनी बातचीत को जारी रखते हुए उस दरवाज़े की ओर देखता जाता था, जहां से बच्चे बाहर आनेवाले थे। लेविन अपने भाई के क़रीब खिड़की के दासे पर बैठ गया।

पति की बग़ल में खड़ी हुई कीटी शायद इस बात का इन्तज़ार

कर रही थी कि ग़ैरदिलचस्प बातचीत ख़त्म हो और वह उससे कुछ कह सके।

"शादी के बाद तुम बहुत बदल गये हो, पहले से बेहतर हो गये हो," कोज़्निशेव ने, जो स्पष्टतः बातचीत में कम दिलचस्पी ले रहा था, कीटी की ओर मुस्कराते हुए कहा, "किन्तु विरोधाभासों के पक्षपोषण का जोश तुममें पहले की तरह ही बना हुआ है।"

"कात्या, तुम्हारे लिये खड़े रहना अच्छा नहीं है," पति ने उसकी ओर कुर्सी खिसकाते और अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा।

"हां, पर ख़ैर, फिर कभी बात करेंगे," कोज़्निशेव ने भागे आते बच्चों को देखकर कहा।

अपनी कसी हुई लम्बी जुर्राबें पहने, टोकरी और कोज़्निशेव का टोप लहराती, तिरछी और तेज़ दौड़ती हुई तान्या सबसे आगे-आगे सीधी उसी की तरफ़ भागी आ रही थी।

कोज़्निशेव के क़रीब बेझिझक पहुंचकर तथा अपने बाप से बेहद मिलती-जुलती सुन्दर आंखों को चमकाते हुए उसने कोज़्निशेव को उसका टोप दिया, यह ज़ाहिर किया कि ख़ुद ही उसे पहनाना चाहती है तथा सहमी और मधुर मुस्कान से अपनी इस बेतकल्लुफ़ी को कोमलता प्रदान की।

"वारेन्का राह देख रही है," तान्या ने कोज़्निशेव की मुस्कान से यह भांपकर कि वह उसके सिर पर टोप रख सकती है, सावधानी से ऐसा करते हुए कहा।

वारेन्का छींट का पीला फ़्राक पहने और सिर पर सफ़ेद रूमाल बांधे दरवाज़े के क़रीब खड़ी थी।

"आ रहा हूं, आ रहा हूं, वर्वारा अन्द्रेयेव्ना," कोज़्निशेव ने कॉफ़ी ख़त्म करते और जेबों में रूमाल तथा सिगरेट-केस डालते हुए कहा।

"कैसी प्यारी है मेरी वारेन्का! है न?" कोज़्निशेव के उठने पर कीटी ने पति से कहा। उसने यह ऐसे कहा कि कोज़्निशेव को उसके ये शब्द सुनाई दे जायें और वह स्पष्टतः यही चाहती थी। "वह कितनी सुन्दर, कितने उदात्त रूप से सुन्दर है! वारेन्का!" कीटी ने पुकारकर कहा। "आप लोग चक्की वाले जंगल में होंगे न? हम भी वहां आयेंगे।"

"कीटी, तुम अपनी स्थिति को बिल्कुल भूल जाती हो," बूढ़ी प्रिंसेस ने उसी क्षण दरवाज़े से बाहर आते हुए कहा। "तुम्हें ऐसे चिल्लाना नहीं चाहिये।"

कीटी की आवाज़ और प्रिंसेस की डांट सुनकर वारेन्का तेज़ और फुर्तीली चाल से कीटी के पास आई। उसकी फुर्तीली चाल और उत्तेजित चेहरे पर दौड़ जानेवाली लाली – यह सब कुछ ज़ाहिर करता था कि वारेन्का के अन्तर में कोई असाधारण बात हो रही है। कीटी जानती थी कि यह असाधारण बात क्या है और उसपर नज़र रखती थी। इस समय उसने वारेन्का को केवल इसलिये पुकारा था कि मन ही मन उस महत्त्वपूर्ण घटना के लिये उसे अपनी शुभ-कामना दे, जो कीटी के विचारानुसार दिन के खाने के बाद आज जंगल में घटनी चाहिये।

"वारेन्का, अगर एक बात हो जाये, तो मुझे बहुत ही ख़ुशी होगी," कीटी ने उसे चूमते हुए फुसफुसाकर कहा।

"आप हमारे साथ चल रहे हैं न?" वारेन्का ने झेंपते और यह दिखावा करते हुए कि उससे जो कुछ कहा गया है, उसने वह नहीं सुना, लेविन से पूछा।

"मैं चलूंगा तो, लेकिन खलिहान तक और वहां रुक जाऊंगा।"

"क्या करोगे वहां जाकर?" कीटी ने जानना चाहा।

"नये छकड़ों को देखना और यह जांचना है कि उनमें कितना अनाज भर सकता हूं," लेविन ने उत्तर दिया। "तुम कहां होगी?"

"बरामदे में।"

(२)

सभी नारियां बरामदे में जमा थीं। दिन के खाने के बाद उन्हें वैसे ही वहां बैठना पसन्द था और आज तो इसके लिये कुछ ख़ास कारण भी था। सभी भावी शिशु के लिये कुरते सीने और उसे लपेटने की शालें बुनने में व्यस्त थीं। आज वहां पानी मिलाये बिना मुरब्बा भी बनाया जा रहा था, जो अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना के लिये मुरब्बा बनाने का नया तरीक़ा था। कीटी ने यह तरीक़ा शुरू किया था, जो उनके घर में प्रचलित था। पहले यह काम अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना को

सौंपा गया था और उसने यह मानते हुए कि लेविनों के घर में जो कुछ किया जाता है, वह बुरा नहीं हो सकता, इस बात पर ज़ोर दिया कि दूसरे ढंग से मुरब्बा बन ही नहीं सकता और इसलिये स्ट्राबेरियों और जंगली बेरियों के मुरब्बे में पानी डाल दिया। उसका यह अपराध पकड़ लिया गया था और अब सबके सामने रस्पबेरियों का पानी के बिना मुरब्बा बनाया जा रहा था और इस तरह अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना को यह यक़ीन दिलाया जानेवाला था कि पानी के बिना ही अच्छा मुरब्बा तैयार हो जायेगा।

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना का चेहरा तमतमाया और खीझा हुआ था, उसके बाल उलझे-उलझाये थे और वह कोहनियों तक उघाड़ी बांहों से परात को अंगीठी पर चक्राकार ढंग से हिला रही थी, उदासी से बेरियों को देख रही थी तथा मन से यह कामना कर रही थी कि वे गलने से पहले ही गाढ़ी हो जायें। प्रिंसेस यह महसूस करते हुए कि बेरियों का मुरब्बा बनाने के बारे में मुख्य परामर्शदात्री होने के नाते अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना को सबसे ज़्यादा ग़ुस्सा उन्हीं पर आना चाहिये, यह दिखावा करने की कोशिश कर रही थीं कि वे किसी दूसरे काम में व्यस्त हैं और बेरियों में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं, किसी अन्य विषय की चर्चा कर रही थीं, किन्तु कनखियों से अंगीठी की ओर देख लेती थीं।

"मैं नौकरानियों को हमेशा ख़ुद ही सस्ते कपड़े के फ़्राक ख़रीद देती हूं," शुरू हुई बातचीत को जारी रखते हुए प्रिंसेस ने कहा। "क्या अब झाग उतार लेना ठीक नहीं होगा, मेरी प्यारी?" प्रिंसेस ने अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना को सम्बोधित करते हुए इतना और कह दिया। "तुम्हें ख़ुद यह काम किसी हालत में नहीं करना चाहिये और फिर गर्मी भी है," प्रिंसेस ने कीटी को रोका।

"मैं कर देती हूं," डौली ने कहा और चीनी पर आये झाग को सावधानी से उतारने लगी। ऐसा करते हुए वह कभी-कभी चमचे पर चिपक जानेवाले झाग को अलग करने के लिये उस तश्तरी पर धीरे से मारती, जो पीले-गुलाबी झाग और उसमें से निचुड़ आनेवाले लाल शरबत से रंग-बिरंगी हो चुकी थी। "कितने शौक़ से वे इसे चाटेंगे!" उसने अपने बच्चों के बारे में सोचा और उसे यह याद हो आया कि

कैसे अपने बचपन में उसे इस बात की हैरानी होती थी कि बालिग़ लोग सबसे अच्छी चीज़ यानी झाग नहीं खाते हैं।

"स्तीवा का कहना है कि नौकरानियों को पैसे दे देना कहीं ज़्यादा अच्छा है," डौली ने शुरू हुई इस दिलचस्प बातचीत को जारी रखते हुए कि नौकरों को कैसे उपहार देना चाहिये, कहा। "लेकिन..."

"पैसे कैसे दिये जा सकते हैं!" प्रिंसेस और कीटी एक स्वर में कह उठीं। "उपहार पाकर वे ख़ुश होते हैं।"

"मिसाल के तौर पर पिछले साल मैंने अपनी मात्र्योना सेम्योनोव्ना को पापलिन नहीं, बल्कि उसके जैसा ही कुछ ख़रीद दिया था," प्रिंसेस बोलीं।

"मुझे याद है, आपके जन्म-दिन पर वह वही पहने थी।"

"बड़ा ही प्यारा छापा था उसपर, सादा और सुरुचिपूर्ण। अगर उसके पास ऐसा फ़्राक न होता, तो मैंने अपने लिये बनवा लिया होता। कुछ ऐसा ही था, जैसा वारेन्का पहने है। इतना अच्छा और सस्ता।"

"लगता है कि तैयार हो गया," चमचे से तश्तरी पर शरबत गिराते हुए डौली ने कहा।

"जब गाढ़ा हो जाये, तब तैयार समझना। इसे कुछ देर और उबलने दीजिये, अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना।"

"ओह, ये मक्खियां!" अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने झल्लाकर कहा। "वही बात हो जायेगी," उसने इतना और जोड़ दिया।

"ओह, वह कितनी प्यारी है, उसे डराइयेगा नहीं!" कीटी रेलिंग पर आकर बैठनेवाली गौरैया की ओर देखते हुए, जो रस्पबेरी का एक डंठल उलटकर उसमें चोंच मारने लगी थी, अचानक कह उठी।

"तुम अंगीठी की तपिश से दूर रहो," मां ने कहा।

"A propos de* वारेन्का," कीटी ने फ़्रांसीसी में कहा, जैसा कि वे हमेशा करती थीं, ताकि अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना उनकी बात न समझ सके। "Maman, जानती हैं कि न जाने क्यों, मैं आज निर्णय की प्रतीक्षा कर रही हूं। समझती हैं, किस निर्णय की। वाह, कितना अच्छा होता!"

---

* हां, [वारेन्का] के बारे में। (फ़्रांसीसी)

“और जोड़ी मिलाने में तुम कितनी माहिर हो!” डौली ने कहा। “कितनी सावधानी और दक्षता से वह उन्हें निकट ला रही है...”

“Maman, बताइये, आपका क्या ख़्याल है?”

“क्या ख़्याल हो सकता है? उसे” (यानी कोज़्निशेव को) “हमेशा ही रूस में सबसे अच्छी लड़की मिल सकती थी। अब वह इतना जवान नहीं है, लेकिन फिर भी जानती हूं कि उससे अब भी बहुत-सी लड़कियां शादी करने को तैयार हो जातीं... वह बहुत भली लड़की है, लेकिन सेर्गेई इवानोविच कहीं अच्छी...”

“नहीं, अम्मां, आप इस बात को समझें कि उन दोनों के लिये ही क्यों किसी अन्य बेहतर साथी की कल्पना नहीं की जा सकती। सबसे पहले तो यह कि वह बहुत प्यारी है!” कीटी ने एक उंगली मोड़ते हुए कहा।

“यह तो बिल्कुल सही है कि सेर्गेई इवानोविच को वह बहुत अच्छी लगती है,” डौली ने पुष्टि की।

“दूसरे, ऊंचे समाज में उसकी इतनी मान्यता है कि उसे बीवी की दौलत और ऊंचे दर्जे की ज़रा भी ज़रूरत नहीं। उसे सिर्फ़ एक ही चीज़ की ज़रूरत है – अच्छी, प्यारी और शान्त पत्नी की।”

“हां, उसके साथ शान्ति से जीवन बिताया जा सकता है,” डौली ने पुष्टि की।

“तीसरे, कि वह उसे प्यार करे। सो भी है... मतलब यह है कि यह बहुत ही अच्छी जोड़ी रहेगी! इसी इन्तज़ार में हूं कि वे जंगल से बाहर आयेंगे और सारी बात तय हो जायेगी। मैं तो आंखों से ही फ़ौरन सब कुछ जान जाऊंगी। ओह, कितनी ख़ुशी होगी मुझे! तुम्हारी क्या राय है, डौली?”

“लेकिन तुम उत्तेजित नहीं होवो। तुम्हें बिल्कुल उत्तेजित नहीं होना चाहिये,” मां ने कहा।

“मैं उत्तेजित नहीं हूं, अम्मां। मुझे लगता है कि वह आज उससे विवाह का प्रस्ताव करेगा।”

“ओह, यह बड़ा अजीब-सा होता है, कैसे और कब पुरुष प्रस्ताव करता है... बाधा की एक दीवार-सी होती है, जो अचानक ढह जाती

है," डौली ने विचारों में खोकर मुस्कराते और ओब्लोन्स्की के साथ अपने अतीत को याद करते हुए कहा।

"अम्मां, पापा ने आपसे यह प्रस्ताव कैसे किया था?" कीटी ने अचानक पूछा।

"कोई असाधारण बात नहीं हुई थी, बिल्कुल सीधे-सादे ढंग से," प्रिंसेस ने जवाब दिया, किन्तु उस घटना को याद करके उसका चेहरा चमक उठा।

"नहीं, फिर भी कैसे? इससे पहले कि आपको बातचीत करने की इजाज़त दी गयी, आप उन्हें प्यार तो करती ही होंगी?"

कीटी को इस बात से ख़ास ख़ुशी होती थी कि अब वह मां के साथ नारी के जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर बराबरी के नाते बात कर सकती थी।

"ज़ाहिर है कि प्यार करती थी। तुम्हारे पापा गांव में हमारे यहां आया करते थे।"

"लेकिन बात कैसे तय हुई, अम्मां?"

"तुम शायद यह सोचती हो कि तुम लोगों ने कोई नयी बात ढूंढ़ निकाली है? सब कुछ वैसे ही तय हुआ – आंखों और मुस्कानों से।"

"कितना अच्छा कहा है आपने, अम्मां! आंखों और मुस्कानों से!" डौली ने पुष्टि की।

"लेकिन पापा ने क्या शब्द कहे थे?"

"कोस्त्या ने तुमसे क्या कहा था?"

"उसने खड़िया से लिख दिया था। यह तो अद्भुत था... कितनी पुरानी बात लगती है यह मुझे!" कीटी ने कहा।

और तीनों नारियां एक ही चीज़ के बारे में सोचने लगीं। कीटी ने सबसे पहले ख़ामोशी तोड़ी। उसे शादी होने के पहले का सारा जाड़ा और व्रोन्स्की के प्रति अपनी प्रेम-भावना की सभी बातें याद हो आयीं।

"एक चीज़ है... वारेन्का का पहले का प्रेम-प्रसंग," उसके विचारों का स्वाभाविक प्रवाह उसे इसी निष्कर्ष पर ले आया। "मैं सेर्गेई इवानोविच को किसी तरह इसके बारे में बताना चाहती थी, उसे इसके लिये तैयार कर देना चाहती थी। ये, सभी मर्द लोग,"

उसने इतना और कह दिया, "हमारे अतीत के प्रति बहुत ईर्षालु होते हैं।"

"सभी नहीं," डौली बोली। "तुम अपने पति के आधार पर ही ऐसा समझती हो। वह अभी तक व्रोन्स्की के बारे में याद करके व्यथित होता रहता है। क्यों, ठीक है न?"

"ठीक है," आंखों में सोच की मुस्कान लाते हुए कीटी ने जवाब दिया।

"लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आती," बेटी पर अपनी नज़र रखने की सफ़ाई पेश करते हुए प्रिंसेस ने कहा। "तुम्हारे किस अतीत से परेशानी हो सकती है उसे? इस चीज़ से कि व्रोन्स्की तुम्हारे आगे-पीछे घूमता था? ऐसा तो हर लड़की के जीवन में होता है।"

"लेकिन हम इस बात की चर्चा नहीं कर रही हैं," कीटी ने लज्जारुण होते हुए कहा।

"नहीं, मुझे कह लेने दो," मां ने अपनी बात जारी रखी, "तुम ख़ुद ही यह नहीं चाहती थीं कि मैं व्रोन्स्की से बात करूं। याद है न?"

"ओह, अम्मां!" कीटी ने चेहरे पर व्यथा का भाव लाते हुए कहा।

"आजकल तुम लोगों को क़ाबू में नहीं रखा ज़ा सकता... फिर भी तुम्हारे सम्बन्ध उचित सीमा के आगे नहीं जा सकते थे। मैंने ख़ुद उससे बातचीत कर ली होती। ख़ैर, मेरी बिटिया, तुम्हें भाव-विह्वल नहीं होना चाहिये। कृपया यह याद रखो और शान्त हो जाओ।"

"मैं बिल्कुल शान्त हूं, maman।"

"कीटी के लिये तब यह कितनी ख़ुशक़िस्मती की बात हुई कि आन्ना आ गयी," डौली ने कहा, "और उसके लिये कितनी बदक़िस्मती की। हां, बिल्कुल उलट," अपने विचार से चकित होकर वह कहती गयी। "तब आन्ना इतनी ख़ुश थी और कीटी इतनी दुखी। लेकिन कैसे सब कुछ बिल्कुल उल्टा हो गया! मैं अक्सर आन्ना के बारे में सोचती हूं।"

"सोचने को भी कौन मिली है! बड़ी दुष्ट, घृणित और हृदय-हीन नारी है," मां ने कहा, जो यह नहीं भूल सकती थी कि कीटी की व्रोन्स्की से नहीं, बल्कि लेविन से शादी हुई।

"क्या तुक है इस बात की चर्चा करने में," कीटी ने दुखी होते हुए कहा, "मैं इसके बारे में न तो सोचती हूं और न सोचना ही चाहती हूं... न सोचना ही चाहती हूं," उसने बरामदे की सीढ़ियों पर पति के पैरों की जानी-पहचानी आहट सुनते हुए दोहराया।

"किस बारे में सोचना नहीं चाहतीं?" लेविन ने बरामदे में आते हुए पूछा।

किन्तु किसी ने उसे जवाब नहीं दिया और उसने प्रश्न को दोहराया नहीं।

"मुझे अफ़सोस है कि मैंने आप लोगों के नारी-साम्राज्य में बाधा डाल दी," कुछ बुरा मानते और सब पर नज़र डालकर यह समझते हुए कि किसी ऐसी बात की चर्चा हो रही थी, जो वे उसके सामने नहीं करेंगी, लेविन ने कहा।

घड़ी भर को उसने यह अनुभव किया कि अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना की भांति उसे भी यह अच्छा नहीं लग रहा कि पानी के बिना मुरब्बा बनाया जा रहा है और आम तौर पर घर में पराया, श्चेर्बात्स्की प्रभाव हावी होता जा रहा है। फिर भी वह मुस्कराकर कीटी के पास गया।

"कहो, कैसी हो?" उसी भाव से, जिससे अब सभी उसकी ओर देखते थे, कीटी पर नज़र डालकर उसने पूछा।

"बहुत अच्छी हूं," कीटी ने मुस्कराकर जवाब दिया, "तुम अपनी बताओ।"

"आम गाड़ी से तीन गुना ज़्यादा अनाज आता है इन नये छकड़ों में। तो बच्चों को लाने चलें? मैंने घोड़े जोतने को कह दिया है।"

"तुम क्या घोड़ा-गाड़ी में कीटी को ले जाना चाहते हो?" मां ने भर्त्सना के स्वर में प्रश्न किया।

"घोड़ों को क़दम-क़दम चलाते हुए, प्रिंसेस।"

लेविन प्रिंसेस को कभी maman नहीं कहता था, जैसाकि दामाद करते हैं और प्रिंसेस को यह अच्छा नहीं लगता था। बेशक वह प्रिंसेस को बहुत प्यार करता था, उनके प्रति आदर भाव रखता था, फिर भी अपनी दिवंगता मां के लिये अपनी भावना को ठेस लगाये बिना ऐसा करने में असमर्थ था।

"हमारे साथ चलिये, maman," कीटी ने कहा।

"मैं ऐसी बेसमझी की बातों में भाग नहीं लेना चाहती।"

"तो मैं पैदल जाऊंगी। ऐसा करना मेरे लिये अच्छा है," कीटी उठी, पति के पास आयी और उसने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"अच्छा है, लेकिन सब कुछ सीमा में होना चाहिये," प्रिंसेस ने कहा।

"तो अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना, मुरब्बा तैयार हो गया?" लेविन ने अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना की ओर मुस्कराते और उसे ख़ुश करने की कोशिश करते हुए पूछा। "नये ढंग से अच्छा बना है न?"

"अच्छा ही होना चाहिये। हमारे मुताबिक़ तो अधिक उबल गया है।"

"ऐसे ही ज़्यादा अच्छा है, अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना, ख़राब नहीं होगा, वरना हमारे यहां बर्फ़ पिघल गयी है और उसे सुरक्षित रखने की कोई जगह नहीं है," कीटी ने फ़ौरन पति के दिल की बात समझते हुए और उसी भावना से बुढ़िया को सम्बोधित करते हुए कहा। "दूसरी ओर आपका डाला हुआ अचार इतना बढ़िया है कि अम्मां कहती हैं – कभी ऐसा अचार नहीं खाया," कीटी ने मुस्कराते और उसके सिर पर रूमाल ठीक करते हुए कहा।

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने झुंझलाहट से कीटी की तरफ़ देखा।

"आप मुझे तसल्ली न दें, मालकिन। मैं तो इसके साथ आपको देख लेती हूं, तो मेरा जी खिल उठता है," वह बोली और "इनके साथ" के बजाय बेअदबी से "इसके साथ" शब्दों ने कीटी का मन छू लिया।

"हमारे साथ खुमियां बटोरने चलिये, आप हमें अधिक खुमियों वाली जगह बता सकेंगी।"

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना मुस्करा दी और उसने ऐसे सिर हिलाया मानो कह रही हो – "बड़ी ख़ुशी से तुमसे नाराज़ होती, मगर ऐसा नहीं कर सकती।"

"कृपया मेरी सलाह मानिये," बूढ़ी प्रिंसेस ने कहा, "मुरब्बे के ऊपर रम में भिगोया हुआ काग़ज़ रख दीजिये। तब तो बर्फ़ के बिना भी उसे कभी फफूंद नहीं लगेगी।"

(३)

पति के साथ अकेली होने का अवसर पाकर कीटी बहुत ख़ुश थी। कारण, जब उसने बरामदे में आकर यह पूछा था कि किस बात की चर्चा हो रही है और उसे किसी ने उत्तर नहीं दिया था, तो उसके चेहरे पर दुख की ऐसी छाया आ गयी थी, जिसने बड़ी अच्छी तरह से उसकी मनोदशा को प्रतिबिम्बित कर दिया था।

जब वे दूसरों से आगे-आगे चलते और मकान को आंखों से ओझल करते हुए कठोर और धूल भरे रास्ते पर पहुंच गये, जहां रई की बालें और अनाज के दाने बिखरे थे, तो कीटी ने लेविन की बांह का और अधिक सहारा ले लिया और उसे अपने साथ सटा लिया। लेविन क्षणिक अप्रिय अनुभूति को भूल चुका था और अब, जबकि उसके गर्भवती होने का विचार एक पल को भी उसके मस्तिष्क से नहीं निकलता था, उसने एकान्त में अपनी प्रिय संगिनी की निकटता का वह नया और सुखद भाव अनुभव किया, जो काम-वासना से सर्वथा मुक्त था। कहने के लिये कोई बात नहीं थी, किन्तु वह कीटी की आवाज़ सुनना चाहता था, जो उसके गर्भवती होने के बाद उसकी दृष्टि की भांति ही बदल गयी थी। कीटी की आवाज़ और नज़र में ऐसी कोमलता और गम्भीरता थी, जैसी किसी एक प्रिय कार्य पर स्थायी रूप से ध्यान केन्द्रित करनेवाले लोगों में होती है।

"तुम थक तो नहीं जाओगी? और अधिक अच्छी तरह सहारा ले लो," लेविन ने कहा।

"नहीं, एकान्त में तुम्हारे साथ होने से मैं बेहद ख़ुश हूं और मुझे यह कहना होगा कि इन सबके साथ मुझे चाहे कितना अच्छा क्यों न लगे, हम दोनों की शामों के लिये अफ़सोस होता है।"

"वह अच्छा था और यह उससे भी ज़्यादा अच्छा है। दोनों ही चीज़ें अच्छी हैं," कीटी का हाथ दबाते हुए उसने कहा।

"जानते हो, जब तुम आये, तो हम किस बारे में बातें कर रही थीं?"

"मुरब्बे के बारे में?"

"हां, मुरब्बे के बारे में, लेकिन बाद में इस बारे में भी कि पुरुष विवाह का प्रस्ताव कैसे करते हैं।"

"अच्छा!" लेविन ने कीटी द्वारा कहे जानेवाले शब्दों के बजाय उसकी आवाज़ को अधिक ध्यान से सुनते और लगातार उस रास्ते के बारे में सोचते हुए कहा, जो अब जंगल में से गुज़र रहा था। वह उन जगहों से बच रहा था, जहां कीटी ठोकर खा सकती थी।

"और सेर्गेई इवानोविच और वारेन्का के बारे में। तुमने ध्यान दिया?.. मैं बेहद ऐसा चाहती हूं," वह कहती गयी। "तुम इस सम्बन्ध में क्या सोचते हो?" और कीटी ने ग़ौर से लेविन की तरफ़ देखा।

"कह नहीं सकता कि क्या सोचूं," लेविन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। "इस मामले में सेर्गेई मेरे लिये बहुत अजीब-सा है। मैंने तो तुम्हें बताया था न..."

"कि उसे उस लड़की से प्यार था, जो चल बसी थी..."

"यह तब की बात है, जब मैं बच्चा था और वही कुछ जानता हूं, जो सुना-सुनाया है। वह तब कैसा था, मुझे यह याद है। बहुत ही प्यारा होता था वह उस वक़्त। किन्तु तभी से मैं नारियों के प्रति उसके व्यवहार की ओर ध्यान देता रहा हूं। वह उनके साथ बड़े अच्छे ढंग से पेश आता है, कुछ उसे अच्छी भी लगती हैं, किन्तु यह अनुभव होता है कि उसके लिये वे केवल लोग हैं, नारियां नहीं।"

"किन्तु अब वारेन्का के साथ... लगता है कहीं कुछ है..."

"सम्भव है कि कुछ हो भी... किन्तु सेर्गेई को जानना-समझना ज़रूरी है... वह असाधारण, अद्‌भुत व्यक्ति है। वह केवल मानसिक जीवन बिताता है। वह बहुत ही निर्मल और उच्चात्मा वाला व्यक्ति है।"

"तो क्या इससे उसका स्तर नीचा हो जायेगा?"

"नहीं, किन्तु वह केवल आत्मिक जीवन बिताने का ऐसा अभ्यस्त हो चुका है कि वास्तविकता को स्वीकार ही नहीं कर सकता। वारेन्का तो आखिर वास्तविकता है।"

लेविन अब बेझिझक अपने विचारों को व्यक्त करने का आदी हो गया था और उनके लिये बिल्कुल सही शब्द ढूंढ़ने का प्रयत्न नहीं करता था। वह जानता था कि इस समय जैसे प्यार के क्षणों में उसकी बीवी इशारे से ही यह समझ जायेगी कि वह क्या कहना चाहता है, और वह समझ भी गयी।

"किन्तु उसमें वैसी वास्तविकता नहीं है, जैसी वह मुझमें है।

मैं जानती हूं कि मुझसे उसे कभी प्यार न हो पाता। वारेन्का तो आत्मिक ही आत्मिक है।"

"तुम ऐसा नहीं कहो, वह तुम्हें बेहद चाहता है और मुझे हमेशा इस बात से ख़ुशी होती है कि मेरे रिश्तेदार तुम्हें प्यार करते हैं..."

"हां, वह मेरे प्रति दयालु है, किन्तु..."

"किन्तु वैसी बात नहीं है, जैसी दिवंगत निकोलाई के मामले में थी... तुम दोनों एक-दूसरे को प्यार करने लगे थे," लेविन ने कीटी का वाक्य पूरा किया। "क्यों न उसकी चर्चा की जाये?" उसने बात आगे बढ़ाई। "मैं कभी-कभी अपनी भर्त्सना करता हूं – अन्त यही होगा कि हम उसे भूल जायेंगे। ओह, कैसा भयानक और कैसा अद्भुत व्यक्ति था वह... तो हम क्या बात कर रहे थे?" कुछ क्षण चुप रहकर लेविन ने पूछा।

"तुम्हारा यह ख़्याल है कि उसे किसी से प्यार नहीं हो सकता," उसके विचारों को वाणी देते हुए कीटी ने कहा।

"ऐसा तो नहीं कि उसे प्यार नहीं हो सकता," लेविन ने मुस्कराते हुए कहा। "किन्तु उसमें वह दुर्बलता नहीं, जिसकी ज़रूरत है... मुझे हमेशा उससे ईर्ष्या होती रही है और अब भी है, जब मैं इतना सौभाग्यशाली हूं, मैं फिर भी उससे ईर्ष्या करता हूं।"

"इस बात की ईर्ष्या करते हो कि उसे किसी से प्यार नहीं हो सकता?"

"मैं इस बात की ईर्ष्या करता हूं कि वह मुझसे बेहतर है," लेविन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। "वह अपने लिये नहीं जीता है। उसका सारा जीवन कर्त्तव्य को समर्पित है। इसलिये वह शान्त और सन्तुष्ट रह सकता है।"

"और तुम?" कीटी ने मज़ाक़ करते और प्यार से मुस्कराते हुए पूछा।

वह किसी प्रकार भी उस विचार-शृंखला को अभिव्यक्ति न दे पाती, जिसने उसे मुस्कराने के लिये विवश किया था। किन्तु वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि उसका पति, जो अपने भाई पर मुग्ध था और ख़ुद को उसकी तुलना में तुच्छ प्रकट कर रहा था, ईमानदारी नहीं दिखा रहा था। कीटी जानती थी कि उसकी इस निष्कपटता के

अभाव का कारण भाई के प्रति उसका प्यार और इस चेतना के लिये लज्जा-भाव है कि वह बहुत अधिक सुखी है तथा विशेषतः उसकी बेहतर बनने की वह भावना है, जो उसमें सदा विद्यमान रहती है। कीटी उसके इस लक्षण को प्यार करती थी और इसलिये मुस्करा दी।

"और तुम? तुम किसलिये सन्तुष्ट नहीं हो?" उसने उसी मुस्कान के साथ पूछा।

लेविन को अपने असन्तोष के बारे में कीटी के अविश्वास से ख़ुशी हुई और वह अनजाने ही कीटी को इस बात के लिये उकसा रहा था कि वह अपने अविश्वास के कारण बताये।

"मैं सुखी, किन्तु अपने से असन्तुष्ट हूं," लेविन ने कहा।

"अगर तुम सुखी हो, तो असन्तुष्ट कैसे हो सकते हो?"

"तुम्हें यह कैसे बताऊं?.. मैं इससे ज़्यादा और कुछ नहीं चाहता कि, मिसाल के लिये, तुम ठोकर न खा जाओ। हां, ऐसे उछलना-कूदना तो अच्छा नहीं!" उसने अपनी बात बदलते हुए कीटी को इस चीज़ के लिये डांटा कि उसने पगडंडी पर पड़ी टहनी को लांघते समय बड़ी फुर्ती दिखाई थी। "किन्तु जब मैं अपने बारे में सोचता हूं और दूसरों से, ख़ास तौर पर जब भाई से, अपनी तुलना करता हूं, तो मुझे अनुभव होता है कि मैं बुरा हूं।"

"किस चीज़ में?" कीटी ने उसी मुस्कान के साथ पूछा। "क्या तुम दूसरों के लिये कुछ नहीं करते? किसानों के लिये तुम्हारी ये ख़ुद काश्त जोतें, तुम्हारी खेतीबारी और तुम्हारी पुस्तक?"

"नहीं, मुझे विशेष रूप से अब यह अनुभव होता है कि अगर मैं ऐसा नहीं करता हूं, तो इसके लिये तुम ज़िम्मेदार हो," उसने कीटी का हाथ दबाते हुए कहा। "मैं योंही मरे मन से यह सब करता हूं। काश, मैं इस सारे काम को वैसे ही प्यार कर सकता, जैसे तुम्हें प्यार करता हूं... लेकिन पिछले कुछ समय में मैं घर के लिये दिये गये पाठ की तरह ही इसे करता हूं।"

"तो तुम मेरे पापा के बारे में क्या कहोगे?" कीटी ने पूछा। "क्या वह भी बुरा है, क्योंकि उसने सामान्य भलाई के लिये कुछ नहीं किया?"

"तुम्हारे पापा? नहीं। किन्तु इसके लिये तुम्हारे पापा जैसी

सरलता, स्पष्टता और दयालुता होनी चाहिये। क्या मुझमें वह है? मैं कुछ नहीं करता और यातना सहता हूं। यह सब तुम्हारी ही मेहरबानी है। जब तुम नहीं थीं और 'यह' नहीं था," उसने नज़र से पेट की तरफ़ संकेत करते हुए कहा, जिसे कीटी समझ गयी, "तो मैं अपनी सारी शक्ति अपने ध्येय में लगाता था, किन्तु अब ऐसा नहीं कर पाता और इसके लिये मेरी आत्मा मुझे कचोटती है। मैं घर के लिये दिये गये पाठ की तरह ही इसे पूरा करता हूं, ढोंग करता हूं..."

"तो क्या तुम सेर्गेई इवानोविच के साथ अपनी स्थिति को बदलना चाहोगे?" कीटी ने प्रश्न किया। "क्या तुम सामान्य हित में लगना और इस दिये गये पाठ को अपने भाई की तरह प्यार करना तथा इसके अलावा कुछ नहीं चाहोगे?"

"ज़ाहिर है कि नहीं," लेविन ने कहा। "बात यह है कि मैं इतना अधिक सुखी हूं कि कुछ भी तो समझ नहीं पाता। तुम्हारा ख़्याल है कि वह आज वारेन्का से विवाह का प्रस्ताव करेगा?" कुछ देर चुप रहकर उसने पूछा।

"ख़्याल है भी और नहीं भी। किन्तु मैं बेहद ऐसा चाहती हूं। ज़रा रुको," कीटी ने झुककर सड़क-किनारे से जंगली बाबूने का एक फूल तोड़ लिया। "लो गिनो इसकी पंखुड़ियां – प्रस्ताव करेगा, नहीं करेगा," उसने उसे फूल देते हुए कहा।

"करेगा, नहीं करेगा," लेविन ने छोटी-छोटी, सफ़ेद पंखुड़ियों को तोड़ते हुए कहा।

"नहीं, ऐसे नहीं!" कीटी ने, जो उत्तेजना से उसकी उंगलियों पर नज़र टिकाये थी, उसका हाथ पकड़कर उसे रोका। "तुमने दो पंखुड़ियां एकसाथ तोड़ लीं।"

"हम इस छोटी-सी पंखुड़ी को नहीं गिनेंगे," लेविन ने उसे तोड़ते हुए कहा। "लो घोड़ा-गाड़ी भी आ गयी।"

"तुम थकी तो नहीं, कीटी?" प्रिंसेस ने चिल्लाकर पूछा।

"ज़रा भी नहीं।"

"अगर घोड़े धीरे-धीरे और क़दम-क़दम चलें, तो तुम इसमें बैठ सकती हो।"

किन्तु घोड़ा-गाड़ी में बैठने में कोई तुक नहीं थी। जंगल नज़दीक ही था और सभी पैदल चल दिये।

(४)

काले बालों पर सफ़ेद रूमाल बांधे, बच्चों से घिरी, हंसती और ख़ुशदिली से उन्हीं में व्यस्त तथा स्पष्टत: उस व्यक्ति द्वारा, जो उसे पसन्द था, विवाह का प्रस्ताव करने की सम्भावना के कारण उत्तेजना अनुभव करती हुई वारेन्का बहुत प्यारी लग रही थी। कोज़्निशेव उसके साथ-साथ चल रहा था और लगातार उसे मुग्ध होकर देख रहा था। वारेन्का को देखते हुए उसे उसके मुंह से सुनी सभी प्यारी बातें और सभी वे अच्छी चीज़ें याद आ रही थीं, जो वह उसके बारे में जानता था तथा उसे अधिकाधिक इस बात की चेतना हो रही थी कि उसके सम्बन्ध में वह जो कुछ अनुभव कर रहा है, उसमें कोई ख़ास चीज़ है, जो उसने बहुत पहले, चढ़ती जवानी के दिनों में ही एक बार अनुभव की थी। उसकी निकटता के कारण ख़ुशी की बढ़ती हुई भावना उस सीमा तक पहुंच गयी कि पतली डंडी और मुड़े हुए किनारों वाली बहुत बड़ी खुमी, जो उसने ढूंढ़ी थी, वारेन्का को देते हुए उसने उसकी आंखों में झांका, वारेन्का के चेहरे पर छा जानेवाली ख़ुशी और भय की उत्तेजना की लाली देखकर ख़ुद भी सकुचा गया और कुछ कहे बिना ऐसी मुस्कान के साथ मुस्करा दिया, जो बहुत कुछ कहती थी।

"अगर ऐसी बात है," उसने अपने आपसे कहा, "मुझे अच्छी तरह सोच-विचार करना चाहिये और छोकरे की तरह क्षणिक आकर्षण की तरंग में नहीं बह जाना चाहिये।"

"अब सभी से अलग खुमियां बटोरने जाता हूं, वरना मेरी जमा की हुई खुमियों का तो पता ही नहीं चलेगा," उसने कहा और जंगल के छोर से, जहां वे सभी विरले भूर्ज वृक्षों और छोटी-छोटी रेशमी घास के बीच घूम रहे थे, वन के मध्य की ओर, जहां भूर्ज के सफ़ेद तनों के बीच एस्प के धूमिल तनों और हेज़ल की झाड़ियों की श्याम-हरित आभा की झलक मिल रही थी, अकेला ही चल दिया। कोई चालीस क़दम चलने और झुमकों जैसे गुलाबी-लाल फूलों से पूरी तरह

ढकी स्पिंडल झाड़ी के पीछे पहुंचने के बाद कोज़्निशेव रुक गया। वह जानता था कि वहां से उसे कोई नहीं देख पायेगा। उसके इर्द-गिर्द पूरी ख़ामोशी छाई थी। केवल उन भोजों के ऊपर, जिनके नीचे वह खड़ा था, मधु-मक्खियों के झुंड की भांति मक्खियां लगातार भिनभिना रही थीं और कभी-कभी बच्चों की आवाज़ें सुनाई दे जाती थीं। सहसा वन-छोर के पास ग्रीशा को पुकारती वारेन्का का मन्द्र स्वर गूंज उठा और कोज़्निशेव के चेहरे पर ख़ुशीभरी मुस्कान खिल गयी। इस मुस्कान के प्रति सजग कोज़्निशेव ने मानो अपनी मलामत करते हुए अपनी स्थिति पर सिर हिलाया और सिगार निकालकर उसे जलाने लगा। वह देर तक भोज वृक्ष के तने से रगड़कर माचिस की तीली नहीं जला पाया। सफ़ेद छाल की कोमल झिल्ली गन्धक से चिपक जाती और आग बुझ जाती। आख़िर एक तीली जल गयी और सिगार का सुगन्धित धुआं चौड़ी और डोलती चादर की तरह झाड़ी के ऊपर तथा भोज की झुकी टहनियों के नीचे आगे की ओर बढ़ चला। धुएं की पट्टी की ओर देखता कोज़्निशेव धीरे-धीरे क़दम बढ़ाता हुआ अपनी स्थिति पर विचार करने लगा।

"ऐसा क्यों न किया जाये?" वह सोच रहा था। "अगर यह क्षणिक उबाल या भावावेश होता, अगर मैं केवल यह आकर्षण अनुभव करता – आपसी आकर्षण (मैं 'आपसी' कह सकता हूं), किन्तु ऐसा भी अनुभव करता कि यह मेरे जीवन-ढंग के बिल्कुल प्रतिकूल जाता है, अगर मुझे यह अनुभव होता कि इस आकर्षण के फेर में पड़कर मैं अपने ध्येय और कर्त्तव्य को भूल जाऊंगा... किन्तु ऐसा तो कुछ नहीं। हां, एक बात मैं इसके विरुद्ध कह सकता हूं। वह यह कि मारीया की मृत्यु हो जाने पर मैंने अपने आपसे कहा था कि मैं उसकी स्मृति के प्रति निष्ठावान रहूंगा। अपनी भावना के विरुद्ध मैं केवल यही एक बात कह सकता हूं... यह महत्त्वपूर्ण है," कोज़्निशेव ने अपने से कहा, किन्तु साथ ही यह भी अनुभव किया कि स्वयं उसके लिये इस चीज़ का कोई महत्त्व नहीं हो सकता था और केवल दूसरे लोगों की दृष्टि में उसकी काव्यमयी भूमिका का रंग ही बिगड़ सकता था। "इस बात को छोड़कर बहुत ढूंढ़ने पर भी मैं इस भावना के विरुद्ध कहने को कुछ भी नहीं ढूंढ़ सकूंगा। अगर मुझे केवल सूझ-बूझ के आधार

पर चुनाव करना होता तो मैं इससे बेहतर और कुछ भी न पा सकता।"

अपनी जान-पहचान की जितनी भी नारियों और लड़कियों को उसने याद किया, उनमें से एक भी ऐसी प्रतीत नहीं हुई, जिसमें इस सीमा तक उन सभी गुणों का समावेश हुआ हो, जो वह शान्त मन से विचार-विमर्श करते हुए अपनी पत्नी में देखना चाहता था। वारेन्का में जवानी का सारा आकर्षण और ताज़गी थी, किन्तु वह बच्ची नहीं थी और अगर वह उसे प्यार करती थी, तो पूरी चेतना से और वैसे ही, जैसे किसी नारी को करना चाहिये। यह तो थी पहली बात। दूसरे – वह ऊंचे समाज से न केवल दूर थी, बल्कि स्पष्टतः उससे घृणा करती थी, किन्तु साथ ही ऊंचे समाज से अच्छी तरह परिचित थी और उसमें ऊंचे समाज के वे सभी तौर-तरीक़े भी थे, जिनके बिना कोज़्निशेव अपनी जीवन-संगिनी की कल्पना ही नहीं कर सकता था। तीसरे, वह धार्मिक झुकाव रखती थी, मगर बालक की तरह सूझ-बूझ के बिना धार्मिक और दयालु नहीं थी, जैसे, उदाहरण के लिये कीटी थी, किन्तु उसका जीवन धार्मिक आस्थाओं पर आधारित था। छोटी-छोटी बातों तक में कोज़्निशेव को उसमें वह सब कुछ दिखाई दिया, जो वह अपनी पत्नी में पाना चाहता था – वह ग़रीब और एकाकी थी। इसलिये वह अपने साथ ढेर सारे रिश्तेदार और उनके प्रभाव को पति के घर में नहीं लायेगी, जैसा कि वह कीटी के मामले में देख रहा था। सभी चीज़ों के लिये वह पति की ही आभारी होगी, और अपने भावी पारिवारिक जीवन के लिये उसने सदा इसकी भी कामना की थी। अपने में इन सभी गुणों को एकत्रित कर लेनेवाली यह लड़की उसे प्यार करती थी। वह विनम्र था, किन्तु यह बात उससे छिपी नहीं थी। वह ख़ुद भी उसे प्यार करता था। एक ही बात विरुद्ध जाती थी, और वह थी उसकी आयु। किन्तु वह लम्बी आयु की नस्ल वाले लोगों में से था। उसके सिर का एक भी बाल सफ़ेद नहीं था, कोई भी उसे चालीस का नहीं कहता था और उसे वारेन्का के ये शब्द भी याद थे कि केवल रूस में ही लोग पचास साल की उम्र में अपने को बूढ़ा मानते हैं, कि फ़्रांस में पचास साल का आदमी ख़ुद को

dans la force de l'âge* और चालीस साल का un jeune homme** मानता है। किन्तु सालों की गिनती का क्या महत्त्व हो सकता है, जब वह आत्मा से अपने को वैसा ही जवान महसूस करता है, जैसा वह बीस साल पहले था? क्या वह जवानी की ही भावना नहीं थी, जो उसने अभी अनुभव की थी, जब दूसरी ओर से पुनः वन के छोर पर निकलने पर सूरज की टेढ़ी किरणों के प्रखर प्रकाश में उसने पीला फ़्राक पहने, टोकरी लिये बूढ़े भोज के तने के पास से सुडौल वारेन्का को चुस्त चाल से जाते देखा और जब वारेन्का द्वारा अंकित छाप टेढ़ी किरणों में चमचमाते और उसे आश्चर्यचकित करनेवाले रई के पीले खेत और खेत के बहुत परे पीले धब्बों से सुशोभित और क्षितिज की नीलिमा में लुप्त होते पुराने जंगल के दृश्य से घुल-मिल गयी? उसका हृदय ख़ुशी से धड़क उठा। वह कोमल भावना से विह्वल हो गया। उसने अनुभव किया कि निर्णय कर लिया। खुमी उठाने के लिये अभी-अभी बैठनेवाली वारेन्का लचीलेपन से उठी और उसने घूमकर देखा। कोज़्निशेव सिगार फेंककर दृढ़ क़दमों से उसकी ओर बढ़ चला।

(५)

"वर्वारा अन्द्रेयेव्ना, जब मैं अभी बहुत जवान था, तो मैंने अपने लिये ऐसी नारी के आदर्श की कल्पना की थी, जिसे मैं प्यार करने और अपनी कहने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूंगा। मैं लम्बा जीवन बिता चुका हूं और अब आपके रूप में पहली बार मुझे वह नारी मिली है, जिसे मैं खोज रहा था। मैं आपको चाहता हूं और आपसे अपनी पत्नी बनने का प्रस्ताव करता हूं।"

कोज़्निशेव उस समय मन ही मन यह कह रहा था, जब वह वारेन्का से दस क़दम की दूरी पर था। घुटनों के बल बैठी और हाथों की ओट करके ग्रीशा से खुमी को बचाती हुई वारेन्का नन्ही माशा को पुकार रही थी।

---

* पूरे निखार की उम्र में। (फ़्रांसीसी)
** जवान आदमी। (फ़्रांसीसी)

"इधर आओ, इधर! छोटी-छोटी हैं! बहुत सारी!" अपने प्यारे, मन्द्र स्वर में वह कह रही थी।

कोज़्निशेव को नज़दीक आते देखकर वह न तो खड़ी हुई और न ही उसने अपनी स्थिति बदली। किन्तु सभी चीज़ों से यह पता चल रहा था कि वह उसे निकट आते अनुभव कर रही है और ख़ुश हो रही है।

"कहिये, मिलीं कुछ खुमियां?" उसने सफ़ेद रूमाल के नीचे से अपना सुन्दर और धीरे-धीरे मुस्कराता चेहरा उसकी ओर फेरते हुए पूछा।

"एक भी नहीं," कोज़्निशेव ने जवाब दिया। "और आपको?"

वारेन्का उसे घेर लेनेवाले बच्चों में व्यस्त होने के कारण उत्तर नहीं दे सकी।

"टहनी के पास वह एक खुमी और है," वारेन्का ने नन्ही माशा को एक छोटी-सी खुमी और दिखाई, जिसकी लचीली गुलाबी टोपी उस सूखे तिनके ने बीच में से चीर डाली थी, जिसके नीचे से वह उभर आयी थी। वारेन्का तब उठी, जब माशा ने दो सफ़ेद टुकड़ों में तोड़कर खुमी को उठा लिया। "इससे मुझे मेरा बचपन याद आ रहा है," उसने बच्चों से परे हटते और कोज़्निशेव के साथ जाते हुए इतना और कहा।

ये दोनों कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे। वारेन्का देख रही थी कि कोज़्निशेव कुछ कहना चाहता है। वह अनुमान लगा रही थी कि किस बारे में और इसलिये ख़ुशी तथा भय से उसका दिल डूबा जा रहा है। वे इतनी दूर जा चुके थे कि कोई भी उनकी बात नहीं सुन सकता था, किन्तु कोज़्निशेव ने अभी भी कुछ कहना शुरू नहीं किया था। वारेन्का के लिये चुप रहना ही ज़्यादा अच्छा था। कारण कि खुमियों की चर्चा के पश्चात की तुलना में कुछ देर ख़ामोश रहने के बाद वह कहना ज़्यादा आसान था, जो वे कहना चाहते थे। किन्तु वारेन्का ने अपनी इच्छा के विरुद्ध, मानो संयोग से ही यह कह दिया –

"तो आपको कुछ नहीं मिला? वैसे जंगल के बीच में तो हमेशा ही कम खुमियां होती हैं।"

कोज़्निशेव ने गहरी सांस ली और कुछ भी जवाब नहीं दिया। उसे उस बात का अफ़सोस हुआ कि वारेन्का ने खुमियों की चर्चा शुरू

कर दी। वह उसे पहले शब्दों की ओर, जो उसने अपने बचपन के बारे में कहे थे, लौटाना चाहता था। किन्तु मानो अपनी इच्छा के विरुद्ध उसने कुछ देर चुप रहने के बाद उसके अन्तिम शब्दों पर टिप्पणी की।

"मैंने केवल यह सुना है कि सफ़ेद खुमियां मुख्यतः जंगल के किनारे पर ही होती हैं, यद्यपि मैं उन्हें पहचान नहीं सकता।"

कुछ मिनट और ग़ुजर गये, वे बच्चों से कुछ और दूर चले गये और अब एकदम अकेले थे। वारेन्का का दिल इतने ज़ोर से धड़क रहा था कि उसे उसकी धक-धक सुनाई दे रही थी, यह अनुभव हो रहा था कि उसके चेहरे पर लाली आ रही है, उसका चेहरा पीला पड़ रहा है और वह फिर से लाल हो रहा है।

श्रीमती श्ताल के पास अपनी स्थिति के बाद कोज़्निशेव जैसे व्यक्ति की पत्नी बनना उसे अपना अहोभाग्य प्रतीत हो रहा था। इसके अलावा उसे इस बात का भी लगभग विश्वास था कि वह उसे प्यार करती है। अब यह बात तय होनेवाली थी। वह जो कहेगा, उससे उसका मन डर रहा था और जो नहीं कहेगा, उससे भी।

कोज़्निशेव भी यह महसूस कर रहा था कि उसे या तो अभी अपनी बात कह देनी चाहिये या फिर वह कभी ऐसी नहीं कर पायेगा। वारेन्का की दृष्टि, उसके गालों की लाली और झुकी नजरें – हर चीज़ यह ज़ाहिर कर रही थी कि वह यातनापूर्ण प्रतीक्षा का शिकार हो रही है। कोज़्निशेव यह देख रहा था और उसे उसपर तरस आ रहा था। वह यह भी महसूस कर रहा था कि अब कुछ न कहने का मतलब उसका अपमान करना होगा। उसने अपने निर्णय के पक्ष में सारे तर्कों को जल्दी-जल्दी मन में दोहराया। उसने उन शब्दों को भी दोहराया, जिन्हें कहकर वह विवाह का प्रस्ताव करना चाहता था। किन्तु इन शब्दों के बजाय उसने न जाने किस अप्रत्याशित विचार से अचानक उससे यह पूछा –

"सफ़ेद और भोज के नीचे उगनेवाली खुमियों में क्या अन्तर होता है?"

वारेन्का ने जब इस प्रश्न का उत्तर दिया, तो उसके होंठ उत्तेजना से कांप रहे थे:

"टोपी में तो लगभग कोई अन्तर नहीं होता, हां, जड़ में होता है।"

जैसे ही ये शब्द कहे गये, वैसे ही वे दोनों समझ गये कि मामला ख़त्म हो गया, कि जो कुछ कहा जानेवाला था, वह अब नहीं कहा जायेगा और इसके पहले चरम सीमा पर पहुंचनेवाली उनकी उत्तेजना धीरे-धीरे कम होने लगी।

"भोज के नीचे पैदा होनेवाली खुमी की जड़ मुझे काले बालों वाले आदमी की दो दिन की बढ़ी दाढ़ी की याद दिलाती है," कोज़्निशेव ने शान्ति से कहा।

"हां, यह सही है," वारेन्का ने मुस्कराते हुए जवाब दिया और उनकी सैर की दिशा अपने आप ही बदलने लगी। वे बच्चों के क़रीब होने लगे। वारेन्का को दुख भी हो रहा था और वह लज्जा भी अनुभव कर रही थी, किन्तु साथ ही उसे राहत भी महसूस हो रही थी।

घर लौटने और अपने सभी तर्कों पर फिर से विचार करने के बाद कोज़्निशेव इस नतीजे पर पहुंचा कि उसके सोचने का ढंग सही नहीं था। वह मारीया की याद के प्रति ग़द्दारी नहीं कर सकता था।

"आराम से, बच्चो, आराम से!" लेविन ग़ुस्से से बच्चों पर चिल्लाया, जब ख़ुशी से चीख़ती-चिल्लाती उनकी भीड़ उनकी तरफ़ लपकी, और पत्नी की रक्षा के लिये वह उसके सामने खड़ा हो गया।

बच्चों के बाद कोज़्निशेव और वारेन्का भी जंगल से बाहर आये। कीटी को वारेन्का से कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह उन दोनों के शान्त और कुछ हद तक झेंपते चेहरों से समझ गयी कि उसकी योजनायें सिरे नहीं चढ़ीं।

"तो क्या हुआ?" जब वे घर लौट रहे थे लेविन ने कीटी से पूछा।

"बात बनी नहीं," कीटी ने मुस्कराकर कहा। उसके बोलने और मुस्कराने का ढंग उसके पिता की याद दिलाता था, जिससे लेविन को अकसर ख़ुशी होती थी।

"कैसे बात नहीं बनी?"

"ऐसे," उसने पति का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे मुंह तक ले जाते और मुंदे होंठों से छूते हुए कहा। "जैसे बिशप का हाथ चूमा जाता है।"

"किसकी बात नहीं बनी?" लेविन ने हंसते हुए पूछा।
"दोनों की। और बात बननी ऐसे चाहिये..."
"किसान जा रहे हैं।"
"नहीं, उन्होंने इधर नहीं देखा।"

(६)

बालकों के चाय पीने के समय वयस्क छज्जे में बैठे थे और ऐसे बातचीत कर रहे थे मानो कुछ भी न हुआ हो, यद्यपि सभी, और ख़ास तौर पर कोज़्निशेव तथा वारेन्का अच्छी तरह से जानते थे कि बेशक नकारात्मक, फिर भी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात हुई है। वे दोनों समान रूप से वैसा ही अनुभव कर रहे थे, जैसा कि कोई छात्र परीक्षा में असफल होने और उसी कक्षा में रह जाने या सदा के लिये शिक्षा-संस्था से निकाल दिये जाने पर अनुभव करता है। यहां उपस्थित सभी लोग भी यह महसूस करते हुए कि कोई ख़ास बात हो गयी है, बड़ी ज़िन्दादिली से दूसरी बातों की चर्चा कर रहे थे। इस शाम को लेविन और कीटी विशेष रूप से सुखी और प्रेम के रंग में रंगे हुए थे। वे दोनों अपने प्रेम से सुखी हैं, इससे उन दो व्यक्तियों की ओर एक कटु-सा संकेत होता था, जो उन्हीं की तरह सुखी होना चाहते थे और नहीं हो सके तथा इस कारण उन्हें कुछ लज्जा की अनुभूति हो रही थी।

"मेरी बात को पत्थर की लकीर समझो कि अलेक्सान्द्र नहीं आयेंगे," बूढ़ी प्रिंसेस ने कहा।

आज शाम की गाड़ी से ओब्लोन्स्की के आने की उम्मीद थी और बूढ़े प्रिंस ने लिखा था कि शायद वे भी आयेंगे।

"और मैं इसका कारण भी जानती हूं," प्रिंसेस कहती गयीं। "उनका कहना है कि नवदम्पति को शुरू में कुछ समय तक अकेले ही रहने देना चाहिये।"

"पापा ने तो हमें अकेले छोड़ ही रखा है। उनसे मिले हुए कितना अर्सा हो गया है," कीटी ने कहा। "फिर हम नवदम्पति भी कहां हैं? कभी के पुराने हो चुके हैं।"

"लेकिन अगर वे नहीं आयेंगे, तो मैं तुमसे विदा लूंगी, बच्चो," प्रिंसेस ने उदासी से आह भरकर कहा।

"यह भी कोई बात है, अम्मां!" दोनों बेटियों ने एकसाथ कड़ा विरोध किया।

"तुम उनके बारे में भी तो सोचो! अब तो..."

बूढ़ी प्रिंसेस का स्वर बिल्कुल अप्रत्याशित ही कांप उठा। बेटियां ख़ामोश रहीं और उन्होंने एक-दूसरी की ओर देखा। "Maman, हमेशा कोई न कोई उदासी की बात ढूंढ़ निकालती हैं," उनकी नज़रें कह रही थीं। वे नहीं जानती थीं कि प्रिंसेस के लिये बेटी के घर में रहना चाहे कितना ही सुखद क्यों न था, वे यहां अपनी उपस्थिति चाहे कितनी ही आवश्यक क्यों न समझती थीं, फिर भी जब से उन्होंने अपनी आख़िरी और प्यारी बेटी की शादी कर दी थी और उनका पारिवारिक नीड़ ख़ाली हो गया था, तब से प्रिंसेस को ख़ुद अपने लिये और अपने पति के लिये यातनापूर्ण उदासी की अनुभूति होती थी।

"क्या बात है, अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना?" कीटी ने रहस्यपूर्ण मुद्रा और चेहरे पर अर्थपूर्ण भाव लिये सामने आ खड़ी हुई अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना से अचानक पूछा।

"रात के खाने के बारे में जानना चाहती हूं।"

"बहुत ठीक," डौली ने कहा, "तुम जाकर रात के खाने के बारे में हिदायतें दो और मैं ग्रीशा के पास जाकर उसे पाठ याद करवाती हूं। आज उसने कुछ भी नहीं किया।"

"आज मेरी बारी है! मैं जाता हूं, डौली," लेविन ने फ़ौरन उठते हुए कहा।

ग्रीशा को, जो हाई स्कूल में दाख़िल हो चुका था, गर्मियों की छुट्टियों में अपने पाठ दोहराने थे। डौली मास्को में ही बेटे के साथ लातीनी भाषा का पाठ दोहरवाती थी और लेविन-दम्पति के यहां आने पर उसने गणित और लातीनी भाषा के सबसे मुश्किल पाठ दिन में कम से कम एक बार बेटे के साथ दुहराने का नियम-सा बना लिया था। लेविन ने उसकी जगह लेनी चाही। किन्तु मां ने एक बार लेविन को पाठ दुहरवाते हुए सुनकर यह महसूस किया कि वह इस काम को वैसे नहीं करता है, जैसे अध्यापक मास्को में करता था, और घबराते

तथा लेविन के दिल को ठेस न लगाने की कोशिश करते हुए दृढ़तापूर्वक उससे यह कह दिया कि अध्यापक की भांति पुस्तक के अनुसार पाठ दोहरवाना चाहिये और खुद उसके लिये ही इसे फिर से करना बेहतर होगा। लेविन को ओब्लोन्स्की पर इस बात के लिये गुस्सा आया कि उसकी लापरवाही के कारण मां को, जो पढ़ाई के बारे में कुछ नहीं जानती, बेटे की निगरानी करनी पड़ती है और अध्यापकों पर इसलिये खीझ आई कि वे बच्चों को इतनी बुरी तरह से पढ़ाते हैं। किन्तु अपनी साली को उसने उसी तरह से पाठ दोहरवाने का वचन दिया, जैसे वह चाहती थी। ग्रीशा को वह अपने ढंग से नहीं, बल्कि पुस्तक के अनुसार पाठ याद करवाता रहा और इसलिये उसमें उसका मन नहीं लगता था और वह पाठ का समय भूल जाता था। आज भी ऐसा ही हुआ था।

"नहीं, मैं जाता हूं, डौली, तुम बैठी रहो," लेविन ने कहा। "हम सब कुछ ढंग से और पुस्तक के अनुसार करेंगे। हां, जब स्तीवा आ जायेगा और हम शिकार को चले जायेंगे, तब मुझे उसका पाठ छोड़ना होगा।"

और लेविन ग्रीशा के कमरे की तरफ़ चल दिया।

वारेन्का ने भी कीटी से कुछ ऐसा ही कहा। लेविन-दम्पति के सुखी, सुव्यवस्थित घर में भी वारेन्का उपयोगी होने का रास्ता निकाल लेती थी।

"मैं रात के खाने की व्यवस्था करवा लूंगी और आप बैठिये," इतना कहकर वह अगाफ़्या मिखाइलोव्ना की ओर चल दी।

"हां, हां, शायद चूज़े नहीं मिले। तब अपने ही चूज़े..." कीटी ने कहा।

"हम अगाफ़्या मिखाइलोव्ना के साथ मिलकर सब तय कर लेंगी।" और वारेन्का उसको साथ लेकर ग़ायब हो गयी।

"कितनी प्यारी लड़की है!" प्रिंसेस ने कहा।

"प्यारी नहीं, maman, बल्कि ऐसी कमाल की लड़की है, जैसी नहीं होतीं।

"तो आप लोग आज स्तेपान अर्काद्येविच के आने की उम्मीद कर रहे हैं?" कोज़्निशेव ने स्पष्टतः वारेन्का की चर्चा न जारी रखने

की इच्छा से कहा। "एक-दूसरे से इतने भिन्न दो हमज़ुल्फ़ों का मिलना बहुत मुश्किल है," उसने सूक्ष्म मुस्कान के साथ कहा। "एक बेहद सक्रिय है और केवल लोगों में ही ऐसे ख़ुशी महसूस करता है, जैसे मछली पानी में, और दूसरा, हमारा कोस्त्या, जो बड़ा सजीव, फुर्तीला और हर चीज़ के लिये बड़ा संवेदनशील है, किन्तु जैसे ही समाज में जाता है, वैसे ही या तो बेजान हो जाता है या फिर खुश्की पर मछली की तरह छटपटाता है।"

"हां, वह मामले की गम्भीरता की ओर ध्यान नहीं देता," कोज़्निशेव को सम्बोधित करते हुए प्रिंसेस ने कहा। "मैं उससे यह कहने के लिये आपसे अनुरोध करनेवाली थी कि इसके लिये (उसने कीटी की ओर संकेत किया) यहां रुकना सम्भव नहीं और अवश्य ही मास्को आ जाना चाहिये। वह कहता है कि डाक्टर को यहां बुलवा भेजेगा..."

"Maman, वह सब कुछ करेगा, वह हर चीज़ के लिये तैयार है," कीटी ने कहा। उसे इस कारण मां की बात अखरी थी कि वह इस चीज़ के लिये कोज़्निशेव से अपील कर रही थी।

इनकी बातचीत के दौरान पार्क के रास्ते पर घोड़ों की हिनहिनाहट और कंकड़ियों पर पहियों की खड़खड़ाहट सुनाई दी।

डौली अपने पति की ओर जाने को उठ भी नहीं पाई थी कि उस कमरे की खिड़की में से, जहां ग्रीशा पढ़ रहा था, लेविन कूदकर बाहर चला गया और उसने ग्रीशा को भी बाहर खींच लिया।

"यह स्तीवा है!" लेविन छज्जे के नीचे से चिल्लाया। "हमने पाठ समाप्त कर लिया है, डौली! तुम कोई चिन्ता नहीं करो!" उसने इतना और कहा तथा छोकरे की तरह बग्घी की ओर दौड़ने लगा।

"Is, ea, id, ejus, ejus, ejus," पथ पर उछलता-कूदता और लातीनी भाषा के सर्वनामों के रूप चिल्लाता हुआ ग्रीशा उधर दौड़ने लगा।

"कोई और भी है। शायद पापा हैं!" लेविन रास्ते के क़रीब रुककर चिल्लाया। "कीटी, खड़े ज़ीने से नीचे नहीं उतरो, घूमकर आ जाओ।"

किन्तु जो बग्घी में बैठा था, उसे कीटी के पापा समझ कर उसने

भूल की थी। बग्घी के नज़दीक आने पर उसने देखा कि ओब्लोन्स्की की बग़ल में बूढ़े प्रिंस नहीं, बल्कि एक मोटा-तगड़ा और सुन्दर नौजवान बैठा है, जिसने पीछे की ओर फ़ीतों के लम्बे सिरों वाली स्काटलैंडी ढंग की टोपी पहन रखी थी। यह श्चेर्बात्स्की परिवार का दूर के रिश्ते का भाई, पीटर्सबर्ग और मास्को का शानदार नौजवान, "बहुत बढ़िया आदमी और शिकार का दीवाना," जैसा कि ओब्लोन्स्की ने उसका परिचय कराते हुए कहा, वसीली वेस्लोव्स्की था।

बूढ़े प्रिंस के बजाय आने के कारण वेस्लोव्स्की ने जो निराशा पैदा की थी, उससे तनिक भी झेंप न महसूस करते हुए उसने बड़ी ख़ुशमिज़ाजी से लेविन के साथ हाथ मिलाया, उसे अपने पुराने परिचय का स्मरण करवाया और ग्रीशा को उस कुत्ते के ऊपर से ले जाते हुए, जो ओब्लोन्स्की अपने साथ लाया था, बग्घी में बिठा लिया।

लेविन बग्घी में नहीं बैठा, बल्कि उसके पीछे-पीछे पैदल चलता रहा। उसे इस बात से कुछ खीझ महसूस हो रही थी कि बूढ़े प्रिंस नहीं आये, जिन्हें वह जितना अधिक जान पा रहा था, उतना ही अधिक प्यार करता था और उनकी जगह एकदम पराया तथा फ़ालतू व्यक्ति यानी वसीली वेस्लोव्स्की नमूदार हो गया था। उसे वह उस समय और भी अधिक पराया और फ़ालतू प्रतीत हुआ जब बरामदे के पास आने पर, जहां छोटे-बड़ों की ख़ुशी से उमड़ती भीड़ जमा थी, उसने वसीली वेस्लोव्स्की को ख़ास प्यार और सलीक़े से कीटी का हाथ चूमते देखा।

"आपकी बीवी और मैं cousins* हैं और हमारी पुरानी जान-पहचान है," वेस्लोव्स्की ने फिर तपाक से लेविन के साथ हाथ मिलाते हुए कहा।

"तो कहो, शिकार मिलेगा न?" ओब्लोन्स्की ने, जो सभी को कुछ न कुछ अच्छे शब्द कहने की उतावली में था, लेविन से पूछा। "मेरे और इस नौजवान के बहुत ही भयानक इरादे हैं। और maman, वे तब से मास्को नहीं गये। ओह तान्या, मैं तुम्हारे लिये कुछ लाया हूं! जाकर बग्घी के पीछे से ले लो," वह सभी से बातें करता जा

---

* रिश्तेदार। (फ़्रांसीसी)

रहा था। "तुममें कितनी ताज़गी आ गयी है, मेरी प्यारी डौली," उसने पत्नी का हाथ [illegible] से चूमते, उसे अपने एक हाथ में थामे और दूसरे से उसे थपथपाते हुए कहा।

लेविन, जो क्षण भर पहले इतना ख़ुश था, अब सभी की ओर उदासी से देख रहा था और उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

"इन होंठों से कल इसने किसे चूमा होगा?" पत्नी के प्रति ओब्लोन्स्की के स्नेह-प्रदर्शन को देखते हुए लेविन मन ही मन सोच रहा था। उसने डौली की ओर देखा और वह भी उसे अच्छी नहीं लगी।

"उसके प्यार का वह विश्वास नहीं करती। किसलिये फिर इतनी ख़ुश हो रही है? देखकर नफ़रत होती है!" लेविन सोच रहा था।

उसने प्रिंसेस की ओर देखा, जो क्षण भर पहले तक उसे इतनी अच्छी लग रही थीं। उसे उनका वह अन्दाज़ अखरा, जिससे उन्होंने फ़ीतों की टोपी पहने इस वेस्लोव्स्की का ऐसे स्वागत किया मानो प्रिंसेस अपने घर में हों।

यहां तक कि कोज़्निशेव भी, जो बरामदे में आ गया था, उस ढोंगपूर्ण मैत्रीभाव के कारण, जिससे उसने ओब्लोन्स्की का स्वागत किया, उसे अच्छा नहीं लगा। उसे मालूम था कि वह ओब्लोन्स्की को न तो पसन्द करता है और न उसके दिल में उसके लिये आदर ही है।

वारेन्का उसे इसलिये अखरी कि इस महानुभव के साथ उसने sainte nitouche* परिचय किया, जबकि दिल में केवल यही सोच रही थी कि कैसे किसी की बीवी बने।

सबसे अधिक तो उसे कीटी बुरी लग रही थी, जो जशन के उस रंग में बह गयी थी, जैसा कि यह महानुभाव गांव में अपने आगमन को अपने तथा दूसरों के लिये समझता था। कीटी की वह मुस्कान उसे ख़ास तौर पर खटक रही थी, जो वह उसकी मुस्कान के जवाब में होंठों पर ला रही थी।

ऊंचे-ऊंचे बात करते हुए सभी घर में चले गये। उन सबके बैठते ही लेविन मुड़ा और बाहर चला गया।

---

* देवी की तरह। (फ़्रांसीसी)

कीटी ने देखा कि पति का मूड कुछ खराब है। उसने उसके साथ एकान्त में क्षण भर बात करनी चाही, लेकिन वह यह कहकर जल्दी से भाग गया कि उसे दफ़्तर में ज़रूरी काम है। एक अर्से से उसे खेती-बारी से सम्बन्धित काम-काज इतने महत्त्वपूर्ण नहीं प्रतीत हुए थे, जितने आज। "इन सबके लिये तो हर दिन जशन है," वह सोच रहा था, "लेकिन यहां मेरे काम-काज जशनी नहीं हैं। वे इन्तज़ार नहीं करेंगे और उनके बिना जीना सम्भव नहीं।"

(७)

लेविन तभी घर लौटा, जब रात के खाने के लिये उसे बुलवा भेजा गया। कीटी और अगाफ़्या मिखाइलोव्ना ज़ीने पर खड़ी हुई यह सलाह-मशविरा कर रही थीं कि खाने की मेज़ पर कौन-सी शराबें रखी जायें।

"आप लोग यह क्या fuss* कर रही हैं? वही रख दीजिये, जो हर दिन रखती हैं।"

"नहीं, स्तीवा वह नहीं पीता... कोस्त्या, ज़रा रुको, तुम्हें क्या हुआ है?" कीटी ने उसके पीछे-पीछे तेज़ी से क़दम बढ़ाते हुए पूछा। किन्तु उसने कीटी के पास आ जाने की प्रतीक्षा नहीं की और निर्दयता से बड़े-बड़े डग भरता हुआ भोजन कक्ष में पहुंच गया और वहां वेस्लोव्स्की तथा स्तेपान ओब्लोन्स्की के बीच चल रही आम, दिलचस्प बातचीत में शामिल हो गया।

"तो कल शिकार पर चल रहे हैं न?" ओब्लोन्स्की ने कहा।

"हां, हां, चलिये," वेस्लोव्स्की ने दूसरी कुर्सी पर टेढ़ा बैठते और अपनी चर्बी-चढ़ी टांग को अपने नीचे दबाते हुए कहा।

"मैं बहुत खुशी से चलूंगा। आप इस साल शिकार के लिये जा भी चुके हैं क्या?" लेविन ने वेस्लोव्स्की की टांग को ग़ौर से देखते और बनावटी खुशी ज़ाहिर करते हुए, जिससे कीटी बहुत अच्छी तरह परिचित थी और जो उसे बिल्कुल नहीं जंचती थी, वेस्लोव्स्की से पूछा।

---

* झंझट। (फ़्रांसीसी)

"कह नहीं सकता कि बड़े कुनाल मिलेंगे या नहीं, मगर छोटे कुनालों की कोई कमी नहीं। हां, चलना चाहिये तड़के ही। आप थक तो नहीं जायेंगे? स्तीवा, तुम थक तो नहीं गये?"

"मैं और थक जाऊं? आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ। आओ रतजगा करें! घूमने चलें!"

"सचमुच, बड़ा अच्छा ख़्याल है, रतजगा हो जाये! बहुत ख़ूब!" वेस्लोव्स्की ने समर्थन किया।

"ओह, इस बात का तो हमें यक़ीन है कि तुम जागते रह सकते हो और दूसरों की नींद भी हराम कर सकते हो," डौली ने उस हल्के-से व्यंग्य के साथ पति से कहा, जिससे वह अब लगभग हमेशा स्तीवा को सम्बोधित करती थी। "मेरे ख़्याल में तो अब सोने का वक़्त हो गया... मैं जा रही हूं, मैं खाना नहीं खाऊंगी।"

"नहीं, तुम अभी कुछ देर और बैठो, प्यारी डौली," ओब्लोन्स्की ने खाने की बड़ी मेज़ पर बीवी के पास जाते हुए कहा। "मुझे अभी बहुत सी बातें बतानी हैं!"

"वास्तव में कुछ भी नहीं।"

"जानती हो, वेस्लोव्स्की आन्ना के यहां हो आया है। वह फिर से उनके पास जानेवाला है। यहां से वे सिर्फ़ सत्तर वेर्स्ता* दूर हैं। मैं भी ज़रूर वहां जाऊंगा। वेस्लोव्स्की, इधर आओ तो!"

वेस्लोव्स्की महिलाओं की तरफ़ जाकर कीटी के क़रीब बैठ गया।

"ओह, कृपया बताइये, आप आन्ना के यहां हो आये हैं न? वह कैसी है?" डौली ने उससे पूछा।

लेविन मेज़ के दूसरे सिरे पर ही बैठा रह गया और प्रिंसेस तथा वारेन्का से लगातार बातें करते हुए यह देखता रहा कि ओब्लोन्स्की, डौली, कीटी और वेस्लोव्स्की के बीच बड़ी सजीव और रहस्यपूर्ण बातचीत हो रही है। इतना ही नहीं कि रहस्यपूर्ण बातचीत हो रही थी, उसे अपनी पत्नी के चेहरे पर उस समय गम्भीर भाव की भी

---

* वेर्स्ता – पुराने रूस में प्रचलित एक किलोमीटर से कुछ अधिक लंबा फ़ासला। – सं०

झलक दिखाई देती, जब वह बड़े उत्साह से कुछ बता रहे वेस्लोव्स्की के सुन्दर चेहरे को टकटकी बांधकर देखती होती।

"उनके यहां सब कुछ बहुत अच्छा है," व्रोन्स्की और आन्ना के बारे में वेस्लोव्स्की बता रहा था। "ज़ाहिर है कि मेरे लिये कोई निष्कर्ष निकालना ठीक नहीं होगा, लेकिन उनके घर में आदमी अपने को परिवार में अनुभव करता है।"

"वे क्या करने का इरादा रखते हैं?"

"लगता है कि जाड़े भर के लिये मास्को जाना चाहते हैं।"

"हम अगर एकसाथ ही वहां जायें, तो कितना अच्छा रहे! तुम कब जाओगे?" ओब्लोन्स्की ने वेस्लोव्स्की से पूछा।

"मैं जुलाई का महीना उनके यहां बिताऊंगा।"

"तुम जाओगी?" ओब्लोन्स्की ने बीवी से पूछा।

"मैं तो बहुत अरसे से चाहती थी और ज़रूर जाऊंगी," डौली ने कहा। "मुझे उस पर तरस आता है और मैं उसे अच्छी तरह समझती हूं। वह बहुत ही अच्छी औरत है। मैं तुम्हारे जाने के बाद अकेली जाऊंगी और इस तरह किसी के लिये परेशानी का कारण नहीं बनूंगी। तुम्हारे बिना तो और भी अधिक अच्छा रहेगा।"

"अच्छी बात है," ओब्लोन्स्की ने कहा। "और कीटी तुम?"

"मैं? मैं किसलिये जाऊंगी?" कीटी ने एकदम सुर्ख होते हुए जवाब दिया और पति की ओर देखा।

"आप आन्ना अर्कादियेव्ना से परिचित हैं?" वेस्लोव्स्की ने पूछा। "बहुत ही सुन्दर नारी है वह।"

"हां," कीटी ने और भी अधिक लाल होते हुए जवाब दिया, उठी और पति के पास चली गयी।

"तो तुम कल शिकार के लिये जा रहे हो?" कीटी ने पति से जानना चाहा।

इन कुछ क्षणों में, विशेषतः उस लाली के कारण, जो वेस्लोव्स्की से बात करते समय कीटी के गालों पर छा गयी थी, लेविन का ईर्ष्या भाव बहुत दूर जा चुका था। इसलिये अब उसके शब्दों को सुनते हुए वह उनका अपने ही ढंग से अर्थ लगा रहा था। बाद में यह याद करने पर बेशक उसे बहुत अजीब-सा लगा, मगर इस समय तो यह साफ़

लगा कि अगर वह उसके शिकार पर जाने के बारे में पूछ रही है, तो केवल यह जानने के लिये कि वह वेस्लोव्स्की को, जिसे उसकी समझ के मुताबिक़ कीटी प्यार भी करने लगी थी, अपनी संगत का सुख प्रदान करेगा या नहीं।

"हां, मैं जाऊंगा," अस्वाभाविक और स्वयं अपने लिये ही घृणित आवाज़ में उसने जवाब दिया।

"नहीं, कल घर पर रहना ही ज़्यादा अच्छा होगा, क्योंकि डौली अपने पति से बिल्कुल नहीं मिल पाई। परसों चले जाना," कीटी ने कहा।

कीटी के इन शब्दों का लेविन ने अब यह अर्थ लगाया – "मुझे 'इस' से अलग नहीं करो। तुम जाओगे, मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, लेकिन मुझे इस बांके जवान की संगत का सुख पाने दो।"

"ओह, अगर तुम चाहती हो, तो हम कल नहीं जायेंगे," लेविन ने विशेष मधुरता के साथ कहा।

इसी बीच वेस्लोव्स्की उस व्यथा की कल्पना तक न करते हुए, जो उसकी उपस्थिति के कारण लेविन को हो रही थी, कीटी के साथ-साथ ही मेज़ से उठा और मुस्कराते तथा प्यार की नज़र से कीटी को देखते हुए उसके पीछे-पीछे चल दिया।

लेविन ने इस नज़र को देखा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया और क्षण भर को उसके लिये सांस लेना मुश्किल हो गया। "मेरी बीवी को ऐसे देखने की वह कैसे जुर्रत कर रहा है!" लेविन ग़ुस्से से उबल रहा था।

"तो कल चलेंगे न? कृपया चलिये," वेस्लोव्स्की ने कुर्सी पर बैठते और आदत के मुताबिक़ फिर से एक टांग अपने नीचे दबाते हुए कहा।

लेविन का ईर्ष्या भाव और आगे चला गया। वह अब अपने को धोखा दिया हुआ ऐसा पति महसूस कर रहा था, जिसकी केवल इसलिये ज़रूरत थी कि वह बीवी और उसके प्रेमी को जीवन की सुख-सुविधायें और ख़ुशियां मुहैया करे... किन्तु इस सबके बावजूद उसने बड़ी नम्रता और आतिथ्यपूर्ण ढंग से वेस्लोव्स्की से उसके शिकारों, बन्दूक़ और घुटनों तक के जूतों के बारे में पूछताछ की और अगले दिन शिकार को जाने के लिये राज़ी हो गया।

लेविन की ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि बूढ़ी प्रिंसेस ने ख़ुद उठक और कीटी को सोने जाने की सलाह देते हुए उसकी यातना का अन्त कर दिया। किन्तु लेविन को फिर एक नयी व्यथा सहन करनी पड़ी गृह-स्वामिनी को शुभ रात्रि कहते समय वेस्लोव्स्की ने फिर से उसक हाथ चूमना चाहा, किन्तु कीटी ने लज्जारुण होते और भोली-भार्ल रुखाई दिखाते हुए, जिसके लिये उसे बाद में मां की डांट सहनी पड़ी अपना हाथ पीछे खींचकर कहा –

"हमारे यहां ऐसा नहीं किया जाता।"

लेविन की नज़र में वह इस चीज़ के लिये दोषी थी कि उसने इस तरह के सम्बन्धों की अनुमति दी और इससे भी ज़्यादा उसका यह दोष था कि इतने अटपटे ढंग से उनके बारे में अपनी नापसन्दगी ज़ाहिर की।

"क्या तुक है अभी से जाकर सोने में!" ओब्लोन्स्की ने भोजन के समय शराब के कई गिलास चढ़ाने और अपने सबसे मधुर तथा काव्यमय मूड में आने के बाद कहा। "कीटी, उधर देखो तो," उसने लाइम वृक्षों के पीछे से ऊपर उठते चांद की ओर इशारा करते हुए कहा, "कितना सुन्दर है वह! वेस्लोव्स्की, यह है प्रेम-गीत गाने का समय! जानती हो, उसकी ख़ासी सुरीली आवाज़ है। हम दोनों रास्ते में गाते आये हैं। वह अपने साथ बहुत बढ़िया प्रेम-गीत लाया है, दो नये हैं। वारेन्का के साथ गाये जायें, तो मज़ा रहे।"

सबके अपने-अपने कमरों में चले जाने के बाद ओब्लोन्स्की और वेस्लोव्स्की बहुत देर तक तरु-पथ पर टहलते रहे और नये प्रेम-गीत का अभ्यास करते हुए उनके स्वर सुनाई देते रहे।

इन आवाज़ों को सुनता और नाक-भौंह सिकोड़े हुए लेविन अपनी पत्नी के शयन-कक्ष में आरामकुर्सी पर बैठा था और पत्नी के बार-बार यह पूछने पर कि उसे क्या हुआ है, हठपूर्वक मौन साधे था। लेकिन आख़िर जब उसने सहमी-सी मुस्कान के साथ पूछा – "तुम्हें वेस्लोव्स्की को लेकर क्या कोई बात अच्छी नहीं लगी?" तो लेविन फट पड़ा और उसने सब कुछ कह डाला। उसने जो कुछ कहा, उससे उसके दिल को और भी ठेस लगी और इसलिये उसे और भी खीझ आई।

लेविन चढ़ी हुई भौंहों के नीचे भयानक रूप से चमकती आंखों के साथ कीटी के सामने खड़ा था और अपने मज़बूत हाथों को ऐसे छाती पर दबाये था मानो अपने को वश में रखने के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा हो। उसके चेहरे का भाव कठोर, यहां तक कि क्रूर भी होता, यदि उसमें वेदना की झलक न होती, जिसने कीटी के मर्म को छू लिया। उसके जबड़े कांप रहे थे और आवाज़ टूट रही थी।

"तुम इतना तो समझ लो कि मैं ईर्ष्या नहीं करता हूं – यह बड़ा घिनौना शब्द है। मैं ईर्ष्या और यह विश्वास नहीं कर सकता कि... मैं जो अनुभव कर रहा हूं, उसे व्यक्त नहीं कर सकता, मगर यह भयानक चीज़ है... मैं ईर्ष्या नहीं करता, किन्तु मेरे दिल को ठेस लगी है, मैं इसलिये अपने को अपमानित अनुभव करता हूं कि कोई तुम्हारे बारे में कुछ ऐसा सोचने की जुर्रत कर सकता है, तुम्हें ऐसी नज़रों से देखने का साहस कर सकता है।"

"कैसी नज़रों से?" कीटी ने पूछा और उसने उस शाम के सभी शब्दों और संकेतों की सभी तफ़सीलों को अधिकतम ईमानदारी से याद करने का प्रयास किया।

अपने दिल की गहराई में कीटी को महसूस हो रहा था कि जिस समय वेस्लोव्स्की उसके पीछे-पीछे मेज़ के दूसरे सिरे पर आया था, उस क्षण कोई ऐसी बात हुई थी। किन्तु वह इसे लेविन से कहने और इस तरह उसकी व्यथा बढ़ाने की तो बात दूर, ख़ुद अपने लिये स्वीकार करने का साहस नहीं कर पा रही थी।

"जैसी मैं इस समय हूं, भला इस रूप में मुझमें क्या आकर्षण हो सकता है?"

"ओह!" लेविन सिर थामकर चिल्ला उठा। "काश, तुमने यह न कहा होता!.. मतलब यह हुआ कि अगर तुम आकर्षक होतीं..."

"नहीं, कोस्त्या, नहीं, ज़रा रुको, मेरी बात सुनो!" सहानुभूतिपूर्ण व्यथा-भाव से पति की ओर देखते हुए कीटी ने कहा। "तुम भला सोच ही क्या सकते हो, जब मेरे लिये पुरुषों का अस्तित्व ही नहीं, बिल्कुल नहीं!.. क्या तुम यह चाहते हो कि मैं किसी से मिलूं ही नहीं?"

शुरू में उसे उसकी ईर्ष्या से ठेस लगी, इस बात का ग़ुस्सा आया

कि बहुत मामूली, बहुत ही भोले-भाले मन बहलाव की भी उसे मनाही थी। किन्तु अब उसने पति को उस यातना से बचाने के लिये, जो वह अनुभव कर रहा था, न केवल ऐसी छोटी-मोटी चीज़ें, बल्कि सभी कुछ क़ुर्बान कर दिया होता।

"तुम इस बात को समझो कि मेरी स्थिति कितनी भयानक और हास्यास्पद है," लेविन हताशापूर्ण फुसफुसाहट से कहता गया, "कि वह मेरे घर में है, देखा जाये, तो उसने कोई ख़ास बुरी बात भी नहीं की, सिवा इसके कि ऐसी बेतकल्लुफ़ी दिखाई है और टांग को अपने नीचे दबाकर बैठा है। वह इसे सबसे अच्छा अन्दाज़ मानता है और इसलिये मुझे उसके साथ बहुत अच्छा सलूक करना चाहिये।"

"लेकिन कोस्त्या, तुम बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा रहे हो," कीटी ने दिल की गहराई में प्यार की उस शक्ति से ख़ुश होते हुए, जो अब उसकी ईर्ष्या में व्यक्त हुई, कहा।

"सबसे भयानक बात तो यह है कि तुम – जैसी तुम हमेशा मेरे लिये रही हो और जो अब इतनी पावन-पवित्र हो – कि जब हम इतने सुखी हैं, ऐसे विशेष रूप से सुखी हैं और अचानक कोई कूड़ा-करकट ... कूड़ा-करकट नहीं, मैं उसे क्यों कोस रहा-हूं? मुझे उससे कोई मतलब नहीं, लेकिन तुम्हारी और मेरी ख़ुशी पर ऐसा आघात क्यों हो?.."

"सुनो, मैं जानती हूं कि ऐसा क्यों हुआ है," कीटी ने कहना शुरू किया।

"क्यों? ऐसा क्यों हुआ है?"

"मैंने देखा था कि जब हम खाने के वक़्त बातचीत कर रहे थे, तुम हम लोगों की तरफ़ कैसे देख रहे थे।"

"हां, हां!" लेविन ने सहमते हुए कहा।

कीटी ने उसे बताया कि उनके बीच क्या बातचीत हुई थी। यह बताते हुए वह उत्तेजना से बेदम हो रही थी। लेविन चुप रहा, फिर उसने कीटी के पीले पड़े और सहमे हुए चेहरे को ग़ौर से देखा और अचानक सिर थाम लिया।

"कात्या, मैंने तुम्हें परेशान कर डाला! मुझे क्षमा कर दो, मेरी प्यारी! यह पागलपन है! हर तरह से मैं ही दोषी हूं। ऐसी बेवक़ूफ़ी के लिये इतनी यातना सहने में भी कोई तुक थी?"

"नहीं, मुझे तुम पर तरस आ रहा है।"

"मुझ पर? मुझ पर? मैं, मैं तो बिल्कुल पागल हूं! लेकिन मैंने तुम्हें क्यों व्यथा दी? यह सोचकर दिल कांप उठता है कि कोई अजनबी आदमी हमारे सुख को ऐसे नष्ट कर सकता है..."

"हां, यही तो सबसे ज़्यादा दुख की बात है..."

"नहीं, तब तो मैं जान-बूझकर गर्मी भर के लिये उसे यहां पर रोक लूंगा और उसपर अनुग्रहों की बौछार करूंगा," लेविन ने कीटी का हाथ चूमते हुए कहा। "तुम देख लोगी। कल... हां, सच... कल तो हम शिकार पर जा रहे हैं।"

(८)

अगले दिन महिलायें अभी जागी भी नहीं थीं कि शिकार की बग्घियां और गाड़ियां दरवाज़े के सामने आ खड़ी हुईं। लास्का सुबह से ही यह समझकर कि आज शिकार के लिये जा रहे हैं, जी भर कर भौंकने और उछलने-कूदने के बाद गाड़ी में कोचवान के पास बैठी थी और उत्तेजना तथा देर करने के कारण नाख़ुश होती हुई उस दरवाज़े की ओर देख रही थी, जहां से शिकारी अभी तक नहीं निकले थे। वेस्लोव्स्की सबसे पहले बाहर निकला। वह मोटी-मोटी जांघों के आधे हिस्से तक पहुंचते नये ऊंचे जूते और हरी क़मीज़ पहने था, गंधवाले चमड़े की कारतूसों की नयी पेटी कसे था, फ़ीतोंवाली स्काटलैंडी टोपी रखे था और गलपट्टी के बिना अंग्रेज़ी बन्दूक़ हाथ में लिये था। लास्का लपककर उसके पास गयी, उछल-कूदकर उसका अभिवादन किया और अपने ढंग से यह पूछा कि बाक़ी लोग जल्दी बाहर आ जायेंगे या नहीं। किन्तु उससे कोई उत्तर न पाकर प्रतीक्षा करने की पहलेवाली जगह पर लौट आई और सिर टेढ़ा कर तथा एक कान ऊपर उठाकर निश्चल बैठ गयी। आख़िर फटाक से दरवाज़ा खुला और ओब्लोन्स्की का पीली चित्तियोंवाला क्राक नाम का कुत्ता हवा में चक्कर खाता और उछलता-कूदता हुआ बाहर आया। मुंह में सिगार दबाये और हाथ में बन्दूक़ लिये ख़ुद ओब्लोन्स्की भी निकल आया। "नीचे, नीचे क्राक!" वह अपने कुत्ते को प्यार से डांटते हुए शान्त कर रहा था, जो उसकी

छाती और पेट पर अपने पंजे टिका रहा था और उन्हें शिकार डालने के थैले में फंसा रहा था। ओब्लोन्स्की जुर्राबों की जगह खुरदरा-सा कपड़ा टांगों पर लपेटे था, घटिया-से जूते, फटा हुआ पतलून और कम लम्बा कोट पहने था। सिर पर कोई फटी-पुरानी-सी टोपी थी, किन्तु नये ढंग की बन्दूक़ बड़ी प्यारी थी और शिकार का थैला तथा कारतूसों की पेटी, ये दोनों चीज़ें इस्तेमाल में लायी जाने के बावजूद बहुत ही उच्च कोटि की थीं।

फटे हाल होना, मगर शिकार के श्रेष्ठतम साज़-सामान रखना, वेस्लोव्स्की शिकारी के इस वास्तविक बांकपन को पहले नहीं समझता था। ओब्लोन्स्की को देखते हुए वह यह समझ गया। फटे-पुराने कपड़े पहने ओब्लोन्स्की की सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट और ख़ुशी से छलछलाती रईसी आकृति ख़ूब चमक रही थी। वेस्लोव्स्की ने तय किया कि अगले शिकार के वक़्त वह भी ऐसा ही ठाठ बनायेगा।

"और हमारा मेज़बान?" उसने पूछा।

"उसकी जवान बीवी है," ओब्लोन्स्की मुस्कराकर जवाब दिया।

"सो भी ऐसी सुन्दर।"

"वह कपड़े पहन चुका था। शायद फिर से उसके पास भाग गया है।"

ओब्लोन्स्की ने ठीक अनुमान लगाया था। लेविन यह जानने के लिये फिर से बीवी के पास भाग गया था कि पिछले दिन की बेवक़ूफ़ी के लिये उसने उसे माफ़ कर दिया या नहीं। वह उससे यह भी अनुरोध करना चाहता था कि ईसा के नाम पर सावधानी बरते। सबसे बड़ी चीज़ तो यह थी कि बच्चों से दूर रहे – वे किसी क्षण भी धकिया सकते हैं। इसके अलावा वह उससे इस बात की एक बार फिर पुष्टि चाहता था कि उसके दो दिन के लिये जाने के कारण वह नाराज़ नहीं है तथा उससे यह प्रार्थना भी करना चाहता था कि कल सुबह घुड़सवार के हाथ उसे अवश्य ही रुक़्क़ा भिजवा दे, बेशक दो शब्द ही लिख भेजे, ताकि उसे पता चल जाये कि वह सही-सलामत है।

जैसा कि हमेशा होता था, कीटी के लिये पति से दो दिन अलग रहना आसान नहीं था, किन्तु उसकी उत्साहपूर्ण आकृति, जो शिकारियों के ऊंचे जूतों और सफ़ेद क़मीज़ में बहुत बड़ी लग रही थी, तथा शिकारी

की उसकी समझ में न आनेवाली उत्तेजना देखकर वह उसकी ख़ुशी के लिये अपनी उदासी भूल गयी और उसे ख़ुशी-ख़ुशी विदा किया।

"क्षमा चाहता हूं, महानुभावो!" उसने भागकर ओसारे में आते हुए कहा। "नाश्ता रख दिया गया? कत्थई घोड़े को दायें क्यों जोत दिया? ख़ैर, कोई फ़र्क़ नहीं। लास्का, चलो, बैठो अपनी जगह पर!"

"बछियों के झुण्ड में छोड़ दो," उसने पशु-पालक से कहा, जो बरामदे के पास खड़ा हुआ बधिया बैलों के बारे में लेविन का मत जानने के लिये प्रतीक्षा कर रहा था। "माफ़ी चाहता हूं, वह एक और पाजी चला आ रहा है।"

लेविन गाड़ी में से कूदकर, जहां बैठ चुका था, उस बढ़ई से बात करने चल दिया, जो हाथ में फ़ीता लिये ओसारे की ओर आ रहा था।

"कल दफ़्तर में नहीं आये और अब मुझे देर करवा रहे हो। तो बताओ?"

"अगर इजाजत दें, तो एक और मोड़ बना दूं। सिर्फ़ तीन पैड़ियां बढ़ानी होंगी। मामला बिल्कुल फ़िट हो जायेगा। ऐसा करना अच्छा रहेगा।"

"तुम्हें मेरी बात पर कान देना चाहिये था," लेविन ने ग़ुस्से से जवाब दिया। "मैंने कहा था तुमसे कि पहले बल्ली लगा लो और फिर पैड़ियां बनाना। अब उसे ठीक नहीं किया जा सकता। जैसा मैंने कहा है, वैसा ही करो, नया ज़ीना बनाओ!"

क़िस्सा यह था कि घर के नये बन रहे भाग में बढ़ई ने ज़ीना ख़राब कर दिया था। उसने ऊंचाई को ध्यान में रखे बिना उसे अलग से बनाया था और वह ज़ीना जब वहां टिकाया गया, तो सभी पैड़ियां ढालू हो गयीं। बढ़ई अब तीन पैड़ियां बढ़ाकर इसी ज़ीने को बनाये रखना चाहता था।

"बहुत बढ़िया काम हो जायेगा।"

"तीन पैड़ियां बढ़ाने पर वह ज़ीना कहां पहुंच जायेगा?"

"आप भी ग़ज़ब कर रहे हैं," बढ़ई ने तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहा। "ठीक जगह पर पहुंच जायेगा। हम उसे नीचे से चालू करेंगे," उसने विश्वास दिलाने का संकेत करते हुए कहा,

"ऊपर को बढ़ता जायेगा, बढ़ता जायेगा और ठीक जगह पर पहुंच जायेगा।"

"तीन पैड़ियों से ज़ीने की लम्बाई भी तो बढ़ जायेगी ... तो वह कहां पहुंचेगा?"

"नीचे से जैसे जायेगा, वैसे ही ऊपर पहुंच जायेगा," बढ़ई ने हठ करते हुए विश्वासपूर्वक कहा।

"छत के क़रीब और दीवार में पहुंच जायेगा।"

"नहीं, हुज़ूर। वह नीचे से जायेगा। बढ़ता जायेगा, बढ़ता जायेगा और ठीक जगह पर पहुंच जायेगा।"

लेविन ने बन्दूक़ साफ़ करने की सिलाई लेकर धूल पर ज़ीने का ख़ाका बनाना शुरू किया।

"देखते हो?"

"जैसा आपका हुक्म," बढ़ई ने कहा। उसकी आंखों में अचानक चमक आ गयी थी और वह अन्ततः बात को समझ गया था। "लगता है कि नया ज़ीना बनाना ही पड़ेगा।"

"तो ऐसे ही करो, जैसे कहा गया है," लेविन ने गाड़ी में बैठते हुए चिल्लाकर कहा। "चलाओ गाड़ी! फ़िलीप, कुत्तों को थामे रखना।"

परिवार और खेतीबारी की सभी झंझटें पीछे छोड़ने पर लेविन को अब जीवन और प्रत्याशा की ऐसी तीव्र सुखानुभूति हो रही थी कि उसका बोलने-बतियाने का मन नहीं हो रहा था। इसके अलावा वह संकेन्द्रित उत्तेजना का वह भाव भी अनुभव कर रहा था, जिसकी हर शिकारी को अपने कार्य-स्थल के निकट पहुंचने पर अनुभूति होती है। उसके दिमाग़ में अब सिर्फ़ यही सवाल चक्कर काट रहे थे कि कोल्पेन्स्की दलदल में उन्हें शिकार मिलेंगे या नहीं, क्राक के मुक़ाबले में लास्का कैसी रहेगी और ख़ुद उसे आज शिकार करने में कितनी कामयाबी हासिल होगी। इस नये आदमी के सामने कहीं उसकी नाक न कट जाये? कहीं ओब्लोन्स्की बाज़ी न मार ले? – यह विचार भी उसके मस्तिष्क में आ रहा था।

ओब्लोन्स्की को भी कुछ ऐसी ही भावनाओं की अनुभूति हो रही थी और वह भी मौन साधे था। सिर्फ़ वेस्लोव्स्की ही ख़ुशी से चहकता

हुआ लगातार बोलता जा रहा था। इस समय उसकी बातें सुनते हुए लेविन को यह याद करके शर्म आ रही थी कि पिछले दिन वह उस मामले में कितना अधिक ग़लत था। वेस्लोव्स्की वास्तव में ही बहुत भला, सीधा-सादा, उदार और ख़ुशमिज़ाज आदमी था। अगर शादी से पहले लेविन की उससे भेंट हो गयी होती, तो वे दोस्त बन गये होते। ज़िन्दगी के प्रति उसका जशन का सा रवैया और कुछ शान दिखाने का ढंग लेविन को थोड़ा खटकता था। अपने लम्बे नाख़ूनों, टोपी और दूसरी चीज़ों के कारण वह मानो अपने को निश्चित रूप से ही महत्त्वपूर्ण मानता था। लेकिन उसकी ख़ुशमिज़ाजी और सलीकेदारी के लिये यह माफ़ किया जा सकता था। लेविन को वह अच्छी शिक्षा-दीक्षा, फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ी भाषाओं की अच्छी जानकारी और इसलिये भी पसन्द था कि वह उसी के सामाजिक वातावरण का व्यक्ति था।

वेस्लोव्स्की को बायीं ओर जुता हुआ दोन स्तेपी का घोड़ा बेहद अच्छा लगा। वह उसकी प्रशंसा करते नहीं थकता था।

"ऐसे घोड़े पर सवार होकर स्तेपी में सरपट दौड़ाया जाये, तो कैसा मज़ा रहे! ठीक है न?" वह कहता रहा।

स्तेपी के घोड़े पर घुड़सवारी के मामले में वेस्लोव्स्की कुछ ऐसी ऊट-पटांग और काव्यमयी कल्पना कर रहा था, जो वास्तविकता से बिल्कुल दूर थी। किन्तु उसकी सुन्दरता, प्यारी मुस्कान और गति-विधि के सजीलेपन के साथ मिलकर उसका भोलापन विशेषतः बहुत प्यारा लग रहा था। इस कारण कि लेविन को उसका स्वभाव पसन्द था या इसलिये कि वह अपने पिछले दिन के बुरे रवैये का प्रायश्चित करने के लिये उसमें सब कुछ अच्छा ही अच्छा देखना चाहता था, उसे उसके साथ बहुत भला लग रहा था।

तीन वेर्स्ता का रास्ता तय हो जाने पर वेस्लोव्स्की को अचानक सिगारों और अपने बटुए का ध्यान आया। उसके लिये यह कहना मुमकिन नहीं था कि वह उन्हें खो बैठा है या मेज़ पर छोड़ आया है। बटुए में तीन सौ सत्तर रूबल थे और इसलिये उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी।

"लेविन, एक बात कहूं, मैं गाड़ी में जुते हुए दोन के इस घोड़े पर जल्दी से घर हो आता हूं। यह बहुत बढ़िया रहेगा। क्या ख़्याल

है?" उसने गाड़ी से उतरने के लिये लगभग तैयार होते हुए कहा।

"नहीं, इसकी क्या ज़रूरत है?" लेविन ने यह हिसाब लगाते हुए कि वेस्लोव्स्की का कम से कम छः पूड* वज़न होगा, कहा। "मैं कोचवान को भेज देता हूं।"

कोचवान उस घोड़े पर सवार होकर चला गया और बाक़ी दो घोड़ों की लगामें लेविन ने ख़ुद सम्भाल लीं।

(९)

"तो हमारा रास्ता क्या होगा? अच्छी तरह से बताओ," ओब्लोन्स्की ने कहा।

"हमारी योजना यह है – अब हम ग्वोज़्देवो तक जा रहे हैं। ग्वोज़्देवो में इस ओर के दलदल में बड़े कुनाल हैं और उस ओर छोटे कुनालोंवाली बहुत बढ़िया दलदलें हैं और वहां बड़े कुनाल भी होते हैं। इस वक़्त गर्मी है और शाम होते तक हम वहां (बीस वेर्स्ता) पहुंच जायेंगे और शाम को भी कुछ शिकार कर लेंगे। रात वहां बितायेंगे और कल सुबह बड़ी दलदलों में शिकार को जायेंगे।"

"रास्ते में क्या कुछ भी नहीं है?"

"है तो, लेकिन हमें देर हो जायेगी और फिर गर्मी भी है। छोटी-छोटी दो अच्छी जगहें हैं, लेकिन वहां शायद ही कुछ मिले।"

लेविन ख़ुद भी इन जगहों पर जाना चाहता था, किन्तु वे घर के नज़दीक थीं, वह हमेशा वहां जा सकता था। फिर ये जगहें बहुत छोटी भी थीं – तीन आदमी वहां शिकार नहीं कर सकते थे। इसीलिये वह यह कहकर टाल-मटोल कर रहा था कि वहां शायद ही कुछ मिलेगा। छोटी दलदल के सामने पहुंचने पर लेविन ने आगे निकल जाना चाहा, किन्तु ओब्लोन्स्की की शिकारी नज़र ने सड़क पर से ही दिखाई देनेवाली दलदली घास को फ़ौरन ताड़ लिया।

"यहां नहीं चलेंगे क्या?" दलदल की ओर इशारा करते हुए ओब्लोन्स्की ने पूछा।

---

* लगभग एक सौ किलोग्राम। – सं०

"लेविन, कृपया चलिये! कितनी बढ़िया जगह है!" वेस्लोव्स्की मिन्नत करने लगा और लेविन इन्कार नहीं कर सका।

गाड़ी रुकी ही थी कि कुत्ते एक दूसरे को मात देते हुए तेज़ी से दलदल की ओर भाग चले।

"क्राक! लास्का!"

कुत्ते लौट आये।

"तीनों को वहां तंगी महसूस होगी, मैं यहां रहूंगा," लेविन ने यह आशा करते हुए कहा कि वे छोटे कुनालों के सिवा, जो कुत्तों के कारण उड़ गये थे और दलदल के ऊपर चक्कर काटते हुए चीख़-चिल्ला रहे थे, वहां और कुछ नहीं पायेंगे।

"नहीं! चलिये लेविन, सब साथ चलते हैं!" वेस्लोव्स्की ने ज़ोर दिया।

"नहीं, वहां जगह कम है। लास्का, वापस आओ! आप लोगों को दूसरे कुत्ते की तो ज़रूरत नहीं होगी न?"

लेविन गाड़ी के पास रह गया और ईर्ष्या से शिकारियों को जाते देखने लगा। उन्होंने पूरी दलदल का चक्कर लगाया। जंगली मुर्ग़ी और छोटे कुनालों के सिवा, जिनमें से एक का वेस्लोव्स्की ने शिकार कर लिया, दलदल में और कुछ भी नहीं था।

"अब देख लिया न क्यों मैं इस दलदल के लिये रुकना नहीं चाहता था," लेविन ने कहा, "सिर्फ़ वक़्त ही बरबाद हुआ।"

"नहीं, फिर भी मज़ा रहा। आपने देखा था न?" वेस्लोव्स्की ने हाथों में बन्दूक़ और कुनाल लिये अटपटे ढंग से गाड़ी में चढ़ते हुए कहा। "कितना बढ़िया शिकार किया मैंने इसका! सच है न? जल्द ही हम असली जगह पर पहुंच जायेंगे या नहीं?"

अचानक घोड़े आगे को लपके, लेविन का सिर किसी की बन्दूक़ की नली से जा टकराया और गोली दग़ने की आवाज़ हुई। वास्तव में तो गोली सिर टकराने से पहले चली थी, मगर लेविन को इसके प्रतिकूल प्रतीत हुआ। बात यह थी कि एक खटका नीचे करते हुए वेस्लोव्स्की से दूसरा खटका दब गया था। गोली ज़मीन से जा टकरायी और किसी को कोई चोट नहीं आई। ओब्लोन्स्की ने सिर हिलाया और वेस्लोव्स्की की ओर देखते हुए भर्त्सना के साथ हंस दिया। किन्तु

लेविन की उसे भला-बुरा कहने की हिम्मत नहीं हुई। एक तो इसलिये कि हर प्रकार की भर्त्सना टल गये ख़तरे और उस गुमटे का परिणाम मानी जाती, जो लेविन के माथे पर उभर आया था, और दूसरे, वेस्लोव्स्की शुरू में बड़े भोलेपन से बहुत दुखी हुआ और फिर इन तीनों के लिये इस सामान्य ख़तरे पर ख़ुशमिज़ाजी से और उन्हें भी प्रभावित करता हुआ ऐसे हंसा कि लेविन ख़ुद भी हंसे बिना न रह सका।

जब वे दूसरी दलदल के पास पहुंचे, जो काफ़ी बड़ी थी और जहां बहुत समय लग सकता था, लेविन ने उनसे न जाने को कहा। किन्तु वेस्लोव्स्की ने उसे फिर से राज़ी कर लिया। दलदल चूंकि संकरी थी, इसलिये लेविन मेहमाननवाज़ मेज़बान के नाते फिर गाड़ी के पास ही रह गया।

दलदल के पास पहुंचते ही क्राक सीधा टीलों की ओर बढ़ चला। वेस्लोव्स्की कुत्ते के पीछे पहले भागा। ओब्लोन्स्की के निकट पहुंचने के पहले एक बड़ा कुनाल उड़ा। वेस्लोव्स्की का निशाना चूक गया और यह बड़ा कुनाल बिना कटे चरागाह में जा बैठा। यह कुनाल वेस्लोव्स्की के लिये छोड़ दिया गया। क्राक ने उसे फिर से ढूंढ़ लिया, रुक गया, वेस्लोव्स्की उसे गोली का निशाना बनाकर गाड़ी की ओर लौट गया।

"अब आप शिकार के लिये जाइये और मैं घोड़ों के पास रहूंगा," उसने कहा।

शिकारी की ईर्ष्या लेविन पर हावी होने लगी थी। वेस्लोव्स्की को लगामें पकड़ाकर वह दलदल की ओर चल दिया।

लास्का, जो देर से दर्द भरे अन्दाज़ में इस बेइन्साफ़ी के लिये कूं-कूं करती रही थी, टीलों वाली उस जगह की ओर भाग चली, जो लेविन की जानी-पहचानी और भरोसे की जगह थी और जहां क्राक नहीं गया था।

"तुम इसे रोकते क्यों नहीं?" ओब्लोन्स्की चिल्लाया।

"वह शिकार को डरायेगी नहीं," लेविन ने अपनी लास्का के लिये ख़ुश होते और उसके पीछे-पीछे तेज़ क़दम बढ़ाते हुए कहा।

लास्का अपने परिचित टीलों के जितना अधिकाधिक निकट पहुंचती जाती थी, अपने खोज-कार्य में वह उतनी ही अधिक गम्भीर होती जा रही थी। छोटे-से दलदली परिन्दे ने केवल क्षण भर को ही उसका

ध्यान गड़बड़ किया। उसने टीलों के सामने एक चक्कर लगाया, दूसरा शुरू किया और अचानक कांपकर वहीं रुक गयी।

"आओ, इधर आओ स्तीवा!" लेविन ने यह महसूस करते हुए कि उसका दिल कैसे ज़ोर से धड़कने लगा है, पुकारकर कहा। अचानक उसकी तनावपूर्ण श्रवण-शक्ति पर से मानो कोई पर्दा हट गया, दूरी की सभी सीमाओं से मुक्त होकर सारी आवाज़ें गड्डमड्ड होने, किन्तु साफ़ तौर पर सुनाई देने लगीं। उसे ओब्लोन्स्की के पैरों की आहट सुनाई दी, जिसे उसने दूर से आती घोड़ों की टापों की आवाज़ समझा, टीले के एक सिरे पर पांव पड़ने से, जड़ों सहित घास के उखड़ने और उसके टूटने की आवाज़ को उसने बड़े कुनाल के पंखों की सरसराहट समझा। अपने निकट ही उसे पानी की छपछपाहट भी सुनाई दी, जिसे वह समझ नहीं पाया।

सावधानी से पांव रखता हुआ वह कुत्ते की ओर बढ़ा।

"झपट लो!"

लास्का के पास से बड़ा कुनाल नहीं, बल्कि छोटा कुनाल ऊपर को उड़ा। लेविन ने बन्दूक़ सीधी की, किन्तु उसी समय, जब वह निशा-ना साध रहा था, पानी की छपछपाहट की वही आवाज़ तेज़ हो गयी, निकट आ गयी और अजीब ढंग से कुछ ऊंचा चिल्लाते हुए वेस्लोव्स्की की आवाज़ इसके साथ मिल गयी। लेविन ने देखा कि वह ढंग से निशाना नहीं साध रहा है, फिर भी उसने गोली चला दी।

यह विश्वास हो जाने पर कि निशाना चूक गया है, लेविन ने मुड़कर देखा, तो पाया कि घोड़े और बग्घी सड़क पर नहीं, बल्कि दलदल में पहुंचे हुए हैं।

वेस्लोव्स्की निशानेबाज़ी देखने के लिये बग्घी को दलदल में बढ़ा लाया और घोड़ों को उसमें फंसा दिया।

"इस शैतान को यह क्या सूझी!" दलदल में फंसी बग्घी की ओर जाते हुए लेविन ने मन ही मन कहा। "आप बग्घी को यहां क्यों ले आये?" लेविन ने रुखाई से कहा और कोचवान को पुकारकर घोड़ों को दलदल से निकालने के काम में जुट गया।

लेविन को इसलिये बुरा लग रहा था कि उसका निशाना गड़बड़ करवा दिया गया था, उसके घोड़े दलदल में फंसा दिये गये थे और

मुख्यतः तो इस कारण उसे ग़ुस्सा आ रहा था कि घोड़ों को दलदल में से निकालने के लिये उन्हें खोलना ज़रूरी था और इस काम में न तो ओब्लोन्स्की और न वेस्लोव्स्की ही उसका या कोचवान का हाथ बंटा रहा था, क्योंकि दोनों में से किसी को भी इस चीज़ की रत्ती भर जानकारी नहीं थी कि घोड़े को जोता या खोला कैसे जाता है। वेस्लोव्स्की द्वारा यह विश्वास दिलाये जाने पर कि यहां बिल्कुल सूखी जगह थी, लेविन ने उत्तर में एक भी शब्द नहीं कहा और चुपचाप घोड़ों को दलदल से निकालने के काम में लगा रहा। किन्तु बाद को काम में पूरी तरह डूब जाने और यह देखने पर कि वेस्लोव्स्की कितने यत्न से तथा ज़ोर लगाते हुए मडगार्ड से पकड़कर बग्घी को पीछे खींच रहा है, यहां तक कि उसने मडगार्ड को तोड़ भी डाला था, तो लेविन ने अपने को इसलिये भला-बुरा कहा कि पिछले दिन की भावना के प्रभाव के कारण वह उसके साथ बहुत रुखाई से पेश आया था और उसने विशेष अपनापन दिखाकर इस रूखे व्यवहार की कटुता को दूर करने की कोशिश की। जब सब कुछ ठीक-ठाक हो गया और बग्घी सड़क पर पहुंचा दी गयी, तो लेविन ने नाश्ता निकालने का आदेश दिया।

"Bon appétit — bonne conscience! Ce poulet va tomber jusqu'au fond de mes bottes,*" फिर से रंग में आते और दूसरा चूज़ा ख़त्म करते हुए वेस्लोव्स्की ने फ़्रांसीसी कहावत कही। "अब हमारी मुसीबतों का अन्त हो गया और सब कुछ अच्छे ढंग से होगा। किन्तु मुझे अपने अपराध के लिये बाक्स पर बैठना चाहिये। ठीक है न? क्यों? नहीं, नहीं, मैं आटोमेडान** हूं। देखियेगा कि मैं कैसे आपको पहुंचाता हूं!" उसने लेविन के अनुरोध करने पर कि वह कोचवान को बाक्स पर बैठने दे, लगामें देने से इन्कार करते हुए कहा। "नहीं, मुझे अपने अपराध का प्रायश्चित करना चाहिये और यहां बाक्स पर मैं ख़ूब मज़े में हूं।" और उसने बग्घी आगे बढ़ा दी।

लेविन को इस बात का थोड़ा-सा डर था कि वह घोड़ों को,

---

* अच्छी भूख का मतलब आत्मा साफ़ है। यह चूज़ा मेरी आत्मा की गहराई तक पहुंच रहा है। (फ़्रांसीसी)

** होमर के महाकाव्य में कोचवान से अभिप्राय। – सं०

ख़ास तौर से बायीं ओर के कत्थाई घोड़े को, परेशान कर डालेगा, जिसे क़ाबू में रखना नहीं जानता था। किन्तु लेविन अनचाहे ही वेस्लोव्स्की की ख़ुशी के प्रभाव में आ गया, उन प्रेम-गीतों या क़िस्से-कहानियों को सुनता रहा, जो वह बाक्स पर बैठा सुनाता या यह दिखाता जा रहा था कि अंग्रेज़ी ढंग से कैसे four in hand* को सम्भाला जाये। इस तरह नाश्ते के बाद ये सभी हंसी-ख़ुशी के मूड में ग्वोज़्देवो दलदल पहुंच गये।

(१०)

वेस्लोव्स्की ने इतनी तेज़ी से घोड़ों को हांका कि वे अनुमानित समय से बहुत पहले, जबकि अभी गर्मी थी, दलदल में पहुंच गये।

अपनी इस यात्रा के मुख्य लक्ष्य यानी असली दलदल में पहुंचकर लेविन बरबस यह सोचने लगा कि वह वेस्लोव्स्की से कैसे अपना पिंड छुड़ाये और आज़ादी से घूमे। ओब्लोन्स्की भी स्पष्टतः यही सोच रहा था और उसके चेहरे पर लेविन को वह चिन्ता दिखाई दे रही थी, जो शिकार शुरू होने के पहले हमेशा असली शिकारी के चेहरे पर होती है, और ख़ुशमिज़ाजी लिये वह चालाकी भी नज़र आ रही थी, जो ओब्लोन्स्की का विशेष लक्षण थी।

"तो हम कैसे जायेंगे? दलदल बहुत बढ़िया है, यहां बाज़ भी नज़र आ रहे हैं," ओब्लोन्स्की ने नरकटों के ऊपर आसमान में चक्कर काटते दो बड़े-बड़े परिन्दों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। "जहां बाज़ हैं, वहां सम्भवतः शिकार भी हैं।"

"तो आप महानुभाव देख रहे हैं न," लेविन ने अपने घुटनों तक के जूतों को ऊपर की ओर खींचते और बन्दूक़ की कारतूसी टोपियों का निरीक्षण करते हुए तनिक उदासी से कहा। "उन सरकंडों को देख रहे हैं न?" उसने नदी के दायीं ओर फैले बहुत बड़े, अध-कटे और भीगे हुए चरागाह में गहरे हरे रंग के छोटे-से द्वीप की ओर संकेत किया। "दलदल यहां से, बिल्कुल हमारे सामने से, देखते हैं, जहां अधिक हरियाली है, शुरू होती है। यहां से वह दायें को जाती है,

* चार घोड़ो। (अंग्रेज़ी)

जहां घोड़े घूम रहे हैं। वहां टीले हैं, बड़े कुनाल होते हैं और उस द्वीप के गिर्द एल्डर वृक्षों के कुंज तथा चक्की तक। वहां, देखते हैं, जहां छोटी धारा है। वह सबसे अच्छी जगह है। वहां मैंने एक बार सत्रह कुनाल मारे थे। हम दो कुत्तों के साथ अलग-अलग दिशाओं में जायेंगे और चक्की के पास जाकर एकसाथ हो जायेंगे।"

"तो कौन दायें और कौन बायें जायेगा?" ओब्लोन्स्की ने पूछा। "दायें अधिक चौड़ी जगह है, वहां आप दोनों जायें और मैं बायें जाता हूं," उसने मानो यों ही लापरवाही से कहा।

"बहुत अच्छी बात है! हम इससे बाज़ी मार लेंगे। आइये चलें, आइये चलें!" वेस्लोव्स्की ने कहना शुरू किया।

लेविन के लिये सहमत होने के सिवा कोई चारा नहीं था और वे इस तरह से बंट गये।

दलदल में दाखि़ल होते ही दोनों कुत्ते एकसाथ शिकार ढूंढ़ने और गेरुई-सी झलक लिये पंकिल जल की ओर बढ़ चले। लेविन अपनी लास्का के शिकार ढूंढ़ने के इस सावधानीपूर्ण और अनिश्चित ढंग से परिचित था, वह सही जगह भी जानता था और वहां उसे कुनालों का एक झुण्ड पाने की आशा थी।

"वेस्लोव्स्की, मेरे निकट, निकट रहिये!" उसने दबी-दबी आवाज़ में अपने पीछे छप-छप करते आ रहे साथी से कहा। कोल्पेन्स्की दलदल में भूल से चल जानेवाली उसकी गोली के बाद लेविन बरबस ही इस ओर ध्यान देता था कि उसकी बन्दूक़ का मुंह किधर है।

"नहीं, मैं आपके लिये बाधा नहीं बनना चाहता। आप मेरे बारे में नहीं सोचिये।"

किन्तु लेविन अनचाहे ही उसके बारे में सोचता था और उसे विदा लेते समय कीटी द्वारा कहे गये ये शब्द याद हो आये – "ध्यान से शिकार करना, कहीं एक-दूसरे पर गोली मत चलाना"। कुत्ते एक-दूसरे से परे रहते और अपनी-अपनी खोज का अनुकरण करते हुए अधिकाधिक निकट आते जा रहे थे। कुनालों की इतनी तीव्र प्रतीक्षा थी कि गेरुए रंग के कीचड़ में से एड़ी को बाहर निकालने पर पैदा होनेवाली आवाज़ लेविन को कुनाल की चहक लगती थी और वह अपनी बन्दूक़ के दस्ते को कसकर थाम लेता था।

"ठांय! ठांय!" लेविन के कान के ऊपर गोली चलने की आवाज़ गूंज उठी। यह वेस्लोव्स्की ने बत्तख़ों के एक झुण्ड पर, जो इस समय दलदल के ऊपर, किन्तु शिकारियों के निशाने की पहुंच से दूर उड़ रहा था, गोलियां चलाई थीं। लेविन मुड़कर देख भी नहीं पाया था कि एक कुनाल चीख़ता हुआ उड़ा, उसके बाद दूसरा, तीसरा और एक के बाद एक आठ अन्य कुनाल उड़ चले।

ओब्लोन्स्की ने एक कुनाल को उसी समय मार गिराया, जब वह अपनी टेढ़ी-मेढ़ी उड़ान शुरू ही करनेवाला था और वह गोले की भांति दलदल में जा गिरा। ओब्लोन्स्की ने सरकंडों के निकट कम ऊंचाई पर उड़ते एक अन्य कुनाल का इतमीनान से निशाना साधा और गोली छूटने की आवाज़ के साथ यह कुनाल भी नीचे गिर गया और यह साफ़ नज़र आ रहा था कि वह कैसे अपना सही-सलामत पंख, जो नीचे से सफ़ेद था, फड़फड़ाता हुआ सरकंडों के बीच से बाहर आ रहा था।

लेविन की क़िस्मत ने उसका ऐसे साथ नहीं दिया। उसने पहले कुनाल पर बहुत ही नज़दीक से गोली चलाई और उसका निशाना चूक गया। जब वह ऊपर उठने लगा, तो फिर निशाना साधा, किन्तु इसी समय पैरों के पास से एक और कुनाल उड़ा, जिसने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया और दूसरी बार उसका निशाना चूक गया।

जब तक इन्होंने अपनी बन्दूक़ों में गोलियां भरीं, एक और कुनाल उड़ा और वेस्लोव्स्की ने, जो दूसरी बार बन्दूक़ भर चुका था, पानी में दो बार छर्रे चला दिये। ओब्लोन्स्की ने अपने कुनाल उठा लिये और ख़ुशी से चमकती आंखों से लेविन की तरफ़ देखा।

"तो अब हम अलग होते हैं," ओब्लोन्स्की ने कहा और बायें पैर से कुछ लंगड़ाता, बन्दूक़ को किसी भी समय चलाने की तैयार स्थिति में रखता और कुत्ते को सीटी बजाकर बुलाता हुआ एक तरफ़ को चल दिया। लेविन और वेस्लोव्स्की दूसरी दिशा में चल दिये।

लेविन के साथ हमेशा ऐसा होता था कि जब उसके पहले निशाने चूक जाते थे, तो वह उत्तेजित हो उठता था, गुस्से में आ जाता था और दिन भर ऐसे बुरे ढंग से ही गोलियां चलाता था। आज भी ऐसा ही हुआ। कुनाल तो बहुत अधिक थे। कुत्तों के पास से, शिकारियों के पैरों के नज़दीक से कुनाल लगातार उड़ रहे थे और लेविन अपनी स्थिति

को सम्भाल सकता था। किन्तु वह जितनी अधिक गोलियां चलाता था, उतना ही अधिक अपने को वेस्लोव्स्की की नज़र में नीचे गिराता जाता था, जो बड़े रंग-तरंग में निशाने पर या निशाने के बिना गोलियां चलाता जाता था, निशाने ख़ाली जाते थे और इससे उसे तनिक भी झेंप नहीं होती थी। लेविन उतावली करता था, अपने को वश में नहीं रख पाता था, अधिकाधिक उत्तेजित होता हुआ उस स्थिति तक पहुंच गया था कि गोली चलाते समय इस बात की आशा नहीं करता था कि वह शिकार को मार गिरायेगा। लगता था कि लास्का भी यह समझ रही थी। वह कुनालों को खोजने में काहिली दिखाने लगी और शिकारियों को हैरानी और तिरस्कार की नज़र से देखती थी। एक के बाद एक गोली छूटती थी। शिकारियों के चारों ओर बारूद का धुआं फैला था, मगर शिकार डालने के बड़े, चौड़े थैले में केवल तीन छोटे-छोटे और हल्के-हल्के कुनाल थे। इनमें से एक वेस्लोव्स्की द्वारा मारा गया था और एक साझा शिकार था। इसी समय दलदल के दूसरी ओर से अक्सर नहीं, किन्तु जैसा कि लेविन को प्रतीत हुआ, ओब्लोन्स्की की अर्थपूर्ण गोलियां छूटने की आवाज़ सुनाई देती थी और लगभग हर गोली के बाद यह भी सुनाई देती – "क्राक, क्राक, उठा लाओ!"

लेविन इससे और भी अधिक उत्तेजित हो जाता। कुनाल तो सरकंडों के ऊपर लगातार चक्कर काट रहे थे। सभी ओर से धरती पर कुनालों की चहक और हवा में उनकी आवाज़ें लगातार सुनाई दे रही थीं। पहले से उड़ाये गये और हवा में चक्कर काटनेवाले कुनाल अब शिकारियों के सामने नीचे बैठे थे। अब दो के बजाय दसियों चीख़ते हुए बाज़ दलदल के ऊपर उड़ रहे थे।

दलदल का आधा, बड़ा भाग लांघने के बाद लेविन और वेस्लोव्स्की उस जगह तक जा पहुंचे, जहां से सरकंडों से जा मिलनेवाली किसानों की चरागाहें लम्बी पट्टियों के रूप में शुरू होती थीं। पट्टियों को बांटने के लिये कहीं तो घास की रौंदी हुई पट्टियों और कहीं कटी घास की क़तार के रूप में निशान बना दिये गये थे। इन पट्टियों में से आधी की घास काटी जा चुकी थी।

यद्यपि चरागाह के घास-कटे भाग की तुलना में घासवाले भाग में

उतने ही अधिक पक्षियों के मिलने की आशा नहीं की जा सकती थी, तथापि ओब्लोन्स्की से मिल जाने का अपना वचन पूरा करने के लिये लेविन अपने साथी के साथ कटी और अनकटी पट्टियों पर आगे बढ़ने लगा।

"ऐ शिकारियो!" घोड़ा-गाड़ी, जिसका घोड़ा खोल दिया गया था, के पास बैठे किसानों में से एक ने चिल्लाकर कहा। "आओ, हमार साथ कुछ खावो! दारू पीवो!"

लेविन ने मुड़कर देखा।

"अरे आव भैया, आव!" लाल चेहरे वाला एक दढ़ियल, ख़ुशमिज़ाज किसान सफ़ेद दांतों की झलक देता और धूप में चमकती हुई हरी-सी बोतल दिखा कर चिल्ला उठा।

"Qu'est ce qu'ils disent?* वेस्लोव्स्की ने पूछा।

"वोदका पीने को बुलाते हैं। शायद इन्होंने चरागाह का बंटवारा किया है। मैंने तो पी ली होती," लेविन ने चालाकी से काम लेते और यह आशा करते हुए कहा कि वेस्लोव्स्की वोदका के फेर में पड़कर किसानों के पास चला जायेगा।

"वे किसलिये पिला रहे हैं?"

"ऐसे ही, ख़ुश होने के लिये। सच, चले जाइये उनके पास। आपके लिये दिलचस्प होगा।"

"Allons, c'est curieux.**"

"जाइये, जाइये, चक्की का रास्ता तो आपको मिल ही जायेगा!" लेविन ने पुकारकर कहा और मुड़कर देखने पर उसे ख़ुशी हुई कि झुका हुआ, थकी टांगों से ठोकरें खाता और सामने फैले हाथ में बन्दूक़ थामे वेस्लोव्स्की दलदल को लांघकर किसानों की तरफ़ जा रहा था।

"तुम भी आय जावो!" किसान ने लेविन को आवाज़ दी। "काहे घबरात है! जरा कचौड़ी चख लेनो!"

लेविन का वोदका पीने और रोटी का टुकड़ा खा लेने को बहुत मन हो रहा था। वह बुरी तरह थक गया था और महसूस करता

---

* ये क्या कह रहे हैं? (फ़्रांसीसी)

** आइये चलें, यह तो जिज्ञासा की चीज़ है। (फ़्रांसीसी)

था कि रुके जाते पैरों को दलदल में से ज़बर्दस्ती घसीट रहा है। क्षण भर को उसका मन दुविधा में पड़ गया। किन्तु इसी समय लास्का रुक गयी। आन की आन में उसकी थकावट हवा हो गयी और वह फुर्ती से कीचड़ में पांव बढ़ाता हुआ लास्का के पास पहुंचा। उसके अपने पैरों के पास कुनाल उड़ा, लेविन ने गोली चलाई और उसे मार डाला। लास्का वहीं खड़ी रही। "मारो!" लास्का के क़रीब से एक अन्य कुनाल उड़ा। लेविन ने गोली दाग़ी। किन्तु यह उसके लिये बुरा दिन था – निशाना चूक गया। जब वह मारे गये कुनाल को ढूंढ़ने गया, तो वह भी नहीं मिला। उसने सारे सरकंडों को छान मारा, किन्तु लास्का यह मानती ही नहीं थी कि उसने पक्षी को मार गिराया है और इसलिये जब वह उसे खोजने के लिये भेजता, तो वह ढूंढ़ने का ढोंग करती, मगर खोजती नहीं।

वेस्लोव्स्की के बिना भी, जिसे लेविन अपनी असफलता के लिये दोषी ठहराता था, स्थिति बेहतर नहीं हुई। कुनाल तो यहां भी बहुत थे, मगर लेविन का एक के बाद एक निशाना चूकता जाता था।

सूरज की टेढ़ी किरणें अभी भी काफ़ी गर्म थीं, पसीने से बिल्कुल तर उसके कपड़े तन से चिपकते जाते थे, पानी से भरा हुआ बायां जूता भारी था और फच्च-फच्च करता था, बारूद की धूल से गन्दे हुए चेहरे से पसीने की बूंदें चू रही थीं, मुंह का ज़ायक़ा कसैला था, नाक में बारूद और ठहरे पानी की बू घुसी हुई थी, कानों में लगातार कुनालों की चहक गूंज रही थी, बन्दूक़ की नलियां इतनी गर्म थीं कि छूना असम्भव था, दिल की धड़कन तेज़ और संक्षिप्त थी, हाथ उत्तेजना से कांप रहे थे और थके हुए पांव टीलों से ठोकरें खाते और दलदल में जमे जाते थे। किन्तु लेविन चलता ही जा रहा था, गोलियां चलाता ही जा रहा था। आख़िर एक लज्जाजनक निशाना चूकने पर उसने अपनी बन्दूक़ और टोपी ज़मीन पर फेंक दी।

"नहीं, मुझे होश में आना चाहिये," उसने अपने आपसे कहा। लेविन ने बन्दूक़ और टोपी उठाई, लास्का को अपने पास बुलाया और दलदल से बाहर चला गया। सूखी ज़मीन पर जाकर वह टीले पर बैठ गया, उसने अपने जूते उतारे, एक जूते में से पानी निकाला, इसके बाद दलदल के क़रीब गया, ज़ंग के ज़ायकेवाला पानी पिया,

बेहद गर्म हुई नलियों को भिगोकर ठण्डा किया और अपना मुंह-हाथ धोया। ताज़ादम होकर तथा उत्तेजित न होने का पक्का इरादा करके वह उसी जगह की ओर चल दिया, जहां एक कुनाल जा बैठा था।

उसने शान्त रहना चाहा, मगर बात पहले जैसी ही हुई। पक्षी का निशाना साधने के पहले ही उसकी उंगली ने बन्दूक़ का घोड़ा दबा दिया। मामला अधिकाधिक बिगड़ता ही चला जा रहा था।

जब वह दलदल से निकलकर एल्डर वृक्षों के कुंज की ओर चला, जहां उसे ओब्लोन्स्की से मिलना था, तो उसके थैले में केवल पांच कुनाल थे।

ओब्लोन्स्की को देखने के पहले उसे उसका कुत्ता दिखाई दिया। दलदल के बदबूदार कीचड़ से पूरी तरह काला हुआ क्राक एल्डर वृक्ष की एक टेढ़ी-तिरछी जड़ के नीचे से उछलकर सामने आया और उसने विजेता के अंदाज़ में लास्का को सूंघा। क्राक के पीछे एल्डर वृक्ष की छाया में ओब्लोन्स्की की सुघड़ आकृति दिखाई दी। लाल चेहरा, पसीने से तर, कालर का बटन खुला हुआ और पहले की तरह थोड़ा लंगड़ाता हुआ वह सामने से चला आ रहा था।

"तो शिकार कैसा रहा? आप लोगों ने धमाके तो बहुत किये!" उसने ख़ुशमिज़ाजी से मुस्कराते हुए कहा।

"और तुम्हारा?" लेविन ने पूछा। किन्तु पूछने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि उसे उसका भरा हुआ थैला दिखाई दे रहा था।

"बुरा नहीं रहा।"

उसने चौदह पक्षी मारे थे।

"बहुत अच्छी दलदल है! ज़रूर वेस्लोव्स्की तुम्हारे आड़े आता रहा होगा। दो को एक कुत्ते की मदद से शिकार करने में तकलीफ़ होती है," ओब्लोन्स्की ने अपनी विजय के रंग को तनिक हल्का करते हुए कहा।

(११)

ओब्लोन्स्की के साथ लेविन जब उस किसान के झोंपड़े में आया, जहां हमेशा ठहरता था, तो वेस्लोव्स्की वहां पहले से ही मौजूद था।

वह झोंपड़े के बीचोंबीच बैठा था और दोनों हाथों से एक बेंच को थामे था, जबकि एक फ़ौजी, घर की मालकिन का भाई, कीचड़ से लथपथ उसके घुटनों तक के जूते उतार रहा था और वेस्लोव्स्की ऐसी ख़ुशमिज़ाजी से हंस रहा था, जिससे दूसरों को भी बरबस हंसी आ जाती थी।

"मैं अभी-अभी आया हूं। Ils ont été charmants.* आप कल्पना करें, उन्होंने मुझे खिलाया, पिलाया। क्या ग़ज़ब की रोटी थी! Délicieux!**और वोदका – इससे ज़्यादा मज़ेदार तो मैंने कभी पी ही नहीं! और किसी भी हालत में पैसे लेने को तैयार नहीं हुए। लगातार यही कहते रहे – 'बुरो नहीं मानत, सरकार'।"

"पैसे काहे को? मतलब, आपकी सेवा की। आप क्या सोचत, वे वोदका बेचत?" फ़ौजी ने आख़िर भीगे जूते के साथ कीचड़ से काली हुई जुर्राब उतारते हुए कहा।

शिकारियों के जूतों और अपने को चाटकर माफ़ करते हुए गन्दे कुत्तों द्वारा लाये गये कीचड़ और गन्दगी, दलदल तथा बारूद की गन्ध, जो झोंपड़े में बस गयी थी, और छुरियों-कांटों की अनुपस्थिति के बावजूद शिकारियों ने ऐसे मज़े से चाय पी और खाना खाया, जैसा कि शिकार के वक़्त ही होता है। नहा-धोकर और साफ़-सुथरे होकर वे सूखी घास वाले झाड़े-बुहारे सायबान में चले गये, जहां कोचवानों ने इन महानुभावों के लिये बिस्तर तैयार कर दिये थे।

बेशक झुटपुटा हो रहा था, फिर भी शिकारियों में से किसी का भी सोने को मन नहीं हो रहा था।

निशानेबाज़ी, कुत्तों और पहले के शिकारों के बारे में संस्मरणों और क़िस्सों की चर्चा होने के बाद सभी की दिलचस्पी की बातचीत शुरू हो गयी। वेस्लोव्स्की के मुंह से इस रात्रि-विश्राम और सूखी घास की सुगन्ध, टूटी घोड़ा-गाड़ी के बांकपन (वह उसे इस कारण टूटी हुई लग रही थी कि उसके बम उतार लिये गये थे), उसे वोदका पिलानेवाले ख़ुशमिज़ाज किसानों और अपने-अपने स्वामी के पैरों के पास लेटे हुए कुत्तों का अनेक बार बड़ा उत्साहपूर्ण बखान सुनने के

---

* कमाल के हैं ये लोग। (फ़ांसीसी)

** बेहद मज़ेदार! (फ़ांसीसी)

बाद ओब्लोन्स्की ने किसी माल्थस के यहां पिछली गर्मी में किये गये शिकार के मज़े का वर्णन किया। माल्थस रेलवे से सम्बन्धित एक प्रसिद्ध धनी था। ओब्लोन्स्की ने बताया कि त्वेर गुबेर्नियां में इस माल्थस द्वारा ख़रीदी हुई कैसी बढ़िया दलदलें थीं, कैसे वह उनकी सार-सम्भाल करता था, कैसी बग्घियों और गाड़ियों में शिकारियों को शिकार की जगहों पर पहुंचाया गया और दलदल के पास कैसा तम्बू लगाया गया तथा उसमें कैसा नाश्ता दिया गया।

"मैं तुम्हें समझने में असमर्थ हूं," लेविन ने घास के अपने बिस्तर पर कोहनियों के सहारे उचकते हुए कहा, "तुम्हें क्या ऐसे लोगों से नफ़रत नहीं होती? यह मैं समझता हूं कि लाफ़ीत के साथ नाश्ता करना बहुत मज़े की बात है, पर क्या तुम्हें इस तरह की अय्याशी अखरती नहीं? ये सभी लोग हमारे पुराने ठेकेदारों की तरह ऐसा पैसा बटोरते हैं कि आम लोग उनसे नफ़रत करते हैं। वे इस नफ़रत की परवाह नहीं करते और बेईमानी से जमा किये गये धन से उस नफ़रत से मुक्ति पाते हैं।"

"बिल्कुल ठीक है!" वेस्लोव्स्की ने राय ज़ाहिर की। "सोलह आने सही! ज़ाहिर है कि ओब्लोन्स्की तो bonhomie* से ऐसा करता है, लेकिन दूसरे यह कहते हैं – ओब्लोन्स्की तो उनके यहां जाता है।"

"क़तई ऐसी बात नहीं है," ओब्लोन्स्की ने कहा और लेविन को लगा मानो ऐसा कहता हुआ वह मुस्करा रहा था, "मैं उसे धनी व्यापारियों और कुलीनों से ज़्यादा बेईमान नहीं मानता हूं। इन सभी लोगों ने मेहनत और अक़्ल से पैसा कमाया है।"

"हां, लेकिन कैसी मेहनत से? क्या यह मेहनत है कि किसी चीज़ का ठेका ले लिया जाये और फिर उससे नफ़ा हासिल किया जाये?"

"बेशक मेहनत है। इस मानी में मेहनत है कि अगर वह या उसके जैसे दूसरे लोग न होते, तो रेलवे लाइनें न बनतीं।"

"लेकिन यह किसी किसान या विद्वान जैसी तो मेहनत नहीं।"

"मान लेते हैं, लेकिन इस मानी में मेहनत है कि उसके काम

---

* सहृदयता। (फ़्रांसीसी)

का एक नतीजा सामने आता है – रेलवे लाइन बनती है। मगर तुम तो रेलवे लाइनों को बेकार की चीज़ मानते हो।"

"नहीं, यह दूसरी बात है। मैं यह मानने को तैयार हूं कि वे उपयोगी हैं। किन्तु किसी भी श्रम के अनुरूप न प्राप्त किया जानेवाला लाभ बेईमानी है।"

"मगर यह अनुरूपता कौन तय करेगा?"

"बेईमानी और चालाकी से प्राप्त धन," लेविन ने यह अनुभव करते हुए कि वह ईमानदारी और बेईमानी के बीच स्पष्ट अन्तर नहीं कर सकता, कहा, "जैसे कि बैंकों के नफ़े," वह कहता गया। "मेहनत किये बिना बड़ी दौलत हासिल करना गुनाह है, जैसा कि ठेकों के मामले में होता था। सिर्फ़ शक्ल बदल गयी। Le roi est mort, vive le roi!* अभी-अभी ठेकों को ख़त्म किया गया था और अब रेलवे लाइनें और बैंक सामने आ गये – ये भी मेहनत के बिना नफ़े कमाते हैं।"

"हां, यह सब शायद सच और बड़ी समझदारी की बात हो... क्राक, लेट जाओ!" ओब्लोन्स्की ने तन खुजलाते और सारी सूखी घास को उलट-पलट करते कुत्ते को डांटा। उसे स्पष्टतः अपने दृष्टिकोण की न्यायसंगतता के बारे में विश्वास था और इसलिये वह शान्त था तथा बड़े इतमीनान से बात कर रहा था। "लेकिन तुमने ईमानदारी और बेईमानी की मेहनत का फ़र्क़ साफ़ नहीं किया। अपने हेड क्लर्क के मुक़ाबले में मैं ज़्यादा तनख़्वाह पाता हूं, गो वह मुझसे बेहतर काम जानता है – तुम्हारे ख़्याल में यह बेईमानी है?"

"मैं नहीं जानता।"

"तो मैं तुम्हें बताता हूं – मान लो, खेतीबारी के धन्धे में तुम अगर पांच हज़ार का नफ़ा पाते हो और हमारा मेज़बान किसान कितनी ही मेहनत करने पर भी पचास रूबल से अधिक नहीं पाता, तो यह उसी तरह की बेईमानी है, जैसे अपने हेड क्लर्क की तुलना में मेरा अधिक तनख़्वाह पाना और इंजन-ड्राइवर के मुक़ाबले में माल्थस का कहीं ज़्यादा पैसा कमाना। इसके उलट, मैं इन लोगों के प्रति समाज

---

* बादशाह नहीं रहा, बादशाह ज़िन्दाबाद! (फ़्रांसीसी)

का एक शत्रुतापूर्ण रवैया अनुभव करता हूं, जिसका कोई आधार नहीं है, और मुझे लगता है कि यहां ईर्ष्या ..."

"नहीं, यह सही नहीं है," वेस्लोव्स्की ने कहा, "ईर्ष्या नहीं हो सकती, लेकिन इस मामले में कोई बेईमानी की बात ज़रूर है।"

"नहीं, तुम मुझे अपनी बात कहने दो," लेविन ने अपना विचार आगे बढ़ाया। "तुम कहते हो, यह अन्याय है कि मैं पांच हज़ार पाता हूं और किसान पचास रुपये। यह बिल्कुल सही है। यह अन्याय है और मैं यह महसूस करता हूं, लेकिन ..."

"वास्तव में ऐसा ही है। भला हम क्यों खाते-पीते और शिकार खेलते रहते हैं और कुछ नहीं करते, जबकि किसान हमेशा मेहनत करता रहता है?" वेस्लोव्स्की ने कहा, जिसने स्पष्टतः जीवन में पहली बार ऐसा सोचा और इसलिये बिल्कुल सच्चे दिल से ऐसा कहा था।

"हां, तुम महसूस करते हो, लेकिन अपनी जागीर उसे नहीं देते हो," ओब्लोन्स्की ने मानो जान-बूझकर लेविन को चिढ़ाते हुए कहा।

पिछले कुछ अर्से से इन दोनों हमज़ुल्फ़ों के बीच मानो एक गुप्त शत्रुतापूर्ण रवैया पैदा हो गया था। ऐसे लगता था मानो जब से उनकी दोनों बहनों से शादी हुई थी, उनके बीच इस बात की स्पर्धा आरम्भ हो गयी थी कि किसने अपने जीवन को अधिक अच्छा रूप दिया है और अब यह शत्रुता व्यक्तिगत रंग लेनेवाली बातचीत में प्रकट होने लगी थी।

"मैं इसलिये उसे अपनी जागीर नहीं देता कि कोई मुझसे ऐसा करने की मांग नहीं करता और अगर मैं चाहता, तो भी न दे पाता," लेविन ने जवाब दिया, "और फिर दूं भी किसे?"

"इस किसान को दे दो, वह इन्कार नहीं करेगा।"

"लेकिन मैं उसे कैसे दूंगा? उसके साथ जाकर उसके नाम करवा दूं?"

"मैं नहीं जानता, लेकिन अगर तुम्हें इस बात का यक़ीन है कि तुम्हें इसका अधिकार नहीं है ..."

"नहीं, मुझे यक़ीन नहीं है। इसके उलट, मैं ऐसा महसूस करता हूं कि मुझे उसे देने का हक़ नहीं है, कि ज़मीन और परिवार के प्रति मेरी ज़िम्मेदारियां हैं।"

"नहीं, लेकिन अगर तुम यह मानते हो कि ऐसी असमानता अन्यायपूर्ण है, तो ऐसा क्यों नहीं करते ..."

"मैं ऐसा कर रहा हूं, लेकिन नकारात्मक ढंग से, यानी इस अर्थ में कि स्थिति के उस अन्तर को बढ़ाने का यत्न नहीं करूंगा, जो मेरे और उसके बीच विद्यमान है।"

"क्षमा करना, यह तो तुम अन्तर्विरोधी बातें कर रहे हो।"

"हां, यह तो अटपटे तर्क वाला स्पष्टीकरण है," वेस्लोव्स्की ने पुष्टि की। "अरे! हमारा मेज़बान," उसने किसान से कहा, जो सायबान के दरवाज़ों को चरमराता हुआ भीतर आया था। "क्या अभी तक सोये नहीं?"

"इतनी जल्द कौन सोवत है, सरकार! हम सोचत कि हमारे महानुभाव सोवत, परन सुन पड़ा कि बोलत-बतियावत। हम तो यहां से अंकुड़ा लेन आयो। यह कुत्ता काटत तो नहीं?" उसने नंगे पैरों से सावधानी से आगे बढ़ते हुआ कहा।

"तुम कहां सोओगे?"

"हम तो रात को घोड़े चरावन जात।"

"ओह, कैसी प्यारी रात है," हल्की लाली की रोशनी में सायबान के खुले दरवाज़े में से नज़र आते झोंपड़े के सिरे और गाड़ी को देखते हुए वेस्लोव्स्की ने कहा। "सुन रहे हैं औरतें गा रही हैं और सच, कुछ बुरा नहीं गा रही हैं। ये कौन गा रही हैं?" उसने घर के मालिक से पूछा।

"किसान छोकरियां गावत, सरकार।"

"आइये घूमने चलें! नींद तो आयेगी नहीं। ओब्लोन्स्की, चलें!"

"यहां लेटे-लेटे वहां जाना कितना अच्छा होता," ओब्लोन्स्की ने अंगड़ाई लेते हुए कहा। "लेटे रहना बहुत अच्छा है।"

"तो मैं अकेला जाता हूं," फुर्ती से उठते और जूते पहनते हुए वेस्लोव्स्की ने कहा। "तो मैं जा रहा हूं, महानुभावो। अगर मज़ा रहा, तो मैं आपको भी बुला लूंगा। आपने मुझे शिकार का लुत्फ़ दिलवाया है और इसलिये मैं आपको भी नहीं भूलूंगा।"

"है न भला नौजवान?" वेस्लोव्स्की के जाने और किसान द्वारा दरवाज़ा बन्द कर देने पर ओब्लोन्स्की ने पूछा।

"हां, भला है," लेविन ने कुछ ही देर पहले हुई बातचीत के बारे में सोचते हुए जवाब दिया। उसे लगा कि जिस हद तक मुमकिन हुआ उसने अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट ढंग से व्यक्त कर दिया है और फिर इन दोनों ने, जो ख़ासे समझदार और निश्छल लोग हैं, एक स्वर से यह कहा था कि वह अटपटे तर्कों से अपने को सन्तोष दे रहा है। उसे यह बात खल रही थी।

"तो यह बात है, मेरे दोस्त। दो में से एक चीज़ हो सकती है – या तो यह स्वीकार करो कि समाज की वर्त्तमान व्यवस्था न्यायपूर्ण है और तब तो तुम्हें अपने अधिकारों की रक्षा करनी चाहिये, या यह मानो कि अन्यायपूर्ण लाभ पा रहे हो, जैसा कि मैं करता हूं, और ख़ूब मज़े से उनका आनन्द लूटो।"

"नहीं, अगर यह अन्यायपूर्ण होता, तो तुम ख़ूब मज़े से इनका आनन्द न लूट पाते। कम से कम मैं ऐसा न कर सकता। मेरे लिये तो मुख्य बात यह अनुभव करना है कि इसमें मेरा कोई अपराध नहीं।"

"तो क्यों, क्या सचमुच चला न जाये?" ओब्लोन्स्की ने स्पष्टतः तनावपूर्ण विचारों से थकान अनुभव करते हुए पूछा। "नींद तो आयेगी नहीं। सच, चलें।"

लेविन ने कोई जवाब नहीं दिया। बातचीत के दौरान उसके द्वारा कहा हुआ यह शब्द कि वह केवल नकारात्मक अर्थ में न्यायपूर्ण काम करता है, उसे परेशान कर रहा था। "क्या केवल नकारात्मक ढंग से ही न्यायपूर्ण हुआ जा सकता है?" वह अपने आपसे पूछ रहा था।

"कितनी तेज़ गन्ध है ताज़ा सूखी घास की!" ओब्लोन्स्की ने उठते हुए कहा। "किसी तरह भी नींद नहीं आयेगी। लगता है कि वेस्लोव्स्की ने वहां कुछ मामला जमा लिया है। ठहाके और उसकी आवाज़ सुन रहे हो न? क्या चला न जाये? आओ, चलें!"

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगा," लेविन ने जवाब दिया।

"क्या तुम यह भी उसूली तौर पर कर रहे हो?" ओब्लोन्स्की ने अंधेरे में अपनी टोपी ढूंढ़ते हुए मुस्कराकर प्रश्न किया।

"उसूली तौर पर नहीं, लेकिन मैं किसलिये जाऊं?"

"सुनो, तुम अपने लिये बड़ी मुसीबत पैदा कर रहे हो," ओ-ब्लोन्स्की ने अपनी टोपी ढूंढ़ लेने के बाद उठते हुए कहा।

"वह क्यों?"

"क्या मैं यह देख नहीं रहा हूं कि अपनी बीवी के मामले में तुमने क्या रुख़ अपना रखा है? मैंने सुना था कि कैसे तुम दोनों सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न के रूप में यह तय कर रहे थे कि तुम दो दिन के लिये शिकार को जाओगे या नहीं। कुछ समय के लिये एक आदर्श के रूप में तो यह अच्छा है, किन्तु जीवन भर नहीं चल सकेगा। मर्द को आज़ाद होना चाहिये, उसकी मर्दों वाली कुछ दिलचस्पियां हैं। मर्द में मर्दों वाली बात होनी चाहिये," ओब्लोन्स्की ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

"तुम्हारा मतलब? यही कि जाकर किसान लड़कियों से इश्क करूं?" लेविन ने पूछा।

"अगर ख़ुशी मिले तो क्यों न जाया जाये। Ca ne tire pas à conséquence.* मेरी बीवी का इससे कोई नुक़्सान नहीं होगा और मुझे ख़ुशी मिलेगी। सबसे बड़ी बात तो यह है – घर की पवित्रता बनाये रहो। घर में कुछ नहीं होना चाहिये। लेकिन अपने हाथ नहीं बांधो।"

"शायद ठीक हो," लेविन ने रुखाई से जवाब दिया और करवट ले ली। "कल तड़के ही जाना है, मैं किसी को नहीं जगाऊंगा और पौ फटते ही चला जाऊंगा।"

"Messieurs, venez vite!"** वापस आनेवाले वेस्लोव्स्की की आवाज़ सुनाई दी। "Charmante!*** मैंने खोजी है। Charmante, बिल्कुल ग्रेतख़ेन! मेरा तो उससे परिचय भी हो गया है। सच, बहुत ही बढ़िया है!" वह ऐसे ज़ाहिर कर रहा था मानो वह उसी के लिये इतनी सुन्दर बनायी गयी थी और वह उससे ख़ुश था, जिसने उसके लिये उसे बनाया था।

लेविन ने ऐसे ज़ाहिर किया मानो वह सो रहा है और ओब्लोन्स्की जूते पहन तथा सिगार जलाकर सायबान से बाहर चला गया और जल्द ही उनकी आवाज़ें शान्त हो गयीं।

---

* इसमें कोई बुराई नहीं। (फ़्रांसीसी)
** महानुभावो, जल्दी से आओ! (फ़्रांसीसी)
*** बला की ख़ूबसूरत है! (फ़्रांसीसी)

लेविन को देर तक नींद नहीं आयी। वह अपने घोड़ों को सूखी घास चरते सुनता रहा, इसके बाद घर का मालिक अपने बड़े बेटे को साथ लेकर रात को घोड़े चराने के लिये चला गया, इसके बाद उसे सायबान के दूसरी ओर से यह सुनाई दिया कि कैसे फ़ौजी अपने भानजे यानी गृह-स्वामी के छोटे बेटे के साथ सोने के लिये लेटा। उस लड़के ने अपनी पतली-सी आवाज़ में कुत्तों के बारे में, जो उसे भयानक और बहुत बड़े प्रतीत हुए थे, अपनी राय भी ज़ाहिर की। इसके पश्चात लड़के ने यह पूछा कि ये कुत्ते किसका शिकार करेंगे और कैसे फ़ौजी ने खरखरी और उनींदी-सी आवाज़ में उसे यह बताया कि शिकारी कल दलदल में जाकर गोलियां चलायेंगे, और बाद में लड़के के सवालों से निजात पाने के लिये उसने कहा: "सो जाओ, वास्का, सो जाओ, नहीं तो," और उसके फ़ौरन बाद ख़ुद खर्राटे भरने लगा तथा सब कुछ शान्त हो गया। सिर्फ़ घोड़ों की हिनहिनाहट और कुनालों की आवाज़ें ही सुनाई देती रहीं। "क्या केवल नकारात्मक ही?" उसने अपने आपसे पूछा। "लेकिन अगर ऐसा है, तो भी क्या? मैं तो दोषी नहीं हूं।" और वह अगले दिन के बारे में सोचने लगा।

"कल सुबह ही जाऊंगा और पक्का इरादा कर लूंगा कि अपने को शांत रखूंगा। ढेरों-ढेर कुनाल हैं। बड़े कुनाल भी हैं। यहां लौटने पर कीटी का रुक़्क़ा मिलेगा। हां, स्तीवा शायद ठीक ही कहता है – मैं उसके साथ मर्द की तरह पेश नहीं आता, उसके इशारों पर नाचने लगा हूं... मगर क्या किया जाये! फिर नकारात्मक!"

नींद की गोद में जाते हुए लेविन को वेस्लोव्स्की और ओब्लोन्स्की की हंसी और ख़ुशीभरी आवाज़ें सुनाई देती रहीं। उसने घड़ी भर को आंखें खोलीं – चांद निकल आया था और खुले तथा चांदनी में बेहद चमकते दरवाज़े के पास खड़े हुए वे बातें कर रहे थे। ओब्लोन्स्की लड़की की ताज़गी के बारे में कुछ कह रहा था, ताज़ा-ताज़ा निकली हुई गिरी से उसकी तुलना कर रहा था, और वेस्लोव्स्की दूसरों को बरबस हंसा देनेवाली अपनी हंसी से हंसते हुए कुछ दोहरा रहा था, जो उससे शायद किसी किसान द्वारा कहे हुए शब्द थे – "अपनी बीवी के धोरे रहन का जतन करवो!" लेविन ने ऊंघते-ऊंघते कहा –

"महानुभावो, कल तड़के ही!" और सो गया।

लेविन बहुत सवेरे ही जाग गया और उसने अपने साथियों को जगाने की कोशिश की। वेस्लोव्स्की जुर्राब सहित एक टांग फैलाये हुए पेट के बल ऐसे गहरी नींद सोया पड़ा था कि उससे कोई जवाब हासिल करना ही मुमकिन नहीं था। ओब्लोन्स्की ने नींद में ही इतनी सुबह जाने से इन्कार कर दिया। यहां तक कि लास्का भी, जो सूखी घास के एक सिरे पर गुड़ीमुड़ी होकर सोई पड़ी थी, मन मारकर उठी और उसने बड़ी काहिली से एक-एक करके अपनी पिछली टांगों को फैलाया और सीधा किया। लेविन ने जूते पहने, बन्दूक़ ली और सायबान के चूं-चर्र करते दरवाज़े को सावधानी से खोलकर बाहर चला गया। कोचवान घोड़ा-गाड़ियों के पास सोये पड़े थे और घोड़े ऊंघ रहे थे। केवल एक घोड़ा धीरे-धीरे जई खा रहा था और फूंक से उसे नांद में इधर-उधर बिखरा रहा था। अहाते में अभी काफ़ी धुंधलका था।

"इत्ते भोरे काहे उठ गयो, बेटा?" झोंपड़े में से बाहर आनेवाली बूढ़ी मालकिन ने एक अच्छे और पुराने परिचित की भांति लेविन से स्नेहपूर्वक पूछा।

"शिकार के लिये जा रहा हूं, मौसी। यहां से दलदल में पहुंच जाऊंगा न?"

"झोंपड़ों के पीछे सीध में, हमार खलिहान के धोरे-धोरे सन के खेत तक जाव, वहां से पगडंडी सुरू होवत।"

संवलाये हुए नंगे पैरों से सावधानी से क़दम बढ़ाते हुए बुढ़िया लेविन को खलिहान तक छोड़ने चली गयी और वहां उसके रास्ते से बाड़ भी हटा दी।

"सीधे दलदल मांही पहुंच जावत। हमार लोग वहां रात को घोड़े चरावन गयो।"

लास्का ख़ुशी से पगडंडी पर आगे-आगे भागी जा रही थी। लेविन उसके पीछे-पीछे, हल्की और तेज़ चाल से चल रहा था तथा लगातार आसमान को ताकता जा रहा था। वह चाहता था कि उसके दलदल तक पहुंचने के पहले सूरज न चढ़े। लेकिन सूरज ने देर नहीं की। जब

वह बाहर निकला था, तो चांद चमक रहा था और अब पारे के टुकड़े की भांति केवल हल्की-सी आभा दिखा रहा था। भोर के तारे को पहले न देखना असम्भव था, किन्तु अब उसे खोजना ज़रूरी था। दूर के खेत में पहले जो अस्पष्ट-से धब्बे थे, अब बिल्कुल साफ़ नज़र आने लगे थे। वे रई की फ़सल के पूले थे। पराग-मुक्त हो चुके सन के ऊंचे, सुगन्धित पौधों के बीच सूरज की रोशनी के बिना नज़र न आनेवाली ओस लेविन के पांव और कमर से ऊपर तक उसकी क़मीज़ भिगो रही थी। प्रातःकाल की पारदर्शी नीरवता में हल्की आवाज़ भी सुनाई पड़ रही थी। एक मधुमक्खी गोली की तरह सनसनाती हुई लेविन के कान के पास से गुज़र गयी। ग़ौर से देखने पर उसे दूसरी और तोसरी मधुमक्खी दिखाई दी। ये सभी मधुमक्खी पालनशाला से उड़कर आ रही थीं और सन के खेत के ऊपर दलदल की दिशा में ग़ायब हो जाती थीं। पगडंडी उसे सीधे दलदल में ले गयी। दलदल को भाप से पहचाना जा सकता था, जो उसमें से कहीं घनी और कहीं हल्की-हल्की उठ रही थी और जिसके फलस्वरूप उसमें सरकंडे और सरपत की झाड़ियां द्वीपों की भांति डोलती-सी लग रही थीं। रात को घोड़े चरानेवाले लड़के और किसान दलदल तथा पगडंडी के सिरे पर लेटे हुए थे और पौ फटने के पहले वे सभी कोट ओढ़कर सो गये थे। पिछाड़ी बंधे हुए तीन घोड़े उनके पास ही घूम रहे थे। एक अपनी बेड़ी को खनखना रहा था। लास्का आगे जाने की अनुमति मांगती और मुड़ मुड़कर पीछे देखती हुई अपने मालिक के साथ-साथ जा रही थी। सोये हुए किसानों के पास से गुज़रने और दलदल के किनारे के बिल्कुल क़रीब पहुंचने पर लेविन ने कारतूसों की टोपियों की जांच की और लास्का को छूट दे दी। तीन साल का तगड़ा भूरा घोड़ा कुत्ते को देखकर उछल पड़ा और पूंछ ऊपर उठाकर हिनहिनाया। बाक़ी घोड़े भी डर गये और अपनी बंधी हुई टांगों से पानी में छपछपाते और फच-फच की आवाज़ के साथ गाढ़े कीचड़ में से अपने सुमों को बाहर निकालते हुए दलदल में से बाहर भागने लगे। लास्का रुककर घोड़ों की ओर उपहासपूर्ण और लेविन की तरफ़ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगी। लेविन ने लास्का को सहलाया और यह संकेत देने के लिये सीटी बजायी कि अपना काम शुरू कर सकती हो।

लास्का ख़ुश-ख़ुश और काम की चिन्ता करती हुई अपने पैरों के नीचे डोलती धसान पर भागने लगी।

दलदल में भागते ही लास्का ने जड़ों, दलदली घासों और ठहरे पानी की परिचित गन्धों तथा घोड़ों की लीद की अपरिचित गन्ध के बीच इस सारी जगह पर बसी हुई पक्षी की गन्ध, उसी पक्षी की विशेष गन्ध अनुभव की, जो उसे सबसे ज़्यादा उत्तेजित करती थी। कहीं-कहीं काई और दलदली भाड़ियों के बीच यह गन्ध बहुत तेज़ थी, मगर उसके लिये यह तय करना सम्भव नहीं था कि किस दिशा में वह तेज़ और किस में धीमी थी। दिशा मालूम करने के लिये हवा से दूर हटना ज़रूरी था। अपनी टांगों की गति को अनुभव न करते हुए लास्का तनाव के साथ ऐसे सरपट दौड़ती हुई कि ज़रूरत होने पर किसी भी छलांग के समय रुक सके, पूरब से आनेवाली सुबह की ठण्डी हवा से दूर दायें को चली गयी और हवा की ओर मुंह किया। नथुनों को चौड़ा करके हवा को सूंघते हुए उसने फ़ौरन यह महसूस कर लिया कि केवल पक्षियों के निशान ही नहीं, बल्कि वे ख़ुद भी यहां उसके सामने थे और सो भी एक नहीं, बहुत से। लास्का कुछ कम वेग से दौड़ने लगी। वे यहां थे, लेकिन किस जगह, वह अभी यह तय नहीं कर सकती थी। इसी जगह को ढूंढ़ पाने के लिये उसने चक्कर भी काटना शुरू कर दिया कि अचानक मालिक की आवाज़ ने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। "लास्का! इधर!" लेविन ने दूसरी ओर इशारा करते हुए कहा। वह मानो उससे यह पूछती हुई खड़ी रही कि जैसे उसने शुरू किया था, क्या वैसे ही अधिक अच्छा नहीं रहेगा। लेकिन मालिक ने ग़ुस्से से अपना आदेश दोहराया और पानी से ढके हुए टीले की ओर संकेत किया, जहां कुछ भी नहीं हो सकता था। लास्का ने उसकी बात मानी, यह ढोंग किया कि खोज रही है, उसे ख़ुश करने के लिये सारे टीले का चक्कर लगाकर फिर से पहलेवाली जगह पर आ गयी और फिर से फ़ौरन उन्हें अनुभव किया। अब जब मालिक उसके काम में बाधा नहीं डाल रहा था, तो उसे मालूम था कि क्या करना है और अपने नीचे देखे बिना, ऊंचे टीलों से ठोकर खाते और पानी में गिरते, किन्तु लचीली तथा मज़बूत टांगों की बदौलत स्थिति का सामना करते हुए उसने चक्कर काटना शुरू

किया, जिसे मामले को उसे स्पष्ट कर देना चाहिये था। पक्षियों की गन्ध अधिकाधिक तीव्र और स्पष्ट होती हुई उसे स्तम्भित कर रही थी और अचानक उसके लिये यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि उनमें से एक, यहीं, टीले के पीछे, पांच क़दमों की दूरी पर उसके सामने है और वह रुक गयी, उसने पूरी तरह दम साध लिया। अपनी छोटी टांगों के कारण वह अपने सामने कुछ भी देख नहीं सकती थी, किन्तु गन्ध से यह जानती थी कि वह पांच क़दमों से अधिक दूरी पर नहीं बैठा है। वह उसे अधिकाधिक अनुभव करती और प्रतीक्षा का आनन्द लेती हुई खड़ी थी। उसकी तनावपूर्ण पूंछ बिल्कुल सीधी थी और केवल सिरे पर ही तनिक कांप रही थीं। उसका मुंह ज़रा खुला हुआ था और कान खड़े थे। उसका एक कान दौड़ने के समय ही पीछे को मुड़ गया था और वह तेज़, किन्तु सावधानी से सांस ले रही थी और इससे भी अधिक सावधानी के साथ यानी सिर घुमाने के बजाय उसने आंखों से ही अपने मालिक की तरफ़ देखा। जाने-पहचाने चेहरे, किन्तु सदैव भयानक आंखोंवाला मालिक टीलों से ठोकरें खाता और जैसा कि लास्का को प्रतीत हुआ, बहुत ही धीमे-धीमे उसकी तरफ़ आ रहा था। लास्का को लग रहा था कि वह बेहद धीमी चाल से आ रहा है, जबकि लेविन भाग रहा था।

शिकार को खोजने के इस ख़ास ढंग की ओर ध्यान देते हुए, जब वह अपने सारे शरीर को ज़मीन से चिपकाये और मुंह को ज़रा खोले मानो पिछली टांगों को घसीटती प्रतीत होती है, लेविन समझ गया कि वह कुनालों की तरफ़ खिंच रही है, लेविन ने मन ही मन सफलता की, विशेषतः पहले पक्षी के शिकार की सफलता की प्रार्थना की और भागकर उसके पास पहुंचा। उसके बिल्कुल नज़दीक पहुंचने पर वह अपने सामने देखने लगा और अपनी ऊंचाई की बदौलत उसने आंखों से वह देखा, जो लास्का ने नाक से देखा था। टीलों के बीच की थोड़ी-सी जगह पर उसे एक बड़ा कुनाल दिखाई दिया। वह सिर घुमाये और आवाज़ पर कान लगाये था। कुछ देर बाद उसने अपने पंखों को थोड़ा फैलाया, उसे फिर से सिकोड़ कर अटपटे ढंग से पूंछ हिलाई और टीले के कोने के पीछे छिप गया।

"झपट लो, झपट लो," लास्का को पीछे से धकेलते हुए लेविन

चिल्लाया। "लेकिन मैं नहीं जा सकती," लास्का सोच रही थी। "कहां जाऊं मैं? यहां से मैं उन्हें महसूस कर रही हूं, लेकिन अगर मैं आगे बढ़ूंगी, तो कुछ भी समझ नहीं पाऊंगी कि वे कहां हैं और कौन हैं।" किन्तु लेविन ने उसे घुटने से धकेला और उत्तेजित फुस-फुसाहट में कहा –

"झपट लो, झपट लो!"

"अगर वह ऐसा ही चाहता है, तो मैं कर देती हूं, लेकिन अब मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं होगी," उसने सोचा और पूरे ज़ोर से टीलों के बीच आगे भाग चली। अब वह कुछ भी महसूस नहीं कर रही थी, कुछ भी समझे बिना सिर्फ़ देख और सुन रही थी।

पहले वाली जगह से कोई दस क़दम की दूरी पर से बड़े कुनाल की भारी आवाज़ और पंखों की ख़ास फड़फड़ाहट करते हुए एक बड़ा कुनाल उड़ा। गोली चलते ही वह सफ़ेद छाती के बल गीली धरती पर आ गिरा। दूसरे कुनाल ने भी प्रतीक्षा नहीं की और कुत्ते द्वारा डराये जाने के बिना ही लेविन के पीछे से उड़ चला।

लेविन जब उसकी ओर मुड़ा, तो वह दूर जा चुका था। किन्तु उसकी गोली उसे जा लगी। कोई बीस क़दम तक उड़ने के बाद वह तेज़ी से ऊपर को उठा और फिर चक्कर काटता तथा हवा में फेंके हुए गेंद की तरह सूखी जगह पर नीचे आ गिरा।

"अब बात बनेगी!" गर्म शरीर वाले मोटे-मोटे कुनाल थैले में डालते हुए लेविन ने सोचा। "क्यों लास्का, बात बनेगी न?"

बन्दूक़ में गोलियां भरने के बाद लेविन जब आगे चला, तो सूरज, जो बेशक बादलों के पीछे होने के कारण दिखाई नहीं दे रहा था, चढ़ चुका था। दूज का चांद अपनी पूरी चमक खोकर सफ़ेद बादल की तरह आसमान में दिख रहा था और एक भी सितारा नज़र नहीं आ रहा था। दलदली घासें, जो पहले ओस के कारण रुपहली लग रही थीं, अब सुनहरी हो गयी थीं। गेरुआ पानी पीला हो गया था। नीली घासों ने पीला-हरित रंग धारण कर लिया था। दलदली पक्षी ओस से चमकने और नदी के पास लम्बी-लम्बी परछाइयां डालनेवाली झाड़ियों में फुदक रहे थे। बाज़ जाग उठा था और एक पूले पर बैठा दायें-बायें सिर घुमाता हुआ नाराज़गी से दलदल को ताक रहा था।

डोम कौए खेतों की ओर उड़ रहे थे और एक नंगे पांव छोकरा घोड़ों को उस बूढ़े की तरफ़ हांक रहा था, जो कोट के नीचे से उठकर बैठ गया था और अपने को खुजला रहा था। गोलियां चलने से निकला हुआ धुआं हरी घास के ऊपर सफ़ेद दूध की तरह फैला हुआ था।

लड़कों में से एक भागकर लेविन के पास आया।

"चाचा, कल यहां बत्तखें थीं!" उसने चिल्लाकर लेविन से कहा और कुछ दूरी पर उसके पीछे-पीछे चलता रहा।

लेविन को इस लड़के के सामने, जो उसके काम का अनुमोदन कर रहा था, एक के बाद एक, तीन कुनालों को मारकर और भी ज़्यादा ख़ुशी हुई।

(१३)

शिकारियों का यह कहना कि अगर पहला जानवर और पहला पक्षी हाथ से नहीं निकलेगा, तो शिकार बढ़िया रहेगा, ठीक साबित हुआ।

थका-हारा, भूखा-प्यासा और बहुत ही ख़ुश लेविन तीसेक वेर्स्ता का चक्कर काटकर और उन्नीस कुनाल तथा एक जंगली बत्तख़ का शिकार करके, जिसे उसने पेटी से बांध लिया था, क्योंकि थैले में उसके लिये जगह नहीं थी, सुबह के कोई दसेक बजे घर लौटा। उसके साथी कभी के जाग चुके थे, बेहद भूख महसूस करके नाश्ता भी कर चुके थे।

"रुको, रुको, मुझे मालूम है कि उन्नीस हैं," लेविन ने कुनालों और बड़े कुनालों को दुबारा गिनते हुए कहा। वे अब उड़ान के समय की भांति सुन्दर नहीं लग रहे थे और मुड़मुड़ा तथा सिमट-सिमटा गये थे, उनपर ख़ून के धब्बे लगे हुए थे और उनके सिर एक ओर को लटके हुए थे।

गिनती सही थी और ओब्लोन्स्की की ईर्ष्या लेविन को अच्छी लगी। घर लौटने पर कीटी का रुक़्क़ा मिलने से भी उसे ख़ुशी हुई।

"मैं बिल्कुल स्वस्थ और ख़ुश हूं। अगर तुम मेरे कारण चिन्तित हो, तो पहले से भी अधिक निश्चिन्त हो सकते हो। मेरी एक नयी

अंग-रक्षिका आ गयी है – मारीया व्लास्येव्ना" (यह दाई और लेविन के पारिवारिक जीवन में एक नयी और महत्वपूर्ण व्यक्ति थी)। "वह मुझे देखने आई है। उसने मुझे पूरी तरह स्वस्थ पाया और हमने तुम्हारे आने तक उसे यहीं रोक लिया है। सभी मज़े में और स्वस्थ हैं तथा तुम कृपया लौटने की जल्दी नहीं करो। अगर शिकार अच्छा हो रहा है, तो एक दिन और रुक जाना।"

बढ़िया शिकार और बीवी का रुक्क़ा ये दो ऐसी बड़ी ख़ुशियां थीं कि इसके बाद होनेवाली दो अप्रिय बातों से लेविन बहुत क्षुब्ध नहीं हुआ। पहली अप्रिय बात तो यह थी कि बग़ल में जुतनेवाला लाल घोड़ा, जिससे स्पष्टतः पिछले दिन बहुत ज़्यादा काम लिया गया था, चारा नहीं खा रहा था और बड़ा उदास-सा था। कोचवान का कहना था कि उसे बहुत थका दिया गया है।

"कल उसे ख़ूब दौड़ाया गया, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच," उसने कहा। "दस वेर्स्ता तक बुरी तरह दौड़ाते रहे!"

दूसरी अप्रिय बात, जिसने शुरू में उसका मूड ख़राब किया, लेकिन जिस पर बाद में वह बेहद हंसता रहा, यह थी कि कीटी द्वारा बहुत बड़े परिमाण में दी गयी खाने-पीने की चीज़ों में से, जो, ऐसा लगता था, कि हफ़्ते भर में भी नहीं खायी जा सकेंगी, कुछ भी बाक़ी नहीं बचा था। शिकार से थका-हारा और भूखा-प्यासा लौटनेवाला लेविन कचौड़ियों की इतनी स्पष्ट कल्पना कर रहा था कि घर के निकट पहुंचने पर वह उनकी वैसे ही गन्ध महसूस करने लगा, जैसे लास्का शिकार की, तथा उसे अपने मुंह में उनके ज़ायके की भी अनुभूति होने लगी। उसने फ़िलिप से फ़ौरन कचौड़ियां लाने को कहा। किन्तु पता चला कि कचौड़ियां ही नहीं, चूज़े भी खाये जा चुके थे।

"क्या भूख है उसकी!" ओब्लोन्स्की ने हंसते और वेस्लोव्स्की की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। "यों भूख तो मुझे भी कुछ कम नहीं लगती, लेकिन वह तो हद ही है..."

"तो क्या हो सकता है!" लेविन ने उदासी से वेस्लोव्स्की की तरफ़ देखते हुए कहा। "फ़िलिप, तो मांस ही लाओ।"

"वह भी खाया जा चुका है और हड्डियां मैंने कुत्तों को दे दीं," फ़िलिप ने जवाब दिया।

लेविन को बहुत बुरा लगा और उसने झल्लाकर कहा:

"कुछ तो मेरे लिये भी छोड़ दिया होता!" और उसका रोने को मन हुआ।

"तो शिकार निकाल कर ही साफ़ करो," उसने वेस्लोव्स्की की तरफ़ न देखने की कोशिश करते हुए कांपती आवाज़ में फ़िलिप से कहा, "और उन पर बिच्छूबूटी भी डाल देना। मेरे लिये और कुछ नहीं, तो दूध ही ला दो।"

दूध से पेट भर लेने के बाद उसे इस बात की शर्म महसूस हुई कि उसने एक पराये आदमी के सामने इस तरह अपनी झल्लाहट ज़ाहिर की और वह भूख के कारण आनेवाले अपने ग़ुस्से का मज़ाक़ उड़ाने लगा।

शाम को वे फिर शिकार के लिये गये और तब वेस्लोव्स्की ने भी कुछ कुनाल मार लिये। रात को वे घर के लिये रवाना हो गये।

दलदलों की ओर आने की तरह ही वापसी का रास्ता भी ख़ूब हंसी-ख़ुशी भरा रहा। वेस्लोव्स्की कभी गाता, तो कभी बड़े चटख़ारे ले लेकर उन किसानों के साथ अपनी संगत का हाल सुनाता, जिन्होंने उसे वोदका पिलाई थी और कहा था "बुरो नहीं मानत, सरकार", या फिर रात को "गिरियों" और किसान छोकरियों और उस किसान से अपनी भेंट का क़िस्सा सुनाता, जिसने उससे पूछा था कि वह शादी-शुदा है या नहीं तथा यह जानकर कि अविवाहित है, कहा था — "दूजन की बीवियों को काहे देखत-फिरत, जतन कर अपनी लाइवो।" इन शब्दों से वेस्लोव्स्की को ख़ास तौर पर बहुत हंसी आती थी।

"कुल मिलाकर मैं अपनी इस यात्रा से बेहद ख़ुश हूं। और लेविन आप?"

"मैं बहुत ख़ुश हूं," लेविन ने सच्चे दिल से कहा। उसे इस बात की विशेष रूप से प्रसन्नता हो रही थी कि वह केवल वेस्लोव्स्की के प्रति घर पर अनुभव होनेवाला शत्रु भाव ही नहीं, बल्कि, इसके विपरीत, बहुत ही मित्रता अनुभव कर रहा था।

अगले दिन अपने खेत-खलिहान, आदि का चक्कर लगाने के बाद सुबह के दस बजे लेविन ने वेस्लोव्स्की के कमरे पर दस्तक दी।

"Entrez,*" वेस्लोव्स्की ने ऊंची आवाज़ में कहा। "आप मुझे माफ़ करें, मैंने अभी-अभी ablutions** समाप्त किया है," केवल अंडरवीयर में उसके सामने खड़े हुए वेस्लोव्स्की ने मुस्कराकर कहा।

"कृपया शर्माइये नहीं," लेविन खिड़की के क़रीब बैठ गया। "आप अच्छी तरह सोये न?"

"मुर्दे की तरह। आज शिकार के लिये कितना बढ़िया दिन है!"

"आप चाय पीते हैं या कॉफ़ी?"

"कुछ भी नहीं। मैं नाश्ता करता हूं। मुझे तो सचमुच शर्म आ रही है। मेरे ख़्याल में महिलायें उठ भी गयी होंगी? अब थोड़ा घूम लेना अच्छा रहेगा। आप मुझे अपने घोड़े दिखाइये।"

बाग़ में घूमने, घुड़शाला में जाने और उसके साथ समानान्तर डंडों पर व्यायाम भी करने के बाद लेविन अपने मेहमान को लिये हुए घर लौटा और उसके साथ मेहमानख़ाने में गया।

"शिकार ख़ूब बढ़िया रहा और दिल पर कितनी छापें पड़ी हैं!" वेस्लोव्स्की ने कीटी के पास जाते हुए, जो समोवार के निकट बैठी थी, कहा। "कितने अफ़सोस की बात है कि महिलायें ऐसी ख़ुशियों से वंचित हैं।"

"इसमें क्या बात है, उसे घर की मालकिन से कुछ तो कहना ही चाहिये," लेविन ने अपने आपसे कहा। उसे वेस्लोव्स्की की मुस्कान, उस विजेता जैसी अभिव्यक्ति में, जिसके साथ उसने कीटी को सम्बोधित किया, फिर कुछ बुरा लगा...

कीटी की मां मेज़ के दूसरे सिरे पर दाई मारीया व्लास्येव्ना और ओब्लोन्स्की के साथ बैठी थीं। उन्होंने लेविन को अपने पास बुला लिया और उसके साथ कीटी के बच्चा जनने के लिये मास्को जाने

---

* भीतर आ जाइये। (फ़्रांसीसी)

** नहाना-धोना। (फ़्रांसीसी)

और इस उद्देश्य से वहां घर तैयार करने की चर्चा करने लगीं। जिस तरह विवाह की सभी तैयारियां लेविन को अप्रिय लगती थीं, क्योंकि वे अपनी तुच्छता से विवाह की गरिमा को तिरस्कारपूर्ण बनाती थीं, भावी शिशु-जन्म (जिसकी तिथि का हिसाब वे उंगलियों पर लगा लेती थीं) की तैयारियां उसे और भी अधिक तिरस्कारपूर्ण प्रतीत होती थीं। वह भावी शिशु को लपेटने के ढंग से सम्बन्धित बातचीत की ओर कान न देने की कोशिश करता और निरन्तर बुनी जानेवाली पट्टियों तथा लिनन से बनाये जानेवाले तिकोणों की ओर से नज़र चुराने का प्रयास करता, जिन्हें डौली बहुत अधिक महत्त्व देती थी। बेटे के जन्म की घटना (उसे विश्वास था कि बेटा ही होगा), जिसका उसे आश्वासन दिया जा रहा था, किन्तु जिसका अभी उसे यक़ीन नहीं होता था – इतनी असाधारण बात लगती थी यह – उसको एक ओर तो इतनी अपार और इसलिये असम्भव ख़ुशी प्रतीत होती थी, और दूसरी ओर इतनी रहस्यपूर्ण बात मालूम होती थी कि जो होनेवाला है, उसकी जानकारी को स्वीकार कर लेना और इसके फलस्वरूप एक साधारण और ख़ुद लोगों के हाथों से बनायी जानेवाली चीज़ की तरह उसकी तैयारी करना उसे घृणित और तिरस्कारपूर्ण लग रहा था।

किन्तु कीटी की मां उसकी भावनाओं को नहीं समझती थीं और इस बारे में लेविन के सोचने तथा बात करने की अनिच्छा को उसकी उदासीनता तथा विचारहीनता मानती थीं और इसलिये उसे चैन नहीं लेने देती थीं। उन्होंने ओब्लोन्स्की को फ़्लैट ढूंढ़ने का काम सौंप दिया था और अब लेविन को अपने पास बुलाया।

"मैं कुछ नहीं जानता, प्रिंसेस। जैसा चाहें, वैसा करें," लेविन ने कहा।

"यह तय करना चाहिये कि आप लोग कब वहां आयेंगे।"

"सच मानिये, मैं यह नहीं जानता। मैं जानता हूं कि मास्को और डाक्टरों के बिना लाखों-करोड़ों बच्चे पैदा होते हैं... फिर किसलिये..."

"अगर ऐसी बात है, तो..."

"नहीं, जैसा कीटी चाहे।"

"कीटी के साथ इस बात की चर्चा नहीं की जा सकती! तुम क्या चाहते हो कि मैं उसे डरा दूं? इस वसन्त में निकम्मी दाई के कारण नताल्या गोलीत्सिना की मौत हो गयी।"

"आप जैसा कहेंगी, मैं वैसा ही करूंगा," उसने उदासी से जवाब दिया।

प्रिंसेस उसे कुछ बताने लगीं, मगर वह उनकी बातों पर कान नहीं दे रहा था। यह सही है कि प्रिंसेस की बातों से उसे कुछ बुरा लग रहा था, किन्तु इस बातचीत से नहीं, बल्कि समोवार के पास जो हो रहा था, उसे देखकर उसका मूड बिगड़ रहा था।

"नहीं, यह बर्दाश्त नहीं हो सकता," वह कीटी पर झुके तथा अपनी मधुर मुस्कान के साथ उससे कुछ कहते वेस्लोव्स्की तथा लज्जारुण और भाव-विह्वल होती हुई कीटी पर कभी-कभी नज़र डालते हुए मन ही मन सोच रहा था।

वेस्लोव्स्की की मुद्रा, उसकी नज़र और मुस्कान में कुछ शक पैदा करनेवाली चीज़ थी। लेविन को कीटी की नज़र में भी कुछ ऐसा भोंडापन-सा नज़र आया। फिर से उसके लिये दुनिया में अंधेरा ही अंधेरा हो गया। फिर पिछले दिन की तरह थोड़ी-सी चेतावनी के बिना उसने अपने को अचानक सौभाग्य, चैन और गरिमा के शिखर से हताशा, क्रोध और अपमान के गर्त में फेंका हुआ पाया। फिर से सभी और हर चीज़ उसके लिये घृणित हो गयी।

"जैसा चाहती हैं वैसा ही कीजिये, प्रिंसेस," उसने फिर से उधर देखते हुए कहा।

"सिर पर ताज रखनेवाले को चैन नहीं मिलता!" ओब्लोन्स्की ने मज़ाक़ करते हुए कहा। उसने स्पष्टतः प्रिंसेस के साथ बातचीत की तरफ़ ही नहीं, बल्कि लेविन की बेचैनी के कारण की ओर भी इशारा किया, जिसकी तरफ़ उसका ध्यान गया था। "कितनी देर कर दी तुमने आज डौली।"

सभी डौली के स्वागत के लिये खड़े हुए। वेस्लोव्स्की क्षण भर को उठा और नयी पीढ़ी के युवजन के एक लक्षण के अनुरूप महिलाओं के प्रति आदरभाव की कमी दिखाकर, उसने तनिक सिर झुकाया और किसी बात पर हंसते हुए फिर से अपनी बात जारी रखी।

"मुझे माशा ने तंग कर डाला। पिछली रात वह चैन से नहीं सोई और मचलती रही," डौली ने कहा।

वेस्लोव्स्की ने कीटी के साथ फिर आन्ना के बारे में इस सम्बन्ध में पिछले दिन वाली बातचीत शुरू की थी कि क्या प्यार ऊंचे समाज की परिस्थितियों की अवहेलना कर सकता है या नहीं। कीटी को यह बातचीत अच्छी नहीं लग रही थी। इसका विषय और वह अन्दाज़, जिसमें यह बातचीत हो रही थी, तथा ख़ास तौर पर इसलिये भी यह उसे उद्वेलित कर रही थी कि पति पर होनेवाले इसके प्रभाव को वह जानती थी। लेकिन वह इतनी निश्छल और सरल-हृदय थी कि इस बातचीत को बन्द नहीं कर सकती थी। वह तो उस ऊपरी ख़ुशी को भी नहीं छिपा सकती थी, जो इस नौजवान द्वारा उसकी स्पष्ट प्रशंसा से उसे प्राप्त हो रही थी। वह इस बातचीत को बन्द करना चाहती थी, किन्तु नहीं जानती थी कि क्या करे। उसे मालूम था कि वह जो कुछ भी करेगी, पति की नज़र से बचा नहीं रहेगा और वह उसका बुरा ही अर्थ लगायेगा। वास्तव में ही, जब उसने डौली से यह पूछा कि माशा को क्या हुआ है, और वेस्लोव्स्की ने यह प्रतीक्षा करते हुए कि उसके लिये यह ऊबभरी बात कब ख़त्म होती है, डौली की ओर उदासीनता से देखना शुरू कर दिया, तो लेविन को कीटी का यह प्रश्न अस्वाभाविक और घृणित धूर्त्तता-सा प्रतीत हुआ।

"तो क्या आज हम खुमियां बटोरने चलेंगी?" डौली ने पूछा।

"कृपया चलिये, मैं भी चलूंगी," कीटी ने कहा और उसके चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ गयी। उसने शिष्टतावश वेस्लोव्स्की से यह पूछना चाहा कि वह चलेगा या नहीं, मगर ऐसा नहीं किया। "तुम किधर चल दिये कोस्त्या?" जब वह दृढ़ क़दमों से उसके क़रीब से गुज़र रहा था, तो कीटी ने अपराधी की सी सूरत से यह प्रश्न किया। कीटी के चेहरे पर दिखनेवाले अपराधी के से भाव ने उसके सभी सन्देहों की पुष्टि कर दी।

"मेरी अनुपस्थिति में मिस्तरी यहां आ गया था, मैं अभी तक उससे नहीं मिला," कीटी की ओर देखे बिना उसने उत्तर दिया।

वह नीचे उतर गया, मगर अभी अपने अध्ययन कक्ष से बाहर

नहीं गया था कि उसे पत्नी के जाने-पहचाने, असावधानी और तेज़ी से अपनी ओर आते क़दमों की चाप सुनाई दी।

"क्या बात है?" लेविन ने रुखाई से पूछा। "हम व्यस्त हैं।"

"क्षमा चाहती हूं," उसने जर्मन मिस्तरी को सम्बोधित किया, "मुझे पति से थोड़ी बातचीत करनी है।"

जर्मन ने बाहर जाना चाहा, किन्तु लेविन ने उससे कहा –

"आप तक़लीफ़ नहीं कीजिये।"

"गाड़ी तीन बजे जाती है न?" जर्मन ने पूछा। "कहीं देर न हो जाये।"

लेविन ने जर्मन मिस्तरी को कोई जवाब नहीं दिया और ख़ुद पत्नी के साथ बाहर चला गया।

"तो आप क्या कहना चाहती हैं मुझसे?" लेविन ने फ़्रांसीसी में कहना शुरू किया।

लेविन उसके चेहरे की तरफ़ नहीं देख रहा था और यह देखना भी नहीं चाहता था कि कीटी अपनी इस समय की स्थिति में सिर से पांव तक कांप रही थी और उसकी सूरत बहुत ही दयनीय और दीन-सी लग रही थी।

"मैं... मैं यह कहना चाहती हूं कि ऐसे जीना सम्भव नहीं, कि यह यातना है," वह कह उठी।

"यहां भण्डारघर में लोग-बाग हैं," उसने झल्लाकर कहा, "तमाशा नहीं करो।"

"तो आओ, इधर चलें!"

वे बीच वाले कमरे में खड़े थे। कीटी ने बग़ल वाले कमरे में जाना चाहा। किन्तु वहां अंग्रेज़ शिक्षिका तान्या को पढ़ा रही थी।

"तो बाग़ में चलते हैं!"

बाग़ में पगडंडी को साफ़ करता हुआ एक किसान सामने आ गया। इस बात के बारे में सोचे बिना कि किसान कीटी का आंसुओं से भीगा और उसका उत्तेजित चेहरा देखेगा, यह चिन्ता किये बिना कि वे किसी दुर्भाग्य से दूर भागे जाते जैसे लोगों के समान लगते हैं, वे यह अनुभव करते हुए तेज़ क़दमों से आगे बढ़े जा रहे थे कि उन्हें खुलकर बात कर लेनी चाहिये, ग़लतफ़हमी को दूर करना चाहिये,

दोनों को अकेले एकसाथ होना चाहिये और इस तरह उस यातना से मुक्ति पानी चाहिये, जो वे अनुभव कर रहे थे।

"ऐसे जीना सम्भव नहीं! यह तो यातना है। मैं यातना सहती हूं, तुम यातना सहते हो। किसलिये?" कीटी ने कहा, जब वे आखिर लाइम वृक्षों की वीथी के सिरे पर एकान्त में रखी बेंच के पास पहुंच गये।

"लेकिन तुम मुझे एक बात बताओ – उसके अन्दाज़ में कुछ अशिष्ट, घटिया और भयानक रूप से घटिया था न?" लेविन ने कीटी के सामने उसी मुद्रा में, उसी तरह छाती पर मुट्ठियां बांधकर खड़े हुए पूछा, जैसे उसने वेस्लोव्स्की के आने की रात को किया था।

"हां, था," कीटी ने कांपती आवाज़ में जवाब दिया। "लेकिन कोस्त्या, क्या तुम यह नहीं देखते कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं? मैं तो सुबह से ही ऐसा अन्दाज़ अपनाना चाहती थी, मगर ये लोग... किसलिये वह यहां आया? कितने सुखी थे हम दोनों!" उसने रुंधे जाते कण्ठ से कहा। सिसकियों के कारण उसका गर्भावस्था का सारा शरीर ऊपर उठ रहा था।

माली को यह देखकर हैरानी हुई कि यद्यपि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा था और उन्हें किसी से भागना नहीं था और इस बेंच पर उन्हें विशेष रूप से सुखद भी कुछ नहीं मिल सकता था, फिर भी वे शान्त और खिले हुए चेहरों के साथ उसके पास से गुज़र कर घर को गये।

(१५)

पत्नी को ऊपर पहुंचाकर लेविन घर के उस भाग में गया, जहां डौली रह रही थी। डौली भी किसी कारणवश इस दिन बहुत क्षुब्ध थी। वह कमरे में चक्कर काटती हुई कोने में खड़ी तथा आंसू बहाती बेटी को डांट रही थी –

"दिन भर कोने में खड़ी रहेगी, खाना भी अकेली ही खायेगी, खेलने को एक भी गुड़िया नहीं मिलेगी और तुझे नया फ़ाक भी सीकर नहीं दूंगी," यह न जानते हुए कि उसे क्या सज़ा दे, वह कह रही थी।

"नहीं, यह तो बहुत ही बुरी लड़की है!" उसने लेविन को

सम्बोधित करते हुए कहा। "न जाने उसमें कहां से ऐसे घिनौने रुझान पैदा हो रहे हैं?"

"लेकिन उसने किया क्या है?" लेविन ने उदासीनता से पूछा क्योंकि वह अपने मामले के बारे में सलाह करना चाहता था और इसलिये उसे बुरा लग रहा था कि ग़लत वक़्त पर यहां आ गया है।

"यह और ग्रीशा रस्पबेरियां बटोरने गये थे और वहां... मैं तो बता भी नहीं सकती कि उसने क्या किया। बहुत ही अफ़सोस होता है कि miss Elliot यहां नहीं है। यह तो किसी भी चीज़ की तरफ़ ध्यान नहीं देती, निरी मशीन है... Figurez vous, que la petite...*

और डौली ने बच्ची का अपराध कह सुनाया।

"इससे कुछ भी साबित नहीं होता, इसमें घिनौने रुझानों की तो कोई बात नहीं, यह तो सिर्फ़ शरारत है," लेविन ने उसे शान्त करते हुए कहा।

"लेकिन तुम कुछ परेशान से दिखते हो? किसलिये आये हो?" डौली ने पूछा। "वहां क्या हो रहा है?"

यह सवाल करने के अन्दाज़ से लेविन समझ गया कि उसके लिये वह बताना मुश्किल नहीं होगा, जो वह बताना चाहता था।

"मैं वहां नहीं गया, मैं कीटी के साथ बाग़ में था। जब से... स्तीवा आया है, हमारे बीच तब से दूसरी बार झगड़ा हो चुका है।"

डौली ने बुद्धिमत्तापूर्ण और मन की बात समझनेवाली आंखों से उसकी तरफ़ देखा।

"तुम अपने दिल पर हाथ रखकर कहो कि... कीटी के नहीं, बल्कि इस महानुभाव के अन्दाज़ में कुछ ऐसा था जो किसी पति के लिये अप्रिय, नहीं, अप्रिय नहीं, बहुत घिनौना, बहुत तिरस्कारपूर्ण हो सकता है?"

"समझ नहीं पा रही कि तुम से कैसे कहूं... खड़ी रहो, खड़ी रहो कोने में!" डौली ने माशा से कहा, जो मां के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान देखकर दूसरी ओर घूमना चाहती थी। "ऊंचे समाज के मतानुसार तो वह वैसा ही व्यवहार कर रहा है, जैसा सब जवान लोग करते

---

* कल्पना कीजिये कि यह लड़की... (फ़्रांसीसी)

हैं। Il fait la cour à une jeune et jolie femme,* और ऊंचे समाज के पति के लिये यह शान की बात होनी चाहिये।"

"हां, हां," लेविन ने मुरझाते हुए कहा, "लेकिन तुमने इसकी ओर ध्यान दिया न?"

"मैंने ही नहीं, स्तीवा का भी इस तरफ़ ध्यान गया। उसने चाय के बाद मुझसे साफ़ शब्दों में कहा: je crois que वेस्लोव्स्की fait un petit brin de cour à कीटी।** "

"बहुत ख़ूब, अब मुझे चैन पड़ गया। मैं उसे यहां से भगा दूंगा," लेविन ने कहा।

"तुम क्या पागल हुए हो?" डौली घबराकर चिल्ला उठी। "यह तुम क्या कह रहे हो कोस्त्या, होश में आओ!" डौली ने हंसते हुए कहा। "अब तुम फ़ैनी के पास जा सकती हो," उसने माशा से कहा। "नहीं, अगर तुम चाहते हो, तो मैं स्तीवा से कह दूंगी। वह उसे यहां से ले जायेगा। यह कहा जा सकता है कि तुम्हारे यहां मेहमान आनेवाले हैं। वैसे भी वह हमारे घर के वातावरण के अनुकूल नहीं है।"

"नहीं, नहीं, मैं ख़ुद यह करूंगा।"

"लेकिन तुम झगड़ा कर लोगे?.."

"बिल्कुल नहीं। मुझे ऐसा करने में मज़ा आयेगा," वास्तव में ही ख़ुशी से आंखें चमकाते हुए लेविन ने कहा। "तुम इसे माफ़ कर दो, डौली। अब वह ऐसी हरकत नहीं करेगी," उसने छोटी-सी अपराधिनी के बारे में कहा, जो फ़ैनी के पास नहीं गयी थी और भौंहें चढ़ाये हुए, डांवांडोल मन से मां के सामने खड़ी थी और उससे नज़र मिलने की प्रतीक्षा कर रही थी।

मां ने उसकी तरफ़ देखा। बच्ची सुबक-सुबककर रोने लगी और उसने मां के घुटनों के बीच अपना सिर छिपा लिया। डौली ने अपना दुबला-पतला और कोमल हाथ उसके सिर पर रख दिया।

---

* वह जवान और सुन्दर नारी के प्रति प्रेम-प्रदर्शन कर रहा है। (फ़्रांसीसी)

** मेरे ख़्याल में वेस्लोव्स्की कुछ-कुछ कीटी के आगे-पीछे घूम रहा है। (फ़्रांसीसी)

"हमारे और उसके बीच साझा ही क्या है?" लेविन ने सोचा और वेस्लोव्स्की को ढूंढ़ने चल दिया।

ड्योढ़ी लांघते ही उसने स्टेशन जाने के लिये बग्घी जोतने का आदेश दिया।

"कल एक स्प्रिंग टूट गया था," नौकर ने जवाब दिया।

"तो टमटम जोतने को कहो, जल्दी से। मेहमान कहां है?"

"वे अपने कमरे में गये हैं।"

लेविन उस वक़्त वेस्लोव्स्की के पास पहुंचा, जब वह सूटकेस से अपनी चीज़ें निकालने तथा नये प्रेम-गीतों को अपने सामने फैलाने के बाद घुड़सवारी करने के लिये चमड़े का पायताबा माप रहा था।

लेविन के चेहरे पर कोई विशेष भाव था या ख़ुद वेस्लोव्स्की ने यह महसूस कर लिया कि ce petit brin de cour,* जो उसने की है, इस घर में उचित नहीं है, किन्तु लेविन के ऐसे आने से वह कुछ (जितना कि ऊंचे समाज के आदमी के लिये सम्भव हो सकता है) परेशान ज़रूर हो उठा था।

"आप चमड़े का पायताबा पहनकर घुड़सवारी करते हैं?"

"हां, इससे कहीं ज़्यादा सफ़ाई रहती है," वेस्लोव्स्की ने अपनी मोटी टांग को कुर्सी पर रखकर नीचे वाली हुक अटकाते और नेकदिली तथा ख़ुशमिज़ाजी से मुस्कराते हुए कहा।

वह निश्चय ही भला नौजवान था और वेस्लोव्स्की की आंखों में कातरता देखकर उसे उस पर दया और गृह-स्वामी होने के नाते अपने पर शर्म आई।

मेज़ पर डंडे का वह टुकड़ा पड़ा था, जिसे उन्होंने सुबह कसरत के वक़्त टेढ़े हुए समानान्तर डंडों को सीधा करने की कोशिश में तोड़ दिया था। लेविन ने यह टुकड़ा उठा लिया और यह न समझ पाते हुए कि कैसे बात शुरू करे, उसके फटे हुए सिरे को तोड़ने लगा।

"मैं चाहता था..." वह चुप हो गया, लेकिन अचानक कीटी और जो कुछ हुआ था, उसका ध्यान आने पर उसने दृढ़ता से उसकी आंखों में देखते हुए कहा: "मैंने आपके लिये घोड़े जोतने को कह दिया है।"

---

* **थोड़ी चोंचलेबाज़ी। (फ़ांसीसी)**

"क्या मतलब?" वेस्लोव्स्की ने हैरानी से कहना शुरू किया। "कहां जाने के लिये?"

"आपको स्टेशन पर पहुंचाने के लिये," डंडे के सिरे को तोड़ते हुए लेविन ने उदासी से जवाब दिया।

"आप कहीं जा रहे हैं या कोई दूसरी बात हो गयी है?"

"हुआ यह है कि मेरे यहां मेहमान आनेवाले हैं," लेविन अपनी मज़बूत उंगलियों से डंडे के फटे सिरे को जल्दी-जल्दी तोड़ता जा रहा था। "मेहमान नहीं आ रहे हैं, कुछ हुआ भी नहीं है, लेकिन मैं आपसे जाने का अनुरोध करता हूं। मेरी अशिष्टता का आप जो भी चाहें, अर्थ लगा सकते हैं।"

वेस्लोव्स्की सीधा हुआ।

"मैं आपसे इस बात को स्पष्ट करने की प्रार्थना करता हूं..." मामले को आख़िर समझने पर उसने गरिमा से कहा।

"मैं स्पष्ट नहीं कर सकता," लेविन ने अपने कांपते जबड़े को छिपाने की कोशिश करते हुए धीमी आवाज़ में धीरे-धीरे उत्तर दिया। "यही ज़्यादा अच्छा होगा कि आप ऐसा करने को न कहें।"

चूंकि डंडे के फटे हुए सारे सिरे तोड़े जा चुके थे इसलिये लेविन ने उसके मोटे सिरे को उंगलियों से कसकर पकड़ लिया, डंडे के दो टुकड़े किये और नीचे गिरते सिरे को फुर्ती से पकड़ लिया।

सम्भवत: लेविन के तनावपूर्ण हाथों, सुबह व्यायाम के समय छूकर देखी मांस-पेशियों, चमकती आंखों, धीमी आवाज़ और कांपते जबड़े पर नज़र डाल लेने से शब्दों के बिना ही सब कुछ स्पष्ट हो गया। वेस्लोव्स्की ने कंधे झटके और तिरस्कारपूर्वक मुस्कराकर सिर झुका दिया।

"मैं ओब्लोन्स्की से मिल सकता हूं?"

वेस्लोव्स्की के कंधे झटकने और मुस्कराने से लेविन झल्लाया नहीं। "इसके सिवा वह कर ही क्या सकता है?" उसने सोचा।

"मैं अभी उसे आपके पास भेज देता हूं।"

"यह क्या पागलपन है!" दोस्त से यह मालूम होने पर कि उसे घर से निकाला जा रहा है तथा लेविन को बाग़ में ढूंढ़कर, जहां वह मेहमान के जाने की राह देख रहा था, ओब्लोन्स्की ने उससे कहा।

"Mais c'est ridicule! * तुम्हें किस कुत्ते ने काटा है? Mais c'est du dernier ridicule! ** तुम्हें क्या प्रतीत हुआ अगर उस नौजवान ने..."

किन्तु लेविन को कुत्ते ने जिस जगह काटा था, वह शायद अभी भी टीस रही थी और इसलिये ओब्लोन्स्की ने जब कारण स्पष्ट करवाना चाहा तो लेविन के चेहरे का फिर से रंग उड़ गया और उसने उसे फ़ौरन टोकते हुए कहा –

"कृपया कारण स्पष्ट नहीं करो! मैं इसके सिवा कुछ कर नहीं सकता। मैं तुम्हारे और उसके सामने बेहद शरमिंदा हूं। लेकिन मैं समझता हूं कि उसे यहां से जाने पर बहुत दुख नहीं होगा और मुझे तथा मेरी पत्नी को उसकी उपस्थिति खटकती है।"

"किन्तु यह उसका अपमान है! Et puis c'est ridicule***"

"और मेरे लिये अपमानजनक और यातनापूर्ण भी है! फिर मेरा तो कोई दोष ही नहीं है और मैं किसलिये यह व्यथा सहन करूं!"

"तुमसे ऐसी आशा तो मैंने कभी नहीं की थी! On peut être jaloux mais à ce point, c'est du dernier ridicule!****"

लेविन जल्दी से मुड़ा और स्तीवा से दूर वीथी पर चला गया और वहां अकेला ही इधर-उधर टहलने लगा। जल्द ही उसे टमटम की खड़खड़ाहट सुनाई दी और उसनें वृक्षों के पीछे से देखा कि स्काटलैंडी टोपी पहने सूखी घास पर बैठा (दुर्भाग्य से टमटम में गद्दी नहीं थी) और गड्ढों पर उछलता हुआ वेस्लोव्स्की वीथी से होकर आगे निकल गया।

"यह और क्या मुसीबत है?" लेविन ने सोचा, जब भागते हुए घर से बाहर आनेवाले नौकर ने टमटम को रोका। यह मिस्तरी था, जिसके बारे में लेविन बिल्कुल भूल ही गया था। मिस्तरी ने वेस्लोव्स्की को प्रणाम किया, उससे कुछ कहा, इसके बाद टमटम में सवार हो गया और दोनों एक साथ चले गये।

---

* यह तो हास्यास्पद बात है! (फ़्रांसीसी)

** यह तो बहुत ही हास्यास्पद बात है! (फ़्रांसीसी)

*** फिर यह तो हास्यास्पद बात है। (फ़्रांसीसी)

**** आदमी से जलन हो सकती है लेकिन इस हद तक – यह तो बहुत ही हास्यास्पद है! (फ़्रांसीसी)

ओब्लोन्स्की और प्रिंसेस को लेविन की यह हरकत बहुत बुरी लगी। वह ख़ुद भी अपने को न केवल बेहद ridicule,* बल्कि पूरी तरह अपराधी और अपमानित अनुभव कर रहा था। किन्तु यह याद करके कि वह तथा उसकी पत्नी को कितनी यातना सहनी पड़ी थी, उसने अपने आपसे यह सवाल किया कि अगर दुबारा उसे ऐसा करना पड़ता, तो उसने कैसा व्यवहार किया होता और उसे उत्तर मिला कि बिल्कुल ऐसा ही।

इस सबके बावजूद इस दिन का अन्त होते-होते प्रिंसेस के सिवा, जो लेविन की इस हरकत को माफ़ नहीं कर सकीं, बाक़ी सभी सज़ा पाने के बाद बच्चों या कठिन औपचारिक स्वागत-समारोह के पश्चात वयस्कों की तरह असाधारण रूप से सजीव और ख़ुश हो उठे। चुनांचे प्रिंसेस की ग़ैरहाज़िरी में वेस्लोव्स्की के निकाले जाने की बात का एक पुरानी दास्तान की तरह ज़िक्र किया जाने लगा। और डौली ने तो, जिसने अपने पिता से हास्यपूर्ण ढंग से बातें सुनाने की कला पायी थी, तीन-चार बार वेस्लोव्स्की का यही क़िस्सा सुनाया और वह उसमें हर बार हंसी का नमक-मसाला बढ़ाती रही। वारेन्का के तो हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये। डौली ने बताया कि वह मेहमान के सम्मान में नये रिबन बांधकर दीवानख़ाने में गयी ही थी कि अचानक उसे टमटम की खड़खड़ सुनाई दी। और कौन था टमटम में? ख़ुद वेस्लोव्स्की, स्काटलैंडी टोपी पहने, अपने प्रेम-गीतों और चमड़े के पायताबों के साथ सूखी घास पर आसन जमाये।

"और कुछ नहीं तो बग्घी ही जुतवा देते। नहीं, और फिर सुनाई दिया – रुक जाइये! मैंने सोचा कि उस पर तरस आ ही गया। मगर देखती क्या हूं कि एक मोटे जर्मन को उसकी बग़ल में बिठा दिया गया और टमटम चल दी... और मैं अपने रिबनों को लिये ज्यों की त्यों रह गयी।"

(१६)

डौली ने अपने इरादे को अमली शक्ल दी और आन्ना से मिलने गयी। उसे बहन के दिल को दुखाते और उसके पति को ठेस पहुंचाते

---

* हास्यास्पद। (फ़्रांसीसी)

बहुत अफ़सोस हुआ। वह इस बात को अच्छी तरह समझती थी कि व्रोन्स्की के साथ किसी भी तरह का सम्बन्ध न रखने के मामले में लेविन दम्पति कितना अधिक सही थे। किन्तु वह आन्ना के पास जाना और उसे यह दिखाना अपना कर्त्तव्य मानती थी कि उसकी परिस्थिति-परिवर्तन के बावजूद उसके प्रति उसकी भावनायें नहीं बदल सकतीं।

आन्ना के यहां जाने के मामले में उसे लेविन दम्पति पर न निर्भर होना पड़े, इसलिये डौली ने गांव से किराये के घोड़े लाने को कहा। किन्तु यह मालूम होने पर लेविन ने उसके पास जाकर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की।

"तुम ऐसा क्यों सोचती हो कि तुम्हारा वहां जाना मुझे पसन्द नहीं है? अगर मुझे ऐसा पसन्द नहीं भी है, तो यह चीज़ और भी ज़्यादा बुरी लग रही है कि तुम मेरे घोड़े नहीं ले रही हो," उसने कहा। "तुमने एक बार भी मुझसे यह नहीं कहा कि तुम निश्चित रूप से जा रही हो। पहली बात तो यह है कि तुम्हारे लिये गांव से घोड़े किराये पर लेना मुझे अखरेगा और इससे भी बड़ी बात है कि वे लोग ऐसा करने को तैयार हो जायेंगे, किन्तु पहुंचायेंगे नहीं। मेरे यहां घोड़े हैं। अगर तुम मेरा दिल नहीं दुखाना चाहतीं, तो मेरे घोड़े ले लो।"

डौली को उसकी बात माननी पड़ी। नियत दिन पर लेविन ने अपनी बड़ी साली को भिजवाने के लिये चार घोड़े और रास्ते की चौकी पर बदली के घोड़ों की भी व्यवस्था कर दी। उसने खेत में काम करने-वाले और घुड़सवारी के घोड़ों में से उन्हें चुना और यद्यपि वे घोड़े बहुत सुन्दर नहीं थे, तथापि उसे एक दिन में मंज़िल पर पहुंचा सकते थे। इस समय जबकि प्रिंसेस और दाई जानेवाली थीं तथा उनके लिये भी घोड़ों की ज़रूरत थी, लेविन को ऐसा करना मुश्किल लगा, किन्तु वह मेहमाननवाज़ी के कर्त्तव्य को पूरा करते हुए डौली को अपने यहां से किराये के घोड़ों पर नहीं जाने दे सकता था। इसके अलावा वह यह जानता था कि इस यात्रा के लिये डौली को बीस रूबल किराये के रूप में देने पड़ेंगे, जो उसके लिये बहुत महत्त्व रखते हैं और डौली की कठिन आर्थिक परिस्थिति को लेविन व्यक्तिगत कठिनाई के समान अनुभव करता था।

लेविन की सलाह के मुताबिक़ डौली पौ फटने के पहले ही रवाना हो गयी। रास्ता अच्छा था, बग्घी आरामदेह थी, घोड़े तेज़ी से दौड़ रहे थे और बग्घी के बाक्स पर कोचवान के साथ नौकर की जगह मुंशी बैठा हुआ था, जिसे लेविन ने सुरक्षा की दृष्टि से साथ भेजा था। डौली की आंख लग गयी और केवल उस सराय के क़रीब पहुंचने पर ही, जहां घोड़े बदलने थे, उसकी आंख खुली।

धनी किसान के यहां, जहां स्वियाज्स्की के पास जाने के समय लेविन भी ठहरा था, चाय पीने और औरतों से बच्चों के बारे में तथा बूढ़े किसान से काउंट व्रोन्स्की के बारे में बातचीत करने के बाद, जिसने काउंट की बहुत प्रशंसा की, डौली दस बजे आगे चल दी। घर पर बच्चों की देखभाल में उलझे रहने के कारण उसे सोचने-विचारने का कभी कोई वक़्त नहीं मिलता था। चुनांचे इस चार घंटे के सफ़र के दौरान पहले के दबे-घुटे सभी विचार उसके दिमाग़ में उमड़ पड़े और उसने अपनी सारी ज़िन्दगी पर सभी पहलुओं से नज़र डाली, जैसा कि पहले कभी नहीं किया था। ख़ुद उसे ही अपने विचार बड़े अजीब से लगे। सबसे पहले तो उसने बच्चों के बारे में सोचा, जिनकी देखभाल करने का प्रिंसेस और ख़ास तौर पर कीटी ने यक़ीन दिलाया था (वह कीटी पर अधिक भरोसा कर सकती थी), किन्तु फिर भी उसे उनकी चिन्ता बनी हुई थी। "कहीं माशा फिर से शरारत न करने लगे, ग्रीशा को कहीं घोड़ा दुलत्ती न मार दे, लिली का पेट कहीं और ज़्यादा न ख़राब हो जाये।" लेकिन कुछ देर बाद वर्त्तमान के प्रश्न निकट भविष्य के प्रश्नों की जगह लेने लगे। वह सोचने लगी कि कैसे इस जाड़े में मास्को में नया फ़्लैट लेना चाहिये, मेहमानख़ाने का फ़र्नीचर बदलना और बड़ी बेटी के लिये फ़र का कोट बनवाना चाहिये। इसके बाद काफ़ी आगे के सवाल उसके सामने आने लगे – कैसे बच्चों को दीन-दुनिया के क़ाबिल बनायेगी। "लड़कियों की तो बहुत फ़िक्र नहीं," वह सोच रही थी, "लेकिन लड़के?"

"अच्छी बात है कि अब मैं ग्रीशा को पढ़ाती हूं, लेकिन यह तो सिर्फ़ इसलिये मुमकिन है कि ख़ुद मुझे कुछ फ़ुरसत है, मैं बच्चे पैदा नहीं करती हूं। ज़ाहिर है कि स्तीवा से तो कुछ भी उम्मीद नहीं की जा सकती। मैं भले लोगों की मदद से इन्हें रास्ते पर चला दूंगी।

लेकिन अगर फिर बच्चा जनना पड़ा ..." और उसके दिमाग़ में ख़्याल आया कि बाइबल का यह कथन कितना अन्यायपूर्ण है कि नारी यातनायें सहकर बच्चों को जन्म दे। "जन्म देना तो कोई बात नहीं, किन्तु उसे गर्भ में रखना – यह है यातना तो," उसने अपनी अन्तिम गर्भावस्था और इस बच्चे की मृत्यु की कल्पना करते हुए सोचा। उसे सराय में एक जवान औरत से हुई अपनी बातचीत याद आ गयी। इस प्रश्न के उत्तर में कि उसके बच्चे हैं या नहीं उस सुन्दर युवा औरत ने उत्तर दिया था –

"एक छोरी जन्मी, भगवान ने ले ली, वा को मारी दे दी।"

"तुम्हें उसके लिये बहुत दुख है?" डौली ने पूछा।

"दुख काहे होत है? बूढ़े के ढेर सारे पोते-पोतियां। बस, चिन्ता ही बनी रहत। न काम कर पावत, न कुछ और। हाथ बंधे रहत।"

जवान औरत की सुन्दरता और ख़ुशमिज़ाजी के बावजूद डौली को यह जवाब घृणापूर्ण प्रतीत हुआ था। किन्तु अब उसे ये शब्द बरबस याद हो आये। उसके इन मानवद्वेषी शब्दों में कुछ सच्चाई अवश्य थी।

"वैसे तो," अपने पन्द्रह वर्ष के दाम्पत्य जीवन पर नज़र डालते हुए डौली सोच रही थी, "गर्भवती होना, जी मतलाना, दिमाग़ का कुन्द होना, सभी चीज़ों के प्रति उदासीनता आ जाना और सबसे बढ़कर यह कि शक्ल-सूरत का बिगड़ जाना। प्यारी, जवान कीटी ही इतनी भद्दी लगती है और मैं जानती हूं कि गर्भवती होने पर मैं तो बहुत ही बदसूरत हो जाती हूं। प्रसव-पीड़ा, यातना, भयानक यातना, वह अन्तिम क्षण ... इसके बाद बच्चे को दूध पिलाना, उनींदी रातें और भयानक पीड़ा ..."

डौली चूचियों की सूजन के कारण होनेवाली पीड़ा की याद मात्र से ही सिहर उठी। हर बच्चे के मामले में ही उसे यह पीड़ा सहनी पड़ी थी। "इसके बाद बच्चों की बीमारियां, हर वक़्त सिर पर मंडरानेवाला भय; इसके बाद उनका पालन-शिक्षण, उनके घिनौने रुझान (रस्पबेरियां चुनने के समय माशा की हरकत उसे याद हो आई), शिक्षा, लातीनी भाषा – यह सभी कुछ समझ में न आनेवाली और कठिन चीज़ है। और फिर इन बच्चों की मृत्यु भी हो जाती है।" फिर से उसकी कल्पना में आख़िरी बेटे की मृत्यु की, जो कण्ठ-शोध से मरा था,

उसके मां के हृदय में लगातार टीस पैदा करनेवाली, कटु स्मृति सजीव हो उठी। उसे याद आया उसका दफ़नाया जाना, उसके छोटे से गुलाबी ताबूत के प्रति सभी की उदासीनता, कनपटियों पर घुंघराले बालों वाले छोटे से पीले माथे और सुनहरी लेस की सलीब वाले ताबूत के गुलाबी ढक्कन को बन्द करते समय बच्चे के खुले और आश्चर्यचकित मुंह को देखकर मां के एकाकी हृदय के टुकड़े-टुकड़े करनेवाला दर्द।

"और यह सब किसलिये? इस सब का क्या नतीजा होगा? यही कि मैं, जिसे क्षण भर को चैन नहीं मिलता, जो कभी तो गर्भवती रहती हूं, कभी बच्चे को पालती हूं, हमेशा खीजती और बड़बड़ाती हूं, ख़ुद व्यथित हूं और दूसरों को व्यथित करती रहती हूं, पति को अच्छी नहीं लगती, इसी तरह अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दूंगी और बदक़िस्मत, बुरे ढंग से पाले-पोसे तथा निर्धन बच्चे बड़े हो जायेंगे। इस समय भी अगर लेविन दम्पति के यहां गर्मी न गुज़रती तो जाने हमारा कैसे काम चलता। निश्चय ही कोस्त्या और कीटी इतनी व्यवहारकुशलता दिखाते हैं कि हमें कुछ महसूस नहीं होता। लेकिन ऐसा हमेशा तो नहीं चल सकता। उनके अपने बच्चे हो जायेंगे और तब वे हमारी मदद नहीं कर सकेंगे – अभी भी उन्हें तंगी महसूस हो रही है। तो क्या पापा हमारी मदद करेंगे, जिन्होंने अपने पास लगभग कुछ भी नहीं रखा? चुनांचे बच्चों को मैं ख़ुद तो पैरों पर खड़ा कर नहीं सकती, केवल दूसरों की मदद से ही और वह भी अपमान सहकर। यदि अधिकतम सौभाग्य की भी कल्पना करूं – कि बच्चे और नहीं मरेंगे और मैं किसी तरह उनका पालन-पोषण कर लूंगी। तब भी मैं अधिक से अधिक यही आशा कर सकती हूं कि वे दुष्ट नहीं निकलेंगे। मैं बस इतनी ही आशा कर सकती हूं। इसके लिये कितनी यातना सहनी होगी, कितना श्रम करना होगा। पूरा जीवन नष्ट हो गया!" उसे फिर से वह याद हो आया, जो जवान किसान औरत ने कहा था और फिर से उसे बहुत बुरा सा लगा। किन्तु वह इस चीज़ से सहमत हुए बिना न रह सकी कि इन शब्दों में कुछ भोंडा सत्य ज़रूर है।

"क्या अभी हमें काफ़ी दूर जाना है, मिख़ाईल?" डौली ने अपने को भयभीत करनेवाले विचारों को भुलाने के लिये मुंशी से पूछा।

"कहते हैं कि इस गांव से सात वेर्स्ता और दूर है।"

उसके मां के हृदय में लगातार टीस पैदा करनेवाली, कटु स्मृति सजीव हो उठी। उसे याद आया उसका दफ़नाया जाना, उसके छोटे से गुलाबी ताबूत के प्रति सभी की उदासीनता, कनपटियों पर घुंघराले बालों वाले छोटे से पीले माथे और सुनहरी लेस की सलीब वाले ताबूत के गुलाबी ढक्कन को बन्द करते समय बच्चे के खुले और आश्चर्यचकित मुंह को देखकर मां के एकाकी हृदय के टुकड़े-टुकड़े करनेवाला दर्द।

"और यह सब किसलिये? इस सब का क्या नतीजा होगा? यही कि मैं, जिसे क्षण भर को चैन नहीं मिलता, जो कभी तो गर्भवती रहती हूं, कभी बच्चे को पालती हूं, हमेशा खीजती और बड़बड़ाती हूं, ख़ुद व्यथित हूं और दूसरों को व्यथित करती रहती हूं, पति को अच्छी नहीं लगती, इसी तरह अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दूंगी और बदक़िस्मत, बुरे ढंग से पाले-पोसे तथा निर्धन बच्चे बड़े हो जायेंगे। इस समय भी अगर लेविन दम्पति के यहां गर्मी न गुज़रती तो जाने हमारा कैसे काम चलता। निश्चय ही कोस्त्या और कीटी इतनी व्यवहारकुशलता दिखाते हैं कि हमें कुछ महसूस नहीं होता। लेकिन ऐसा हमेशा तो नहीं चल सकता। उनके अपने बच्चे हो जायेंगे और तब वे हमारी मदद नहीं कर सकेंगे – अभी भी उन्हें तंगी महसूस हो रही है। तो क्या पापा हमारी मदद करेंगे, जिन्होंने अपने पास लगभग कुछ भी नहीं रखा? चुनांचे बच्चों को मैं ख़ुद तो पैरों पर खड़ा कर नहीं सकती, केवल दूसरों की मदद से ही और वह भी अपमान सहकर। यदि अधिकतम सौभाग्य की भी कल्पना करूं – कि बच्चे और नहीं मरेंगे और मैं किसी तरह उनका पालन-पोषण कर लूंगी। तब भी मैं अधिक से अधिक यही आशा कर सकती हूं कि वे दुष्ट नहीं निकलेंगे। मैं बस इतनी ही आशा कर सकती हूं। इसके लिये कितनी यातना सहनी होगी, कितना श्रम करना होगा। पूरा जीवन नष्ट हो गया!" उसे फिर से वह याद हो आया, जो जवान किसान औरत ने कहा था और फिर से उसे बहुत बुरा सा लगा। किन्तु वह इस चीज़ से सहमत हुए बिना न रह सकी कि इन शब्दों में कुछ भोंडा सत्य ज़रूर है।

"क्या अभी हमें काफ़ी दूर जाना है, मिख़ाईल?" डौली ने अपने को भयभीत करनेवाले विचारों को भुलाने के लिये मुंशी से पूछा।

"कहते हैं कि इस गांव से सात वेर्स्ता और दूर है।"

बग्घी गांव की सड़क को लांघती हुई एक छोटे-से पुल की ओर बढ़ गयी। पुल पर प्रफुल्ल देहाती नारियों का एक दल पीठों पर पूले बांधने के लिये घास के गट्ठे लादे ऊंचे-ऊंचे और ख़ुशी से बातें करता हुआ चला जा रहा था। औरतें बग्घी को देखने के लिये जिज्ञासावश रुक गयीं। अपनी ओर देखते हुए ये सारे चेहरे डौली को स्वस्थ, ख़ुशी भरे और उसके जीवन को ख़ुशी से चिढ़ाते हुए से प्रतीत हुए। "सभी जीते हैं, सभी जीवन का आनन्द लूटते हैं," इन औरतों के पास से गुज़रते, किसी टीले पर चढ़ते, फिर दुलकी चाल से उतरते और पुरानी बग्घी के स्प्रिंगों पर मज़े से डोलते हुए डौली सोचती रही। "किन्तु मैं, जैसे कि जेलख़ाने से, चिन्ताओं से मुझे मारे डालनेवाली दुनिया से बाहर आई हूं और क्षण भर को अभी मुझे होश आया है। सभी जी रही हैं – ये औरतें, मेरी बहन नताली, वारेन्का और आन्ना, जिसके यहां मैं जा रही हूं, सिर्फ़ मैं ही इससे वंचित हूं।

"और ये आन्ना को भला-बूरा कहते हैं। किसलिये? क्या मैं उससे अच्छी हूं? कम से कम मेरा पति तो है, जिसे मैं प्यार करती हूं। वैसे तो नहीं जैसा कि मैं चाहती, फिर भी प्यार करती हूं। किन्तु आन्ना अपने पति को नहीं चाहती थी। उसका क्या अपराध है? वह जीना चाहती है। भगवान ने हमारे दिलों में प्यार का बीज बोया है। बहुत मुमकिन है कि मैंने भी ऐसा ही किया होता। मैं अभी तक यह नहीं जानती कि उस भयानक समय में, जब वह मेरे पास मास्को आई थी, मैंने उसकी बात मानकर अच्छा किया या नहीं। उस समय पति को छोड़कर मुझे नयी ज़िन्दगी शुरू करनी चाहिये थी। मैं प्यार कर सकती थी और सही अर्थ में प्यार पा सकती थी। क्या अब ज़्यादा अच्छा है? मैं उसकी इज़्ज़त नहीं करती। मुझे उसकी ज़रूरत है," वह पति के बारे में सोच रही थी, "और मैं उसे बर्दाश्त करती हूं। क्या यह ज़्यादा अच्छा है? तब तो मैं किसी को अच्छी लग भी सकती थी, मुझमें मेरी कुछ ख़ूबसूरती बाक़ी थी," डौली सोचती जा रही थी और उसका मन हुआ कि दर्पण में अपने को देखे। उसके सफ़री थैले में आईना था और उसने चाहा कि उसे निकाले। किन्तु कोचवान और उसकी बग़ल में बैठे डोलते हुए क्लर्क की पीठों की ओर देखने पर उसे लगा कि अगर उनमें से किसी ने भी मुड़कर देख लिया,

तो उसे बड़ी शर्म आयेगी और इसलिये उसने दर्पण नहीं निकाला।

किन्तु दर्पण में अपने को देखे बिना ही वह यह सोच रही थी कि अभी भी देर नहीं हुई। उसे कोज़्निशेव की याद हो आई, जो उसमें ख़ास दिलचस्पी लेता रहा था, स्तीवा के दोस्त, भले तूरोव्त्सिन का ध्यान आया, जिसने बच्चों के लाल बुख़ार से बीमार होने पर उसके साथ मिलकर उनकी देखभाल की थी और जो उसका दीवाना था। एक अन्य, एकदम जवान व्यक्ति भी था, जो, जैसा कि उसके पति ने मज़ाक़ में कहा था, उसे तीनों बहनों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत मानता था। और डौली की कल्पना में अत्यधिक आवेगपूर्ण और असम्भव प्रेम-लीलाओं के चित्र उभरने लगे। "आन्ना ने बहुत ही अच्छा किया और कम से कम मैं तो किसी भी तरह उसकी भर्त्सना नहीं करूंगी। वह सुखी है, दूसरे व्यक्ति को सुखी बना रही है और मेरी तरह से भूली-बिसरी हुई नहीं है। निश्चय ही वह सदा की भांति ताज़ा और समझदार होगी और सभी चीज़ों के लिये उसका दिल-दिमाग़ खुला होगा," डौली सोच रही थी और एक शरारती मुस्कान से उसके होंठों पर बल पड़ गये। ऐसा ख़ास तौर पर इसलिये हुआ कि आन्ना की प्रेम-लीला के बारे में सोचते हुए उसने अपने प्रेम-दीवाने एक कल्पित व्यक्ति के साथ ऐसी ही प्रेम-लीला की अपने लिये भी कल्पना की। आन्ना की भांति उसने भी पति के सामने सब कुछ स्वीकार कर लिया। इस ख़बर से ओब्लोन्स्की की हैरानी और परेशानी ने उसे मुस्कराने के लिये विवश कर दिया।

इसी तरह दिवा-स्वप्न देखते हुए वह बड़ी सड़क से वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव की ओर ले जानेवाले मोड़ पर पहुंच गयी।

(१७)

कोचवान ने घोड़ों को रोका और दायीं तरफ़ के राई के खेत पर नज़र डाली, जहां एक घोड़ा-गाड़ी के पास कुछ किसान बैठे थे। क्लर्क ने चाहा कि कूदकर उनके पास जाये, किन्तु फिर इरादा बदल लिया और एक किसान को अपनी तरफ़ आने का इशारा करते हुए आदेशपूर्ण ढंग से पुकारा। बग्घी के रुक जाने पर हवा बन्द हो गयी और घोड़ों के

पसीने से तर शरीरों से घुड़-मक्खियां चिपक गयीं, जो झल्लाकर उन्हें दूर भगा रहे थे। हंसियों पर पड़नेवाली चोटों के कारण सुनाई दे रही धातु की टनक शान्त हो गयी। एक किसान उठा और बग्घी की तरफ़ चल दिया।

"क्या जान निकल गयी?" मुंशी ने जर्जर सड़क के ऊबड़-खाबड़ हिस्से की लीकों पर धीरे-धीरे पग बढ़ाते हुए बूढ़े से ऊंची आवाज़ में झल्लाकर कहा। "ज़रा फुर्ती दिखाओ न!"

घुंघराले बालों के गिर्द छाल का टुकड़ा लपेटे और पसीने से कुछ काली हुई झुकी पीठवाले बूढ़े ने अपनी चाल तेज़ कर दी, बग्घी के क़रीब पहुंचा और अपने सांवले हाथ से उसका मडगार्ड थाम लिया।

"वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव? जागीरदार की हवेली? काउंट के यहां?" बूढ़े किसान ने प्रश्नों को दोहराया। "टीले पर चढ़त, बांयें मुड़त। सीधे वहीं पहुंचत। कहूं मिलन चाहत? काउंट से?"

"वे घर पर ही हैं क्या?" डौली ने यह न जानते हुए कि किसान से आन्ना के बारे में कैसे पूछे, अस्पष्ट-सा प्रश्न किया।

"घर पर ही होवत," किसान ने अपने नंगे पांव बदलते और धूल पर पंज़ों के साफ़ निशान छोड़ते हुए जवाब दिया। "घर पर ही होवत," उसने दोहराया। वह स्पष्टतः बातचीत जारी रखना चाहता था। "कल भी कुछ मेहमान आवत रहयो। बहुत मेहमान होत उनके घर मां... तू क्या कहत है?" उसने घोड़ा-गाड़ी के पास बैठे और उसे पुकारते हुए एक छोकरे को सम्बोधित करते हुए पूछा। "हां! कुछ देर पहले घोड़ों पर चढ़िके फ़सल काटन की मसीन देखन जात रहत। अब तो घर मां ही होवत। आप कौन होत?"

"हम बहुत दूर से आये हैं," कोचवान ने बाक्स पर चढ़ते हुए जवाब दिया। "तो दूर नहीं है?"

"कहत तो, पास मां होत। टीले पर चढ़िहो..." उसने बग्घी के मडगार्ड पर हाथ फेरते हुए फिर से रास्ते के बारे में बताया।

जवान, तगड़ा और चौड़े कंधों वाला लड़का भी पास आ गया।

"फ़सल कटाई का कुछ काम मिल जात?" उसने पूछा।

"मालूम नहीं।"

"बायें मुड़त ही सीधे वहां पहुंच जात," किसान ने कहा, जो

स्पष्टतः उन्हें जाने नहीं देना चाहता था और बातचीत जारी रखने को उत्सुक था।

कोचवान ने बग्घी बढ़ायी, किन्तु वे नुक्कड़ तक पहुंचे ही थे कि किसान चिल्ला उठा –

"रुक्बो! ऐ भैया! बग्घी रोक देवो!" एक साथ दो ऊंची आवाजें सुनाई दीं।

कोचवान ने बग्घी रोक ली।

"वे तो आप ही इधर आवत। देखत होवे!" किसान चिल्ला उठा। "देखवो कितने मानुस होवत," उसने चार घुड़सवारों और सैर-गाड़ी में बैठे दो लोगों की ओर इशारा करते हुए कहा।

व्रोन्स्की और जाकी, वेस्लोव्स्की और आन्ना घोड़ों पर थे तथा सैर-गाड़ी में प्रिंसेस वर्वारा और स्वियाज्स्की बैसे थे। ये लोग सवारी करने और फ़सल काटने की नई लायी गयी मशीनों को काम करते देखने गये थे।

बग्घी के रुक जाने पर घुड़सवार अपने घोड़ों को क़दम क़दम चलाने लगे। वेस्लोव्स्की के साथ आन्ना आगे-आगे आ रही थी। कटे अयालों और छोटी पूंछ वाले तगड़े और छोटे क़द के अंग्रेज़ी घोड़े पर सवार आन्ना बड़े इतमीनान से उसे बढ़ा रही थी। ऊंची टोपी के नीचे से बाहर निकले हुए काले बालों वाले उसके सिर, गदराये कन्धों, घुड़सवारी की काली पोशाक में उसकी पतली कमर और उसकी सारी शान्त तथा सुन्दर मुद्रा ने डौली को आश्चर्यचकित कर दिया।

शुरू में तो डौली को आन्ना का घुड़सवारी करना कुछ अशिष्ट-सा लगा। उसके मन में महिलाओं के घुड़सवारी करने के विचार के साथ कुछ हल्की चोंचलेबाज़ी का भाव जुड़ा हुआ था, जो किसी तरुणी के लिये तो उचित था, किन्तु जो आन्ना को उसकी वर्त्तमान स्थिति में शोभा नहीं देता था। किन्तु आन्ना को निकट से देखने पर उसे उसके घुड़सवारी करने के बारे में कोई आपत्ति न रही। लालित्य के साथ-साथ उसकी मुद्रा, पोशाक और गतिविधि में सब कुछ इतना सरल, शान्त और गरिमापूर्ण था कि उससे अधिक स्वाभाविक और कुछ नहीं हो सकता था।

आन्ना के क़रीब ही तेज़ दौड़ने के कारण उत्तेजित भूरे घोड़े पर

सवार वेस्लोव्स्की आ रहा था। वह लहराते फ़ीतों वाली स्काटलैंडी टोपी पहने था, अपनी मोटी-मोटी टांगों को सामने की ओर अकड़ाये था, स्पष्टतः अपने पर मुग्ध हो रहा था। और उसे पहचानते ही डौली के होंठों पर बरबस चुहल भरी मुस्कान आ गयी। व्रोन्स्की इनके पीछे-पीछे आ रहा था। वह बढ़िया नस्ल के मुश्की घोड़े पर सवार था, जो सरपट दौड़ने के कारण स्पष्टतः उत्तेजित था। व्रोन्स्की लगामों की मदद से उसे क़ाबू में कर रहा था।

इनके पीछे जाकी की पोशाक में एक छोटा-सा आदमी घोड़े पर आ रहा था। स्वियाज्स्की और प्रिंसेस वर्वारा नयी सैर-गाड़ी में थे, जिसमें ऊंचे क़द का काला घोड़ा जुता था और अपनी हल्की चाल से घुड़सवारों के निकट पहुंच रहा था।

पुरानी बग्घी के एक कोने में सिमट-सिकुड़ कर बैठी डौली की छोटी-सी आकृति को पहचानते ही आन्ना का चेहरा ख़ुशी भरी मुस्कान से खिल उठा। वह ख़ुशी से हुमकी, सिहरी और घोड़े को सरपट दौड़ाने लगी। बग्घी के पास पहुंचकर वह सहारे के बिना ही नीचे कूद गयी और घुड़सवारी की पोशाक का पल्लू थामे डौली की ओर भाग चली।

"मैं ऐसा ही सोचती थी, मगर इसे मानने की हिम्मत नहीं हो रही थी। यह हुई न ख़ुशी! तुम तो मेरी प्रसन्नता की कल्पना भी नहीं कर सकतीं!" वह कभी डौली को चूमते और कभी पीछे हटकर मुस्कराते हुए कह रही थी।

"इसे कहते हैं ख़ुशी, अलेक्सेई!" उसने घोड़े से उतरकर अपनी तरफ़ आते व्रोन्स्की से कहा।

अपना ऊंचा भूरा टोप उतारकर व्रोन्स्की डौली के पास गया।

"आप विश्वास नहीं करेंगी कि आपके आने से हमें कितनी अधिक ख़ुशी हुई है," उसने अपने शब्दों को विशेष महत्व प्रदान करते और मुस्कराकर अपने मज़बूत, सफ़ेद दांतों की झलक देते हुए कहा।

वेस्लोव्स्की ने घोड़े से नीचे उतरे बिना अपनी टोपी उतार ली और ख़ुशी से उसके फ़ीतों को सिर के ऊपर हिला कर मेहमान का स्वागत किया।

"यह प्रिंसेस वर्वारा हैं," सैर-गाड़ी के निकट आ जाने पर डौली की प्रश्नसूचक दृष्टि के उत्तर में आन्ना ने कहा।

"ओह!" डौली ने कहा और उसके चेहरे पर बरबस अप्रसन्नता का भाव झलक उठा।

प्रिंसेस वर्वारा उसके पति की मौसी थी। डौली उसे बहुत अरसे से जानती थी और उसकी इज़्ज़त नहीं करती थी। उसे मालूम था कि प्रिंसेस वर्वारा ज़िन्दगी भर अपने अमीर रिश्तेदारों के यहां टुकड़े तोड़ती रही है, किन्तु यह देखकर कि अब वह व्रोन्स्की के यहां रह रही है, जो उसके लिये सर्वथा पराया व्यक्ति था, वह अपने पति के कारण लज्जित हो रही थी। आन्ना ने डौली के चेहरे के भाव को देखा और सकपका उठी, उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी, उसने अपनी घुड़सवारी की पोशाक का पल्लू छोड़ दिया, जो उसके पांव में अटक गया।

डौली चुप-चुप सैर-गाड़ी के पास गयी और उसने रुखाई से प्रिंसेस वर्वारा का अभिवादन किया। स्वियाज्स्की से भी उसका पूर्व-परिचय था। उसने पूछा कि जवान बीवी वाले उसके सनकी दोस्त का क्या हाल-चाल है। पंचमेले घोड़ों तथा मरम्मत के धब्बों वाले मड़गार्डों पर उड़ती-सी नज़र डालकर उसने महिलाओं से सैर-गाड़ी में जाने का प्रस्ताव किया।

"और मैं इस बग्घी में चला जाऊंगा," उसने कहा। "घोड़ा बड़ा शान्त है और प्रिंसेस ख़ूब अच्छे ढंग से उसे चलाती हैं।"

"नहीं, आप जहां थे, वहीं रहिये," आन्ना ने निकट आकर कहा, "हम दोनों बग्घी में जायेंगी," और डौली का हाथ थामकर उसे अपने साथ ले गयी।

ऐसी बढ़िया सैर-गाड़ी, जो उसे पहले कभी देखने को नहीं मिली थी, ऐसे बढ़िया घोड़े और आन्ना को घेरे हुए ऐसे सजीले और शानदार लोगों को देखकर डौली दंग रह गयी। सबसे अधिक तो उसे अच्छी तरह जानी-पहचानी और प्यारी आन्ना में हुए परिवर्तन ने चकित किया। कम पैनी दृष्टि रखनेवाली, आन्ना को पहले से न जानने और विशेषत: ऐसे विचारों में, जिनमें डौली यात्रा के दौरान खोयी रही थी, न खोयी रहनेवाली कोई दूसरी नारी आन्ना में कोई ख़ास बात न देख पाती। किन्तु डौली इस समय उस अस्थायी सौंदर्य से हैरान रह गयी थी, जो प्यार के क्षणों में ही नारी में दिखाई देता है और जो इस

वक़्त उसे आन्ना के चेहरे पर नज़र आया। उसके चेहरे की हर चीज़ – गालों और ठोड़ी के स्पष्ट गुल, होंठों के बल, मुस्कान, जो मानो चेहरे के गिर्द उड़ रही थी, आंखों की चमक, गतिविधियों का सजीलापन और चुस्ती, आवाज़ की गहराई, यहां तक कि खीझ और स्नेह का मिला-जुला वह ढंग, जिससे उसने वेस्लोव्स्की को उत्तर दिया, जो उसके घोड़े पर सवारी करने और उसे यह सिखाने की अनुमति चाहता था कि वह दायें पांव से अपनी सरपट दौड़ शुरू किया करे – यह सभी कुछ विशेष रूप से आकर्षक था और ऐसा लगता था कि वह ख़ुद यह जानती तथा इससे ख़ुश होती थी।

दोनों नारियों के बग्घी में बैठ जाने पर वे दोनों ही अचानक झेंप अनुभव करने लगीं। आन्ना को डौली की अपने पर जमी हुई और प्रश्नपूर्ण दृष्टि में झेंप महसूस हो रही थी और डौली को स्वियाज्स्की के "बग्घी" कहने के बाद बरबस इस गन्दी और पुरानी बग्घी के क़ारण शर्म आ रही थी, जिसमें आन्ना उसके साथ आ बैठी थी। कोचवान फ़िलिप और क्लर्क भी ऐसा ही अनुभव कर रहे थे। क्लर्क तो अपनी झेंप मिटाने के लिये महिलाओं को बग्घी में चढ़ाते हुए दौड़-धूप करने लगा, किन्तु कोचवान फ़िलिप उदास हो गया और उसने भविष्य में ऐसी बाहरी श्रेष्ठता के रोब में न आने का इरादा बनाया। बढ़िया हल्की चाल वाले मुश्की घोड़े पर नज़र डालकर और अपने मन में यह तय कर वह व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया कि यह सैर-सपाटे के लिये तो ठीक है, मगर गर्म दिन में चालीस वेर्स्ता की मंज़िल नहीं मार सकेगा।

छकड़े के पास बैठे हुए सभी किसान उठ कर खड़े हो गये थे और जिज्ञासा तथा प्रसन्नता से अतिथि के स्वागत को देखते हुए अपनी टिप्पणियां कर रहे थे।

"ये भी परसन होत, सायद बहुत दिन भेंट न होवत," सिर के गिर्द छाल लपेटे हुए घुंघराले बालों वाले बूढ़े ने कहा।

"चाचा गेरासिम, एह मुसकी घोड़ा हमार पूले खींच ले जात, तो मजा आवत।"

"अरे, वह बिरजिस पहने छोरी होत?" उनमें से एक ने नारियों के ज़ीन पर सवार होते हुए वेस्लोव्स्की की ओर संकेत करते हुए कहा।

"छोरी नहीं, पुरुस होत। देखत कैसे उछलकर चढ़ि बैठयो!"

"लगत आज झपकी न आवत?"

"झपकी की काहे बात करते!" बूढ़े ने तिरछी नज़र से सूरज की तरफ़ देखते हुए कहा। "देखो दिन ढलत। हंसिये उठाइवो, घर चलवो।"

(१८)

आन्ना ने डौली के चिन्ताओं से मुरझाये और झुर्रियों पर धूल जमे चेहरे को बहुत ध्यान से देखा और वह कहना चाहा, जो वह सोच रही थी यानी यह कि डौली दुबली हो गयी है। किन्तु यह याद करके कि खुद पहले से बेहतर हो गयी है और यह कि डौली की नज़र ने ऐसा ही कह दिया है, उसने गहरी सांस ली और अपनी चर्चा करने लगी।

"तुम मेरी ओर देख रही हो," आन्ना ने कहा, "और सोच रही हो कि अपनी वर्त्तमान स्थिति में सुखी हो सकती हूं या नहीं? तो बताऊं। मुझे यह मानते हुए शर्म आती है, लेकिन ... मैं बेहद, बेहद सुखी हूं। मेरे साथ तो मानो जादू जैसा कुछ हुआ है, उस सपने जैसा, जब बहुत भयानक और दिल दहलानेवाला सा कुछ दिखाई देता है और आंख खुलने पर उनका नाम-निशान तक बाक़ी नहीं रहता। मैं जाग चुकी हूं! मैं भारी यातना, मैं उस भय को जी चुकी हूं और अब बहुत समय से, ख़ासकर जब से हम यहां आये हैं, मैं बहुत सुखी हूं!" आन्ना ने प्रश्नपूर्ण सहमी-सी मुस्कान के साथ डौली की तरफ़ देखते हुए कहा।

"मैं कितनी खुश हूं," डौली ने मुस्कराकर, किन्तु बरबस अपनी इच्छा से अधिक रुखाई के साथ कहा। "मैं तुम्हारे लिये बहुत खुश हूं। तुमने मुझे पत्र क्यों नहीं लिखा?"

"क्यों नहीं लिखा? इसलिये कि मेरा ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई ... तुम मेरी स्थिति को भूल जाती हो ..."

"मुझे लिखने की हिम्मत नहीं कर सकीं? काश तुम्हें मालूम होता कि मैं कैसे ... मैं मानती हूं ..."

डौली ने वे विचार व्यक्त करने चाहे, जो आज सुबह उसके दिमाग़ में आये थे, किन्तु न जाने क्यों, उसे अब ऐसा करना उचित नहीं प्रतीत हुआ।

"ख़ैर, हम इसकी बाद में चर्चा करेंगी। ये सब इमारतें क्या हैं?" डौली ने बातचीत का विषय बदलने और बबूल तथा लिलक झाड़ियों की हरी बाड़ के पीछे से नज़र आनेवाली लाल और हरी छतों की ओर संकेत करते हुए पूछा। "बस्ती-सी लगती है।"

किन्तु आन्ना ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया।

"नहीं, नहीं! तुम यह बताओ कि मेरी स्थिति को कैसी मानती हो, तुम इसके बारे में क्या सोचती हो?" आन्ना ने पूछा।

"मैं मानती हूं कि..." डौली ने कहना शुरू किया, किन्तु इसी समय आन्ना के नाटे घोड़े को दायां पांव आगे बढ़ाकर सरपट दौड़ने का अभ्यास कराकर तथा छोटी जाकेट पहने महिलाओं की नर्म चमड़े वाली काठी पर ज़ोर से ऊपर-नीचे झटके खाता और सरपट घोड़ा दौड़ाता वेस्लोव्स्की उनके पास से गुज़रा।

"बात बन रही है, आन्ना अर्कादि्येव्ना," उसने चिल्लाकर कहा।

आन्ना ने उसकी तरफ़ देखा तक नहीं। किन्तु डौली को फिर ऐसा लगा कि बग्घी में यह लम्बी बातचीत शुरू करना ठीक नहीं होगा और इसलिये उसने अपने विचार को संक्षिप्त करते हुए कहा –

"मैं कुछ भी नहीं मानती। मैं हमेशा तुम्हें प्यार करती रही हूं और जब कोई प्यार करता है तो उस पूरे व्यक्ति को ही, जैसा वह है, प्यार करता है, उसे नहीं, जैसा मैं चाहूंगी कि वह हो।"

आन्ना ने अपनी सहेली के चेहरे से नज़र हटा ली और आंखें सिकोड़कर (यह उसकी नयी आदत थी, जिससे डौली अपरिचित थी) डौली के इन शब्दों का पूरा सार समझने के लिये विचारों में डूब गयी। स्पष्टतः उन्हें उसी रूप में समझकर, जिसमें वह समझना चाहती थी, उसने डौली की तरफ़ देखा।

"अगर तुम्हारे कोई गुनाह होते भी," आन्ना ने कहा, "तो तुम्हारे आने और यह शब्द कहने से वे सब माफ़ हो जाते।"

डौली ने देखा कि आन्ना की आंखें छलछला आयी हैं। डौली ने मौन रहते हुए उसका हाथ दबाया।

"तो यह इमारतें क्या हैं? कितनी अधिक हैं ये," कुछ देर चुप रहने के बाद डौली ने अपना प्रश्न दोहराया।

"ये काम करनेवालों के घर, अश्वपालन फ़ार्म की इमारतें और अस्तबल हैं," आन्ना ने जवाब दिया। "यहां से पार्क शुरू होता है। यह सभी कुछ बुरी हालत में था, मगर अलेक्सेई ने मानो इनको नया जीवन दे डाला है। अपनी इस जागीर से उसे बहुत प्यार है और खेतीबारी के काम में बहुत ही दिलचस्पी ले रहा है, जिसकी मैंने कभी आशा नहीं की थी। वैसे कमाल का आदमी है वह! जिस काम को भी हाथ में लेता है, उसे ख़ूब अच्छी तरह से सिरे चढ़ाता है। वह न केवल ऊब ही महसूस नहीं करता, बल्कि जी-जान से काम में जुट जाता है। जैसा कि अब मैं उसे जानती हूं, वह हिसाब-किताब का पक्का, कुशल प्रबन्धक और खेतीबारी के मामले में बढ़िया मालिक बन गया है। इस चीज़ में तो वह कंजूस भी है। लेकिन खेतीबारी के मामले में ही। जहां हज़ारों-लाखों का सवाल होता है, वह ज़रा परवाह नहीं करता," आन्ना ने ख़ुशी और चालाकी भरी उस मुस्कान के साथ कहा, जो नारियों के होंठों पर अकसर तब दिखाई देती है, जब वे सिर्फ़ उन्हीं को मालूम होनेवाले अपने प्रिय व्यक्ति के गुणों की चर्चा करती हैं। "वह बहुत बड़ी इमारत देख रही हो न? वह नया अस्पताल है। मेरे ख़्याल में इस पर एक लाख से अधिक रूबल ख़र्च होंगे। यह अब उसका dada* है। और जानती हो कि यह शौक़ पैदा कैसे हुआ? शायद किसानों ने कम लगान पर उन्हें चरागाह दे देने को कहा, उसने इन्कार कर दिया और इसके लिये मैंने उसे कंजूस होने का ताना दिया। ज़ाहिर है कि इसी कारण नहीं, बल्कि सभी चीज़ों को ध्यान में लेते हुए उसने यह दिखाने के लिये कि वह कंजूस नहीं है, अस्पताल बनवाना शुरू कर दिया। तुम चाहो तो इसे c'est une petitesse** कह सकती हो, लेकिन मैं उसे इसके लिये और भी ज़्यादा प्यार करती

---

* सबसे बड़ा शौक़। (फ़्रांसीसी)

** मामूली बात। (फ़्रांसीसी)

हूं। अभी तुम हवेली देखोगी। वह दादा के ज़माने की बनी हुई है और उसमें बाहर से कोई तबदीली नहीं हुई है।"

"कितनी बढ़िया है हवेली!" डौली ने बाग़ के पुराने वृक्षों की विभिन्न रंगी हरियाली के पीछे से दिखाई देती स्तम्भोंवाली सुन्दर इमारत को देखते और बरबस हैरान होते हुए कहा।

"सचमुच बढ़िया है न? हवेली की छत पर से बहुत ही बढ़िया नज़ारा दिखाई देता है।"

इनकी बग्घी बजरी-बिछे और फूलों से सजे एक अहाते में दाख़िल हुई, जहां दो आदमी फूलों की एक क्यारी के गिर्द ख़ुरदरे और सरंध्र पत्थर लगा रहे थे, और बग्घी हवेली-द्वार के सम्मुख छतदार ओसारे में जाकर रुक गई।

"वे लोग पहुंच भी गये हैं!" आन्ना ने इसी समय यहां से ले जाये जा रहे घुड़सवारी के घोड़ों की ओर देखते हुए कहा। "सच यह घोड़ा बहुत अच्छा है न? यह नाटा घोड़ा मेरा सबसे प्यारा है। इसे इधर लाओ और चीनी की डली भी दे दो। काउंट कहां हैं?" आन्ना ने लपककर बाहर आनेवाले दो बावर्दी नौकरों से पूछा। "लो वह आ गया!" आन्ना ने वेस्लोव्स्की के साथ अपनी तरफ़ आते व्रोन्स्की पर नज़र डालते हुए कहा।

"इन्हें आप किस कमरे में ठहरायेंगी?" व्रोन्स्की ने आन्ना को सम्बोधित करते हुए फ़्रांसीसी में पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना डौली का एक बार फिर स्वागत किया और इस बार उसका हाथ चूमा। "मेरे ख़्याल में छज्जे वाले बड़े कमरे में।"

"ओह नहीं, वह बहुत दूर है! कोनेवाला ज़्यादा अच्छा रहेगा, हम अधिक मिलजुल सकेंगी। आओ चलें," आन्ना ने नौकर द्वारा लायी गयी चीनी की डली अपने प्यारे घोड़े को खिलाते हुए डौली से कहा।

"Et vous oubliez votre devoir,*" वह वेस्लोव्स्की से बोली, जो व्रोन्स्की के साथ ही बाहर आया था।

---

* आप अपना कर्त्तव्य भूल जाते हैं। (फ़्रांसीसी)

"Pardon, j'en ai tout plein les poches,*" उसने मुस्कराकर जाकेट की जेब में हाथ डालते हुए जवाब दिया।

"Mais vous venez trop tard,**" आन्ना ने रूमाल से हाथ साफ़ करते हुए कहा, जिस पर घोड़े ने चीनी की डली खाते हुए थूक लगा दिया था। इसके बाद आन्ना ने डौली से पूछा –

"काफ़ी दिनों के लिये आयी हो न तुम? एक दिन के लिये? नहीं, यह नहीं हो सकता!"

"मैंने ऐसे ही वादा किया है और फिर बच्चे..." डौली ने बग्घी से अपना थैला लेने और इस कारण भी झेंप अनुभव करते हुए कहा कि उसे अपने चेहरे के धूल से अटे होने की चेतना थी।

"नहीं मेरी प्यारी डौली, यह नहीं चलेगा... खैर, देखा जायेगा। आओ चलें, भीतर चलें।" और आन्ना उसे उसके कमरे में ले गयी।

यह मेहमानों के लिये वह शानदार कमरा नहीं था, जिसका व्रोन्स्की ने प्रस्ताव किया था, बल्कि वह था, जिसके लिये आन्ना ने डौली से क्षमा-याचना की थी। क्षमा-याचना की अपेक्षा रखनेवाला यह कमरा इतने बढ़िया ढंग से सजा हुआ था कि डौली को कभी ऐसे कमरे में रहने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ था और वह उसे विदेश के श्रेष्ठतम होटलों की याद दिलाता था।

"मेरी प्यारी, कितनी अधिक खुश हूं मैं!" अपनी घुड़सवारी की पोशाक में ही कुछ देर को डौली के पास बैठते हुए आन्ना ने कहा। "तुम मुझे अपने लोगों के बारे में बताओ। स्तीवा से तो मेरी कुछ देर के लिये मुलाक़ात हुई थी। लेकिन वह बच्चों के बारे में कुछ बता ही नहीं सकता। मेरी लाड़ली तान्या कैसी है? सोचती हूं कि काफ़ी बड़ी हो गयी होगी वह तो?"

"हां, बहुत बड़ी," डौली ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया और खुद ही इस बात से हैरान हो गयी कि वह अपने बच्चों के बारे में ऐसे रुखाई से जवाब दे रही है। "हम लेविन दम्पति के यहां बहुत मज़े से रह रहे हैं," उसने इतना और जोड़ दिया।

---

* क्षमा करें, मेरी तो उससे जेबें भरी हैं। (फ़्रांसीसी)

** लेकिन आप बहुत देर से सामने आते हैं। (फ़्रांसीसी)

"अगर मुझे मालूम होता कि तुम मुझसे घृणा नहीं करती हो..." आन्ना बोली, "तो तुम सभी हमारे यहां आकर रह सकते थे। आखिर स्तीवा तो अलेक्सेई का पुराना और पक्का दोस्त है," आन्ना ने इतना और कहा तथा अचानक लज्जारुण हो गयी।

"हां, लेकिन हम इतने अच्छे ढंग से..." डौली ने घबराहट महसूस करते हुए जवाब दिया।

"वैसे मैं तो खुशी के मारे ऊल-जलूल बातें कर रही हूं। हां, मगर तुम्हारे आने से मैं बेहद खुश हूं!" आन्ना ने फिर से डौली को चूमते हुए कहा। "तुमने अभी तक मुझे यह नहीं बताया कि तुम मेरे बारे में क्या और कैसे विचार रखती हो, और मैं यह जानना चाहती हूं। लेकिन मैं खुश हूं कि तुम मुझे उसी रूप में देख सकोगी, जैसी मैं हूं। मेरे लिये सबसे बड़ी बात तो यह है कि कोई ऐसा न समझे मानो मैं कुछ सिद्ध करना चाहती हूं। मैं कुछ भी सिद्ध करना नहीं चाहती, मैं तो केवल जीना चाहती हूं, अपने सिवा किसी का बुरा नहीं करना चाहती। इसका तो मुझे हक़ है न? खैर, यह लम्बी बात-चीत है और हम सभी चीज़ों की अच्छी तरह से चर्चा करेंगी। अब मैं जाकर कपड़े बदलती हूं और तुम्हारी मदद के लिये नौकरानी को भेज देती हूं।"

(१६)

अकेली रह जाने पर डौली ने एक गृह-स्वामिनी की दृष्टि से अपने कमरे का जायज़ा लिया। हवेली के क़रीब आते और उसमें से गुज़रते हुए तथा अब अपने कमरे में उसने जो कुछ देखा था, उसने उसके मन पर बड़ी खुशहाली, शान-शौकत और उस नये यूरोपीय ऐश्वर्य की छाप छोड़ी, जिसके बारे में उसने केवल अंग्रेज़ी उपन्यासों में पढ़ा था, किन्तु जिसे रूस और ख़ास तौर पर देहात में कभी देखा नहीं था। दीवारों पर चिपकी नयी फ़्रांसीसी अबरी से लेकर क़ालीन तक, जो सारे फ़र्श पर बिछा था, सब कुछ नया था। स्प्रिंगों वाले पलंग पर गद्दा बिछा था और छोटे-छोटे तकियों पर रेशमी गिलाफ़ चढ़े थे। संगमरमर का वाशबेसिन, ड्रेसिंग-टेबुल, कोच, मेज़ें, अंगीठी

पर कांसे की घड़ी, खिड़कियों और दरवाज़ों पर भारी परदे – सभी कुछ बहुत महंगा और नया था।

सेवा के लिये आनेवाली बनी-ठनी नौकरानी भी उसी तरह से महंगी और नयी थी, जैसे सारा कमरा। वह डौली की तुलना में ज़्यादा फ़ैशनदार फ़्राक पहने थी और उसका केश-विन्यास भी बेहतर था। डौली को उसकी नम्रता, साफ़-सुथरापन और सेवा-तत्परता अच्छी लगी, मगर उसके साथ कुछ अटपटापन-सा भी महसूस हुआ। उसे उसके सामने पैवन्द लगे उस ब्लाउज़ के लिये भी शर्म आयी, जो उसने अपनी मुसीबत को भूल से अपने साथ ले लिया था। उसे उन्हीं पैवन्दों और रफ़ू की हुई जगहों के लिये अब शर्म आ रही थी, जिनके कारण घर पर वह गर्व महसूस करती थी। घर पर उसे यह स्पष्ट था कि छः ब्लाउज़ों के लिये पैंसठ कोपेक गज़वाले २४ गज़ नैनसुख कपड़े की ज़रूरत होती है और कढ़ाई-सिलाई के बिना कपड़े पर ही पन्द्रह रूबल ख़र्च हो जाते हैं और यह पन्द्रह रूबल बहुत महत्व रखते हैं। किन्तु नौकरानी के सामने शर्म तो नहीं, अटपटापन ज़रूर महसूस हो रहा था।

बहुत पुरानी परिचित आन्नुश्का के आने पर डौली को बड़ी राहत मिली। बनी-ठनी नौकरानी की आन्ना को ज़रूरत थी और इसलिये आन्नुश्का डौली के पास रह गयी।

आन्नुश्का स्पष्टतः डौली के आने से बहुत ख़ुश थी और लगातार बातें करती जा रही थी। डौली ने महसूस किया कि वह अपनी मालकिन की स्थिति और ख़ास तौर पर आन्ना के प्रति काउंट की मुहब्बत और वफ़ादारी के बारे में अपनी राय बताने को बहुत उत्सुक है, किन्तु वह ज्योंही यह चर्चा शुरू करती, डौली बड़े यत्न से उसे रोक देती।

"मैं तो आन्ना अर्कादयेव्ना के साथ ही बड़ी हुई हूं और मुझे उनसे अधिक कुछ भी प्यारा नहीं। हम कोई नहीं हैं उनके बारे में भले-बुरे का निर्णय करनेवाले। लेकिन लगता है कि काउंट उन्हें ऐसे प्यार करते हैं..."

"यदि सम्भव हो, तो कृपया यह धुलने को दे दो," डौली ने उसे टोका।

"जो आज्ञा। हमारे यहां छोटी-मोटी धुलाई के लिये दो औरतें

ख़ास तौर पर काम करती हैं और बड़े कपड़े मशीन में धोये जाते हैं। काउंट तो ख़ुद ही हर चीज़ का ध्यान करते हैं। ओह, कैसे अच्छे पति हैं..."

आन्ना के आने पर डौली को ख़ुशी हुई, क्योंकि उसके साथ ही आन्नुश्का की ज़बान भी बन्द हो गयी।

आन्ना ने मलमल का बहुत ही सादा फ़्राक पहन लिया था। डौली ने इस सादे फ़्राक को बहुत ग़ौर से देखा। वह जानती थी कि ऐसी सादगी का क्या अर्थ है और उसको कितनी अधिक क़ीमत चुकाकर हासिल किया जाता है।

"पुरानी परिचिता है न," आन्ना ने आन्नुश्का के बारे में कहा।

आन्ना अब किसी तरह की झेंप महसूस नहीं कर रही थी। वह बिल्कुल शान्त थी और उसकी गतिविधि में किसी तरह का तनाव नहीं था। डौली ने देखा कि आन्ना अब पूरी तरह उस घबराहट से मुक्त हो गयी है, जो उसके आने पर उसने अनुभव की थी और उसने वह सतही तथा उदासीनता का अन्दाज़ अपना लिया है, जिसके फलस्वरूप उस आन्तरिक कक्षा का दरवाज़ा बन्द हो गया है, जिसमें उसकी भावनायें और अन्तरंग विचार सुरक्षित थे।

"तो तुम्हारी बिटिया कैसी है, आन्ना?" डौली ने पूछा।

"आनी?" (अपनी बेटी आन्ना को वह इसी नाम से बुलाती थी।) "बिल्कुल ठीक-ठाक है। तुम उसे देखना चाहती हो? चलो, मैं दिखाती हूं। उसकी धायों-आयों को लेकर बहुत झंझटें रहीं," आन्ना ने बताना शुरू किया। "हमारे यहां एक इतालवी धाय थी। अच्छी, मगर बेहद बेवकूफ़! हमने उसे इटली भेज देना चाहा, लेकिन बच्ची उसकी इतनी अभ्यस्त हो गयी थी कि हम अभी तक उसको यहां रखे हुए हैं।"

"लेकिन आपने मामले को कैसे सुलझाया?" डौली ने यह जानना चाहा कि बच्ची का कुलनाम क्या है। पर आन्ना के माथे पर अचानक बल पड़े देखकर उसने अपने प्रश्न का आशय बदल दिया। "तो कैसे मामले को सुलझाया? उसका दूध छुड़वा दिया?"

किन्तु आन्ना उसका भाव समझ गयी थी।

"तुम यह नहीं पूछना चाहती थीं? तुम उसके कुलनाम के बारे में

पूछना चाहती थीं? ठीक है न? यह चीज़ अलेक्सेई भी परेशान कर रही है। बच्ची का कोई कुलनाम नहीं है। मेरा मतलब है कि वह कारेनिना है," आन्ना ने ऐसे आंखें सिकोड़कर कहा कि उसकी आपस में मिली हुई बरौनियां ही दिखाई दे रही थीं। "ख़ैर," अचानक उसका चेहरा खिल उठा, "हम इन सब बातों की बाद में चर्चा करेंगी। आओ, मैं उसे तुम्हें दिखाती हूं। Elle est très gentille.* वह तो घुटनियों भी चलती है।"

सारे घर के जिस ठाट-बाट ने डौली को आश्चर्यचकित किया था, बच्ची के कमरे में जाने पर उससे उसकी हैरानी और भी ज़्यादा बढ़ गयी। यहां इंगलैंड से मंगवाई गयी छोटी-छोटी गाड़ियां थीं, बच्चे को चलना सिखलानेवाले साधन, घुटनियां चलने के लिये बिलियार्ड मेज़ की तरह ख़ास तौर पर बनवाया गया सोफ़ा, झूले और ख़ास तथा नयी क़िस्म के स्नान टब थे। ये सभी चीज़ें अंग्रेज़ी, मज़बूत, बढ़िया ढंग की और स्पष्टतः बहुत महंगी थीं। कमरा बहुत बड़ा, ऊंची छतवाला और रोशन था।

जब ये दोनों कमरे में दाख़िल हुईं, तो सिर्फ़ शमीज़ पहने बच्ची मेज़ के क़रीब कुर्सी पर बैठी हुई शोरबा खा रही थी, जिससे उसने अपनी सारी छाती भिगो ली थी। बच्ची के कमरे की नौकरानी, एक रूसी लड़की, बच्ची को शोरबा खिला रही थी और स्पष्टतः उसके साथ-साथ ख़ुद भी खा रही थी। न तो धाय और न तो आया ही वहां थी। वे दोनों बग़ल वाले कमरे में थीं और वहां से अजीब सी फ़्रांसीसी भाषा में, वे केवल इसी भाषा में बोल-बतिया सकती थीं, उनकी बातचीत सुनाई दे रही थी।

आन्ना की आवाज़ सुनकर एक सजी-धजी, लम्बे क़द, अप्रिय चेहरे और कपटी भाव वाली अंग्रेज़ आया जल्दी से अपने सुनहरे बालों को झटकती हुई कमरे में आयी और आते ही अपनी सफ़ाई देने लगी, यद्यपि आन्ना ने उसे किसी बात के लिये भी दोष नहीं दिया था। आन्ना के हर शब्द के जवाब में अंग्रेज़ आया ने जल्दी-जल्दी "Yes, my lady**" कहा।

* वह बड़ी प्यारी है। (फ़्रांसीसी)
** जो हुक्म मालकिन। (अंग्रेज़ी)

इस चीज़ के बावजूद कि काली आंखों, काले बालों, लाल गालों और मज़बूत, कसी हुई त्वचा तथा लाल बदन वाली बच्ची ने कठोरता से उसके अजनबी चेहरे की ओर देखा, फिर भी वह डौली को बहुत अच्छी लगी। उसके ऐसे अच्छे स्वास्थ्य से उसे ईर्ष्या भी हुई। यह बच्ची जैसे घुटनियां चलती थी, वह भी उसे बहुत अच्छा लगा। डौली का एक भी बच्चा तो ऐसे घुटनियां नहीं चला था। फ़ाक को पीछे की ओर टांगकर जब इस बच्ची को क़ालीन पर बिठा दिया गया, तो वह अद्भुत रूप से प्यारी प्रतीत हुई। एक शावक की तरह अपनी काली चमकीली आंखों से बड़ों को देखती और स्पष्टतः इस बात से ख़ुश होती हुई कि उसे मुग्ध भाव से देखा जा रहा है, उसने मुस्कराते और टांगों को अगल-बग़ल फैलाये हुए फुर्ती से बांहों का सहारा लिया, अपने पृष्ठभाग को आगे किया और फिर हाथों के बल आगे बढ़ चली।

किन्तु बच्ची के कमरे का सामान्य वातावरण और विशेषतः अंग्रेज़ आया तो डौली को बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। डौली यह मानने को तैयार थी कि आन्ना को, जो लोगों के बारे में इतना अच्छा ज्ञान रखती है, अपनी बिटिया के लिये ऐसी भद्दी और मन पर बुरा प्रभाव डालने-वाली यह अंग्रेज़ आया इसलिये रखनी पड़ी कि ऐसे अस्वाभाविक परिवार में, जैसा कि आन्ना का था, कोई अन्य अच्छी आया काम करने को राज़ी नहीं होगी। इसके अलावा, कुछ ही शब्दों से डौली यह भी समझ गयी कि आन्ना, धाय, आया और बच्ची के बीच विशेष हेल-मेल नहीं है और मां का बच्ची के कमरे में आना एक असाधारण-सी बात थी। आन्ना ने बच्ची को उसका एक खिलौना देना चाहा, मगर वह उसे मिला नहीं।

सबसे ज़्यादा हैरानी की बात तो यह थी कि बिटिया के कितने दांत निकले हैं, आन्ना इस सवाल का भी सही जवाब न दे पायी। अन्तिम दो दांतों के बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं था।

"कभी-कभी मेरे दिल पर इस बात से बहुत भारी गुज़रती है कि मानो मेरी यहां कोई आवश्यकता ही नहीं है," आन्ना ने बच्ची के कमरे से बाहर निकलते और दरवाज़े के क़रीब रखे हुए खिलौनों से बच निकलने के लिये अपनी पोशाक के दामन को सम्भालते हुए कहा। "पहले बच्चे के मामले में ऐसा नहीं था।"

"इस बारे में मेरा इसके उलट ख़्याल था," डौली ने सहमी-सी आवाज़ में कहा।

"अरे नहीं! तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं उससे, सेर्योझा से मिली थी," आन्ना ने आंखें सिकोड़कर मानो कहीं दूर देखते हुए कहा। "ख़ैर, इसकी हम बाद में चर्चा करेंगी। तुम यक़ीन नहीं करोगी कि मैं उस भूखे जैसी हूं, जिसके सामने अचानक तरह-तरह की लज़ीज़ चीज़ों से भरी हुई तश्तरी रख दी जाती है और उसकी समझ में यह नहीं आता कि वह किस चीज़ से भोजन शुरू करे। लज़ीज़ चीज़ों से भरी हुई तश्तरी तुम हो और वे बातें हैं, जो मैं अन्य किसी के साथ नहीं कर सकती थी। मेरी समझ में नहीं आता कि कौनसी बात पहले शुरू करूं। Mais je ne vous ferai grâce de rien.* मुझे सब कुछ बताना है। हां, तुमसे उन लोगों की चर्चा तो करनी चाहिये, जिनसे तुम हमारे यहां मिलोगी," आन्ना ने कहा। "महिलाओं से शुरू करती हूं। प्रिंसेस वर्वारा। तुम उसे जानती हो और उसके बारे में तुम्हारी और स्तीवा की राय भी मुझे मालूम है। स्तीवा का कहना है कि उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य मौसी कातेरीना पाव्लोव्ना की तुलना में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना है। यह सही है, किन्तु वह बड़ी उदार है और मैं उसकी बहुत कृतज्ञ हूं। पीटर्सबर्ग में ऐसा समय भी आया था, जब मुझे un chaperon** की बड़ी सख़्त ज़रूरत थी। उस वक़्त इसी ने मेरा साथ दिया। वह सचमुच ही दयालु है। उसने मेरी स्थिति को आसान बना दिया। मुझे लग रहा है कि वहां, पीटर्सबर्ग में तुम मेरी स्थिति की सारी कठिनाई को नहीं समझ पा रही हो," उसने इतना और जोड़ दिया। "यहां मैं बिल्कुल शान्त और सुखी हूं। पर हम इसकी बाद में चर्चा करेंगी। अभी तो बाक़ी लोगों के बारे में बताती हूं। प्रिंसेस के बाद स्वियाज्स्की है – वह कुलीनों का मुखिया और बहुत भला आदमी है, पर उसे अलेक्सेई से कुछ काम है। तुम तो समझती हो कि अब, जब हम गांव में रहने लगे हैं, तो अपनी सम्पत्ति के आधार पर अलेक्सेई बहुत प्रभावशाली व्यक्ति हो सकता है। इसके बाद तुश्केविच

---

* लेकिन मैं तुम पर रहम नहीं करूंगी। (फ़्रांसीसी)

** संगिनी। (फ़्रांसीसी)

है – तुम उससे मिल चुकी हो, वह बेत्सी के यहां होता था। अब उसे वहां से चलता कर दिया गया है और वह हमारे पास आ गया है। अलेक्सेई के कथनानुसार वह उन लोगों में से है, जिन्हें अगर वैसा ही माना जाये, जैसा वे अपने को दिखाना चाहते हैं, तो बहुत प्यारे होते हैं, et puis, il est comme il faut,* जैसा कि प्रिंसेस वर्वारा कहती है... इसके बाद वेस्लोव्स्की है... उसे तुम जानती हो। बड़ा ही प्यारा लड़का है," आन्ना ने कहा और शरारत भरी मुस्कान से उसके होंठों पर बल-सा पड़ गया। "लेविन के साथ उसका वह क्या अजीब-सा क़िस्सा हो गया था? वेस्लोव्स्की ने अलेक्सेई को बताया था, मगर हमें विश्वास नहीं होता। Il est très gentil et naif,**" आन्ना ने उसी तरह की मुस्कान से कहा। "पुरुषों को मनबहलाव और अलेक्सेई को अपने इर्द-गिर्द लोग चाहिये। इसलिये मैं इन सब को यहां बनाये रखना चाहती हूं। यह ज़रूरी है कि हमारे यहां हंसी-ख़ुशी और रंग-रौनक़ का वातावरण बना रहे, ताकि अलेक्सेई को किसी नवीनता की इच्छा न हो। इसके बाद तुम हमारे कारिन्दे से मिलोगी। वह जर्मन है, बहुत अच्छा और अपना काम जाननेवाला आदमी है। अलेक्सेई उसे बहुत मानता है। इसके बाद डाक्टर है, जवान आदमी, पूरी तरह निहिलिस्ट हो, ऐसी बात तो नहीं, मगर छुरी से खाना खाता है... डाक्टर बहुत अच्छा है। इसके बाद वास्तुकार है... Une petite cour.***"

(२०)

"प्रिंसेस, लीजिये डौली आ गयी, आप उससे मिलने को इतनी अधिक इच्छुक थीं," आन्ना ने डौली के साथ पत्थर के बने हुए बड़े छज्जे में जाकर कहा, जहां प्रिंसेस वर्वारा छाया में बैठी हुई कशीदाकारी के फ़्रेम पर झुकी हुई काउंट व्रोन्स्की की आरामकुर्सी के लिये एक गिलाफ़ काढ़ रही थी। "डौली कहती है कि वह शाम के भोजन के

---

* इसके अलावा, वह भला आदमी है। (फ़्रांसीसी)
** वह बहुत प्यारा और सरल हृदय व्यक्ति है। (फ़्रांसीसी)
*** छोटा-सा दरबार है। (फ़्रांसीसी)

पहले कुछ भी नहीं खाना चाहती, लेकिन आप नाश्ता लाने का आदेश दे दें और मैं जाकर अलेक्सेई को ढूंढ़ती हूं और उन सभी को यहां ले आती हूं।"

प्रिंसेस वर्वारा ने स्नेहपूर्वक और कुछ बड़प्पन-सा दिखाते हुए डौली का स्वागत किया और तत्काल यह स्पष्ट करने लगी कि वह आन्ना के यहां आकर क्यों रहने लगी है। उसने बताया कि वह हमेशा ही अपनी बहन कातेरीना पाव्लोव्ना की तुलना में, जिसने आन्ना को पाला-पोसा था, आन्ना को अधिक प्यार करती रही है और अब, जब सभी ने आन्ना से मुंह मोड़ लिया है, वह इस सबसे कठिन अस्थायी समय में उसकी मदद करना अपना कर्त्तव्य समझती है।

"आन्ना का पति जब उसे तलाक़ दे देगा, तो मैं फिर से अपना एकाकी जीवन बिताने लगूंगी, लेकिन अभी तो मैं कुछ काम आ सकती हूं और मेरे लिये यह चाहे कितना ही मुश्किल क्यों न हो, मैं अपना कर्त्तव्य पूरा करूंगी, दूसरे लोगों जैसी नहीं हो सकती। कितनी अच्छी हो तुम, कितना अच्छा किया तुमने कि आ गयीं! बहुत ही अच्छे दम्पत्ति की तरह ये दोनों रहते हैं। हम लोग नहीं, भगवान ही इनके अच्छे-बुरे का निर्णय करेंगे। फिर तुम बिरियुज़ोव्स्की और अवेन्येवा को याद करो... निकान्द्रोव, वसील्येव तथा मामोनोवा, लीज़ा नेप्तूनोवा को याद करो। आख़िर किसी ने भी उनके बारे में कुछ नहीं कहा? अन्त में यही हुआ कि सभी ने अपने यहां उनका स्वागत-सत्कार किया। और फिर, c'est un intérieu si joli, si comme il faut. Tout-à-fait à l' anglaise. On se réunit le matin au breakfast et puis on se sépare.* शाम के खाने तक हर कोई जो चाहता है, वह करता है। सात बजे शाम का खाना होता है। स्तीवा ने बहुत अच्छा किया कि तुम्हें भेज दिया। उसे इनके साथ मेल-जोल रखना चाहिये। वैसे तो वह अपनी मां और भाई के ज़रिये सब कुछ कर सकता है। इसके अलावा वे भलाई का भी बहुत-सा काम करते हैं। उसने तुम से अपने

---

* इतना प्यारा और ढंग का वातावरण है। बिल्कुल अंग्रेज़ी ढंग का। सुबह के नाश्ते के लिये सब जमा होते हैं और फिर बिखर जाते हैं। (फ़्रांसीसी)

अस्पताल की चर्चा नहीं की? Ce sera admirable,* सब कुछ पेरिस से लाया गया है।"

आन्ना के आने से इन दोनों की बातचीत में बाधा पड़ गयी। उसने मर्दों को बिलियार्ड के कमरे में जा पकड़ा था और अब उनको साथ लिये हुए छज्जे में लौट आई थी। शाम के खाने में अभी बहुत वक़्त बाक़ी था, मौसम सुहावना था और इसलिये शेष बच रहे दो घण्टे बिताने के लिये तरह-तरह के सुझाव प्रस्तुत किये गये। व्रोन्स्की के इस वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव में समय बिताने के अनेक ढंग थे, मगर वे सभी पोक्रोव्स्कोये से भिन्न थे।

"Une partie de lawn tennis,**" अपनी मधुर मुस्कान बिखराते हुए वेस्लोव्स्की ने सुझाव दिया। "आन्ना अर्कादियेव्ना, हम दोनों फिर से जोड़ीदार होंगे।"

"नहीं, बहुत गर्मी है। यह ज़्यादा अच्छा रहेगा कि बाग़ का चक्कर लगाया जाये और फिर नाव की सैर हो, डौली को तट दिखाये जायें," व्रोन्स्की ने सुझाव दिया।

"मैं तो हर चीज़ के लिये राज़ी हूं," स्वियाज्स्की ने कहा।

"मेरे ख़्याल में तो डौली को कुछ देर तक घूमना ही सबसे ज़्यादा अच्छा लगेगा। ठीक है न? और उसके बाद हम नाव में सैर करेंगे," आन्ना ने कहा।

चुनांचे ऐसा ही तय पाया गया। वेस्लोव्स्की और तुश्केविच यह विश्वास दिलाकर स्नान-घाट की ओर चल दिये कि वहां नाव तैयार करवाकर उनकी राह देखेंगे।

आन्ना और स्वियाज्स्की तथा डौली और व्रोन्स्की – जोड़े बनाकर संकरे उद्यान-पथ पर चल पड़े। डौली एकदम जिस नये वातावरण में आ गयी थी, उसमें कुछ झेंप और परेशानी अनुभव कर रही थी। सैद्धान्तिक रूप से वह आन्ना की करनी को न केवल उचित मानती थी, बल्कि उसका समर्थन भी करती थी। नैतिक दृष्टि से सर्वथा दोषहीन और सच्चरित्रा नारियों के साथ जैसे अक्सर होता है, जो नैतिक जीवन

---

* बड़ा ही प्रशंसनीय होगा वह। (फ़्रांसीसी)
** लॉन टेनिस की एक बाज़ी हो जाये। (फ़्रांसीसी)

की एकरूपता से ऊब जाती हैं, डौली भी अपराधपूर्ण प्यार को दूर से न केवल क्षमा करती थी, बल्कि उसे आन्ना से ईर्ष्या भी होती थी। इसके अलावा, वह आन्ना को दिल से चाहती थी। किन्तु वास्तव में आन्ना को ऐसे लोगों के बीच देखकर, जो उसके हेतु सर्वथा पराये थे और जिनके अच्छे तौर-तरीक़े डौली के लिये बिल्कुल नयी चीज़ थे, उसे कुछ अटपटा-सा लग रहा था। प्रिंसेस वर्वारा तो उसे ख़ास तौर पर अच्छी नहीं लग रही थी, जिसने उसे यहां मिलनेवाली सभी आराम-सुविधाओं के बदले में उन्हें सब कुछ क्षमा कर दिया था।

सामान्यतया, सिद्धान्त के रूप में डौली आन्ना के ऐसा करने का समर्थन करती थी, किन्तु जिस व्यक्ति के लिये ऐसा किया गया था, उसको देखना उसे अप्रिय लग रहा था। वैसे भी व्रोन्स्की उसे कभी अच्छा नहीं लगा था। वह उसे बहुत घमण्डी मानती थी और धन के सिवा उसे उसमें कुछ भी तो ऐसा नज़र नहीं आता था, जिस पर वह घमण्ड कर सकता। किन्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध वह यहां, अपने घर में उसे पहले से अधिक प्रभावित कर रहा था और डौली उसके साथ बेतकल्लुफ़ी नहीं महसूस कर सकती थी। उसके साथ उसे वैसी ही अनुभूति हो रही थी, जो ब्लाउज़ के मामले में नौकरानी को लेकर अनुभव हुई थी। जैसे नौकरानी के सामने उसे पैवन्द के कारण लज्जा तो नहीं, अटपटापन अनुभव हुआ था, वैसे ही व्रोन्स्की के साथ उसे अपने पर लगातार शर्म तो नहीं आ रही थी, पर अटपटापन महसूस हो रहा था।

डौली झेंप रही थी और बातचीत का विषय ढूंढ़ रही थी। यह मानते हुए भी कि घमण्ड के कारण व्रोन्स्की को उसके घर और बाग़ की तारीफ़ अच्छी नहीं लगेगी, किन्तु बातचीत का कोई अन्य विषय न मिलने पर उसने यह कह ही दिया कि उसका घर उसे बहुत पसन्द आया है।

"हां, यह बहुत सुन्दर इमारत है और पुरानी, अच्छी शैली में बनी हुई," व्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

"प्रवेश-द्वार के सामने बना हुआ आंगन मुझे बहुत अच्छा लगा है। यह ऐसे ही था?"

"ओह नहीं!" व्रोन्स्की ने कहा और उसका चेहरा खिल

उठा। "काश, आपने इस वसन्त में यह आंगन देखा होता!"

शुरू में बड़ी सावधानी से, मगर बाद में अधिकाधिक रंग में आते हुए व्रोन्स्की घर और बाग़ को सुन्दर बनानेवाले सुधारों की विभिन्न तफ़सीलों की ओर डौली का ध्यान दिलाने लगा। साफ़ दिखाई दे रहा था कि अपनी हवेली और बाग़ को बेहतर और सुन्दर बनाने के लिये उसने बड़ी मेहनत की है, वह एक नये व्यक्ति के सामने इस बारे में डींग मारने की आवश्यकता अनुभव कर रहा है और डौली की प्रशंसा से उसे हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

"अगर आप अस्पताल देखना चाहती हैं और थक नहीं गयीं, तो वह पास में ही है। आइये चलें," व्रोन्स्की ने इस बात के लिये आश्वस्त होने के विचार से डौली को ध्यान से देखा कि कहीं उसे ऊब तो नहीं अनुभव हो रही।

"तुम चलोगी, आन्ना?" व्रोन्स्की ने उससे पूछा।

"हम चलेंगे न?" आन्ना ने स्वियाज्स्की से पूछा। "Mais il ne faut pas laisser le pauvre वेस्लोव्स्की et तुश्केविच se morfondre là dans le bateau.* किसी को भेजकर उन्हें सूचित कर देना चाहिये। हां, यह स्मारक है, जो वह यहां छोड़ जायेगा," उसी चालाकी भरी और सब कुछ जाननेवाली उस मुस्कान के साथ उसने डौली से कहा, जिस मुस्कान को होंठों पर लाकर उसने पहले अस्पताल की चर्चा की थी।

"ओह, बहुत बड़ा काम है यह!" स्वियाज्स्की ने कहा। किन्तु इसलिये कि वह व्रोन्स्की की हां में हां मिलानेवाला प्रतीत न हो, उसने तत्काल हल्की-सी आलोचनात्मक टिप्पणी भी कर दी। "फिर भी एक बात की मुझे हैरानी होती है, काउंट," उसने कहा, "आम लोगों के स्वास्थ्य के लिये इतना कुछ करते हुए आप स्कूलों के मामले में बड़े उदासीन हैं।"

"C'est devenu tellement commun les écoles.**" व्रोन्स्की ने जवाब दिया। "वैसे असली कारण यह नहीं है, मैं इस रौ में बह गया

---

* किन्तु बेचारे वेस्लोव्स्की और तुश्केविच को नाव में प्रतीक्षा करवाते रहना उचित नहीं। (फ़्रांसीसी)

** स्कूल तो बहुत ही आम बात हो गये हैं। (फ़्रांसीसी)

हूं। अस्पताल के लिये इस ओर आइये," व्रोन्स्की ने वीथी से बग़ल को जानेवाले एक संकरे मार्ग की तरफ़ इशारा करते हुए डौली से कहा।

महिलाओं ने अपनी छतरियां खोल लीं और बग़लवाले संकरे मार्ग पर बढ़ चलीं। कुछ मोड़ मुड़ने और एक फाटक को लांघने के बाद डौली को अपने सामने एक ऊंचे स्थान पर लाल रंग की बड़ी, बढ़िया ढंग की और लगभग पूरी तरह निर्मित इमारत दिखाई दी। लोहे की छत, जिस पर अभी तक रोग़न नहीं हुआ था, तेज़ धूप में आंखों को चकाचौंध करती हुई चमक रही थी। निर्मित इमारत के क़रीब ही दूसरी इमारत बन रही थी, जिसके इर्द-गिर्द मचान बनी हुई थी, लबादे पहने हुए तख़्तों पर खड़े राज ईंटों की चिनाई कर रहे थे, लकड़ी के छोटे-छोटे कठौतों में से चूने का लेप करते हुए उन्हें करनियों से समतल कर रहे थे।

"कितनी तेज़ी से आपके यहां काम हो रहा है!" स्वियाज्स्की ने कहा। "पिछली बार मैं जब यहां आया था, तो छत नहीं डाली गयी थी।"

"पतझर तक सब कुछ तैयार हो जायेगा। भीतर तो लगभग सभी काम पूरा हो चुका है," आन्ना ने कहा।

"और यह नयी इमारत क्या है?"

"यह डाक्टर की रिहायश और डिस्पेंसरी के लिये है," व्रोन्स्की ने जवाब दिया और शार्ट कोट पहने वास्तुकार को अपनी ओर आते देखकर उसने महिलाओं से क्षमा-याचना की और उसकी तरफ़ बढ़ चला।

उस गढ़े से बचकर निकलते हुए, जहां से मज़दूर लोग गारा ले रहे थे, वह वास्तुकार के सामने जा खड़ा हुआ और ऊंची आवाज़ में उससे बातचीत करने लगा।

"अग्रभाग नीचा ही रहेगा," व्रोन्स्की ने आन्ना के प्रश्न का उत्तर दिया।

"मैंने कहा था न कि नींव को ऊंचा करना चाहिये," आन्ना ने कहा।

"हां, ज़ाहिर है कि ऐसा करना बेहतर होता," वास्तुकार ने सहमत होते हुए कहा, "मगर अब तो कुछ नहीं हो सकता।"

"मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी है," आन्ना ने स्वियाज्स्की को

जवाब दिया, जो आन्ना की वास्तुकला-सम्बन्धी जानकारी से आश्चर्य-चकित हो गया था। "चाहिये तो यह था कि नयी इमारत अस्पताल की इमारत के साथ मेल खाती होती। किन्तु इसका बाद में ख़्याल आया और इसे किसी योजना के बिना ही शुरू कर दिया गया।"

वास्तुकार के साथ बातचीत समाप्त करने के बाद व्रोन्स्की महिलाओं के पास लौट आया और उन्हें अस्पताल के भीतर ले चला।

बेशक बाहर अभी कारनिसें बनायी जा रही थीं और नीचे वाली मंज़िल पर रंग-रोग़न हो रहा था, फिर भी ऊपर वाला भाग लगभग पूरी तरह तैयार हो चुका था। लोहे का चौड़ा ज़ीना चढ़कर इन्होंने लैंडिंग पार की और पहले बड़े कमरे में दाख़िल हुए। दीवारों पर संगमरमर के ढंग से प्लस्तर किया गया था, पूरे शीशों वाली बड़ी-बड़ी खिड़कियां लग चुकी थीं और सिर्फ़ तख़्तों का फ़र्श अभी पूरा नहीं हुआ था। एक वर्गाकार तख़्ते पर रन्दा फेरनेवाले बढ़इयों ने काम रोक दिया ताकि उन डोरियों को खोलकर, जिनसे उन्होंने अपने बाल बांध रखे थे, आगन्तुक महानुभावों का अभिवादन कर सकें।

"यह रोगियों को दर्ज करने का कमरा है," व्रोन्स्की ने कहा। "यहां ताकों वाले स्टैंड, मेज़ और अलमारी के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा।"

"इधर आइये, यहां से जायेंगे। खिड़की के निकट नहीं जाइये," आन्ना ने कहा और छूकर देखा कि रोग़न सूख गया या नहीं। "अलेक्सेई, रोग़न तो सूख भी गया," उसने इतना और जोड़ दिया।

रोगियों को दर्ज करने के कमरे से वे दालान में गये। यहां व्रोन्स्की ने इन्हें वायु-संचार की नयी व्यवस्था दिखाई। इसके बाद उसने संग-मरमर के स्नानागार और असाधारण स्प्रिंगो वाले पलंग, रोगियों के कमरे, स्टोर, चादर-गिलाफ़ रखने का कमरा, नये ढंग की अंगीठियां और ट्रालियां दिखायीं, जो शोर किये बिना दालान में से चीज़ें ला और ले जा सकेंगी। बहुत-सी अन्य वस्तुएं भी देखने को मिलीं। स्विया-ज्स्की तो नवीनतम चीज़ों के जानकार के रूप में इनका मूल्य आंकता रहा। डौली अब तक कभी न देखी गयी चीज़ों पर हैरानी ज़ाहिर करती और सब कुछ समझने की इच्छा से उनके बारे में सविस्तार पूछ-ताछ करती रही, जिससे व्रोन्स्की को स्पष्टतः बड़ी ख़ुशी होती थी।

"मेरे ख़्याल में तो रूस में ठीक ढंग से बना हुआ यही एकमात्र अस्पताल होगा," स्वियाज्स्की ने कहा।

"अपके यहां प्रसूति-विभाग नहीं होगा क्या?" डौली ने पूछा। "गांव में इसकी इतनी अधिक ज़रूरत होती है। मैं अक्सर ..."

अपनी शिष्टता के बावजूद व्रोन्स्की ने डौली को टोक दिया।

"यह प्रसूति-भवन नहीं, अस्पताल है और छूत के रोगों को छोड़कर बाक़ी सभी तरह के रोगी इसमें इलाज करवा सकेंगे," व्रोन्स्की ने कहा। "और इसे देखिये ..." इतना कहकर व्रोन्स्की ने पहियों वाली वह कुर्सी डौली की ओर ठेल दी, जो कुछ ही समय पहले स्वस्थ होते हुए रोगी के लिये विदेश से मंगवायी गयी थी। "आप देखिये," वह कुर्सी में बैठकर उसे चलाने लगा। "रोगी अभी चलने में असमर्थ है, कमज़ोर है या उसकी टांगें अस्वस्थ हैं, किन्तु उसे हवाख़ोरी की ज़रूरत है, वह इस कुर्सी में बैठकर बाहर जा सकता है ..."

डौली सभी चीज़ों में दिलचस्पी ले रही थी, सब कुछ उसे बहुत अच्छा लग रहा था, किन्तु अपने इस स्वाभाविक और सरलतापूर्ण उत्साह के कारण स्वयं व्रोन्स्की सबसे अधिक उसके मन को छू रहा था। "हां, यह बहुत अच्छा और प्यारा आदमी है," कभी-कभी उसकी बात पर कान न देते, किन्तु उसे ग़ौर से देखते और उसके चेहरे के भावों को समझने की कोशिश करते और अपने को आन्ना की जगह रखते हुए वह सोचती। अपनी इस सजीवता में उसे व्रोन्स्की अब बहुत अच्छा लग रहा था और वह समझ गयी कि क्यों आन्ना को उससे प्यार हो गया था।

(२१)

"नहीं, मेरे ख़्याल में तो प्रिंसेस थक गयी हैं और घोड़ों में इनकी कोई दिलचस्पी नहीं है," व्रोन्स्की ने आन्ना से कहा, जिसने यह सुझाव दिया था कि अश्वपालन फ़ार्म तक चला जाये, जहां स्वियाज्स्की नया घोड़ा देखना चाहता था। "आप दोनों जायें, मैं प्रिंसेस को घर पहुंचा देता हूं और हम बातचीत भी कर लेंगे," उसने विचार प्रकट किया, "बशर्ते कि आपको यह पसन्द हो," उसने डौली की राय जाननी चाही।

"घोड़ों के बारे में मैं कुछ भी नहीं समझती और आपसे बातचीत करके मुझे बड़ी ख़ुशी होगी," डौली ने कुछ हैरान होते हुए जवाब दिया।

व्रोन्स्की के चेहरे से डौली यह भांप गयी थी कि वह उससे कुछ चाहता है। उसका अनुमान सही था। जैसे ही फाटक लांघकर ये दोनों फिर से बाग़ में पहुंचे, वैसे ही व्रोन्स्की ने उस तरफ़ नज़र दौड़ाई, जिधर आन्ना गयी थी और यह यक़ीन हो जाने पर कि वह न तो उनकी बातें सुन सकती है और न ही उन्हें देख सकती है, उसने कहना शुरू किया –

"आपने यह अनुमान लगा लिया होगा कि मैं आपसे कुछ बातचीत करना चाहता हूं?" व्रोन्स्की ने हंसती हुई आंखों से डौली की ओर देखकर कहा। "मैं भूल नहीं कर रहा हूं कि आप आन्ना की सहेली हैं।" व्रोन्स्की ने अपना टोप उतारा, जेब से रूमाल निकाला और उससे गंजे होते हुए सिर को पोंछा।

डौली ने कोई उत्तर नहीं दिया और केवल सहमे-सहमे उसकी ओर देखा। व्रोन्स्की के साथ एकाकी रह जाने पर सहसा उसे भय अनुभव हुआ – हंसती आंखें और चेहरे का कठोर भाव उसके मन में दहशत पैदा कर रहे थे।

व्रोन्स्की उसके साथ क्या बात करेगा, इस बारे में तरह-तरह के ख़्याल उसके दिमाग़ में आ रहे थे। "शायद वह कहेगा कि मैं बच्चों को लेकर उनके यहां गर्मियां बिताने आ जाऊं और मुझे इन्कार करना होगा। शायद यह कहे कि मैं मास्को में आन्ना के लिये मिलने-जुलने वालों का हलक़ा बना दूं... यह भी हो सकता है कि वेस्लोव्स्की और आन्ना के प्रति उसके रवैये की चर्चा करे? सम्भव है कि कीटी की बात चलाये और कहे कि उसके सम्मुख वह अपने को अपराधी अनुभव करता है?" डौली केवल अप्रिय बातों की ही कल्पना कर रही थी और व्रोन्स्की उसके साथ जो बात करना चाहता था, उसका अनुमान नहीं लगा सकी।

"आन्ना पर आपका इतना अधिक प्रभाव है, वह आपको इतना अधिक प्यार करती है," व्रोन्स्की ने कहा, "मेरी सहायता कीजिये।"

डौली प्रश्नसूचक और सहमी-सी दृष्टि से व्रोन्स्की के ओजपूर्ण

चेहरे को देख रही थी, जो लिंडन वृक्षों की छाया के बीच से छनने वाली धूप में कभी पूरी तरह और कभी आंशिक रूप से चमक उठता था। वह प्रतीक्षा कर रही थी कि व्रोन्स्की आगे क्या कहेगा, मगर वह बजरी में अपनी छड़ी को खोंसता हुआ चुपचाप उसकी बग़ल में चलता जा रहा था।

"अगर आप हमारे यहां आई हैं, तो आन्ना की पुरानी सहेलियों में से आप ही एकमात्र ऐसी हैं – मैं प्रिंसेस वर्वारा की गिनती नहीं करता हूं – जो मेरी समझ के अनुसार इसलिये यहां नहीं आई हैं कि हमारी स्थिति को सामान्य समझती हैं, बल्कि इसलिये आयी हैं कि इस स्थिति की सारी यातना को समझते हुए भी उसे प्यार करती हैं और उसकी मदद करना चाहती हैं। मैंने ठीक समझा है न?" व्रोन्स्की ने डौली की ओर मुड़कर देखते हुए पूछा।

"हां, ठीक समझा है," डौली ने अपनी छतरी बन्द करते हुए जवाब दिया, किन्तु..."

"नहीं," उसने डौली को टोक दिया और यह भूलते हुए कि डौली को अटपटी स्थिति में डाल देगा, अनजाने ही रुक गया और डौली को भी रुकना पड़ा। "आन्ना की स्थिति की सारी कठिनाई मुझसे ज़्यादा और अधिक तीव्रता से अन्य कोई अनुभव नहीं करता। यदि आप मुझे दिल रखनेवाला व्यक्ति मानने का सम्मान प्रदान करें, तो यह बात आपकी समझ में आ जायेगी। मैं ही इस स्थिति का कारण हूं और इसलिये इसे अनुभव करता हूं।"

"मैं इस चीज़ को समझती हूं," डौली ने कहा और जिस हार्दिकता तथा दृढ़ता से व्रोन्स्की ने ये शब्द कहे थे, वह बरबस मुग्ध भाव से उसकी ओर देखे बिना न रह सकी। "किन्तु मुझे डर है कि चूंकि आप अपने को इस स्थिति के लिये ज़िम्मेदार समझते हैं, इसे बढ़ा-चढ़ाकर महसूस करते हैं," डौली ने कहा। "सोसाइटी में आन्ना की स्थिति कठिन है, यह मैं समझती हूं।"

"सोसाइटी में तो नरक जैसी स्थिति है!" माथे पर बल डालकर उसने उदासी और जल्दी से कहा। "पीटर्सबर्ग में दो हफ़्तों के दौरान आन्ना ने जो नैतिक यातनायें सहीं, उनसे बदतर यातनाओं की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती... और मैं आपसे इस पर विश्वास करने का अनुरोध करता हूं।"

"लेकिन यहां, जब तक आप और आन्ना... मेरा मतलब आप सोसाइटी की आवश्यकता अनुभव नहीं करते..."

"सोसाइटी!" व्रोन्स्की ने तिरस्कारपूर्वक कहा। "क्या ज़रूरत हो सकती है मुझे सोसाइटी की..."

"तब तक – और ऐसा हमेशा भी हो सकता है – आप ख़ुश और सुख-चैन से हैं। मैं देख सकती हूं कि आन्ना सुखी है, बिल्कुल सुखी है और वह मुझसे यह कह भी चुकी है," डौली ने मुस्कराकर कहा और यह कहते हुए अनजाने ही उसके मन में यह सन्देह पैदा हुआ कि वास्तव में ही आन्ना सुखी है या नहीं।

किन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि व्रोन्स्की को इस बारे में कोई सन्देह नहीं था।

"हां, हां," व्रोन्स्की ने कहा, "मैं जानता हूं कि अपनी यातनाओं के बाद वह फिर से जी उठी है, वह सुखी है। वह वर्त्तमान में सुखी है। किन्तु मुझे? .. मुझे उसका डर है, जो हमारे सामने आगे आनेवाला है... क्षमा चाहता हूं, आप चलना चाहती हैं?"

"नहीं, मेरे लिये सब बराबर है।"

"तो आइये, यहां बैठ जायें।"

डौली उद्यान-पथ के कोने में रखी हुई बेंच पर बैठ गयी। व्रोन्स्की उसके सामने खड़ा हो गया।

"मैं देखता हूं कि वह सुखी है," व्रोन्स्की ने यह बात दोहरायी और आन्ना वास्तव में सुखी है या नहीं, इस सन्देह ने डौली को पहले से भी अधिक अभिभूत कर दिया। "किन्तु क्या स्थिति को ऐसे ही रहने दिया जा सकता है? हमने अच्छा किया या बुरा किया, यह अलग बात है, लेकिन दांव चला जा चुका है," व्रोन्स्की ने रूसी के बजाय फ़्रांसीसी भाषा का उपयोग आरम्भ करते हुए कहा, "और अब जीवन भर के लिये हम एक रिश्ते में बंध चुके हैं। हमारे लिये सबसे पावन प्रेम-सूत्रों में हम बंधे हुए हैं। हमारी एक बच्ची है, हमारे और बच्चे भी हो सकते हैं। लेकिन क़ानून और हमारी सारी परिस्थितियां ऐसी हैं कि हज़ारों उलझनें सामने आ सकती हैं, जिन्हें सारी यातनाओं और आज़माइशों के बाद, जिनका उसे सामना करना पड़ा, वह पूरे मन से चैन पाती हुई अब नहीं देखती और देखना नहीं

चाहती। और यह समझ में भी आता है। किन्तु मैं तो इनकी ओर से आंखें नहीं मूंद सकता। क़ानूनी तौर पर मेरी बेटी मेरी बेटी नहीं, बल्कि कारेनिन की बेटी है। मैं ऐसा धोखा नहीं चाहता!" व्रोन्स्की ने ज़ोरदार नकारात्मक संकेत से कहा और उदासी भरी प्रश्नसूचक दृष्टि से डौली की ओर देखा।

डौली ने जवाब में कुछ भी न कहकर केवल उसकी ओर देखा। व्रोन्स्की कहता गया।

"कल मेरे यहां बेटे का जन्म हो सकता है, मेरे बेटे का, और वह भी क़ानूनी तौर पर कारेनिन होगा। वह न तो मेरे नाम और न सम्पत्ति का ही वारिस होगा। हमारा पारिवारिक जीवन चाहे कितना भी सुखी क्यों न हो और हमारे कितने भी बच्चे क्यों न हों, मेरे और उनके बीच कोई सम्बन्ध नहीं होगा। वे कारेनिन माने जायेंगे। ज़रा सोचिये तो कितनी बोझिल और कितनी भयानक है यह स्थिति! मैं आन्ना से इसकी चर्चा करने की कोशिश करके देख चुका हूं। वह इससे झल्ला उठती है। वह यह नहीं समझती और मैं उससे सब कुछ कह नहीं सकता। अब एक और पहलू को लीजिये। आन्ना के प्यार से मैं सौभाग्यशाली हूं, मगर मुझे कोई काम-काज भी तो करना चाहिये। मैंने अपने लिये यह काम ढूंढ़ लिया, मुझे इस पर गर्व है और राज-दरबार और फ़ौज के अपने भूतपूर्व साथियों के काम-काज की तुलना में इसे कहीं बेहतर मानता हूं। निश्चय ही इस काम को मैं उनके काम से कभी बदलना नहीं चाहूंगा। मैं यहीं रहता हुआ अपना काम करता हूं, बहुत ख़ुश हूं, सन्तुष्ट हूं और ख़ुशी के लिये हमें इससे अधिक कुछ नहीं चाहिये। इस तरह का काम मुझे पसन्द है। Cela n'est pas un pis-aller.* बात इसके विपरीत है..."

डौली से यह छिपा न रहा कि अपनी बात स्पष्ट करते हुए इस स्थल पर व्रोन्स्की कुछ गड़बड़ा गया है और उसके इस विषय-परिवर्तन को वह अच्छी तरह से नहीं समझ पा रही थी। फिर भी वह यह अनुभव कर रही थी कि अगर उसने अपनी उन दिली बातों की चर्चा शुरू कर दी है, जो वह आन्ना से नहीं कह पाता था, तो अब वह सब

---

* सो भी इसलिये नहीं कि कोई दूसरा, बेहतर काम नहीं है। (फ़्रांसीसी)

कुछ कहता जा रहा है और गांव में अपने काम-काज का प्रश्न भी उतना ही उसकी आन्तरिक भावनाओं के अन्तर्गत आता है, जितना आन्ना के साथ उसके सम्बन्धों का प्रश्न।

"तो मैं अपनी बात जारी रखता हूं," व्रोन्स्की ने सम्भलते हुए कहा। "सबसे बड़ी बात तो यह है कि काम करते हुए आदमी को इस बात का विश्वास होना चाहिये कि उसका काम उसके साथ ही समाप्त नहीं हो जायेगा, कि उसके वारिस होंगे – मगर मेरे मामले में तो ऐसा नहीं है। आप ऐसे आदमी की स्थिति की कल्पना करें, जिसे पहले से ही यह मालूम हो कि उसके और उस नारी के बच्चे, जिसे वह प्यार करता है, उसके न होकर किसी ऐसे दूसरे व्यक्ति के बच्चे माने जायेंगे, जो उनसे नफ़रत करता है और उनसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता। यह तो बड़ी भयानक बात है न!"

सम्भवतः अत्यधिक उद्वेलित होने के कारण व्रोन्स्की ख़ामोश हो गया।

"हां, यह तो स्पष्ट है, मैं इस बात को समझती हूं। किन्तु आन्ना क्या कर सकती है?" डौली ने पूछा।

"आपका यह प्रश्न मुझे मेरी बातचीत के उद्देश्य की ओर लाता है," यत्नपूर्वक अपने को शान्त करते हुए व्रोन्स्की ने कहा। "आन्ना कर सकती है, यह उस पर निर्भर है... ज़ार से बच्चे को गोद लेने का अनुरोध करने के लिये भी तलाक़ ज़रूरी है। और यह आन्ना के बस की बात है। आन्ना का पति तलाक़ के लिये राज़ी था – तब तो आपके पति ने इसकी सारी व्यवस्था कर ही दी थी। मैं जानता हूं कि वह अब भी इन्कार नहीं करेगा। सिर्फ़ उसे ख़त लिखने की बात है। तब तो उसने साफ़ ही यह जवाब दिया था कि अगर आन्ना ऐसी इच्छा ज़ाहिर करेगी, तो वह इन्कार नहीं करेगा। निश्चय ही यह तो ऐसी बगुलाभगती जैसी कठोरता है," व्रोन्स्की ने दुखी होते हुए कहा, "जो इस तरह के हृदयहीन लोग ही प्रदर्शित कर सकते हैं। उसे मालूम है कि उसके प्रत्येक स्मरण से ही उसे कितनी यातना होती है और आन्ना को अच्छी तरह जानते-समझते हुए भी वह उससे पत्र लिखने की मांग करता है। मैं ख़ूब समझता हूं कि आन्ना के लिये यह बड़ी यातना होगी। मगर कारण इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि passer pardessus

toutes ces finesses de sentiment. Il y va du bonheur et de l'existence d'Anne et de ses enfants.* मैं अपनी बात नहीं करूंगा, यद्यपि मेरे मन पर भी भारी गुज़र रही है, बहुत भारी गुज़र रही है," व्रोन्स्की ने मानो किसी को इसलिये धमकाते हुए कहा कि उसके मन पर भी बहुत भारी गुज़र रही है। "तो प्रिंसेस, मैं बड़ी बेहयाई से आपके दामन का सहारा ले रहा हूं। आन्ना को उसे पत्र लिखने और तलाक़ मांगने को राज़ी करने के लिये मेरी मदद कीजिये।"

"हां, करूंगी," डौली ने कारेनिन के साथ अपनी अन्तिम भेंट का सजीव स्मरण करते और कुछ सोचते हुए कहा। "हां, करूंगी," आन्ना को ध्यान में लाते हुए उसने दृढ़तापूर्वक उक्त शब्दों को दोहराया।

"आन्ना पर अपने प्रभाव का उपयोग कीजिये, किसी भी तरह उससे पत्र लिखवा दीजिये। मैं उसके साथ इसकी चर्चा नहीं करना चाहता, ऐसा करने में लगभग असमर्थ हूं।"

"ठीक है, मैं उससे बात करूंगी। लेकिन वह ख़ुद इस बारे में क्यों नहीं सोचती?" डौली ने प्रश्न किया और अचानक, न जाने क्यों, उसे आन्ना की आंखें सिकोड़ने की नयी, अजीब आदत की याद हो आयी। और उसे याद आया कि आन्ना तभी आंखें सिकोड़ती थी, जब उसके जीवन के बहुत ही अन्तरंग पक्ष से सम्बन्धित कोई मामला सामने होता था। "वह तो मानो अपने जीवन के बारे में आंखें सिकोड़ती है, ताकि सब कुछ न देखे," डौली ने सोचा। "ज़रूर बात करूंगी, ख़ुद अपने और उसके लिये उससे बात करूंगी," डौली ने व्रोन्स्की के आभार-प्रदर्शन के उत्तर में कहा।

वे दोनों घर की ओर चल दिये।

(२२)

डौली को पहले से ही घर में पाकर आन्ना ने बहुत ग़ौर से उसकी आंखों में देखा मानो व्रोन्स्की के साथ हुई उसकी

---

* भावनाओं की इस सारी नज़ाकत को लांघना होगा। सवाल आन्ना और उसके बच्चों के सुख और भाग्य का है। (फ़्रांसीसी)

बातचीत के बारे में पूछ रही हो, मगर शब्दों में इसे व्यक्त नहीं किया।

"लगता है कि शाम के खाने का वक़्त हो गया," आन्ना ने कहा। "हम तो अभी ढंग से मिल ही नहीं पायीं। मैं रात पर भरोसा किये बैठी हूं। अब कपड़े बदलने के लिये जाना चाहिये। मेरे ख़्याल में तुम भी ऐसा करोगी। हमने निर्माण-स्थल पर अपनी पोशाकें गन्दी कर ली हैं।"

डौली अपने कमरे में चली गयी और वहां उसे बरबस हंसी आ गयी। उसके पास बदलने को कुछ था ही नहीं, क्योंकि वह अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहने हुई थी। फिर भी खाने की मेज़ पर बैठने के लिये अपनी कुछ तैयारी का दिखावा करने के लिये उसने नौकरानी से कहा कि वह उसकी पोशाक को साफ़ कर दे, उसने कफ़ और फ़ीते बदल लिये और सिर को लेस से सजा लिया।

"मैं तो बस, यही कुछ कर सकती थी," डौली ने मुस्कराकर आन्ना से कहा, जो तीसरा, इस बार भी बहुत ही सादा फ़ाक पहनकर बाहर निकली थी।

"हां, हम यहां बहुत ही औपचारिकता दिखाते हैं," आन्ना ने अपनी सजधज के लिये मानो क्षमा मांगते हुए कहा। "अलेक्सेई तुम्हारे आने से इतना ज़्यादा ख़ुश है, जितना बहुत कम ही किसी चीज़ से होता है। वह निश्चय ही तुम्हें प्यार करता है," उसने इतना और जोड़ दिया। "तुम थक तो नहीं गयीं?"

भोजन के पहले बातचीत करने का समय नहीं था। दीवानख़ाने में जाने पर उन्होंने देखा कि प्रिंसेस वर्वारा और काले कोट पहने हुए मर्द लोग वहां पहले से ही उपस्थित हैं। वास्तुकार फ़ाक-कोट पहने था। व्रोन्स्की ने डाक्टर और कारिन्दे से डौली का परिचय करवाया। वास्तुकार से तो अस्पताल में ही उसने परिचय करवा दिया था।

गोल चेहरे और कलफ़ लगी सफ़ेद टाई की लौ देते हुए मोटे बटलर ने यह सूचना दी कि मेज़ लगा दी गयी है और महिलायें उठकर खड़ी हो गयीं। व्रोन्स्की ने स्वियाज्स्की से अनुरोध किया कि वह आन्ना का हाथ थाम ले और ख़ुद उसने डौली को सहारा दिया। वेस्लोव्स्की ने तुश्केविच से पहले प्रिंसेस वर्वारा का हाथ थाम लिया और इसलिये तुश्केविच, कारिन्दा और डाक्टर भोजन-कक्ष की ओर अकेले ही चल पड़े।

खाने की मेज़, भोजन-कक्ष, बर्तन, नौकर, शराब और खाने-पीने की चीज़ें – सभी कुछ न केवल इस घर के नये ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण के अनुरूप था, बल्कि और भी अधिक बढ़िया और नवीन था। डौली अपने लिये नये ऐश्वर्य के इस सारे सामान को बहुत ध्यान से देख रही थी और गृह-संचालिका के नाते अनजाने ही हर चीज़ की तफ़सील को अपने मन पर अंकित कर रही थी – यद्यपि यहां देखी जानेवाली किसी भी चीज़ का अपने घर में कभी उपयोग कर पाने की उसे आशा नहीं थी, क्योंकि इस तरह का वैभव उसके जीवन ढंग की सीमा से कहीं ऊपर था – और उसके मन में यह प्रश्न आ रहा था कि किसने और कैसे यह सब कुछ किया। वेस्लोव्स्की, उसका अपना पति, यहां तक कि स्वियाज्स्की और बहुत से अन्य लोग भी, जिन्हें वह जानती थी, इस बारे में कभी नहीं सोचते थे और बात का पक्का यक़ीन रखते थे कि हर भला मेज़बान अपने मेहमानों को यह महसूस करवाना चाहता है कि उस घर में जो इतनी सुव्यवस्था है, उसके लिये उसे यानी मेज़बान को कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी और सब कुछ अपने आप ही हो गया है। किन्तु डौली तो यह जानती थी कि बच्चों के नाश्ते के लिये अपने आप तो दलिया भी तैयार नहीं होता और इसलिये इतनी जटिल और बढ़िया व्यवस्था करने के लिये ज़रूर किसी ने बहुत ध्यान दिया है। व्रोन्स्की ने मेज़ को जैसे ग़ौर से देखा, सिर हिलाकर बटलर को इशारा किया, गर्म या ठंडा सूप चुनने के लिये जिस तरह डौली से अनुरोध किया, इन सब चीज़ों से वह समझ गयी कि सभी कुछ व्रोन्स्की की देखभाल और चिन्ताओं का नतीजा है। स्पष्टतः आन्ना का इसमें इतना ही योग था, जितना वेस्लोव्स्की का। वह, स्वियाज्स्की, प्रिंसेस और वेस्लोव्स्की समान रूप से अतिथि थे और बड़े मज़े से उन सब चीज़ों का लुत्फ़ उठा रहे थे, जो उनके लिये तैयार की गयी थीं।

आन्ना तो केवल बातचीत के मामले में ही मेज़बान थी। यह बातचीत खाने की मेज़ के गिर्द बैठे थोड़े-से लोगों, सो भी कारिन्दे और वास्तुकार जैसे लोगों की उपस्थिति में मेज़बान के लिये बहुत कठिन थी। ये लोग एकदम दूसरी दुनिया से सम्बन्ध रखनेवाले लोग थे, इस अनभ्यस्त ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण में अपनी घबराहट पर क़ाबू पाने के लिये यत्नशील थे तथा सामान्य बातचीत में देर तक भाग नहीं ले

सकते थे। ऐसी कठिन बातचीत को आन्ना सामान्य चतुराई, स्वाभाविकता, यहां तक कि बड़े मज़े से, जैसे डौली को लगा, जारी रख रही थी।

इस विषय पर बातचीत चल पड़ी कि कैसे तुश्केविच और वेस्लोव्स्की – ये दोनों ही नौका-विहार के लिये गये और तुश्केविच पीटर्सबर्ग के नाव-क्लब की अन्तिम नौका-दौड़ों के बारे में बताने लगा। किन्तु आन्ना ने उचित अवसर पाकर वास्तुकार को सम्बोधित किया, ताकि उसका मौन भंग कर सके।

"निकोलाई इवानोविच को इस बात की बड़ी हैरानी हुई," आन्ना ने स्वियाज्स्की के बारे में कहा, "कि उनके पिछली बार यहां आने के बाद के समय में यहां कितना अधिक नवनिर्माण हो गया है। किन्तु मैं तो निर्माण-स्थल पर हर दिन जाती हूं और हर दिन ही हैरान होती हूं कि कितनी तेज़ी से काम हो रहा है।"

"काउंट साहब के साथ काम करना बहुत आसान है," वास्तुकार ने मुस्कराकर उत्तर दिया (वह अपनी गरिमा के प्रति सचेत, आदरपूर्ण और शान्त व्यक्ति था)। "गुबेर्निया के अधिकारियों के साथ काम करनेवाली बात नहीं है। वहां तो ढेरों काग़ज़ काले किये जाते हैं, मगर यहां मैं काउंट साहब से अपनी बात कह देता हूं, हम दो-चार शब्दों में उस पर विचार-विनिमय कर लेते हैं।"

"अमरीकी ढंग," स्वियाज्स्की ने मुस्कराते हुए कहा।

"जी हां, वहां युक्तियुक्त ढंग से निर्माण होता है।"

यहां से संयुक्त राज्य अमरीका में सत्ता के दुरुपयोग की बात चल पड़ी, किन्तु आन्ना ने उसे फ़ौरन दूसरी दिशा में मोड़ दिया, ताकि कारिन्दे की ख़ामोशी टूट सके।

"तुमने कभी फ़सल काटनेवाली मशीनें देखी हैं?" आन्ना ने डौली से पूछा। "हम उन्हें ही देखने गये थे, जब लौटते हुए तुमसे भेंट हुई। मैंने भी पहली बार ही देखी हैं।"

"तो वे कैसे काम करती हैं?" डौली ने पूछा।

"बिल्कुल कैंचियों की तरह। एक तख़्ता और बहुत-सी छोटी-छोटी कैंचियां। इस तरह से।"

आन्ना अंगूठियों से सुशोभित उंगलियों वाले अपने सुन्दर और गोरे

हाथों में एक छुरी और कांटा लेकर कटाई-मशीन की कार्य-पद्धति का प्रदर्शन करने लगी। वह स्पष्टत: यह अनुभव कर रही थी कि उसकी व्याख्या से किसी के भी कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा, किन्तु यह जानते हुए कि उसका बात करने का अन्दाज़ प्यारा है और उसके हाथ सुन्दर हैं, उसने अपनी व्याख्या जारी रखी।

"कैंची के बजाय क़लमतराश चाक़ू कहना ज़्यादा ठीक होगा," वेस्लोव्स्की ने आन्ना को एकटक देखते हुए शोख़ी से कहा।

आन्ना तनिक मुस्करा दी, किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं दिया।

"कार्ल फ़्योदोरोविच, वे कैंचियों जैसी ही हैं न?" आन्ना ने कारिन्दे से पूछा।

"O ja," जर्मन ने जवाब दिया। "Es ist ein ganz einfaches Ding,*" और मशीन की बनावट समझाने लगा।

"अफ़सोस की बात है कि यह पूले नहीं बांधती। मैंने वियेना की प्रदर्शनी में ऐसी मशीन देखी थी, जो लोहे के तार से पूले बांधती थी," स्वियाज्स्की ने कहा। "ऐसी मशीनें अधिक लाभदायक रहतीं।"

"Es kommt drauf an... Der Preis vom Draht muss ausgerechnet werden.**" और मौन भंग हो जाने पर जर्मन ने अब व्रोन्स्की को सम्बोधित किया – "Das lässt sich ausrechnen, Erlaucht.***" जर्मन ने जेब में हाथ डालना चाहा, जहां वह पेंसिल और नोटबुक रखता था, जिसमें सारा हिसाब जोड़ता था। किन्तु यह ध्यान आने पर कि वह खाने की मेज़ पर बैठा है और व्रोन्स्की की नज़र में ऐसा न करने का भाव भांप कर उसने अपना इरादा बदल लिया। "Zu complicirt, macht zu viel Klopot,****" उसने अन्त में कहा।

"Wünscht man Dochots, so hat man auch Klopots,*****" वेस्लोव्स्की ने जर्मन कारिन्दे का मज़ाक़-सा उड़ाते हुए कहा।

---

* जी हां, यह बिल्कुल सीधी-सादी चीज़ है। (जर्मन)
** बात यह है कि ... तार की क़ीमत घटानी चाहिये। (जर्मन)
*** इसका हिसाब जोड़ा जा सकता है, हुज़ूर। (जर्मन)
**** बहुत पेचीदा है, बड़ी झंझट होगी। (जर्मन)
***** जो आमदनी चाहता है, वह झंझट भी करता है। (जर्मन)

"J'adore l'allemand,*" उसने पहले जैसी मुस्कान के साथ आन्ना को सम्बोधित किया।

"Cessez,** " आन्ना ने मज़ाक़िया कड़ाई से कहा।

"हमारा ख़्याल था कि आपसे मैदान में ही भेंट हो जायेगी, वसीली सेम्योनोविच," आन्ना ने डाक्टर से कहा, जो रोगी-सा व्यक्ति था। "आप वहां थे?"

"मैं वहां था, मगर हवा में ग़ायब हो गया," डाक्टर ने मज़ाक़ करते हुए उदासी भरे अन्दाज़ में जवाब दिया।

"तो कहना चाहिये कि आपकी अच्छी कसरत हो गयी।"

"बहुत अच्छी!"

"और बुढ़िया का स्वास्थ्य कैसा है? आशा करती हूं कि उसे टाइफ़स नहीं है?"

"टाइफ़स हो या न हो, बचनेवाला केस नहीं है।"

"बड़े अफ़सोस की बात है!" आन्ना ने कहा और इस तरह अपने यहां काम करनेवाले लोगों की ओर ध्यान देने के बाद उसने मित्रों में दिलचस्पी लेना शुरू किया।

"फिर भी आपकी व्याख्या के अनुसार मशीन बनाना कठिन होगा," स्वियाज्स्की ने मज़ाक़ करते हुए कहा।

"भला वह क्यों?" आन्ना ने मुस्कराकर पूछा। उसकी मुस्कान यह कहती प्रतीत हो रही थी कि उसके द्वारा की गयी मशीन-निर्माण की व्याख्या में कुछ ऐसा आकर्षक तत्व था, जिसकी ओर स्वियाज्स्की का ध्यान भी जाये बिना न रह सका था। जवान लोगों जैसी इस चुहलबाज़ी से डौली को अप्रिय आश्चर्य हुआ।

"मगर दूसरी ओर, वास्तुकला के बारे में आन्ना अर्कादियेव्ना की जानकारी बहुत कमाल की है," तुश्केविच ने कहा।

"सो तो है ही, कल मैंने आन्ना अर्कादियेव्ना को डाट और पादक जैसे शब्दों का उपयोग करते सुना था," वेस्लोव्स्की ने कहा। "मैं ठीक कह रहा हूं न?"

"अगर किसी को इतना अधिक देखना और सुनना पड़े, तो इसमें

---

* जर्मन भाषा का भक्त हूं। (फ़्रांसीसी)

** बस कीजिये। (फ़्रांसीसी)

हैरानी की कौन-सी बात है," आन्ना ने जवाब दिया। "आप तो यह भी नहीं जानते होंगे कि मकान किस चीज़ से बनाया जाता है?"

डौली ने देखा कि आन्ना चुलबुलेपन के उस अन्दाज़ से ख़ुश नहीं थी, जो उसके और वेस्लोव्स्की के बीच चल रहा था, मगर ख़ुद अनजाने ही उसको अपना रही थी।

इस मामले में व्रोन्स्की का रवैया लेविन से बिल्कुल भिन्न था। वह वेस्लोव्स्की की बकवास को स्पष्टत: कोई महत्त्व नहीं देता था और उसे रोकने के बजाय प्रोत्साहित करता था।

"तो वेस्लोव्स्की यह बताइये कि पत्थरों को किस चीज़ से जोड़ा जाता है?"

"ज़ाहिर है, सीमेन्ट से।"

"बहुत ख़ूब! और सीमेन्ट क्या होता है?"

"वह, वह एक तरह का लेप... नहीं गारा होता है," सभी लोगों के ठहाके के बीच वेस्लोव्स्की ने उत्तर दिया।

डाक्टर, वास्तुकार और कारिन्दे को छोड़कर, जो उदासी भरी चुप्पी साधे थे, खाने की मेज़ पर बैठे लोगों के बीच लगातार बातचीत चलती जा रही थी। कभी वह अबाध चलती रहती, कभी उलझ जाती और कभी किसी को ऐसे चुभ जाती कि वह तिलमिला उठता। डौली को वह एक बार ऐसे अखरी और वह इतनी उत्तेजित हो उठी कि चेहरा लाल हो गया और उसने बाद में ही यह याद करने की कोशिश की कि कोई फ़ालतू और अप्रिय बात तो नहीं कह दी। स्वियाज्स्की ने लेविन की चर्चा शुरू कर दी, उसके इन अजीब विचारों का उल्लेख किया कि रूसी खेतीबारी को मशीनों से केवल हानि ही पहुंचती है।

"मुझे इन महानुभाव लेविन से परिचित होने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ," व्रोन्स्की ने मुस्कराकर कहा, "किन्तु उन्होंने सम्भवत: वे मशीनें नहीं देखी होंगी, जिनकी भर्त्सना करते हैं। और अगर देखी तथा आज़मायी हैं, तो अच्छी तरह से नहीं और सो भी विदेशी नहीं, कोई रूसी। तो इस बारे में उनके दृष्टिकोण का सवाल ही क्या हो सकता है?"

"कहना चाहिये कि तुर्कों वाला दृष्टिकोण है," वेस्लोव्स्की ने आन्ना को सम्बोधित करते हुए मुस्कराकर कहा।

"मैं लेविन के दृष्टिकोण का पक्ष-पोषण नहीं कर सकती," डौली ने भड़क कर कहा, "किन्तु इतना कह सकती हूं कि वह बहुत पढ़ा-लिखा आदमी है और अगर यहां होता, तो आपको ढंग से जवाब देता। मैं ऐसा करने में असमर्थ हूं।"

"मैं उसे बहुत प्यार करता हूं और हम बड़े घनिष्ठ मित्र हैं," स्वियाज्स्की ने खुशमिज़ाजी से मुस्कराकर कहा। "Mais pardon, il est un petit peu toqué;* मिसाल के लिये वह ज़ोर देकर यह कहता है कि ग्राम-परिषदों और न्यायाधीशों की कोई ज़रूरत नहीं है और किसी भी चीज़ में हिस्सा नहीं लेना चाहता।"

"यह हम रूसी लोगों की उदासीनता है," व्रोन्स्की ने ठण्डी सुराही से पतली डंडीवाले गिलास में पानी डालते हुए कहा, "हमारे अधिकार हमसे जिन कर्त्तव्यों की पूर्ति की अपेक्षा करते हैं, हम उन्हें अनुभव नहीं करते और इसलिये इन कर्त्तव्यों से इन्कार कर देते हैं।"

"अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति के बारे में मैं तो उससे अधिक सजग व्यक्ति को नहीं जानती," व्रोन्स्की के अपनी श्रेष्ठता जताने के इस अन्दाज़ से चिढ़कर डौली ने कहा।

"मैं तो इसके उलट," व्रोन्स्की ने न जाने क्यों इस चर्चा से भड़कते हुए अपनी बात जारी रखी, "मैं तो इसके उलट, जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं, न्यायाधीश चुना जाने के सम्मान के लिये, जो मुझे निकोलाई इवानोविच" (उसने स्वियाज्स्की की ओर संकेत किया) "की बदौलत प्राप्त हुआ, बहुत आभारी हूं। मैं यह मानता हूं कि मेरे लिये ज़ेम्सत्वो-परिषद की बैठक में जाना, वहां किसी किसान के घोड़े-सम्बन्धी मामले पर विचार करना उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना वह सभी कुछ, जो मैं कर सकता हूं। अगर मुझे ज़ेम्सत्वो-परिषद का सदस्य चुन लिया गया, तो मैं इसे और भी बड़े सम्मान की बात मानूंगा। ज़मींदार होने के नाते मुझे जो लाभ प्राप्त हैं, मैं उनका केवल ऐसे ही मूल्य चुका सकता हूं। दुर्भाग्य से वह महत्त्व नहीं समझा जाता, जो बड़े ज़मींदारों को राज्य में प्राप्त होना चाहिये।"

अपने घर में खाने की मेज़ पर बैठा हुआ व्रोन्स्की अपने दृष्टिकोण

---

*लेकिन, माफ़ कीजिये, वह ज़रा अजीब-सा आदमी है। (फ़्रांसीसी)

से सही होने के बारे में जिस शान्त भाव से चर्चा कर रहा था डौली को वह सुनना अजीब-सा लगा। उसे याद हो आया कि व्रोन्स्की के प्रतिकूल दृष्टिकोण रखनेवाले लेविन ने भी अपनी मेज़ पर बैठे हुए इसी दृढ़ता से अपना मत व्यक्त किया था। किन्तु चूंकि लेविन उसे अच्छा लगता था, इसलिये वह उसी के पक्ष में थी।

"तो काउंट, हम अगले अधिवेशन में आपके भाग लेने का विश्वास कर सकते हैं न?" स्वियाज्स्की ने कहा। "किन्तु थोड़ा पहले जाना चाहिये, ताकि आठ तारीख़ तक हम वहां पहुंच जायें। कैसा रहे अगर आप मेरे यहां आकर मुझे सम्मानित करें?"

"मैं कुछ हद तक तुम्हारे बहनोई से सहमत हूं," आन्ना ने कहा। "किन्तु उसकी भांति नहीं," उसने मुस्कराकर इतना और जोड़ दिया। "मुझे लगता है कि पिछले समय में हमारे यहां ये सार्वजनिक कर्त्तव्य कुछ बहुत ही अधिक हो गये हैं। ठीक उसी तरह, जैसे पहले इतने अधिक कर्मचारी थे कि हर चीज़ के लिये कर्मचारी ज़रूरी था। अब यही बात सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के बारे में कही जा सकती है। अलेक्सेई को यहां आये छः महीने हुए हैं और लगता है कि इसी अर्से में वह पांच-छः सार्वजनिक संस्थाओं में शामिल हो गया है – ट्रस्टियों के बोर्ड का सदस्य है, न्यायाधीश है, ज़ेम्सत्वो-परिषद का सदस्य है, जूरी का सदस्य है, अश्व-समिति का सदस्य है। Du train que cela va* उसका सारा वक़्त इन्हीं में चला जाता है। मुझे डर है कि इतने अधिक काम होने पर वे केवल औपचारिकता बन जाते हैं। निकोलाई इवानोविच, आप कितनी संस्थाओं के सदस्य हैं?" आन्ना ने स्वियाज्स्की से पूछा। "लगता है कि बीस से अधिक संस्थाओं के?"

आन्ना बात तो मज़ाक़िया ढंग से कर रही थी, मगर उसके अन्दाज़ में खीझ की अनुभूति होती थी। आन्ना और व्रोन्स्की को ग़ौर से देखने वाली डौली को यह भांपने में देर न लगी। उसने यह भी देखा कि इस बातचीत के शुरू होते ही व्रोन्स्की के चेहरे पर गम्भीरता और हठ का भाव झलक उठा था। यह भांपने और यह देखने पर कि प्रिंसेस वर्वारा ने फ़ौरन बातचीत का विषय बदलने के लिये पीटर्सबर्ग के अपने

---

* जीवन के ऐसे ढंग से। (फ़्रांसीसी)

परिचितों की चर्चा आरम्भ कर दी है तथा यह याद करके कि व्रोन्स्की ने अकारण ही बाग़ में अपने कार्य-कलापों का उल्लेख नहीं किया था, डौली समझ गयी कि इन सार्वजनिक गतिविधियों को लेकर आन्ना और व्रोन्स्की के बीच गुप्त रूप से एक कलह चल रही है।

भोजन, शराब और तश्तरियां-प्याले – यह सभी कुछ बहुत अच्छा, किन्तु ऐसा था, जैसा डौली ने दावतों और बॉलों के समय देखा था और जिनकी वह अभ्यस्त नहीं रही थी। यहां भी वही रंग-ढंग और तनाव था। इसलिये साधारण दिन और छोटी मण्डली में इन सब चीज़ों ने उसके मन पर अप्रिय प्रभाव डाला।

भोजन के बाद सभी लोग छज्जे में बैठे रहे। इसके बाद लॉन टेनिस खेलने लगे। खिलाड़ी दो दलों में बंट गये और बहुत ही अच्छी तरह समतल तथा बराबर किये गये क्राकेटग्राउंड में धातु मढ़े खम्भों के बीच फैले जाल के दोनों ओर खड़े हो गये। डौली ने खेलने की कोशिश की, मगर देर तक खेल को समझ न पायी और जब समझी, तो इतना थक गयी थी कि प्रिंसेस वर्वारा के पास बैठकर केवल खिलाड़ियों को देखती रही। डौली के साथी तुश्केविच ने भी खेलना बन्द कर दिया, मगर बाक़ी सबने देर तक खेल जारी रखा। स्वियाज्स्की और व्रोन्स्की दोनों ही बहुत अच्छी तरह और संजीदगी से खेलते थे। वे अपनी ओर फेंके गये गेंद को बहुत ध्यान से देखते, उतावली या काहिली किये बिना फुर्ती से उसकी तरफ़ भागते, उसके ज़मीन पर लगकर उछलने का इन्तज़ार करते और निशाना बनाकर बड़े अच्छे ढंग से उसे राकेट मारकर जाल के दूसरी ओर फेंकते। दूसरों के मुक़ाबले में वेस्लोव्स्की खेल में कच्चा था। वह बहुत उत्तेजित हो उठता था, मगर अपनी ख़ुशमिज़ाजी से दूसरे खिलाड़ियों को प्रेरित करता था। वह लगातार हंसता और ख़ुशी से चिल्लाता जा रहा था। अन्य पुरुषों की भांति उसने भी महिलाओं की अनुमति लेकर अपना कोट उतार दिया था और क़मीज़ की सफ़ेद आस्तीनों में से झांकता उसका सुन्दर तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर, पसीने से तर तमतमाया हुआ चेहरा और वेगपूर्ण अंग-संचालन मानस-पट पर अंकित हो जाते थे।

इस रात को डौली जब बिस्तर पर गयी, तो आंखें मूंदते ही क्राकेटग्राउंड में इधर-उधर दौड़ता वेस्लोव्स्की उसके सामने घूमने लगा।

खेल के समय डौली को खुशी महसूस नहीं हुई। उसे खेल के दौरान जारी रहनेवाली आन्ना और वेस्लोव्स्की की चोंचलेबाज़ी तथा सामान्य रूप से उन बड़ों की अस्वाभाविकता अच्छी नहीं लगी, जो बच्चों के बिना बच्चों का खेल खेल रहे थे। पर इसलिये कि दूसरों के रंग में भंग न पड़े और किसी तरह समय बीत जाये, वह कुछ देर आराम करने के बाद फिर से खेल में शामिल हो गयी और यह ढोंग करती रही कि उसे मज़ा आ रहा है। इस पूरे दिन ही डौली को ऐसा लगता रहा कि वह अपने से बेहतर अभिनेताओं के साथ रंगमंच पर अभिनय कर रही है और उसका बुरा अभिनय सब कुछ चौपट किये दे रहा है।

डौली इस इरादे से आई थी कि अगर उसे अच्छा लगेगा, तो वह यहां दो दिन रहेगी। किन्तु इसी शाम को, खेल के समय ही उसने यह तय कर लिया कि अगले दिन यहां से चली जायेगी। मां के नाते वे यातनापूर्ण चिन्तायें, जो यहां आते समय उसे रास्ते में इतनी अधिक अखर रही थीं, अब, उनके बिना एक दिन बिताने पर, दूसरे ही रूप में उसके सामने आ रही थीं और उसे अपनी ओर खींच रही थीं।

शाम की चाय और रात के नौका-विहार के बाद डौली ने जब अपने कमरे में लौटकर अपनी पोशाक उतारी और थोड़े-से बालों को रात के लिये संवारने बैठी, तो उसे बड़ी राहत महसूस हुई।

डौली को यह विचार भी अरुचिकर लगा कि आन्ना अभी उसके पास आयेगी। वह अपने विचारों के साथ अकेली ही रहना चाहती थी।

(२३)

डौली बिस्तर में जाना चाह रही थी कि नाइट गाउन पहने हुए आन्ना उसके कमरे में दाखिल हुई।

दिन के दौरान आन्ना ने कई बार अपने दिली मामलों की चर्चा शुरू की और हर बार ही कुछ शब्द कहकर चुप हो गयी। "बाद में, एकान्त में सारी बातचीत करेंगी। मुझे तुम्हें बहुत कुछ बताना है," आन्ना कहती।

अब वे दोनों एकान्त में थीं और आन्ना नहीं जानती थी कि डौली से क्या कहे। वह खिड़की के पास बैठी हुई डौली को देख और उन

सभी बातों को याद कर रही थी, जो उसे हार्दिक मामलों का अक्षय भण्डार प्रतीत होती थीं, और कुछ भी याद नहीं कर पा रही थी। अब उसे ऐसा लग रहा था कि सब कुछ पहले ही कहा जा चुका है।

"यह बताओ, कीटी का क्या हाल-चाल है?" गहरी सांस छोड़ते और अपराधी की भांति डौली की ओर देखते हुए आन्ना ने पूछा। "मुझे सच सच बताना, डौली, वह मुझसे नाराज़ तो नहीं है?"

"नाराज़? नहीं," डौली ने मुस्कराकर कहा।

मुझसे घृणा करती है, मेरे प्रति तिरस्कार की भावना रखती है?"

"अरे नहीं! लेकिन तुम जानती ही हो कि ऐसी बातें क्षमा नहीं की जातीं।"

"हां, हां," मुंह फेरकर खुली खिड़की से बाहर झांकते हुए आन्ना ने कहा। "लेकिन मेरा कोई दोष नहीं था। दोषी हो ही कौन सकता है? दोषी होने का मतलब ही क्या है? क्या इसके सिवा कुछ और हो भी सकता था? तुम्हारा क्या ख़्याल है? क्या यह हो सकता था कि तुम स्तीवा की बीवी न होतीं?"

"मैं, मैं नहीं जानती। लेकिन तुम मुझे यह बताओ ..."

"हां, हां, लेकिन हमने कीटी के बारे में तो अभी बातचीत समाप्त नहीं की। वह सुखी है न? सुनती हूं कि वह बहुत ही अच्छा आदमी है।"

"बहुत अच्छा आदमी कहना बहुत कम है। मैं उससे बेहतर आदमी ही नहीं जानती।"

"मैं यह जानकर ख़ुश हूं! बेहद खुश हूं! बहुत अच्छा आदमी कहना बहुत कम है," उसने डौली का यह वाक्य दोहराया।

डौली मुस्करायी।

"लेकिन तुम मुझे अपने बारे में बताओ। तुमसे लम्बी बातचीत करनी है मुझे। मेरी ... भी बातचीत हुई थी।" डौली नहीं समझ पा रही थी कि व्रोन्स्की का किस तरह उल्लेख करे। काउंट या अलेक्सेई किरील्लोविच कहकर व्रोन्स्की का उल्लेख करना उसे अटपटा लग रहा था।

"अलेक्सेई के साथ," आन्ना ने कहा, "मुझे मालूम है कि तुम दोनों की बातचीत हुई थी। किन्तु मैं तुमसे यह साफ़-साफ़ जानना चाहती हूं कि मेरे बारे में, मेरे जीवन के बारे में तुम क्या सोचती हो?"

"ऐसे अचानक ही मैं इसका जवाब कैसे दे सकती हूं? सच कहती हूं, मैं नहीं जानती।"

"नहीं, तुम फिर भी मुझे यह बताओ... तुम मेरी ज़िन्दगी देख रही हो। लेकिन यह मत भूलना कि तुम गर्मियों में हमें देख रही हो, जब तुम आ गयी हो और हम अकेले नहीं हैं... पर हम तो वसन्त के आरम्भ में यहां आये थे, बिल्कुल अकेले ही रहते थे और अकेले ही रहेंगे तथा मैं इससे अधिक कुछ चाहती भी नहीं हूं। मगर तुम यह कल्पना करो कि मैं उसके बिना अकेली यहां रहती हूं, अकेली, और ऐसा होगा... सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मैं यह देख रही हूं कि ऐसा अक्सर होगा, कि आधे वक़्त वह घर से बाहर रहेगा," आन्ना ने उठकर डौली के निकट बैठते हुए कहा।

"ऐसा तो होगा ही," आन्ना ने डौली को, जो आपत्ति करना चाहती थी, बीच में ही रोक दिया, "सो तो होगा ही और मैं उसे ज़बर्दस्ती नहीं रोकूंगी। मैं रोकती भी नहीं हूं। जल्द ही घुड़दौड़ें होनेवाली हैं, उसके घोड़े उनमें हिस्सा ले रहे हैं, वह वहां जायेगा। मैं बहुत ख़ुश हूं। किन्तु तुम मेरे बारे में सोचो, मेरी स्थिति की कल्पना करो... इसकी चर्चा ही क्या की जाये!" आन्ना मुस्करा दी। "तो उसने क्या कहा तुमसे?"

"उसने वही कुछ कहा, जो मैं ख़ुद भी तुमसे कहना चाहती हूं और इसलिये मैं आसानी से उसकी ओर से वकालत कर सकती हूं। यही कि क्या ऐसी सम्भावना नहीं है, क्या ऐसा नहीं हो सकता..." डौली कुछ देर को झिझकी, "कि तुम अपनी स्थिति को सुधार लो, उसे बेहतर बना लो... इस बारे में मेरी राय तो तुम जानती ही हो... फिर भी, यदि सम्भव हो, तो तुम्हें शादी कर लेनी चाहिये..."

"मतलब यह कि तलाक़ ले लूं?" आन्ना ने कहा। "तुम्हें यह मालूम है कि पीटर्सबर्ग में मुझसे मिलने के लिये केवल एक औरत, सिर्फ़ बेत्सी त्वेरस्काया ही आयी? तुम उसे जानती हो न? Au fond c'est la femme la plus dèpravée qui existe.* बहुत ही घिनौने ढंग से पति की आंखों में धूल झोंकते हुए उसने तुश्केविच के साथ

---

* थोड़े में यही कि वह बहुत बदचलन औरत है। (फ़्रांसीसी)

अनुचित सम्बन्ध बना रखे थे। उसने भी मुझसे यह कहा कि जब तक मैं अपनी स्थिति ठीक नहीं कर लेती, वह मुझसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहती। ऐसा मत समझ लेना कि मैं उसके साथ तुम्हारी तुलना कर रही हूं... तुम्हें, मेरी प्यारी, मैं बहुत अच्छी तरह से जानती हूं। किन्तु मुझे बरबस यह बात याद हो आयी... तो उसने क्या कहा तुमसे?" आन्ना ने अपनी बात दोहरायी।

"उसने कहा कि वह तुम्हारे और अपने लिये दुखी है। शायद तुम कहोगी कि यह उसका स्वार्थ है, किन्तु कितना न्यायोचित और श्रेष्ठ स्वार्थ है! सबसे पहले तो वह यह चाहता है कि अपनी बेटी का क़ानूनी पिता और तुम्हारा क़ानूनी पति बने, तुम पर अपना अधिकार स्थापित कर पाये।"

"कौन-सी बीवी, कौन-सी दासी इस हद तक दासी होगी, जिस हद तक अपनी वर्त्तमान स्थिति में मैं उसकी दासी हूं?" आन्ना ने उदास होते हुए उसे टोका।

"मगर सबसे अधिक तो वह यह चाहता है... वह यह चाहता है कि तुम्हें यातना न सहनी पड़े।"

"यह असम्भव है! और क्या चाहता है वह?"

"उसकी सबसे अधिक न्यायोचित इच्छा तो यह है कि तुम दोनों के बच्चों का अपना कुलनाम हो।"

"कैसे बच्चे?" डौली की ओर देखे बिना और आंखें सिकोड़ते हुए आन्ना ने कहा।

"आनी और भावी बच्चों का..."

"इस बारे में वह निश्चिंत हो सकता है, मेरे और बच्चे नहीं होंगे।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो कि नहीं होंगे?"

"नहीं होंगे, क्योंकि मैं ऐसा नहीं चाहती हूं।"

और अपनी सारी उत्तेजना के बावजूद डौली के चेहरे पर जिज्ञासा, हैरानी और भय का भोला-सा भाव देखकर आन्ना मुस्करा दी।

"मेरी बीमारी के बाद डाक्टर ने मुझसे कहा था" . . . .

. . . .

"यह कैसे हो सकता है!" आंखें फाड़-फाड़कर देखते हुए डौली ने

कहा। डौली के लिये यह एक ऐसी खोज थी, जिसके परिणाम और निष्कर्ष इतने महत्त्वपूर्ण होते हैं कि फ़ौरन ही सब कुछ समझ पाना असम्भव प्रतीत होता है, कि इसके बारे में बहुत कुछ, बहुत अधिक सोचना-समझना पड़ेगा।

इस खोज ने, जिसने डौली को अचानक उन परिवारों को समझने में मदद दी थी, जिनमें एक या दो बच्चे थे और जो पहले उसकी समझ में नहीं आते थे, इस खोज ने उसके मन में ऐसे ख़्याल, ऐसे विचार और विरोधी भाव पैदा किये कि वह कुछ भी न कह पायी और आंखें फाड़-फाड़कर केवल हैरानी से आन्ना को देखती रह गयी। यह वही चीज़ थी, जिसकी वह आज यहां आते हुए रास्ते में मधुर कल्पना करती रही थी, और अब यह जानकर कि ऐसा सम्भव है, दहल उठी थी। वह अनुभव कर रही थी कि यह बहुत ही जटिल प्रश्न का बहुत ही सीधा-सादा हल है।

"N'est ce pas immoral?*" कुछ देर चुप रहने के बाद उसने इतना ही कहा।

"वह क्यों? तुम ज़रा विचार करो – मेरे सामने दो ही रास्ते हैं – या तो गर्भवती यानी बीमार रहूं या फिर अपने पति – पति ही तो है वह – की मित्र और संगिनी बनी रहूं," आन्ना ने जान-बूझकर सतही और हल्के-फुल्के अन्दाज़ में कहा।

"सो तो है, सो तो है," डौली ने उन्हीं तर्कों को सुनते हुए कहा, जो वह स्वयं अपने सामने प्रस्तुत किया करती थी और जो अब पहले की तरह उसके दिल को नहीं छूते थे।

"तुम्हारे मन में, दूसरों के मन में," आन्ना ने मानो डौली के विचारों को भांपते हुए कहा, "इस सम्बन्ध में अभी भी कोई सन्देह हो सकता है, लेकिन मेरे लिये ... तुम इस बात को समझो, मैं बीवी नहीं हूं। वह जब तक प्यार करता है, तब तक प्यार करता है। किस चीज़ से मैं उसका प्यार बनाये रख सकती हूं? इससे?"

आन्ना ने अपने गोरे हाथ पेट के सामने फैला दिये।

जैसा कि मानसिक हलचल के क्षणों में होता है, डौली के दिमाग़

---

* क्या यह अनैतिक नहीं है? (फ़्रांसीसी)

में असाधारण तेज़ी से विचारों और स्मृतियों की भीड़-सी लग गयी। "मैंने स्तीवा को अपनी ओर खींचने की कोशिश नहीं की," वह सोच रही थी, "वह मुझे छोड़कर दूसरी औरतों के पास चला गया। लेकिन वह पहली औरत भी, जिसकी ख़ातिर उसने मेरे साथ बेवफ़ाई की, हमेशा बनी-ठनी और ख़ुशमिज़ाज बनी रहने पर भी उसे अपने वश में न रख सकी। उसे छोड़कर उसने किसी दूसरी को पकड़ लिया। क्या आन्ना काउंट व्रोन्स्की को इस तरह अपनी ओर आकर्षित किये रह सकती है, वश में रख सकती है? अगर वह 'इसी' के फेर में होगा, तो उसे और अधिक सुन्दर पोशाकें और अधिक ख़ुशमिज़ाज औरतें मिल जायेंगी। इसकी नंगी ब़ांहें चाहे कितनी ही गोरी, कितनी ही सुन्दर क्यों न हों, इसका गदराया हुआ बदन चाहे कितना ही ख़ूबसूरत क्यों न हो, काले बालों के नीचे उसका तमतमाया हुआ चेहरा चाहे कितनी ही प्यारा क्यों न हो, वह उसी तरह इनसे बेहतर ढूंढ़ लेगा, जैसे मेरा घृणित, दयनीय और प्यारा पति ढूंढ़ता तथा पा लेता है।"

डौली ने कोई उत्तर नहीं दिया और केवल निश्वास छोड़ा। असहमति प्रकट करनेवाले इस निश्वास की ओर आन्ना ने ध्यान दिया और अपनी बात जारी रखी। उसके पास अभी इतनी ज़ोरदार दलीलें बाक़ी थीं कि उनका जवाब देना बिल्कुल असम्भव था।

"तुम कहती हो कि यह अच्छा नहीं है। किन्तु तुम्हें इस पर सोच-विचार करना चाहिये," आन्ना कहती गयी। "तुम मेरी स्थिति को भूल जाती हो। मैं बच्चों को जन्म देने की सोच ही कैसे सकती हूं? मैं तक़लीफ़ों-कष्टों की बात नहीं कर रही हूं, मैं उनसे नहीं घबराती हूं। ज़रा सोचो तो, मेरे बच्चे कैसे होंगे? बदक़िस्मत पराये पैतृक और कुलनाम वाले बच्चे। जन्म लेने के कारण ही उन्हें अपनी मां, बाप और अपने अस्तित्व पर शर्म आयेगी।"

"इसीलिये तो तलाक़ लेने की ज़रूरत है।"

किन्तु आन्ना ने डौली की बात नहीं सुनी। वह उन सभी दलीलों को पेश कर देना चाहती थी, जिनसे उसने अनेक बार अपने को यक़ीन दिलाया था।

"आख़िर किसलिये मुझे सूझ-बूझ मिली है, अगर मैं इसके लिये उसका उपयोग नहीं करती कि बदक़िस्मत बच्चों को दुनिया में न लाऊं?"

आन्ना ने डौली की तरफ़ देखा, किन्तु उत्तर न पाकर अपनी बात कहती गयी –

"ऐसे बदक़िस्मत बच्चों के सामने मैं अपने को हमेशा अपराधी अनुभव करती रहती," उसने कहा। "अगर वे इस दुनिया में नहीं हैं तो कम से कम बदक़िस्मत नहीं हैं और अगर वे इस दुनिया में आकर दुखी होते, तो इसके लिये केवल मैं ही दोषी हूं।"

ये वही तर्क थे, जो डौली स्वयं अपने सामने प्रस्तुत किया करती थी, किन्तु अब वह उन्हें सुन रही थी और समझ नहीं पा रही थी। "जिनका अस्तित्व ही नहीं है, उनके सम्मुख कोई दोषी कैसे हो सकता है?" वह सोच रही थी। अचानक यह विचार उसके दिमाग़ में कौंध गया – अगर उसका प्यारा बेटा ग्रीशा इस दुनिया में कभी न आया होता, तो क्या यह उसके लिये किसी भी हालत में बेहतर हो सकता था? उसे यह ख़्याल इतना बेतुका और अजीब लगा कि उसने अपना सिर हिलाया, ताकि पागलपन के इन विचारों के जमघट से अपने दिमाग़ को मुक्त कर सके।

"नहीं, मैं नहीं जानती, यह अच्छा नहीं है," चेहरे पर अरुचि का भाव लाकर उसने केवल इतना ही कहा।

"मगर तुम यह न भूलो कि तुम क्या हो और मैं क्या हूं ... और इसके अलावा," आन्ना ने अपने तर्कों की विपुलता और डौली की दलीलों की कमी के बावजूद मानो ऐसा स्वीकार करते हुए कि यह अच्छा नहीं है, इतना और जोड़ दिया, "तुम यह मुख्य बात नहीं भूलो कि मैं अब तुम्हारी जैसी स्थिति में नहीं हूं। तुम्हारे सामने यह सवाल है कि तुम और बच्चों को जन्म देना चाहती हो या नहीं और मेरे सामने यह प्रश्न है – मेरे बच्चे हों या न हों। और यह बहुत बड़ा अन्तर है। तुम यह समझो कि अपनी परिस्थिति में मैं ऐसा चाह नहीं सकती।"

डौली ने कोई आपत्ति नहीं की। सहसा उसने यह अनुभव किया कि वह आन्ना से बहुत दूर हो गयी है, कि उनके बीच ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर वे कभी सहमत नहीं हो सकेंगी और उनके लिये उनकी चर्चा न करना ही बेहतर होगा।

"इसीलिये तो और भी ज़रूरी है कि तुम अपनी स्थिति को, यदि ऐसा करना सम्भव है, ठीक कर लो," डौली ने कहा।

"हां, अगर सम्भव हो," आन्ना ने अचानक बिल्कुल दूसरी, धीमी और उदास आवाज़ में कहा।

"क्या तलाक़ सम्भव नहीं? मुझे बताया गया है कि तुम्हारा पति इसके लिये राज़ी है।"

"डौली! मैं इस बात की चर्चा नहीं करना चाहती।"

"तो नहीं करेंगी," आन्ना के चेहरे पर व्यथा-वेदना का भाव देखकर डौली ने झटपट उत्तर दिया। "मैं केवल यह देख रही हूं कि तुम बहुत ही अवसादपूर्ण ढंग से चीज़ों को देखती हो।"

"मैं? ज़रा भी नहीं। मैं बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट हूं। तुमने देखा कि je fais des passions.* वेस्लोव्स्की ..."

"हां, लेकिन अगर सच कहूं, तो मुझे वेस्लोव्स्की का रंग-ढंग अच्छा नहीं लगा," डौली ने बातचीत का विषय बदलने की इच्छा से कहा।

"अरे, ऐसा कुछ नहीं है। यह तो अलेक्सेई से ज़रा छेड़छाड़ ही होती है, और कुछ नहीं। वह तो छोकरा है और पूरी तरह मेरी मुट्ठी में बन्द है। समझती हो न, मैं जैसे चाहती हूं, वैसे ही उसे अपने इशारों पर नचाती हूं। वह तो वैसा ही है, जैसा तुम्हारा ग्रीशा... सुनो डौली!" आन्ना ने अचानक बात बदल दी। "तुम कहती हो कि मैं चीज़ों को अवसादपूर्ण ढंग से देखती हूं। तुम समझ नहीं सकतीं। बहुत ही भयानक है यह सब कुछ। मैं तो यही कोशिश करती हूं कि उनकी ओर से आंखें मूंद लूं।"

"किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि आंखें मूंदना नहीं, बल्कि उन्हें देखना चाहिये। जो कुछ सम्भव है, वह करना चाहिये।"

"किन्तु क्या सम्भव है? कुछ भी नहीं। तुम कहती हो कि मुझे अलेक्सेई से शादी करनी चाहिये और यह कि मैं इसके बारे में नहीं

---

* मुझ पर लट्टू होते हैं। (फ़्रांसीसी)

सोचती हूं। मैं इसके बारे में नहीं सोचती हूं!" उसने इन शब्दों को दोहराया और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी। वह उठी, सीधी हुई, उसने लम्बी सांस ली और केवल कभी-कभी रुकते हुए अपनी हल्की-फुल्की चाल से कमरे में आगे-पीछे आने-जाने लगी। "मैं नहीं सोचती हूं? कोई दिन, कोई एक घण्टा भी तो ऐसा नहीं जाता, जब मैं न सोचती और अपने को इसके लिये न कोसती होऊं कि सोचती हूं... क्योंकि इस बारे में आनेवाले विचार पागल कर सकते हैं। पागल कर सकते हैं," उसने दोहराया। "जब मैं इस बारे में सोचती हूं, तो मार्फ़िये के बिना सो नहीं पाती हूं। लेकिन ठीक है। हम शान्ति से बातचीत करेंगी। मुझसे कहा जाता है कि मैं तलाक़ लूं। पहली बात यह है कि वह मुझे तलाक़ देगा नहीं। वह अब काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के प्रभाव में है।"

डौली कुर्सी पर सीधी बैठी थी और मुख पर सहानुभूतिपूर्ण वेदना का भाव लिये हुए इधर-उधर आती-जाती आन्ना को सिर घुमा-घुमाकर देख रही थी।

"कोशिश करनी चाहिये," डौली ने धीमी आवाज़ में कहा।

"मान लो, कोशिश करनी चाहिये। इसका मतलब क्या है?" स्पष्टतः वह ऐसा विचार व्यक्त कर रही थी, जिस पर हज़ारों बार सोच चुकी थी और जो उसे रट-सा गया था। "इसका मतलब यह है कि उससे घृणा करने, फिर भी अपने को उसके सामने अपराधी, तथा उसकी उदारता को मान्यता देनेवाली मैं अपने को ज़लील करके उसे ख़त लिखूं। मान लो, मैं कोशिश करके ऐसा कर देती हूं। या तो मुझे अपमानजनक उत्तर मिलेगा या सहमति। चलो, मुझे सहमति मिल गयी..." आन्ना इस समय कमरे के सिरे पर थी और वहां रुककर खिड़की के पर्दे को कुछ ठीक कर रही थी। "मुझे उसकी सहमति मिल जाती है, मगर बे... बेटा? वे उसे मुझे नहीं देंगे। वह तो तिरस्कार की भावना से मुझे देखता हुआ उस बाप के यहां बड़ा होता रहेगा, जिसे मैं छोड़ आई हूं। तुम इस बात को समझो कि मैं दो प्राणियों को – सेर्योझा और अलेक्सेई को, मुझे लगता है कि दोनों को बराबर और अपने से अधिक प्यार करती हूं।"

आन्ना कमरे के बीचोंबीच आ गयी और हाथों से वक्ष को दबाये

हुए डौली के सामने खड़ी हो गयी। सफ़ेद ड्रेसिंग गाउन में उसकी आकृति विशेषतः बहुत बड़ी और चौड़ी प्रतीत हो रही थी। उसने सिर भुकाया और भौंहें चढ़ाकर नम तथा चमकती आंखों से पैवन्द लगा गाउन पहने और रात की टोपी ओढ़े उत्तेजना के कारण कांपती, टुइंयां-सी, दुबली-पतली और दयनीय डौली की ओर देखा।

"केवल इन दो प्राणियों को ही मैं प्यार करती हूं और वे एक दूसरे के लिये बाधा हैं। मैं दोनों को एक साथ नहीं पा सकती और मुझे केवल यही चाहिये। अगर ऐसा नहीं हो सकता, तो मेरे लिये किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। बिल्कुल, बिल्कुल कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। जैसे-तैसे मामला ख़त्म हो जायेगा और इसीलिये मैं इसकी चर्चा नहीं कर सकती, मुझे ऐसा करना अच्छा नहीं लगता। सो तुम मुझे भला-बुरा नहीं कहो, किसी भी चीज़ के लिये मेरी भर्त्सना नहीं करो। तुम एकदम बेदाग़ हो और इसलिये उन सब चीज़ों को नहीं समझ सकतीं जो मुझे यातना देती हैं।"

आन्ना डौली के निकट आ बैठी और अपराधी जैसे भाव के साथ उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए उसने उसका हाथ थाम लिया।

"तुम क्या सोचती हो? मेरे बारे में तुम क्या सोचती हो? तुम मुझसे घृणा नहीं करो। मैं घृणा के योग्य नहीं हूं। मैं बदक़िस्मत हूं। अगर कोई बदक़िस्मत है, तो वह मैं हूं," आन्ना ने कहा और मुंह फेरकर रो पड़ी।

अकेली रह जाने पर डौली ने प्रार्थना की और बिस्तर पर जा लेटी। आन्ना जब उससे बात कर रही थी, तो उसे उस पर सच्चे दिल से दया आ रही थी, किन्तु अब वह अपने को उसके बारे में सोचने के लिये विवश कर पाने में असमर्थ थी। घर और बच्चों की याद एक विशेष, उसके लिये नया सौन्दर्य, एक नयी चमक लिये हुए उसकी स्मृति में उभर उठी। अपनी यह दुनिया अब उसे इतनी सुन्दर और प्यारी लगी कि वह किसी हालत में एक भी दिन उससे दूर रहकर बिताने को तैयार नहीं थी और उसने तय किया कि अगले दिन ज़रूर ही यहां से चल देगी।

इसी बीच आन्ना अपने कमरे में लौट आई, उसने छोटा-सा गिलास लेकर उसमें दवाई की कुछ बूंदें डालीं, जिसमें अधिकतर मार्फ़िया

था, उसे पिया, कुछ समय तक बुत बनी बैठी रही और अपने को शान्त तथा खुश अनुभव करती हुई सोने के कमरे में चली गयी।

शयन-कक्ष में प्रवेश करने पर व्रोन्स्की ने आन्ना को बहुत ध्यान से देखा। वह जानता था कि डौली के कमरे में इतनी देर तक बैठी रह कर वह उसके साथ बातचीत करती रही है और अब वह आन्ना के चेहरे पर उस बातचीत की छाप ढूंढ़ रहा था। किन्तु आन्ना के उत्तेजित-संयत और कुछ छिपाते हुए चेहरे पर उसे उस सुन्दरता के सिवा कुछ भी नहीं मिला, जो अभ्यस्त हो जाने पर भी उसे अपनी ओर खींचती थी, और उसे दिखाई दी इस सुन्दरता की चेतना और यह इच्छा कि वह उस पर अपना रंग दिखाये। व्रोन्स्की ने आन्ना से यह पूछना नहीं चाहा कि उनके बीच क्या बातचीत हुई। उसे आशा थी कि वह स्वयं ही कुछ कहेगी। किन्तु आन्ना ने केवल इतना ही कहा –

"मैं खुश हूं कि डौली तुम्हें अच्छी लगी। ठीक है न?"

"मैं उसे बहुत समय से जानता हूं। वह बहुत दयालु है, लगता है, mais excessivement terre-à-terre.* फिर भी मुझे उसके आने से बहुत खुशी हुई।"

व्रोन्स्की ने आन्ना का हाथ अपने हाथ में लेकर प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी आंखों में झांका।

आन्ना ने इस दृष्टि का दूसरा ही अर्थ समझा और उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

अगली सुबह को मेज़बानों के बहुत रोकने पर भी डौली चलने को तैयार हो गयी। लेविन के कोचवान ने, जो पुराना-सा कोट और डाक गाड़ी के डाकिये जैसा टोप पहने था, उदास-सी सूरत बनाये हुए बेमेल घोड़ों से जुती तथा मरम्मत की हुई बग्घी को छतवाले और बालू-बिछे ओसारे के सामने दृढ़तापूर्वक लाकर खड़ा कर दिया।

प्रिंसेस वर्वारा और मर्दों से विदा लेना डौली के लिये अरुचिकर था। एक दिन में ही डौली और मेज़बान भी यह समझ गये थे कि वे एक-दूसरे से मेल नहीं खाते और उनका आपस में न घुलना-मिलना ही बेहतर होगा। केवल आन्ना ही उदास थी। वह जानती थी कि

---

* किन्तु लगता है बड़ी नीरस है। (फ़्रांसीसी)

डौली के जाने के बाद कोई भी उसके मन में वे भावनायें नहीं जागृत कर सकेगा, जो इस भेंट के समय उसकी आत्मा में सिहर उठी थीं। इन भावनाओं के बेचैन हो जाने से उसे मानसिक कष्ट हुआ, फिर भी वह जानती थी कि यह उसकी आत्मा का सबसे अच्छा भाग है और उसकी आत्मा का यह भाग बहुत तेज़ी से उस ज़िन्दगी के नीचे दबता जा रहा है, जो वह बिता रही है।

मैदान में पहुंचने पर डौली को राहत महसूस हुई और उसने कोचवान तथा मुंशी से पूछना चाहा कि व्रोन्स्की के यहां उन्हें कैसा लगा। कोचवान फ़िलिप इसी वक़्त ख़ुद बोल उठा –

"मालदार होंगे, तो होंगे, मगर घोड़ों के लिये जई की तो केवल तीन नापें ही दीं। क्या होती हैं तीन नापें? हल्का-सा नाश्ता ही हो सकता है उनसे घोड़ों का। सराय वाले आजकल जई के पैंतालीस कोपेक लेते हैं। हमारे यहां तो आनेवालों के घोड़ों के लिये उतना ही चारा दिया जाता है, जितना ज़रूरी होता है।"

"साहब कंजूस आदमी है," मुंशी ने पुष्टि की।

"तुम्हें उनके घोड़े तो पसन्द आये?" डौली ने पूछा।

"घोड़े – उनके क्या कहने! और खाना भी बढ़िया था। मगर वैसे मुझे कुछ सूना-सूना-सा लगा। मालूम नहीं, आपको वहां कैसा लगा?" डौली की ओर अपना सुन्दर और दयालु मुंह फेरकर उसने प्रश्न किया।

"मुझे भी ऐसा ही लगा। तो हम शाम तक पहुंच जायेंगे न?"

"पहुंचना चाहिये।"

घर लौटने पर सभी को सकुशल और बहुत मधुर पाकर डौली बड़े उत्साह से अपनी यात्रा की चर्चा करने और यह बताने लगी कि कैसे उसका इतना अच्छा आदर-सत्कार किया गया, वहां कैसा ऐश्वर्य-वैभव है, व्रोन्स्की परिवार की ज़िन्दगी और रुचि कितनी अच्छी है, वे कैसे मन बहलाते हैं और उसने किसी को भी उन लोगों के ख़िलाफ़ एक शब्द नहीं कहने दिया।

"यह समझने के लिये कि आन्ना और व्रोन्स्की कितने प्यारे और मनमोहक हैं, उन्हें अच्छी तरह जानना चाहिये। अब मैं व्रोन्स्की को अधिक अच्छी तरह जान पायी हूं," डौली असन्तोष और अटपटेपन

के उस अस्पष्ट भाव को भूलकर, जो उसने वहां अनुभव किया था, बिल्कुल सच्चे मन से अपनी बात कह रही थी।

(२५)

व्रोन्स्की और आन्ना ने इन्हीं परिस्थितियों में और तलाक़ के लिये कोई उपाय किये बिना गांव में ही सारी गर्मी और पतझर का कुछ हिस्सा भी बिता दिया। उनके बीच यह तय हुआ था कि कहीं नहीं जायेंगे, किन्तु जितना अधिक वे अकेले रहते जाते थे, विशेषतः पतझर में और अतिथियों के बिना, उतना ही अधिक यह अनुभव करते थे कि इस तरह की ज़िन्दगी को वे बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे और उन्हें उसे बदलना होगा।

वैसे तो यह प्रतीत हो सकता था कि उनका जीवन ऐसा था, जिससे बेहतर की कल्पना नहीं की जा सकती थी – सभी तरह के सुख-साधन थे, स्वास्थ्य था, घर में बच्चा था और दोनों अपने-अपने ढंग से व्यस्त रहते थे। मेहमानों के बिना भी पहले की भांति ही आन्ना अपने बनाव-शृंगार में लगी रहती और ख़ूब पढ़ती – उपन्यास तथा ऐसी गम्भीर पुस्तकें, जिनका इन दिनों फ़ैशन था। वह उन सब पुस्तकों को मंगवाती, जिनकी उसके पास आनेवाली विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में प्रशंसा होती और उन्हें वैसे ही ध्यान से पढ़ती, जो केवल एकान्त में सम्भव होता है। इसके अलावा वह व्रोन्स्की की दिलचस्पी के सभी विषयों का पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की सहायता से अध्ययन करती और व्रोन्स्की अक्सर उससे कृषि, वास्तुकला, यहां तक कि कभी-कभी तो अश्व-पालन और खेल-कूद तक से सम्बन्धित प्रश्न भी पूछता। वह आन्ना की जानकारी तथा स्मरणशक्ति से आश्चर्यचकित रह जाता और शुरू में तो विश्वास न करते हुए उसकी बातों की पुष्टि चाहता। आन्ना पुस्तकों में उसके प्रश्नों के उत्तर दिखा देती।

अस्पताल को साज़-सामान से लैस करने के काम में भी आन्ना दिलचस्पी लेती। वह केवल मदद ही न करती, बल्कि बहुत कुछ स्वयं ही व्यवस्थित करती और सोचकर योजनायें भी बनाती। किन्तु फिर भी व्रोन्स्की उसे किस हद तक प्यार करता था और किस हद तक वह

उस सब की पूर्ति कर सकती थी, जो व्रोन्स्की को त्यागना पड़ा था – यही उसकी मुख्य चिन्ता थी। आन्ना के जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन जानेवाली इस इच्छा का कि वह न केवल उसको अच्छी लगे, बल्कि उसके काम में भी हाथ बंटा सके, व्रोन्स्की ऊंचा मूल्यांकन करता था, किन्तु साथ ही उन प्रेम-पाशों से परेशान भी होता था, जिनसे आन्ना उसे जकड़ने का प्रयास कर रही थी। जितना अधिक समय बीतता जाता था, उतना अधिक ही वह अपने को इन फंदों में कसा हुआ अनुभव करता और उतना अधिक ही वह इन फंदों में से निकलना तो नहीं, किन्तु यह आज़माकर ज़रूर देखना चाहता कि वे उसकी आज़ादी में बाधा तो नहीं डालते। यदि स्वतंत्र होने की निरन्तर तीव्रतर होती भावना और हर बार अधिवेशन या घुड़दौड़ों में भाग लेने के लिये शहर जाने के समय घर में होनेवाले क्लेशों का उसे सामना न करना पड़ता, तो व्रोन्स्की अपने जीवन से काफ़ी प्रसन्न रहता। व्रोन्स्की ने धनी भूमिपति की जो भूमिका अपनायी थी, जिन्हें रूसी कुलीनों का केन्द्र-बिन्दु होना चाहिये, वह उसे न केवल पसन्द आयी थी, बल्कि अब कोई छः महीने यहां बिता लेने पर अधिकाधिक ख़ुशी भी प्रदान करती थी। उसका काम भी, जिसमें उसकी दिलचस्पी बढ़ती जाती थी और जिसमें वह अधिकाधिक डूबता जाता था, ख़ूब अच्छे ढंग से चल रहा था। अस्पताल, कृषि-मशीनों और स्विट्ज़रलैंड से मंगवायी गयी गउओं तथा अन्य चीज़ों पर ख़र्च की गयी बड़ी धनराशि के बावजूद उसे विश्वास था कि वह अपनी सम्पत्ति को उड़ा नहीं रहा, बल्कि बढ़ा रहा है। जहां आमदनी का, जंगलों, अनाज, ऊन बेचने या ज़मीनों को लगान पर देने का सवाल होता, व्रोन्स्की पत्थर की सी दृढ़ता दिखाता और अपने मनपसन्द दाम लेता। बड़े पैमाने की खेती के मामले में अपनी इस जागीर तथा दूसरी ज़मीनों पर भी वह बहुत ही सीधे-सादे और ऐसी विधियों का उपयोग करता, जिनमें जोखिम न हो, और छोटी-छोटी बातों में भी बड़ी मितव्ययता तथा नपे-तुले हिसाब-किताब से काम लेता। जर्मन कारिन्दे की सारी चालाकी और चुस्ती के बावजूद, जो उसे सभी तरह की चीज़ें ख़रीदने को प्रेरित करता और शुरू में आवश्यकता से कहीं अधिक बड़े प्रतीत होनेवाले व्ययों का अनुमान लगाता, किन्तु जिनकी जांच-पड़ताल करने पर पता चलता

कि उन्हीं चीज़ों को सस्ते दामों पर ख़रीदा तथा उनसे तत्काल लाभ प्राप्त किया जा सकता है, तो भी व्रोन्स्की उसके कहने पर न चलता। वह कारिन्दे की बात सुन लेता, उससे पूछ-ताछ करता और केवल तभी उसकी बात मानता, जब बाहर से मंगवायी या बनायी जानेवाली चीज़ नवीनतम, रूस में अनजानी और ऐसी होती कि लोगों को आश्चर्य-चकित कर सके। इतना ही नहीं, वह बड़े ख़र्च करने को तभी राज़ी होता, जब उसके पास फ़ालतू रक़म होती। ऐसा ख़र्च करते हुए हर चीज़ की छोटी से छोटी तफ़सील में जाता और इस बात का पूरा ज़ोर लगाता कि उसकी रक़म का श्रेष्ठतम उपयोग हो। जिस ढंग से वह अपने काम-काज की व्यवस्था कर रहा था, उससे यह स्पष्ट था कि सम्पत्ति गंवाने के बजाय वह उसे बढ़ा रहा है।

अक्तूबर में काशिन गुबेर्निया में, जहां व्रोन्स्की, स्वियाज्स्की, कोज़्निशेव, ओब्लोन्स्की की जागीरें और लेविन की जागीर का कुछ हिस्सा था, कुलीनों के चुनाव होनेवाले थे।

अनेक परिस्थितियों और इन चुनावों में भाग लेनेवाले लोगों के कारण इन चुनावों ने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। इनकी बड़ी चर्चा हुई और इनके लिये तैयारी की गयी। मास्को, पीटर्सबर्ग और विदेशों के रूसी निवासी भी, जो पहले कभी चुनावों में उपस्थित नहीं रहे थे, इनमें भाग लेने आ रहे थे।

व्रोन्स्की ने बहुत पहले ही स्वियाज्स्की को इन चुनावों में आने का वचन दे दिया था।

स्वियाज्स्की, जो व्रोन्स्की की जागीर पर अक्सर आता रहता था, चुनाव के पहले उसे अपने साथ ले जाने के लिये यहां आया।

इस यात्रा के एक दिन पहले इसी मामले को लेकर व्रोन्स्की और आन्ना के बीच लगभग झगड़ा हो गया था। गांव में पतझर का सबसे ज़्यादा ऊब और उदासी भरा वक़्त था और इसलिये व्रोन्स्की ने आन्ना के विरोध का सामना करने के लिये अपने को तैयार करके कठोर और निर्मम अन्दाज़ में, जैसा कि उसने पहले कभी नहीं किया था, अपने जाने के बारे में घोषणा की। किन्तु उसे इस बात की बड़ी हैरानी हुई कि आन्ना यह समाचार सुनकर बहुत ही शान्त रही और उसने केवल इतना पूछा कि वह कब लौटेगा। आन्ना की इस शान्ति को समझ न

पाते हुए उसने ग़ौर से उसे देखा। व्रोन्स्की की इस नज़र के जवाब में वह मुस्करा दी। अपने आप में सिमट जाने की आन्ना की इस क्षमता से वह परिचित था और जानता था कि ऐसा तभी होता है, जब वह उसे अपनी योजनायें बताये बिना मन ही मन कोई इरादा बना लेती है। वह इस चीज़ से डरता था, किन्तु वह झगड़े से बचने को इतना अधिक उत्सुक था कि उसने ऐसा दिखावा किया और कुछ हद तक सच्चे मन से, जैसा कि वह बहुत चाहता था, आन्ना की समझदारी पर विश्वास कर लिया।

"आशा करता हूं कि तुम ऊब अनुभव नहीं करोगी?"

"मैं भी ऐसी आशा करती हूं," आन्ना ने कहा। "मेरे पास कल गोत्ये से किताबों की पेटी आ गयी है। नहीं, मैं उदास नहीं होऊंगी।"

"वह यह अन्दाज़ अपनाना चाहती है, सो और भी अच्छा है," व्रोन्स्की ने सोचा, "वरना वही, हमेशा जैसा ही क़िस्सा होगा।"

और इस तरह बात को पूरी तरह खोले और स्पष्ट किये बिना वह चुनाव में हिस्सा लेने चल दिया। इनके सम्बन्धों के आरम्भ होने के बाद पहली बार ही वह मामले को पूरी तरह साफ़ किये बिना ऐसे चला गया था। इससे एक ओर तो उसे परेशानी हो रही थी और दूसरी ओर ऐसे लगता था कि यही बेहतर है। "शुरू में इस बार की तरह कुछ अस्पष्ट और दबा-घुटा रहेगा, मगर बाद में वह उसकी आदी हो जायेगी। जो भी हो, मैं मर्दों की अपनी आज़ादी के अलावा उसे और सब कुछ दे सकता हूं," वह सोच रहा था।

(२६)

सितम्बर में लेविन मास्को आ गया, क्योंकि कीटी बच्चे को जन्म देनेवाली थी। वह किसी काम-काज के बिना मास्को में एक महीना बिता भी चुका था, जब उसका भाई कोज़्निशेव, जिसकी काशिन गुबेर्निया में जागीर थी और जो वहां होनेवाले चुनावों में बड़ी दिलचस्पी ले रहा था, चुनावों में जाने को तैयार हुआ। उसने लेविन को भी,

जिसे सेलेज़नेव उयेज़्द* में मतदान का अधिकार प्राप्त था, साथ चलने को कहा। इसके अलावा काशिन में लेविन को विदेश में रहनेवाली अपनी बहन का न्यास तथा रेहन की छुड़ौती की रक़म हासिल करने का बड़ा ज़रूरी काम भी करना था।

लेविन का अभी कुछ कच्चा-पक्का-सा इरादा था, किन्तु कीटी ने यह देखते हुए कि वह मास्को में ऊब रहा है, उसे जाने की सलाह दी, उसकी जानकारी के बिना उसके लिये कुलीनों की वर्दी भी बनवा दी, जिस पर अस्सी रूबल ख़र्च हुए। वर्दी पर ख़र्च किये गये यही अस्सी रूबल लेविन के वहां जाने का निर्णायक कारण बने। वह काशिन चला गया।

लेविन को काशिन में आये छठा दिन हो चुका था, वह हर दिन सभा में जाता और अपनी बहन का काम पूरा करने की कोशिश करता, जो किसी तरह भी सिरे नहीं चढ़ पा रहा था। सभी कुलीन-मुखिया चुनावों में व्यस्त थे और न्यास के मामूली-से काम को निपटाने में भी सफलता नहीं मिल रही थी। रक़म हासिल करने के दूसरे काम में भी ऐसी ही बाधायें आ रही थीं। बहुत कोशिश के बाद रक़म की अदायगी पर लगायी गयी रोक हटा दी गयी और उसकी अदायगी हो सकती थी, मगर सहायता करने को तत्पर नोटरी इसलिये चेक नहीं दे सकता था कि उस पर अध्यक्ष के हस्ताक्षर ज़रूरी थे और अध्यक्ष, जिसने किसी अन्य को अपनी जगह हस्ताक्षर करने का अधिकार नहीं दिया था, अधिवेशन में गया हुआ था। यह सारी दौड़-धूप, एक जगह से दूसरी जगह पर भागते फिरना, बहुत ही दयालु और भले लोगों के साथ बातचीत, जो प्रार्थी की इस अप्रिय परिस्थिति को समझते थे, किन्तु उसकी सहायता करने में असमर्थ थे, – यह सारा तनाव, जिसका कोई परिणाम नहीं निकलता था, लेविन के मन में ऐसा यातनापूर्ण भाव पैदा करता था, हताशा की ऐसी विवशतापूर्ण अनुभूति करवाता था, जो कोई आदमी स्वप्न में तब महसूस करता है, जब वह शारीरिक शक्ति का उपयोग करना चाहता है। अपने ख़ुशमिज़ाज वकील के साथ बातचीत करते समय उसे बहुधा ऐसी अनुभूति होती। ऐसा प्रतीत

---

* उयेज़्द – ज़ारशाही रूस में प्रशासकीय क्षेत्र। – सं०

होता कि यह वकील अपना पूरा ज़ोर लगाता था, अपने मस्तिष्क की सारी शक्ति का उपयोग करता था कि लेविन को कठिनाइयों से मुक्ति दिला सके। "ऐसा करके देखिये," अनेक बार उसने यह कहा, "फ़लां के पास, फ़लां के पास जाइये," और वह इस बात की पूरी योजना तैयार कर देता कि उस बाधा को कैसे दूर किया जाये, जो हर चीज़ को गड़बड़ किये दे रही है। किन्तु उसी समय यह भी कह देता– "टाल-मटोल तो वे कर ही देंगे, फिर भी कोशिश कर देखिये।" और लेविन कोशिश करता, पैदल और सवारी से जाता। सभी बड़ी कृपालुता दिखाते, बड़े अच्छे ढंग से पेश आते, मगर पता चलता कि जिस बाधा को वह दूर करना चाहता था, वही अन्त में फिर सामने आ खड़ी हुई और उसी ने फिर रास्ता रोक दिया। सबसे ज़्यादा दुख की बात तो यह थी कि लेविन किसी तरह भी इतना नहीं समझ पा रहा था कि वह किसके विरुद्ध संघर्ष कर रहा है, इससे किस को लाभ हो रहा है कि उसका काम सिरे नहीं चढ़ पा रहा है। लगता था कि यह तो कोई भी नहीं जानता था, वकील को भी मालूम नहीं था। अगर लेविन उसी तरह से यह समझ सकता, जैसे वह समझता था कि रेलवे स्टेशन पर टिकट लेने के लिये लोग क्यों क़तार में खड़े होते हैं, तो उसे इतना दुख न होता, खीझ न आती। किन्तु कोई भी तो उसे यह नहीं बता सकता था कि वे बाधायें किसलिये हैं, जो उसके काम में अड़चन डालती हैं।

किन्तु अपनी शादी के बाद से लेविन बहुत बदल गया था – वह सब्र से काम लेता था और अगर यह नहीं समझ पाता था कि ऐसा सब क्यों है, तो अपने आप से कहता कि सब कुछ जाने-समझे बिना वह आलोचना नहीं कर सकता, कि शायद ऐसा ही होना चाहिये और आपे से बाहर न होने की कोशिश करता।

अब चुनावों में उपस्थित रहते हुए, उनमें हिस्सा लेते हुए भी वह भर्त्सना और वाद-विवाद करने के बजाय यथाशक्ति उस चीज़ को समझने का प्रयास करता, जिसमें सम्मानित, ईमानदार और भले लोग इतनी गम्भीरता तथा दिलचस्पी से भाग ले रहे थे। शादी के बाद से लेविन उन चीज़ों में भी, जो पहले विचारहीन रवैये के कारण उसे इतनी तुच्छ लगती थीं, अनेक नये और गम्भीर पक्ष देखने लगा था और

चुनावों में भी कोई गम्भीर महत्त्व मानने तथा खोजने लगा था।

कोज़्निशेव ने उसे उस उथल-पुथल का सार और महत्त्व स्पष्ट किया, जो वे चुनावों द्वारा प्राप्त करने की आशा कर रहे थे। गुबेर्नियां का कुलीन-मुखिया, क़ानून के अनुसार जिसके हाथ में इतने महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य थे – न्यास के मामले (वही, जिनके कारण अब लेविन को मुसीबत उठानी पड़ रही थी), कुलीनों की बड़ी धनराशि, लड़कियों और लड़कों के हाई स्कूल, सैनिक स्कूल, नयी प्रणाली के अनुसार जन-शिक्षा और अन्ततः ज़ेम्सत्वो-परिषद के सभी कार्य – इस गुबेर्नियां की ऐसी महत्त्वपूर्ण जगह पर स्नेत्कोव जैसा मुखिया काम कर रहा था। वह पुराने कुलीन ढर्रे का आदमी था, बड़ी दौलत उड़ा चुका था, अपने ढंग से नेक और ईमानदार व्यक्ति था, मगर नये वक़्त के तक़ाज़ों को बिल्कुल नहीं समझता था। वह हमेशा और हर चीज़ में कुलीनों का पक्ष लेता, जन-शिक्षा के प्रचार का प्रत्यक्ष विरोध करता और ज़ेम्सत्वो-परिषद को, जिसे इतनी अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करनी चाहिये थी, श्रेणीगत स्वरूप देने का यत्न करता। उसकी जगह एक बिल्कुल ताज़ा, आधुनिक ढंग के ऐसे कामकाजी व्यक्ति को चुनने की ज़रूरत थी, जो वक़्त की मांगों को समझे और मामले का ऐसे संचालन करे कि आम तौर पर कुलीनों के नाते नहीं, बल्कि ज़ेम्सत्वो-परिषदों के तत्त्व के रूप में कुलीनों को प्राप्त अधिकारों से स्वशासन के उन सभी लाभों को हासिल करे, जो उनसे हासिल करना सम्भव हो। धनी काशिन गुबेर्नियां में, जो हमेशा दूसरों से अग्रणी रहा है, ऐसी शक्तियों का जमाव हो गया था कि अगर यहां मामले को ठीक मोड़ दे दिया गया, तो वह दूसरे गुबेर्नियाओं, सारे रूस के लिये एक मिसाल बन सकता था। इसलिये सारी स्थिति ही बहुत महत्त्वपूर्ण हो गयी थी। ऐसा विचार था कि स्नेत्कोव की जगह या तो स्वियाज़्स्की को मुखिया बनाया जाये, या इससे भी बेहतर यह रहेगा कि भूतपूर्व प्रोफ़ेसर, बहुत ही समझदार और कोज़्निशेव के बहुत ही घनिष्ठ मित्र नेवेदोव्स्की को चुना जाये।

गवर्नर ने सभा का उद्घाटन किया और कुलीनों को सम्बोधित करते हुए अपने भाषण में यह कहा कि वे मुंह देखी न करके योग्यतानुसार तथा मातृभूमि के हितार्थ निष्पक्ष रूप से पदाधिकारियों का चुनाव करें

और उसने आशा प्रकट की कि काशिन के उदात्त कुलीन भूतपूर्व चुनावों की भांति अब भी अपने कर्त्तव्य को पावन मानते हुए पूरा करेंगे और उस उच्च विश्वास को उचित सिद्ध कर देंगे, जो सम्राट ने उनके प्रति प्रकट किया है।

भाषण समाप्त करके गवर्नर हॉल से बाहर चला गया। शोर मचाते, सजीव और कुछ तो उल्लासित कुलीन उसके पीछे-पीछे चल दिये और जब वह अपना फ़र-कोट पहनता हुआ गुबेर्नियां के कुलीन-मुखिया के साथ मैत्रीपूर्ण ढंग से बातचीत कर रहा था, तो वे उसे घेर कर खड़े रहे। लेविन, जो हर चीज़ की गहराई में जाना और किसी भी बात से अपरिचित नहीं रहना चाहता था, कुलीनों की इसी भीड़ में खड़ा था और उसने गवर्नर को मुखिया से यह कहते सुना – "कृपया मारीया इवानोव्ना से कह दीजिये कि मेरी पत्नी को यह जानकर बहुत अफ़सोस हुआ कि उन्हें अनाथालय को देखने जाना पड़ रहा है।" गवर्नर के जाने के फ़ौरन बाद कुलीनों ने प्रफुल्ल मन से अपने फ़र-कोट पहने और सभी गिरजे को चल दिये।

गिरजाघर में लेविन ने अन्य सभी कुलीनों के साथ हाथ उठाकर पादरी के पीछे-पीछे शब्दों को दोहराते हुए वह सब कुछ पूरा करने की, जिसकी गवर्नर ने आशा प्रकट की थी, ज़ोरदार क़सम खाई। गिरजे की प्रार्थना लेविन को हमेशा बहुत प्रभावित करती थी और जब उसने "सलीब को चूमता हूं" शब्द कहे तथा इन्हीं शब्दों को दोहरानेवाले जवान तथा बूढ़े लोगों पर नज़र डाली, तो उसका हृदय भाव-विह्वल हो उठा।

दूसरे और तीसरे दिन कुलीनों की धनराशि और लड़कियों के हाई स्कूल की चर्चा होती रही और जैसा कि कोज़्निशेव ने कहा ये कोई महत्त्वपूर्ण चीज़ें नहीं हैं। अपने कामों के लिये दौड़-धूप करनेवाले लेविन ने इनकी ओर ध्यान नहीं दिया। चौथे दिन गुबेर्नियां की रक़मों के हिसाब-किताब की जांच हुई। इसी को लेकर नई पार्टी का पुरानी पार्टी से पहली बार टकराव हुआ। जांच-कमेटी ने रिपोर्ट पेश की कि हिसाब-किताब बिल्कुल ठीक है। गुबेर्नियां का मुखिया उठकर खड़ा हुआ, उस पर भरोसा करने के लिये उसने कुलीनों को धन्यवाद दिया और आंखों में पानी भर लाया। कुलीनों ने ख़ूब ज़ोर से तालियां बजाकर

उसका अभिवादन किया और उससे हाथ मिलाया। किन्तु इसी समय कोज़्निशेव की पार्टी के एक कुलीन ने कहा कि उसके कानों में भनक पड़ी है कि कमेटी ने हिसाब-किताब की जांच-पड़ताल नहीं की, क्योंकि वह इसे गुबेर्नियां के मुखिया का अपमान मानती है। जांच-कमेटी के एक सदस्य ने असावधानीवश इस बात की पुष्टि कर दी। तब एक नाटे, एकदम जवान लगनेवाले कुलीन ने, जिसकी ज़बान बड़ी ज़हरीली थी, कहा कि गुबेर्नियां के मुखिया को सम्भवतः हिसाब-किताब पेश करके ज़्यादा ख़ुशी होगी और कमेटी के सदस्य ज़रूरत से ज़्यादा नम्रता दिखाकर मुखिया को इस नैतिक प्रसन्नता से वंचित रख रहे हैं। तब कमेटी के सदस्यों ने अपनी रिपोर्ट वापिस ले ली और कोज़्निशेव बड़े तर्कपूर्ण ढंग से यह सिद्ध करने लगा कि उन्हें या तो यह स्वीकार अथवा अस्वीकार करना चाहिये कि हिसाब-किताब की जांच हुई है या नहीं हुई और उसने इस उलझन की बहुत विस्तारपूर्वक चर्चा की। विरोधी पार्टी के एक बड़े बातूनी व्यक्ति ने कोज़्निशेव की आपत्ति की, उसके बाद स्वियाज़्स्की और फिर ज़हर-बुझी ज़बान वाला कुलीन बोला। यह बहस बहुत देर तक चलती रही और कोई नतीजा नहीं निकला। लेविन को हैरानी हुई कि वे इस मामले पर इतनी देर तक बहस करते रहे, और ख़ासकर इसलिये कि जब उसने कोज़्निशेव से पूछा कि क्या पैसे का गोल-माल हुआ है, तो उसने जवाब दिया –

"अरे नहीं। वह ईमानदार आदमी है। किन्तु कुलीनों के मामलों को पुराने पितृतंत्रात्मक ढंग से चलाने की इस नीति पर चोट करना ज़रूरी था।"

पांचवें दिन उयेज़्दों के मुखिया चुने गये। कुछ उयेज़्दों में यह दिन काफ़ी तूफ़ानी रहा। सेलेज़्नेव उयेज़्द में स्वियाज़्स्की को मतदान के बिना एकमत से चुन लिया गया और इसी ख़ुशी में उस दिन उसके यहां दावत हुई।

(२७)

छठे दिन गुबेर्नियां के चुनाव होनेवाले थे। छोटे-बड़े सभी हॉल तरह-तरह की वर्दियां पहने कुलीनों से भरे हुए थे। बहुत से तो केवल इसी

दिन के लिये आये थे। एक अर्से से जिनकी भेंट नहीं हुई थी, क्रीमिया, पीटर्सबर्ग और विदेशों से आये हुए परिचित लोग हॉलों में एक-दूसरे से मिल रहे थे। गुबेर्निया के मुखिया की मेज़ के आस-पास, जिसके ऊपर सम्राट का चित्र टंगा था, वाद-विवाद हो रहा था।

छोटे और बड़े हॉलों में उपस्थित कुलीन दलों में बंटे हुए थे और उनकी शत्रुता तथा अविश्वासपूर्ण नज़रों, पराये लोगों के निकट आने पर उनके चुप्पी साध लेने और इस चीज़ से कि कुछ तो खुसुर-फुसुर करते हुए दालान के सिरे पर चले जाते थे, यह स्पष्ट था कि हर पक्ष दूसरे से कुछ छिपा रहा है। बाहरी तौर पर कुलीन दो हिस्सों – पुरानी और नई पीढ़ी वालों – में साफ़ बंटे दिखाई दे रहे थे। पुरानी पीढ़ी वाले तो अधिकतर बन्द गले की पुरानी वर्दियां और टोप पहने थे तथा तलवारें लगाये हुए थे या फिर नौसेना, घुड़सेना अथवा पैदल सेना की वे विशेष वर्दियां पहने थे, जो वे सैनिक सेवा के समय कभी पहनते रहे होंगे। पुरानी पीढ़ी के कुलीनों की वर्दियां पुराने ढंग से सिली हुई थीं, कंधों पर फुलाव थे, ये स्पष्टतः छोटी थीं, कमर पर ऊंची और तंग थीं मानो उन्हें पहननेवाले बड़े हो गये हों। जवान कुलीन सफ़ेद वास्कटों सहित खुले बटनों वाली ऐसी वर्दियां पहने थे, जो कमर पर लम्बी और कंधों पर चौड़ी थीं या फिर न्याय-मन्त्रालय की काले कालरों वाली वर्दियां, जिन पर लारेल के पत्ते कढ़े हुए थे। जवान कुलीन ही दरबारी वर्दियां पहने थे, जो भीड़ में कभी-कभी दिखायी देती थीं।

किन्तु बूढ़े और जवान कुलीनों का यह विभाजन पार्टियों के अनुरूप नहीं था। जैसा कि लेविन ने देखा, कुछ जवान कुलीन पुरानी पार्टी के हिमायती थे और इसके विपरीत, कुछ बहुत ही बूढ़े कुलीन स्वियाज्स्की के साथ कानाफूसी कर रहे थे और स्पष्टतः नई पीढ़ी के ज़ोरदार समर्थक थे।

लेविन अपने लोगों के साथ छोटे हॉल में खड़ा था, जहां वे कुछ खा-पी और धूम्रपान कर रहे थे, तथा बहुत ध्यान से उनकी बातें सुनता हुआ उन्हें समझने के लिये व्यर्थ ही अपने दिमाग़ पर पूरा ज़ोर डाल रहा था। कोज़्निशेव उनका केन्द्र-बिन्दु था और दूसरे लोग उसे घेरे हुए थे। वह अब स्वियाज्स्की और उन्हीं की पार्टी के समर्थक, एक अन्य उयेज़्द के मुखिया ख़्ल्यूस्तोव की बातें सुन रहा था। ख़्ल्यूस्तोव

इस बात के लिये राज़ी नहीं हो रहा था कि वह अपने उयेज़्द के प्रतिनिधियों के साथ स्नेत्कोव से चुनाव के लिये खड़ा होने का अनुरोध करने जाये, मगर स्वियाज्स्की उसे ऐसा करने को मना रहा था तथा कोज़्निशेव इस योजना का अनुमोदन कर रहा था। लेविन यह नहीं समझ पा रहा था कि विरोधी पार्टी के ये लोग उस मुखिया से चुनाव लड़ने का क्यों अनुरोध करना चाहते थे, जिसे वे पराजित करने के इच्छुक थे।

दरबारी वर्दी पहने, कुछ खाने और जाम चढ़ाने के बाद कढ़े किनारों वाले सुगन्धित, महीन रूमाल से मुंह पोंछते हुए ओब्लोन्स्की इन लोगों के पास आया और अपने दोनों गलमुच्छों को संवारते हुए बोला –

"तो अपना मोर्चा साध रहे हैं, सेर्गेई इवानोविच।"

और बातचीत सुनने के बाद उसने स्वियाज्स्की के विचार की पुष्टि की –

"एक ही उयेज़्द काफ़ी है और स्वियाज्स्की तो स्पष्टतः विरोधी है," उसने ये शब्द कहे, जो लेविन के सिवा बाक़ी सबकी समझ में आ गये।

"अरे कोस्त्या, तुम्हें भी इसमें मज़ा आने लगा?" उसने लेविन को सम्बोधित किया और उसकी बांह थाम ली। लेविन को मज़ा लेकर ख़ुशी होती, मगर वह समझ नहीं पा रहा था कि क़िस्सा क्या है और बातचीत करनेवालों से कुछ क़दम दूर हटने पर उसने ओब्लोन्स्की से कहा कि गुबेर्निया के मुखिया से चुनाव लड़ने का अनुरोध करने में क्या तुक है, यह बात उसके पल्ले नहीं पड़ रही है।

"O sancta simplicitas!*" ओब्लोन्स्की ने उत्तर दिया और संक्षेप में तथा अच्छी तरह लेविन को सारी बात समझा दी।

पिछले चुनावों की तरह यदि सभी उयेज़्दों की ओर से गुबेर्निया के मुखिया से चुनाव लड़ने का अनुरोध किया जाता, तो उसे मतदान के बिना सर्वसम्मति से चुन लिया जाता। वे ऐसा नहीं चाहते थे। अब आठ उयेज़्द ऐसी प्रार्थना करने को तैयार हैं और अगर दो उयेज़्द

---

* अरे, तुम तो बिल्कुल भोले हो! (लैटिन)

ऐसा करने से इन्कार कर देंगे, तो स्नेत्कोव चुनाव के लिये खड़ा होने का इरादा छोड़ सकता है। तब पुरानी पार्टी अपने लोगों में से किसी अन्य को चुन सकती है, क्योंकि उनके सारे पूर्वानुमान गड़बड़ हो जायेंगे। किन्तु यदि स्वियाज्स्की का एक ही उयेज़्द ऐसी प्रार्थना नहीं करेगा, तो स्नेत्कोव चुनाव के लिये खड़ा हो जायेगा। उसके पक्ष में जान-बूझकर कुछ वोट भी दे दिये जायेंगे, ताकि पुरानी पार्टी चक्कर में पड़ जाये और जब हमारा प्रतिनिधि खड़ा होगा, तो वे अपने कुछ वोट उसे दे देंगे।

लेविन समझ तो गया, मगर पूरी तरह नहीं। वह कुछ सवाल और पूछना चाहता था कि अचानक सभी बोलने लगे, शोर मचाने लगे और बड़े हॉल की तरफ़ चल पड़े।

"क्या मामला है? किसे?" "अधिकारपत्र? किसको? क्या?" "खण्डन कर दिया?" "अधिकारपत्र नहीं है।" "फ़्लेरोव को अनुमति नहीं दी जा रही।" "अगर उस पर मुक़दमा चल रहा है, तो क्या हुआ?" "ऐसे तो वे किसी को भी अनुमति नहीं देंगे। यह नीचता है।" "क़ानून!" लेविन को सभी ओर से ऐसी आवाज़ें सुनाई दीं और जल्दी-जल्दी कहीं बढ़े जाते और डरते हुए कि कहीं कोई बात छूट न जाये सब लोगों के साथ वह बड़े हॉल की तरफ़ चल दिया तथा कुलीनों की भीड़ से घिरा हुआ गुबेर्निया के मुखिया की मेज़ के क़रीब जा पहुंचा, जहां गुबेर्निया का मुखिया, स्वियाज्स्की और दूसरे दल-नेता बड़ी गर्मागर्म बहस कर रहे थे।

(२८)

लेविन काफ़ी दूर खड़ा था। खरखराती आवाज़ के साथ ज़ोर से सांस लेता हुआ उसके पास खड़ा एक कुलीन और अपने जूते के मोटे तले से ध्वनि पैदा करता हुआ दूसरा कुलीन उसके अच्छी तरह बात सुनने में बाधा डाल रहे थे। उसे दूर से मुखिया की धीमी आवाज़, फिर विषैले कुलीन की चीखती-सी आवाज़ और इसके बाद स्वियाज्स्की का स्वर ही सुनाई दिया। जहां तक उसकी समझ में आया, ये लोग क़ानून की धारा और "जिस पर मुक़दमा चल रहा है," इन शब्दों के अर्थ को लेकर बहस कर रहे थे।

मेज़ की ओर बढ़ते हुए कोज़्निशेव को रास्ता देने के लिये लोगों की भीड़ एक तरफ़ को हट गयी। कोज़्निशेव ने विषैले कुलीन की बात ख़त्म होने तक प्रतीक्षा की और फिर यह कहा कि क़ानून की सम्बन्धित धारा के शब्दों पर विचार करना अधिक सही तरीक़ा होगा और उसने सेक्रेटरी से इस धारा को ढूंढ़ने को कहा। धारा में कहा गया था कि मतभेद होने पर मतदान करवाना चाहिये।

कोज़्निशेव ने धारा को पढ़ा और उसका अर्थ स्पष्ट करना आरम्भ किया। किन्तु एक लम्बे, मोटे, झुके हुए कंधों तथा रंगी हुई मूंछों वाले ज़मींदार ने, जो तंग-सी वर्दी पहने था और जिसका कालर उसकी गर्दन में धंस रहा था, कोज़्निशेव को बीच में ही टोक दिया। वह मेज़ के क़रीब गया, उसने उस पर ज़ोर से अंगूठी मारकर उसे ठकठकाया और चिल्लाकर कहा –

"मतदान हो! वोट लिये जायें! बात करना बेकार है! मतदान हो!"

अब तो कई लोग एक साथ बोलने लगे और अंगूठी वाला लम्बा-तड़ंगा कुलीन अधिकाधिक गुस्से में आता हुआ अधिकाधिक ज़ोर से चिल्लाने लगा। मगर वह क्या कह रहा था, यह समझ पाना सम्भव नहीं था।

यह ज़मींदार भी वही कह रहा था, जो कोज़्निशेव ने सुझाया था। किन्तु स्पष्टतः उसे कोज़्निशेव और उसकी पार्टी से सख़्त नफ़रत थी। घृणा का यह भाव उसकी अपनी सारी पार्टी को प्रभावित कर रहा था और दूसरे पक्ष की ओर से ऐसा ही, यद्यपि कुछ अधिक शिष्ट ढंग से विरोध प्रकट किया जा रहा था। चीख़-चिल्लाहट ने कुछ देर को सब कुछ ऐसे गड़बड़ कर दिया कि गुबेर्निया के मुखिया को शान्ति और व्यवस्था के लिये अनुरोध करना पड़ा।

"मतदान, मतदान हो! जो कुलीन है वह यह समझता है। हम ख़ून बहाते हैं... सम्राट को हम पर विश्वास है... कृपया वोट लीजिये! कैसी घटिया बात है!.." सभी ओर से क्रोध और बौखलाहट की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। आंखों में और चेहरों पर आवाज़ों से भी ज़्यादा झल्लाहट और ग़ुस्सा था। वे तो अदम्य घृणा को व्यक्त कर रहे थे। लेविन बिल्कुल नहीं समझ पा रहा था कि यह सब क़िस्सा

क्या है। जिस अजीब ढंग से इस बात को तय किया जा रहा था कि फ़्लेरोव के मामले पर मतदान हो या न हो, उस पर हैरानी हो रही थी। जैसा कि कोज़्निशेव ने बाद में स्पष्ट किया, वह इस बात को भूल जाता था कि सार्वजनिक कल्याण के लिये गुबेर्निया के मुखिया की गद्दी उलटना ज़रूरी था, ऐसा करने के लिये अधिक वोट पाना ज़रूरी था, अधिक वोट पाने के लिये फ़्लेरोव को मतदान का अधिकार दिलाना ज़रूरी था और उसके ऐसा करने के अधिकार को मान्यता दिलवाने के लिये यह स्पष्ट करना ज़रूरी था कि क़ानून की धारा का क्या अर्थ लगाया जाये।

"एक वोट सारे मामले को तय कर सकता है और यदि व्यक्ति सार्वजनिक ध्येय की पूर्ति के लिये कुछ करना चाहता है, तो उसे गम्भीर और अडिग होना चाहिये," कोज़्निशेव ने निष्कर्ष निकाला।

किन्तु लेविन यह भूल गया था और इन भले लोगों को, जिनका वह आदर करता था, ऐसी अप्रिय और उत्तेजित मनःस्थिति में देखकर उसे दुख हो रहा था। मन के इस बोझ से मुक्ति पाने के लिये वह इस वाद-विवाद के अन्त का इन्तज़ार किये बिना ही हॉल में चला गया, जहां कैंटीन के आस-पास बैरों के सिवा और कोई नहीं था। बर्तनों को साफ़ करने, प्लेटों और जामों को ढंग से रखने के काम में जुटे हुए बैरों, उनके शान्त और सजीव चेहरों को देखकर उसे अप्रत्याशित ही ऐसी राहत महसूस हुई मानो वह घुटन वाले कमरे से खुले में, ताज़ा हवा में बाहर आ गया हो। वह ख़ुशी से बैरों को देखता हुआ इधर-उधर आने-जाने लगा। उसे यह देखना बहुत अच्छा लगा कि सफ़ेद गलमुच्छों वाला एक बुज़ुर्ग बैरा जवान बैरों को, जो उसकी खिल्ली उड़ा रहे थे, तिरस्कार से देखता हुआ, उन्हें यह सिखा रहा था कि नेप्किनों को कैसे तह किया जाये। लेविन ने बूढ़े बैरे से बातचीत शुरू करनी चाही ही थी कि कुलीनों के न्यास-संगठन के वृद्ध सेक्रेटरी ने, जिसकी यह विशेषता थी कि वह गुबेर्निया के सभी कुलीनों को उनके नामों और पितृनामों से जानता था, उसका ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा –

"कृपया सुनिये, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच, आपके भाई साहब आपको याद फ़रमा रहे हैं। मतदान करना है।"

लेविन हॉल में दाख़िल हुआ, उसे सफ़ेद गोला दे दिया गया और अपने भाई के पीछे-पीछे वह उस मेज़ की तरफ़ गया, जिसके क़रीब स्वियाज्स्की खड़ा था। उसके चेहरे पर अर्थपूर्ण और व्यंग्यपूर्ण भाव था तथा वह अपनी दाढ़ी को मुट्ठी में लेकर सूंघता था। कोज़्निशेव ने बक्स में हाथ डालकर अपना गोला कहीं रख दिया और लेविन को जगह देकर वहीं रुक गया। लेविन आगे बढ़ा, किन्तु पूरी तरह से यह भूलकर कि क्या क़िस्सा है तथा बुरी तरह घबराहट महसूस करते हुए उसने कोज़्निशेव से पूछा कि "कहां रखूं इसे?" उसने बहुत धीमे-से यह प्रश्न किया था और चूंकि आस-पास लोग बातें कर रहे थे, इसलिये उसे यह आशा थी कि कोई उसकी बात नहीं सुनेगा। किन्तु बातें करनेवाले चुप हो गये और उसका यह बेहूदा सवाल सुनायी दे गया। कोज़्निशेव के माथे पर बल पड़ गये।

"यह हर किसी की अपनी आस्था का मामला है," उसने कड़ाई से जवाब दिया।

कुछ लोग मुस्करा दिये। लेविन के चेहरे पर शर्म की लाली दौड़ गयी, उसने गाढ़े के नीचे झटपट हाथ घुसेड़ा और चूंकि गोला दायें हाथ में था, इसलिये उसे दायीं ओर ही रख दिया। गोला रखने के बाद उसे याद आया कि बायां हाथ भी गाढ़े के नीचे घुसेड़ना चाहिये था और उसने ऐसा कर दिया, मगर देर से किया और इसलिये और भी ज़्यादा घबराहट महसूस करते हुए सबसे पीछे वाली क़तारों में जा खड़ा हुआ।

"एक सौ छब्बीस पक्ष में। अठानवे विपक्ष में!" कुछ तुतलाती आवाज़ में बोलनेवाले सेक्रेटरी ने घोषणा की। इसके बाद लोगों का ठहाका गूंज उठा – वोटों के बक्स में से दो अख़रोट और एक बटन भी निकले थे। फ़्लेरोव को वोट देने की अनुमति मिल गयी थी और नयी पार्टी ने मैदान जीत लिया था।

किन्तु पुरानी पार्टी अपने को पराजित नहीं मानती थी। लेविन ने लोगों को स्नेत्कोव से यह अनुरोध करते सुना कि वह चुनाव के लिये अपना नाम पेश करे और देखा कि कुलीनों की भीड़ ने मुखिया को घेर लिया है और वह उनसे कुछ कह रहा है। लेविन निकट आया। कुलीनों के अनुरोध के उत्तर में स्नेत्कोव उस पर भरोसा करने और

अपने प्रति प्यार दिखाने के लिये, जिसके योग्य ख़ुद को वह नहीं समझता था, धन्यवाद दे रहा था। उसके अनुसार उसकी सेवा तो केवल इतनी थी कि वह कुलीनों के प्रति निष्ठावान रहा था और उसने अपने जीवन के बारह वर्ष उनकी सेवा में अर्पित कर दिये थे। उसने अनेक बार ये शब्द दोहराये – "निष्ठा और सचाई से जितनी हो सकी सेवा की, आपके स्नेह का ऊंचा मूल्यांकन करता हूं और आभार मानता हूं"। अचानक आंसुओं के कारण गला रुंध जाने पर वह चुप हुआ और हॉल से बाहर चला गया। अपने प्रति किये गये अन्याय की चेतना या कुलीनों के प्रति प्यार या स्थिति के तनाव के कारण, जिसमें वह अपने को शत्रुओं से घिरा हुआ अनुभव कर रहा था, उसकी आंखें भर आयी थीं, किन्तु उसकी मानसिक विह्वलता ने दूसरों पर भी प्रभाव डाला, अधिकांश कुलीनों के मन भर आये और लेविन को भी स्नेत्कोव के प्रति कोमल भावनाओं की अनुभूति हुई।

दरवाज़े लांघते समय गुबेर्निया का मुखिया लेविन से टकरा गया।

"क्षमा कीजिये, कृपया क्षमा कीजिये," एक अपरिचित की भांति मुखिया ने कहा, किन्तु उसे पहचान लेने पर झेंपता-सा मुस्करा दिया। लेविन को लगा कि वह कुछ कहना चाहता था, मगर मानसिक विह्वलता के कारण कह नहीं पाया। उसके चेहरे के भाव, तमग़ों, सुनहरी किनारी से सजे सफ़ेद पतलून समेत वर्दी से ढकी सारी आकृति तथा जिस तेज़ी से वह उसके निकट से गुज़रा, इन सब चीज़ों ने लेविन को ऐसे जानवर की याद दिला दी, जिसका शिकारी पीछा कर रहे हो और जो यह देख रहा हो कि उसकी हालत बड़ी ख़राब है। मुखिया के चेहरे के इस भाव ने विशेष रूप से लेविन के मन को छू लिया, क्योंकि सिर्फ़ एक ही दिन पहले वह न्यास के मामले को लेकर उसके घर गया था और एक दयालु तथा सद्गृहस्थ के रूप में उसने उसकी सारी गरिमा को देखा था। पुराने, पारिवारिक फ़र्नीचर से सजा हुआ बड़ा-सा घर; सजे-धजे नहीं, कुछ कुछ गन्दे, किन्तु आदर करनेवाले पुराने नौकर, जो स्पष्टतः ऐसे भूतपूर्व भू-दास थे, जिन्होंने अपने स्वामी का साथ नहीं छोड़ा था; लेस लगी टोपी पहने और तुर्की शाल ओढ़े मोटी तथा ख़ुशमिज़ाज बीवी, जो अपनी नातिन को प्यार कर रही थी, छठे दर्जे में पढ़नेवाला किशोर बेटा, जो हाई स्कूल से घर आया

था और जिसने पिता का अभिवादन करते हुए उसका बड़ा-सा हाथ चूमा था; गृह-स्वामी के प्रभावित करनेवाले स्नेहपूर्ण शब्द और संकेत – इन सब चीज़ों ने एक दिन पहले अनचाहे ही लेविन के मन में आदर और सहानुभूति का भाव पैदा किया था। यह बूढ़ा अब लेविन के मन को छू रहा था, उसे वह दयनीय प्रतीत हो रहा था और उसका मन हुआ कि उससे कुछ मधुर शब्द कहे।

"तो ऐसा समझना चाहिये कि आप ही फिर से हमारे मुखिया होंगे," लेविन ने कहा।

"शायद ही," भयभीत-सा होकर लेविन की ओर मुड़ते हुए उसने उत्तर दिया। "मैं थक चुका हूं, बूढ़ा हो गया हूं। मुझसे अधिक योग्य और जवान लोग हैं, उन्हें यह सेवा-कार्य सम्भालना चाहिये।"

और मुखिया बग़ल वाले कमरे में ग़ायब हो गया।

सबसे महत्त्वपूर्ण क्षण आ गया। चुनावों का वक़्त आ पहुंचा था। दोनों पार्टियों के नेतागण सफ़ेद और काले गोलों को उंगलियों पर गिनकर यह अनुमान लगा रहे थे कि उन्हें कितने वोट मिलेंगे।

फ़्लेरोव को लेकर हुई बहस से नई पार्टी को न केवल उसका एक वोट ही मिल गया था, बल्कि समय भी मिला था और वह उन तीन कुलीनों को भी बुलवा सकती थी, जो पुरानी पार्टी की तिकड़मबाज़ी के फलस्वरूप चुनाव में भाग लेने से वंचित हो गये थे। स्नेत्कोव के पिट्ठुओं ने दो कुलीनों को, जिन्हें पीने की लत थी, बेहद पिलाकर नशे में धुत्त कर दिया था और तीसरे की वर्दी ग़ायब कर दी थी।

यह मालूम होने पर नयी पार्टी वालों ने वाद-विवाद के समय अपने कुछ लोगों को किराये की बग्घी में भेज दिया था, ताकि वे कुलीन के लिये वर्दी ले आयें और नशे में धुत्त दो में से एक को सभा में खींच लायें।

"एक को ले आया हूं, उस पर ख़ूब पानी डाला है," उस ज़मींदार ने स्वियाज्स्की को बताया, जो इस पियक्कड़ कुलीन को लेने गया था। "कुछ बुरा नहीं, काम चल जायेगा।"

"बहुत ज़्यादा तो नहीं पिये है, गिर तो नहीं पड़ेगा?" दुखी मन से सिर हिलाते हुए स्वियाज्स्की ने पूछा।

"नहीं, अच्छी हालत में है। बस, यहां उसे कोई और न पिला

दें ... मैंने कैंटीन वाले से कह दिया है कि उसे किसी हालत में कुछ भी पीने को न दिया जाये।"

(२६)

संकरा-सा हॉल, जिसमें कुछ खाना-पीना और धूम्रपान हो रहा था, कुलीनों से भरा हुआ था। उत्तेजना बढ़ती जा रही थी और सभी के चेहरों पर परेशानी झलक रही थी। दल-नेता, जिन्हें मतदान के गोलों का सारा हिसाब-किताब और ब्योरा मालूम था, ख़ास तौर पर बहुत उत्तेजित थे। ये मानो कुछ ही समय बाद होनेवाली लड़ाई के कमांडर थे। बाक़ी लोग, जो आम फ़ौजियों जैसे थे, बेशक लड़ाई के लिये तैयार हो रहे थे, फिर भी फ़िलहाल तो अपना मन बहलाने की फ़िक्र में थे। उनमें से कुछ खड़े या मेज़ के पास बैठे हुए खा-पी रहे थे और अन्य सिगरेटों के कश खींचते हुए लम्बे कमरे में इधर-उधर आ-जा रहे थे, उन दोस्तों-मित्रों से बातचीत कर रहे थे, जिनके साथ लम्बे अर्से से उनकी मुलाक़ात नहीं हुई थी।

लेविन का खाने को मन नहीं था, सिगरेट वह पीता नहीं था और अपने लोगों यानी कोज़्निशेव, ओब्लोन्स्की, स्वियाज्स्की, आदि के पास इसलिये नहीं जाना चाहता था कि रिसाले की वर्दी पहने व्रोन्स्की उनके पास खड़ा हुआ सजीव बातचीत में व्यस्त था। लेविन ने एक दिन पहले, चुनाव के समय भी उसे देखा था, मगर चूंकि उससे मिलना नहीं चाहता था, इसलिये बड़े यत्न से कन्नी काट गया था। वह खिड़की के क़रीब जाकर बैठ गया और अपने इर्द-गिर्द लोगों के दलों को देखने और उनकी बातें सुनने लगा। लेविन को इसलिये उदासी अनुभव हो रही थी कि, जैसा कि वह देख रहा था, बाक़ी सभी लोग बड़े रंग में थे, जिन्हीं विचारों में डूबे हुए या व्यस्त थे और केवल वही तथा नौसेना की वर्दी पहने, दांतों के बिना और होंठों से कुछ बड़बड़ाता हुआ बहुत ही बूढ़ा एक व्यक्ति, जो उसके क़रीब आ बैठा था, निकम्मे थे और इन्हें किसी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

"वह तो बड़ा ही बदमाश है! मैंने उससे कहा भी था, मगर उसकी बला से। इसमें हैरानी की भी क्या बात है! वह तीन सालों

में भी जमा नहीं कर पाया," झुके कंधों वाला एक नाटा ज़मींदार, जिसके तेल लगे चिकने बाल उसकी वर्दी के कढ़े हुए कालर पर पड़ रहे थे और जो स्पष्टतः चुनाव के लिये पहने गये घुटनों तक के नये बूटों की एड़ियां ज़ोर से बजाता था, शब्दों पर बल देते हुए ऊंची आवाज़ में कहता जा रहा था। लेविन पर अप्रसन्नता की एक दृष्टि डालकर इस ज़मींदार ने तेज़ी से मुंह फेर लिया।

"कहा ही क्या जाये, यह गन्दा मामला है," नाटे ज़मींदार ने पतली-सी आवाज़ में उत्तर दिया।

इनके बाद एक मोटे-से जनरल को घेरे हुए ज़मींदारों की भीड़ तेज़ी से लेविन के निकट आई। ज़मींदार लोग स्पष्टतः बातचीत करने की ऐसी जगह ढूंढ़ रहे थे, जहां कोई उनकी बातचीत न सुन पाये।

"वह यह कहने की हिम्मत कैसे कर रहा है कि मैंने उसका पतलून चुरा लेने का आदेश दिया था। मेरे ख़्याल में तो उसने उसे बेचकर सारे पैसे की शराब पी डाली है। मेरी जूती परवाह करती है उसकी और उसके प्रिंस होने की। उसे ऐसा कहने की जुर्रत नहीं करनी चाहिये, यह एकदम कमीनापन है!"

"हां, पर सुनिये तो! वे धारा को आधार बना रहे हैं," दूसरे दल में कहा जा रहा था, "बीवी को तो कुलीन के रूप में दर्ज होना चाहिये था।"

"भाड़ में जाये धारा! मैं दिल की बात कर रहा हूं। इसी के लिये तो हम श्रेष्ठ कुलीन लोग हैं। उन पर विश्वास करना चाहिये।"

"हुज़ूर, आइये चलें, fine champagne.*"

कुछ अन्य लोगों की भीड़ एक कुलीन के पीछे-पीछे चल रही थी, जो ऊंची आवाज़ में बोल रहा था – वह उन तीनों में से एक था, जिन्हें पिलाकर नशे में धुत्त कर दिया गया था।

"मैंने मारीया सेम्योनोव्ना को हमेशा यही सलाह दी है कि वह अपनी ज़मीन पट्टे पर दे दे, क्योंकि वह उसे कभी लाभ देनेवाली नहीं बना सकेगी," पकी मूंछों वाला ज़मींदार मधुर आवाज़ में कह रहा था, जो भूतपूर्व जनरल स्टाफ़ के कर्नल की वर्दी पहने था। यह वही

---

* ब्रांडी। (फ़्रांसीसी)

ज़मींदार था, जिसके साथ स्वियाज्स्की के यहां लेविन की भेंट हो चुकी थी। लेविन ने उसे फ़ौरन पहचान लिया। ज़मींदार ने भी लेविन को पहचाना और उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया।

"बहुत ख़ुशी हुई। यह कैसे हो सकता है! बहुत अच्छी तरह से याद है। पिछले वर्ष मुखिया स्वियाज्स्की के यहां मुलाक़ात हुई थी।"

"तो आपकी खेतीबारी कैसी चल रही है?" लेविन ने पूछा।

"वैसे ही, घाटे में," ज़मींदार ने लेविन के निकट रुकते हुए विनम्र मुस्कान किन्तु चैन और विश्वास के इस भाव के साथ, मानो ऐसा ही होना चाहिये, उत्तर दिया। "और आपका हमारे गुबेर्निया में कैसे आना हुआ?" उसने पूछा। "हमारे coup d'état* में भाग लेने आये हैं क्या?" उसने दृढ़ता से, किन्तु फ़्रांसीसी शब्दों को बड़े भद्दे ढंग से बोलते हुए पूछा। "सारा रूस ही यहां आ गया है – राजदरबारी लोग और लगभग मन्त्री तक।" उसने सफ़ेद पतलून और राजदरबार की वर्दी पहने तथा एक जनरल के साथ टहलते हुए ओब्लोन्स्की की प्रभावपूर्ण आकृति की ओर संकेत किया।

"मुझे यह मानना होगा कि मैं कुलीनों के इस चुनाव का महत्त्व अच्छी तरह नहीं समझता हूं," लेविन ने कहा।

ज़मींदार ने लेविन की तरफ़ देखा।

"इसमें समझने की बात ही क्या है? कोई महत्त्व नहीं है इसका। दम तोड़ती संस्था है, जो केवल अपनी निश्चेष्टता के कारण चलती जा रही है। वर्दियों पर नज़र डालिये और वे भी यही बता रही हैं कि यह ग्राम-न्यायाधीशों और स्थायी सदस्यों, आदि की सभा, कुलीनों की नहीं।"

"तो आप इसमें क्यों आते हैं?" लेविन ने प्रश्न किया।

"सिर्फ़ आदत के कारण। फिर सम्पर्क भी तो बनाये रखने होते हैं। कुछ हद तक नैतिक कर्त्तव्य भी है। और अगर सच कहूं, तो अपना कुछ स्वार्थ भी है। मेरा दामाद सदस्य बनना चाहता हैं – वे लोग धनी नहीं हैं और मुझे उसकी मदद करनी चाहिये। ऐसे महानुभाव किसलिये आते हैं?" उसने उस विषैले महानुभाव की ओर संकेत करते

---

* राज्य का तख़्ता उलटना। (फ़्रांसीसी)

हुए कहा, जो गुबेर्निया के मुखिया की मेज़ से बोला था।

"यह कुलीनों की नयी पीढ़ी है।"

"नयी पीढ़ी, तो नयी पीढ़ी है। लेकिन कुलीन तो नहीं। ये ज़मीनों वाले हैं, मगर हम ज़मींदार हैं। कुलीनों के रूप में ये स्वयं अपनी हत्या कर रहे हैं।"

"किन्तु आपका तो कहना है कि यह दम तोड़ती संस्था है।"

"दम तोड़ती, तो दम तोड़ती है, फिर भी उसके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना चाहिये। बेशक स्नेत्कोव को ही ले लीजिये... हम अच्छे हैं या नहीं, हज़ारों सालों में हमारा विकास हुआ है। मान लीजिये कि आपको अपने घर के सामने बगीचा लगाना है, उसकी ढंग से योजना बनानी है और वहां, आपकी उसी जगह पर, सौ साल पुराना एक पेड़ खड़ा है... वह चाहे बूढ़ा और गांठ-गंठीला हो चुका हो, फिर भी फूलों की क्यारियों के लिये तुम उस बूढ़े वृक्ष को तो नहीं काट दोगे, बल्कि क्यारियों की ऐसी व्यवस्था करोगे कि पेड़ का भी उपयोग हो जाये। एक साल में तो उसे इतना बड़ा करना सम्भव नहीं..." उसने सावधानी से कहा और इसी क्षण बातचीत का विषय बदल दिया। "आपकी खेतीबारी कैसी चल रही है?"

"कुछ अच्छी नहीं। पांच प्रतिशत से अधिक आय नहीं होती।"

"लेकिन आप अपने श्रम को क्यों नहीं गिनते। उसकी भी तो कुछ क़ीमत है न? मैं आपको अपनी बात बताता हूं। जब तक मैं खेतीबारी में नहीं फंसा था, सैनिक सेवा से तीन हज़ार पाता था। अब मैं सैनिक सेवा की तुलना में अधिक काम करता हूं और आपकी तरह ही पांच प्रतिशत पाता हूं। इसके लिये भी भगवान का कृतज्ञ हूं। अपना श्रम मुफ़्त में देता हूं।"

"यदि सीधे-सीधे हानि होती है, तो आप ऐसा करते क्यों हैं?"

"बस, करता जा रहा हूं। और क्या किया जाये? आदत बन गयी है और मालूम है कि ऐसा ही करना चाहिये। इतना ही नहीं, यह भी कहूंगा," खिड़की पर अपनी कोहनियां टिकाकर बातचीत में कुछ और डूबते हुए ज़मींदार ने अपनी बात जारी रखी, "बेटे की खेतीबारी में ज़रा ही दिलचस्पी नहीं है। शायद कोई विद्वान या वैज्ञानिक

बनेगा। सो कोई भी मेरे इस काम को जारी नहीं रखेगा। फिर भी करता चला जा रहा हूं। इस साल एक बाग़ लगा लिया।"

"हां, हां," लेविन ने कहा, "बिल्कुल सही है आपकी बात। मैं हमेशा यह महसूस करता हूं कि मेरी खेतीबारी से मुझे मिलता-मिलाता कुछ नहीं, मगर फिर भी ऐसा करता जाता हूं... भूमि के प्रति एक ज़िम्मेदारी-सी अनुभव होती है।"

"लीजिये, मैं आपको एक और बात बताता हूं," ज़मींदार ने चर्चा आगे बढ़ाई। "मेरा पड़ोसी एक व्यापारी था। मैंने उसे अपनी खेतीबारी दिखायी, बाग़ दिखाया। देखने के बाद बोला – 'आपके यहां और तो सब ठीक है, मगर बाग़ का मामला गड़बड़ है।' सच यह है कि बाग़ बड़ी अच्छी हालत में है। 'आपकी जगह मैं होता, तो मैं इस लाइम वृक्ष को काट डालता। किन्तु उस समय ऐसा करता, जब उस पर ताज़ा छाल आई होती। यहां लाइम के हज़ारों वृक्ष हैं और हर वृक्ष से बहुत सारी छाल हासिल की जा सकती है। आजकल छाल की अच्छी क़ीमत मिल रही है और साथ ही बहुत-सी इमारती लकड़ी भी हो जायेगी।"

"और इस तरह हासिल होनेवाली रक़म से वह ढोर-डंगर या कौड़ियों के मोल ज़मीन ख़रीद लेगा और किसानों को किराये पर दे देगा," लेविन ने मुस्कराते हुए बात पूरी की और स्पष्ट था कि इस तरह के हिसाब-किताब की बात वह पहले भी बहुत बार सुन चुका है। "और वह मालामाल हो जायेगा। दूसरी ओर, हम और आप अगर उसी को बचाये रखें, जो हमारे पास है और उसे बच्चों के लिये छोड़ जायें, तो यह भी बड़ी बात होगी।"

"मैंने सुना है कि आपने शादी कर ली है?" ज़मींदार ने पूछा।

"हां," लेविन ने गर्वपूर्ण प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया। "हां, यह कुछ अजीब-सी बात है," वह कहता गया, "हम भविष्य के बारे में सोचे-विचारे बिना जीते जा रहे हैं, मानो प्राचीन काल के ऐसे सन्यासी हों, जिन्हें किसी पावन अग्नि की रक्षा का दायित्व सौंपा गया हो।"

ज़मींदार ने अपनी सफ़ेद मूंछों के नीचे दांत निपोरे।

"हमारे बीच भी कुछ ऐसे हैं, जैसा कि हमारा दोस्त स्वियाज्स्की

या अब काउंट व्रोन्स्की, जो यहां आ बसा है, ये लोग खेतीबारी के काम को औद्योगिक ढंग से चलाना चाहते हैं। किन्तु अभी तक तो पूंजी के नुक़सान के सिवा उन्हें कोई फ़ायदा नहीं हुआ।"

"लेकिन हम व्यापारियों की तरह क्यों नहीं करते? छाल के लिये वृक्षों को क्यों नहीं काटते?" लेविन ने उस विचार की ओर लौटते हुए पूछा, जिसने उसे आश्चर्यचकित कर दिया था।

"जैसा कि आपने कहा, पावन अग्नि की रक्षा करते हैं। वह हम कुलीनों का काम नहीं है। और हमारा कुलीनों का काम यहां, चुनावों में नहीं, बल्कि अपने घर-घरानों में किया जाता है। फिर हमारी नैसर्गिक प्रवृत्ति भी है कि क्या किया जाये और क्या न किया जाये। किसानों का भी यही हाल है। कभी-कभी देखता हूं कि अच्छा किसान जितनी भी सम्भव होती है, ज़मीन ले लेता है। बुरी ज़मीन हो, फिर भी उसमें खेती करता जाता है। लाभ के बिना। हानि उठाते हुए।"

"बस, यही हमारा हाल है," लेविन ने कहा। "बहुत, बहुत ही ख़ुशी हुई आपसे मिलकर," उसने स्वियाज्स्की को अपनी ओर आते देखकर इतना और जोड़ दिया।

"आपके यहां मिलने के बाद पहली बार हमारी यहां मुलाक़ात हुई है," ज़मींदार ने कहा, "सो ख़ूब बातें हो गयीं।"

"नये रंग-ढंग को कोस लिया?" स्वियाज्स्की ने मुस्कराते हुए पूछा।

"हां, सो भी किया।"

"दिल हल्का कर लिया।"

(३०)

स्वियाज्स्की ने लेविन का हाथ थामा और उसे साथ लेकर अपने लोगों की ओर चल दिया।

लेविन के लिये अब तो व्रोन्स्की से कन्नी काटना सम्भव नहीं था। वह ओब्लोन्स्की और कोज़्निशेव के पास खड़ा था और अपने निकट आते हुए लेविन की तरफ़ देख रहा था।

"बहुत ख़ुशी हुई। लगता है कि प्रिंसेस श्चेर्बात्स्काया के यहां...

आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था," लेविन की ओर हाथ बढ़ाते हुए व्रोन्स्की ने कहा।

"हां, बहुत अच्छी तरह से याद है मुझे हमारी मुलाक़ात," लेविन ने उत्तर दिया, लाल सुर्ख़ होते हुए मुंह फेर लिया और भाई से बात करने लगा।

व्रोन्स्की तनिक मुस्कराया और लेविन के साथ बातचीत करने की स्पष्टतः कोई इच्छा न रखते हुए उसने स्वियाज्स्की से बातचीत जारी रखी। किन्तु लेविन अपने भाई से बात करते हुए लगातार मुड़-मुड़कर व्रोन्स्की की ओर देखता और यह सोचता रहा कि अपनी अशिष्टता के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिये उससे क्या बात करे।

"अब किस बात की देर है?" लेविन ने स्वियाज्स्की और व्रोन्स्की की ओर देखते हुए पूछा।

"स्नेत्कोव के जवाब की। वह या तो हां या न करे," स्वियाज्स्की ने उत्तर दिया।

"तो वह राज़ी हुआ या नहीं?"

"यही तो मुसीबत है, न राज़ी होता है, न इन्कार करता है," व्रोन्स्की ने कहा।

"अगर वह इन्कार कर देगा तो मुखिया के लिये कौन खड़ा होगा?" लेविन ने व्रोन्स्की की ओर देखते हुए सवाल किया।

"जो कोई भी चाहेगा," स्वियाज्स्की ने उत्तर दिया।

"आप खड़े होंगे?" लेविन ने पूछा।

"मैं तो हरगिज़ नहीं," स्वियाज्स्की ने परेशान होते और कोज़्निशेव के साथ निकट ही खड़े विषैले महानुभाव की ओर सहमी-सी नज़र से देखते हुए कहा।

"तो कौन खड़ा होगा? नेवेदोव्स्की?" लेविन ने यह अनुभव करते हुए कि वह गड़बड़झाले में फंस गया है, पूछा।

किन्तु यह तो और भी बुरा था। नेवेदोव्स्की और स्वियाज्स्की – ये दोनों उम्मीदवार थे।

"मैं तो किसी भी हालत में नहीं," विषैले महानुभाव ने उत्तर दिया।

यह ख़ुद नेवेदोव्स्की था। स्वियाज्स्की ने लेविन से उसका परिचय करवाया।

"तो तुम पर भी चुनाव का जादू चल गया?" ओब्लोन्स्की ने व्रोन्स्की को आंख मारकर कहा। "यह घुड़दौड़ों की तरह है। शर्त भी लगायी जा सकती है।"

"हां, यह भी दिल-दिमाग़ पर हावी हो जाता है," व्रोन्स्की ने जवाव दिया। "एक बार कोई काम हाथ में ले लेने पर उसे पूरा करने को मन होता है। संघर्ष जो ठहरा!" व्रोन्स्की ने नाक-भौंह सिकोड़ते और मज़बूत जबड़ों को भींचते हुए कहा।

"कैसा प्रबन्धक है स्वियाज्स्की! हर बात को वह कैसे साफ़ तौर पर देखता है।"

"हां, यह तो है," व्रोन्स्की ने बेख़्याली से जवाब दिया।

ख़ामोशी छा गयी और इस बीच व्रोन्स्की को चूंकि किसी चीज़ की तरफ़ तो देखना ही था, उसने लेविन पर नज़र डाली, उसके पैरों और वर्दी की तरफ़, फिर चेहरे की ओर देखा और उसकी उदास आंखों को अपनी दिशा में ताकते पाकर केवल कुछ कहने के लिये ही यह कहा –

"भला यह क्या बात है कि आप जो स्थायी रूप से गांव में रहते हैं, न्यायाधीश नहीं हैं? आप ग्राम-न्यायाधीश की वर्दी नहीं पहने हैं।"

"इसलिये कि मैं ग्राम-न्यायाधीशों की संस्था को एक बेहूदा चीज़ मानता हूं," लेविन ने, जो अपनी पहली भेंट की अशिष्टता के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिये व्रोन्स्की के साथ बातचीत कर पाने का लगातार अवसर खोज रहा था, उदासी से उत्तर दिया।

"मैं तो ऐसा नहीं मानता, बल्कि इसके उलट..." व्रोन्स्की ने शान्तिपूर्ण आश्चर्य के साथ कहा।

"यह तो जैसे कोई खेल या खिलौना है," लेविन ने उसे बीच में ही टोक दिया। "हमें ग्राम-न्यायाधीशों की आवश्यकता नहीं है। आठ सालों तक मेरे पास एक भी मुक़दमा नहीं आया। जो एक आया, तो उसका ग़लत फ़ैसला हुआ। न्यायाधीश मेरे गांव से चालीस वेर्स्ता दूर है। जिस मामले पर दो रूबल ख़र्च होते हैं, उसके लिये वहां किसी को मुख़्तार बना कर भेजने पर पन्द्रह रूबल का ख़र्च बर्दाश्त करना पड़ता है।"

लेविन ने क़िस्सा सुनाया कि कैसे एक किसान ने किसी चक्की

वाले का आटा चुरा लिया और जब चक्की वाले ने इसके बारे में उससे कहा, तो किसान ने उस पर झूठी बदनामी करने का मुक़दमा कर दिया। यह सारी बात अप्रसंग और बेतुकी थी और इसे सुनाते वक़्त लेविन ख़ुद भी यह महसूस कर रहा था।

"ओह, यह भी एक झक्की है," ओब्लोन्स्की ने अपनी बहुत ही चिकनी मुस्कान के साथ कहा। "पर, आइये अब चलें, लगता है कि मतदान शुरू हो गया है..."

और ये लोग चल दिये।

"मेरी समझ में नहीं आता," अपने भाई को अटपटी बात करते सुन चुके कोज़्निशेव ने कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे कोई इस हद तक राजनीतिक सूझ-बूझ से वंचित हो सकता है। हम रूसियों में इसकी एकदम कमी है। गुबेर्निया का मुखिया हमारा विरोधी है और तुम उसके साथ ami cochon* और उससे चुनाव के लिये खड़े होने का अनुरोध कर रहे हो। काउंट व्रोन्स्की के मामले में भी... मैं उसे अपना दोस्त नहीं बनाऊंगा – उसने मुझे अपने साथ शाम का खाना खाने को निमन्त्रित किया है, मैं वहां नहीं जाऊंगा। फिर भी वह हमारे दल का है, उसे दुश्मन क्यों बनाया जाये? फिर तुमने नेवेदोव्स्की से पूछा कि वह चुनाव के लिये उम्मीदवार होगा या नहीं। ऐसी बातें नहीं की जातीं।"

"ओह, मैं यह सब कुछ नहीं समझता। ये सब मामूली बातें हैं," लेविन ने उदासी से उत्तर दिया।

"तुम कहते हो कि ये सब मामूली बातें हैं, मगर जैसे ही ज़बान खोलते हो, सब गड़बड़ कर देते हो।"

लेविन चुप हो गया और वे एकसाथ बड़े हॉल में दाख़िल हुए।

इस चीज़ के बावजूद कि गुबेर्निया के मुखिया को इस बात की गन्ध मिल गयी थी कि उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा जा रहा है और इस चीज़ के बावजूद भी कि सभी ने उससे चुनाव के लिये खड़े होने का अनुरोध नहीं किया था, उसने चुनाव लड़ने का निर्णय किया। हॉल में गहरी ख़ामोशी छा गयी। सेक्रेटरी ने ऊंची आवाज़ में घोषणा

* घुल-मिल रहे हो। (फ़्रांसीसी)

की कि गार्डों की घुड़सेना के कप्तान मिख़ाईल स्तेपानोविच स्नेत्कोव गुबेर्नियां के मुखिया के लिये खड़े होते हैं और अब मतदान होगा।

उयेज़्दों के मुखिया छोटी-छोटी तश्तरियां लिये, जिनमें गोले रखे थे, अपनी मेज़ों से गुबेर्नियां की मेज़ की ओर बढ़े। चुनाव शुरू हुआ।

"दायीं ओर रखना," मुखिया के बाद जब भाई के साथ लेविन मेज़ के निकट पहुंचा, तो ओब्लोन्स्की ने फुसफुसाकर उससे कहा। किन्तु लेविन वह हिसाब-किताब भूल चुका था, जो उसे समझाया गया था और डर रहा था कि "दायीं ओर" कहकर ओब्लोन्स्की ने भूल तो नहीं की। आख़िर स्नेत्कोव तो दुश्मन था। बक्स के क़रीब जाते वक़्त वह दायें हाथ में गोला लिये था, किन्तु यह सोचकर कि उससे भूल हो रही है, उसने बक्स के ठीक सामने पहुंचकर गोले को बायें हाथ में ले लिया। बक्स के निकट खड़े इस मामले के बड़े अच्छे जानकार ने, जो कोहनी की एक हरकत से ही यह जान जाता था कि किसने अपना गोला कहां रखा है, अप्रसन्नता से माथे पर बल डाले। उसे अपनी सूक्ष्मदर्शिता का उपयोग करने की तनिक भी आवश्यकता नहीं पड़ी थी।

सभी ख़ामोश हो गये और गोलों की गिनती सुनाई दी। कुछ देर बाद एक व्यक्ति ने उम्मीदवार के पक्ष में और उसके विरुद्ध डाले गये वोटों की संख्या की घोषणा की।

गुबेर्नियां का मुखिया काफ़ी बड़ी संख्या में अधिक वोटों के साथ जीत गया था। सभी शोर मचाते हुए तेज़ी से दरवाज़े की तरफ़ लपके। स्नेत्कोव भीतर आया, कुलीनों ने उसे घेर लिया और बधाई दी।

"सो अब तो क़िस्सा ख़त्म हो गया?" लेविन ने कोज़्निशेव से पूछा।

"अभी तो शुरू हो रहा है," कोज़्निशेव की जगह स्वियाज़्स्की ने मुस्कराकर उत्तर दिया। "मुखिया बनने का उम्मीदवार स्नेत्कोव से ज़्यादा वोट हासिल कर सकता है।"

लेविन इसके बारे में फिर से बिल्कुल भूल गया था। उसे अभी याद आया कि इस मामले में कोई बारीकी थी, मगर वह बारीकी क्या थी, उसे यह याद करने में ऊब-सी अनुभव हुई। उदासी ने उसे आ घेरा और उसका मन हुआ कि इस भीड़ से बाहर चला जाये।

चूंकि लेविन की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दे रहा था और उसे लगा

कि उसकी किसी को ज़रूरत नहीं है, वह धीरे-से छोटे हॉल की तरफ़ बढ़ गया, जहां लोग खा-पी रहे थे। वहां फिर से बैरों को देखकर उसे बड़ी राहत मिली। बूढ़े बैरे ने उससे कुछ खाने का प्रस्ताव किया और वह राज़ी हो गया। कटलेट और लोबिया खाकर उसने बैरे के साथ उसके भूतपूर्व स्वामियों की चर्चा की और हॉल में लौटने की इच्छा न अनुभव करते हुए, जहां उसे ऊब महसूस हो रही थी, वह गैलरी की तरफ़ चला गया।

गैलरी सजी-धजी महिलाओं से भरी थी, जो रेलिंग पर झुकी हुई थीं और इस बात की पूरी कोशिश कर रही थीं कि नीचे जो कुछ कहा जा रहा है, उसका एक भी शब्द अनसुना न रह जाये। बने-ठने वकील, हाई स्कूल के चश्मेधारी अध्यापक और फ़ौजी अफ़सर महिलाओं के क़रीब खड़े या बैठे थे। सभी जगह चुनाव की चर्चा हो रही थी, यह कहा जा रहा था कि मुखिया कितना परेशान नज़र आ रहा है और बहस कितनी अच्छी रही। एक दल में लेविन ने अपने भाई की प्रशंसा सुनी। एक महिला किसी वकील से कह रही थी –

"मैं कितनी ख़ुश हूं कि कोज़्निशेव को सुन पाई! उसे सुनने के लिये तो भूखा भी रहा जा सकता है। बहुत ही ख़ूब! कितने सुलझे हुए ढंग से बोलता है और सुनाई भी सब कुछ देता है! आपकी अदालत में कोई ऐसे नहीं बोलता। सिर्फ़ माइदेल, और वह भी ऐसे बढ़िया ढंग से नहीं बोल पाता।"

कहीं ख़ाली जगह देख लेविन रेलिंग पर झुक गया और नीचे देखने तथा बातें सुनने लगा।

सभी कुलीन अपने-अपने उयेज़्दों के मुताबिक़ उन्हें अलग करनेवाली लकड़ी की दीवारों के पीछे बैठे थे। हॉल के बीचोंबीच वर्दी पहने एक व्यक्ति खड़ा था और पतली तथा ऊंची आवाज़ में घोषणा कर रहा था –

"घुड़सेना के कप्तान येव्गेनी इवानोविच अपूख़तिन का नाम कुलीनों के मुखिया के उम्मीदवार के रूप में पेश किया जाता है!"

गहरी ख़ामोशी छा गयी और किसी बूढ़े की धीमी-सी आवाज़ सुनाई दी –

"इन्कार कर दिया गया!"

"दरबारी सलाहकार प्योत्र पेत्रोविच बोल्ल का नाम पेश किया जाता है," फिर से आवाज़ सुनाई दी।

"इन्कार कर दिया गया!" किसी की जवान और किकियाती-सी आवाज़ गूंज उठी।

फिर से किसी का नाम लिया गया और फिर से इन्कार हुआ। एक घण्टे तक यही सिलसिला चलता रहा। रेलिंग पर कोहनियां टिकाये हुए लेविन यह सब देखता और सुनता रहा। शुरू में उसे हैरानी हुई और उसने समझना चाहा कि इस सब का मतलब क्या है, मगर बाद में यह यक़ीन हो जाने पर कि वह यह समझ नहीं पायेगा, उसे ऊब महसूस होने लगी। कुछ देर बाद उस क्रोधपूर्ण उत्तेजना का स्मरण करते हुए, जो उसे सभी के चेहरों पर दिखायी दी थी, वह उदास हो गया और उसने जाने का निर्णय किया। वह नीचे की तरफ़ चल दिया। गैलरी की ड्योढ़ी में से गुज़रते हुए उसे सूजी आंखोंवाला एक उदास-सा स्कूली छात्र इधर-उधर आता-जाता दिखाई दिया। सीढ़ियों में उसे एक जोड़ा मिला – ऊंची एड़ियोंवाले जूते पहने तेज़ी से ऊपर भागी जाती महिला और फुर्तीली चाल वाला सहायक राज-अभियोक्ता।

"मैंने आपसे कहा था कि पहुंचने में देर नहीं होगी," सहायक राज-अभियोक्ता ने उस समय ये शब्द कहे, जब महिला को रास्ता देने के लिये लेविन एक ओर को हटा।

लेविन अपना फ़र-कोट पहन कर बाहर जाने की सोच ही रहा था कि सेक्रेटरी ने उसे आ पकड़ा। "कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच, कृपया वोट देने के लिये भीतर चलिये।"

नेवेदोव्स्की के लिये, जिसने बहुत ही दृढ़ता से उम्मीदवार होने से इन्कार किया था, मतदान हो रहा था।

लेविन हॉल में जाने के दरवाज़े पर पहुंचा – वह भीतर से बन्द था। सेक्रेटरी ने दस्तक दी, दरवाज़ा खुला और दो ज़मींदार, जिनके चेहरे सुर्ख़ थे, तेज़ी से बाहर निकले।

"मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता," तमतमाये हुए चेहरे वाले ज़मींदार ने कहा।

ज़मींदार के बाद गुबेर्निया के मुखिया ने अपना चेहरा दरवाज़े से बाहर निकाला। भय और थकान से यह चेहरा भयानक लग रहा था।

"मैंने तुमसे कहा था कि किसी को बाहर नहीं जाने देना!" उसने चीख़कर दरबान से कहा।

"हुज़ूर, मैंने तो भीतर जाने दिया है!"

"हे भगवान!" और गुबेर्निया का मुखिया गहरी सांस लेकर सिर झुकाये तथा सफ़ेद पतलून में अपनी थकी हुई टांगों को घसीटते हुए हॉल के बीच से बड़ी मेज़ की तरफ़ चल दिया।

जैसा कि अनुमान था, नेवेदोव्स्की को अधिक वोट मिले और वह गुबेर्निया का मुखिया चुन लिया गया। बहुत-से लोग ख़ुश थे, बहुत-से सन्तुष्ट थे, बहुतों को हार्दिक प्रसन्नता थी, बहुत-से ख़ुशी से फूले नहीं समा रहे थे, बहुत-से दुखी और खिन्न थे। गुबेर्निया का मुखिया हताश था और वह इसे छिपाने में असमर्थ था। नेवेदोव्स्की जब हॉल से बाहर जाने लगा, तो लोगों की भीड़ ने उसे घेर लिया और वह उसी तरह उल्लासपूर्वक उसके पीछे-पीछे चल दी, जैसे पहले दिन गवर्नर के पीछे गयी थी, जब उसने चुनाव-सभा का उद्घाटन किया था और जैसे स्नेत्कोव के चुने जाने पर उसके पीछे-पीछे गयी थी।

(३१)

गुबेर्निया का नया चुना गया मुखिया और नयी विजयी पार्टी के बहुत-से लोग इस दिन व्रोन्स्की के यहां दावत पर आये।

व्रोन्स्की चुनावों में इसलिये आया था कि गांव में उसे ऊब अनुभव हो रही थी और वह आन्ना के सामने अपनी आज़ादी के अधिकार की भी घोषणा करना चाहता था। वह इसलिये भी चुनावों में हिस्सा लेने आया था कि ज़ेम्सत्वो-परिषद के लिये व्रोन्स्की के चुनाव के समय स्वियाज्स्की ने जो दौड़-धूप की थी, इस चुनाव में स्वियाज्स्की को समर्थन देकर वह उसका बदला चुका सके और सबसे अधिक तो इसलिये आया था कि कुलीन और भूमिपति की उस भूमिका की, जो उसने अपनायी थी, सभी ज़िम्मेदारियां कड़ाई से पूरी कर सके। किन्तु उसने ऐसी आशा बिल्कुल नहीं की थी कि चुनाव के इस मामले में उसे इतनी अधिक दिलचस्पी होगी, कि वह इसमें डूब ही जायेगा और इस काम को इतनी अच्छी तरह से कर सकेगा। कुलीनों के हलक़े में वह एकदम नया आदमी था, किन्तु स्पष्टतः उसे सफलता मिली थी और उसका ऐसा सोचना ग़लत नहीं था कि कुलीनों में उसने अपने लिये जगह बना ली है। ऐसा करने में उसकी दौलत और कुल-ख्याति; लेन-देन के

मामलों से सम्बन्धित और काशिन में एक बहुत सफल बैंक की स्थापना करनेवाले उसके पुराने परिचित द्वारा उसे रहने के लिये दी गयी शानदार इमारत ; गांव से लाया गया बढ़िया बावर्ची ; गवर्नर के साथ दोस्ती, जो उसका सहपाठी रहा था और जिसकी व्रोन्स्की सरपरस्ती भी करता था – इन सब बातों और सबसे ज़्यादा तो इस चीज़ ने उसकी मदद की कि वह सबके साथ सरल और एक जैसा व्यवहार करता था, जिसने बहुत जल्द ही कुलीनों को उसके बारे में यह राय बदलने को मजबूर कर दिया कि वह घमंडी आदमी है। वह ख़ुद यह महसूस करता था कि कीटी श्चेर्बात्स्काया के साथ विवाहित इस सनकी महानुभाव को छोड़कर, जिसने à propos de bottes* बौखलाते हुए बहुत-सी ऊट-पटांग बातें कही थीं, हर कुलीन, जिससे भी उसका परिचय हुआ था, उसका समर्थक बन गया था। उससे यह छिपा नहीं था और दूसरे भी इसे स्वीकार करते थे कि नेवेदोव्स्की की सफलता में उसका बड़ा हाथ है। अब अपने यहां, चुनाव में नेवेदोव्स्की की जीत का समारोह मनाते हुए वह अपने उम्मीदवार की सफलता की ख़ुशी महसूस कर रहा था। ख़ुद चुनाव भी उसे इतने अच्छे लगे थे कि अगर अगले तीन सालों में आन्ना के साथ उसकी शादी हो गयी, तो स्वयं भी इस पद के लिये चुनाव लड़ेगा। यह तो वैसे ही था जैसे घुड़दौड़ में जाकी के द्वारा इनाम जीतने पर वह ख़ुद घुड़दौड़ में हिस्सा लेने को लालायित हो उठा था।

इस वक़्त तो जाकी की जीत की ख़ुशी मनायी जा रही थी। व्रोन्स्की मेज़ के सिरे पर बैठा था और जवान गवर्नर, जो सम्राट के अनुगामी-दल का जनरल था, उसके दायीं ओर विराजमान था। बाक़ी सभी लोगों के लिये वह गुबेर्निया का स्वामी था, जिसने समारोही ढंग से चुनावों का उद्घाटन किया था, भाषणा दिया था, जो लोगों के दिलों में आदर का, और जैसा कि व्रोन्स्की ने देखा, बहुतों के दिलों में चापलूसी का भाव पैदा करता था, मगर यही गवर्नर व्रोन्स्की के लिये "मिस मास्लोव" था, जैसा कि उसे शाही सैनिक स्कूल में पुकारा जाता था, वह व्रोन्स्की के सामने झेंप महसूस कर रहा था और व्रोन्स्की उसे mettre à son aise** का प्रयास कर रहा था। जवान, दृढ़

* अकारण ही। (फ़्रांसीसी)

** उत्साहित करने। (फ़्रांसीसी)

और ज़हरीले चेहरे वाला नेवेदोव्स्की व्रोन्स्की के बायीं ओर बैठा था। उसके साथ व्रोन्स्की सरलता और आदर से पेश आ रहा था।

स्वियाज्स्की ने ख़ुशमिजाजी से अपनी हार को स्वीकार किया। उसके लिये यह तो हार भी नहीं थी, जैसा कि हाथ में जाम लिये हुए नेवेदोव्स्की को सम्बोधित करके उसने स्वयं कहा – उस नयी धारा का, जिसका कुलीनों को अनुसरण करना चाहिये, बेहतर प्रतिनिधि ढूंढ़ पाना सम्भव नहीं। इसलिये, उसके शब्दों में, हर ईमानदार आदमी आज की विजय का पक्ष-पोषक था और उसकी ख़ुशी मना रहा था।

ओब्लोन्स्की भी ख़ुश था कि ख़ूब मज़े में वक़्त बीता और सब प्रसन्न हैं। बढ़िया खाने की मेज़ पर चुनाव की घटनाओं की चर्चा होती रही। स्वियाज्स्की ने मज़ाक़िया ढंग से भूतपूर्व मुखिया के आंसू भीगे भाषण की नक़ल पेश की और नेवेदोव्स्की को सम्बोधित करते हुए कहा कि हुज़ूर को रक़म की जांच के लिये कोई दूसरा, आंसुओं से ज़्यादा जटिल ढंग चुनना होगा। ठिठोली करनेवाले दूसरे कुलीन ने बताया कि कैसे गुबेर्निया के मुखिया द्वारा बॉल के लिये लम्बे मोज़े पहने हुए बैरों को बुलवाया गया था और अगर अब नया मुखिया ऐसे बाल की व्यवस्था करने का विचार नहीं रखता, तो लम्बे मोज़े पहने बैरों को वापस भेजना होगा।

खाने के दौरान नेवेदोव्स्की को लगातार "हमारे गुबेर्निया मुखिया" और "हुज़ूर" कहकर सम्बोधित किया जाता रहा।

ऐसे शब्दों का वैसी ही ख़ुशी से इस्तेमाल किया जाता रहा, जैसे जवान औरत को "मदाम" या "श्रीमती" कहकर पति के कुलनाम से सम्बोधित किया जाता है। नेवेदोव्स्की ऐसे ज़ाहिर कर रहा था कि वह मुखिया की इस उपाधि के प्रति केवल उदासीन ही नहीं, बल्कि इसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता है। किन्तु यह स्पष्ट था कि दिल में वह बहुत ख़ुश है और उस उल्लास को दबाने के लिये, जो इस नये, उदारतावादी वातावरण में शोभा न देता, बड़े संयम से काम ले रहा है।

दावत के वक़्त चुनावों के नतीजे में दिलचस्पी रखनेवाले कुछ लोगों को तार भेजे गये। ओब्लोन्स्की ने भी, जो बड़े रंग में था, डौली को इस आशय का तार भेजा – "नेवेदोव्स्की बारह वोटों से

जीत गया। बधाई। औरों को भी बता देना।" उसने यह कहते हुए "उन्हें भी खुश करना चाहिये", ऊंची आवाज़ में तार के शब्द लिखवाये। किन्तु डौली ने तार मिलने पर उस रूबल का ख़्याल करते हुए, जो इसे भेजने के लिये ख़र्च किया गया था, आह भरी और समझ गयी कि दावत के ख़त्म होने के कुछ ही पहले उसने यह तार भिजवाया होगा। वह दावतों की समाप्ति पर "faire jouer le télégraphe*" की स्तीवा की कमज़ोरी से परिचित थी।

बढ़िया भोजन और रूसी सुरा-विक्रेताओं के बजाय सीधे विदेश से मंगवायी गयी शराब की बोतलों समेत हर चीज़ में बड़ी नफ़ासत, सरलता और प्रफुल्लता थी। स्वियाज्स्की ने इस दावत के लिये अपने हमख़्याल, उदार विचारों वाले ऐसे बीस नये सार्वजनिक कार्यकर्त्ता चुने थे, जो विनोदी और शिष्ट थे। हंसी-मज़ाक़ करते हुए नये मुखिया, गवर्नर, बैंक के डायरेक्टर और "हमारे मेहरबान मेज़बान" के लिये जाम पिये गये।

व्रोन्स्की ख़ुश था। किसी प्रान्तीय नगर में उसने ऐसे मधुर रंग-ढंग की आशा नहीं की थी।

दावत की समाप्ति पर ख़ुशी का रंग और भी गाढ़ा हो गया। गवर्नर ने व्रोन्स्की से "सेर्बी भाइयों" की सहायता के लिये उसकी बीवी द्वारा, जो व्रोन्स्की से परिचित होना चाहती थी, आयोजित कन्सर्ट में चलने का अनुरोध किया।

"वहां बॉल भी होगा और तुम हमारी स्थानीय सुन्दरी को भी देखोगे। सचमुच ही बहुत ख़ूबसूरत है वह।"

"Not in my line,*" व्रोन्स्की ने, जिसे अंग्रेज़ी का यह वाक्य पसन्द था, जवाब दिया, किन्तु मुस्कराया और वहां आने का वादा किया।

मेज़ से उठने के पहले, जब सभी ने सिगरेट पीना शुरू कर दिया था, व्रोन्स्की का अर्दली ट्रे में एक ख़त लेकर उसके पास आया।

"विशेष सन्देशवाहक वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव से लेकर आया है," अर्दली ने अर्थपूर्ण भाव के साथ कहा।

---

* तार का दुरुपयोग करने। (फ़्रांसीसी)

** मेरी पसन्द के मुताबिक़ नहीं है। (अंग्रेज़ी)

"कमाल है, सहायक राज-अभियोक्ता स्वेन्तीत्स्की से वह कितना अधिक मिलता-जुलता है," एक मेहमान ने इसी बीच, जब व्रोन्स्की माथे पर बल डालकर पत्र पढ़ रहा था, अर्दली के बारे में फ़्रांसीसी भाषा में कहा।

पत्र आन्ना का था। उसे पढ़ने के पहले ही वह उसका सार समझ गया था। ऐसा मानते हुए कि चुनाव पांच दिनों में समाप्त हो जायेंगे, व्रोन्स्की ने शुक्रवार को घर लौट आने का वचन दिया था। आज शनिवार था और वह जानता था कि पत्र में इस बात के लिये उसे ताना दिया गया होगा कि वह वक़्त पर घर नहीं लौटा। उसने जो पत्र पिछले दिन की शाम को भेजा था, वह शायद अभी तक पहुंचा नहीं था।

व्रोन्स्की ने जैसी आशा की थी, पत्र का विषय तो वही था, किन्तु अभिव्यक्ति का रूप अप्रत्याशित था, जो उसे विशेषतः अप्रिय लगा। "आनी बहुत बीमार है, डाक्टर का कहना है कि निमोनिया हो सकता है। मेरी अकेली की तो अक़्ल कुछ काम नहीं करती। प्रिंसेस वर्वारा मदद करने के बजाय बाधा डालती है। मैं तुम्हारा परसों और कल इन्तज़ार करती रही और अब यह मालूम करने के लिये आदमी को भेज रही हूं कि तुम कहां हो और क्या कर रहे हो। मैं ख़ुद आना चाहती थी, मगर यह सोचकर इरादा बदल दिया कि तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। जवाब में कुछ लिखो, ताकि मुझे यह पता चले कि मैं क्या करूं।"

बच्ची बीमार है और वह ख़ुद आना चाहती थी। बच्ची बीमार और वह ऐसे खिंचे हुए अन्दाज़ में पत्र लिख रही है।

चुनाव का यह सरल मनोरंजन और वह बोझिल तथा उदासी भरा प्रेम, जिसके पास उसे लौटना था, इन दोनों चीज़ों के पारस्परिक विपर्य ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया। किन्तु लौटना ज़रूरी था और वह रात की पहली ही गाड़ी से वापस चला गया।

(३२)

व्रोन्स्की के चुनाव के लिये जाने के पहले आन्ना ने ऐसा महसूस किया था कि उसके कहीं भी जाने की बात को लेकर उनके बीच हर बार जो झगड़ा होता है, इससे उनके सम्बन्धों में और परायापन ही आता है। इसलिये उसने उसे अपने साथ बांधे न रखकर अपने को वश

में रखने और उसके साथ अपनी जुदाई को शान्त मन से सहन करने का निर्णय किया। किन्तु अपने जाने की घोषणा करते समय व्रोन्स्की ने जिस कठोर दृष्टि से आन्ना की ओर देखा, उससे उसके मन को ठेस लगी और व्रोन्स्की के जाने के पहले ही आन्ना के मन का चैन जाता रहा था।

बाद में, अकेलेपन में इस दृष्टि पर विचार करते हुए, जिसने उसके स्वतन्त्रता-अधिकार को व्यक्त किया, उसे सदा की भांति अपनी तिरस्कारपूर्ण स्थिति की ही चेतना हुई। "उसे वह जब और जहां चाहे, जाने का अधिकार है। जाने का ही नहीं, मुझे छोड़ने का भी अधिकार है। उसे सभी अधिकार प्राप्त हैं, मुझे कोई भी नहीं। किन्तु यह जानते हुए उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था। मगर उसने किया क्या है?.. उसने कड़ी नज़र से मेरी तरफ़ देखा। ज़ाहिर है कि यह अस्पष्ट है, अमूर्त्त है, किन्तु पहले तो ऐसा नहीं था और इस नज़र का बहुत कुछ मतलब है," वह सोच रही थी। "यह नज़र दिखा रही है कि प्यार की गर्मी कम होने लगी है।"

आन्ना को बेशक यह यक़ीन हो गया था कि प्यार में भाटा आने लगा है, फिर भी वह कुछ नहीं कर सकती थी, उसके प्रति अपने रवैये को बदलने में असमर्थ थी। पहले की तरह, केवल अपने प्यार और आकर्षण से ही वह उसे वश में रख सकती थी। और पहले की भांति, दिन को व्यस्त रहकर और रात को मोर्फ़िया पीकर वह इस भयानक विचार को, कि अगर उसे उससे प्यार न रहा, तो क्या होगा, दिमाग़ से दूर रख पाती थी। हां, एक अन्य उपाय भी था – उसे अपने साथ बांधे न रखे – इसके लिये वह उसके प्यार के सिवा और कुछ नहीं चाहती थी – बल्कि उसके साथ बंध जाये, ऐसी स्थिति बना ले कि वह उसे छोड़कर न जा सके। इसके लिये उपाय था तलाक़ और शादी। आन्ना मन से ऐसा चाहने लगी और उसने स्तीवा या व्रोन्स्की के कहने पर फ़ौरन अमल करने का इरादा बनाया।

ऐसे विचारों में उसने व्रोन्स्की के बिना पांच दिन, वही पांच दिन बिताये, जब वह घर पर नहीं था।

सैर, प्रिंसेस वर्वारा के साथ बातचीत, अस्पताल का चक्कर लगाने और मुख्यतः तो पढ़ने, एक के बाद एक पुस्तक पढ़ने में उसका वक़्त गुज़रा। किन्तु छठे दिन, जब कोचवान व्रोन्स्की के बिना स्टेशन

से लौट आया, तो उसने अनुभव किया कि किसी तरह भी व्रोन्स्की और वह वहां क्या कर रहा है, इस बात का विचार दिमाग़ से नहीं निकाल सकती। इसी वक़्त उसकी बेटी बीमार हो गयी। आन्ना बेटी की देखभाल करने लगी, किन्तु इससे भी व्रोन्स्की के बारे में न भूल सकी, ख़ास तौर पर इसलिये कि बीमारी ख़तरनाक नहीं थी। बहुत कोशिश करने पर भी वह इस बच्ची को प्यार नहीं कर पायी थी और प्रेम का ढोंग वह कर नहीं सकती थी। इसी दिन शाम के समय अकेली रह जाने पर आन्ना को व्रोन्स्की के लिये ऐसे भय की अनुभूति हुई कि उसने शहर जाने का फ़ैसला कर लिया, किन्तु फिर से अच्छी तरह सोच-विचार करने पर उसने वह असंगतिपूर्ण पत्र लिखा, जो व्रोन्स्की पढ़ चुका था और जिसे दुबारा पढ़े बिना ही उसने सन्देशवाहक के हाथ भेज दिया था। अगली सुबह को उसे व्रोन्स्की का पत्र मिला और अपना ख़त भेजने का अफ़सोस हुआ। वह कांपते दिल से उसी कड़ी नज़र के दोहराये जाने का ख़्याल करती थी, जिससे व्रोन्स्की ने जाते वक़्त उसे देखा था, ख़ास तौर पर जब व्रोन्स्की को यह पता चलेगा कि बच्ची सख़्त बीमार नहीं थी। फिर भी वह ख़ुश थी कि उसने उसे पत्र लिख दिया। आन्ना अब अपने मन में यह स्वीकार कर रही थी कि वह व्रोन्स्की के लिये बोझ बनकर रह गयी है, कि उसके पास लौटने के लिये वह दुखी मन से अपनी आज़ादी को छोड़ेगा मगर इसके बावजूद भी ख़ुश थी कि वह आ जायेगा। बेशक वह उसे बोझ समझे, लेकिन फिर भी उसके साथ यहां हो, ताकि वह उसे देख सके, उसकी हर गतिविधि की उसे जानकारी रहे।

आन्ना दीवानख़ाने में लैम्प के पास बैठी हुई टेन की नयी पुस्तक पढ़ रही थी, उसके कान बाहर अहाते में हवा की आवाज़ों पर लगे हुए थे और वह किसी भी क्षण बग्घी के आने की राह देख रही थी। कई बार उसे लगा कि पहियों की आवाज़ सुनाई दी है, मगर उससे भूल हुई थी। आख़िर उसे पहियों की आवाज़ ही नहीं, कोचवान की हांक और दरवाज़े के सामने छतवाले ओसारे में दबा-घुटा-सा शोर भी सुनाई दिया। ताश के खेल में व्यस्त प्रिंसेस वर्वारा ने भी इसकी पुष्टि की। आन्ना के चेहरे पर लाली दौड़ गयी, किन्तु नीचे जाने के बजाय, जैसा कि उसने पहले दो बार किया था, वहीं ठिठक गयी।

अपने छल-कपट के लिये अचानक उसे शर्म महसूस हुई, लेकिन इससे ज़्यादा तो इस चीज़ का भय अनुभव हुआ कि व्रोन्स्की कैसे उसका अभिवादन करेगा। मन को लगी ठेस की भावना तो समाप्त हो चुकी थी, अब वह केवल उसकी अप्रसन्नता से डर रही थी। उसे याद आया कि बेटी तो दूसरे दिन ही बिल्कुल स्वस्थ हो गयी थी। आन्ना को तो इस बात के लिये उस पर गुस्सा भी आया था कि पत्र भेजते ही वह भली-चंगी हो गयी थी। इसी समय उसे व्रोन्स्की का ध्यान आया कि वह, उसके हाथ और आंखें, वह स्वयं यहां उपस्थित है। आन्ना को उसकी आवाज़ सुनाई दी। और सब कुछ भूलकर ख़ुशी से उमगती हुई वह उससे मिलने के लिये नीचे भाग चली।

"बिटिया कैसी है?" व्रोन्स्की ने आन्ना को नीचे भागी आते देखकर भीरुता से पूछा।

वह कुर्सी पर बैठा था और नौकर उसके गर्म बूटों को खींच कर उतार रहा था।

"वह अब अच्छी है।"

"और तुम?" व्रोन्स्की ने अपने को झटकते हुए प्रश्न किया।

आन्ना ने अपने दोनों हाथों से उसका हाथ थाम लिया और टकटकी बांधकर उसे देखते हुए उसके हाथ को अपनी कमर की ओर ले गयी।

"तो मैं बहुत ख़ुश हूं," व्रोन्स्की ने आन्ना, उसके केश-शृंगार और फ़्राक को, जो उसे मालूम था कि आन्ना ने उसी के लिये पहना था, ग़ौर से देखते हुए रुखाई से कहा।

यह सब कुछ व्रोन्स्की को अच्छा लगता था, मगर कितनी बार अच्छा लग चुका था! और वही कठोरता तथा जड़ता का भाव, जिससे वह इतना अधिक डरती थी, व्रोन्स्की के चेहरे पर जमकर रह गया।

"तो मैं बहुत ख़ुश हूं। और तुम तो स्वस्थ हो न?" रूमाल से अपनी गीली दाढ़ी को पोंछते और आन्ना का हाथ चूमते हुए उसने कहा।

"कोई बात नहीं," आन्ना सोच रही थी, "बस उसे यहां होना चाहिये और जब वह यहां होता है, तो मुझे प्यार किये बिना रह ही नहीं सकता, ऐसी हिम्मत ही नहीं कर सकता।"

शाम हंसी-ख़ुशी के सुखद-मधुर वातावरण में बीत गयी। प्रिंसेस

वर्वारा भी उपस्थित रही और उसने यह शिकायत की कि व्रोन्स्की की ग़ैरहाज़िरी में आन्ना मोर्फ़िया पीती रही है।

"तो क्या करती? मुझे नींद नहीं आती थी... सभी तरह के विचार बाधा डालते थे। उसके यहां होने पर मैं कभी मोर्फ़िया नहीं पीती हूं। लगभग कभी नहीं।"

व्रोन्स्की ने चुनाव के बारे में बताया और आन्ना ने प्रश्न करके उससे वह कहलवाया, जिससे उसे सबसे ज़्यादा ख़ुशी मिलती थी यानी उसे ख़ुद कितनी सफलता मिली। आन्ना ने व्रोन्स्की को घर से सम्बन्धित उसकी दिलचस्पी की सभी बातों के बारे में बताया। उसके सारे समाचार बहुत ही सुखद थे।

किन्तु रात को देर से, जब वे दोनों अकेले रह गये और आन्ना ने यह अनुभव किया कि उसने व्रोन्स्की को पूरी तरह फिर से अपने वश में कर लिया है, यह चाहा कि पत्र के लिये उसकी कठोर दृष्टि के प्रभाव को दूर करे। आन्ना ने कहा –

"यह मान लो कि मेरा पत्र पाकर तुम्हें बुरा लगा और तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया?"

यह कहते ही वह समझ गयी कि इस समय व्रोन्स्की उसके प्रति चाहे कितना ही स्नेहशील क्यों न हो, उसने उस पत्र के लिये उसे क्षमा नहीं किया है।

"हां," व्रोन्स्की ने जवाब दिया। "पत्र बड़ा अजीब-सा था। बिटिया बीमार थी और तुम ख़ुद आना चाहती थीं।"

"यह सब कुछ सच था।"

"मुझे इसमें सन्देह नहीं।"

"नहीं, तुम्हें सन्देह है। मैं देख रही हूं कि तुम नाराज़ हो।"

"ज़रा भी नहीं। अगर मैं नाराज़ हूं तो इसलिये कि तुम यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हो कि कुछ कर्त्तव्य भी होते हैं..."

"कन्सर्ट जाने के कर्त्तव्य..."

"हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे," व्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

"क्यों चर्चा नहीं करेंगे?" आन्ना ने कहा।

"मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूं कि कुछ ज़रूरी काम भी हो सकते हैं। अब मुझे मकान के सिलसिले में मास्को जाना होगा... आह,

आन्ना, तुम ऐसी चिड़चिड़ी क्यों हो गयीं? क्या तुम नहीं जानतीं कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता?"

"अगर ऐसा है," आन्ना ने अचानक अपना स्वर बदलते हुए कहा, "तो इसका यही मतलब है कि यह जीवन तुम्हारे लिये बोझिल हो गया है... तुम एक दिन के लिये आओगे और फिर चले जाओगे, जैसे कि..."

"आन्ना, यह क्रूरता है। मैं तो पूरा जीवन ही देने को तैयार हूं..."

किन्तु आन्ना ने उसकी बात पर कान नहीं दिया।

"अगर तुम मास्को जाओगे, तो मैं भी जाऊंगी। मैं यहां नहीं रहूंगी। या तो हमें अलग हो जाना चाहिये या फिर हम साथ रहेंगे।"

"तुम जानती हो कि मेरी यही एकमात्र इच्छा है। किन्तु इसके लिये..."

"मुझे तलाक़ लेना होगा? मैं उसे ख़त लिख दूंगी। मैं देख रही हूं कि ऐसे नहीं जी सकती... किन्तु मास्को मैं तुम्हारे साथ चल रही हूं।"

"तुम तो जैसे मुझे धमकी दे रही हो। हमेशा तुम्हारे साथ रहूं, इससे अधिक मैं और कुछ चाहता ही नहीं," व्रोन्स्की ने मुस्कराकर कहा।

किन्तु व्रोन्स्की ने जब ये कोमल शब्द कहे, तो उसकी नज़र में रुखाई ही नहीं, बल्कि एक संतप्त और बुरी तरह से झल्लाये हुए व्यक्ति की कौंध भी थी।

आन्ना ने व्रोन्स्की की इस नज़र को देखा और इसका सही अर्थ समझ गयी।

"अगर ऐसी बात है, तो समझो कि बुरे दिन आ गये," व्रोन्स्की की नज़र यही कह रही थी। यह क्षणिक छाप थी, किन्तु आन्ना इसे कभी नहीं भूल सकी।

आन्ना ने पति को पत्र लिखा और तलाक़ देने का अनुरोध किया। नवम्बर के अन्त में, प्रिंसेस वर्वारा को विदा करके, जिसे पीटर्सबर्ग जाना था, वह व्रोन्स्की के साथ मास्को चली गयी। हर दिन कारेनिन से उत्तर पाने और उसके बाद तलाक़ देने की प्रतीक्षा करते हुए वे दम्पति की भांति एक साथ रहने लगे।

सातवां भाग

(१)

लेविन दम्पति को मास्को आये तीन महीने हो गये थे। वह अवधि कभी की समाप्त हो चुकी थी, जब इस विषय के जानकार लोगों के बहुत विश्वसनीय अनुमानों के अनुसार कीटी को बच्चे को जन्म दे देना चाहिये था। किन्तु उसने अभी तक ऐसा नहीं किया था और इस बात का कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहा था कि वह समय उससे कहीं अधिक निकट आ गया है, जितना दो महीने पहले था। डाक्टर, दाई, डौली, कीटी की मां और विशेषतः लेविन, जो अत्यधिक भयभीत हुए बिना निकट भविष्य में घटनेवाली इस घटना के बारे में सोच नहीं सकता था, सभी लोग बेसब्री और बेचैनी महसूस करने लगे। केवल कीटी ही सर्वथा शान्त और सुखी थी।

वह भावी, और उसके लिये कुछ हद तक तो विद्यमान बच्चे के प्रति अपने भीतर पैदा होनेवाली प्यार की नई भावना को अब स्पष्ट रूप से अनुभव करने लगी थी और सहर्ष इस भावना से आनन्दित होती थी। बच्चा अब पूरी तरह उसका ही अंग नहीं था और कभी-कभी तो उससे स्वतन्त्र अपना जीवन जीता था। उसे इस कारण अब अक्सर दर्द होता, मगर साथ ही एक अजीब, नई ख़ुशी से उसका हंसने को भी मन होता।

कीटी जिन्हें चाहती थी, वे सभी उसके निकट थे, सभी उसके प्रति इतने अधिक दयालु थे, उसकी इतनी अधिक चिन्ता करते थे,

उसे अपने इर्द-गिर्द सभी कुछ इतना मधुर लग रहा था कि अगर उसे यह मालूम न होता और वह यह अनुभव न करती कि इस सबका शीघ्र ही अन्त हो जायेगा, तो वह इससे बेहतर और अधिक सुखद जीवन की कामना ही न करती। ऐसे जीवन के माधुर्य को यदि कोई चीज़ ख़राब क़रती थी तो वह यही कि अपने पति को वह जिस रूप में प्यार करती थी और जैसा वह गांव में होता था, यहां वैसा नहीं था।

कीटी को गांव में उसका शान्त, स्नेह और आतिथ्यपूर्ण ढंग अच्छा लगता था। शहर में वह हमेशा बेचैन और चौकन्ना-सा प्रतीत होता, मानो डरता हो कि कोई उसका, ख़ास तौर पर कीटी का दिल न दुखा दे। वहां, गांव में, स्पष्टतः अपने को सही जगह पर महसूस करते हुए वह कहीं जाने की उतावली में नहीं होता था और हमेशा ही व्यस्त रहता था। यहां, शहर में, वह हमेशा उतावली में रहता था मानो कोई चीज़ हाथ से न निकल जाये और उसके करने को कुछ होता नहीं था। कीटी को लेविन पर तरस आता। वह जानती थी कि दूसरों के लिये वह दयनीय नहीं था। बात उसके उलट थी और सोसाइटी में जब वह उसकी ओर एक पराये व्यक्ति की भांति यह जानने की कोशिश करते हुए देखती कि वह दूसरों पर कैसा प्रभाव डालता है, तो कुछ ईर्ष्या करते हुए यह अनुभव करती कि लेविन न केवल दयनीय नहीं, बल्कि अपने उचित रंग-ढंग, नारियों के प्रति कुछ-कुछ पुराने अन्दाज़ की लज्जापूर्ण शिष्टता, अपने हृष्ट-पुष्ट शरीर और विशेषतः जैसा कि उसे लगा, अभिव्यक्तिपूर्ण चेहरे के कारण बहुत मनमोहक भी है। किन्तु कीटी बाहर से नहीं, भीतर से, उसकी आत्मा में पैठकर उसे देख रही थी। वह देख रही थी कि यहां वह अपने असली रंग में नहीं, वह उसकी स्थिति का किसी और तरह वर्णन ही न कर पाती। कभी-कभी वह मन ही मन लेविन की इसलिये भर्त्सना करती कि वह शहर में जीना नहीं जानता, कभी-कभी इस बात को स्वीकार करती कि उसके लिये सचमुच ही यहां अपने जीवन को इस तरह व्यवस्थित करना कठिन था कि उससे उसे कोई सन्तोष मिलता।

वैसे देखा जाये, तो वह यहां करता भी क्या? ताश खेलना उसे पसन्द नहीं था। क्लब वह जाता नहीं था। ओब्लोन्स्की जैसे मस्त-मौजी लोगों के साथ घुले-मिले – कीटी अब जानती थी कि इसका क्या

मतलब है... इसका मतलब था पिलाई और उसके बाद कहीं जाना। ऐसी स्थितियों में मर्द लोग कहां जाते हैं, इसका ध्यान आते ही कीटी का दिल कांप उठता। वह सोसाइटी में जाये? किन्तु कीटी जानती थी कि इसके लिये उसे जवान औरतों की संगत में ख़ुशी हासिल करनी चाहिये और ऐसा वह चाह नहीं सकती थी। वह घर में उसके पास, उसकी मां और बहनों के पास बैठा रहे? किन्तु वह जानती थी कि बहनों के बीच होनेवाली हर दिन की बातें, जिन्हें कीटी के पिता, बूढ़े प्रिंस "अलीनी-नादीनी" कहते थे, उसके लिये चाहे कितनी ही सुखद और प्रिय क्यों न हों, लेविन को ज़रूर उनसे ऊब महसूस होती होगी। तो फिर वह क्या करे? अपनी किताब लिखता रहे? उसने ऐसा करने की कोशिश की और शुरू में अपनी पुस्तक के लिये कुछ टिप्पणियां और टीकायें लिखने की ख़ातिर पुस्तकालय में जाता भी रहा, किन्तु, जैसा कि वह कीटी से कहता रहता था, जितना अधिक मैं कुछ नहीं करता, मेरे पास उतना ही कम समय बच रहता है। इसके अलावा वह उससे यह भी शिकायत करता कि यहां उसने अपनी पुस्तक की बहुत अधिक चर्चा की है और इसलिये उसके बारे में उसके सभी विचार उलझ-उलझा गये हैं और उसमें उसकी दिलचस्पी जाती रही है।

इस शहरी जीवन का एक लाभ ज़रूर था कि यहां, शहर में, उनके बीच झगड़ा कभी नहीं हुआ था। हो सकता है कि ऐसा इसलिये था कि शहरी जीवन की परिस्थितियां भिन्न थीं या फिर इसलिये कि वे दोनों इस सिलसिले में सावधान और समझदार हो गये थे, मास्को में शक या ईर्ष्या को लेकर झगड़ा नहीं हुआ था, जिसकी शहर आते समय उन्हें बड़ी शंका थी।

इस सम्बन्ध में इन दोनों के लिये बहुत ही अधिक महत्त्व रखनेवाली एक घटना भी घटी, यानी कीटी की व्रोन्स्की से भेंट हुई।

कीटी की धर्म-माता, बूढ़ी प्रिंसेस मारीया बोरीसोव्ना ने, जो कीटी को हमेशा ही बहुत प्यार करती थी, उससे अवश्य ही मिलने की इच्छा प्रकट की। अपनी स्थिति के कारण कीटी कहीं नहीं जाती थी, किन्तु इस सम्माननीय बुढ़िया के यहां अपने पिता के साथ गयी और वहां व्रोन्स्की से उसकी भेंट हुई।

इस भेंट के सिलसिले में कीटी अगर किसी बात के लिये अपनी भर्त्सना कर सकती थी, तो केवल इस कारण कि जब उसने ग़ैरफ़ौजी पोशाक में कभी अपने बहुत ही सुपरिचित नाक-नक़्शे को पहचाना, तो कुछ देर को सांस लेना भूल गयी, ख़ून तेज़ी से दिल की तरफ़ दौड़ चला और, जैसा कि उसने अनुभव किया, चेहरे पर सुर्ख़ी आ गयी। किन्तु केवल कुछ क्षण तक ही ऐसा हुआ। उसके पिता ने, जो जान-बूझकर व्रोन्स्की से ऊंचे-ऊंचे बात कर रहे थे, अभी अपनी बात ख़त्म भी नहीं की थी, कि वह व्रोन्स्की से नज़र मिलाने, वैसे ही बात करने को तैयार हो गयी थी जैसे प्रिंसेस मारीया बोरीसोव्ना से। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वह इस तरह से ऐसा करने को तैयार हो गयी थी कि उसका हर अन्दाज़ और हर मुस्कान उसके पति द्वारा अनुमोदित होती, जिसकी अदृश्य उपस्थिति को वह इस समय अपने सामने अनुभव कर रही थी।

कीटी ने व्रोन्स्की के साथ कुछ बातचीत की, यहां तक कि चुनाव के बारे में उसके मज़ाक़ पर, जिसे उसने "हमारा पार्लमेंट" कहा, मुस्करायी भी। (यह दिखाने के लिये कि वह मज़ाक़ का मतलब समझ गयी है, मुस्कराना ज़रूरी था।) किन्तु उसी क्षण उसने प्रिंसेस मारीया बोरीसोव्ना की ओर मुंह कर लिया और व्रोन्स्की के विदा लेने के लिये उठने के समय तक एक बार भी उसकी तरफ़ नहीं देखा। इस समय तो उसने व्रोन्स्की की तरफ़ देखा, किन्तु स्पष्टतः केवल इसलिये कि जब कोई व्यक्ति विदा लेने के लिये सिर झुका रहा हो, तो उसकी तरफ़ न देखना अशिष्टता का लक्षण माना जाता है।

कीटी अपने पिता के प्रति कृतज्ञ थी कि उन्होंने व्रोन्स्की से हुई भेंट के बारे में उससे कुछ भी नहीं कहा। किन्तु घर लौटने पर हर दिन की सैर के समय पिता के विशेष स्नेह-प्रदर्शन से वह समझ गयी कि पिता उससे प्रसन्न थे। वह ख़ुद भी अपने से ख़ुश थी। उसे तनिक भी यह आशा नहीं थी कि वह व्रोन्स्की के प्रति अपनी पहले की भावनाओं की सारी स्मृतियों को आत्मा की गहराई में दबाये रखने की शक्ति पा सकेगी और केवल प्रतीत होने के लिये नहीं, बल्कि वास्तव में उसके प्रति उदासीन और शान्त रह सकेगी।

कीटी ने जब लेविन को यह बताया कि प्रिंसेस मारीया बोरीसोव्ना

के यहां व्रोन्स्की से उसकी भेंट हुई, तो वह कीटी से अधिक लज्जारुण हुआ। वह बड़ी मुश्किल से ही उससे यह कह पायी थी, किन्तु भेंट की तफ़सीलों की चर्चा करते जाना उसके लिये और भी कठिन था, क्योंकि लेविन उससे कुछ भी पूछ नहीं रहा था और सिर्फ़ माथे पर बल डालकर उसकी ओर देखता जा रहा था।

"मुझे इस बात का बड़ा अफ़सोस है कि तुम वहां नहीं थे," कीटी ने कहा। "मेरा मतलब यह नहीं कि उसी कमरे में... तुम्हारी उपस्थिति में मैं इतनी स्वाभाविक न रह पाती... मैं इस समय कहीं अधिक, कहीं-कहीं अधिक झेंप महसूस कर रही हूं," कीटी ने आंखों के डबडबा आने तक झेंपते हुए कहा। "पर तुम किसी सेंध में से यह देख सकते।"

सच्चाई की झलक देनेवाली कीटी की आंखों ने लेविन को यह बता दिया कि कीटी अपने व्यवहार से ख़ुश है और इस चीज़ के बावजूद कि झेंप के कारण कीटी के गालों पर लाली दौड़ रही थी, वह फ़ौरन शान्त हो गया और उससे पूछ-ताछ करने लगा। कीटी यही तो चाहती थी। जब उसे सब कुछ, यह तफ़सील तक मालूम हो गयी कि केवल पहले क्षण में ही वह झेंपे बिना नहीं रह सकी थी, मगर बाद में उसने अपने को वैसा ही स्वाभाविक और सामान्य अनुभव किया था, जैसा कि किसी भी अन्य व्यक्ति के मामले में होता, तो लेविन पूरी तरह खिल उठा और बोला कि अब वह ऐसी बेहूदा हरकत नहीं करेगा, जैसी उसने चुनाव के समय की थी और पहली भेंट होने पर ही व्रोन्स्की के साथ यथासम्भव मैत्रीपूर्ण व्यवहार करेगा।

"यह सोचकर बहुत व्यथा होती है कि एक व्यक्ति लगभग तुम्हारा दुश्मन है और उससे मिलने से जी कतराता है," लेविन ने कहा। "मैं बहुत, बहुत ख़ुश हूं।"

(२)

"कृपया बोल्ल दम्पति के यहां हो आओ," कीटी ने अपने पति से कहा, जब वह घर से बाहर जाने के पहले उसके कमरे में आया। "मुझे मालूम है कि शाम का खाना तुम क्लब में खाओगे, पापा ने

इसके लिये तुम्हारा नाम लिखवा दिया है। मगर अभी, सुबह को तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं सिर्फ़ कातावासोव के यहां जा रहा हूं," लेविन ने उत्तर दिया।

"इतनी जल्दी क्यों जा रहे हो?"

"उसने मेत्रोव से मेरा परिचय कराने का वादा किया है। मैं मेत्रोव के साथ अपनी किताब के बारे में बातचीत करना चाहता हूं। मेत्रोव पीटर्सबर्ग का विख्यात विद्वान है," लेविन ने कहा।

"तो वह इसी का लेख था, तुम जिसकी इतनी प्रशंसा कर रहे थे? और इसके बाद क्या करोगे?" कीटी ने पूछा।

"हो सकता है कि बहन के मामले के सिलसिले में अदालत हो आऊं।"

"और कन्सर्ट?" कीटी ने जानना चाहा।

"मैं अकेला वहां जाकर क्या करूंगा!"

"नहीं, ज़रूर जाओ। वहां कुछ नयी रचनायें पेश की जा रही हैं... ऐसी रचनाओं में तुम इतनी दिलचस्पी लिया करते थे। मैं तो ज़रूर ही गयी होती।"

"ख़ैर, मैं शाम के भोजन के पहले घर अवश्य आऊंगा," घड़ी पर नज़र डालते हुए लेविन ने कहा।

"फ़्राक-कोट पहन लो ताकि सीधे काउंटेस बोल्ल के यहां हो आओ।"

"क्या ऐसा करना बिल्कुल ज़रूरी है?"

"बिल्कुल! वह तो हमारे यहां आया था। तुम्हें इसमें क्या परेशानी है? वहां जाना, पांच मिनट बैठना, मौसम की चर्चा करना और फिर उठकर बाहर आ जाना।"

"तुम यक़ीन नहीं करोगी कि मैं इस चीज़ का बिल्कुल आदी नहीं रहा और ऐसा करते हुए मुझे शर्म आती है। यह भी कोई बात हुई? एक पराया आदमी आया, बैठ गया, किसी काम-काज के बिना बैठा रहा, उनके काम में ख़लल डाला, अपना मूड ख़राब किया और चला गया।"

कीटी हंस पड़ी।

"लेकिन शादी के पहले तो तुम लोगों के यहां उनसे ऐसे मिलने-जुलने जाया करते थे?" वह बोली।

"जाया करता था, मगर हमेशा शर्म आती थी और अब तो इसकी बिल्कुल आदत नहीं रही। क़सम खाकर कहता हूं कि वहां इस तरह जाने के बजाय दो दिन तक भूखे रहना ज़्यादा अच्छा समझूंगा। इतनी अधिक शर्म आती है मुझे! लगता है कि वे बुरा मानेंगे, सोचेंगे – किसी काम के बिना किसलिये आया था?"

"नहीं, बुरा नहीं मानेंगे। इसकी ज़िम्मेदारी मैं लेती हूं," कीटी ने हंसकर कहा। उसने लेविन का हाथ अपने हाथ में ले लिया। "तो जाओ... कृपया उनके यहां हो आना।"

पत्नी का हाथ चूमकर लेविन जाने ही को था कि कीटी ने उसे रोक लिया।

"कोस्त्या, मेरे पास तो सिर्फ़ पचास रूबल रह गये हैं।"

"तो क्या हुआ, मैं बैंक से और लेता आऊंगा। कितने लाऊं?" लेविन ने अप्रसन्नता का वही भाव चेहरे पर लाते हुए पूछा, जिससे कीटी भली भांति परिचित थी।

"नहीं, तुम ज़रा रुको।" उसने लेविन का हाथ पकड़कर उसे रोक लिया। "इसके बारे में तनिक बात कर लें, मुझे इस वजह से परेशानी होती रहती है। मुझे लगता है कि मैं तो कहीं कोई फ़ालतू ख़र्च नहीं करती हूं, मगर फिर भी पैसे मानो उड़ते जाते हैं। शायद हम ढंग से ख़र्च नहीं करते।"

"नहीं, बिल्कुल ऐसा नहीं है," उसने खांसते और भौंहें चढ़ाकर उसकी ओर देखते हुए कहा।

कीटी उसकी इस खांसी से परिचित थी। यह उसकी बड़ी अप्रसन्नता की परिचायक थी, कीटी के प्रति नहीं, स्वयं अपने प्रति। वह सचमुच अप्रसन्न था, किन्तु इस कारण नहीं कि पैसे बहुत अधिक ख़र्च हो गये थे, बल्कि इसलिये कि उसे वह बात याद दिलायी जा रही थी, जिसे, यह जानते हुए कि कहीं कोई गड़बड़ है, वह भूल जाना चाहता था।

"मैंने सोकोलोव से गेहूं बेचने और चक्की के लिये पेशगी लेने को कह दिया है। कुछ भी हो, पैसे आ ही जायेंगे।"

"नहीं, मुझे यह डर है कि वैसे ही कुछ अधिक ख़र्च..."

"नहीं, बिल्कुल नहीं," लेविन ने अपने शब्द दोहराये। "तो मैं चल दिया, मेरी प्यारी।"

"नहीं, मुझे तो सचमुच कभी-कभी यह अफ़सोस होने लगता है कि मैंने मां की बात मान ली। गांव में कितना अच्छा रहता! यहां मैंने आप सबको परेशान कर डाला और ख़र्च भी हमें कितना अधिक ..."

"नहीं, बिल्कुल नहीं। जब से मैंने शादी की है, तब से एक बार भी तो मैंने ऐसा नहीं सोचा कि जैसा है, उससे कुछ बेहतर हो सकता था ..."

"सच?" लेविन की आंखों में झांकते हुए कीटी ने पूछा।

लेविन ने कुछ सोचे बिना केवल उसे तसल्ली देने के लिये उक्त शब्द कह दिये थे। किन्तु जब उसने उस पर नज़र डाली और यह देखा कि उसकी प्यारी और निश्छल आंखें प्रश्न करती हुई टकटकी बांध कर उसे देख रही हैं, तो उसने सच्चे दिल से वही शब्द दोहरा दिये। "मैं तो इसे बिल्कुल ही भूल जाता हूं," उसने सोचा। और उसे उस बात की याद आ गयी, जिसकी उन्हें निकट भविष्य में प्रत्याशा थी।

"जल्दी ही हो जायेगा न? तुम्हारी तबियत कैसी है?" कीटी के दोनों हाथ अपने हाथ में लेते हुए वह फुसफुसाया।

"मैं इतनी अधिक बार सोच चुकी हूं कि अब कुछ भी नहीं सोचती और कुछ भी नहीं जानती।"

"और डर नहीं लगता?"

कीटी तिरस्कारपूर्वक मुस्करा दी।

"ज़रा भी नहीं," उसने जवाब दिया।

"अगर कोई ऐसी ज़रूरत हो जाये, तो मुझे कातावासोव के यहां से बुलवा लेना।"

"नहीं, कोई ज़रूरत नहीं होगी और तुम ऐसा कुछ सोचना ही नहीं। मैं पापा के साथ छायादार सड़क पर घूमने जाऊंगी। हम डौली के यहां भी जायेंगे। शाम के खाने के पहले तुम्हारी राह देखूंगी। अरे, हां! जानते हो कि डौली की स्थिति तो बिल्कुल असम्भव होती जा रही है? वह बुरी तरह क़र्ज़ से दबी हुई है और उसके पास पैसे बिल्कुल नहीं हैं। कल हमने मां और अर्सेनी (अपनी बहन ल्वोवा के पति को वह ऐसे ही बुलाती थी) से बात की थी और यह तय किया कि तुम

और अर्सेनी मिलकर स्तीवा की अक़्ल ठिकाने करो। अब और बर्दाश्त नहीं हो सकता। पापा से इसकी चर्चा नहीं की जा सकती... अगर तुम दोनों..."

"लेकिन हम कर ही क्या सकते हैं?" लेविन ने पूछा।

"ख़ैर, तुम अर्सेनी के पास जाओगे ही, उससे बात करना, वह तुम्हें बतायेगा कि हमने क्या फ़ैसला किया है।"

"अर्सेनी के साथ मैं पहले से ही हर बात पर सहमत हूं। मैं उसके यहां भी जाऊंगा। और हां, अगर कन्सर्ट में गया ही, तो नताली के साथ चला जाऊंगा। तो, मैं चल दिया।"

दरवाज़े पर लेविन के पुराने, शादी के पहले के नौकर कुज़्मा ने, जो अब शहर में उसके घर का काम-काज सम्भालता था, उसे रोककर कहा –

"सुन्दरी (यह बग्घी में बाईं ओर जुतनेवाली गांव से लाई गयी घोड़ी थी) की फिर से नालबन्दी की गयी है, मगर वह अब भी लंगड़ाती है। क्या करने को कहते हैं?"

मास्को आने पर शुरू में तो लेविन गांव से लाये गये अपने घोड़ों में बड़ी दिलचस्पी लेता था। वह चाहता था कि घोड़ा-गाड़ी की समस्या को जितना सम्भव हो, बेहतर और सस्ते ढंग से हल कर डाले। किन्तु तजरबे से पता यह चला कि किराये की बग्घी के मुक़ाबले में अपने घोड़े महंगे पड़ते थे और फिर भी किराये की बग्घी लिये बिना काम नहीं चलता था।

"पशु-चिकित्सक को बुलवा भेजो, शायद कहीं खरोंच या सूजन हो।"

"किन्तु कातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना का बग्घी के बिना कैसे काम चलेगा?" कुज़्मा ने पूछा।

मास्को आने के शुरू के समय की भांति लेविन को अब इस चीज़ से कोई हैरानी नहीं होती थी कि वोज़्द्वीजेन्का से सीव्त्सेव व्राजेक तक, कोई एक-चौथाई वेर्स्ता तय करने के लिये भारी बग्घी में दो तगड़े घोड़े जोतकर बर्फ़ीले कीचड़ में से बग्घी को ले जाने और उसे चार घण्टे तक वहां खड़ी रखने के लिये पांच रूबल ख़र्च करने पड़ते थे। अब उसे यह चीज़ बिल्कुल स्वाभाविक लगती थी।

"हमारी बग्घी के लिये किराये के घोड़ों की जोड़ी मंगवा लो।"

"जो हुक्म।"

शहर की परिस्थितियों की बदौलत इतने सहज और आसान ढंग से उस कठिनाई को तय करके, जिसके लिये गांव में व्यक्तिगत रूप से इतना अधिक श्रम करना और ध्यान देना पड़ता, लेविन बाहर आकर किराये की बग्घी में बैठा और कोचवान से निकीत्स्काया सड़क की ओर चलने को कहा। रास्ते में वह पैसों के बारे में नहीं, बल्कि यह सोच रहा था कि पीटर्सबर्ग से आये समाजशास्त्र के विद्वान से कैसे उसका परिचय होगा और वह उससे अपनी पुस्तक के सम्बन्ध में क्या बातचीत करेगा।

मास्को आने पर शुरू में ही गांव के रहनेवाले लेविन को उन अनुत्पादक, किन्तु अनिवार्य ख़र्चों से आश्चर्य होता था, जिनकी सभी ओर से मांग की जाती थी। किन्तु अब वह ऐसे ख़र्चों का आदी हो गया था। इस सिलसिले में उसके साथ वैसा ही हुआ था, जैसा, कहा जाता है, कि पियक्कड़ों के साथ होता है – पहला जाम गले में अटकता है, दूसरा बाज़ की तरह नीचे उतरता है और तीसरे के बाद वे छोटे-छोटे परिन्दों की तरह गले के नीचे उतरते जाते हैं। लेविन ने जब नौकरों और दरबान की वर्दियां बनवाने के लिये एक सौ रूबल का पहला नोट भुनवाया, तो बरबस उसके मन में यह विचार आये बिना न रह सका कि इन वर्दियों पर (जिनकी किसी को ज़रूरत नहीं है, किन्तु जिनके बारे में उसके ऐसा संकेत करने पर कि इन वर्दियों के बिना काम चल सकता है, कीटी और उसकी मां की हैरानी को ध्यान में रखते हुए जिन्हें बनवाना ज़रूरी था), गर्मियों भर काम करनेवाले दो खेत-मज़दूरों की मजूरी ख़र्च हो जायेगी, यानी यह ख़र्च लगभग तीन सौ दिन का तड़के से देर गये शाम तक दो मज़दूरों के श्रम के बराबर होगा, तो यह नोट उसके गले में अटक-सा गया। किन्तु पारिवारिक भोज के लिये, जिस पर अट्ठाईस रूबल ख़र्च हुए, जब उसने सौ रूबल का दूसरा नोट भुनवाया, तो उसे इतनी अधिक तकलीफ़ नहीं हुई, यद्यपि उस समय भी यह ख़्याल उसके दिमाग़ में आये बिना न रह सका कि अट्ठाईस रूबल जई के लगभग तीस पूलों को काटने, बांधने, मांडने, ओसाने और बोरियों में भरने का मूल्य होता है।

हां, अब भुनवाये जाने वाले नोटों से उसके मन में इस तरह के विचार नहीं आते थे और वे छोटे-छोटे पक्षियों की भांति फुर्र से उड़ जाते थे। पैसों को हासिल करने के लिये जितनी मेहनत की जाती थी, उनके ख़र्च से प्राप्त होनेवाली चीज़ें उतना ही सुख प्रदान करती थीं या नहीं, इस बात का ख़्याल तो कभी का भुलाया जा चुका था। सीधा-सादा हिसाब कि अमुक अनाज को अमुक मूल्य से कम दाम पर नहीं बेचना चाहिये उसने भुला दिया था। रई, जिसे उसने अच्छी क़ीमत पाने के लिये देर तक नहीं बेचा था, उसे भी एक महीना पहले मिलनेवाले मूल्य की तुलना में पचास कोपेक प्रति तोल कम दाम पर बेच दिया। इतना ही नहीं, इस विचार का भी कोई महत्त्व नहीं रहा था कि इतना अधिक ख़र्च होने पर क़र्ज़ लिये बिना पूरे साल तक काम नहीं चलेगा। बस, एक ही बात महत्त्व रखती थी कि चाहे कहीं से भी क्यों न आयें, बैंक में पैसे होने चाहिये, ताकि यह मालूम हो कि अगले दिन मांस कैसे ख़रीदा जायेगा। अब तक ऐसे ही रहा था – बैंक में हमेशा पैसे रहे थे। किन्तु अब बैंक में पैसे नहीं रहे थे और वह नहीं जानता था कि उन्हें कहां से हासिल करे। इसीलिये तो कीटी द्वारा पैसों की याद दिलाने पर वह क्षण भर को खिन्न हो उठा था। किन्तु उसे इस बारे में सोचने की फ़ुरसत नहीं थी। बग्घी में बैठा हुआ वह कातावासोव और उसके यहां मेत्रोव से होनेवाली भेंट के बारे में सोच रहा था।

(३)

इस बार मास्को आने पर लेविन विश्वविद्यालय के दिनों के अपने साथी, प्रोफ़ेसर कातावासोव के साथ, जिससे शादी के बाद उसकी भेंट नहीं हुई थी, फिर घुल-मिल गया था। जीवन-दृष्टिकोण की स्पष्टता और सरलता के कारण लेविन को कातावासोव अच्छा लगता था। लेविन का ख़्याल था कि कातावासोव के जीवन-दृष्टिकोण की स्पष्टता उसकी आत्मा की दरिद्रता का परिणाम थी, जब कि कातावासोव का विचार था कि लेविन के विचारों में तर्क-संगतता का अभाव उसके मस्तिष्क के अपर्याप्त अनुशासन का फल था। किन्तु कातावासोव की स्पष्टता लेविन को अच्छी लगती थी और लेविन के अनुशासनहीन

विचारों की विपुलता कातावासोव को पसन्द थी और उन्हें आपस में मिलना तथा वाद-विवाद करना अच्छा लगता था।

लेविन ने अपने निबन्ध के कुछ अंश कातावासोव को सुनाये और वे उसे पसन्द आये। एक दिन पहले एक सार्वजनिक व्याख्यान के समय लेविन की कातावासोव से भेंट हो गयी और उसने लेविन को बताया कि प्रसिद्ध मेत्रोव, जिसका लेख उसे बहुत अच्छा लगा था, मास्को में है और लेविन के निबन्ध के बारे में उसने मेत्रोव से जो कुछ कहा, उसमें मेत्रोव ने बड़ी दिलचस्पी ज़ाहिर की, कि अगले दिन सुबह के ग्यारह बजे मेत्रोव उसके यहां आयेगा और उसे लेविन से मिलकर बड़ी ख़ुशी होगी।

"यह कहते हुए ख़ुशी हो रही है कि तुम तो सचमुच सुधरते जा रहे हो, मेरे दोस्त," छोटे-से मेहमानख़ाने में लेविन का स्वागत करते हुए कातावासोव ने कहा। "मैंने घण्टी सुनी, तो सोचा – यह नहीं हो सकता कि तुम वक़्त पर आ जाओ... तो मान्टनीग्रो के लोगों के बारे में क्या ख़्याल है? पैदाइशी लड़ाके हैं।"

"क्यों क्या हुआ?" लेविन ने पूछा।

कातावासोव ने थोड़े से शब्दों में उसे युद्ध-सम्बन्धी नवीनतम समाचार बता दिये और अध्ययन-कक्ष में दाख़िल होने पर लेविन का नाटे, तनिक मोटे और बहुत ही प्यारी शक्ल-सूरतवाले व्यक्ति से परिचय करवाया। यह मेत्रोव था। कुछ देर तक राजनीति और इस बात की चर्चा होती रही कि युद्ध की नवीनतम घटनाओं के बारे में पीटर्सबर्ग के उच्च सरकारी हलक़ों की क्या प्रतिक्रिया है। मेत्रोव ने इस सम्बन्ध में विश्वसनीय स्रोत का उल्लेख करते हुए वे शब्द बताये, जो मानो सम्राट और एक मंत्री द्वारा कहे गये थे। कातावासोव ने भी विश्वसनीय स्रोत से यह सुना था कि सम्राट ने बिल्कुल दूसरे ही शब्द कहे थे। लेविन ने ऐसी परिस्थिति की कल्पना करने का प्रयास किया, जिसमें दोनों ही तरह के शब्द कहे जा सकते थे और इस विषय पर बातचीत बन्द हो गयी।

"मेरे इस मित्र ने भूमि के सम्बन्ध में खेत-मजदूर की स्वाभाविक परिस्थितियों के विषय पर पुस्तक लिख डाली है," कातावासोव ने कहा। "मैं इस विषय का विशेषज्ञ नहीं हूं, किन्तु प्रकृतिविज्ञ के नाते

मुझे इसके ये विचार अच्छे लगे हैं कि वह मानवजाति को प्राणिशास्त्र के नियमों के बाहर नहीं मानता, बल्कि, इसके विपरीत, उसे अपने वातावरण पर निर्भर मानता है और इसी निर्भरता में विकास के नियमों की खोज करता है।"

"यह बड़ी दिलचस्प बात है," मेत्रोव ने कहा।

"मैंने तो कृषि पर एक पुस्तक लिखनी आरम्भ की थी, किन्तु कृषि के मुख्य साधन – खेत-मज़दूर – का अध्ययन करते हुए बरबस ही सर्वथा अप्रत्याशित निष्कर्षों पर पहुंच गया," लेविन तनिक घबराहट से लाल होते हुए बोला।

और लेविन सावधानी से, मानो रास्ता टटोलता हुआ अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने लगा। उसे मालूम था कि मेत्रोव ने सामान्य रूप से मान्यताप्राप्त अर्थशास्त्र की शिक्षा के विरुद्ध लेख लिखा है, किन्तु अपने नये विचारों के प्रति वह किस हद तक उसकी सहानुभूति पाने की आशा कर सकता था, उसे यह मालूम नहीं था और विद्वान के शान्त तथा बुद्धिमत्तापूर्ण चेहरे से इसका अनुमान लगाने में असमर्थ था।

"तो किस चीज़ में आपको रूसी खेत-मज़दूर के विशेष लक्षण नज़र आते हैं?" मेत्रोव ने पूछा। "मतलब यह कि एक प्राणी के नाते उसके गुणों में या उन परिस्थितियों में, जिनमें वह काम करता है?"

लेविन ने अनुभव किया कि उक्त प्रश्न में ही ऐसा भाव प्रकट किया गया है, जिससे वह सहमत नहीं था। फिर भी उसने अपना यह विचार व्यक्त करना जारी रखा कि अन्य जातियों की तुलना में रूसी खेत-मज़दूर का भूमि के प्रति सर्वथा भिन्न दृष्टिकोण है। अपनी इस स्थापना को सिद्ध करने के लिये उसने जल्दी से यह भी जोड़ दिया कि उसके मतानुसार रूसी जनता का ऐसा दृष्टिकोण पूरब में ख़ाली पड़े विस्तृत क्षेत्रों को बसाने की ओर उसके दायित्व की चेतना का परिणाम है।

"जनता के दायित्वों के बारे में निष्कर्ष निकालते हुए आसानी से भटका जा सकता है," लेविन को टोकते हुए मेत्रोव ने कहा। "खेत-मज़दूर की स्थिति सदा ही भूमि और पूंजी से उसके सम्बन्ध पर निर्भर रहेगी।"

लेविन को अपना विचार समाप्त कर लेने की सम्भावना दिये

बिना वह यह बताने लगा कि कैसे उसके विचार दूसरों के विचारों से भिन्न थे।

मेत्रोव के विचारों में क्या ख़ास बात थी, लेविन समझ नहीं पाया, क्योंकि उसने समझने की कोशिश नहीं की। उसने अनुभव किया कि अपने लेख के बावजूद, जिसमें उसने अर्थशास्त्रियों की शिक्षा का खण्डन किया था, दूसरों की भांति रूसी खेत-मज़दूर की स्थिति को पूंजी, उजरत और लगान की दृष्टि से ही देखता है। बेशक उसे यह मानना पड़ा कि रूस के पूर्वी, सबसे बड़े भाग में लगान शून्य था, कि रूस की आठ करोड़ आबादी के दस में से नौ लोगों के लिये उजरत का अर्थ किसी भांति अपना पेट भरना था और खेती के आदिमकालीन औज़ारों के अतिरिक्त पूंजी का कोई अस्तित्व नहीं था, फिर भी वह सभी खेत-मज़दूरों को इसी दृष्टि से देखता था, यद्यपि अर्थशास्त्रियों के साथ सहमत नहीं था और उजरत के बारे में उसका अपना कोई सिद्धान्त था, जिसे वह लेविन को स्पष्ट कर रहा था।

लेविन अनिच्छापूर्वक सुन रहा था और शुरू में आपत्ति भी करता रहा। वह चाहता था कि मेत्रोव को बीच में ही रोककर अपना विचार प्रकट करे, जो, उसके मतानुसार, मेत्रोव की और अधिक व्याख्या को अनावश्यक कर देगा। किन्तु बाद में यह विश्वास हो जाने पर कि इस मामले में उनके दृष्टिकोणों में इतना अधिक अन्तर था कि वे कभी भी एक-दूसरे को नहीं समझ पायेंगे; उसने मेत्रोव का विरोध करना बन्द कर दिया और केवल सुनता ही रहा। इस चीज़ के बावजूद कि मेत्रोव जो कुछ कह रहा था, उसमें उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी उसकी बातें सुनते हुए वह कुछ खुशी ज़रूर महसूस कर रहा था। उसके अहंभाव को इस बात से सन्तोष मिल रहा था कि ऐसा विद्वान इतने उत्साह तथा इतने ध्यान से, और इस विषय के संबंध में लेविन के ज्ञान पर इतना भरोसा करते हुए कि कभी-कभी समस्या के पूरे पक्ष पर केवल संकेत ही करता, उसके सम्मुख अपने विचार प्रस्तुत कर रहा था। इसके लिये वह अपनी योग्यता को श्रेय दे रहा था और नहीं जानता था कि मेत्रोव अपने सभी घनिष्ठ लोगों से इस विषय की चर्चा कर चुकने के बाद हर नये व्यक्ति के सामने बड़े चाव से इसकी व्याख्या करता था और आम तौर पर अपनी दिलचस्पी के, अभी तक स्वयं उसे भी अस्पष्ट विषय का सभी के साथ बड़े शौक़ से ज़िक्र करता था।

"हमें देर हो रही है," घड़ी पर नज़र डालते हुए कातावासोव ने मेत्रोव के अपनी व्याख्या समाप्त करते ही कहा।

"आज विज्ञान-प्रेमियों के समाज के अन्तर्गत स्वींतीच की पचासवीं वर्षगांठ मनायी जा रही है," लेविन के प्रश्न के उत्तर में कातावासोव ने बताया। मेत्रोव के साथ हम वहां जानेवाले हैं। मैंने स्वींतीच की प्राणि-शास्त्र-सम्बन्धी रचनाओं की चर्चा करने का वचन दिया है। हमारे साथ चलो, वहां बहुत दिलचस्प रहेगा।"

"हां, सचमुच ही हमारे चलने का समय हो गया है," मेत्रोव ने कहा। "हमारे साथ चलिये और यदि इच्छा हो, तो वहां से मेरे यहां चलेंगे। मैं आपका निबन्ध सुनने को बहुत इच्छुक हूं।"

"नहीं, नहीं, वह तो अभी पूरा ही नहीं हुआ। हां, बैठक में मैं खुशी से चलने को तैयार हूं।"

"तो यह सुना या नहीं? मैंने अपनी अलग रिपोर्ट भेजी है," बग़ल के कमरे में फ़्राक-कोट पहनते हुए कातावासोव ने कहा।

और विश्वविद्यालय के प्रश्न पर बातचीत शुरू हो गयी।

विश्वविद्यालय से सम्बन्धित प्रश्न उस साल के जाड़े में मास्को की एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना बना हुआ था। परिषद के तीन बूढ़े प्रोफ़ेसरों ने युवा प्रोफ़ेसरों के मत को स्वीकार नहीं किया और युवा प्रोफ़ेसरों ने अपना अलग मत प्रकट कर दिया। कुछ के विचारानुसार युवा प्रोफ़ेसरों का यह मत भयानक था और दूसरों की राय में बहुत सरल और न्याय-संगत। इस तरह प्रोफ़ेसरगण दो दलों में बंट गये थे।

कातावासोव जिस दल का समर्थक था, वह अपने विरोधी दल को चुग़लखोरी और छल-कपट का अपराधी ठहराता था और दूसरा दल अपने विरोधियों पर छिछोरपन और प्रतिष्ठा के अनादर का आरोप लगाता था। लेविन का बेशक विश्वविद्यालय से सम्बन्ध नहीं था, फिर भी अपने मास्को आगमन के दौरान वह इस मामले की कई बार चर्चा सुन चुका था, खुद भी कुछ कह चुका था, और इस सम्बन्ध में उसका अपना एक मत बन चुका था। इसलिये जब तक ये तीनों विश्वविद्यालय की पुरानी इमारत तक पहुंचे, सड़क पर जारी रहनेवाली इस बातचीत में वह भी हिस्सा लेता रहा।

बैठक शुरू हो चुकी थी। साधारण मेज़पोश से ढकी हुई मेज़ के

गिर्द छ: व्यक्ति बैठे थे और उनमें से एक पाण्डुलिपि पर झुका हुआ कुछ पढ़ रहा था। कातावासोव और मेत्रोव भी इन लोगों के क़रीब बैठ गये। लेविन ने मेज़ के गिर्द ख़ाली पड़ी हुई कुर्सियों में से एक पर बैठते हुए निकट बैठे एक विद्यार्थी से पूछा कि क्या पढ़ा जा रहा है। विद्यार्थी ने तनिक अप्रसन्नता से लेविन की ओर देखकर जवाब दिया –

"जीवनी।"

यद्यपि वैज्ञानिक स्वींतीच की जीवनी में लेविन की कोई दिलचस्पी नहीं थी, तथापि उसे वह सुननी पड़ी और प्रसिद्ध वैज्ञानिक के जीवन के बारे में उसे कुछ नयी और दिलचस्प जानकारी मिली।

जीवनी के समाप्त होने पर अध्यक्ष ने उसे पढ़नेवाले को धन्यवाद दिया, इस जयन्ती के उपलक्ष्य में कवि मेन्त द्वारा भेजी गयी कविता ख़ुद पढ़कर सुनाई और कवि के प्रति आभार प्रकट किया। इसके बाद कातावासोव ने अपनी ऊंची और चीख़ती-सी आवाज़ में उक्त वैज्ञानिक की रचनाओं पर प्रकाश डालनेवाली अपनी टिप्पणियां पढ़ीं।

कातावासोव के टिप्पणियां पढ़ लेने के बाद लेविन ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली, तो पाया कि दिन के एक से कुछ ऊपर समय हो चुका है। उसे लगा कि कन्सर्ट से पहले वह मेत्रोव को अपना निबन्ध नहीं सुना पायेगा और अब उसे ऐसा करने की इच्छा भी नहीं रही थी। इस बैठक के दौरान भी वह कातावासोव के घर पर मेत्रोव से हुई बातचीत के बारे में सोचता रहा था। उसे अब यह स्पष्ट हो गया था कि शायद मेत्रोव के विचार महत्त्व रखते हैं, किन्तु उसके अपने विचार भी महत्त्व-पूर्ण हैं और ये विचार तभी स्पष्ट हो सकते हैं तथा किसी निष्कर्ष पर पहुंचा सकते हैं, जब दोनों अपने चुने हुए अलग-अलग रास्तों पर बढ़ते जायेंगे और उन दोनों के विचारों के विनिमय से कोई लाभ नहीं होगा। इसलिये मेत्रोव के निमन्त्रण से इन्कार करने का निर्णय करके लेविन बैठक के अन्त में मेत्रोव के पास गया। मेत्रोव ने अध्यक्ष से, जिसके साथ वह राजनीतिक समाचार की चर्चा कर रहा था, लेविन का परिचय करवाया। मेत्रोव ने अध्यक्ष को वही कुछ बताया, जो वह लेविन को बता चुका था और लेविन ने वही टीका-टिप्पणी की, जो वह उसी सुबह को कर चुका था, किन्तु विविधता के लिये उसने अपनी वह नयी राय भी ज़ाहिर कर दी, जो इसी समय उसे सूझ गयी थी।

इसके बाद फिर से विश्वविद्यालय-सम्बन्धी प्रश्न की बात चल पड़ी। चूंकि लेविन यह सब कुछ सुन चुका था, इसलिये उसने झटपट मेत्रोव से इस बात के लिये अफ़सोस ज़ाहिर किया कि उसके निमन्त्रण से लाभ उठाने में असमर्थ है; सिर झुकाकर विदा ली और बग्घी में बैठ कर ल्वोव के यहां चल दिया।

(४)

कीटी की बड़ी बहन नताली के पति ल्वोव का अधिकतर जीवन रूस की दो राजधानियों – मास्को और पीटर्सबर्ग – और विदेशों में बीता था, जहां उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी और जहां वह रूसी दूतावासों में काम करता रहा था।

पिछले वर्ष उसने कूटनीतिक सेवा से अवकाश ले लिया था, कोई कटु बात हो जाने के कारण नहीं (उसका कभी किसी से मन-मुटाव नहीं हुआ था) और मास्को के प्रासाद-सम्बन्धी मन्त्रालय में इसलिये नौकरी कर ली थी कि अपने दो बेटों का अच्छी तरह से पालन-शिक्षण कर सके। ल्वोब बेशक उम्र में लेविन से बड़ा था और इन दोनों के दृष्टिकोणों तथा आदतों में बड़ा अन्तर था, फिर भी इस जाड़े में इन दोनों के बीच बड़ी घनिष्ठता हो गयी थी और वे एक-दूसरे को बहुत चाहने लगे थे।

ल्वोव घर पर था और लेविन सूचना दिये बिना ही उसके कमरे में चला गया।

पेटीवाला घरेलू गाउन और स्वेड के स्लीपर पहने, नीले शीशों का चश्मा चढ़ाये आराम कुर्सी पर बैठा ल्वोव अपने सामने स्टैंड पर रखी किताब पढ़ रहा था और सुन्दर, कुछ दूर हटाये हुए हाथ में अध-जला सिगार थामे था।

तीखे नाक-नक़्शेवाला उसका अभी तक जवान चेहरा, जिसे चमकते हुए घुंघराले, रुपहले केश और भी अधिक अभिजातीय सौम्यता प्रदान कर रहे थे, लेविन को देखकर खिल उठा।

"बहुत ख़ूब! और मैं तो किसी को आपके पास भेजनेवाला था। कीटी कैसी है? यहां बैठिये, यहां ज़्यादा आरामदेह है..." वह उठा और उसने झूलनेवाली आराम कुर्सी लेविन की तरफ़ बढ़ा दी। "*Journal*

de St.-Pètersbourg में नवीनतम परिपत्र पढ़ा? मुझे वह बहुत अच्छा लगा है," उसने कुछ फ़ांसीसी लहजे से कहा।

पीटर्सबर्ग में जो कुछ कहा जा रहा था, लेविन ने कातावासोव से उसके बारे में जो सुना था, वह बताया और राजनीति की थोड़ी चर्चा के बाद मेत्रोव से अपने परिचय और परिषद में भाग लेने का उल्लेख किया। ल्वोव ने इन बातों में बड़ी दिलचस्पी ली।

"मुझे आपसे ईर्ष्या होती है कि आप विद्वानों की इस दुनिया में जा सकते हैं," उसने कहा। और इतना कहकर फ़्रांसीसी में बोलने लगा, जो उसके लिये अधिक सुविधाजनक थी। "यह सच है कि मेरे पास वक़्त ही नहीं है। मेरी नौकरी और बच्चों के साथ मेरी व्यस्तता मुझे ऐसी सम्भावना से वंचित करती हैं और फिर यह कहते हुए मुझे कोई संकोच नहीं होगा कि मेरी शिक्षा बहुत नाकाफ़ी है।"

"मेरा ऐसा ख़्याल नहीं है," लेविन ने मुस्कराकर कहा और हमेशा की भांति अपने बारे में उसकी राय से विह्वल हो उठा, जिसे वह ऐसा दिखाई देने अथवा नम्र होने के लिये नहीं, बल्कि सच्चे दिल से व्यक्त करता था।

"लेकिन ऐसा ही है! मैं अब महसूस करता हूं कि कितना कम पढ़ा-लिखा हूं। मुझे तो बच्चों की शिक्षा के लिये बहुत-सी बातों को अपनी स्मृति में ताज़ा करना और वास्तव में सीखना पड़ता है। कारण कि अध्यापकों का होना ही काफ़ी नहीं, उनकी निगरानी करनेवाले का होना भी ज़रूरी है, जैसे आपके खेतीबारी के काम में कामगार ही नहीं, उन पर नज़र रखनेवाला भी कोई होना चाहिये। देखिये, मैं यह पढ़ रहा हूं," ल्वोव ने स्टैंड पर रखा बूस्लायेव का व्याकरण दिखाया, "मीशा से इसकी जानकारी की अपेक्षा की जाती है और यह कितना मुश्किल है... लीजिये आप ही मुझे समझाइये। यहां वह कहता है कि..."

लेविन ने उसे यह समझाना चाहा कि इसे समझना सम्भव नहीं और ऐसे ही पढ़ा देना चाहिये। किन्तु ल्वोव उससे सहमत नहीं हुआ।

"आप तो मज़ाक़ कर रहे हैं!"

"इसके उलट, आप कल्पना नहीं कर सकते कि आपको देखते हुए मैं हमेशा वह सीखता हूं, जो कभी मुझे करना होगा यानी बच्चों के शिक्षण का काम।"

"हटाइये, मुझसे क्या सीखेंगे आप," ल्वोव ने कहा।

"मैं सिर्फ़ इतना जानता हूं," लेविन ने उत्तर दिया, "कि आपके बच्चों से बेहतर शिक्षा-दीक्षा वाले बच्चे मैंने नहीं देखे और मैं आपके बच्चों से ज़्यादा अच्छे बच्चों की कामना नहीं करूंगा।"

ल्वोव ने स्पष्टतः अपनी ख़ुशी को छिपाना चाहा, मगर उसके चेहरे पर मुस्कान आ ही गयी।

"मैं सिर्फ़ यही चाहता हूं कि वे मुझसे बेहतर बनें। आप उन सभी कठिनाइयों के बारे में नहीं जानते," वह कहता गया, "जो मेरे लड़कों जैसे बच्चों के सामने आती हैं, जिनकी पढ़ाई की विदेशों में अवहेलना हो गयी है।"

"यह कमी पूरी हो जायेगी। बड़े लायक़ बच्चे हैं आपके। मुख्य चीज़ तो नैतिक शिक्षा है। आपके बच्चों को देखकर मैं यही बात सीखता हूं।"

"आपने नैतिक शिक्षा की बात की। इसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती कि यह कितना मुश्किल काम है! आप एक बुराई से पिंड छुड़वाते हैं, दूसरी बुराइयां सामने आ जाती हैं और फिर से संघर्ष करना पड़ता है। अगर धर्म का सहारा न लिया जाये – याद है न, हमने इस बारे में चर्चा की थी, – तो इस सहायता के बिना कोई भी पिता अपने बच्चों को ढंग के बच्चे नहीं बना पायेगा।"

इस चर्चा में, जिसमें लेविन की हमेशा दिलचस्पी रही थी, सुन्दरी नताली के आगमन से, जो बाहर जाने को तैयार होकर आई थी, ख़लल पड़ गया।

"मुझे मालूम नहीं था कि आप यहां हैं," उसने कहा। वह स्पष्टतः इस चीज़ के लिये न केवल दुखी नहीं थी, बल्कि ख़ुश भी थी कि उसने ऊबा देनेवाली इस बातचीत में, जिससे वह बहुत पहले से परिचित थी, बाधा डाल दी। "कीटी कैसी है? आज मैं आपके यहां शाम का भोजन कर रही हूं। सुनो अर्सेनी," उसने पति को सम्बोधित किया, "तुम बग्घी ले जाओगे..."

और पति-पत्नी के बीच यह विचार-विनिमय होने लगा कि वे अपना दिन कैसे बितायेंगे। चूंकि पति को किसी के स्वागत को जाना था और पत्नी को कन्सर्ट तथा दक्षिण-पूर्वी कमेटी की सार्वजनिक सभा में

जाना था, इसलिये उन्हें बहुत कुछ सोचना और तय करना था। लेविन को घर के आदमी के नाते इन योजनाओं में हिस्सा लेना था। यह तय पाया गया कि लेविन नताली के साथ कन्सर्ट और सार्वजनिक सभा में जायेगा, वहां से वे अर्सेनी को लाने के लिये उसके दफ़्तर बग्घी भेज देंगे और फिर वह नताली को लेकर उसे कीटी के यहां छोड़ देगा और अगर उसका काम समाप्त नहीं होगा, तो बग्घी वापस भेज देगा और लेविन नताली के साथ जायेगा।

"लेविन प्रशंसा करके मुझे बिगाड़ रहे हैं," ल्वोव ने पत्नी से कहा, "मुझे यक़ीन दिलाते हैं कि हमारे बच्चे बहुत ही अच्छे हैं, जब कि मैं यह जानता हूं कि उनमें कितनी बुरी बातें हैं।"

"अर्सेनी अति की सीमा तक जाते हैं, मैं हमेशा यह कहती रहती हूं," पत्नी ने टिप्पणी की। "अगर पूर्णता की खोज में रहेंगे, तो कभी सन्तुष्टि प्राप्त नहीं होगी। पापा ठीक ही कहते हैं कि जब हमारा पालन-शिक्षण किया गया, तब अति की एक ही सीमा थी – हमें अटारियों में रखा जाता था और माता-पिता नीचे के मुख्य भाग में रहते थे। अब इसके उलट मामला है – माता-पिता कबाड़ख़ाने में रहते हैं और बच्चे मुख्य भाग में। मां-बाप को तो अब जीना ही नहीं चाहिये, सब कुछ बच्चों के लिये ही है।"

"अगर यह मन को अधिक अच्छा लगे तो इसमें क्या बुराई है?" ल्वोव ने अपनी मधुर मुस्कान से मुस्कराते और पत्नी का हाथ छूते हुए कहा। "तुम्हें न जाननेवाला व्यक्ति यह सोच सकता है कि तुम असली नहीं, सौतेली मां हो।"

"नहीं, किसी भी मामले में अति की सीमा तक जाना अच्छा नहीं," नताली ने पति का काग़ज़ काटने का चाक़ू ठीक जगह पर रखते हुए शान्त भाव से कहा।

"इधर आओ तो आदर्श बच्चो," ल्वोव ने कमरे में दाख़िल होनेवाले सुन्दर लड़कों से कहा, जो सिर झुकाकर लेविन का अभिवादन करने के बाद स्पष्टतः कुछ पूछने के लिये पिता के पास गये।

लेविन इन दोनों लड़कों से बात करना और अपने पिता से वे जो कुछ कहनेवाले थे सुनना चाहता था। किन्तु नताली उससे बात करने लगी और इसी समय दरबारी वर्दी पहने हुए ल्वोव का एक सहयोगी,

मख़ोतिन, कमरे में आ गया। ल्वोव और मख़ोतिन को एकसाथ ही किसी के स्वागत को जाना था और हरज़ेगोवीना, प्रिंसेस कोर्ज़ीन्स्काया, दूमा और अप्राक्सिना की अचानक मृत्यु के बारे में अन्तहीन बातचीत चल पड़ी।

लेविन को जो कार्यभार सौंपा गया था, वह उसके बारे में भूल गया। बाहर निकलते समय ही उसे वह याद आया।

"अरे हां, कीटी ने मुझे आपसे ओब्लोन्स्की के बारे में बात करने को कहा था," लेविन ने ल्वोव से तब कहा, जब वह उसे और पत्नी को विदा करने के लिये ज़ीने के पास रुका।

"हां, हां, maman चाहती हैं कि हम, les beaux-frères,* उसकी ख़बर लें," ल्वोव ने झेंप से लाल होते और मुस्कराते हुए कहा। "मगर मैं ऐसा क्यों करूं?"

"तो मैं उसकी ख़बर ले लूंगी," नताली ने, जो सफ़ेद फ़र-कोट पहने बातचीत के अन्त की प्रतीक्षा कर रही थी, मुस्करा कर कहा। "आइये, चलें।"

(५)

सुबह के कन्सर्ट में दो बहुत ही दिलचस्प रचनायें प्रस्तुत की जा रही थीं।

एक थी 'बादशाह लीर स्तेपी में' स्वर-रचना और दूसरी थी बाख़ की स्मृति को समर्पित 'क्वारटेट' रचना। दोनों ही रचनायें नयी और नयी शैली की थीं और लेविन उनके बारे में अपनी धारणा बनाना चाहता था। अपनी साली को उसकी कुर्सी पर बिठाकर वह एक स्तम्भ के पास खड़ा हो गया और उसने यथाशक्ति तथा पूरी ईमानदारी से इन्हें सुनने का इरादा बना लिया। वह कोशिश करने लगा कि किसी भी तरफ़ उसका ध्यान न बंटे या फिर सफ़ेद टाई लगाये संगीत-निदेशक की ओर देखकर संगीत के प्रभाव को कम न होने दे, जिसके हाथों के हिलने-डुलने से हमेशा संगीत की ओर से अप्रिय ध्यान-भंग होता

---

* साढू। (फ़्रांसीसी)

है, टोपियां पहने उन महिलाओं की ओर न देखे, जिन्होंने कन्सर्ट के लिये बहुत यत्न से कानों पर रिबन बांध रखे थे और उन लोगों के चेहरों पर भी नज़र न डाले, जिन्हें या तो किसी भी चीज़ में दिलचस्पी नहीं थी या जो संगीत को छोड़कर बाक़ी सभी तरह की चीज़ों में दिलचस्पी ले रहे थे। उसने संगीत के जानकारों और बातूनियों से बचने का प्रयास किया और स्तम्भ के सहारे खड़े रहकर नीचे देखते हुए संगीत सुनता रहा।

बादशाह लीर सम्बन्धी रचना को वह जितना अधिक सुनता जा रहा था, उसके बारे में कोई निश्चित धारणा बनाने की सम्भावना से वह अपने को उतना ही अधिक दूर अनुभव करता था। जैसे ही किसी भावना की संगीत-अभिव्यक्ति आरम्भ होने लगती, वह नयी भावनाओं की संगीत-अभिव्यक्ति के टुकड़ों में बिखर जाती और कभी-कभी तो सर्वथा असम्बद्ध, यद्यपि बहुत ही जटिल ध्वनियों का रूप ले लेती, जो स्वरकार की सनक के सिवा कुछ नहीं होती थीं। किन्तु इन संगीत-अभिव्यक्तियों के टुकड़े भी, जो कभी-कभी अच्छे होते थे, अप्रिय लगते थे, क्योंकि सर्वथा अप्रत्याशित होते थे और उनके लिये ज़मीन तैयार नहीं की जाती थी। ख़ुशी और ग़मी, हताशा और प्यार तथा विजयोल्लास – सभी किसी तारतम्य के बिना, किसी पागल की भावनाओं की तरह प्रकट होते थे। किसी पागल की भावनाओं की भांति ही ये सहसा लुप्त हो जाते थे।

संगीत के प्रस्तुतीकरण के पूरे समय में लेविन अपने को उस बहरे जैसा अनुभव करता रहा, जो नर्त्तकों को देख रहा हो। संगीत की समाप्ति पर वह सर्वथा हक्का-बक्का-सा रह गया और तनाव तथा अपने ध्यान का कोई पुरस्कार न पाने के कारण बहुत थकान अनुभव कर रहा था। सभी ओर से ज़ोर की तालियां गूंज उठीं। सभी लोग उठकर खड़े हो गये, इधर-उधर आने-जाने और बातचीत करने लगे। दूसरों पर पड़े प्रभाव के आधार पर अपनी हैरानी का स्पष्टीकरण पाने के लिये लेविन संगीत-पारखियों की खोज में इधर-उधर जाने लगा और ऐसे एक पारखी को अपने परिचित पेसत्सोव से बात करते हुए देखकर उसे ख़ुशी हुई।

"कमाल की चीज़ है!" पेसत्सोव अपनी भारी आवाज़ में कह रहा

था। "नमस्ते, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच। वह स्थल तो विशेषत: बहुत चित्रमय, कहना चाहिये, मूर्त्तिमय तथा रंग-छटा से समृद्ध है, जहां कोर्डेली की निकटता का आभास होता है, जहां नारी—das ewig Weibliche*— भाग्य से पंजा लड़ाती है। आप सहमत हैं न?"

"कोर्डेली यहां कहां से आ टपकी?" लेविन ने झिझकते हुए पूछा। वह बिल्कुल ही यह भूल गया था कि इस रचनां में बादशाह लीर को स्तेपी में दिखाया गया है।

"कोर्डेली यहां इसलिये आ टपकी... यह देखिये!" पेसत्सोव ने चिकने काग़ज़ पर छपे प्रोग्राम पर, जिसे वह हाथ में लिये था, उंगलियां मारते और उसे लेविन को देते हुए कहा।

लेविन को अभी इस रचना के शीर्षक का ध्यान आया और वह झटपट प्रोग्राम के दूसरी ओर छपी हुई रूसी भाषा में अनूदित शेक्सपीयर की कविता पढ़ने लगा।

"इसके बिना इस रचना को नहीं समझा जा सकता," पेसत्सोव ने लेविन से कहा, क्योंकि उससे बात करनेवाला व्यक्ति जा चुका था और कोई ऐसा नहीं रहा था, जिससे उसकी बातचीत हो सकती।

अन्तराल में लेविन और पेसत्सोव के बीच संगीत में वागनर की परम्परा के गुण-दोषों पर बहस छिड़ गयी। लेविन ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि वागनर और उसके सभी अनुयायियों की ग़लती यह है कि उनका संगीत दूसरी कलाओं के क्षेत्र में दख़ल देना चाहता है, इसी तरह कविता भी उस समय ऐसी ही भूल करती है, जब चेहरे के नाक-नक़्शे का वर्णन करती है, जो चित्रकला को करना चाहिये, और ऐसी भूल के उदाहरण के रूप में उसने उस मूर्त्तिकार का उल्लेख किया, जिसने पादपीठ पर खड़ी कवि की मूर्त्ति के गिर्द संगमरमर पर काव्य-बिम्बों की छायायें तराश डालीं। "छायाओं से ये इतनी कम मिलती-जुलती थी कि उन्हें ज़ीने की टेक का सहारा लेना पड़ा था," लेविन ने कहा। उसे यह वाक्य बहुत अच्छा लगा, मगर उसे यह याद नहीं आ रहा था कि क्या उसने पहले भी यही वाक्य पेसत्सोव से ही नहीं कहा था और इसलिये उसे अब फिर से कहने के बाद वह झेंप गया।

---

* शाश्वत स्त्रैणता। (जर्मन)

दूसरी ओर पेसत्सोव ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि कला अपने समूचे रूप में एक ही है और अपने सभी रूपों के मिलाप से ही अभिव्यक्ति के उच्चतम बिन्दु पर पहुंच सकती है।

कन्सर्ट का दूसरा कार्यक्रम लेविन सुन नहीं सका। पेसत्सोव, जो उसके पास खड़ा हो गया था, लगभग सारे वक़्त उससे बातें और इस नाटक की आवश्यकता से अधिक, उबकाई लानेवाली और घटियां सरलता के लिये आलोचना तथा राफ़ायल-पूर्व की शैली की सादगी के साथ उसकी तुलना करता रहा। थियेटर से बाहर निकलते समय लेविन की अनेक परिचितों से भेंट हुई, जिनके साथ उसने राजनीति, संगीत और साझे परिचितों की चर्चा की। और हां, काउंट बोल्ल से भी उसकी मुलाक़ात हुई, जिसके यहां जाने की बात उसके दिमाग़ से बिल्कुल निकल गयी थी।

"तो अभी चले जाइये," नताली ल्वोवा ने कहा, जिसे उसने इस मुलाक़ात के बारे में बताया। "हो सकता है कि बोल्ल दम्पति के लिये आपसे मिलना सम्भव न हो और तब आप मुझे लिवाने के लिये सभा में आ जायें। इसके लिये आपके पास अभी काफ़ी वक़्त है।"

(६)

"शायद इस समय मिलना सम्भव नहीं है?" काउंटेस बोल्ल के घर की ड्योढ़ी में दाख़िल होते हुए लेविन ने पूछा।

"बिल्कुल सम्भव है," दरबान ने लेविन का फ़र-कोट उतरवाते हुए जवाब दिया।

"ओह, कैसी बदक़िस्मती है," लेविन ने आह भरकर एक दस्ताना उतारते और टोप ठीक करते हुए सोचा। "किसलिये मैं जा रहा हूं उनके पास? क्या बात करूंगा मैं उनसे?"

पहले मेहमानख़ाने को लांघते हुए लेविन की काउंटेस बोल्ल से दरवाज़े के पास भेंट हो गयी। वह चेहरे पर परेशानी और कठोरता का भाव लाये हुए नौकर को कुछ हिदायत दे रही थी। लेविन को देखकर वह मुस्करायी और उससे अगले, छोटे मेहमानख़ाने में जाने का अनुरोध किया, जहां से कुछ लोगों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। इस मेहमानख़ाने

में काउंटेस की दो बेटियां और मास्को का एक कर्नल, जिसे लेविन जानता था, आराम कुर्सियों पर बैठे थे। लेविन ने उनके निकट जाकर उनसे हाथ मिलाया और टोप को घुटने पर टिकाते हुए सोफ़े के क़रीब बैठ गया।

"आपकी पत्नी की तबीयत कैसी है? आप कन्सर्ट में गये थे न? हम नहीं जा सकीं। मां को मातम के लिये जाना था।"

"हां, मैंने सुना है... ओह, कैसी अचानक मौत हुई," लेविन ने कहा।

काउंटेस बोल्ल आयी, सोफ़े पर बैठ गयी और उसने भी लेविन की पत्नी और कन्सर्ट के बारे में सवाल किये।

लेविन ने जवाब दिये और अप्राक्सिना की मृत्यु के बारे में प्रश्न दोहराया।

"वैसे, सेहत तो उसकी हमेशा ही ख़राब रहती थी।"

"कल आप ऑपेरा सुनने गये थे?"

"हां, गया था।"

"लुक्का ने तो ख़ूब गाया।"

"हां, बहुत ख़ूब," लेविन ने उत्तर दिया और इस बात की ज़रा भी परवाह न करते हुए कि उसके बारे में ये लोग क्या सोचेंगे, वही दोहराने लगा, जो गायिका के गायन-गुणों के सम्बन्ध में सैकड़ों बार सुन चुका था। काउंटेस बोल्ल ऐसे ज़ाहिर करती रही मानो सुन रही हो। जब वह काफ़ी बोलने के बाद चुप हो गया, तो कर्नल ने बोलना शुरू किया, जो अभी तक चुप रहा था। कर्नल ने भी ऑपेरा और रंगमंच पर प्रकाश-व्यवस्था की चर्चा की। अन्त में त्यूरिन के यहां folle journée* बीतने की सम्भावना का उल्लेख करके कर्नल ज़ोर से हंसा, शोर मचाता हुआ उठा और चला गया। लेविन भी उठकर खड़ा हो गया, किन्तु काउंटेस के चेहरे से उसे लगा कि उसको अभी नहीं जाना चाहिये। दो मिनट और रुकना चाहिये। वह बैठ गया।

लेकिन चूंकि वह यही सोच रहा था कि यह कैसी बेवकूफ़ी है, इसलिये उसे बातचीत का कोई विषय नहीं सूझा और वह ख़ामोश रहा।

---

* उन्मादी दिन। (फ़्रांसीसी)

"आप सार्वजनिक सभा में नहीं जायेंगे? कहते हैं कि बड़ी दिलचस्प सभा होगी," काउंटेस ने कहना शुरू किया।

"नहीं, मैंने अपनी belle-soeur* से वादा किया है कि उसे लिवाने वहां आऊंगा," लेविन ने उत्तर दिया।

ख़ामोशी छा गयी। मां-बेटियों ने फिर से एक-दूसरी की तरफ़ देखा।

"लगता है कि अब चलना चाहिये," लेविन ने सोचा और उठकर खड़ा हो गया। महिलाओं ने उससे हाथ मिलाये और अनुरोध किया कि उनकी ओर से अपनी पत्नी को mille choses** कहे।

दरबान ने फ़र-कोट पहनाते हुए लेविन से उसका पता पूछा और उसे फ़ौरन, एक बड़ी और जिल्द वाली नोटबुक में दर्ज कर लिया।

"ज़ाहिर है कि मेरी बला से, फिर भी यह सब बड़ा बेहूदा है और शर्म महसूस होती है," लेविन ने सोचा और यह कहकर अपने को तसल्ली देते हुए कि सभी ऐसा करते हैं, बग्घी में बैठकर सार्वजनिक सभा की ओर चल दिया, जहां उसे अपनी साली को ढूंढ़ना और उसे साथ लेकर घर जाना था।

सार्वजनिक सभा में बहुत अधिक लोग थे और ऊंची सोसाइटी तो लगभग पूरी ही उपस्थित थी। लेविन जब वहां पहुंचा, तो समीक्षा अभी चल रही थी, जो, जैसा कि सभी कह रहे थे, बहुत दिलचस्प थी। समीक्षा के पढ़े जाने के बाद लोग आपस में मिलने-जुलने लगे और लेविन की स्वियाज्स्की से भेंट हो गयी, जिसने उसे शाम को कृषि-समाज में अवश्य ही आने को कहा, जहां एक महत्त्वपूर्ण व्याख्यान होनेवाला था। ओब्लोन्स्की से भी उसकी मुलाक़ात हुई, जो उसी समय घुड़दौड़ से वापस आया था और वह अनेक अन्य परिचितों से भी मिला। लेविन ने सभा, नये नाटक और एक मुक़दमे के बारे में फिर से अपने विचार बताये और दूसरों के सुने। किन्तु सम्भवतः दिमाग़ी थकान के कारण, जिसे वह अनुभव करने लगा था, मुक़दमे की चर्चा करते हुए उससे एक ग़लती हो गयी और बाद में इस ग़लती के कई बार याद आने पर उसे दुख होता रहा। उस विदेशी का ज़िक्र करते हुए, जिस पर रूस में

---

* साली। (फ़्रांसीसी)

** हज़ार प्रणाम। (फ़्रांसीसी)

मुक़दमा चलाया गया था और जिसे रूस से निकाल देने की सज़ा मिलनेवाली थी, लेविन ने वही बात दोहरा दी, जो अपने एक परिचित से उसने एक दिन पहले सुनी थी।

"मेरे ख़्याल में उसे रूस से बाहर निकाल देना, तो मछली को पानी में छोड़ देने के समान ही दण्ड होगा," लेविन ने कहा। बाद में ही उसे याद आया कि जिसे उसने अपना विचार बताया था और अपने किसी परिचित से सुना था, क्रिलोव की कथा से लिया गया था और उसके परिचित ने किसी समाचार-पत्र के हास्य-व्यंग्य लेख से उसे ग्रहण किया था।

साली को घर पहुंचाकर और कीटी को ठीक-ठाक तथा ख़ुश पाकर लेविन क्लब चला गया।

(७)

लेविन ठीक समय पर ही क्लब पहुंचा। मेहमान और क्लब के सदस्य भी उसके साथ ही पहुंच रहे थे। लेविन बहुत समय से, तब से क्लब नहीं आया था, जब विश्वविद्यालय की पढ़ाई ख़त्म करने के पहले मास्को में रहता और ऊंची सोसाइटी में आता-जाता था। उसे क्लब घर, उसकी बाहरी बनावट की तफ़सीलें याद थीं, किन्तु वह उस प्रभाव के बारे में बिल्कुल भूल गया था, जिसकी उसे कभी पहले क्लब में अनुभूति होती थी। किन्तु ज्योंही किराये की बग्घी चौड़े और अर्ध-गोलाकार अहाते में दाख़िल हुई और वह उससे उतरकर प्रवेश-द्वार के निकट गया और पट्टा पहने दरबान ने धीरे-से दरवाज़ा खोलकर सिर झुकाया, ज्योंही उसने दरबान के कक्ष में क्लब के सदस्यों के फ़र-कोट और गैलोश देखे, जिन्हें ऊपर ले जाने के बजाय नीचे ही उतार देना उनके लिये कम कष्टप्रद था, ज्योंही उसने आगमन की घोषणा करनेवाली घण्टी की रहस्यपूर्ण आवाज़ सुनी और क़ालीन से ढकी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए ज़ीने के सिरे पर मूर्त्ति और ऊपर के दरवाज़े के पास क्लब की वर्दी पहने तथा बुढ़ा गये परिचित दरबान को देखा, जिसने मेहमान को ग़ौर से देखते हुए न तो फ़ौरन और न धीरे से दरवाज़ा खोल दिया – लेविन ने अपने को क्लब के पुराने वातावरण – चैन, आनन्द और शिष्टता के वातावरण में अनुभव किया।

"कृपया टोप दे दीजिये," दरबान ने लेविन से कहा, जिसने क्लब का नियम भूल जाने के कारण अपना टोप नीचे नहीं उतारा था। "बहुत अर्से से यहां नहीं आये। प्रिंस ने तो कल ही आपका नाम लिखवा दिया था। प्रिंस स्तेपान अर्काद्येविच ओब्लोन्स्की अभी तक नहीं पधारे।"

यह बूढ़ा दरबान न केवल लेविन को, बल्कि उसके सभी सम्बन्धों और रिश्तेदारों को भी जानता था और उसने लेविन के कुछ घनिष्ठ लोगों के फ़ौरन नाम लिये।

लकड़ी की ओटों और दायीं ओर ऐसी ही ओट के पीछे फल बेचने-वाले के कमरे सहित पहले हॉल को लांघ कर लेविन ने धीरे-धीरे चल रहे एक बुज़ुर्ग को पीछे छोड़ा और लोगों के शोर से गूंज रहे भोजन के हॉल में दाख़िल हुआ।

लेविन मेहमानों को ग़ौर से देखता हुआ उन मेज़ों के पास से गुज़रता गया, जिनके गिर्द लगभग कोई ख़ाली जगह नहीं थी। यहां-तहां उसे सभी तरह के, बूढ़े और जवान, बहुत ही कम परिचित और घनिष्ठ लोग दिखाई दे रहे थे। एक भी चेहरे पर चिन्ता या खीझ-झल्लाहट दिखाई नहीं दे रही थी। ऐसे लगता था मानो अपने टोपों के साथ सभी अपनी चिन्तायें और परेशानियां भी नीचे दरबान के कमरे में ही छोड़ आये थे और यहां बड़े इतमीनान से जीवन की भौतिक ख़ुशियों के मज़े लेने के लिये जमा हुए थे। स्वियाज्स्की और श्चेर्बात्स्की भी यहां थे, नेवेदोव्स्की और कीटी के पिता, बुज़ुर्ग प्रिंस भी, व्रोन्स्की और कोज़्निशेव भी।

"अरे, तुमने आने में देर क्यों कर दी?" बुज़ुर्ग प्रिंस ने मुस्कराते और लेविन की ओर हाथ बढ़ाते हुए प्रश्न किया। "कीटी कैसी है?" उन्होंने वास्कट के बटन के साथ अटकाया हुआ नेप्किन ठीक करते हुए पूछा।

"बिल्कुल ठीक है। वे तीनों घर पर ही भोजन कर रही हैं।"

"मतलब यह कि 'अलीनी-नादीनी'। हमारी मेज़ पर तो जगह नहीं है। उस मेज़ पर जाकर जल्दी से जगह ले लो," प्रिंस ने कहा और मुड़कर बैरे के हाथ से बड़ी सावधानी से टर्बोट मछली के शोरबे की प्लेट ले ली।

"लेविन, इधर आओ!" कुछ दूरी पर ख़ुशी से उमगती आवाज़ सुनाई दी। यह तूरोवत्सिन था। वह एक जवान फ़ौजी की बग़ल में बैठा था और उनके निकट दो कुर्सियां उल्टी रखी हुई थीं। लेविन ख़ुशी से उसकी ओर बढ़ गया। बांका-छैला और ख़ुशमिज़ाज तूरोवत्सिन उसे हमेशा ही बहुत अच्छा लगता था – उसके साथ कीटी के प्रति लेविन के प्रेम-निवेदन की स्मृतियां जुड़ी हुई थीं – लेकिन आज दिन भर की बुद्धिमत्ता से ओत-प्रोत तनावपूर्ण बातों के बाद तूरोवत्सिन का प्रफुल्ल चेहरा उसे विशेषतः बहुत प्रिय लगा।

"ये दोनों कुर्सियां तुम्हारे और ओब्लोन्स्की के लिये हैं। वह अभी आ जायेगा।"

ख़ुशी भरी, लगातार हंसती-सी आंखों वाला सीधा तनकर बैठा हुआ फ़ौजी अफ़सर पीटर्सबर्ग का गागिन था। तूरोवत्सिन ने लेविन से उसका परिचय करवाया।

"ओब्लोन्स्की तो हमेशा ही देर से आता है।"

"लो, वह रहा।"

"तुम अभी आये हो?" ओब्लोन्स्की ने जल्दी से इन दोनों के निकट आते हुए लेविन से पूछा। "नमस्ते। वोदका पी? तो आओ, वहां चलें।"

लेविन उठा और ओब्लोन्स्की के साथ उस बड़ी मेज़ के पास गया, जिस पर तरह-तरह की वोदका की बोतलें और क़िस्म-क़िस्म के हल्के-फुल्के कलेवे की चीज़ें रखी थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि लगभग बीस तरह के हलके-फुलके कलेवों में से रुचि के अनुसार कोई एक चुना जा सकता था, किन्तु ओब्लोन्स्की ने किसी ख़ास कलेवे की मांग की और मेज़ के क़रीब खड़े बावर्दी बैरों में से एक फ़ौरन वही ले आया, जिसकी मांग की गयी थी। दोनों ने वोदका का एक-एक जाम पिया और अपनी मेज़ पर वापस आ गये।

ये लोग अभी टर्बोट मछली का शोरबा ही ख़त्म कर रहे थे कि गागिन के आर्डर पर शेम्पेन की एक बोतल आ गयी और उसने बैरे से उसे चार गिलासों में डालने का आदेश दिया। लेविन ने इन्कार नहीं किया और ख़ुद भी बैरे से एक बोतल लाने को कह दिया। इस वक़्त उसे बहुत ज़ोर की भूख लगी थी, बड़ी ख़ुशी से खा-पी रहा था तथा इससे भी

अधिक खुशी से अपने साथियों की मज़ेदार और सीधी-सादी बातों में हिस्सा ले रहा था। गागिन अपनी आवाज़ धीमी करके पीटर्सबर्ग का कोई ताज़ा क़िस्सा सुना रहा था और यह क़िस्सा अशिष्ट और बेतुका होते हुए भी ऐसा हंसानेवाला था कि लेविन ज़ोर का ठहाका लगाये बिना न रह सका और क़रीब की मेज़ों पर बैठे लोगों ने मुड़कर उसकी तरफ़ देखा।

"तुम्हारा यह क़िस्सा तो 'यही मुझसे बर्दाश्त नहीं होता' क़िस्से जैसा है। जानते हो न?" ओब्लोन्स्की ने पूछा। "वाह, मज़ा आ गया। एक बोतल और ले आओ!" उसने बैरे से कहा और कोई अपना क़िस्सा सुनाने लगा।

"प्योत्र इल्यीच विनोव्स्की ने अनुरोध किया है," एक बूढ़े बैरे ने फेनिल शेम्पेन से भरे पतले-पतले दो गिलास ओब्लोन्स्की और लेविन की ओर बढ़ाते हुए ओब्लोन्स्की को टोक दिया। ओब्लोन्स्की ने गिलास ले लिया, मेज़ के दूसरे सिरे पर गंजे और लाल मूंछों वाले व्यक्ति से नज़रें मिलायीं और मुस्कराते हुए सिर झुकाया।

" यह कौन है?" लेविन ने पूछा।

"तुम एक बार मेरे यहां इससे मिल चुके हो। याद है न? भला आदमी है।"

लेविन ने भी ओब्लोन्स्की की भांति मुस्कराकर सिर झुकाया और गिलास ले लिया।

ओब्लोन्स्की द्वारा सुनाया गया क़िस्सा भी बहुत दिलचस्प रहा। लेविन ने भी कोई क़िस्सा सुनाया और वह भी पसन्द आया। इसके बाद घोड़ों, उस दिन की घुड़दौड़ और इस बात की चर्चा होने लगी कि कैसे व्रोन्स्की के अत्लास्नी नामी घोड़े ने बड़ी फुर्ती से पहला इनाम जीत लिया। लेविन को पता भी नहीं चला कि भोजन कितनी जल्दी समाप्त हो गया।

"लो, ये आ रहे हैं!" भोजन की समाप्ति पर ओब्लोन्स्की ने कहा और कुर्सी की टेक पर झुकते हुए व्रोन्स्की की ओर, जो गार्डों के एक लम्बे-तड़ंगे कर्नल के साथ आ रहा था, अपना हाथ बढ़ा दिया। व्रोन्स्की के चेहरे पर भी क्लब की सामान्य ख़ुशमिज़ाजी की चमक दिखाई दे रही थी। उसने प्रफुल्लता से ओब्लोन्स्की के कंधे पर कोहनी

टिकाकर उसके कान में कुछ खुसर-फुसर की और उसी प्रफुल्ल मुस्कान के साथ लेविन की ओर हाथ बढ़ाया।

"मिलकर बहुत ख़ुशी हुई," व्रोन्स्की ने कहा। "मैं तो चुनावों के वक़्त तब आपको खोजता रहा, लेकिन मुझे बताया गया कि आप चले गये हैं," उसने लेविन से कहा।

"हां, मैं उसी दिन वहां से चला गया था। हम लोग अभी-अभी आपके घोड़े का ज़िक्र कर रहे थे। आपको बधाई देता हूं," लेविन बोला। "ख़ूब बाज़ी मारी आपके घोड़े ने।"

"आपके यहां भी तो ऐसे घोड़े हैं।"

"नहीं, मेरे पिता जी के पास थे। लेकिन मुझे उनकी याद है!"

"तुमने किस मेज़ पर खाना खाया?"

"स्तम्भों के पीछे, दूसरी मेज़ पर।"

"इसे वहां बधाई दी गयी," लम्बे कर्नल ने बताया। "सम्राट का यह दूसरा पुरस्कार जीता है। काश, मेरी क़िस्मत ताश में ऐसा साथ देती, जैसी इसकी घोड़ों में।"

"लेकिन ऐसा क़ीमती वक़्त बरबाद क्यों किया जाये। मैं तो चल दिया 'जहन्नुमी' कमरे में," कर्नल ने कहा और चला गया।

"यह याश्विन था," व्रोन्स्की ने तूरोवत्सिन के प्रश्न के उत्तर में कहा और इनके निकट ख़ाली हो गयी कुर्सी पर बैठ गया। उसने शेम्पेन का वह गिलास पी लिया, जो उसे पेश किया गया और एक बोतल लाने को कह दिया। क्लब के वातावरण के प्रभाव या शराब के असर में लेविन पशुओं की बढ़िया नस्ल के बारे में व्रोन्स्की से बातचीत करता रहा और उसे इस बात की बड़ी ख़ुशी हुई कि इस व्यक्ति के प्रति किसी तरह का वैर-भाव अनुभव नहीं कर रहा था। बातों ही बातों में उसने व्रोन्स्की को यह भी बताया कि अपनी बीवी से उसे यह भी सुनने को मिला है कि प्रिंसेस मारीया बोरीसोव्ना के यहां उन दोनों की भेंट हुई थी।

"ओह, प्रिंसेस मारीया बोरीसोव्ना – वह तो कमाल की औरत है!" ओब्लोन्स्की ने कहा और उसके बारे में ऐसा क़िस्सा सुनाया, जिससे सभी हंस पड़े। व्रोन्स्की तो ख़ास तौर पर ऐसे ख़ुशमिज़ाजी से खिलखिलाकर हंसा कि लेविन के दिल में उसके ख़िलाफ़ ज़रा भी गिला-ग़ुस्सा नहीं रहा।

"तो अब उठा जाये!" ओब्लोन्स्की ने उठते हुए मुस्कराकर पूछा। "आओ चलें!"

(८)

मेज़ से उठकर लेविन जब आगे बढ़ा, तो उसने महसूस किया कि उसकी बांहें ख़ास तौर पर सही और हल्केपन से हिलती-डुलती हैं और वह गागिन के साथ ऊंची छतों वाले कमरों को लांघता हुआ बिलियार्ड-कक्ष की तरफ़ चल दिया। बड़े हॉल को पार करते समय उसे उसके ससुर मिल गये।

"तो, तुम्हें हमारा काहिली का यह मन्दिर कैसा लगा?" बुर्ज़ुग प्रिंस ने अपनी बांह उसकी बांह में डालते हुए पूछा। "आओ, यहां चक्कर लगायें।"

"मैं ख़ुद भी यहां का चक्कर लगाना और सब कुछ देखना चाहता था। यह बड़ा दिलचस्प है।"

"हां, तुम्हारे लिये दिलचस्प है। मगर मेरी तुमसे अलग दिलचस्पी है। तुम इन बूढ़ों को देखते हो," उन्होंने झुकी पीठ और लटके हुए होंठ वाले एक क्लब-सदस्य की ओर संकेत करते हुए कहा, जो नर्म बूट पहने मुश्किल से चलता हुआ सामने से आ रहा था, "और सोचते होगे कि ये ऐसे ही चिटकू पैदा हुए होंगे।"

"चिटकू, यह क्या बला है?"

"तुम यह शब्द भी नहीं जानते। यह हमारे क्लब का विशेष शब्द है। तुम पूरी तरह उबले अंडों को लुढ़काने का खेल तो जानते हो न? जब ऐसे अंडे को बहुत अधिक लुढ़काया जाता है, तो वह चिटक जाता है। यही हम लोगों के बारे में कहा जा सकता है—क्लब में आते रहते हैं, आते रहते हैं और फिर चिटक जाते हैं। तुम हंसते हो, लेकिन हम यह सोचते हैं कि कब ख़ुद भी चिटकुओं की गिनती में आ जायेंगे। प्रिंस चेचेन्स्की को तो तुम जानते ही न?" लेविन के ससुर ने पूछा और उनके चेहरे के भाव से वह समझ गया कि कोई मज़ाक़िया बात सुनाने जा रहे हैं।

"नहीं, मैं नहीं जानता।"

"कैसे नहीं जानते! वही, मशहूर प्रिंस चेचेन्स्की। ख़ैर, कोई बात नहीं। वह हमेशा बिलियार्ड खेला करता है। तीन साल पहले तक वह चिटकू नहीं था और अपने को सूरमा समझता था। दूसरों को चिटकू कहता था। एक दिन वह क्लब आया और हमारे एक दरबान ने... तुम जानते हो न उसे, वसीली को? वह, मोटा-सा। बड़ा दिल्लगीबाज़ है वह। तो प्रिंस चेचेन्स्की ने उससे पूछा – 'कहो वसीली, कौन-कौन आ गया? चिटकू तो आ गये?' और वसीली ने जवाब दिया – 'आप तीसरे हैं।' तो ऐसे मामला है, भैया!"

लेविन ने अपने ससुर के साथ बातचीत और परिचितों से दुआ-सलाम करते हुए क्लब के सभी कमरों का चक्कर लगा लिया। ये दोनों बड़े कमरे में भी गये, जहां मेज़ें लगी हुई थीं और आम तौर पर एकसाथ खेलनेवाले जोड़ीदार छोटे-छोटे दांव लगाकर ताश खेल रहे थे; सोफ़ोंवाले कमरे में भी गये, जहां शतरंज की बाज़ियां चल रही थीं और कोज़्निशेव किसी से बातचीत कर रहा था; बिलियार्ड के कमरे में भी गये, जहां कमरे के सिरे पर सोफ़े के क़रीब शेम्पेन का मज़ा लेनेवाले प्रफुल्ल लोगों का दल जमा था, जिनमें गागिन भी शामिल था; "जहन्नुमी" कमरे में भी गये, जहां एक मेज़ पर याश्विन जुआ खेल रहा था और मेज़ के गिर्द शर्तें लगानेवालों की भीड़ जमा थी। किसी भी तरह का शोर किये बिना वे बहुत ही धीमे क़दमों से धुंधले वाचन-कक्ष में भी गये, जहां शेडवाले लैम्पों के नीचे बैठा हुआ चिड़चिड़े से चेहरेवाला नौजवान एक के बाद एक पत्रिका के पन्ने उलटता जाता था और एक गंजा जनरल पुस्तक के अध्ययन में डूबा हुआ था। वे उस कमरे में भी गये, जिसे प्रिंस ने "बुद्धिमानों का कक्ष" कहा। इस कमरे में तीन महानुभाव नवीनतम राजनीतिक समाचार पर गर्मागर्म बहस कर रहे थे।

"प्रिंस, सब कुछ तैयार है," प्रिंस के साथ खेलनेवाले एक जोड़ीदार ने उन्हें यहां देखकर कहा और प्रिंस उसके पास चले गये। लेविन कुछ देर यहां बैठा रहा, बातें सुनता रहा, किन्तु आज की सुबह की सारी बातें याद आने पर उसे अचानक बेहद ऊब महसूस हुई। वह झटपट उठा और ओब्लोन्स्की तथा तूरोवत्सिन को खोजने चल दिया, जिनकी संगत में उसे बड़ा मज़ा आया था।

बिलियार्ड के कमरे में तूरोवत्सिन एक ऊंचे सोफ़े पर बैठा हुआ मग

से कुछ पी रहा था और ओब्लोन्स्की तथा व्रोन्स्की कमरे के सिरे पर दरवाज़े के क़रीब खड़े हुए कोई बात कर रहे थे।

"यह नहीं कि उसे सूना-सूना लगता है, बल्कि अनिश्चित और बीच में लटकी-सी स्थिति उसके लिये बोझिल है," लेविन को सुनाई दिया और उसने जल्दी से आगे निकल जाना चाहा, मगर ओब्लोन्स्की ने उसे पुकार लिया।

"लेविन!" ओब्लोन्स्की ने उसे बुलाया और लेविन ने देखा कि उसकी आंखों में आंसू तो नहीं, मगर नमी ज़रूर थी। उसके साथ ऐसा तभी होता था, जब वह या तो पी लेता था या जब भावुक हो जाता था। इस समय दोनों ही बातें थीं। "लेविन, यहीं रुको," ओब्लोन्स्की ने कहा और उसकी कोहनी को कसकर पकड़ लिया, ताकि वह जा न सके।

"यह मेरा सच्चा, शायद सबसे अच्छा दोस्त है," ओब्लोन्स्की ने व्रोन्स्की से कहा। "तुम भी मेरे बहुत निकट और मुझे बहुत प्यारे हो। इसलिये मैं चाहता हूं और यह जानता हूं कि तुम दोनों को भी एक-दूसरे के निकट और एक-दूसरे का दोस्त होना चाहिये, क्योंकि तुम दोनों भले आदमी हो।"

"तो बस, यही बाक़ी रह गया है कि हम एक-दूसरे को चूमें," व्रोन्स्की ने ख़ुशमिज़ाजी से मज़ाक़ करते और लेविन की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

लेविन ने अपनी ओर बढ़ा हुआ हाथ झटपट थाम लिया और उसे गर्मजोशी से दबाया।

"मैं बहुत, बहुत ख़ुश हूं," लेविन ने कहा।

"बैरे, शेम्पेन की बोतल लाओ," ओब्लोन्स्की ने कहा।

"मैं भी बेहद ख़ुश हूं," व्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

किन्तु ओब्लोन्स्की की इच्छा और उन दोनों की आपसी इच्छा के बावजूद उन दोनों के पास बात करने को कुछ नहीं था और उन दोनों ने यह महसूस किया।

"जानते हो, लेविन आन्ना से परिचित नहीं है?" ओब्लोन्स्की ने व्रोन्स्की को बताया। "और मैं अवश्य ही इसे आन्ना के पास ले जाना चाहता हूं। चलें, लेविन!"

"हां, ज़रूर जाइये," व्रोन्स्की ने कहा। "आन्ना को बहुत ख़ुशी

होगी। मैं भी अभी घर चलता," उसने इतना और जोड़ दिया, "मगर मुझे याश्विन की फ़िक्र है। उसके खेल ख़त्म करने तक मैं यहां और रुकना चाहता हूं।"

"क्यों, क्या बुरा हाल है उसका?"

"लगातार हारता जा रहा है, सिर्फ़ मैं ही उसे रोक सकता हूं।"

"तो क्या बिलियार्ड का पिरामिड खेल खेला जाये? लेविन, खेलोगे? तो ठीक है," ओब्लोन्स्की ने कहा। "पिरामिड बनाओ," उसने बिलियार्ड के खेल में अंक गिननेवाले से कहा।

"वह तो कभी का तैयार है," अंक गणक ने उत्तर दिया, जिसने पहले से ही गेंदों को तिकोण की शक्ल में रख दिया था और वक़्त बिताने के लिये लाल गेंद को इधर-उधर लुढ़का रहा था।

"तो आओ, खेलें।"

बिलियार्ड की बाज़ी ख़त्म होने पर व्रोन्स्की और लेविन गागिन की मेज़ पर जा बैठे और ओब्लोन्स्की के सुझाव पर लेविन इक्कों पर दांव लगाने लगा। व्रोन्स्की कभी तो लगातार उसके पास आनेवाले परिचितों के बीच घिरा हुआ मेज़ के पास बैठा रहता और कभी याश्विन का हाल-चाल देखने के लिये "जहन्नुमी" कमरे का चक्कर लगाने चला जाता। लेविन उस सुबह की दिमाग़ी थकान से मुक्ति का मधुर सुख अनुभव कर रहा था। उसे इस बात की ख़ुशी थी कि व्रोन्स्की के साथ उसकी दुश्मनी ख़त्म हो गयी थी और उसे लगातार चैन, शालीनता तथा सुख की अनुभूति हो रही थी।

बाज़ी ख़त्म होने पर ओब्लोन्स्की ने लेविन की बांह थाम ली।

"तो हम चलेंगे आन्ना के पास। इसी समय? क्या ख़्याल है? वह घर पर है। बहुत दिनों से मैंने उसे वचन दे रखा है कि मैं तुम्हें उसके पास लाऊंगा। तुम शाम को कहां जाना चाहते थे?"

"कहीं ख़ास तो नहीं। स्वियाज्स्की से कृषि-समाज में जाने का वादा किया था। पर मैं तुम्हारे साथ चलता हूं," लेविन ने कहा।

"बड़ी अच्छी बात है, चलते हैं! यह मालूम करो कि मेरी बग्घी आ गयी या नहीं," ओब्लोन्स्की ने किसी नौकर से कहा।

लेविन मेज़ के पास गया, इक्कों पर लगाये दांवों में हारे हुए चालीस रूबल अदा किये और दरवाज़े के क़रीब खड़े बूढ़े बैरे को, जो

किसी रहस्यपूर्ण ढंग से क्लब में लेविन का पूरा ख़र्च जानता था, बिल चुका दिया और बांहों को ख़ूब हिलाता-डुलाता, सारे हॉलों को लांघता हुआ बाहर की ओर चल दिया।

(६)

"ओब्लोन्स्की की बग्घी!" दरबान ज़ोरदार, भारी आवाज़ में चिल्लाया। बग्घी आ गयी और दोनों उसमें बैठ गये। कुछ देर तक जब तक बग्घी क्लब के फाटक से बाहर निकली, लेविन क्लब के वातावरण का चैन, सुख और शालीनता अनुभव करता रहा, किन्तु ज्योंही बग्घी सड़क पर पहुंची और उसने ऊबड़-खाबड़ सड़क पर बग्घी के हिचकोलें-धचके महसूस किये, सामने से आती बग्घी के कोचवान की झल्लायी और गुस्से से भरी चीख़-चिल्लाहट सुनी, धुंधली रोशनी में एक भटियार-ख़ाने और छोटी-सी दुकान का लाल साइनबोर्ड देखा, त्योंही क्लब के प्रभाव का जादू टूट गया। वह अपनी इस हरकत के बारे में सोचने लगा और उसने अपने आपसे यह सवाल किया कि आन्ना के यहां जाना उसके लिये ठीक है या नहीं। कीटी क्या कहेगी? किन्तु ओब्लोन्स्की ने उसे सोचने नहीं दिया और मानो उसके मन की शंकाओं का अनुमान लगाते हुए उन्हें तिरोहित कर दिया।

"मैं बहुत ख़ुश हूं," वह बोला, "कि तुम आन्ना से मिल लोगे। तुम्हें बताऊं, डौली तो बहुत अर्से से ऐसा चाहती थी। ल्वोव भी उसके यहां आ चुका है और आता रहता है। बेशक वह मेरी बहन है," ओब्लोन्स्की ने अपनी बात जारी रखी, "मैं किसी झिझक के बिना कह सकता हूं कि वह कमाल की औरत है। अभी तुम ख़ुद देख लोगे। उसकी स्थिति बड़ी विषम है, विशेषकर अब।"

"विशेषकर अब क्यों?"

"उसके पति के साथ तलाक़ के लिये हमारी बातचीत चल रही है। वह इसके लिये राज़ी है, मगर बेटे के सवाल को लेकर मुश्किल सामने आ रही है और इसलिये वह मामला, जो कभी का ख़त्म हो सकता था, तीन महीने से लटकता चला जा रहा है। तलाक़ मिलते ही उसकी व्रोन्स्की से शादी हो जायेगी। कैसी अटपटी बात है कि शादी की वह पुरानी

धार्मिक रीति, जिसे कोई भी मानता नहीं है, लोगों के सुखी जीवन में रोड़े अटकाती है!" ओब्लोन्स्की ने राय ज़ाहिर की। "तब उनकी स्थिति वैसी ही समाज-सम्मत हो जायेगी, जैसी मेरी और तुम्हारी।"

"तो कठिनाई क्या है?" लेविन ने पूछा।

"ओह, यह लम्बा और ऊब भरा क़िस्सा है! हमारे यहां सभी कुछ इतना अस्पष्ट-अनिश्चित है। बात यह है कि वह यहां, मास्को में, जहां उसे और व्रोन्स्की को सभी जानते हैं, तीन महीने से इस तलाक़ का इन्तज़ार करते हुए रह रही है, कहीं भी आती-जाती नहीं, डौली के सिवा किसी औरत से मिलती-जुलती नहीं, क्योंकि ऐसा नहीं चाहती कि उस पर दया करते हुए कोई उसके यहां आये। वह उल्लू प्रिंसेस वर्वारा भी इसे अशिष्ट मानते हुए उसके यहां से चली गयी। ऐसी स्थिति में कोई दूसरी औरत अपने भीतर पर्याप्त शक्ति न पा सकती। किन्तु उसने, जैसा कि तुम देखोगे, कैसे अच्छे ढंग से अपने जीवन को व्यवस्थित किया है, वह कितनी शान्त और गरिमापूर्ण है। बायीं ओर, गली में, गिरजे के सामने!" ओब्लोन्स्की ने बग्घी की खिड़की में से बाहर झुकते हुए कोचवान से ऊंची आवाज़ में कहा। "ओह, कितनी गर्मी है!" बारह दर्जे के पाले के बावजूद अपने फ़र-कोट को और अधिक खोलते हुए, जिसके बटन पहले से ही खुले थे, वह कह उठा।

"पर उसके तो बेटी है? वह तो उसमें व्यस्त रहती होगी न?" लेविन ने मत प्रकट किया।

"लगता है कि तुम हर औरत की सिर्फ़ मादा, une couveuse* के रूप में कल्पना करते हो," ओब्लोन्स्की ने उत्तर दिया, "जो यदि व्यस्त है, तो ज़रूर बच्चों में ही। नहीं, ऐसी बात नहीं है। लगता है कि अपनी बेटी का वह बहुत अच्छी तरह पालन-शिक्षण करती है, मगर उसकी कोई ख़ास चर्चा सुनाई नहीं देती। सबसे पहले तो वह इस चीज़ में व्यस्त है कि लिखती है। मैं देख रहा हूं कि तुम व्यंग्यपूर्वक मुस्करा रहे हो, मगर व्यर्थ ही। वह एक बाल-पुस्तक लिख रही है, और किसी से भी इसका ज़िक्र नहीं करती। किन्तु उसने वह मुझे पढ़कर सुनायी और मैंने वह पाण्डुलिपि वोर्कूयेव को दी... तुम उस

---

* अंडे सेनेवाली मुर्ग़ी। (फ़्रांसीसी)

प्रकाशक को तो जानते हो ... और लगता है कि वह ख़ुद लेखक भी है। वह ऐसी चीज़ों का अच्छा जानकार है और उसका कहना है कि यह बहुत बढ़िया चीज़ है। किन्तु तुम यह मत समझ लेना कि यह नारी बस लेखिका ही है? नहीं। तुम ख़ुद देख लोगे, वह सबसे पहले तो दिल रखनेवाली नारी है। अब उसके यहां एक अंग्रेज़ लड़की और उसका पूरा परिवार ही रह रहा है, जिसकी वह चिन्ता करती है।"

"क्या दान-दया की भावना से?"

"तुम तो हर चीज़ को अटपटी नज़र से देखते हो। दान-दया की भावना से नहीं, दिल की प्रेरणा से। इनके यहां, मेरा मतलब व्रोन्स्की के यहां, एक अंग्रेज़ ट्रेनर था, अपने काम का उस्ताद, मगर पियक्कड़। वह पूरी तरह शराब में डूब गया, उसे delirium tremens* हो गया और परिवार की बुरी हालत हो गयी। उसने यह देखा, तो उनकी मदद की, उन्हें सम्भाल लिया और अब सारे परिवार की चिन्ता करती है। सो भी संरक्षक की तरह नहीं, पैसे देकर, बल्कि ख़ुद लड़कों को रूसी पढ़ाकर हाई स्कूल में दाख़िले के लिये तैयार कर रही है और लड़की को अपने यहां रख लिया है। तुम ख़ुद देख लोगे।"

बग्घी अहाते में दाख़िल हुई और ओब्लोन्स्की ने दरवाज़े पर, जिसके सामने स्लेज खड़ी थी, ज़ोर की घण्टी बजायी।

दरवाज़ा खोलनेवाले दरबान से यह पूछे बिना कि आन्ना घर पर है या नहीं, ओब्लोन्स्की ड्योढ़ी में चला गया। लेविन उसके पीछे-पीछे चलता जा रहा था और उसके मन में इस बात की अधिकाधिक शंका बढ़ती जा रही थी कि वह अच्छा कर रहा है या बुरा।

दर्पण में झांकने पर लेविन ने देखा कि उसका चेहरा लाल है, किन्तु उसे यक़ीन था कि वह नशे में नहीं है और क़ालीन से ढके ज़ीने पर ओब्लोन्स्की के पीछे-पीछे ऊपर चढ़ चला। ऊपर पहुंचने पर नौकर ने घर के आदमी की तरह ओब्लोन्स्की के सामने सिर झुकाकर स्वागत किया और उससे पूछने पर पता चला कि आन्ना अर्कादयेव्ना के पास श्रीमान वोर्कूयेव आये हुए हैं।

"वे कहां हैं?"

---

* सुरा-उन्माद। (लैटिन)

"अध्ययन-कक्ष में।"

लकड़ी की काले रंग की दीवारों वाले छोटे-से भोजन-कक्ष को लांघकर ओब्लोन्स्की और लेविन नर्म क़ालीन पर चलते हुए अध-अंधेरे अध्ययन-कक्ष में दाख़िल हुए, जिसमें बड़े, गहरे रंग के शेडवाला लैम्प जल रहा था। एक अन्य, प्रकाश-क्षेपक लैम्प दीवार पर रोशन था और नारी के पूरे क़दवाले एक बड़े छविचित्र पर प्रकाश डाल रहा था। लेविन का बरबस इसकी ओर ध्यान गया। यह इटली में मिख़ाइलोव द्वारा बनाया गया आन्ना का छविचित्र था। ओब्लोन्स्की जब तक बेल-पौधों से ढकी झंझरी के पीछे गया और वहां से आनेवाली मर्दाना आवाज़ ख़ामोश हो गयी, लेविन इसी बीच इस छविचित्र को देखता रहा, जो बढ़िया रोशनी में मानो चौखटे से बाहर निकलती-सी प्रतीत हो रहा था और वह उससे अपनी नज़र हटाने में असमर्थ था। वह तो यह भी भूल गया कि कहां है और जो कुछ कहा जा रहा था, उसे न सुनते हुए एकटक इस अद्भुत छविचित्र को देखे जाता था। यह चित्र नहीं, बल्कि काले घुंघराले बालों, नंगे कंधों और बांहों वाली एक जीती-जागती अत्यधिक सुन्दर नारी थी, जिसके कोमल, मधुर होंठों पर हल्की-सी स्वप्निल मुस्कान अंकित थी और जो मानो प्यार और विजयोल्लास से पूर्ण आंखों से उसकी ओर देख रही थी, जिससे उसे झेंप अनुभव हो रही थी। वह इसलिये जीवित नहीं थी कि उससे सुन्दर थी, जितनी कोई जीवित नारी हो सकती है।

"मुझे बहुत ख़ुशी है," लेविन को अचानक अपने निकट आवाज़ सुनाई दी, जो स्पष्टतः उसे ही सम्बोधित कर रही थी। यह उसी नारी का स्वर था, जिसे वह मन्त्रमुग्ध होकर छविचित्र में देख रहा था। आन्ना उसके स्वागत के लिये झंझरी के पीछे से निकल आई थी और लेविन ने अध्ययन-कक्ष के धुंधलके में छविचित्र वाली उसी नारी को विभिन्न नीली झलकों की काली पोशाक पहने हुए अपने सामने देखा। वह न तो छविचित्र वाली मुद्रा में थी और न उसके चेहरे पर वही भावाभिव्यक्ति थी, किन्तु उसमें वैसा ही अनुपम सौन्दर्य था, जैसा चित्रकार ने अंकित किया था। वास्तविक जीवन में वह उतनी अधिक चकाचौंध करनेवाली नहीं थी, किन्तु उसके जीवित रूप में कुछ ऐसा नया और आकर्षक था, जो छविचित्र में नहीं था।

आन्ना उसके स्वागत को उठकर आयी थी और उससे मुलाक़ात होने पर अपनी ख़ुशी को छिपा नहीं रही थी। जिस शान्त भाव से आन्ना ने अपना छोटा-सा और दृढ़ हाथ लेविन की ओर बढ़ाया, वोर्कूयेव से उसका परिचय करवाया और लाल बालों वाली प्यारी-सी लड़की की तरफ़ संकेत किया, जो वहीं निकट बैठी हुई काम कर रही थी और जिसे उसने अपनी अभिभाविता बताया, इससे स्पष्ट था कि यह ऊंची सोसाइटी वाली नारी है – सदा शान्त और स्वाभाविक। लेविन इस भाव से परिचित था और उसके लिये यह सुखद था।

"मुझे बहुत, बहुत ख़ुशी हुई है," आन्ना ने दोहराया और न जाने क्यों उसके मुंह से निकलने पर इन साधारण शब्दों ने लेविन के लिये विशेष महत्व प्राप्त कर लिया। "मैं आपको बहुत अर्से से जानती हूं और स्तीवा के साथ आपकी दोस्ती और आपकी बीवी के कारण चाहती हूं... उसके साथ मेरी बहुत थोड़ी-सी ही जान-पहचान है, मगर उसने मेरे दिल पर एक सुन्दर फूल की सी, हां, फूल की सी छाप छोड़ी है। और अब वह जल्द ही मां बननेवाली है!"

आन्ना किसी तरह की झिझक या घबराहट के बिना इतमीनान से बोल रही थी और कभी-कभी अपने भाई और लेविन की ओर देख लेती थी। लेविन को लगा कि उसने भी आन्ना पर अच्छा प्रभाव डाला है और उसकी संगत में वह फ़ौरन अपने को ऐसे घुला-मिला, स्वाभाविक और सुखी अनुभव करने लगा, मानो उसे बचपन से जानता हो।

"इवान पेत्रोविच वोर्कूयेव के साथ हम इसीलिये अलेक्सेई के कमरे में आ बैठे थे," आन्ना ने अपने भाई के इस प्रश्न का कि सिगरेट पी जा सकती है या नहीं जवाब देते हुए कहा, "कि यहां सिगरेट पी जा सकती है," और लेविन की तरफ़ देखकर यह पूछने के बजाय कि वह सिगरेट पीता है या नहीं, उसने कछुए के खोल का सिगरेट केस अपनी ओर खींचा और सिगरेट निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

"आज तुम्हारी तबियत कैसी है?" भाई ने पूछा।

"कुछ बुरी नहीं। स्नायु हमेशा की तरह हैं।"

"असाधारण रूप से अच्छा है न?" ओब्लोन्स्की ने छविचित्र पर

टिकी लेविन की नज़र को लक्षित करते हुए पूछा।

"मैंने उससे बेहतर छविचित्र नहीं देखा।"

"और असाधारण रूप से मूल के अनुरूप है, ठीक है न?" वोर्कूयेव ने कहा।

लेविन ने छविचित्र से मूल पर दृष्टि डाली। आन्ना के चेहरे पर उस समय एक विशेष कान्ति आ गयी, जब उसने लेविन की दृष्टि अपने चेहरे पर अनुभव की। लेविन लज्जारुण हो गया और अपनी झेंप को छिपाने के लिये उसने यह पूछना चाहा कि डौली से मिले क्या उसे बहुत दिन हो गये हैं। किन्तु इसी समय आन्ना खुद बोल उठी –

"इवान पेत्रोविच वोर्कूयेव के साथ हम अभी वाश्चेन्कोव के नवीनतम चित्रों की चर्चा कर रहे थे। आपने वे देखे हैं?"

"हां, देखे हैं," लेविन ने उत्तर दिया।

"मैं क्षमा चाहती हूं, आप कुछ कहना चाहते थे, मैं बीच में ही बोल पड़ी।"

लेविन ने पूछा कि उसे डौली से मिले क्या बहुत दिन हो गये हैं।

"वह कल यहां आई थी। हाई स्कूल में ग्रीशा की पढ़ाई को लेकर वह बहुत खिन्न है। लगता है कि लैटिन भाषा के अध्यापक ने लड़के के साथ ज़्यादती की है।"

"हां, मैंने वे चित्र देखे हैं और मुझे बहुत पसन्द नहीं आये," लेविन ने आन्ना द्वारा आरम्भ की गयी बातचीत की ओर लौटते हुए कहा।

लेविन ने अब कला के सम्बन्ध में वैसे रस्मी ढंग से बात नहीं की, जैसे आज सुबह की थी। आन्ना के साथ बात करते हुए हर शब्द एक विशेष महत्त्व प्राप्त कर लेता था, उसके साथ बात करना अच्छा लगता था और आन्ना की बात सुनना तो और भी अधिक सुखद था।

आन्ना न केवल स्वाभाविक ढंग से और समझदारी की बातें कर रही थी, बल्कि समझदारी की ओर लापरवाही से भी। वह अपने विचारों को कोई महत्त्व न देकर अपने साथ बात करनेवाले के विचारों को बहुत महत्त्व देती थी।

कला की नई प्रवृत्ति के बारे में, फ़्रांसीसी चित्रकार द्वारा बनाये गये इंजील के नये चित्रों के सम्बन्ध में बात चल पड़ी। वोर्कूयेव ने चित्रकार

पर भद्देपन की हद तक ले जाये गये यथार्थवाद का आरोप लगाया। लेविन ने कहा कि फ़्रांसीसी ही कला में कल्पित तत्वों को सबसे अधिक दूर तक ले गये हैं और इसलिये वही यथार्थवाद की ओर लौटने को एक बड़ा गुण मानते हैं, कि वे ढोंग नहीं करते हैं, इसी में उन्हें कविता दिखायी देती है।

लेविन को अपने द्वारा कही गयी समझदारी की किसी बात से भी इतनी अधिक ख़ुशी नहीं हुई थी, जितनी ऊपर कही गयी बात से। लेविन के उक्त विचार का अचानक ऊंचा मूल्यांकन करने पर आन्ना का चेहरा सहसा खिल उठा। वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"मैं वैसे ही हंस रही हूं," वह बोली, "जैसे कोई बहुत समानता देखने पर हंसता है। आपने जो कुछ कहा है, वह आज की पूरी फ़्रांसीसी कला – चित्रकला, यहां तक कि साहित्य – ज़ोला, दोदे – के बारे में भी सही है। किन्तु सम्भवतः हमेशा ऐसा होता है कि कलाकार कल्पित, अनुमानित आकृतियों से अपने conceptions* बनाते हैं और फिर जब सभी तरह के combinaisons** करके कल्पित आकृतियों से ऊब जाते हैं तो अधिक स्वाभाविक और वास्तविक आकृतियां बनाने लगते हैं।"

"यह बिल्कुल सही है!" वोर्कूयेव ने कहा।

"तो आप लोग क्लब में थे?" आन्ना ने अपने भाई से पूछा।

"हां, हां, कमाल की है यह नारी!" लेविन अपनी सुधबुध भूलकर और आन्ना के सुन्दर, गतिशील चेहरे को, जो अब अचानक बिल्कुल बदल गया था, एकटक देखते हुए सोच रहा था। अपने भाई की ओर झुककर आन्ना क्या कह रही थी, लेविन ने वह नहीं सुना, मगर उसके चेहरे के बदले हुए भाव से वह आश्चर्यचकित रह गया। एक क्षण पहले जो चेहरा उस पर व्याप्त शान्ति के कारण इतना सुन्दर लग रहा था, वही अब सहसा अजीब जिज्ञासा, क्रोध और गर्व का भाव व्यक्त करने लगा था। किन्तु ऐसा कुछ देर तक ही रहा। उसने ऐसे आंखें सिकोड़ीं, मानो कुछ याद कर रही हो।

"पर ख़ैर, इसमें किसी की दिलचस्पी नहीं है," आन्ना ने कहा और

---

* धारणायें। (फ़्रांसीसी)

** संयोजन। (फ़्रांसीसी)

फिर अंग्रेज़ लड़की को सम्बोधित करके बोली – "Please, order the tea in the drawing-room.*"

लड़की उठकर बाहर चली गयी।

"तो यह परीक्षा में सफल रही?" ओब्लोन्स्की ने पूछा।

"बहुत अच्छी तरह। बड़ी लायक़ लड़की है और इसका स्वभाव भी बहुत अच्छा है।"

"आख़िर यही होगा कि तुम इसे अपनी बेटी से ज़्यादा प्यार करने लगोगी।"

"ऐसी बात सिर्फ़ कोई मर्द ही कह सकता है। प्यार में अधिक या कम का प्रश्न नहीं होता। बेटी को एक तरह से प्यार करती हूं और इस लड़की को दूसरी तरह से।"

"मैं आन्ना अर्काद्येव्ना से कहता हूं," वोर्कूयेव बोला, "कि अगर वह अपनी उस शक्ति का सौवां भाग भी रूसी बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में लगातीं, जितनी इस अंग्रेज़ लड़की के लिये लगा रही हैं, तो आन्ना अर्काद्येव्ना बहुत बड़ा और उपयोगी काम पूरा करतीं।"

"आप कुछ भी क्यों न कहें, मगर मैं ऐसा न कर पाती। काउंट अलेक्सेई किरील्लोविच" (व्रोन्स्की का नाम लेते हुए उसने अनुरोधपूर्ण भीरु दृष्टि से लेविन की ओर देखा और लेविन ने बरबस आदर तथा अनुमोदनपूर्ण दृष्टि से उत्तर दिया) "ने मुझे गांव के स्कूल में दिलचस्पी लेने के लिये बहुत प्रेरित किया। मैं कई बार स्कूल गई थी। वहां बड़े प्यारे बच्चे हैं, मगर इस काम में मेरा मन नहीं लगा। आप शक्ति की बात करते हैं। किन्तु शक्ति का आधार प्यार होता है। और प्यार कहां से लाया जाये, इसके लिये आदमी अपने को मजबूर तो नहीं कर सकता। इस लड़की को मैं चाहने लगी हूं, ख़ुद भी नहीं जानती कि ऐसा क्यों है।"

आन्ना ने फिर से लेविन की ओर देखा। आन्ना की मुस्कान और दृष्टि – सभी कुछ यह कह रहा था कि वह अपनी सभी बातें केवल उसे ही सम्बोधित करके कह रही है, कि वह उसकी राय को बहुत मूल्यवान

---

* कृपया मेहमानाखाने में चाय का प्रबन्ध कर देने को कह दीजिये। (अंग्रेज़ी)

मानती है और पहले से यह जानती है कि वे एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं।

"मैं उस चीज़ को बहुत अच्छी तरह से समझता हूं," लेविन ने उत्तर दिया। "स्कूल या इसी तरह की दूसरी संस्थाओं में आदमी सच्चे मन से काम नहीं कर सकता और मेरे ख़्याल में इसीलिये इस तरह की ख़ैराती संस्थाओं से हमेशा बहुत कम लाभ होता है।"

आन्ना कुछ देर ख़ामोश रही और फिर मुस्करा दी।

"हां, ऐसा ही है," उसने सहमति प्रकट की। "मैं कभी ऐसा न कर पाती। Je n'ai pas le coeur assez large* कि नाक में दम कर देने वाली लड़कियों के पूरे यतीमख़ाने को प्यार कर सकती। Cela ne m'a jamais réussi.** बहुत-सी ऐसी औरतें हैं, जिन्होंने इसी से अपनी position sociale*** बना ली है। और ख़ास तौर पर अब तो," आन्ना ने उदासी और मानो अपने रहस्य का साझीदार बनाने का भाव लाते और बाहरी तौर पर भाई को, किन्तु स्पष्टतः लेविन को सम्बोधित करते हुए कहा, "अब, जब मुझे किसी काम में अपने को लगाने की ज़रूरत है, मैं यह नहीं कर सकती।" और अचानक उसकी त्योरी चढ़ गयी (लेविन समझ गया कि अपनी चर्चा करने के कारण अपने से अप्रसन्न होने से ही उसकी त्योरी चढ़ी है) और उसने बातचीत का विषय बदल दिया। "मैं आपके बारे में जानती हूं," उसने लेविन से कहा, "कि आप अच्छे नागरिक नहीं हैं और जैसे सम्भव हो सका मैंने आपकी हिमायत की।"

"कैसे आपने मेरी हिमायत की?"

"आप पर जैसे हमले हुए, उन्हीं के मुताबिक़। पर ख़ैर, चाय तो पियेंगे न?" इतना कहकर आन्ना उठी और उसने मोरक्को के चमड़े की जिल्द वाली एक किताब हाथ में उठा ली।

"इसे मुझे दे दीजिये, आन्ना अर्काद्येव्ना," किताब की तरफ़ इशारा करते हुए वोर्कूयेव ने कहा। "यह छपने लायक़ है।"

---

* मेरा दिल इतना बड़ा नहीं है। (फ़ांसीसी)

** मुझसे ऐसा कभी नहीं हो सका। (फ़ांसीसी)

*** सार्वजनिक प्रतिष्ठा। (फ़ांसीसी)

"अजी नहीं, अभी इसमें बहुत कुछ करना बाक़ी है।"

"मैंने इसे बता दिया है," ओब्लोन्स्की ने लेविन की ओर संकेत करते हुए बहन से कहा।

"व्यर्थ ही ऐसा किया तुमने। मेरा लेखन तो जेल के क़ैदियों द्वारा बनायी जाने वाली उन बेल-बूटोंदार टोकरियों के समान है, जो लीज़ा मेर्त्सालोवा मुझे कभी बेचा करती थी। वह किसी सार्वजनिक संस्था के बन्दी-विभाग की अध्यक्षा थी", आन्ना ने लेविन को सम्बोधित किया। "और ये बदक़िस्मत सब्र के करिश्मे करते थे।"

असाधारण रूप से पसन्द आनेवाली इस नारी में लेविन को एक अन्य लक्षण भी दिखाई दिया। बुद्धि, सजीलापन और सुन्दरता के अलावा उसमें ईमानदारी भी थी। वह लेविन से अपनी स्थिति की कठिनाइयां, जो बहुत थीं, नहीं छिपाना चाहती थी। इतना कहकर उसने गहरी सांस ली और उसके चेहरे पर सहसा कठोरता का भाव आ गया, वह मानो जड़ हो गया। चेहरे पर ऐसा भाव आने से वह पहले से भी अधिक सुन्दर प्रतीत हो रही थी। किन्तु यह नया भाव था। यह ख़ुशी से चमकते और दूसरों को ख़ुशी देनेवाले उन भावों के घेरे से बाहर था, जिन्हें चित्रकार ने ग्रहण करके छविचित्र में अंकित कर दिया था। लेविन ने फिर से आन्ना के छविचित्र और भाई का हाथ थामकर ऊंचे दरवाज़े को लांघती हुई उसकी आकृति पर फिर से नज़र डाली और उसे उसके प्रति संवेदना तथा दया की अनुभूति हुई और इस चीज़ से वह स्वयं चकित रह गया।

आन्ना ने लेविन और वोर्कूयेव से मेहमानख़ाने में जाने का अनुरोध किया और स्वयं भाई के साथ बात करने के लिये वहीं ठहर गयी। "तलाक़ के बारे में, व्रोन्स्की के बारे में कि वह क्लब में क्या कर रहा है या मेरे बारे में?" लेविन सोच रहा था। ओब्लोन्स्की के साथ आन्ना क्या बात कर रही है, यह प्रश्न उसे इतना परेशान कर रहा था कि उसने लगभग वह कुछ भी नहीं सुना, जो वोर्कूयेव आन्ना द्वारा बच्चों के लिये लिखे गये उपन्यास के बारे में कह रहा था।

चाय के वक़्त भी मधुर और सारपूर्ण बातचीत चलती रही। न केवल ऐसा एक क्षण भी नहीं आता था कि बातचीत के लिये कोई विषय ढूंढ़ने की आवश्यकता अनुभव हो, बल्कि, इसके विपरीत, ऐसे लग-

ता था कि जो कुछ कहने को मन हो रहा था, वह कहा नहीं जा सका और दूसरे की बात सुनने को बड़े चाव से चुप रहा जा सकता है। लेविन को लगता था कि जो कुछ आन्ना स्वयं कहती थी, वही नहीं, बल्कि वोर्कूयेव और ओब्लोन्स्की भी जो कुछ कहते थे, वह भी आन्ना के ध्यान और उसकी टीका-टिप्पणियों के फलस्वरूप विशेष महत्त्व प्राप्त कर लेता था।

दिलचस्प बातचीत सुनते हुए लेविन लगातार आन्ना के सौन्दर्य, उसकी समझदारी, उसके ज्ञान और साथ ही सरलता तथा सहृदयता पर मुग्ध हो रहा था। वह बातें सुन रहा था, ख़ुद भी कुछ कहता था और लगातार आन्ना के बारे में, उसके आन्तरिक जीवन के बारे में सोच रहा था, उसकी भावनाओं का अनुमान लगाने का प्रयास कर रहा था। पहले उसे इतना बुरा समझनेवाला लेविन अपने विचारों की अजीब प्रक्रिया के फलस्वरूप अब उसको सही मान रहा था, उसे उस पर तरस आ रहा था और यह शंका हो रही थी कि व्रोन्स्की आन्ना को पूरी तरह समझ पाने में समर्थ है या नहीं। रात के ग्यारह बजे ओब्लोन्स्की जब घर जाने के लिये उठा (वोर्कूयेव तो पहले ही जा चुका था), तो लेविन को लगा कि वह अभी-अभी यहां आया है। वह भी भारी मन से उठकर खड़ा हो गया।

"नमस्ते," लेविन का हाथ थामे और अपनी ओर खींचती दृष्टि से उसकी आंखों में झांकते हुए आन्ना ने कहा। "मैं बहुत ख़ुश हूं que la glace est rompue.*"

आन्ना ने उसका हाथ छोड़ दिया और आंखें सिकोड़ लीं।

"अपनी पत्नी से कहियेगा कि मैं उसे पहले की भांति प्यार करती हूं और अगर वह मुझे मेरी स्थिति के लिये क्षमा नहीं कर सकती, तो मैं चाहती हूं कि वह कभी मुझे क्षमा न करे। क्षमा करने के लिये वह सब कुछ सहना ज़रूरी है, जो मैंने सहा है और इससे उसे भगवान बचाये।"

"हां, मैं अवश्य ही उससे यह कह दूंगा," लेविन ने झेंप से लाल होते हुए कहा।

---

* कि बर्फ़ टूट गयी। (फ़्रांसीसी)

"कैसी अद्भुत, प्यारी और दयनीय नारी है," ओब्लोन्स्की के साथ पाले से ठिठुरी हवा में बाहर आते हुए लेविन सोच रहा था।

"क्यों, क्या ख़्याल है? मैंने कहा था न तुमसे," ओब्लोन्स्की बोला, जो यह देख रहा था कि लेविन पूरी तरह से पराजित हो गया है।

"हां," लेविन ने सोचते हुए उत्तर दिया, "अद्भुत नारी है! यही नहीं कि समझदार है, बल्कि असाधारण रूप से सहृदय भी है। बहुत ही दया आ रही है मुझे उस पर!

"भगवान ने चाहा, तो अब सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। गो पहले से अपनी राय नहीं ज़ाहिर करनी चाहिये," ओब्लोन्स्की ने बग्घी का दरवाज़ा खोलते हुए कहा। "तो नमस्ते, हमें एक ही दिशा में नहीं जाना है।"

आन्ना के बारे में, उन सभी साधारण बातों के बारे में लगातार सोचता हुआ, जो उसके साथ हुई थीं, और साथ ही उसके चेहरे की सभी तफ़सीलों को याद करते हुए तथा उसके प्रति अधिकाधिक सहानुभूति और दया अनुभव करते हुए लेविन घर पहुंच गया।

घर पर नौकर कुज़्मा ने उसे बताया कि येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना ठीक-ठाक हैं, कि कुछ ही देर पहले उनकी बहनें उनके पास से गयी हैं और फिर उसने दो पत्र लेविन को सौंप दिये। लेविन ने ड्योढ़ी में ही, ताकि बाद को उनकी तरफ़ ध्यान न देना पड़े, उन्हें पढ़ लिया। एक ख़त कारिन्दे सोकोलोव का था। उसने लिखा था कि गेहूं नहीं बेचा जा सकता, क्योंकि साढ़े पांच रूबल से अधिक दाम नहीं मिलते और पैसे पाने का अन्य कोई उपाय नहीं है। दूसरा ख़त बहन का था। उसने भाई को अपने पत्र में इसलिये भला-बुरा कहा था कि उसने अभी तक उसका काम नहीं किया था।

"अगर साढ़े पांच रूबल से अधिक दाम नहीं मिलते, तो इसी दाम पर बेच देंगे," लेविन ने बड़ी आसानी से पहला मसला हल कर डाला, जो पहले उसे इतना ज़्यादा मुश्किल लगता था। "सचमुच आश्चर्य की बात है कि यहां हर समय व्यस्त रहता हूं," उसने दूसरे पत्र के सम्बन्ध

में सोचा। बहन के सामने वह अपने को इस चीज़ के लिये दोषी अनुभव कर रहा था कि उसने अब तक उसका अनुरोध पूरा नहीं किया था। "आज भी मैं अदालत में नहीं गया, मगर आज तो सचमुच बिल्कुल फ़ुरसत नहीं थी।" और यह तय करके कि कल ज़रूर ही इस काम को करेगा, अपनी पत्नी के पास चला गया। उसके पास जाते हुए लेविन ने बिताये गये सारे दिन पर मन ही मन जल्दी-जल्दी नज़र डाल ली। दिन भर बस बातें ही बातें होती रही थीं, जिन्हें उसने सुना और जिनमें उसने भाग लिया था। सभी बातें ऐसे विषयों के बारे में थीं, जिनमें, अगर वह अकेला और गांव में होता, तो उसने कभी दिलचस्पी न ली होती, मगर यहां वे बहुत दिलचस्प थीं। सभी बातें बहुत अच्छी थीं – सिर्फ़ दो चीज़ें ही ऐसी थीं, जिन्हें इतना अच्छा नहीं कहा जा सकता था। एक तो वह, जो उसने मछली के बारे में कहा था और दूसरे, आन्ना के प्रति वह जो दया भाव अनुभव कर रहा था, उसमें कोई चीज़ ठीक नहीं थी।

लेविन ने अपनी पत्नी को उदास और ऊबी-ऊबी सी पाया। तीनों बहनों का भोजन करना बहुत मज़ेदार रहा होता, मगर इस चीज़ से इसका मज़ा किरकिरा हो गया कि बाद में वे लेविन की राह देखती रहीं, देखती रहीं, तीनों को ऊब अनुभव होने लगी, बहनें चली गयीं और वह अकेली रह गयी।

"तुमने क्या किया?" लेविन से आंखें मिलाते हुए, जिनमें विशेष सन्देहपूर्ण चमक थी, कीटी ने पूछा। किन्तु इसलिये कि उसके सब कुछ बताने में ख़लल न पड़े, उसने अपनी उत्सुकता को छिपा लिया और बढ़ावा देती मुस्कान से उसकी यह बात सुनने लगी कि उसने कैसे शाम गुज़ारी।

"मुझे व्रोन्स्की से भेंट होने की बहुत ख़ुशी हुई। उसके साथ मैंने अपने को बहुत स्वाभाविक और तनावहीन-सा अनुभव किया। बात यह है कि अब मैं कोशिश करूंगा कि उससे फिर भेंट न हो, लेकिन अच्छा है कि यह अटपटापन ख़त्म हो गया," लेविन ने कहा और यह याद आने पर कि "उससे फिर भेंट न हो" की कोशिश करते हुए वह उसी समय आन्ना के यहां चला गया था, उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी। "हम कहते हैं कि आम लोग पीते हैं; मालूम नहीं, कौन ज़्यादा

पीता है, आम लोग या हमारी श्रेणी के लोग। आम लोग तो पर्व-त्योहार पर ही पीते हैं, मगर..."

किन्तु कीटी को इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि आम लोग कैसे पीते हैं। उसने देखा कि लेविन के चेहरे पर लाली दौड़ गयी है और उसने इसका कारण जानना चाहा।

"तो उसके बाद तुम कहां गये?"

"स्तीवा ने आन्ना अर्कादियेव्ना के यहां चलने का बहुत अनुरोध किया।"

इतना कहने के बाद उसका चेहरा और भी लाल हो गया और इस बारे में उसके सन्देह कि आन्ना के यहां जाकर उसने अच्छा या बुरा किया, पूरी तरह से ख़त्म हो गये। अब वह जानता था कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था।

आन्ना का नाम लेने पर कीटी की आंखें विशेष रूप से फैल गयीं और चमक उठीं, किन्तु बड़ा यत्न करके उसने अपनी उत्तेजना को छिपा लिया और उसे धोखा दे दिया।

"अच्छा!" उसने इतना ही कहा।

"मुझे विश्वास है कि तुम मेरे वहां जाने का बुरा नहीं मानोगी। स्तीवा ने अनुरोध किया और डौली भी ऐसा ही चाहती थी," लेविन कहता गया।

"जी नहीं," कीटी ने कहा, मगर उसकी आंखों में उसने देखा कि वह बड़ी कोशिश से अपनी भावना को दबा रही है और इससे लेविन किसी अच्छे परिणाम की आशा नहीं कर सकता था।

"वह बहुत प्यारी, बहुत, बहुत ही दयनीय और अच्छी नारी है," आन्ना, उसकी दिलचस्पियों के बारे में और उसने जो कुछ कहने को कहा था, वह बताते हुए लेविन बोला।

"हां, स्पष्ट है कि वह बहुत दयनीय है," लेविन की बात समाप्त होने पर कीटी ने कहा। "पत्र कहां से आये हैं?"

लेविन ने उसे बताया और कीटी के शान्त अन्दाज़ पर विश्वास करते हुए कपड़े बदलने चला गया।

लौटने पर उसने कीटी को उसी आराम कुर्सी पर बैठे पाया। निकट जाने पर उसने लेविन की ओर देखा और फूट-फूटकर रोने लगी।

"क्या हुआ? क्या हुआ?" लेविन ने पहले से ही यह जानते हुए कि "क्या हुआ है" पूछा।

"तुम्हें उस भयानक औरत से मुहब्बत हो गयी है, उसने तुम पर जादू-टोना कर दिया है। तुम्हारी आंखों से ही यह नज़र आ रहा था। हां, हां! क्या नतीजा हो सकता है इस सब का? तुम क्लब में पीते रहे, पीते रहे, तुमने जुआ खेला और फिर किसके... किसके पास गये? नहीं, हम यहां से चले जायेंगे... मैं कल ही चली जाऊंगी।"

लेविन बहुत देर तक अपनी पत्नी को शान्त नहीं कर पाया। आख़िर यह मानने पर ही वह उसे शान्त कर पाया कि दया की भावना ने शराब के नशे के साथ मिलकर उसे ग़लत रास्ते पर डाल दिया, वह आन्ना के कपटपूर्ण प्रभाव में आ गया और अब उससे कन्नी काटेगा। एक बात, जिसे उसने सच्चे दिल से स्वीकार किया, यह थी कि इतने लम्बे अर्से से मास्को में केवल बातों और खाने-पीने में समय बिताते हुए उसकी अक्ल ठिकाने नहीं रही है। वे दोनों रात के तीन बजे तक बातें करते रहे। केवल तीन बजे ही उनके बीच इतनी सुलह हो पायी कि वे सो सके।

(१२)

मेहमानों को विदा करने के बाद आन्ना बैठी नहीं और कमरे में इधर-उधर चक्कर काटने लगी। बेशक अनजाने ही (जैसा कि वह पिछले अर्से में सभी जवान मर्दों के मामले में करती थी) उसने सारी शाम लेविन में अपने प्रति प्रेम-भावना पैदा करने की हर सम्भव कोशिश की थी, और चाहे वह जानती थी कि एक वफ़ादार और विवाहित व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए तथा एक ही शाम में जितनी सम्भव था, उसे इसमें सफलता मिली थी, और बेशक वह उसे बहुत अच्छा लगा था (पुरुषों की दृष्टि से व्रोन्स्की और लेविन के बीच बहुत अन्तर के बावजूद उसने एक नारी के नाते उनमें उस सामान्य तत्त्व को देख लिया था, जिसके कारण कीटी ने व्रोन्स्की और लेविन – दोनों को ही प्यार किया था), तो भी उसके कमरे से बाहर जाते ही उसने उसके बारे में सोचना बन्द कर दिया।

भिन्न रूपों में एक ही विचार लगातार उसके मस्तिष्क में आ रहा था। "अगर मैं दूसरों को ऐसे प्रभावित कर पाती हूं, अपनी पत्नी को प्यार करनेवाले इस पारिवारिक व्यक्ति को भी, तो 'वह' मेरे प्रति इतना उदासीन क्यों है?.. ऐसा नहीं कि उदासीन है, मैं जानती हूं कि वह मुझे प्यार करता है। किन्तु अब कोई नई चीज़ हमें एक-दूसरे से अलग करती है। सारी शाम वह घर पर क्यों नहीं है? उसने स्तीवा से यह कहलवाया था कि याश्विन को नहीं छोड़ सकता और जुए के दौरान उस पर नज़र रखना ज़रूरी है। याश्विन क्या कोई बच्चा है? लेकिन मान लिया कि यह सच है। वह कभी झूठ नहीं बोलता। मगर इस सचाई में एक दूसरी बात भी है। वह इस मौक़े से यह दिखाकर ख़ुश है कि उसकी कुछ दूसरी ज़िम्मेदारियां भी हैं। मैं यह जानती हूं और इससे सहमत भी हूं। लेकिन इसका सबूत क्यों पेश करना चाहता है? वह यह सिद्ध करना चाहता है कि मेरे प्रति उसका प्यार उसकी आज़ादी में बाधा नहीं बनना चाहिये। किन्तु मुझे सबूतों की आवश्यकता नहीं, मुझे प्रेम चाहिये। उसे यहां, मास्को में, मेरे जीवन की सारी भयानकता को समझना चाहिये। क्या मैं जी रही हूं? मैं जी नहीं रही, बल्कि गांठ खुलने की प्रतीक्षा कर रही हूं, जो खिंचती, और अधिक खिंचती ही चली जा रही है। अभी तक जवाब नहीं आया! स्तीवा कहता है कि वह अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के पास नहीं जा सकता। और मैं भी उसे और नहीं लिख सकती। मैं कुछ भी करने में असमर्थ हूं, कोई भी पहल नहीं कर सकती, कुछ भी बदल नहीं सकती, अपने को क़ाबू में रख रही हूं, इन्तज़ार कर रही हूं, ऐसी चीज़ें ढूंढ़ती रहती हूं, जिनमें अपना ध्यान लगा सकूं — अंग्रेज़ ट्रेनर का परिवार, उपन्यास लिखना, पढ़ना, किन्तु यह सब तो आत्म-प्रवंचना है, मोर्फ़िया ही है। उसे मुझ पर तरस आना चाहिये," आन्ना ने यह अनुभव करते हुए कहा कि कैसे अपने प्रति दया के आंसू उसकी आंखों में उमड़े आ रहे हैं।

आन्ना को व्रोन्स्की के ज़ोर से घंटी बजाने की आवाज़ सुनाई दी और उसने झटपट अपने आंसू पोंछ डाले। आंसू ही नहीं पोंछे, बल्कि लैम्प के निकट बैठकर किताब खोल ली और शान्त होने का ढोंग करने लगी। व्रोन्स्की को यह दिखाना ज़रूरी था कि वह वायदे के मुताबिक़ उसके न लौटने से नाख़ुश है, सिर्फ़ नाख़ुश है, मगर अपने दुख, ख़ास

तौर पर अपने प्रति दया की भावना को उसे किसी तरह भी उसके सामने प्रकट नहीं होने देना चाहिये। वह ख़ुद अपने पर तरस खा सकती है, मगर उसे ऐसा नहीं करना चाहिये। आन्ना संघर्ष नहीं चाहती थी, व्रोन्स्की की इसीलिये भर्त्सना करती थी कि वह संघर्ष चाहता है और अब स्वयं अनचाहे ही ऐसी स्थिति पैदा कर रही थी।

"तो तुम उदास नहीं हुईं?" ख़ुश-ख़ुश और बड़े रंग में आन्ना के पास आकर व्रोन्स्की ने कहा। "जुआ कैसा भयानक जनून है!"

"नहीं, मैं उदास नहीं हुई और एक अर्से से उदास न होना सीख चुकी हूं। स्तीवा और लेविन आये थे।"

"हां, वे तुम्हारे पास आना चाह रहे थे। तो तुम्हें लेविन कैसा लगा?" आन्ना के क़रीब बैठते हुए उसने पूछा।

"बहुत अच्छा लगा। वे कुछ ही देर पहले गये हैं। याश्विन का क्या हुआ?"

"शुरू में उसने सत्रह हज़ार जीते। मैंने उसे चलने को कहा। वह तो चल [illegible]ो दिया था। मगर फिर लौट गया और अब हार में है।"

"तो तुम वहां किसलिये ठहरे थे?" व्रोन्स्की की तरफ़ अचानक नज़र उठाते हुए उसने पूछा। आन्ना के चेहरे पर कठोरता और शत्रुता का भाव था। "तुमने स्तीवा से कहा था कि याश्विन को वहां से ले जाने के लिये रुक रहे हो। मगर तुम उसे फिर भी वहीं छोड़ आये।"

व्रोन्स्की के चेहरे पर भी संघर्ष के लिये तत्परता का भाव झलक उठा।

"पहली बात तो यह है कि मैंने स्तीवा से तुम्हें कुछ भी कहने को नहीं कहा था और दूसरे, मैं कभी झूठ नहीं बोलता हूं और मुख्य बात यह है कि मैं रुकना चाहता था और रुक गया," उसने त्योरी चढ़ाकर कहा। "आन्ना, किसलिये, किसलिये?" उसने घड़ी भर चुप रहने के बाद उसकी ओर झुकते हुए कहा और इस आशा से हथेली खोल दी कि वह उस पर अपनी हथेली रख देगी।

सुलह और मेल के इस आह्वान से आन्ना को ख़ुशी हुई। किन्तु किसी अजीब, मनहूस ताक़त ने उसे ऐसा नहीं करने दिया, मानो संघर्ष के नियम उसे झुकने की अनुमति नहीं दे रहे थे।

"ज़ाहिर है कि तुम रुकना चाहते थे और रुक गये। तुम जो कुछ चाहते हो, वह करते हो। किन्तु तुम मुझसे यह क्यों कहते हो? किस-

लिये?" अधिकाधिक गुस्से में आते हुए उसने कहा। "क्या कोई तुम्हारे अधिकारों को चुनौती देता है? मगर तुम अपने को सही साबित करना चाहते हो और सही रहो।"

व्रोन्स्की ने अपनी खुली हुई हथेली बन्द कर ली, वह पीछे हट गया और उसके चेहरे पर पहले से भी अधिक हठ का भाव आ गया।

"तुम्हारे लिये यह ज़िद्द की बात है," व्रोन्स्की को एकटक देखते और उसमें झल्लाहट पैदा करनेवाले उसके चेहरे के भाव के लिये अचानक उपयुक्त शब्द पाते हुए उसने कहा, "हां, हां, ज़िद्द की बात है। तुम्हारे लिये तो यह सवाल है कि मुझ पर तुम्हारी विजय होती है या नहीं, और मेरे लिये ..." उसे फिर से अपने पर दया आई और वह मुश्किल से अपने आंसू रोक पायी। "काश, तुम्हें मालूम होता कि मेरे लिये महत्त्व की क्या बात है! जब मैं यह अनुभव करती हूं, जैसे कि इस समय अनुभव कर रही हूं, कि तुम मेरे प्रति शत्रु-भाव रखते हो, हां, हां, शत्रु-भाव, तो काश, तुम जान सकते कि मेरे लिये इसका क्या अर्थ है! काश, तुम्हें मालूम होता कि ऐसे क्षणों में मैं दुर्भाग्य के कितना निकट होती हूं, मुझे अपने से डर लगता है!" और अपनी सिसकियों को छिपाते हुए उसने मुंह मोड़ लिया।

"हम यह क्या कर रहे हैं?" आन्ना के हताशा-भाव से बेहद घबराकर, फिर से उसकी ओर झुकते, उसका हाथ अपने हाथ में लेकर चूमते हुए उसने कहा। "किसलिये? क्या मैं घर के बाहर कहीं मनबहलाव ढूंढ़ता हूं? क्या मैं औरतों की संगत से नहीं बचता हूं?"

"सो तो मैं आशा करती हूं!" आन्ना ने कहा।

"तो कहो कि तुम्हारे चैन के लिये मैं क्या करूं? तुम्हें सुखी देखने के लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूं," आन्ना की हताशा से विह्वल होकर व्रोन्स्की ने कहा, "ऐसे दुख से बचाने के लिये, जैसा कि तुम अब महसूस कर रही हो, मैं क्या नहीं करने को तैयार हूं, आन्ना," वह बोला।

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं," उसने जवाब दिया।" मैं खुद कारण नहीं जानती – एकाकी जीवन, या मेरे स्नायु वश में नहीं हैं... खैर, हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे। घुड़दौड़ में क्या हुआ? तुमने

मुझे कुछ नहीं बताया," आन्ना ने अपनी विजय की ख़ुशी को, जो आख़िर उसे ही प्राप्त हुई थी, छिपाते हुए पूछा।

व्रोन्स्की ने रात का खाना मंगवाया और आन्ना को घुड़दौड़ की तफ़सीलें बताने लगा। किन्तु उसके लहजे और उसकी आंखों से, जिनमें अधिकाधिक रुखाई आती जा रही थी, उसने समझ लिया कि व्रोन्स्की ने उसकी जीत के लिये उसे क्षमा नहीं किया है, कि ज़िद्द की वह भावना, जिसके विरुद्ध उसने संघर्ष किया था, फिर से उस पर हावी हो गयी है। वह उसके प्रति पहले से अधिक रुखाई दिखा रहा था मानो झुक जाने के लिये उसे अफ़सोस हो रहा हो। और आन्ना ने उसे विजय दिलानेवाले इन शब्दों – "मैं दुर्भाग्य के निकट होती हूं और मुझे अपने से डर लगता है" – को याद करके समझ लिया कि यह ख़तरनाक हथियार है और दूसरी बार इसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकेगा। उसने अनुभव किया कि प्यार के साथ-साथ, जो इन दोनों को बांधे था, उनके बीच संघर्ष की ऐसी दुर्भावना ने भी जड़ जमा ली है, जिसे वह उसके मन से नहीं निकाल सकती थी और अपने मन से निकालना तो उसके लिये और भी अधिक कठिन था।

(१३)

ऐसी कोई भी परिस्थितियां नहीं हैं, जिनका आदमी अभ्यस्त न हो जाये, ख़ास तौर पर अगर वह देखे कि उसके इर्द-गिर्द के सभी लोग वैसी ही परिस्थितियों में रह रहे हैं। तीन महीने पहले लेविन ने यह विश्वास न किया होता कि वह उन परिस्थितियों में चैन से सो सकता था, जिनमें आज था – कि निरुद्देश्य, बेतुका, सो भी अपने साधनों की सीमा से बाहर बेतुका जीवन बिताते हुए, शराब के नशे में चूर होने के बाद (क्लब में जो कुछ हुआ था, उसे वह और किसी तरह से अभिव्यक्त नहीं कर सकता था), उस व्यक्ति के साथ, जिसे कभी उसकी बीवी प्यार करती रही थी, मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की अटपटी हरकत के बाद, उस नारी के यहां जाने की, जिसे पतिता के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता, और भी अधिक अटपटी हरकत और इस नारी पर मुग्ध होने तथा पत्नी का जी दुखाने के बाद भी – ऐसी परिस्थितियों के

बावजूद भी वह चैन से सो सकता था। किन्तु थकान, उनींदी रात और शराब के नशे के कारण वह गहरी और चैन की नींद सो गया।

सुबह के पांच बजे दरवाज़ा खुलने की आवाज़ से उसकी नींद टूट गयी। वह चौंककर उठा और उसने अपने इर्द-गिर्द नज़र डाली। कीटी उसके निकट बिस्तर पर नहीं थी। किन्तु बीच के तख़्ते के पीछे रोशनी इधर-उधर आ-जा रही थी और उसे कीटी के पैरों की आहट सुनाई दे रही थी।

"क्या बात है? क्या बात है?" उसने नींद में ही पूछा। "कीटी! क्या बात है?"

"कुछ नहीं," हाथ में मोमबत्ती लिये हुए तख़्ते के पीछे से सामने आकर उसने कहा। "मेरी तबीयत कुछ अच्छी नहीं थी," वह विशेष रूप से प्यारी और अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ बोली।

"क्या? क्या दर्द शुरू हो गया?" लेविन घबराकर कह उठा। "किसी को भेजना चाहिये," और वह जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा।

"नहीं, नहीं," कीटी ने मुस्कराते और हाथ से उसे रोकते हुए कहा, "शायद कोई बात नहीं है। बस, ज़रा-सी ही तबीयत ख़राब हुई थी। लेकिन अब सब ठीक है।"

और कीटी ने पलंग के निकट आकर मोमबत्ती बुझा दी, बिस्तर पर लेटकर एकदम शान्त हो गयी। यद्यपि लेविन के लिये उसकी शान्ति, मानो उसने दम साध लिया हो, और विशेषतः तख़्ते के पीछे से सामने आने पर जिस कोमलता और विह्वलता से उसने "कुछ नहीं" कहा था, सन्देह पैदा करनेवाली चीज़ें थीं, तथापि उसे इतनी नींद आ रही थी कि फ़ौरन उसकी आंख लग गयी। केवल बाद में ही उसे कीटी की उस शान्त सांस की याद आयी, और हिले-डुले बिना उसकी बग़ल में लेटी हुई जब वह नारी के जीवन की महानतम घटना की प्रतीक्षा कर रही थी, तो उसकी प्यारी तथा मधुर आत्मा में उस समय क्या हो रहा था, वह सब कुछ समझ गया। सात बजे कीटी के हाथों द्वारा उसके कंधे के स्पर्श और धीमी फुसफुसाहट ने उसे जगा दिया। कीटी को उसे जगाते हुए उस पर दया आ रही थी, किन्तु साथ ही वह उससे बात करना चाहती थी और इसलिये मानो अपने मन से जूझ रही थी।

"कोस्त्या, तुम घबरा नहीं जाना। कोई ख़ास बात नहीं। फिर भी

लगता है... लिज़ावेता पेत्रोव्ना को बुलवा लेना चाहिये।"

मोमबत्ती फिर से जला ली गयी थी। वह पलंग पर बैठी थी और उसके हाथ में वह चीज़ थी, जिसे पिछले कुछ समय से वह बुन रही थी।

"कृपया घबराओ नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मैं तो ज़रा भी नहीं डर रही हूं," लेविन का सहमा हुआ चेहरा देखकर कीटी ने कहा और उसके हाथ को पहले अपने वक्ष और फिर होंठों पर दबाया।

लेविन झटपट उठा, अपने को भूलकर और कीटी पर नज़र टिकाये हुए उसने ड्रेसिंग गाउन पहन लिया और उसे ताकता हुआ वहीं खड़ा रहा। उसे जाना चाहिये था, मगर वह कीटी के चेहरे से दृष्टि नहीं हटा पा रहा था। वह तो उसके चेहरे को प्यार करता था, उसकी हर भाव-भंगिमा, हर दृष्टि से परिचित था, किन्तु उसने कीटी को इस रूप में कभी नहीं देखा था। इस रूप में उसे देखते हुए और यह याद करके कि पिछली रात उसने कैसे उसका दिल दुखाया था, लेविन को अपने पर ग़ुस्सा आ रहा था, अपने से नफ़रत हो रही थी। रात की टोपी के नीचे से बाहर निकले मुलायम बालों से घिरा हुआ उसका अरुणाभ मुख प्रसन्नता तथा दृढ़ता से चमक रहा था।

कीटी के चरित्र में आम तौर पर चाहे कितनी ही कम कृत्रिमता और दक़ियानूसीपन क्यों न था फिर भी लेविन के सामने अब जो कुछ आया था, जब सहसा सारे पर्दे हट गये थे और उसकी आत्मा का सार उसकी आंखों के सम्मुख चमक उठा था, वह उससे आश्चर्यचकित हुए बिना न रह सका। जिस कीटी को वह प्यार करता था, वह इस सरलता और आत्मा की आवरणहीनता में और भी अधिक स्पष्ट रूप में नज़र आ रही थी। वह मुस्कराती हुई उसकी तरफ़ देख रही थी। मगर अचानक उसकी भौंहें सिहरीं, उसने सिर ऊपर उठाया, तेज़ी से उसके पास आकर उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और अपनी गर्म सांस से मानो उसे झुलसते हुए उसके साथ चिपक गयी। वह पीड़ा अनुभव कर रही थी और मानो अपनी पीड़ा की उससे शिकायत कर रही थी। आदत के मुताबिक़ पहले क्षण में उसे ऐसा लगा कि इसके लिये वही दोषी है। किन्तु कीटी की आंखों में प्यार था, जो कह रहा था कि वह न केवल उसकी भर्त्सना ही नहीं करती, बल्कि इन कष्टों के लिये उसे

प्यार भी करती है। "अगर मैं नहीं, तो इसके लिये कौन दोषी है?" कीटी की इस पीड़ा के लिये अनचाहे ही दोषी को ढूंढ़ते हुए, ताकि उसे दण्ड दे सके, लेविन ने सोचा। किन्तु ऐसा दोषी नहीं मिला। कीटी कष्ट सह रही थी, शिकायत कर रही थी, इन कष्टों से विजयोल्लास अनुभव कर रही थी, प्रसन्न हो रही थी और इन्हें चाह रही थी। लेविन देख रहा था कि कीटी की आत्मा में कोई बहुत सुन्दर बात हो रही थी, किन्तु वह बात क्या थी? – यह उसकी समझ में नहीं आ सका। यह उसकी समझ के बाहर की बात थी।

" मैंने मां को बुलवा भेजा है। तुम जल्दी से लिज़ावेता पेत्रोव्ना को लेने चले जाओ... कोस्त्या! नहीं, कोई बात नहीं, अब दर्द नहीं रहा।"

कीटी ने उससे दूर हटकर घण्टी बजायी।

"तो तुम अब जाओ। पाशा अभी आ जायेगी। मैं ठीक हूं।"

और लेविन ने हैरान होते हुए देखा कि कीटी बुनने की उस चीज़ को, जिसे रात के समय लाई थी, फिर से हाथ में लेकर बुनने लगी।

लेविन जिस समय कमरे के एक दरवाज़े से बाहर निकल रहा था, उसी समय उसे दूसरे दरवाज़े से नौकरानी पाशा के भीतर आने की आवाज़ सुनाई दी। उसने दरवाज़े के पास रुककर कीटी को पाशा को सविस्तार अनुदेश देते सुना और फिर वह पलंग को खिसकाने के काम में स्वयं उसकी मदद करने लगी।

लेविन ने कपड़े पहने और जब तक उसकी गाड़ी में घोड़े जुतते (क्योंकि किराये की घोड़ा-गाड़ियां अभी मिल नहीं सकती थीं), वह फिर से भागता हुआ सोने के कमरे में गया और सो भी पंजों के बल नहीं, बल्कि, जैसा कि उसे लगा, पंखों पर उड़ता हुआ। दो नौकरानियां कमरे में कुछ चीज़ों को जहां-तहां हटाने और रखने में व्यस्त थीं। कीटी इधर-उधर आती-जाती हुई बुन रही थी, जल्दी-जल्दी फंदे डालती हुई हिदायतें दे रही थी।

"मैं अभी डाक्टर को लाने जाता हूं। लिज़ावेता पेत्रोव्ना के पास किसी को भेजा जा चुका है, लेकिन मैं ख़ुद भी जाऊंगा। किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं? हां, डौली को भी तो लाना है न?"

लेविन ने जो कुछ कहा था, स्पष्टतः उसे न सुनते हुए कीटी ने उसकी तरफ़ देखा।

"हां, हां। जाओ, जाओ," कीटी ने माथे पर बल डालते और उसकी ओर हाथ हिलाते हुए जल्दी-जल्दी कहा।

लेविन मेहमानख़ाने में दाख़िल हो रहा था, जब अचानक सोने के कमरे से दर्दभरी, किन्तु उसी समय शान्त हो जानेवाली कराह सुनाई दी। वह रुक गया और देर तक कुछ नहीं समझ पाया।

"हां, यह कराह कीटी की थी," उसने अपने आपसे कहा और हाथों से सिर को थामते हुए नीचे भाग चला।

"हे भगवान, दया करें! क्षमा करें, सहायता करें!" सहसा और अप्रत्याशित ही होंठों पर आ जानेवाले इन शब्दों को वह दोहराता जाता था। और वह, नास्तिक व्यक्ति, केवल होंठों से ही इन शब्दों को नहीं दोहरा रहा था। अब, इस क्षण वह जानता था कि न केवल उसके सन्देह, बल्कि, जैसा कि वह अपने हृदय में अच्छी तरह जानता था, बुद्धि के स्तर पर उसके अस्तित्व की अनास्था भी उसे भगवान से अनुरोध करने में बाधा नहीं डालती। यह सब कुछ अब राख की तरह उसकी आत्मा से झड़ गया था। अगर उससे नहीं, जिसके हाथों में वह अपने को, अपनी आत्मा और अपने प्यार को अनुभव कर रहा था, तो किससे वह अनुनय करता?

घोड़े अभी तक नहीं जुते थे, किन्तु अपने भीतर शारीरिक शक्ति का विशेष तनाव अनुभव करते और उन चीज़ों को ध्यान में रखते हुए, जो उसे करनी थीं, उसने एक भी मिनट गंवाना ठीक नहीं समझा, गाड़ी तैयार होने का इन्तज़ार किये बिना पैदल ही चल पड़ा और कुज़्मा को आदेश दिया कि वह गाड़ी लेकर जल्दी से उसके पीछे आये।

सड़क के नुक्कड़ पर उसे रात का गाड़ीवान तेज़ी से गाड़ी दौड़ाता मिला। छोटी-सी स्लेज-गाड़ी में लिज़ावेता पेत्रोव्ना मखमली चोग़ा पहने और सिर पर दुपट्टा ओढ़े बैठी थी। "शुक्र है भगवान का, शुक्र है भगवान का!" सुनहरे बालों और छोटे से चेहरे वाली इस औरत को पहचान कर, जिसके चेहरे पर इस समय बड़ी गम्भीरता का ही नहीं, कठोरता का भाव था, लेविन ख़ुशी से कह उठा। कोचवान को स्लेज रोकने का आदेश न देकर वह ख़ुद ही उसके साथ-साथ वापिस दौड़ने लगा।

"तो दो घण्टे हुए हैं? इससे अधिक नहीं?" लिज़ावेता पेत्रोव्ना

ने पूछा। "डाक्टर प्योत्र द्मीत्रियेविच आपको मिल जायेंगे, मगर उन्हें हड़बड़ाइये नहीं। और हां, दवाइयों की दुकान से कुछ अफ़ीम ले आइये।"

"तो आपका ख़्याल है कि सब कुछ ठीक-ठाक रहेगा? हे भगवान, दया करें, मदद करें!" लेविन ने अपनी स्लेज-गाडी को फाटक से बाहर आते देखकर कहा। कूदकर कुज़्मा की बग़ल में स्लेज में बैठते हुए उसने उसे डाक्टर के यहां चलने का आदेश दिया।

(१४)

डाक्टर अभी जागा नहीं था और नौकर ने बताया कि "डाक्टर देर से बिस्तर पर गये थे, उन्होंने जगाने की मनाही कर दी है और जल्द ही उठ जायेंगे"। नौकर लैम्प के शीशे साफ़ कर रहा था और इस काम में बहुत ही व्यस्त लग रहा था। नौकर के शीशों की तरफ़ इतना ध्यान देने और लेविन के यहां जो कुछ हो रहा था, उसके प्रति ऐसी उदासीनता दिखाने से लेविन को शुरू में हैरानी हुई, किन्तु उसी क्षण थोड़ा सोचने पर वह समझ गया कि उसकी भावनाओं को कोई नहीं जानता, उन्हें जानने के लिये बाध्य भी नहीं है और इसीलिये उसे शान्ति, सोच-विचार और दृढ़ता से काम करना चाहिये, ताकि उदासीनता की यह दीवार तोड़कर अपना लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। "जल्दी नहीं करना, कुछ भूल नहीं जाना," शारीरिक शक्ति का अधिकाधिक प्रवाह अनुभव करते और उन बातों की ओर ध्यान देते हुए, जो उसे करनी थीं, लेविन ने अपने आपसे कहा।

यह मालूम होने पर कि डाक्टर अभी नहीं जागा है, लेविन ने अपने दिमाग़ में आनेवाली अनेक योजनाओं में से इस पर अमल करने का फ़ैसला किया – रुक़्क़ा देकर कुज़्मा को दूसरे डाक्टर के पास भेजे, ख़ुद अफ़ीम लेने दवाइयों की दुकान पर जाये और लौटने पर भी अगर डाक्टर न जागा हो, तो नौकर को घूस देकर, और अगर वह इसके लिये राज़ी न हो, तो हर हालत में ज़बर्दस्ती भीतर जाकर डाक्टर को जगा दे।

दवाइयों की दुकान में एक दुबला-पतला-सा डिस्पेन्सर इन्तज़ार में खड़े एक कोचवान के लिये उसी अन्यमनस्कता से दवा की पुड़ियां

लपेट रहा था, जिससे डाक्टर का नौकर लैम्प के शीशे साफ़ कर रहा था और उसने अफ़ीम देने से इन्कार कर दिया। उतावली न करने और गुस्से में न आने की कोशिश करते हुए लेविन ने डाक्टर और दाई का नाम और यह बताने के बाद कि किसलिये अफ़ीम की ज़रूरत है, उसे मनाने का प्रयास किया। डिस्पेन्सर ने जर्मन भाषा में किसी से पूछा कि अफ़ीम दे या नहीं और बीच की दीवार के पीछे से अनुमति पाकर उसने छोटी-सी शीशी और चोंगी ली, धीरे-धीरे बड़ी बोतल में से छोटी शीशी में अफ़ीम डाली, उस पर लेबल लगाया, लेविन के ऐसा न करने की मिन्नत के बावजूद उस पर मुहर लगायी और उसे काग़ज़ में भी लपेटना चाहा। लेविन से यह बर्दाश्त न हो सका। उसने डिस्पेन्सर के हाथ से शीशी छीन ली और शीशे के बड़े दरवाज़े से बाहर भाग गया। डाक्टर अभी तक जागा नहीं था और अब क़ालीन बिछाने में व्यस्त नौकर ने उसे जगाने से इन्कार कर दिया। लेविन ने इतमीनान से दस रूबल का नोट निकाला और धीरे-धीरे बोलते, किन्तु समय न गंवाते हुए उसे नोट थमा दिया और समझाया कि प्योत्र द्मीत्रियेविच (पहले कोई महत्त्व न रखनेवाला यही डाक्टर अब लेविन को कितना महत्त्वपूर्ण और महान प्रतीत हो रहा था) ने किसी भी समय चलने का वादा किया है और इसलिये वह सम्भवतः नाराज़ नहीं होगा और वह इसी समय उसे जगा दे।

नौकर मान गया, ऊपर चला गया और लेविन से प्रतीक्षा-कक्ष में बैठने का अनुरोध किया।

लेविन को दरवाज़े के पीछे डाक्टर का खांसना, चलना-फिरना, हाथ-मुंह धोना और कुछ बोलना सुनाई दे रहा था। अभी केवल तीन मिनट बीते थे, किन्तु लेविन को लग रहा था कि एक घण्टे से अधिक समय बीत गया है। वह और इन्तज़ार न कर सका।

"प्योत्र द्मीत्रियेविच, प्योत्र द्मीत्रियेविच," खुले दरवाज़े में से उसने मिन्नत करते हुए कहा। "भगवान के लिये मुझे क्षमा करें। जैसे हैं, वैसे ही मुझसे मिलने की कृपा कीजिये। दो घण्टे से अधिक समय हो चुका है।"

"अभी, अभी!" डाक्टर ने जवाब दिया और लेविन को डाक्टर की आवाज़ में मुस्कान की अनुभूति से हैरानी हुई।

"एक मिनट के लिये ..."

"अभी आता हूं।"

डाक्टर ने जब तक जूते पहने, दो मिनट गुज़र गये, जब तक उसने कोट पहना और बाल संवारे, दो मिनट और बीत गये।

"प्योत्र द्मीत्रियेविच!" लेविन ने दर्द भरी आवाज़ में फिर से कहना शुरू किया, मगर इसी समय डाक्टर कपड़े पहने और बाल संवारे हुए बाहर आ गया। "इन लोगों की आत्मा नहीं है," लेविन ने सोचा। "ये अपने बाल संवारते रहते हैं, जबकि हमारी जान जाती होती है।"

"नमस्ते!" डाक्टर ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते और मानो अपनी शान्ति से उसका मुंह चिढ़ाते हुए कहा। "जल्दी नहीं कीजिये। तो बताइये?"

लेविन पत्नी की स्थिति के बारे में यथासम्भव सही-सही और अनावश्यक रूप से सविस्तार बताने लगा। बीच-बीच में वह लगातार यह अनुरोध करता जाता था कि डाक्टर इसी समय उसके साथ चल दे।

"आप जल्दी नहीं करें। आप तो कुछ नहीं जानते। सम्भवतः वहां मेरी ज़रूरत नहीं है, किन्तु चूंकि मैंने वादा किया है, इसलिये मैं चलूंगा। फिर भी जल्दी करने की ज़रूरत नहीं है। कृपया बैठ जाइये, कॉफ़ी पीना पसन्द नहीं करेंगे?"

लेविन ने डाक्टर की ओर देखा और उसकी नज़र पूछ रही थी कि क्या डाक्टर उसका मज़ाक़ तो नहीं उड़ा रहा है। मगर डाक्टर का ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था।

"जानता हूं, मैं यह सब जानता हूं," डाक्टर ने मुस्कराते हुए कहा। "मैं ख़ुद बाल-बच्चों वाला आदमी हूं, लेकिन ऐसे क्षणों में हम पुरुष लोग बहुत ही दयनीय सिद्ध होते हैं। मुझसे इलाज करानेवाली एक महिला है, जिसका पति ऐसे अवसरों पर हमेशा घुड़साल में भाग जाता है।"

"आपका क्या ख़्याल है, प्योत्र द्मीत्रियेविच? आप समझते हैं कि सब कुछ ठीक-ठाक रहेगा?"

"सभी लक्षण ऐसी आशा बंधवाते हैं।"

"तो आप अभी आ जायेंगे?" कॉफ़ी ला रहे नौकर की तरफ़ गुस्से से देखते हुए लेविन ने पूछा।

"एक घण्टे बाद।"

"नहीं नहीं, भगवान के लिये ऐसा नहीं कीजिये!"

"तो कॉफ़ी तो पीने दीजिये।"

डाक्टर कॉफ़ी पीने लगा। दोनों चुप हो गये।

"तुर्कों की तो कसकर पिटाई हो रही है। आपने कल का सूचना-तार पढ़ा?" बन को चबाते हुए डाक्टर ने पूछा।

"नहीं, मुझसे यह सहन नहीं हो सकता!" लेविन ने उछलकर खड़े होते हुए कहा। "तो आप पन्द्रह मिनट में आ जायेंगे न?"

"आध घण्टे में।"

"क़सम से?"

लेविन के घर लौटने के वक़्त प्रिंसेस यानी कीटी की मां भी आ गयीं और वे दोनों एक साथ ही शयन-कक्ष के दरवाज़े पर पहुंचे। प्रिंसेस की आंखों में आंसू थे और उनके हाथ कांप रहे थे। लेविन को देखकर उन्होंने उसे गले लगाया और रो पड़ीं।

"तो क्या हाल है, मेरी प्यारी लिज़ावेता पेत्रोव्ना," प्रिंसेस ने दाई के बाहर आने पर पूछा, जिसके चमकते चेहरे पर चिन्ता का भाव झलक रहा था।

"सब कुछ ठीक हो रहा है," उसने जवाब दिया, "उसे लेट जाने के लिये राज़ी कर लीजिये। उसके लिये आसान हो जायेगा।"

आंख खुलने और स्थिति को समझने के बाद से लेविन ने अपने को इसके लिये तैयार कर लिया था कि किसी तरह का सोच-विचार किये बिना, किसी बात का पूर्वानुमान लगाये बिना, सभी विचारों और भावनाओं को दबाते, किसी प्रकार पत्नी की घबराहट न बढ़ाते, बल्कि, इसके विपरीत, उसे तसल्ली देते और उसके साहस की प्रशंसा करते हुए वह उस सबको दृढ़ता से बर्दाश्त करेगा, जो बर्दाश्त करना पड़ेगा। इस बात का ख़्याल तक दिमाग़ में न आने देकर कि क्या होगा, कैसा अन्त होगा और दूसरों से यह मालूम करके कि आम तौर तर कितनी देर तक यह क़िस्सा चलता रहता है, लेविन ने मन ही मन पांच घण्टे तक सब्र से काम लेने और दिल को क़ाबू में रखने के लिये अपने को तैयार कर लिया और उसे लगा कि ऐसा करना सम्भव है। किन्तु डाक्टर के यहां से लौटने पर जब उसने फिर से कीटी को भारी कष्ट

सहते देखा, तो वह निश्वास छोड़ता और सिर ऊपर की ओर करते हुए अधिकाधिक यह दोहराता – "हे भगवान, दया करें, मदद करें।" उसे डर महसूस हो रहा था कि वह यह सहन नहीं कर पायेगा, रो पड़ेगा या कहीं भाग जायेगा। इतना अधिक यातनापूर्ण था यह उसके लिये। किन्तु केवल एक घण्टा बीता था।

इस एक घण्टे के बाद एक और घण्टा बीता, दो, तीन, वे पांचों घण्टे बीत गये, जो उसने बर्दाश्त की अन्तिम सीमा के रूप में निर्धारित किये थे, किन्तु स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई थी और वह उसे बर्दाश्त कर रहा था, क्योंकि इसके सिवा कोई चारा नहीं था और हर क्षण उसे यही लगता था कि उसके सहन करने की अन्तिम सीमा आ गयी है और सहानुभूति से उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।

किन्तु कुछ और क्षण, कुछ घण्टे, और अधिक घण्टे बीते तथा उसका मानसिक कष्ट, उसका डर और तनाव अधिकाधिक बढ़ते गये।

जीवन की उन साधारण परिस्थितियों का, जिनके बिना किसी भी चीज़ की कल्पना नहीं की जा सकती, लेविन के लिये अस्तित्व नहीं रह गया था। उसे समय की चेतना नहीं रही थी। कभी तो मिनट – वे मिनट जब कीटी उसे अपने पास बुलाती और वह उसका पसीने से तर हाथ अपने हाथ में लेता, जिसे वह कभी असाधारण शक्ति से दबाती और कभी दूर हटा देती – तो वे मिनट उसे घण्टे और घण्टे मिनटों के समान लगते। लिज़ावेता पेत्रोव्ना ने जब उससे कमरे के बीच के तख़्ते के पीछे मोमबत्ती जला देने को कहा और उसे पता चला कि शाम के पांच बज गये हैं, तो उसे बड़ी हैरानी हुई। अगर उससे यह कहा जाता कि अब सुबह के केवल दस बजे हैं, तो भी उसे ऐसी ही हैरानी हुई होती। इस समय वह कहां था, इसके बारे में भी वह इतना ही कम जानता था, जितना इस बारे में कि कब और क्या हो रहा है। वह कीटी का सूजा हुआ, कभी भौचक्का-सा और यातना सहता, तो कभी मुस्कराता एवं उसे तसल्ली देता हुआ चेहरा देखता। वह प्रिंसेस को भी देखता, जिनका चेहरा लाल और तनावपूर्ण था जिनके पके, सफ़ेद घुंघराले बाल खुले हुए थे, जो आंसू बहा रही थीं और जिन्हें वह होंठ काटकर यत्नपूर्वक निगल जाने की कोशिश करती थीं। वह डौली और डाक्टर को भी देखता, जो मोटी सिगरेटें पी रहा था, दृढ़, निश्चयपूर्ण और सान्त्वना

देते हुए लिज़ावेता पेत्रोव्ना के चेहरे तथा बूढ़े प्रिंस को भी देखता, जो त्योरी चढ़ाये हुए हॉल में इधर-उधर आ-जा रहे थे। किन्तु वे कैसे आते-जाते थे और कहां थे, उसे मालूम नहीं था। प्रिंसेस डाक्टर के साथ शयन-कक्ष में थीं, तो एक क्षण बाद अध्ययन-कक्ष में, जहां भोजन के लिये मेज़ लगी हुई थी। कभी प्रिंसेस नहीं, बल्कि डौली थी। इसके बाद लेविन को याद आया कि उसे कहीं भेजा गया था। एक बार उसे मेज़ और सोफ़ा हटाने के लिये भेजा गया। उसने यह समझते हुए कि कीटी के लिये ऐसा करना है, बड़े उत्साह से यह काम किया और केवल बाद में ही उसे पता चला कि इस तरह उसने रात को ख़ुद अपने सोने के लिये बिस्तर तैयार किया है। इसके बाद उसे कुछ पूछने के लिये अध्ययन-कक्ष में डाक्टर के पास भेजा गया। डाक्टर ने उत्तर दिया और इसके बाद वह दूमा में गड़बड़ी की चर्चा करने लगा। इसके बाद उसे प्रिंसेस के शयन-कक्ष से मुलम्मा चढ़े चांदी के चौखटे में जड़ी देव-प्रतिमा लाने के लिये भेजा गया और प्रिंसेस की बूढ़ी नौकरानी के साथ वह एक छोटी-सी अलमारी पर चढ़ा, उसने दीपक तोड़ दिया, बूढ़ी नौकरानी ने दीपक और उसकी पत्नी के बारे में उसे तसल्ली दी, वह देव-प्रतिमा को ले आया और बड़ी सावधानी से उसे तकियों के पीछे घुसेड़कर कीटी के सिर के पास रख दिया। किन्तु यह सब कहां, कब और किसलिये हुआ, उसे मालूम नहीं था। यह भी उसकी समझ में नहीं आया था कि क्यों प्रिंसेस ने उसका हाथ थामकर उसकी ओर दयापूर्ण दृष्टि से देखा और शान्त होने का अनुरोध किया था, कि क्यों डौली उससे कुछ खा लेने का आग्रह करती हुई उसे कमरे से बाहर ले गयी थी तथा डाक्टर ने भी सहानुभूति की दृष्टि से देखते हुए उसे दवाई की कुछ बूंदें देनी चाही थीं।

लेविन केवल इतना ही जानता और यही अनुभव कर रहा था कि जो कुछ हो रहा था, वह उसी के समान था, जो गुबेर्निया के छोटे-से शहर में उसके भाई निकोलाई के मृत्यु-शय्या पर पड़े होने के समय हुआ था। किन्तु वह तो ग़मी थी और यह ख़ुशी थी। मगर वह ग़मी और यह ख़ुशी – दोनों ही समान रूप से जीवन की सभी सामान्य परिस्थितियों के बाहर थीं, इस सामान्य जीवन में मानो झरोखों के समान थीं, जिनमें से किसी ऊंची चीज़ की झलक मिलती थी। दोनों

को ही बर्दाश्त करना समान रूप से कठिन और यातनाप्रद था तथा दोनों सूरतों में इस ऊंची चीज़ पर चिन्तन करती हुई व्यक्ति की आत्मा ऐसी ऊंचाई पर पहुंच जाती थी, जो पहले असम्भव लगती थी और जहां बुद्धि साथ देने में असमर्थ थी।

"हे भगवान, क्षमा करें, मदद करें," वह लगातार मन ही मन दोहराता जा रहा था और एक लम्बे अर्से से तथा, जैसा कि प्रतीत होता था, पूरी तरह धर्म से नाता तोड़ लेने के बावजूद वह उसी सरलता और आस्था से भगवान को याद कर रहा था, जैसे बचपन और जवानी के पहले वर्षों में किया करता था।

इस सारे वक़्त उसकी दो भिन्न मन:स्थितियां बनी रहीं। एक तो वह थी, जब वह कीटी से दूर डौली, बूढ़े प्रिंस और डाक्टर के साथ होता, जो एक के बाद एक मोटी सिगरेट फूंकता जाता और उन्हें भरी हुई राखदानी के किनारे पर बुझाता था और जहां भोजन, राजनीति तथा मारीया पेत्रोव्ना की बीमारी की चर्चा होती थी और लेविन क्षण भर को सहसा पूरी तरह से वह सब भूल जाता, जो हो रहा था और ऐसे अनुभव करता मानो नींद से जागा हो। दूसरी मन:स्थिति वह होती, जब वह कीटी के पास, उसके सिरहाने बैठा होता और उसका हृदय सहानुभूति से फटना चाहता तथा फिर भी न फटता और जहां वह लगातार भगवान को याद करता रहता। हर बार, जब शयन-कक्ष से सुनाई देनेवाली कीटी की चीख़ उसे विस्मृति के गर्त से बाहर निकालती, तो वह उसी अजीब भ्रम का शिकार हो जाता, जो पहले क्षण में उस पर हावी हो गया था। चीख़ सुनने पर वह हर बार उछलकर खड़ा होता, अपनी सफ़ाई पेश करने के लिये उसके कमरे की तरफ़ भागता। रास्ते में उसे याद आता कि इसके लिये वह दोषी नहीं है और चाहता कि उसकी रक्षा, उसकी सहायता करे। किन्तु कीटी को देखते हुए वह फिर से यह समझ जाता कि उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता, भयग्रस्त हो उठता और कहने लगता – "भगवान, क्षमा करें, मदद करें"। और जैसे-जैसे अधिक समय बीतता गया, वैसे-वैसे ये दोनों मन:स्थितियां अधिक बलवती होती गयीं – कीटी की अनुपस्थिति में वह कहीं अधिक शान्त रहता, उसे बिल्कुल भूल ही जाता और उसकी यातनायें तथा अपनी विवशता की भावनायें उतनी ही अधिक बोझिल

हो जातीं। वह उछलकर खड़ा होता, कहीं भाग जाना चाहता और उसके पास ही भाग जाता।

कीटी जब उसे बार-बार बुलवाती, तो वह कभी-कभी मन में बिगड़ता। किन्तु उसका विनम्र और मुस्कराता हुआ चेहरा देखकर और ये शब्द सुनकर "मैंने तुम्हें तंग कर डाला," वह भगवान को दोषी ठहराता और भगवान का ध्यान आते ही वह क्षमा तथा दया की याचना करने लगता।

(१५)

लेविन को यह मालूम नहीं था कि बहुत समय बीत चुका है या नहीं बीता। सभी मोमबत्तियां लगभग ख़त्म होनेवाली थीं। डौली कुछ ही देर पहले अध्ययन-कक्ष में आई थी और उसने डाक्टर से लेट जाने को कहा था। लेविन डाक्टर के पास बैठा हुआ एक पाखंडी सम्मोहक का क़िस्सा सुन रहा था और उसकी सिगरेट की राख की ओर देख रहा था। यह विश्राम और विस्मरण का अन्तराल था। जो कुछ हो रहा था, वह उसे बिल्कुल भूल गया था। वह डाक्टर का क़िस्सा सुन रहा था और उसे समझ रहा था। अचानक एक चीख़ गूंज उठी। चीख़ इतनी भयानक थी कि लेविन उछलकर खड़ा भी नहीं हुआ, किन्तु दम साधे हुए उसने भय और प्रश्नसूचक दृष्टि से डाक्टर की तरफ़ देखा। डाक्टर ने कान लगाकर सुनने की कोशिश करते हुए एक ओर को सिर झुकाया और मानो यह कहते हुए मुस्कराया कि ऐसा ही होना चाहिये। सब कुछ इतना असाधारण था कि अब लेविन को किसी बात से हैरानी नहीं होती थी। "सम्भवत: ऐसा ही होना चाहिये," उसने सोचा और बैठा रहा। यह फिर किसकी चीख़ थी? वह उछलकर खड़ा हुआ, पंजों के बल सोने के कमरे में भाग गया और लिज़ावेता पेत्रोव्ना तथा प्रिंसेस के गिर्द से गुज़रकर कीटी के सिरहानेवाली अपनी जगह पर जा खड़ा हुआ। चीख़ बन्द हो गयी थी, किन्तु अब वहां कुछ बदल गया था। लेकिन क्या बदला था – वह देख और समझ नहीं रहा था तथा देखना और समझना भी नहीं चाहता था। किंतु लिज़ावेता पेत्रोव्ना के चेहरे से वह यह देख रहा था – लिज़ावेता पेत्रोव्ना का चेहरा कठोर और पीला तथा पहले की तरह ही दृढ़ था, यद्यपि उसके जबड़े कुछ-कुछ कांप रहे थे और उसकी

नज़रें कीटी पर टिकी हुई थीं। कीटी का सूजा और थका हुआ तथा पसीने से तर चेहरा, जिस पर बालों की एक लट चिपक गयी थी, लेविन की नज़र को ढूंढ़ रहा था। उसके ऊपर उठे हुए हाथ लेविन के हाथ थामना चाहते थे। लेविन के ठण्डे हाथों को अपने पसीने से भीगे हाथों में लेकर उसने उन्हें चेहरे से लगा लिया।

"तुम जाओ नहीं, जाओ नहीं! मैं डर नहीं रही हूं, डर नहीं रही हूं!" कीटी ने जल्दी-जल्दी कहा। "मां, ये झुमके उतार लो। ये मुझे परेशान करते हैं। तुम तो नहीं डर रहे हो? जल्दी, जल्दी ही, लिज़ावेता पेत्रोव्ना ..."

वह जल्दी-जल्दी बोल रही थी और उसने मुस्कराना चाहा। किन्तु अचानक उसका चेहरा विकृत हो गया और उसने लेविन को अपने से दूर धकेल दिया।

"नहीं, यह तो बहुत भयानक है! मैं मर जाऊंगी, मर जाऊंगी! जाओ, तुम यहां से चले जाओ!" कीटी चिल्ला उठी और फिर से पहले जैसी भयानक चीख़ सुनाई दी।

लेविन सिर थामकर कमरे से बाहर भाग गया।

"कोई बात, कोई बात नहीं, सब ठीक है!" डौली ने पीछे से कहा।

किन्तु ये लोग चाहे कुछ भी न कहें, लेविन जानता था कि अब सब कुछ ख़त्म हो गया। दरवाज़े की चौखट पर सिर टिकाये हुए वह बग़ल के कमरे में खड़ा था और किसी की पहले कभी न सुनी हुई चीख़ें सुन रहा था और जानता था कि इस तरह चीख़नेवाली वही थी, जो पहले कीटी थी। बच्चे की चाह तो उसे बहुत पहले ही नहीं रही थी। इस बच्चे को वह अब नफ़रत करता था। अब वह कीटी की ज़िन्दगी भी नहीं चाहता था, सिर्फ़ यही चाहता था कि ये भयानक यातनायें समाप्त हो जायें।

"डाक्टर! यह क्या है? यह क्या है? हे भगवान!" भीतर आने-वाले डाक्टर का हाथ पकड़ते हुए उसने पूछा।

"समाप्ति पर है," डाक्टर ने कहा। ऐसा कहते समय डाक्टर का चेहरा इतना गम्भीर था कि उसने "समाप्ति पर है" का मतलब यही समझा कि कीटी मर रही है।

अपनी सुध-बुध भूलकर लेविन शयन-कक्ष में भाग गया। सबसे पहले उसका लिज़ावेता पेत्रोव्ना के चेहरे की ओर ध्यान गया। वह पहले से अधिक कठोर था तथा उसकी त्योरियां और अधिक चढ़ी हुई थीं। कीटी का चेहरा पहचान से बाहर था। उसी जगह, जहां पहले उसका चेहरा था, तनाव और उससे निकलनेवाली आवाज़ों के कारण कोई भयानक चीज़ थी। लेविन ने यह अनुभव करते हुए कि उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा है, पलंग की टेक पर अपना सिर टिका दिया। भयानक चीख़ बन्द नहीं हुई, और भी भयानक हो उठी और मानो भयानकता की अन्तिम सीमा तक पहुंचकर सहसा बन्द हो गयी। लेविन को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, किन्तु विश्वास न करना भी सम्भव नहीं था – चीख़ बन्द हो गयी और उसे धीमे से हिलने-डुलने, सरसराहट तथा तेज़ी से चलती सांस की आवाज़ सुनाई दी तथा कीटी ने टूटते-से, जीवित, कोमल, ख़ुशी भरे और धीमे स्वर में कहा – "समाप्त हो गया"।

लेविन ने सिर ऊपर उठाया। बेजान-से हाथों को कम्बल पर टिका-कर, असाधारण रूप से शान्त और सुन्दर दिखनेवाली कीटी चुपचाप लेविन की तरफ़ देख रही थी, मुस्कराना चाहती थी, मगर वह ऐसा कर नहीं पायी।

उस रहस्यपूर्ण, भयानक और किसी दूसरी ही दुनिया से, जिसमें लेविन ने पिछले बाईस घण्टे बिताये थे, वह सहसा, एक क्षण में ही पहले जैसी तथा साधारण दुनिया में आ गया। किन्तु अब यह दुनिया ख़ुशी की ऐसी नयी चमक से जगमगा रही थी कि वह उसे सहन नहीं कर पाया। तने हुए सारे तार टूट गये। ख़ुशी की सिसकियां और आंसू, जिनकी उसने पूर्वकल्पना नहीं की थी, इतने ज़ोर से उमड़े कि उसका सारा शरीर हिलने लगा और वह देर तक कुछ नहीं कह पाया।

पलंग के निकट घुटनों के बल होते हुए उसने पत्नी का हाथ होंठों के पास लाकर चूमा और कीटी के हाथ ने धीरे-धीरे हिल-डुलकर इस चुम्बन का उत्तर दिया। इसी समय, पलंग के पायंते के पास लिज़ावेता पेत्रोव्ना के दक्ष हाथों में एक मानवीय जीवन दीप-शिखा की भांति हिल-डुल रहा था, जिसका पहले कभी अस्तित्व नहीं था और जो दूसरों की भांति, उनके जैसे अधिकार और महत्त्व से जियेगा तथा अपने जैसों को जन्म देगा।

27–927

"ज़िन्दा है! ज़िन्दा है! सो भी लड़का है! कोई चिन्ता न करें!" लेविन को लिज़ावेता पेत्रोव्ना की आवाज़ सुनाई दी, जो कांपते हाथ से बच्चे की पीठ थपथपा रही थी।

"मां, यह सच है?" कीटी ने पूछा।

प्रिंसेस की सिसकियों ने ही इसका उत्तर दिया।

ख़ामोशी में, मानो कीटी के प्रश्न के सभी सन्देहों को दूर भगाते हुए दूसरे लोगों की धीमी-धीमी आवाज़ों के बीच एक अन्य ही आवाज़ सुनाई दी। यह न जाने कहां से आ गये नये व्यक्ति की, जो किसी भी बात की परवाह करने को तैयार नहीं था, बहुत ही साहसपूर्ण और ज़ोरदार आवाज़ थी।

यदि लेविन से पहले यह कहा जाता कि कीटी मर गयी और वह ख़ुद भी उसके साथ मर गया, कि उनके बच्चे फ़रिश्ते हैं और भगवान यहां उनके सामने हैं, तो उसे किसी भी चीज़ से हैरानी न हुई होती। किन्तु अब, वास्तविकता की दुनिया में लौटने पर उसे यह समझने के लिये अपने मस्तिष्क पर बहुत ज़ोर डालना पड़ रहा था कि कीटी ज़िन्दा है, सही-सलामत है और ऐसे ज़ोर से चीख़नेवाला प्राणी उसका बेटा है। कीटी जीवित थी, उसकी यातनाओं का अन्त हो चुका था। लेविन इतना ख़ुश था कि बयान से बाहर। यह वह समझता था और इसलिये बेहद ख़ुश था। मगर बच्चा? वह कहां से आया, क्यों आया, वह कौन है? वह किसी तरह यह नहीं समझ पा रहा था, इस विचार का अभ्यस्त होने में असमर्थ था। उसे वह फ़ालतू और आवश्यकता से अधिक प्रतीत हो रहा था और वह देर तक इसका आदी नहीं हो पाया।

(१६)

अगली सुबह के दस बजे बूढ़े प्रिंस, कोज़्निशेव और ओब्लोन्स्की लेविन के यहां बैठे हुए थे और प्रसूता की चर्चा करने के बाद दूसरी बातों का ज़िक्र कर रहे थे। लेविन उनकी बातें सुन रहा था और अनचाहे ही उसे वह याद आने पर कि आज की सुबह के पहले क्या हुआ था, यह भी याद आ जाता था कि कल, ऐसा होने के पहले ख़ुद उसकी कैसी हालत थी। तब से अब तक मानो सौ बरस बीत गये थे। वह

अपने को पहुंच के बाहर की ऊंचाई पर अनुभव कर रहा था, जहां से बड़ी सावधानी बरतते हुए नीचे उतर रहा था, ताकि जिनसे बातें कर रहा था, उनके दिल को ठेस न लगे। वह बातें कर रहा था और लगातार पत्नी के बारे में, उसकी वर्त्तमान स्थिति और बेटे के बारे में, जिसके अस्तित्व के विचार का वह अपने को अभ्यस्त कर रहा था, सोचता जा रहा था। समूचा नारी जगत, जिसने शादी के बाद उसके लिये एक नया और अपरिचित-सा महत्त्व प्राप्त कर लिया था, अब उसकी दृष्टि में इतना ऊंचा उठ गया था कि अपनी कल्पना के बल पर वह उस तक पहुंचने में असमर्थ था। वह एक दिन पहले क्लब में हुए भोजन के बारे में बातचीत सुनता हुआ सोच रहा था – "इस समय वह क्या कर रही है, सो गयी क्या? कैसी तबीयत है उसकी? वह क्या सोच रही है? हमारा बेटा द्मीत्री चिल्ला रहा है या नहीं?" और बातचीत के बीच, वाक्य के पूरा होने से पहले ही वह उछलकर खड़ा हुआ और कमरे से बाहर चला गया।

"किसी को यह बताने के लिये यहां भेज देना कि मैं कीटी के पास जा सकता हूं या नहीं," बूढ़े प्रिंस ने कहा।

"अच्छी बात है, अभी," लेविन ने उत्तर दिया और रुके बिना ही कीटी के पास चल दिया।

कीटी सो नहीं रही थी और मां के साथ धीमे-धीमे बातें करते हुए भावी नामकरण-संस्कार की योजनायें बना रही थी।

साफ़-सुथरी, संवरे बाल और आसमानी रंग की किसी चीज़ से सजी हुई रात की सुन्दर टोपी पहने, क़म्बल पर हाथ टिकाये हुए कीटी चित लेटी थी और लेविन की नज़र से नज़र मिलने पर उसने नज़र से ही उसे अपनी ओर खींचा। लेविन उसके जितना अधिक निकट होता गया, कीटी की पहले से चमकती आंखों में और ज़्यादा चमक आती गयी। उसके चेहरे पर इस लोक से परलोक का वहीं परिवर्तन था, जो मृतक के मुख पर होता है। किन्तु वहां विदा होती है और यहां मिलन था। लेविन ने फिर से अपने दिल में कीटी की प्रसव-पीड़ा के समय जैसी विह्वलता अनुभव की। कीटी ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर पूछा कि वह सोया या नहीं। वह उत्तर नहीं दे पाया और अपनी दुर्बलता की चेतना से उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया।

"और मैं तो गहरी नींद सो गयी थी, कोस्त्या!" कीटी ने उससे कहा। "और अब मैं अपने को बहुत अच्छा अनुभव कर रही हूं।"

उसने लेविन की तरफ़ देखा और अचानक उसके चेहरे का भाव बदल गया।

"उसे मुझे दीजिये," बच्चे की धीमी चूं-चूं सुनकर कीटी ने कहा। "लिज़ावेता पेत्रोव्ना, उसे मुझे दीजिये और कोस्त्या भी देख लेगा।"

"अरे हां, पापा भी इसे देख लें," लिज़ावेता पेत्रोव्ना ने उठते और कोई लाल, अजीब और कुलबुलाती-सी चीज़ लाते हुए कहा। "ज़रा रुकिये, हम मुन्ने को सजा-संवार तो दें," और लिज़ावेता पेत्रोव्ना ने इस कुलबुलाते और लाल-से बच्चे को पलंग पर लिटा दिया, जिस कपड़े में वह लिपटा हुआ था, उसे उतारने और दूसरे कपड़े में लपेटने तथा एक उंगली पर उसे उठाकर उल्टा-सीधा करते हुए उस पर कुछ छिड़कने लगी।

इस बित्ते भर के दयनीय प्राणी को देखते हुए लेविन इस बात का भरसक प्रयत्न कर रहा था कि अपनी आत्मा में इसके लिये पितृ-भावना के कहीं कुछ लक्षण पा सके। वह उसके प्रति केवल घिन ही अनुभव कर रहा था। लेकिन जब उसे नंगा किया गया और उंगलियों, यहां तक कि उंगलियों से अलग अंगूठों सहित गेरुआ रंग के छोटे-छोटे हाथों-पैरों की झलक मिली और जब लिज़ावेता पेत्रोव्ना छोटे-छोटे स्प्रिंगों जैसे हाथों को दबाते और मोड़ते हुए सूती कपड़ों के भीतर घुसेड़ने लगी, तो उसे उस पर इतनी दया आई और ऐसा भय अनुभव हुआ कि उसने दाई का हाथ रोक लिया।

लिज़ावेता पेत्रोव्ना हंस पड़ी।

"नहीं, घबराइये नहीं!"

शिशु के साफ़-सुथरा हो जाने और ठोस गुड्डा-सा बन जाने के बाद लिज़ावेता पेत्रोव्ना ने उसे झुलाते हुए ऊपर उठाया मानो अपने काम पर गर्व कर रही हो और तनिक पीछे को हटा लिया, ताकि लेविन अपने बेटे को उसकी पूरी सौन्दर्य-छटा में देख सके।

कीटी भी टकटकी बांधे हुए नज़र घुमाकर उधर ही देख रही थी।

"मुझे दीजिये, मुझे दीजिये!" कीटी ने कहा और उठना चाहा।

"यह आप क्या कर रही हैं येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना, आपको इस

तरह से हिलना-डुलना नहीं चाहिये! थोड़ा रुकिये, मैं अभी दे दूंगी। ज़रा पापा को तो देख लेने दें कि कैसा कमाल का बेटा है!"

और लिज़ावेता पेत्रोव्ना ने इस अजीब-से, कुलबुलाते और पोतड़ों के सिरे के पीछे अपना सिर छिपाते हुए लाल-से प्राणी को एक हाथ पर (दूसरे हाथ की उंगलियों से उसने झूलते हुए सिर को सहारा दे रखा था) टिकाये हुए लेविन की ओर बढ़ाया। किन्तु इस नन्हे से प्राणी की नाक भी थी, तिरछी नज़र से देखती आंखें और चुस्की-सी लेते होंठ भी थे।

"बहुत ही प्यारा बच्चा है!" लिज़ावेता पेत्रोव्ना ने कहा।

लेविन ने भारी मन से गहरी उसांस ली। यह बहुत ही प्यारा बच्चा उसके मन में केवल घिन और दया ही पैदा करता था। यह तो बिल्कुल वह भाव नहीं था, जिसकी उसने आशा की थी।

लिज़ावेता पेत्रोव्ना ने जब तक शिशु को मां के स्तन से लगाया, जिसका शिशु अभी तक अभ्यस्त नहीं था, लेविन मुंह फेरे रहा।

सहसा हंसी की आवाज़ ने उसे सिर ऊपर उठाने को विवश किया। यह कीटी हंसी थी। शिशु स्तन-पान कर रहा था।

"बस, काफ़ी है, काफ़ी है!" लिज़ावेता पेत्रोव्ना कह रही थी, किन्तु कीटी बच्चे को वापस नहीं दे रही थी। कीटी के हाथों में ही उसे नींद आ गयी।

"अब देखो," कीटी ने कहा और बच्चे को इस तरह घुमा कर उसकी तरफ़ किया कि वह उसे देख सके। छोटे-से, बुड्ढे जैसे चेहरे पर सहसा कुछ और झुर्रियां-सी उभरीं और उसने छींक मारी।

मुस्कराते और स्नेह-द्रवित होने के कारण मुश्किल से आंसुओं को रोक पाते हुए लेविन ने पत्नी को चूमा और अंधेरे कमरे से बाहर चला गया।

इस नन्हे-से प्राणी के प्रति उसे जो अनुभूति हो रही थी, वह तनिक भी वैसी नहीं थी, जैसी अनुभूति की उसने आशा की थी। इस अनुभूति में कुछ भी सुखद और हर्षप्रद नहीं था, इसके विपरीत, यह एक नये और यातनापूर्ण भय की ही भावना थी। यह मन को विह्वल करनेवाले एक नये क्षेत्र की चेतना थी। और शुरू में यह चेतना इतनी यातनाप्रद थी, यह भय कि इस नन्हे-से असहाय प्राणी को किसी तरह

की हानि न पहुंच जाये, इतना प्रबल था कि इसी कारण अर्थहीन ख़ुशी और गर्व की वह अजीब भावना, जो उसने बच्चे के छींकने पर अनुभव की थी, लुप्त हो गयी थी।

(१७)

स्तेपान अर्कादियेविच ओब्लोन्स्की की माली हालत बड़ी ख़स्ता थी।

जंगल को बेचने से मिलनेवाली रक़म का दो-तिहाई भाग ख़र्च हो चुका था और दस प्रतिशत की कमी करके उसने व्यापारी से अन्तिम एक-तिहाई भाग की लगभग सारी रक़म पेशगी ले ली थी। व्यापारी और पैसे नहीं देता था, ख़ास तौर पर इसलिये भी कि इस जाड़े में डौली ने पहली बार अपने सम्पत्ति-अधिकार की घोषणा करते हुए अन्तिम तिहाई रक़म की भरपाई की रसीद पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया था। उसका सारा वेतन घरेलू ख़र्च और छोटे-मोटे ऐसे ऋण चुकाने में समाप्त हो जाता था, जो हमेशा उसके सिर पर बने रहते थे। इसलिये उसके पास पैसा बिल्कुल नहीं था।

यह अप्रिय और अटपटी बात थी और ओब्लोन्स्की के मतानुसार ऐसी स्थिति बनी नहीं रहनी चाहिये थी। उसकी दृष्टि में इसका कारण यह था कि उसे बहुत ही कम वेतन मिलता था। पांच साल पहले उसकी नौकरी स्पष्टतः बहुत अच्छी थी, मगर अब ऐसा नहीं था। बैंक का डायरेक्टर पेत्रोव बारह हज़ार पाता था, कम्पनी के सदस्य स्वेन्तीत्स्की को सत्रह हज़ार मिलता था और बैंक की स्थापना करनेवाला मीतिन पचास हज़ार पर हाथ साफ़ करता था। "निश्चय ही मैं सोया रहा और मुझे भुला दिया गया," ओब्लोन्स्की मन ही मन सोचता था। सो उसने कान खड़े कर लिये इधर-इधर नज़र दौड़ाने लगा और जाड़े के अन्त तक अपने लिये एक बहुत ही अच्छी जगह ढूंढ़कर पहले तो मास्को से, मौसे-मौसियों, चाचे-चाचियों और यार-दोस्तों की मदद से उस पर धावा बोला और जब मामला कुछ पक्का हो गया, तो इसे सिरे चढ़ाने के लिये वसन्त में स्वयं पीटर्सबर्ग चला गया। यह एक हज़ार से पचास हज़ार वार्षिक वेतन की ऐसी नौकरियों में से एक थी, जो रिश्वत और अच्छी ऊपरी आमदनीवाली पहले की नौकरियों की तुलना में अब कहीं अधिक थीं। यह दक्षिणी

रेलवे और बैंकों के पारस्परिक ऋण-कोष की संयुक्त एजेंसी के बोर्ड के एक सदस्य की नौकरी थी। इसी तरह की अन्य नौकरियों की भांति यह नौकरी भी इतने अधिक ज्ञान और कार्य-कलापों की अपेक्षा करती थी कि किसी एक व्यक्ति में इन्हें जुटा पाना सम्भव नहीं। और चूंकि ऐसे सभी गुणों वाला आदमी नहीं था, इसलिये यही बेहतर था कि किसी बेईमान आदमी के बजाय किसी ईमानदार आदमी को ही यह जगह मिले। ओब्लोन्स्की न केवल ईमानदार आदमी था (सामान्य अर्थ में), बल्कि बलसहित उस विशेष अर्थ में भी ईमानदार था, जिस अर्थ में इस शब्द का मास्को में तब उपयोग किया जाता है, जब "ईमानदार कार्यकर्त्ता, ईमानदार लेखक, ईमानदार पत्रिका, ईमानदार संस्था, ईमानदार प्रवृत्ति", आदि कहा जाता है और जिसका मतलब यह होता था कि व्यक्ति अथवा संस्था ईमानदारी ही नहीं दिखाते थे, बल्कि मौक़ा आने पर सरकार से भी टक्कर ले सकते हैं। ओब्लोन्स्की का मास्को के ऐसे क्षेत्रों में बैठना-उठना था, जहां इस शब्द का यही अर्थ समझा जाता था, इन हलक़ों में उसे ईमानदार आदमी माना जाता था और इसलिये दूसरों की तुलना में यह नौकरी पाने का कहीं अधिक अधिकारी था।

यह नौकरी सात से दस हज़ार वार्षिक आय की थी और ओब्लोन्स्की अपनी सरकारी नौकरी छोड़े बिना इसे भी हासिल कर सकता था। इसकी नियुक्ति दो मंत्रालयों, एक महिला और दो यहूदियों पर निर्भर थी और यद्यपि इन सभी लोगों के साथ ज़मीन तैयार कर दी गयी थी, तथापि ओब्लोन्स्की के लिये पीटर्सबर्ग जाकर उनसे मिलना ज़रूरी था। इसके अलावा उसने अपनी बहन आन्ना से यह वादा किया था कि वह तलाक़ के मामले में कारेनिन से कोई निश्चित उत्तर ला देगा। इसलिये डौली से पचास रूबल मांगकर वह पीटर्सबर्ग चला गया।

कारेनिन के अध्ययन-कक्ष में बैठा और रूस की वित्तीय दुर्दशा के कारणों के बारे में उसके विचारों का मसविदा सुनते हुए ओब्लोन्स्की उस क्षण की प्रतीक्षा में था, जब कारेनिन अपनी बात समाप्त करेगा और वह अपने तथा आन्ना के मामले की चर्चा कर सकेगा।

"हां, यह बिल्कुल सही है," उसने कहा, जब कारेनिन ने चश्मा उतारकर, जिसके बिना अब वह पढ़ नहीं सकता था, अपने भूतपूर्व

साले की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। "जहां तक ब्योरों का सम्बन्ध है, यह सब बिल्कुल सही है, फिर भी स्वतन्त्रता ही हमारे युग का सिद्धान्त है।"

"हां, किन्तु मैं एक अन्य सिद्धान्त प्रस्तुत कर रहा हूं, जो स्वतन्त्रता के सिद्धान्त को भी अपने में समेट लेता है," कारेनिन ने "समेट" शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा और उस भाग को पढ़ने के लिये, जहां यह कहा गया था, फिर से चश्मा चढ़ा लिया।

और बड़े-बड़े हाशिये छोड़कर सुन्दर अक्षरों में लिखी पाण्डुलिपि के पन्ने उलटकर कारेनिन ने फिर से ज़ोरदार दलील वाला हिस्सा पढ़ा।

"मैं निजी लाभ के भूखों के लिये ही नहीं, बल्कि सभी, निम्न और उच्च वर्गों और समान भलाई के लिये भी व्यापार-रक्षा-प्रणाली नहीं चाहता हूं," उसने चश्मे के ऊपर से ओब्लोन्स्की की ओर देखते हुए कहा। "किन्तु वे इसे नहीं समझ सकते, वे व्यक्तिगत हितों की पूर्त्ति में व्यस्त हैं और केवल वाक्यों के फेर में पड़े रहते हैं।"

ओब्लोन्स्की को मालूम था कि कारेनिन ने जब यह कहना शुरू किया था कि "वे" अर्थात वही लोग, जो उसके मसविदों को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे और रूस में सारी बुराई की जड़ थे, "वही" लोग क्या करते और सोचते हैं, तो वह अपनी बात समाप्त करने को है। इसलिये उसने अब बड़ी ख़ुशी से स्वतन्त्रता के सिद्धान्त से इन्कार कर दिया और पूरी तरह सहमत हो गया। सोच में डूबा-सा, पाण्डुलिपि के पन्ने उलटता-पलटता हुआ कारेनिन चुप हो गया।

"अरे, हां," ओब्लोन्स्की ने कहा, "मैं यह अनुरोध करना चाहता हूं कि पोमोर्स्की से भेंट होने पर तुम उससे यह चर्चा कर देना कि मैं दक्षिणी रेलवे और बैंकों के पारस्परिक ऋण-कोष की संयुक्त एजेंसी के बोर्ड के सदस्य की एक ख़ाली होनेवाली जगह पाने को बहुत उत्सुक हूं।"

ओब्लोन्स्की दिल में घर कर चुकी इस नौकरी के नाम का इतना अभ्यस्त हो चुका था कि किसी तरह की ग़लती किये बिना उसने झटपट उसका नाम ले दिया।

कारेनिन ने इस नये आयोग के कार्यकलापों के बारे में पूछ-ताछ की और सोच में पड़ गया। वह यह जानना चाहता था कि इस आयोग

की गतिविधियों में उसके मसविदों के प्रतिकूल तो कुछ नहीं है। किन्तु चूंकि इस नयी संस्था के कार्यकलाप बहुत जटिल थे और उसके मसविदे बहुत ही विस्तृत क्षेत्र से सम्बन्ध रखते थे, उसके लिये झटपट यह समझ पाना सम्भव नहीं हो सका और उसने चश्मा उतारते हुए कहा –

"मैं निश्चय ही उससे यह कह सकता हूं, मगर तुम किसलिये यह नौकरी पाना चाहते हो?"

"इसलिये कि वेतन अच्छा है, नौ हज़ार तक और मेरे साधन ..."

"नौ हज़ार," कारेनिन ने दोहराया और उसके माथे पर बल पड़ गये। इस ऊंचे वेतन ने उसे याद दिलाया कि इस दृष्टि से ओब्लोन्स्की के प्रस्तावित कार्यकलाप उसके मसविदों की मुख्य भावना के, जो हमेशा किफ़ायत पर ज़ोर देती थी, विरुद्ध थे।

"मैं यह समझता हूं और इस बारे में एक नोट भी लिख चुका हूं कि हमारे समय में ऐसे बड़े-बड़े वेतन हमारी सरकार की ग़लत आर्थिक assiette* के लक्षण हैं।"

"तो तुम क्या चाहते हो?" ओब्लोन्स्की ने जानना चाहा। "मान लो कि बैंक के डायरेक्टर को दस हज़ार मिलते हैं, तो वह इसके लायक़ है। या फिर कोई इंजीनियर बीस हज़ार पाता है। तुम कुछ भी कहो, मगर उनका काम हंसी-मज़ाक़ नहीं है।"

"मैं यह मानता हूं कि वेतन उसके बदले में प्राप्त होनेवाले माल का मूल्य है और उस पर मांग तथा पूर्त्ति का नियम लागू होना चाहिये। यदि वेतन इस नियम की अवहेलना करता है, जैसे कि जब मैं यह देखता हूं कि इंस्टीट्यूट की पढ़ाई ख़त्म करके निकलनेवाले समान ज्ञान और योग्यता के इंजीनियरों में से एक को चालीस हज़ार मिलता है और दूसरा केवल दो हज़ार पाता है या फिर जब किन्हीं विशेष योग्यताओं के बिना वकीलों और हुस्सारों को बहुत बड़ी-बड़ी तनख़ाहें देकर बैंकों के डायरेक्टर नियुक्त किया जाता है, तो मैं इसी नतीजे पर पहुंचता हूं कि ऐसे वेतन मांग और पूर्त्ति के नियमानुसार नहीं, बल्कि किसी को ख़ुश करने के लिये निर्धारित किये जाते हैं। और यह दुरुपयोग

* नीति। (फ़्रांसीसी)

है, जो अपने आपमें भी महत्त्वपूर्ण है और जिसका सरकारी सेवा पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। मेरी राय में..."

ओब्लोन्स्की ने कारेनिन को जल्दी से बीच में ही टोक दिया।

"मगर तुम इस बात से तो सहमत हुए बिना नहीं रह सकते कि एक नयी और निश्चय ही उपयोगी संस्था खुल रही है। कुछ भी कहो, यह महत्त्वपूर्ण बात है! इसके लिये वे सबसे ज़रूरी तो यह मानते हैं कि इसका ईमानदारी से संचालन हो," ओब्लोन्स्की ने "ईमानदारी" शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

किन्तु कारेनिन "ईमानदारी" शब्द के मास्को वाले अर्थ को समझ नहीं पाया।

"ईमानदारी केवल नकारात्मक गुण है," कारेनिन ने कहा।

"फिर भी तुम मुझ पर यह बहुत बड़ा एहसान कर दोगे न," ओब्लोन्स्की बोला, "ऐसे, बातों-बातों में ही पोमोर्स्की से मेरे बारे में दो शब्द कह देना..."

"किन्तु मुझे लगता है कि यह मामला बोल्गारिनोव पर ज़्यादा निर्भर करता है," कारेनिन ने मत प्रकट किया।

"बोल्गारिनोव इसके लिये पूरी तरह राज़ी है," ओब्लोन्स्की ने उत्तर दिया और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी।

बोल्गारिनोव का ज़िक्र आने पर ओब्लोन्स्की के चेहरे पर इसलिये झेंप की लाली दौड़ गयी थी कि इसी सुबह को वह यहूदी बोल्गारिनोव से मिलने गया था और इस मुलाक़ात ने उसके दिल में बड़ी कड़वी याद छोड़ी थी। ओब्लोन्स्की को इस बात का पक्का यक़ीन था कि जिस काम में वह अपना योग देना चाहता था, वह नया, महत्त्वपूर्ण और ईमानदारी का काम था। मगर आज सुबह, बोल्गारिनोव ने स्पष्टतः जान-बूझ कर जब अन्य प्रार्थियों के साथ उसे भी दो घण्टे तक प्रतीक्षा-कक्ष में बैठे रहने को विवश किया, तो सहसा उसे बड़ा अटपटा-सा लगा।

यह कहना मुश्किल है कि उसे इसलिये अटपटा लगा कि वह र्‍यूरिक का वंशज, प्रिंस ओब्लोन्स्की दो घण्टे तक एक यहूदी के प्रतीक्षा-कक्ष में बैठा प्रतीक्षा करता रहा था या इसलिये कि जीवन में पहली बार राज्य-सेवा करनेवाले अपने दादों-परदादों के उदाहरण का अनुकरण न करते हुए नये कार्य-क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता था, मगर उसे बहुत ही

अटपटा लग रहा था। बोल्गारिनोव के यहां दो घण्टे तक इन्तज़ार करने के वक़्त ओब्लोन्स्की ने प्रतीक्षा-कक्ष में फुर्ती से इधर-उधर चहलक़दमी करते, गलमुच्छों पर ताव देते, अन्य प्रार्थियों से बातें करते और ऐसा शब्द-खिलवाड़ सोचते हुए, जो वह यहूदी के यहां प्रतीक्षा के बारे में मित्रों को सुना सके, जिस भावना को अनुभव किया, उसे उसने यत्नपूर्वक दूसरों से, यहां तक कि ख़ुद से भी छिपाया।

किन्तु इस सारे वक़्त वह परेशानी और खीझ महसूस करता रहा था और स्वयं भी उसका कारण नहीं जानता था। शायद इसलिये कि यहूदी शब्द को लेकर कोई अच्छा श्लेष नहीं बन पाया था या फिर किसी दूसरी वजह से। अन्त में बोल्गारिनोव जब स्पष्टतः उसके अपमान से ख़ुश होता हुआ उससे बहुत ही शिष्टतापूर्वक मिला और उसने नौकरी देने से लगभग इन्कार कर दिया, तो ओब्लोन्स्की ने जल्दी से जल्दी इस मामले को भूल जाना चाहा। और केवल अभी याद आने पर उसका चेहरा झेंप से लाल हो गया था।

(१८)

"अब मुझे तुमसे एक और बात करनी है और तुम जानते हो कि वह क्या है। आन्ना के बारे में," कुछ देर तक चुप रहने और यहूदी के यहां प्रतीक्षा करने की कटु स्मृति को भुलाने के बाद ओब्लोन्स्की ने कहा।

ओब्लोन्स्की के आन्ना का नाम लेते ही कारेनिन के चेहरे का भाव बिल्कुल बदल गया – पहले की सजीवता की जगह उसके चेहरे पर थकान और मुर्दनी-सी छा गयी।

"आप मुझसे चाहते क्या हैं?" आरामकुर्सी में बेचैनी से हिलते-डुलते और चश्मे को डिबिया में फटाक से बन्द करते हुए उसने पूछा।

"निर्णय, कोई निर्णय, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच। मैं अब तुमसे यह बात" ("अपमानित पति के नाते नहीं" ओब्लोन्स्की ने कहना चाहा, किन्तु इस डर से कि ऐसा करके वह सारा मामला बिगाड़ देगा, उसने इन शब्दों को बदल दिया) "एक राजकीय कार्यकर्त्ता के नाते नहीं" (जो अप्रसंग था), "बल्कि एक व्यक्ति, एक दयालु व्यक्ति

और अच्छे ईसाई के नाते करना चाहता हूं। तुम्हें उस पर तरस खाना चाहिये," वह बोला।

"आपका मतलब क्या है?" कारेनिन ने धीमी आवाज़ में प्रश्न किया।

"हां, उस पर तरस खाना चाहिये। अगर तुमने उसे मेरी तरह देखा होता – मैंने पूरा जाड़ा उसके साथ बिताया – तो तुम्हें उस पर तरस आ गया होता। उसकी स्थिति भयानक, हां, भयानक है।"

"मुझे ऐसा प्रतीत हुआ था," कारेनिन ने अधिक पतली, लगभग चिचियाती आवाज़ में उत्तर दिया, "कि आन्ना अर्कादि्येव्ना स्वयं जो कुछ चाहती थीं, उन्हें वह सब प्राप्त है।"

"ओह, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, भगवान के लिये हम किसी को भला और किसी को बुरा कहने के फेर में नहीं पड़ेंगे! जो हो गया, सो हो गया और तुम जानते हो कि वह क्या चाहती और किस बात की प्रतीक्षा कर रही है – वह तलाक़ चाहती है।"

"मगर मेरा तो यह ख़्याल था कि अगर मैं बेटे को अपने पास रखने की मांग करूंगा, तो आन्ना अर्कादि्येव्ना तलाक़ नहीं लेना चाहेगी। मैंने यही मानते हुए जवाब लिख दिया था और सोचा था कि मामला ख़त्म हो गया और मैं उसे ख़त्म ही समझता हूं," कारेनिन चिचिया उठा।

"भगवान के लिये गुस्से में नहीं आओ," ओब्लोन्स्की ने बहनोई का घुटना छूते हुए कहा। "मामला ख़त्म नहीं हुआ। अगर तुम मुझे दोहराने की अनुमति दो, तो मामला कुछ इस तरह था – जब तुम दोनों अलग हुए, तो तुमने बड़ी महानता, इतनी उदारता दिखाई, जितनी सम्भव हो सकती है। तुमने उसे सब कुछ दिया – आज़ादी, तलाक़ भी। उसने इसका ऊंचा मूल्यांकन किया। नहीं, तुम यह नहीं समझो कि मैं मन से बात बना रहा हूं। हां, हां, उसने ऊंचा मूल्यांकन किया। सो भी इस हद तक कि पहले क्षणों में अपने को तुम्हारे सामने अपराधी अनुभव करते हुए उसने कुछ भी सोच-विचार नहीं किया और कर भी नहीं सकती थी। उसने सभी चीज़ों से इन्कार कर दिया। किन्तु जीवन की वास्तविकता और समय ने यह दिखाया कि उसकी स्थिति यातनाप्रद और असह्य है।"

"आन्ना अर्काद्येव्ना के जीवन में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है," कारेनिन ने त्योरी चढ़ाते हुए ओब्लोन्स्की को टोका।

"बुरा नहीं मानना, मगर मैं यह मानने को तैयार नहीं हूं," ओबलोन्स्की ने दबी ज़बान से आपत्ति की। "उसकी स्थिति उसके लिये यातनापूर्ण है और इससे अन्य किसी को लाभ नहीं है। तुम कहोगे कि वह इसी के लायक़ है। वह यह जानती है और तुमसे कुछ भी अनुरोध नहीं करती है—वह से साफ़ कहती है कि वह तुमसे किसी भी चीज़ का अनुरोध करने को साहस नहीं कर सकती। किन्तु मैं, सभी रिश्तेदार, उसे प्यार करनेवाले सभी लोग तुमसे अनुरोध, तुम्हारी मिन्नत करते हैं। किसलिये वह यातना सह रही है? किसका इससे भला हो रहा है?"

"सुनिये, आप मानो मुझे अपराधी के कठघरे में खड़ा कर रहे हैं," कारेनिन ने कहा।

"आरे नहीं, बिल्कुल नहीं, ज़रा भी नहीं, तुम मेरा मतलब समझो," फिर से कारेनिन के हाथ को छूते हुए वह बोला, मानो उसे विश्वास हो कि उसके इस स्पर्श से बहनोई नर्म पड़ जायेगा। "मैं सिर्फ़ इतना ही कह रहा हूं कि उसकी स्थिति यातनापूर्ण है, तुम इसे बेहतर बना सकते हो और तुम्हें इससे कोई हानि नहीं होगी। मैं इस ढंग से सारा प्रबन्ध कर दूंगा कि तुम्हें कुछ पता भी नहीं चलेगा। आख़िर तो तुमने इसका वादा भी किया था।"

"वादा पहले किया था। और मेरा ख़्याल था कि बेटे के प्रश्न ने मामले को ख़त्म कर दिया। इसके अलावा मुझे आशा थी कि आन्ना अर्काद्येव्ना विशाल हृदयता का परिचय देंगी..." कारेनिन ने, जिसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, बड़ी कठिनाई और कांपते होंठों से कहा।

"वह तुम्हारी विशाल हृदयता पर भरोसा कर रही है। वह केवल एक बात के लिये अनुरोध, एक बात के लिये मिन्नत करती है—कि उसे उस असह्य स्थिति से उबार लिया जाये, जिसमें वह इस समय है। वह अब बेटे की भी मांग नहीं करती। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, तुम दयालु व्यक्ति हो। घड़ी भर को अपने को उसकी स्थिति में रखकर देखो। उसकी स्थिति में उसके लिये तलाक़ का सवाल ज़िन्दगी और मौत का सवाल है। अगर तुमने पहले वादा न किया होता, तो उसने

अपने हालात से समझौता कर लिया होता और गांव में ही रहती। किन्तु तुमने वचन दिया था, इसलिये उसने तुम्हें पत्र लिखा और मास्को आ गयी। और मास्को में ,जहां हर भेंट उसके दिल पर खंजर के वार की तरह होती है, वह हर दिन निर्णय की राह देखती हुई छः महीनों से रह रही है। यह बिल्कुल वैसी ही बात है, जैसे मृत्यु-दण्ड पाये हुए व्यक्ति के गले में फांसी का फंदा डालकर महीनों तक इसी दुविधा में रखा जाये कि उसका काम तमाम कर दिया जायेगा या शायद उसे माफ़ी मिल जायेगी। तुम उस पर दया करो और फिर मैं सब व्यवस्था करने की ज़िम्मेदारी लेता हूं... Vos scrupules...*"

"मैं इसकी... इसकी चर्चा नहीं कर रहा हूं," कारेनिन ने घिनाते हुए उसे बीच में ही टोक दिया। "किन्तु यह हो सकता है कि मैंने उस चीज़ का वादा कर दिया हो, जिसका वादा करने का मुझे अधिकार नहीं था।"

"तो तुम अपने किये हुए वादे से इन्कार करते हो?"

"जो सम्भव है, उसे करने से मैं कभी इन्कार नहीं करता हूं। लेकिन मुझे यह सोचने के लिये वक़्त चाहिये कि मैंने जिस चीज़ का वचन दिया है, उसे किस सीमा तक पूरा करना सम्भव है।"

"नहीं, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच!" ओब्लोन्स्की ने उछलकर खड़े होते हुए कहा, "मैं इस बात पर विश्वास नहीं करना चाहता। वह इतनी अधिक दुखी है, जितनी दुखी कोई औरत हो सकती है और तुम ऐसी चीज़ से इन्कार नहीं कर सकते..."

"दिये गये वचन को किस सीमा तक पूरा करना सम्भव है। Vous professez d'être un libre penseur.** किन्तु मैं, जो आस्था रखनेवाला व्यक्ति हूं, ऐसे महत्त्वपूर्ण मामले में ईसाई धर्म के नियम के प्रतिकूल व्यवहार नहीं कर सकता।"

"जहां तक मुझे मालूम है, ईसाई धर्म के समाजों और हमारे यहां भी तलाक़ की इजाज़त है," ओब्लोन्स्की ने कहा, "हमारे चर्च के अनुसार भी इसकी अनुमति है। और हम देखते हैं..."

---

* तुम्हारी संवेदनशीलता... (फ़्रांसीसी)

** तुम उदारमना आदमी हो। (फ़्रांसीसी)

"अनुमति है, किन्तु इस अर्थ में नहीं।"

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, मैं तुम्हें पहचान नहीं पा रहा हूं," कुछ देर चुप रहने के बाद ओब्लोन्स्की ने कहा। "क्या तुमने ही सब कुछ क्षमा नहीं कर दिया था (और क्या हमने इसका ऊंचा मूल्यांकन नहीं किया था?) और ईसाई धर्म की भावनाओं से प्रेरित होकर तुम सब कुछ बलिदान करने को तैयार नहीं थे? तुम्हीं ने तो कहा था – अगर क़मीज़ लें, तो कोट भी दे दो और अब..."

"मैं अनुरोध करता हूं," कारेनिन ने, जिसका चेहरा पीला पड़ गया था और जबड़ा कांप रहा था, सहसा उठते हुए चिचियाती आवाज़ में कहा, "आपसे अनुरोध करता हूं ... इस बातचीत को बन्द कर दीजिये, बन्द कर दीजिये।"

"ओह, नहीं! पर ख़ैर, अगर मैंने तुम्हारे दिल को ठेस पहुंचाई है, तो माफ़ कर दो, मुझे माफ़ कर दो," परेशान-सा होकर मुस्कराते और कारेनिन की ओर हाथ बढ़ाते हुए ओब्लोन्स्की कह उठा, "मैंने केवल एक दूत की तरह अपने को सौंपा गया कार्यभार पूरा कर दिया है।"

कारेनिन ने उससे हाथ मिलाया और सोच में डूबते हुए कहा –

"मेरे लिये सोच-विचार और सलाह-मशविरा करना ज़रूरी है और परसों मैं तुम्हें अपना आख़िरी जवाब दे दूंगा," कुछ सोचने के बाद वह बोला।

(१९)

ओब्लोन्स्की जाने ही को था कि नौकर कोरनेई ने सेर्गेई अलेक्सेयेविच के आगमन की घोषणा की।

"यह सेर्गेई अलेक्सेयेविच कौन है?" ओब्लोन्स्की ने कहना शुरू किया, किन्तु उसी समय उसे याद आ गया।

"अच्छा, सेर्योझा!" वह बोला। "'सेर्गेई अलेक्सेयेविच' – मैंने सोचा कोई विभागाध्यक्ष है।" "आन्ना ने उससे मिलने का मुझसे अनुरोध भी किया था," उसे स्मरण हो आया।

और ओब्लोन्स्की को उस सहमे हुए तथा दयनीय भाव का ध्यान आया, जो विदा करते समय आन्ना के चेहरे पर था और जब उसने यह

कहा था – “तुम्हारी उससे मुलाक़ात तो होगी ही। तफ़सील से मालूम करना कि वह कहां रहता है, कौन उसकी देखभाल करता है। और स्तीवा ... यदि सम्भव हो सके! सम्भव हो सकता है न?” ओब्लोन्स्की समझ गया कि “यदि सम्भव हो सके!” से आन्ना का क्या अभिप्राय है। यही कि अगर सम्भव हो, तो तलाक़ की ऐसी व्यवस्था की जाये कि बेटा उसे मिल जाये ... ओब्लोन्स्की देख रहा था कि अब तो इसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। फिर भी वह भानजे से मिलकर ख़ुश था।

कारेनिन ने अपने साले को याद दिलाया कि बेटे से उसकी मां की कभी चर्चा नहीं की जाती और अनुरोध किया कि वह उससे मां की याद दिलानेवाला एक भी शब्द न कहे।

“मां के साथ उस मिलन के बाद वह बहुत बीमार रहा था, जिसकी हम पूर्व-कल्पना नहीं कर पाये थे,” कारेनिन ने बताया। “हमें उसकी ज़िन्दगी के बारे में भी ख़तरा हो गया था। लेकिन अच्छे इलाज और गर्मियों में समुद्र-स्नान से उसकी सेहत ठीक हो गयी है और अब डाक्टर की सलाह पर मैंने उसे स्कूल भेजना शुरू कर दिया है। वास्तव में ही सहपाठियों-साथियों की संगत का उस पर अच्छा प्रभाव पड़ा है, वह बिल्कुल स्वस्थ हो गया है और पढ़ाई में भी अच्छा है।”

“अरे, वाह, कैसा बांका जवान हो गया है! सो भी सेर्योझा नहीं, सेर्गेई अलेक्सेयेविच!” ओब्लोन्स्की ने नीली जाकेट और लम्बा पतलून पहने हुए सुन्दर और चौड़े कन्धोंवाले लड़के के बेझिझक और आत्म-विश्वास से कमरे में दाख़िल होने पर मुस्कराकर कहा। लड़का स्वस्थ और ख़ुश नज़र आ रहा था। उसने अजनबी की तरह मामा का अभिवादन किया, किन्तु मामा को पहचान लेने पर उसके चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ गयी और झटपट दूसरी तरफ़ ऐसे मुंह फेर लिया मानो वह किसी कारण नाराज़ और गुस्से में हो। पिता के पास जाकर उसने उन्हें स्कूल में मिली अंकों की रिपोर्ट दे दी।

“यह तो ख़ासी अच्छी है,” पिता ने कहा, “तुम जा सकते हो।”

“यह दुबला और लम्बा तथा बच्चा न रहकर बड़ा-सा लड़का हो गया है। मुझे यह पसन्द है,” ओब्लोन्स्की ने कहा। “तुम्हें मेरी याद है?”

लड़के ने झटपट पिता की तरफ़ देखा।

"याद है, mon oncle,*" उसने मामा की तरफ़ देखते हुए जवाब दिया और फिर से उसकी नज़रों में परायापन-सा आ गया।

मामा ने लड़के को अपने क़रीब बुलाकर उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"तो सुनाओ, कैसा हाल-चाल है?" उसने पूछा। वह लड़के से बातचीत करना चाहता था, मगर यह नहीं जानता था कि क्या कहे।

लड़का लज्जारुण होते और कोई उत्तर न देते हुए मामा के हाथ से धीरे-धीरे अपना हाथ पीछे खिसकाने लगा। ओब्लोन्स्की ने जैसे ही उसका हाथ छोड़ा कि पिता की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखकर वह तेज़ क़दम बढ़ाता पिंजरे से मुक्त हुए पंछी की भांति कमरे से बाहर चला गया।

सेर्योझा की अपनी मां से हुई अन्तिम भेंट के बाद एक वर्ष बीत चुका था। तब से उसने मां के बारे में कभी कुछ नहीं सुना था। इसी साल उसे स्कूल भेज दिया गया था, सहपाठियों से उसकी जान-पहचान हो गयी थी, लगाव हो गया था। मां के बारे में वे सपने और स्मृतियां, जिन्होंने उस अन्तिम भेंट के बाद उसे रोगी बना दिया था, अब उसे परेशान नहीं करती थीं। उनकी याद आ जाने पर वह उन्हें लज्जाजनक और एक लड़के तथा साथी के नहीं, बल्कि केवल लड़कियों के लायक़ मानते हुए अपने दिल से दूर भगाने की पूरी कोशिश करता। उसे मालूम था कि पिता और मां के बीच झगड़ा हुआ था और इसलिये वे अलग हो गये थे। वह यह भी जानता था कि उसे पिता के साथ ही रहना होगा और उसने अपने को इस विचार का अभ्यस्त बनाने का प्रयास किया।

शक्ल-सूरत में मां के साथ मिलते-जुलते मामा से भेंट उसे अच्छी नहीं लगी, क्योंकि इससे वही यादें ताज़ा हो उठी थीं, जिन्हें वह लज्जा-जनक मानता था। कमरे के दरवाज़े पर प्रतीक्षा करते हुए उसने जो कुछ शब्द सुने थे, उनके कारण, तथा विशेष रूप से इसलिये भी कि पिता और मामा के चेहरों के भावों से उसने यह अनुमान लगा लिया

---

* मामा। (फ़्रांसीसी)

था कि उनके बीच मां के बारे में ही चर्चा होती रही थी, यह भेंट उसके लिये और अधिक अप्रिय हो गयी थी। जिस पिता के साथ वह रहता था और जिस पर निर्भर था, उसे दोषी न ठहराने और मुख्यतः तो भावुकता का शिकार न होने के लिये, जिसे वह लज्जाजनक मानता था, सेर्योझा ने उस मामा की ओर न देखने का प्रयास किया, जो उसके मन का चैन भंग करने आया था और इस तरह उसने उन चीज़ों के बारे में सोचने से बचना चाहा, जिनकी वह याद दिलाता था।

किन्तु सेर्योझा के फ़ौरन बाद बाहर आनेवाले ओब्लोन्स्की ने जब लड़के को ज़ीने पर देखकर अपने पास बुलाया और पूछा कि वह पाठों के बीच अपना ख़ाली वक़्त कैसे बिताता है, तो पिता की अनुपस्थिति में वह उससे बातचीत करने लगा।

"आजकल हम रेलगाड़ी का खेल खेलते हैं," मामा के प्रश्न का उत्तर देते हुए उसने बताया। "यह खेल कुछ ऐसे खेला जाता है – दो लड़के एक बेंच पर बैठ जाते हैं। ये मुसाफ़िर होते हैं। एक और लड़का इसी बेंच पर खड़ा हो जाता है। बाक़ी लड़के इसी बेंच के साथ अपने को जोत लेते हैं – उसे हाथों से पकड़कर या फिर पेटियों से अपने को बेंच के साथ बांधकर – और सभी हॉलों का चक्कर लगाने लगते हैं। दरवाज़े पहले से ही खोल दिये जाते हैं। इस खेल में कंडक्टर होना बड़ा मुश्किल होता है।"

"कंडक्टर वही होता है, जो खड़ा रहता है?" ओब्लोन्स्की ने मुस्कराते हुए पूछा।

"हां। इसके लिये दिलेरी और चुस्ती-फुर्ती जरूरी होती है, ख़ास तौर पर उस वक़्त, जब कोई अचानक रुक जाता है या गिर पड़ता है।"

"हां, यह कोई हंसी-मज़ाक़ नहीं," ओब्लोन्स्की ने सेर्योझा की सजीवता से चमकती और मां की आंखों से मिलती-जुलती आंखों को, जो अब बच्चों जैसी तथा पूरी तरह भोली-भाली नहीं रह गयी थीं, उदासी से देखते हुए कहा। यद्यपि उसने कारेनिन को बचन दिया था कि वह सेर्योझा से आन्ना की चर्चा नहीं करेगा, तथापि वह ऐसा किये बिना रह नहीं सका।

"तुम्हें अपनी मां तो याद है न?" उसने सहसा पूछा।

"नहीं, याद नहीं," सेर्योझा ने जल्दी-जल्दी उत्तर दिया और

एकदम लाल-सुर्ख़ होते हुए पराया-सा हो गया। इसके बाद मामा उससे कुछ भी मालूम नहीं कर पाया।

आध घण्टे बाद स्लाव भाषा के शिक्षक को अपना शिष्य ज़ीने में बैठा मिला और वह देर तक यह नहीं समझ पाया कि उसका शिष्य गुस्से में है या रो रहा है।

"लगता है कि आप जब गिरे थे, तो चोट खा गये?" शिक्षक ने कहा। "मैंने तो कहा था न कि यह ख़तरनाक खेल है। स्कूल के डायरेक्टर से कहना पड़ेगा।"

"अगर चोट लगी होती तो इसके बारे में किसी को कुछ पता न चलता। यह तो निश्चित समझिये।"

"तो फिर क्या बात है?"

"मुझे परेशान नहीं कीजिये! याद है या नहीं याद है... उसे मतलब? क्या ज़रूरत है मुझे याद करने की? मुझे परेशान न कीजिये!" वह अब शिक्षक से नहीं, बल्कि सारी दुनिया से कह रहा था।

(२०)

ओब्लोन्स्की सदा की भांति इस बार भी पीटर्सबर्ग में बेकार समय नष्ट नहीं कर रहा था। बहन के तलाक़ और अपनी नौकरी के लिये कोशिश करने के अलावा पीटर्सबर्ग में उसे हमेशा की तरह, जैसा कि वह कहा करता था, मास्को में लगी हुई फफूंद उतार कर अपने को ताज़ादम करना था।

Cafés chantans और बसों के बावजूद मास्को ठहरे हुए पानी के दलदल के समान था। ओब्लोन्स्की हमेशा ऐसा महसूस करता था। मास्को में, विशेषतः परिवार के निकट रहने पर उसे अनुभव होता कि उसका उत्साह और ज़िन्दादिली मरती जा रही है। कहीं दूसरी जगह गये बिना, देर तक मास्को में रहने पर उसकी ऐसी हालत हो जाती कि वह बीवी के चिड़चिड़ेपन और ताने-बोलियों, बच्चों के स्वास्थ्य और पालन-शिक्षण, नौकरी की छोटी-मोटी बातों, यहां तक कि इस चीज़ से भी परेशान होने लगता कि वह क़र्ज़दार है। किन्तु पीटर्सबर्ग पहुंचते ही और उस हलक़े में कुछ दिन बिताते ही, जिसमें उसका बैठना-उठना

और मिलना-जुलना होता था, तथा जहां लोग जीते थे, सही अर्थ में जीते थे और मास्को की तरह वक़्त कटी नहीं करते थे, इस तरह के सारे विचार उसके दिमाग़ से ग़ायब हो जाते थे, वैसे ही पिघलकर बह जाते थे, जैसे आग के सामने मोम।

बीवी?.. आज ही प्रिंस चेचेन्स्की से उसकी बात हुई थी। चेचेन्स्की के बीवी-बच्चे थे – वयस्क लड़के, जो शाही सैनिक स्कूल में शिक्षा पा रहे थे – और उसका एक दूसरा ग़ैरक़ानूनी परिवार था और उस परिवार में भी बच्चे थे। बेशक़ पहला परिवार भी अच्छा था, मगर चेचेन्स्की को दूसरे परिवार में अधिक सुख मिलता था। वह अपने बड़े बेटे को दूसरे परिवार में ले गया था और उसने ओब्लोन्स्की को बताया कि ऐसा करना वह बेटे के लिये लाभदायक और उसके विकास की दृष्टि से उपयोगी समझता है। ऐसा होने पर मास्को में लोग क्या कहते?

बच्चे? पीटर्सबर्ग में बच्चे पिताओं के जीने में बाधा नहीं डालते थे। बच्चों की संस्थाओं में शिक्षा-दीक्षा होती थी और मास्को में प्रचलित वह बेहूदा चीज़ वहां नहीं थी, जैसी, मिसाल के तौर पर, ल्वोव के यहां देखी जा सकती थी यानी यह कि जीवन के सभी ऐश-आराम बच्चों के लिये हों और माता-पिता केवल श्रम और चिन्ता करें। यहां इस बात को सही समझा जाता था कि व्यक्ति को अपने लिये जीना चाहिये, जैसे कि हर सुशिक्षित-सुसंस्कृत व्यक्ति को जीना चाहिये।

सरकारी नौकरी? यहां नौकरी भी मास्को की भांति सदा चलती जानेवाली कड़ी मेहनत और निराशाजनक नीरसता की चक्की नहीं थी। यहां नौकरी करने में मज़ा था। किसी ढंग के आदमी से भेंट हो गयी, किसी के लिये कुछ कर दिया, निशाने पर तीर की तरह ठीक बैठनेवाला कोई शब्द कह दिया, हंसी-मज़ाक़ में लोगों का ख़ाका उतार दिया – और बस, देखते ही देखते आदमी कहीं का कहीं पहुंच जाता है, जैसा कि ब्रियान्त्सेव के साथ हुआ था, जिससे ओब्लोन्स्की की एक दिन पहले मुलाक़ात हुई थी और जो अब बहुत ऊंचे सरकारी ओहदे पर था। ऐसी नौकरी करना तो कोई बात भी हुई।

पैसों के मामलों में पीटर्सबर्ग के लोगों का दृष्टिकोण विशेष रूप से ओब्लोन्स्की के दिल को चैन देता था। बार्तन्यान्स्की ने, जो अपने

train* के अनुसार कम से कम पचास हज़ार वार्षिक ख़र्च करता था, इस सम्बन्ध में उसे एक दिन पहले बहुत ही बढ़िया शब्द कहे थे।

शाम के खाने के पहले बातचीत करते हुए ओब्लोन्स्की ने बार्तन्यान्स्की से कहा –

"मेरे ख़्याल में तो मोर्द्वीन्स्की से तुम्हारा अच्छा मेल-जोल है। उससे मेरी सिफ़ारिश के दो शब्द कहकर तुम मुझ पर बड़ा एहसान कर सकते हो। एक नौकरी है, जो मैं पाना चाहता हूं। एजेंसी के सदस्य ..."

"यह मुझे याद तो किसी हालत में नहीं रहेगा... लेकिन तुम्हें इन रेलों और यहूदियों से वास्ता डालकर क्या लेना है?.. कुछ भी कहो, बड़ा गन्दा मामला है यह!"

ओब्लोन्स्की ने उससे नहीं कहा कि यह महत्त्वपूर्ण काम है – बार्तन्यान्स्की की समझ में यह न आया होता।

"पैसे चाहिये, जीने के लिये कुछ नहीं है।"

"फिर भी जी रहे हो न?"

"क़र्ज़ लेकर।"

"अच्छा? बहुत क़र्ज़ है क्या?" बार्तन्यान्स्की ने संवेदनापूर्वक जिज्ञासा प्रकट की।

"बहुत है, कोई बीस हज़ार।"

बार्तन्यान्स्की ने ज़ोर का ठहाका लगाया।

"अरे, बड़े ख़ुशक़िस्मत आदमी हो!" उसने कहा। "मेरे सिर पर पन्द्रह लाख का क़र्ज़ है, हाथ-पल्ले कुछ भी नहीं और जैसा कि देख रहे हो, फिर भी जिया जा सकता है!"

और ओब्लोन्स्की ने केवल शब्दों में ही नहीं, बल्कि वास्तविक जीवन में भी इस बात की सचाई को देखा था। जीवाख़ोव के सिर पर तीन लाख का क़र्ज़ था, एक फूटी कौड़ी भी पास में नहीं थी, मगर फिर भी जी रहा था और सो भी बड़े मज़े से! लोगों की नज़र में काउंट क्रिव्त्सोव कभी का दीवालिया हो चुका था, फिर भी दो प्रेमिकायें रखे हुए था। पेत्रोव्स्की पचास लाख उड़ा चुका था और फिर भी पहले की तरह ही रहता था, वित्त-विभाग का अध्यक्ष भी था और बीस हज़ार

* जीवन-ढंग। (फ़्रांसीसी)

वेतन पाता था। इन चीज़ों के अलावा शारीरिक दृष्टि से भी पीटर्सबर्ग का ओब्लोन्स्की पर अच्छा प्रभाव पड़ता था। यहां वह अपने को जवान महसूस करता था। मास्को में कभी-कभी अपने सफ़ेद बालों की तरफ़ उसका ध्यान चला जाता था, शाम के खाने के बाद उसकी आंख लग जाती थी, वह अंगड़ाइयां लेता रहता था, ज़ीने पर हांफता हुआ धीरे-धीरे चढ़ता था, जवान औरतों की संगत में ऊब महसूस करता था, बॉलों में नाचता नहीं था। पीटर्सबर्ग में उसे हमेशा अपनी उम्र दस साल कम लगती।

पीटर्सबर्ग में वह वैसे ही अनुभव करता, जैसे कुछ ही समय पहले विदेश से लौटनेवाले साठ वर्षीय प्रिंस प्योत्र ओब्लोन्स्की ने एक दिन पहले उसे बताया था।

"हम यहां जीना नहीं जानते," प्योत्र ओब्लोन्स्की ने कहा था। "सच मानो, मैं बादेन में गर्मी गुज़ारी और वहां मैं अपने को बिल्कुल जवान आदमी महसूस करता था। कोई जवान औरत नज़र आ जाती और फ़ौरन दिमाग़ में ख़्याल... बढ़िया खाना, कुछ शराब – शक्ति आ जाती, मन ललकने लगता। रूस लौटा – बीवी के पास जाना था और सो भी गांव में। तुम यक़ीन नहीं करोगे, दो हफ़्ते बाद मैंने ड्रेसिंग गाउन पहन लिया, खाने की मेज़ पर जाने के पहले सूट पहनना छोड़ दिया। जवान औरतों की भला कौन सोचेगा! अपने को बिल्कुल बूढ़ा महसूस करने लगा। केवल पापों के प्रायश्चित और आत्मा की चिन्ता करना ही बाक़ी रह गया। पेरिस गया और फिर से जवान हो गया।"

ओब्लोन्स्की भी प्योत्र ओब्लोन्स्की के समान ही अन्तर अनुभव करता था। मास्को में उसकी ऐसी हालत हो जाती थी कि सचमुच अगर देर तक वहीं रहता जाता, तो पापों के प्रायश्चित और आत्मा की रक्षा की नौबत आ जाती। पीटर्सबर्ग में वह अपने को फिर से ढंग का इन्सान महसूस करने लगता था।

प्रिंसेस बेत्सी त्वेरस्काया और ओब्लोन्स्की के बीच एक ज़माने से बड़े अजीब-से सम्बन्ध चले आ रहे थे। ओब्लोन्स्की हंसी-मज़ाक़ में उसके प्रति प्रेम-प्रदर्शन करता और मज़ाक़-मज़ाक़ में ही उसे बड़ी अश्लील बातें कहता, क्योंकि जानता था कि उसे ऐसी बातें ही सबसे ज़्यादा अच्छी लगती हैं। कारेनिन के साथ अपनी बातचीत के अगले दिन

ओब्लोन्स्की उसके यहां गया और अपने को बहुत ही जवान महसूस करते हुए हंसी-मज़ाक़ के इस प्रेम-प्रदर्शन और झूठी बातों के खिलवाड़ में अनजाने ही इस हद तक आगे बढ़ गया कि नहीं समझ पा रहा था कि पीछे कैसे हटे, क्योंकि वह उसे न केवल अच्छी ही नहीं लगती थी, बल्कि बेहद नापसन्द थी। इन दोनों के बीच इस तरह के सम्बन्ध इसलिये क़ायम हो गये थे कि ओब्लोन्स्की उसे बहुत अच्छा लगता था। चुनांचे ओब्लोन्स्की को प्रिंसेस म्याग्काया के आ जाने और उनके इस एकान्त के समाप्त हो जाने पर बहुत ख़ुशी हुई।

"अरे, आप भी यहां हैं," ओब्लोन्स्की को देखकर वह कह उठी। "आपकी उस बेचारी बहन का कैसा हाल-चाल है? आप मेरी ओर ऐसे नहीं देखें," उसने इतना और जोड़ दिया। "जब से सभी लोग उस पर टूट पड़े हैं, वे सभी लोग, जो उससे लाख गुना बुरे हैं, मुझे लगता है कि उसने बहुत ही अच्छा किया है। मैं व्रोन्स्की को इस बात के लिये क्षमा नहीं कर सकती कि आन्ना जब पीटर्सबर्ग में थी, तो उसने मुझे इस बात की ख़बर नहीं दी। मैं उसके पास जाती और उसके साथ सभी जगह गयी होती। कृपया उसे मेरा प्यार दीजिये। तो बताइये न मुझे उसके बारे में।"

"उसकी स्थिति बड़ी विकट है, वह..." ओब्लोन्स्की ने अपनी सरल हृदयता के कारण प्रिंसेस म्याग्काया के शब्दों को सच मानते हुए बताना शुरू किया। मगर अपनी आदत के मुताबिक़ उसने उसे बीच में ही टोक दिया और ख़ुद बोलने लगी।

"उसने वही किया, जो मेरे सिवा सभी करते हैं, किन्तु छिपाते हैं। लेकिन उसने किसी को धोखा नहीं देना चाहा और बहुत अच्छा किया। उसने इसलिये और भी अच्छा किया कि आपके उस नीम-पागल बहनोई को छोड़ दिया। आपसे माफ़ी चाहती हूं। सभी कहते थे कि वह समझदार है, समझदार है, सिर्फ़ मैं ही कहती थी कि बुद्धू है। अब जब उसने लीदिया इवानोव्ना और Landau से नाता जोड़ लिया है, सब कहने लगे हैं कि वह नीम-पागल है और मैं ख़ुशी से सबके साथ असहमत होती, किन्तु अब ऐसा नहीं कर सकती।"

"कृपया मुझे यह समझाइये," ओब्लोन्स्की ने कहा, "कि इस चीज़ का क्या मतलब हो सकता है? कल मैं अपनी बहन के बारे में

बात करने के लिये कारेनिन के यहां गया था और मैंने उससे अनुरोध किया था कि वह कोई निश्चित जवाब दे। उसने मुझे उत्तर नहीं दिया और कहा कि वह इस मामले पर विचार करेगा। किन्तु आज सुबह किसी जवाब की जगह मुझे शाम को काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के यहां आने का निमन्त्रण मिला है।

"सो वही बात है, वही बात है!" प्रिंसेस म्याग्काया ख़ुशी से कह उठी। "वे Landau से उसकी राय पूछेंगे।"

" Landau से? वह किसलिये? यह Landau कौन है?"

"अरे, आप Jules Landau को नहीं जानते, le fameux, Jules Landau, le clairvoyant?* वह भी नीम-पागल है, किन्तु आपकी बहन का भाग्य उसी पर निर्भर करता है। राजधानी से दूर रहने का यही नतीजा होता है, आपको कुछ भी मालूम नहीं। बात यह है कि Landau पेरिस की एक दुकान में commis** था और एक दिन अपने डाक्टर के यहां गया। डाक्टर के प्रतीक्षा-कक्ष में बैठे-बैठे उसे नींद आ गयी और नींद में ही वह सभी रोगियों को सलाहें देने लगा। और बड़ी अद्भुत सलाहें। बाद में यूरी मेलेदीन्स्की – इस रोगी को जानते है न? – की बीवी को इस Landau के बारे में पता चला और वह उसे पति के पास ले गयी। Landau उसके पति का इलाज करता है। मेरे ख़्याल में उसे उसके इलाज से कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि वह पहले की तरह ही कमज़ोर है। मगर उन्हें उसमें विश्वास है और हर जगह उसे अपने साथ लिये रहते हैं। वे उसे रूस ले आये। यहां सभी उसके फेर में पड़ गये और वह सभी का इलाज करने लगा। काउंटेस बेज़्ज़ूबोवा को उसने स्वस्थ कर दिया और उसे उससे इतना प्यार हो गया कि उसे अपना बेटा बना लिया।"

"कैसे बेटा बना लिया?"

"ऐसे ही बेटा बना लिया। वह अब Landau नहीं, बल्कि काउंट

---

* ज्यूल लांदो, प्रसिद्ध ज्यूल लांदो जो अतीन्द्रियदर्शी, दिव्यद्रष्टा है? (फ़्रांसीसी)

** कारिन्दा। (फ़्रांसीसी)

बेज़्ज़ूबोव है। मगर असली बात यह नहीं, बल्कि यह है कि लीदिया – मैं उसे बहुत प्यार करती हूं, लेकिन उसके दिमाग़ के पेच कुछ ढीले हैं – स्वभवतः उस पर रीझ गयी और अब उसके तथा कारेनिन के यहां Landau के बिना कुछ भी तय नहीं होता। इसलिये आपकी बहन का भाग्य इसी Landau यानी काउंट बेज़्ज़ूबोव के हाथों में है।"

(२१)

बार्तन्यान्स्की के यहां शाम को बहुत ही बढ़िया खाना खाने और काफ़ी मात्रा में ब्रांडी पीने के बाद ओब्लोन्स्की नियत समय के कुछ देर बाद काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के घर पहुंचा।

"काउंटेस के यहां और कौन है? फ़ांसीसी?" ओब्लोन्स्की ने कारेनिन का परिचित ओवरकोट पहचानने और एक अजीब, बकलसों वाले ओवरकोट की ओर ध्यान देने के बाद पूछा।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच कारेनिन और काउंट बेज़्ज़ूबोव," दरबान ने कड़ाई से जवाब दिया।

"प्रिंसेस म्याग्काया ने ठीक ही अनुमान लगाया था," ओब्लोन्स्की ने ज़ीने पर चढ़ते हुए सोचा। "बड़ी अजीब-सी बात है! फिर भी इसके साथ घनिष्ठता कर लेना अच्छा होगा। इसका बहुत ही ज़्यादा असर-रसूख़ है। अगर वह पोमोर्स्की को मेरे बारे में दो शब्द कह दे, तो समझो कि नौकरी मेरी हो गयी।"

बाहर अभी उजाला था, मगर काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के छोटे-से मेहमानख़ाने में, जिसके परदे गिरा दिये गये थे, लैम्प जल रहे थे।

काउंटेस और कारेनिन लैम्प के नीचे गोल मेज़ के गिर्द बैठे हुए धीमे-धीमे कुछ बातचीत कर रहे थे। नाटा, दुबला-पतला, औरतों जैसे चूतड़, टेढ़े घुटनों, पीले और सुन्दर चेहरे तथा लम्बे बालों वाला एक व्यक्ति, जिसके बाल उसके फ़्राक-कोट के कालर को छू रहे थे, कमरे के दूसरे सिरे पर खड़ा हुआ दीवार पर लगे छविचित्रों को देख रहा था। गृह-स्वामिनी और कारेनिन से हाथ मिलाने के बाद ओब्लोन्स्की ने बरबस फिर से उस अपरिचित व्यक्ति की ओर देखा।

"Monsieur Landau!" काउंटेस ने ऐसी कोमलता और सावधा-

नी से उसे सम्बोधित किया कि ओब्लोन्स्की आश्चर्यचकित रह गया। उसने उनका परिचय करवाया।

Landau तेज़ी से घूमा, निकट आया और मुस्कराते हुए उसने ओब्लोन्स्की के बढ़े हुए हाथ से अपना शिथिल और पसीने से नम हाथ मिलाया और उसी समय वापस जाकर छविचित्रों को देखने लगा। काउंटेस और कारेनिन ने अर्थपूर्ण दृष्टि से एक-दूसरे की ओर देखा।

"आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई, ख़ास तौर पर आज," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने ओब्लोन्स्की को कारेनिन के निकट बैठने का इशारा करते हुए कहा।

"मैंने Landau के रूप में उनसे आपका परिचय करवाया है," उसने फ़्रांसीसी और फिर फ़ौरन कारेनिन की तरफ़ देखते हुए धीमी आवाज़ में कहा, "मगर वह वास्तव में काउंट बेज़्ज़ूबोव हैं, जैसा कि आप शायद जानते होंगे। किन्तु उन्हें यह उपाधि पसन्द नहीं है।"

"हां, मैंने सुना है," ओब्लोन्स्की ने उत्तर दिया, "कहते हैं कि काउंटेस बेज़्ज़ूबोवा को तो उन्होंने पूरी तरह भला-चंगा कर दिया है।"

"वह आज मेरे यहां आई थी, बड़ा ही तरस आ रहा था मुझे उस पर!" काउंटेस ने कारेनिन को सम्बोधित करते हुए कहा। "जुदाई उसके लिये बड़ी भयानक बात है! बहुत बड़ा धक्का है यह उसके लिये!"

"तो वह क्या निश्चित रूप से जा रहे हैं?" कारेनिन ने पूछा।

"हां, वह पेरिस जा रहे हैं। कल उन्हें आवाज़ सुनाई दी थी," लीदिया इवानोव्ना ने ओब्लोन्स्की की ओर देखते हुए कहा।

"ओह, आवाज़!" ओब्लोन्स्की ने यह महसूस करते हुए दोहराया कि इन लोगों की संगत में, जहां कोई ख़ास बात हो रही है या होनी चाहिये और जिसको समझने की कुंजी अभी उसके हाथ नहीं लगी है, उसे यथासम्भव सावधानी से काम लेना चाहिये।

घड़ी भर को ख़ामोशी छायी रही, जिसके बाद काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने मानो बातचीत के मुख्य विषय की ओर आते हुए हल्की-सी मुस्कान के साथ ओब्लोन्स्की से कहा –

"मैं आपको एक अर्से से जानती हूं और अधिक निकट से जानने

पर बहुत ख़ुश हूं। Les amis de nos amis sont nos amis.* किन्तु मित्र होने के लिये मित्र की आत्मा की दशा का अनुमान लगाना चाहिये, किन्तु मुझे डर है कि अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के मामले में आप ऐसा नहीं करते हैं। आप समझ रहे हैं कि मैं किस बात की चर्चा कर रही हूं," अपनी सुन्दर और स्वप्निल-सी आंखों को ऊपर उठाते हुए उसने कहा।

"काउंटेस, कुछ हद तक तो मैं समझ रहा हूं कि अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच की स्थिति..." मामले को अच्छी तरह न समझ पाते और इसलिये सामान्य बातों तक अपने को सीमित रखने की इच्छा से ओब्लोन्स्की ने कहा।

"मामला बाहरी स्थिति के परिवर्तन का नहीं है," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने कड़ाई से कहा, मगर साथ ही Landau की ओर जा रहे कारेनिन को प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखती रही। "उसके हृदय का परिवर्तन हो गया है, उसे नया हृदय मिल गया है और मुझे डर है कि आप उस परिवर्तन को, जो उसके भीतर हुआ है, अच्छी तरह समझ नहीं पाये हैं।"

"कहना चाहिये कि मोटे तौर पर मैं इस परिवर्तन की कल्पना कर सकता हूं। हम हमेशा ही मित्र रहे हैं और अब..." काउंटेस की दृष्टि का स्नेहपूर्ण नज़र से उत्तर देते और यह अनुमान लगाते हुए उसने कहा कि दो में से किस एक मंत्री के वह निकट है और किससे सिफ़ारिश करने को उससे कहना पड़ेगा।

"उसमें जो परिवर्तन हुआ है, वह लोगों के प्रति उसके प्यार की भावना को कम नहीं कर सकता, उल्टे उससे उसमें वृद्धि होनी चाहिये। लेकिन मुझे डर है कि आप मेरी बात समझ नहीं रहे हैं। चाय पीना पसन्द करेंगे?" आंखों से नौकर की ओर संकेत करते हुए, जो ट्रे में चाय के प्याले रखकर लाया था, उसने पूछा।

"पूरी तरह से तो नहीं समझ रहा हूं, काउंटेस। स्पष्ट है कि उसका दुर्भाग्य..."

"हां, दुर्भाग्य, जो उसके हृदय के नया होने, उसमें 'उनके'

---

* हमारे मित्रों के मित्र – हमारे मित्र। (फ़्रांसीसी)

समावेश होने से उसका सबसे बड़ा सौभाग्य बन गया है," ओब्लोन्स्की को प्यार भरी दृष्टि से देखते हुए काउंटेस ने कहा।

"मेरे ख़्याल में तो इससे दोनों ही मंत्रियों से सिफ़ारिश कर देने की प्रार्थना की जा सकती है," ओब्लोन्स्की सोच रहा था।

"ओह, सो तो है ही काउंटेस," ओब्लोन्स्की ने कहा, "किन्तु मेरे विचार में ये परिवर्तन इतने अन्तरंग हैं कि कोई भी, यहां तक कि घनिष्ठतम व्यक्ति भी इनकी चर्चा करना पसन्द नहीं करता।"

"इसके प्रतिकूल, हमें बात करनी और एक-दूसरे को सहायता देनी चाहिये।"

"हां, निस्सन्देह, किन्तु कभी-कभी विश्वासों का ऐसा अन्तर होता है और इसके अलावा ..." ओब्लोन्स्की ने कोमल मुस्कान के साथ कहा।

"पावन सत्य के मामले में अन्तर नहीं हो सकते।"

"हां, बेशक, लेकिन ..." ओब्लोन्स्की घबराकर चुप हो गया। वह समझ गया था कि धर्म की चर्चा हो रही थी।

"मुझे लगता है कि वह अभी सो जायेगा," कारेनिन ने लीदिया इवानोव्ना के निकट आकर अर्थपूर्ण फुसफुसाहट के साथ कहा।

ओब्लोन्स्की ने मुड़कर उधर देखा। Landau आरामकुर्सी के हत्थे और पीठ से टेक लगाये तथा सिर झुकाये हुए खिड़की के क़रीब बैठा था। यह देखकर कि लोगों की नज़रें उस पर टिकी हुई हैं, उसने सिर ऊपर उठाया और बच्चों जैसी मुस्कान से मुस्करा दिया।

"उनकी तरफ़ ध्यान नहीं दीजिये," लीदिया इवानोव्ना ने कहा और बड़ी फुर्ती से कारेनिन के लिये कुर्सी आगे खिसका दी। "इस बात की तरफ़ मेरा ध्यान गया है ..." उसने कुछ कहना शुरू किया कि उसी वक़्त नौकर एक ख़त लिये हुए कमरे में आ गया। लीदिया इवानोव्ना ने झटपट उस पर नज़र डाल ली, क्षमा मांगी, असाधारण तेज़ी से जवाब लिखा और उसे नौकर को देकर मेज़ पर लौट आयी। "इस बात की तरफ़ मेरा ध्यान गया है," उसने आरम्भ की हुई चर्चा जारी रखी, "कि मास्कोवासी, विशेषतः पुरुष, धर्म के प्रति सबसे ज़्यादा उदासीन हैं।"

"अजी नहीं, काउंटेस, मुझे तो लगता है कि मास्कोवासी पक्के श्रद्धालुओं के रूप में विख्यात हैं," ओब्लोन्स्की ने उत्तर दिया।

"लेकिन, जहां तक मैं समझता हूं, दुर्भाग्य से आप तो उदासीनों में से हैं," क्लान्त-सी मुस्कान से ओब्लोन्स्की को सन्बोधित करते हुए कारेनिन ने कहा।

"कोई उदासीन हो ही कैसे सकता है!" लीदिया इवानोव्ना ने राय ज़ाहिर की।

"इस सम्बन्ध में मैं उदासीन तो नहीं, प्रतीक्षा की स्थिति में हूं," ओब्लोन्स्की ने बहुत ही कोमल मुस्कान होंठों पर लाते हुए कहा। "मैं ऐसा नहीं समझता कि मेरे लिये ऐसे प्रश्नों का समय आ गया है।"

कारेनिन और लीदिया इवानोव्ना ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा।

"हम कभी यह नहीं जान सकते कि हमारे लिये इसका समय आ गया है या नहीं," कारेनिन ने कड़ाई से कहा। "हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि हम तैयार हैं या नहीं – भगवान की कृपा इन्सान के चाहने न चाहने की परवाह नहीं करती – कभी तो यह कृपा उन पर नहीं होती, जो इसके लिये यत्नशील होते हैं और कभी उन पर हो जाती है, जो इसके लिये तैयार नहीं होते, जैसे साउल पर।"

"नहीं, लगता है कि अभी नहीं," लीदिया इवानोव्ना ने इसी बीच फ़्रांसीसी की गतिविधियों की ओर ध्यान देते हुए कहा।

Landau उठा और इनके पास आ गया।

"आप मुझे अपनी बातें सुनने की अनुमति देते हैं?" उसने पूछा।

"बड़ी ख़ुशी से, मैं आपकी शान्ति भंग नहीं करना चाहती थी," प्यार से उसकी ओर देखते हुए लीदिया इवानोव्ना ने कहा, "आइये, बैठिये हमारे साथ।"

"हां, 'प्रकाश' से वंचित न होने के लिये आंखें खुली रखनी चाहिये," कारेनिन कहता गया।

"काश, आप जान सकते कि अपनी आत्मा में हर समय 'उनके' अस्तित्व की चेतना से हमें कैसे सुख की अनुभूति होती है!" काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने मगन भाव से मुस्कराते हुए कहा।

"किन्तु कभी-कभी आदमी अपने को इस ऊंचाई तक उठने के अयोग्य भी अनुभव कर सकता है," ओब्लोन्स्की ने यह महसूस करते हुए कहा कि ऐसी धार्मिक ऊंचाई को स्वीकार करना ईमानदारी की बात नहीं होगी, किन्तु साथ ही ऐसी महिला के सामने, जिसके द्वारा

पोमोर्स्की को कहे गये एक शब्द से उसे वांछित नौकरी मिल सकती है, उसे स्वतन्त्र चिन्तन को स्वीकार करने का भी साहस नहीं हुआ।

"तो आप यह कहना चाहते हैं कि पाप उसके लिये बाधा बनता है?" लीदिया इवानोव्ना ने जानना चाहा। "किन्तु यह ग़लत धारणा है। आस्थावानों के लिये पाप होता ही नहीं, उनके लिये पाप का प्रायश्चित हो चुका है। Pardon," दूसरा रुक्क़ा लेकर फिर से भीतर आनेवाले नौकर की ओर देखते हुए उसने कहा। उसे पढ़कर उसने ज़बानी ही जवाब दे दिया – "कह दीजिये कि कल ग्रैंड डचेस के यहां। – आस्थावान के लिये पाप होता ही नहीं," उसने अपनी बात जारी रखी।

"किन्तु कार्यों के बिना आस्था तो मृत होती है," धार्मिक प्रश्नोत्तरी का एक वाक्य याद करते और केवल मुस्कान से ही अपनी स्वतन्त्रता को बचाते हुए ओब्लोन्स्की ने कहा।

"यह लीजिये, सन्त याकूब के धर्म-पत्र का उद्धरण हाज़िर है," कारेनिन ने कुछ भर्त्सना से लीदिया इवानोव्ना को सम्बोधित करते हुए ऐसे अन्दाज़ में कहा, जिससे पता चलता था कि वे अनेक बार इस बात की चर्चा कर चुके हैं। "इस स्थल का ग़लत मतलब निकालने से कितनी हानि हुई है। इस तरह की व्याख्या आस्था से जितनी दूर ले जाती है, उतनी अन्य कोई चीज़ नहीं। 'मेरे कृत्य नहीं हैं, इसलिये मैं आस्थावान नहीं हो सकता,' जबकि ऐसा कहीं नहीं कहा गया है। कहा गया है इसके प्रतिकूल।"

"भगवान के लिये काम करना, कृत्यों और व्रतों से अपनी आत्मा की रक्षा करना," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने घृणापूर्ण तिरस्कार के साथ कहा। "ये हमारे धर्म-भिक्षुओं की जंगली धारणायें हैं... जबकि ऐसा कहीं नहीं कहा गया है। यह कहीं सरल और सुगम है," काउंटेस ने इतना और जोड़ दिया और वैसी ही प्रोत्साहनपूर्ण मुस्कान के साथ ओब्लोन्स्की की ओर देखा, जिस मुस्कान के साथ वह राज-दरबार के नये वातावरण में महारानी की घबरायी हुई युवा परिचारिकाओं का हौसला बढ़ाती थी।

"ईसा मसीह ने हमारे लिये कष्ट सहकर हमारी रक्षा कर ली है। आस्था हमें बचाती है," काउंटेस के शब्दों का अपनी दृष्टि से अनुमोदन करते हुए कारेनिन ने पुष्टि की।

"Vous comprenez l'anglais? *" लीदिया इवानोव्ना ने पूछा और हां में उत्तर मिलने पर उठकर किताबों के ताक से कोई किताब ढूंढ़ने लगी।

"मैं *Safe and Happy*** या *Under the wing**** से कुछ पढ़कर सुनाना चाहती हूं," कारेनिन की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए उसने कहा। पुस्तक ढूंढ़कर और फिर से अपनी जगह पर बैठकर उसने उसे खोला। "यह बहुत छोटा-सा अंश है। यहां उस मार्ग के बारे में लिखा गया है, जिससे आस्था और पृथ्वी की हर चीज़ से अधिक मूल्यवान सुख प्राप्त किया जा सकता है, जिससे आदमी की आत्मा ओत-प्रोत हो जाती है। आस्थावान व्यक्ति दुखी नहीं हो सकता, क्योंकि वह अकेला नहीं होता। आप स्वयं ही यह अनुभव कर लेंगे।" उसने पढ़ना आरम्भ करना चाहा ही था कि फिर से नौकर कमरे में आ गया। "बोरोज़्दिना? कह दीजिये, कल दिन के दो बजे। तो," पुस्तक के उस अंश पर उंगली रखकर, जो उसे पढ़ना था, और गहरी सांस लेकर अपनी सुन्दर तथा स्वप्निल आंखों से सामने की ओर देखकर उसने कहा। "तो सच्ची आस्था ऐसे प्रभावित करती है। मारी सानिना को आप जानते हैं न? उसके भयानक दुख के बारे में भी आपको मालूम है न? उसका इकलौता बच्चा जाता रहा। बहुत ही बुरी हालत थी उसकी। किन्तु अन्त में हुआ क्या? उसे यह मित्र मिल गया और अब वह अपने बच्चे की मृत्यु के लिये भगवान को धन्यवाद देती है। आस्था ऐसा सुख प्रदान करती है!"

"जी हां, यह तो बहुत..." ओब्लोन्स्की ने इस बात से ख़ुश होते हुए कहा कि जब तक किताब पढ़ी जायेगी, वह थोड़ा सम्भल जायेगा। "लगता है कि आज किसी चीज़ के लिये अनुरोध न करना ही ज़्यादा अच्छा रहेगा," वह सोच रहा था, "मामले को गड़बड़ किये बिना किसी तरह यहां से बस, निकल जाऊं।"

"आप ऊब महसूस करेंगे," काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने

---

* आप अंग्रेज़ी समझते हैं? (फ़्रांसीसी)

** 'सुरक्षित और सुखी'। (अंग्रेज़ी)

*** 'छत्रछाया में'। (अंग्रेज़ी)

Landau को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप तो अंग्रेज़ी नहीं जानते, मगर यह बहुत छोटा-सा अंश है।"

"जी, मैं समझ जाऊंगा," Landau ने पहले जैसी मुस्कान के साथ उत्तर दिया और आंखें मूंद लीं।

कारेनिन और लीदिया इवानोव्ना ने अर्थपूर्ण दृष्टि से एक-दूसरे की ओर देखा और पुस्तक पढ़ी जाने लगी।

(२२)

ओब्लोन्स्की अपने लिये नयी और अजीब तरह की ये बातें सुनकर पूरी तरह दंग रह गया था। पीटर्सबर्ग के जटिल जीवन का यों तो उस पर उत्तेजनापूर्ण प्रभाव होता था और वह उसे मास्को की ठहरी हुई ज़िन्दगी से बाहर निकालता था, किन्तु अपने हृदय के निकट तथा परिचित हलक़ों में ही ऐसी जटिलतायें उसे अच्छी लगती थीं और वह उन्हें समझता था। ऐसे पराये-से वातावरण में वह आश्चर्यचकित और स्तम्भित-सा रह गया था तथा नहीं जानता था कि इन सभी बातों से कैसे निपटे। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना की बातें सुनते और Landau की सुन्दर, भोली या कपटी – यह वह ख़ुद नहीं जानता था – आंखों को अपने पर टिकी हुई अनुभव करते हुए उसे अपना सिर ख़ास तौर पर भारी-सा प्रतीत होने लगा था।

बहुत ही भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार उसके मस्तिष्क में गड्ड-मड्ड हो गये थे। "मारी सानिना ख़ुश है कि उसका बच्चा मर गया... अच्छा हो कि अब सिगरेट पी ली जाये... अपनी आत्मा की रक्षा के लिये केवल आस्था रखने की ज़रूरत है, साधु-भिक्षु नहीं जानते कि यह कैसे करना चाहिये, मगर काउंटेस लीदिया इवानोव्ना जानती है... और मेरा सिर क्यों इतना भारी है? ब्रांडी के कारण या इसलिये कि यह सब कुछ इतना अजीब है? लगता है कि अब तक मैंने कोई अटपटी बात नहीं की है। फिर भी उससे किसी चीज़ का अनुरोध करना ठीक नहीं होगा। कहते हैं कि वे लोगों को प्रार्थना करने को मजबूर करते हैं। कहीं मुझे ऐसा करने को मजबूर न करें। यह तो बहुत ही बेहूदा बात होगी। यह क्या बकवास पढ़ रही है, मगर इसका

उच्चारण अच्छा है। Landau – बेज़्ज़ूबोव। वह बेज़्ज़ूबोव क्यों है?" ओब्लोन्स्की ने सहसा यह अनुभव किया कि उसका नीचे का जबड़ा जम्हाई लेने को बेकाबू हो रहा है। उसने जम्हाई को छिपाते हुए अपने गलमुच्छों को ठीक किया और अपने को झकझोरा। किन्तु अगले ही क्षण उसने अनुभव किया कि वह सो रहा है और खर्राटे लेने को है। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के ये शब्द सुनकर "वह सो रहा है" उसकी आंख खुल गयी।

अपने को अपराधी और यह महसूस करते हुए कि उसकी पोल खुल गयी ओब्लोन्स्की घबरा कर चौंक उठा। किन्तु यह देख कर कि "वह सो रहा है" शब्द उसके लिये नहीं, बल्कि Landau के बारे में कहे गये हैं वह उसी क्षण शान्त हो गया। ओब्लोन्स्की की भांति Landau को भी नींद आ गयी थी। किन्तु, जैसा कि वह सोच रहा था (वैसे वह यह भी नहीं सोच रहा था, क्योंकि उसे सब कुछ इतना अजीब लग रहा था), उसके सो जाने का वे बहुत बुरा मानते, जबकि Landau की आंख लग जाने पर उन्हें, ख़ास तौर पर लीदिया इवानोव्ना को बेहद ख़ुशी हो रही थी।

"Mon ami, *" लीदिया इवानोव्ना ने कहा और अपनी रेशमी पोशाक के पल्लुओं को बड़ी सावधानी से थामे हुए ताकि सरसराहट न हो और अपनी उत्तेजना में कारेनिन को अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के बजाय "mon ami" के रूप में सम्बोधित करते हुए बोली, "donnez lui la main. Vous voyez?** शी!" उसने फिर से कमरे में आनेवाले नौकर को चुप रहने का संकेत किया। "कह दो, मैं इस समय नहीं मिल सकती।"

फ़्रांसीसी कुर्सी की टेक पर सिर रखे सो रहा था या सोने का ढोंग कर रहा था और घुटने पर टिका हुआ उसका नम हाथ ऐसे धीरे-धीरे हिल-डुल रहा था मानो कुछ पकड़ रहा हो। कारेनिन उठा, सावधानी से उसकी तरफ़ बढ़ना चाहते हुए भी मेज़ से ठोकर खा गया और फ़्रांसीसी के पास जाकर उसने अपना हाथ उसके हाथ में रख दिया। ओब्लोन्स्की भी उठकर खड़ा हो गया, उसने अपनी आंखों

---

* मेरे दोस्त। (फ़्रांसीसी)

** उसे अपना हाथ दीजिये। देख रहे हैं न? (फ़्रांसीसी)

29–927

को अच्छी तरह खोल लिया ताकि अगर नींद में हो, तो जाग जाये और पहले एक तथा फिर दूसरे की तरफ़ देखा। यह सब कुछ हक़ीक़त था। ओब्लोन्स्की ने अनुभव किया कि उसका सिर अधिकाधिक भारी होता जा रहा है।

"Que la personne qui est arrivée la dernière, celle qui demande, qu'elle sorte! Qu'elle sorte!*" फ़्रांसीसी ने आंखें खोले बिना ही कहा।

"Vous m'excuserez, mais vous voyez... Revenes vers dix heures, encore mieux demain.**"

"Qu'elle sorte! ***" फ़्रांसीसी ने बेसब्री से दोहराया।

"C'est moi, n'est ce pas?****"

और हां में जवाब मिलने पर ओब्लोन्स्की ने इस घर से, जो मानो छूत का घर हो, जल्दी से जल्दी बाहर निकल जाना चाहा। यह भूलकर कि वह लीदिया इवानोव्ना से किस बात का अनुरोध करना चाहता था और यह भी कि उसे बहन के मामले की चर्चा करनी थी वह पंजों के बल बाहर सड़क पर भाग गया और देर तक कोचवान से बातें तथा हंसी-मज़ाक़ करता रहा, ताकि जल्दी से अपने होश-हवास ठिकाने ला सके।

फ़्रांसीसी थियेटर में, जहां वह अन्तिम अंक के समय पहुंचा, और बाद में बढ़िया रेस्तोरां में शेम्पेन पीते हुए ओब्लोन्स्की ने अपने परिचित वातावरण में राहत की सांस ली। फिर भी यह शाम उसके लिये बहुत बोझिल रही थी।

प्योत्र ओब्लोन्स्की के यहां लौटने पर, जहां वह पीटर्सबर्ग में ठहरा था, उसे बेत्सी का भेजा हुआ रुक्क़ा मिला। उसने लिखा था

---

*वह जो सबसे बाद में आया, जो पूछनेवाला है, वह बाहर चला जाये! बाहर चला जाये! (फ़्रांसीसी)

**क्षमा चाहती हूं, किन्तु आप देख रहे हैं... दस बजे आ जाइये, कल आयें तो और भी अच्छा रहे। (फ़्रांसीसी)

***बाहर चला जाये! (फ़्रांसीसी)

****यह मुझसे सम्बन्ध रखता है न? (फ़्रांसीसी)

कि वह शुरू की हुई बातचीत को पूरा करने को बहुत उत्सुक है और उससे अगले दिन आने का अनुरोध करती है। ओब्लोन्स्की ने रुक्क़ा पढ़कर नाक-भौंह सिकोड़ी ही थी कि उसे नीचे लोगों के भारी क़दमों की आवाज़ सुनाई दी, जो मानो कोई बड़ा बोझ ऊपर ला रहे थे।

ओब्लोन्स्की देखने के लिये बाहर निकला। यह जवान हो जानेवाला प्योत्र ओब्लोन्स्की था। वह इतना अधिक नशे में था कि सीढ़ियां नहीं चढ़ पा रहा था। किन्तु ओब्लोन्स्की को देखकर उसने कहा कि वे लोग उसे खड़ा कर दें और ओब्लोन्स्की का सहारा लिये हुए वह उसके कमरे में जाकर यह बताने लगा कि उसने शाम कैसे गुज़ारी और यहीं सो गया।

ओब्लोन्स्की का मूड बहुत ख़राब था, जैसा कि उसके साथ बहुत कम होता था, और उसे देर तक नींद नहीं आयी। जो कुछ भी उसे याद आता था, सभी घिनौना था, मगर सबसे ज़्यादा घिनौनी, कहना चाहिये कि लज्जाजनक तो काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के यहां बितायी गयी शाम थी।

अगले दिन उसे कारेनिन द्वारा आन्ना को तलाक़ न देने का निश्चित उत्तर मिल गया और वह समझ गया कि ऐसा निर्णय फ़्रांसीसी के उन शब्दों पर आधारित था, जो उसने असली या बनावटी नींद में कहे थे।

(२३)

पारिवारिक जीवन में कोई निर्णय करने के लिये पति-पत्नी के बीच या तो पूरी तरह अनबन या प्रेमपूर्ण सहमति होनी चाहिये। किन्तु जब दम्पति के आपसी सम्बन्ध अनिश्चित हों, उनमें न झगड़ा और न प्रेम हो, तो कोई भी काम नहीं किया जा सकता।

अनेक परिवार वर्षों तक केवल इसलिये पुरानी लीक पर, जिसे दोनों ही बुरा समझते हैं, चलते रहते हैं कि उनके बीच न तो पूरी असहमति और न पूरी सहमति होती है।

व्रोन्स्की और आन्ना का मास्को का गर्मी और धूल का जीवन भी, जब सूरज वसन्त के दिनों की तरह नहीं, गर्मी के दिनों की तरह चमकता था और छायादार सड़कों के सभी वृक्षों पर कभी के पत्ते

आ चुके थे तथा पत्तों पर धूल जम गयी थी, असह्य था। किन्तु वे दोनों वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव न जाकर, जैसा कि बहुत पहले से तय हो चुका था, न चाहते हुए भी मास्को में रहते जा रहे थे, क्योंकि पिछले समय में उनके बीच सहमति नहीं थी।

इन दोनों के बीच खाई पैदा करनेवाली खीझ का कोई ठोस बाहरी कारण नहीं था और बात को स्पष्ट कर पाने की सभी कोशिशें से यह झल्लाहट दूर होने के बजाय बढ़ती ही थी। यह खीझ अन्दरूनी थी, आन्ना जिसका आधार व्रोन्स्की के प्यार में कमी हो जाना मानती थी और व्रोन्स्की के लिये इस बात का पश्चाताप था कि उसने आन्ना के लिये अपने को कठिन परिस्थिति में डाल लिया और जिसे वह हल्का करने के बजाय और भी अधिक बोझिल बना रही है। दोनों में से कोई भी अपनी खीझ के कारण की चर्चा नहीं करता था, किन्तु दोनों एक-दूसरे को ग़लत मानते थे और हर बहाने एक-दूसरे के सामने यह साबित करने की कोशिश करते थे।

आन्ना के लिये व्रोन्स्की, उसकी सारी आदतों, विचारों, इच्छाओं और उसके मानसिक तथा शारीरिक झुकाव सहित, उसका समूचा व्यक्तित्व एक ही चीज़ था – औरतों के लिये प्यार, और वह प्यार, जिसे उसकी भावना के अनुसार केवल उसी पर केन्द्रित होना चाहिये था – वह प्यार कम होता जा रहा था। आन्ना के तर्कानुसार नतीजा यह निकलता था कि इस प्यार का कुछ भाग दूसरी औरतों या किसी एक अन्य नारी को दे दिया गया था और इसलिये वह ईर्ष्याग्रस्त थी। वह किसी नारी को लेकर नहीं, बल्कि उसके कम होते प्यार को लेकर ईर्ष्या करती थी। ईर्ष्या की वस्तु सामने न होने पर वह उसकी खोज करती थी। तनिक सन्देह-संकेत मिलने पर वह एक वस्तु के बजाय दूसरी वस्तु से ईर्ष्या करने लगती। कभी उसे उन अशिष्ट नारियों को लेकर ईर्ष्या होती, जिनके साथ अपने अविवाहित जीवन के समय के सम्बन्धों की बदौलत वह बड़ी आसानी से रंग-रलियां मना सकता था, कभी वह ऊंची सोसाइटी की उन महिलाओं के आधार पर ईर्ष्या करने लगती थी, जिनसे व्रोन्स्की की भेंट हो सकती थी और कभी उस कल्पित युवती से ईर्ष्या करती, जिसके साथ वह उससे सम्बन्ध तोड़कर शादी करना चाहता था। यह अन्तिम ईर्ष्या उसे ख़ास तौर

पर इसलिये सबसे अधिक यातना देती थी कि खुलकर बात करने के असावधानी के एक क्षण में व्रोन्स्की ने खुद ही उससे यह कह दिया था कि उसकी मां उसे इतना कम समझती है कि उसने उसे प्रिंसेस सोरोकिना से शादी करने के लिये मनाने की कोशिश की।

व्रोन्स्की को लेकर इस तरह की ईर्ष्या रखने के कारण उसे उस पर क्रोध आता और वह हर चीज़ में क्रुद्ध होने के बहाने ढूंढ़ती रहती। अपनी स्थिति की हर मुसीबत के लिये वह उसे दोषी ठहराती। अनिश्चय की जिस यातनापूर्ण स्थिति में वह मास्को में रह रही थी, जिसमें कभी आशा और कभी निराशा के क्षण आते, कारेनिन का कोई निर्णय न करके टालते जाना और अपना एकाकी जीवन – इन सभी चीज़ों के लिये वह व्रोन्स्की को ही दोषी ठहराती। अगर उसे उससे प्रेम होता, तो वह उसकी स्थिति की सारी विकटता को समझता और उसे इससे निजात दिलाता। वह जो गांव में नहीं, बल्कि मास्को में रह रही थी, इसके लिये भी वही दोषी था। वह अपने को गांव में दफ़ना देने का जीवन बिताने को तैयार नहीं था, जैसा कि वह चाहती थी। उसके लिये सोसाइटी ज़रूरी थी और उसने उसे इस भयानक स्थिति में डाल दिया था, जिसकी विकटता वह समझना नहीं चाहता था। स्थायी पुत्र-विछोह के लिये भी वही उत्तरदायी था।

प्यार के विरले क्षणों से भी, जो इनके बीच आते, आन्ना को सान्त्वना नहीं मिलती थी। व्रोन्स्की के प्यार में आन्ना को अब शान्ति और आत्मविश्वास की झलक मिलती, जिनका पहले अभाव होता था, और जिनसे उसे झल्लाहट होती।

झुटपुटा हो चुका था। व्रोन्स्की मर्दों की एक दावत में गया हुआ था और आन्ना उसके लौटने की प्रतीक्षा करती हुई उसके अध्ययन-कक्ष में (जहां सड़क का शोर सबसे कम सुनाई देता था) इधर-उधर आ-जा रही थी और पिछले दिन के झगड़े की सभी तफ़सीलों को याद कर रही थी। झगड़े के अपमानपूर्ण शब्दों से उनके कहे जाने के कारणों की ओर लौटते हुए वह अन्त में बातचीत के आरम्भ तक पहुंच गयी। देर तक उसे इस बात का विश्वास नहीं हुआ कि झगड़ा ऐसी साधारण बात से आरम्भ हुआ, जो दोनों में से किसी के लिये भी विशेष महत्त्व नहीं रखती थी। वास्तव में ऐसा ही था। झगड़ा

इसलिये शुरू हुआ था कि व्रोन्स्की ने लड़कियों के हाई स्कूलों को अनावश्यक मानते हुए उनका मज़ाक़ उड़ाया और आन्ना ने उनका पक्ष लिया। लड़कियों की शिक्षा के प्रति उसने आम तौर पर अनादर का भाव दिखाया और कहा कि गान्ना नाम की उस अंग्रेज़ लड़की को, जिसे आन्ना ने अपने संरक्षण में ले रखा था, भौतिकी के ज्ञान की तनिक भी आवश्यकता नहीं है।

आन्ना इससे झल्ला उठी। उसे लगा कि व्रोन्स्की ने ऐसा कहकर उसकी दिलचस्पी की ओर तिरस्कारपूर्ण संकेत किया है। इसलिये उसने सोचकर ऐसा वाक्य कहा, जो व्रोन्स्की को उस ठेस का बदला दे सके, जो उसने उसके दिल को पहुंचाई थी।

"मैंने यह आशा नहीं की थी कि आप मेरा और मेरी भावनाओं का वैसे ही ध्यान रखेंगे, जैसे कोई प्यार करनेवाला व्यक्ति रखता है, मगर कुछ लिहाज़ से काम लेंगे, ऐसी उम्मीद मैंने ज़रूर की थी," उसने कहा।

इस पर वह वास्तव में ही ग़ुस्से से लाल हो गया था और उसने कोई कटु बात कह दी थी। उसे याद नहीं आया कि जवाब में उसने क्या कहा था, किन्तु इस पर उसने किसी कारण, सम्भवतः उसका दिल दुखाने के लिये ही यह कहा था –

"यह सच है कि इस लड़की के प्रति आपका लगाव मुझे प्रभावित नहीं करता, क्योंकि मैं देख रहा हूं कि यह अस्वाभाविक है।"

जिस क्रूरता से उसने उस दुनिया को खण्ड-खण्ड कर दिया था, जिसे अपना बोझिल जीवन सहन कर पाने के लिये उसने बड़ी मुश्किल से अपने लिये बनाया था, जिस अन्यायपूर्ण ढंग से उसने उस पर ढोंग और अस्वाभाविकता का दोष लगाया था, उसने आन्ना को आग-बबूला कर दिया।

"बहुत अफ़सोस है कि केवल स्थूल, भौतिक चीज़ें ही आपकी समझ में आती हैं और वही आपको स्वाभाविक लगती हैं," इतना कहकर वह कमरे से बाहर चली गयी थी।

शाम को व्रोन्स्की जब उसके पास आया, तो उन्होंने इस झगड़े की फिर से चर्चा नहीं की, किन्तु दोनों ऐसा अनुभव करते थे कि उसे दबा दिया गया है, मगर वह ख़त्म नहीं हुआ।

व्रोन्स्की आज दिनभर घर में नहीं रहा था और उसके साथ झगड़े के कारण वह अपने को इतना एकाकी और मन को इतना भारी अनुभव कर रही थी कि सब कुछ भूल जाना, क्षमा कर देना और उससे सुलह कर लेना, ख़ुद को दोषी और उसे निर्दोष ठहराना चाहती थी।

"मैं स्वयं ही दोषी हूं। मैं चिड़चिड़ी हूं, व्यर्थ ही ईर्ष्या करती रहती हूं। मैं उससे सुलह कर लूंगी और हम गांव चले जायेंगे। वहां मैं अधिक शान्त रहूंगी," उसने अपने आपसे कहा।

"अस्वाभाविक," उसे सहसा यह शब्द याद आया, जिसने उसके दिल को सबसे ज़्यादा ठेस लगायी थी, क्योंकि उसने उसका दिल दुखाने के इरादे से ही इसे कहा था।

"मैं जानती हूं कि वह क्या कहना चाहता था। वह कहना चाहता था कि अपने बच्चे को प्यार न करके पराये बच्चे को प्यार करना अस्वाभाविक है। लेकिन बच्चों के प्रति प्यार को वह समझ ही क्या सकता है, सेर्योझा के प्रति मेरे प्यार को, जिसे मैंने उसके लिये त्याग दिया? किन्तु मेरे दिल को ठेस लगाने की उसकी यह चाह! नहीं, वह ज़रूर किसी दूसरी औरत को प्यार करता है, दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता।"

और यह महसूस करते हुए कि अपने को शान्त करने की इच्छा से वही चक्कर पूरा करके, जो पहले भी अनेक बार पूरा कर चुकी थी, पहले जैसी झल्लाहट की स्थिति में आ गयी है, वह कांप उठी। "क्या मैं ऐसा नहीं कर सकती? क्या मैं सारा दोष अपने ऊपर नहीं ले सकती?" उसने अपने आपसे कहा और फिर शुरू से इस मामले पर विचार करने लगी। "वह सच्चा और ईमानदार है, वह मुझे प्यार करता है। मैं उसे प्यार करती हूं, कुछ ही दिनों में तलाक़ हो जायेगा। मुझे और क्या चाहिये? शान्ति और भरोसा चाहिये। और मैं सारा दोष अपने सिर पर ले लूंगी। हां, अब जैसे ही वह आयेगा, मैं उससे कह दूंगी कि मैं ही दोषी थी, यद्यपि मेरा दोष नहीं था, और हम गांव चले जायेंगे।"

इस ख़्याल से कि वह और ज़्यादा सोच-विचार में न पड़े, खीझ

की शिकार न हो, उसने घण्टी बजायी और गांव जाने की तैयारी करने के लिये सन्दूक़ लाने को कहा।

रात के दस बजे व्रोन्स्की घर आया।

(२४)

"तो वहां ख़ूब मज़ा रहा?" आन्ना ने उससे मिलने के लिये बाहर आते हुए पूछा। उसके चेहरे के भाव में नम्रता थी और वह अपने को दोषी प्रकट कर रही थी।

"सदा की तरह," उसने उत्तर दिया और आन्ना पर एक नज़र डालते ही समझ गया कि वह अपने एक अच्छे मूड में है। व्रोन्स्की उसके ऐसे बदलते रहनेवाले मूडों का आदी हो चुका था और आज इससे इसलिये विशेषतः ख़ुश था कि ख़ुद वह भी बहुत रंग में था।

"यह मैं क्या देख रहा हूं! यह हुई न ढंग की बात!" व्रोन्स्की ने ड्योढ़ी में रखे सन्दूक़ों की ओर संकेत करते हुए कहा।

"हां, यहां से जाना चाहिये। मैं बग्घी में घूमने गयी थी और बाहर मुझे इतना अच्छा लगा कि गांव जाने को मन हो आया। तुम्हारा यहां रहना तो ज़रूरी नहीं न?"

"मैं भी बस, यही चाहता हूं। मैं कपड़े बदलकर अभी आता हूं और तब हम बात करेंगे। तुम चाय लाने को कह दो।"

और वह अपने कमरे में चला गया।

व्रोन्स्की के ऐसा कहने में – "यह हुई न ढंग की बात" – कुछ अपमानजनक था। ऐसे तो किसी बच्चे से तब कहा जाता है, जब वह अपनी सनक छोड़ देता है। इससे भी अधिक अपमानजनक था उसका अपने को दोषी दिखाने और व्रोन्स्की का आत्मविश्वास का अन्दाज़। क्षण भर को उसे अपने भीतर संघर्ष की इच्छा उमड़ती-घुमड़ती अनुभव हुई। किन्तु बड़े यत्न से अपने को वश में करते हुए उसने इस इच्छा को दबा दिया और पहले की भांति प्रफुल्लता बनाये रही।

व्रोन्स्की जब उसके पास लौट आया, तो उसने कुछ हद तक पहले से तैयार किये गये शब्दों का उपयोग करते हुए उसे यह बताया

कि अपना दिन कैसे बिताया और गांव जाने की योजनाओं की चर्चा की।

"तुम्हें बताऊं, मैंने तो अपने को मानो अनुप्रेरित-सा अनुभव किया," उसने कहा। "यहां बैठकर तलाक़ का किसलिये इन्तज़ार किया जाये? गांव में भी तो ऐसा किया जा सकता है। मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकती। मैं आशा का सहारा नहीं लिये रहना चाहती, तलाक़ के बारे में और कुछ नहीं सुनना चाहती। मैंने तय कर लिया है कि अपने जीवन पर इसका अब आगे कोई प्रभाव नहीं पड़ने दूंगी। तुम मुझसे सहमत हो न?"

"हां, हां," आन्ना के उत्तेजित चेहरे को परेशानी से देखते हुए उसने उत्तर दिया।

"वहां तुम लोगों ने क्या कुछ किया, कौन आये थे दावत में?" कुछ देर चुप रहकर आन्ना ने पूछा।

व्रोन्स्की ने मेहमानों के नाम बताये।

"खाना बहुत बढ़िया था, नौका-दौड़ भी बहुत अच्छी रही, सब कुछ ही बहुत प्यारा था, मगर मास्को में कोई न कोई हास्यास्पद बात हुए बिना नहीं रहती। एक महिला प्रकट हो गयी, स्वीडन की महारानी को तैराकी सिखानेवाली और उसने अपनी कला का प्रदर्शन किया।"

"कैसे? तैरकर?" आन्ना ने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए पूछा।

"लाल रंग की costume de natation,* बड़ी बेहूदा-सी बुढ़िया थी। तो हम कब चल रहे हैं?"

"यह भी कैसी बेहूदा सनक थी! वह क्या किसी विशेष ढंग से तैरती है?" व्रोन्स्की के प्रश्न का उत्तर न देकर आन्ना ने जानना चाहा।

"कुछ भी ख़ास बात नहीं थी। मैं खुद भी यही कह रहा हूं कि निरी बेवक़ूफ़ी थी। तो तुम कब चलने की सोच रही हो?"

---

*तैरने की पोशाक में। (फ़्रांसीसी)

आन्ना ने सिर झटका मानो वह अप्रिय विचार को दूर भगाना चाहती हो।

"कब चलेंगे? जितनी जल्दी, उतना ही अच्छा। कल तो हो नहीं सकेगा। परसों चलेंगे।"

"हां... नहीं, रुको! परसों तो इतवार है, मुझे maman के यहां जाना है," व्रोन्स्की ने झेंपते हुए कहा, क्योंकि जैसे ही उसने मां शब्द कहा कि उसे अपने चेहरे पर टकटकी बांध कर देखती सन्देहपूर्ण दृष्टि की अनुभूति हुई। व्रोन्स्की की झेंप ने आन्ना के सन्देह की पुष्टि कर दी। वह भड़ककर उससे दूर हट गयी। अब स्वीडन की महारानी की शिक्षिका नहीं, बल्कि मास्को के निकटवर्ती गांव में काउंटेस व्रोन्स्काया के साथ रहनेवाली प्रिंसेस सोरोकिना उसके मस्तिष्क में कौंध गयी थी।

"तुम कल भी तो जा सकते हो?"

"नहीं। बात यह है कि मैं जिस काम से जाऊंगा, उसके लिये ज़रूरी अधिकारपत्र और पैसे कल तैयार नहीं हो सकेंगे," उसने उत्तर दिया।

"अगर ऐसी बात है, तो हम जायेंगे ही नहीं।"

"वह क्यों?"

"मैं देर से नहीं जाऊंगी। या तो सोमवार को या फिर कभी नहीं।"

"भला यह क्यों?" व्रोन्स्की ने मानो हैरान होते हुए कहा। "इसमें कोई तुक नहीं है!"

"तुम्हारे लिये इसमें कोई तुक नहीं है, क्योंकि तुम्हें मेरी रत्ती भर परवाह नहीं। तुम मेरी ज़िन्दगी को समझना नहीं चाहते। यहां अगर मुझे किसी में दिलचस्पी थी, तो वह सिर्फ़ गान्ना में। तुम कहते हो कि यह ढोंग है। कल तुमने कहा था न कि मैं अपनी बेटी को प्यार नहीं करती, कि इस अंग्रेज़ लड़की को प्यार करने का ढोंग करती हूं, कि यह अस्वाभाविक है। मैं यह जानना चाहती हूं कि यहां मेरे लिये कौन-सी ज़िन्दगी स्वाभाविक हो सकती है!"

क्षण भर को वह चौंकी और इस बात से कांप उठी कि उसने अपना इरादा गड़बड़ कर दिया है। किन्तु यह जानते हुए भी कि वह अपने लिये बहुत बुरा कर रही है, ख़ुद को वश में नहीं रख सकती

थी, उसे यह जताये बिना नहीं रह सकती थी कि वह कितना ग़लत है, उसके सामने झुक नहीं सकती थी।

"मैंने ऐसा कभी नहीं कहा था। मैंने तो यह कहा था कि इस सहसा प्रकट होनेवाले प्यार के प्रति मेरी सहानुभूति नही है।"

"अपनी स्पष्टवादिता की डींग हांकनेवाले तुम सच क्यों नहीं बोलते?"

"मैं न तो कभी डींग हांकता हूं और न कभी झूठ बोलता हूं," उसने अपने भीतर उमड़ रहे क्रोध को वश में करते हुए धीरे से कहा। "बहुत अफ़सोस की बात है कि तुम आदर नहीं करतीं..."

"आदर की बात उस ख़ाली जगह पर, जहां प्रेम होना चाहिये, पर्दा डालने के लिये की जाती है। अगर तुम्हें अब मुझसे प्यार नहीं रहा, तो यह साफ़ कह देना ही बेहतर होगा, ईमानदारी होगी।"

"नहीं, यह तो अब बर्दाश्त के बाहर होता जा रहा है!" कुर्सी से उठते हुए व्रोन्स्की चिल्ला उठा। और आन्ना के सामने खड़े होकर उसने धीमे-धीमे कहा – "मेरे सब्र की तुम ऐसी परीक्षा क्यों ले रही हो?" उसने इस ढंग से कहा मानो और भी बहुत कुछ कह सकता था, मगर उसने अपने को क़ाबू में कर लिया। "उसकी भी एक हद है।"

"इन शब्दों द्वारा आप कहना क्या चाहते हैं?" आन्ना चीख़ उठी और व्रोन्स्की के सारे चेहरे, विशेषतः उसकी क्रूर और डरावनी आंखों में घृणा का स्पष्ट भाव देखकर दहल गयी।

"मैं कहना चाहता हूं..." उसने आरम्भ किया, मगर बीच में ही रुक गया। "मैं पूछना चाहता हूं कि आप मुझसे क्या चाहती हैं।"

"मैं क्या चाह सकती हूं? मैं केवल यही चाह सकती हूं कि आप मुझे छोड़कर न जायें, जैसा कि आप सोच रहे हैं," व्रोन्स्की ने जो कुछ अनकहा छोड़ दिया था आन्ना ने उस सबको समझकर उत्तर दिया। "किन्तु मैं यह नहीं चाहती हूं, यह गौण बात है। मैं प्यार चाहती हूं और वह नहीं है। इसका अर्थ है कि सब कुछ समाप्त हो चुका है!"

आन्ना दरवाज़े की तरफ़ चल दी। "रुको! ज़रा... रुको!" पहले की तरह त्योरियां चढ़ाये हुए ही उसने आन्ना का हाथ पकड़कर

उसे रोक लिया। "आख़िर बात क्या है? मैंने तो इतना ही कहा था कि हम तीन दिन बाद गांव जायेंगे और इसके जवाब में तुमने यह कहा कि मैं झूठा और बेईमान आदमी हूं।"

"हां, और अब दोहराती हूं कि जो आदमी मुझे इस बात का ताना देता है कि उसने मेरी ख़ातिर सब कुछ क़ुर्बान कर दिया," उसने पहले हुए किसी झगड़े के शब्द याद करके कहा, "वह आदमी बेईमान होने से भी बदतर है, वह हृदयहीन व्यक्ति है।"

"सब्र की भी हदें होती हैं!" उसने चीख़ कर कहा और जल्दी से उसका हाथ छोड़ दिया।

"वह मुझसे नफ़रत करता है, यह साफ़ है," उसने सोचा और चुपचाप, मुड़कर देखे बिना तथा डोलते क़दमों से बाहर चली गयी।

"वह किसी दूसरी औरत को प्यार करता है, यह तो और भी अधिक स्पष्ट हो गया है," अपने कमरे में दाख़िल होते हुए वह मन ही मन सोच रही थी। "मैं प्यार चाहती हूं और वह है नहीं। मतलब यह कि सब कुछ समाप्त हो गया," उसने अपने कहे हुए शब्दों को दोहराया, "और सब कुछ समाप्त कर ही देना चाहिये।"

"मगर कैसे?" उसने अपने आपसे पूछा और दर्पण के सामने आरामकुर्सी पर बैठ गयी।

अब वह कहां जायेगी – उसे पालने-पोसने वाली मौसी के यहां, डौली के पास या अकेली ही विदेश चली जायेगी, "वह" अब अपने कमरे में क्या कर रहा है, यह झगड़ा निर्णायक है या अभी सुलह हो सकती है, और यह भी कि पीटर्सबर्ग के सभी भूतपूर्व परिचित अब उसके बारे में क्या कहेंगे, कारेनिन की क्या प्रतिक्रिया होगी। बहुत-से अन्य ऐसे ही विचार उसके दिमाग़ में आ रहे थे कि व्रोन्स्की से अलग होने के बाद क्या होगा, मगर उसका मन इन्हीं विचारों में पूरी तरह से नहीं डूब रहा था। उसके मन में एक अस्पष्ट-सा विचार था और उसके लिये केवल वही दिलचस्पी रखता था, मगर वह उसे निश्चित रूप नहीं दे पा रही थी। कारेनिन का ध्यान आने पर उसे प्रसव के बाद अपनी बीमारी और उस ख़्याल की याद हो आयी, जो उस समय लगातार उसके दिमाग़ में बना रहता था। "मैं मर क्यों नहीं गयी?" उस समय के अपने इन शब्दों और मनोभावों

का उसे ध्यान आया। सहसा वह समझ गयी कि उसकी आत्मा में अस्पष्ट-सी बात क्या थी। हां, यही विचार था, जो सारी समस्याओं का समाधान हो सकता था। "हां, मौत!.."

"कारेनिन की बेइज़्ज़ती, मेरी और सेर्योझा की भयानक शर्मिन्दगी – मौत की बदौलत सभी बातों से मुक्ति मिल जायेगी। मैं मर जाऊंगी, तो उसे पश्चाताप होगा, मुझ पर दया आयेगी, प्यार आयेगा, वह मेरे लिये व्यथित होगा।" होंठों पर आत्मकरुणा की मुस्कान लिये वह आरामकुर्सी पर बैठी हुई अपने बायें हाथ की अंगूठियां उतारती-पहनती जा रही थी और अपनी मृत्यु के बाद विभिन्न पक्षों से व्रोन्स्की की भावनाओं की सजीव कल्पना कर रही थी।

निकट आते क़दमों, व्रोन्स्की के क़दमों की आहट से उसका ध्यान टूटा। ऐसे ज़ाहिर करते हुए मानो अपनी अंगूठियां पहनने में बहुत व्यस्त हो, उसने उसकी तरफ़ देखा भी नहीं।

व्रोन्स्की उसके पास आया और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर धीरे-से बोला –

"अगर चाहती हो, तो हम परसों चले चलेंगे। मैं हर चीज़ के लिये सहमत हूं।"

आन्ना चुप रही।

"तो क्या कहती हो?" उसने पूछा।

"तुम ख़ुद जानते हो," उसने कहा और अपने को और अधिक वश में न रख पाते हुए उसी क्षण सिसकने लगी।

"मुझे त्याग दो, त्याग दो!" उसने सिसकते हुए कहा। "मैं कल चली जाऊंगी... मैं इससे भी अधिक करूंगी। कौन हूं मैं? एक बदचलन औरत। तुम्हारे गले का पत्थर। मैं तुम्हें यातना देना नहीं चाहती! मैं तुम्हें आज़ाद कर दूंगी। तुम मुझे प्यार नहीं करते, तुम किसी और को प्यार करते हो!"

व्रोन्स्की ने मिन्नत की कि वह शान्त हो जाये और उसे विश्वास दिलाया कि उसके ईर्ष्या या शक करने का तनिक भी आधार नहीं है, कि उसके प्रति उसका प्यार बना रहा है और बना रहेगा, कि वह उसे पहले से अधिक प्यार करता है।

"आन्ना, तुम किसलिये अपने को और मुझे इस तरह यातना

देती हो?" उसके हाथों को चूमते हुए वह बोला। व्रोन्स्की के चेहरे पर अब प्यार झलक रहा था और उसे लगा कि वह उसकी आवाज़ में आंसुओं की ध्वनि और हाथ पर उनकी नमी अनुभव कर रही है। आन की आन में उसका अत्यधिक तीव्र ईर्ष्या भाव तीव्र प्रेम-प्रवाह में बदल गया, उसने उसे बांहों में कस लिया और उसके सिर, गर्दन तथा बांहों को चुम्बनों से ढंक दिया।

(२५)

यह अनुभव करते हुए कि उन दोनों के बीच पूरी तरह सुलह हो गयी है, आन्ना ने सुबह से ही बड़े उत्साह से गांव जाने की तैयारी शुरू कर दी। यद्यपि यह तय नहीं हुआ था कि वे सोमवार या मंगलवार को जा रहे हैं, क्योंकि पिछली शाम को दोनों ही एक-दूसरे की बात मानने को तैयार थे, तथापि आन्ना बड़ी सक्रियता से तैयारी में लगी हुई थी और यह अनुभव करती थी कि एक दिन पहले या बाद में जाने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। वह अपने कमरे में खुले सन्दूक़ के पास खड़ी हुई चीज़ें छांट रही थी, जब कपड़े पहने हुए व्रोन्स्की हर दिन की तुलना में कुछ पहले उसके कमरे में आया।

"मैं अभी maman के यहां हो आता हूं, वह मुझे येगोरोव के हाथ पैसे भिजवा सकती है। मैं कल चलने को तैयार हूं," उसने कहा।

आन्ना का मूड चाहे कितना ही अच्छा क्यों न था, देहाती बंगले में मां के पास जाने की बात सुनकर उसके दिल पर चोट-सी लगी।

"नहीं, मैं ख़ुद ही सारी तैयारी नहीं कर पाऊंगी," उसने कहा और सोचा—"मतलब यह कि जैसा मैं चाहती थी, वैसा भी हो सकता था।"—"नहीं, जैसा तुम चाहते थे, वैसा ही करो। तुम खाने के कमरे में चलो, मैं अभी आती हूं, ज़रा अनावश्यक चीज़ें छांट लूं," उसने आन्नुश्का के हाथ में, जो पहले ही ढेर सारे कपड़े उठाये थी, कुछ और देते हुए कहा।

आन्ना जब भोजन-कक्ष में दाख़िल हुई, तो व्रोन्स्की नाश्ता कर रहा था।

"तुम विश्वास नहीं करोगे कि ये कमरे मुझे कितने बुरे लगते हैं," उसने कॉफ़ी पीने के लिये उसके निकट बैठते हुए कहा। "इन chambres garnies* से अधिक भयानक और कोई चीज़ नहीं हो सकती। इनका न तो कोई व्यक्तित्व है, न इनमें आत्मा है। ये घड़ियां, पर्दे और सबसे बढ़कर तो ये दीवारी काग़ज़ी छींटें – कितना भयानक है यह सब! वोज़्द्वीजेन्स्कोये की तो मुझे सौभाग्य-धरती की तरह याद आती है। तुम घोड़ों को तो अभी नहीं भेज रहे हो?"

"नहीं, वे हमारे बाद जायेंगे। तुम कहीं जाना चाहती हो?"

"मैं विल्सन के यहां जाना चाहती थी। मुझे अपनी कुछ पोशाकें उसे देनी थीं। तो कल जाना तय है?" उसने ख़ुशी भरी आवाज़ में कहा, किन्तु उसके चेहरे का भाव सहसा बदल गया।

व्रोन्स्की का अर्दली पीटर्सबर्ग से आये तार की रसीद के बारे में पूछने आया। व्रोन्स्की के तार पाने में कोई ख़ास बात नहीं थी, मगर उसने मानो आन्ना से कुछ छिपाना चाहते हुए अर्दली से कहा कि रसीद उसके अध्ययन-कक्ष में है और झटपट आन्ना को सम्बोधित किया।

"अवश्य ही कल सब काम निपटा दूंगा।"

"तार किसका है?" उसने व्रोन्स्की की बात पर कान न देते हुए पूछा।

"स्तीवा का," व्रोन्स्की ने मन मारकर उत्तर दिया।

"तो तुमने मुझे वह दिखाया क्यों नहीं? मेरे और स्तीवा के बीच क्या राज़ हो सकता है?"

व्रोन्स्की ने अर्दली को वापस बुलाकर तार लाने को कहा।

"मैं तुम्हें इसलिये यह तार नहीं दिखाना चाहता था कि स्तीवा को तार भेजने का जनून है। जब कुछ भी तय नहीं हुआ, तो तार भेजने में क्या तुक है?"

"तलाक़ के बारे में?"

"हां, लेकिन उसने लिखा है कि अभी तक कोई सफलता नहीं

---

* किराये के मकान। (फ़्रांसीसी)

मिली है। कुछ दिनों में पक्का जवाब देने का वादा किया है। लो, ख़ुद पढ़ लो।"

आन्ना ने कांपते हाथों से तार लिया और व्रोन्स्की ने जो कुछ कहा था, उसमें वही पढ़ा। अन्त में इतना और जोड़ दिया गया था – आशा तो कम है, किन्तु मैं सम्भव और असम्भव, सभी कुछ करूंगा।

"मैंने कल कह दिया था कि मेरे लिये सब बराबर है – मुझे कब तलाक़ मिलता है या नहीं भी मिलता," आन्ना ने लाल होते हुए कहा। "मुझसे छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं थी।" – "ऐसे ही वह औरतों के साथ अपने पत्र-व्यवहार को भी मुझसे छिपा सकता है और ऐसा भी करता है," आन्ना ने सोचा।

"याश्विन आज सुबह वोइतोव के साथ यहां आना चाहता था," व्रोन्स्की ने कहा, "लगता है कि उसने पेव्त्सोव से सब कुछ जीत लिया, उससे ही अधिक, जितना वह दे सकता है – लगभग साठ हज़ार।"

"लेकिन तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मुझे इस ख़बर में इतनी अधिक दिलचस्पी है कि छिपाया भी जाये?" आन्ना ने इस कारण खीझते हुए कि ऐसे बात बदलकर उसने स्पष्ट रूप से यह जता दिया था कि वह झल्ला रही है। "मैं कह चुकी हूं कि इस बारे में सोचना ही नहीं चाहती और मेरी यही इच्छा है कि तुम भी इस मामले में मेरी ही तरह कम दिलचस्पी लो।"

"मैं इसलिये दिलचस्पी लेता हूं कि मुझे अंधेरे में न रहकर बात को साफ़ कर लेना पसन्द है।"

"बाहरी रूप की नहीं, प्यार की स्पष्टता असली चीज़ है," व्रोन्स्की के शब्दों के बजाय उस रूखे, शान्त अन्दाज़ से अधिक खीझते हुए, जिसमें वह बात कर रहा था, उसने जवाब दिया।

"हे भगवान, फ़िर प्यार की चर्चा आ गयी," व्रोन्स्की ने माथे पर बल डालते हुए सोचा।

"तुम जानती हो कि मैं किसलिये तलाक़ में दिलचस्पी लेता हूं – तुम्हारे और आगे चलकर होनेवाले बच्चों के लिये," उसने कहा।

"बच्चे नहीं होंगे।"

"यह बड़े अफ़सोस की बात है," व्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

"तुम्हें बच्चों के लिये इसकी आवश्यकता है और मेरे बारे में तो तुम नहीं सोचते न?" उसने उसके ये शब्द "तुम्हारे और बच्चों के लिये" पूरी तरह भुलाते और उन पर कान न देते हुए कहा।

बच्चे होने का प्रश्न बहुत समय से उनके बीच विवाद का विषय था और इससे आन्ना को झल्लाहट होती थी। बच्चों के लिये उसकी चाह का वह यह अर्थ लगाती थी कि उसकी सुन्दरता को बनाये रखने की उसे कोई परवाह नहीं।

"ओह, मैंने कहा था तुम्हारे लिये। सबसे अधिक तो तुम्हारे लिये," माथे पर ऐसे बल डालकर मानो उसे दर्द हो रहा हो, व्रोन्स्की ने इन शब्दों को दोहराया, "क्योंकि मुझे यक़ीन है कि तुम्हारी अधिकतर खीझ का कारण तो स्थिति की अस्पष्टता है।"

"हां, अब उसने ढोंग करना बन्द कर दिया है और मेरे प्रति उसकी निठुर घृणा स्पष्ट दिखाई दे रही है," उसके शब्दों को न सुनते, किन्तु उस कठोर और क्रूर निर्णायक को, जो उसे चिढ़ाते हुए उसकी आंखों में से झांक रहा था, भयातुर होकर देखते हुए मन में सोचा।

"कारण यह नहीं है," आन्ना ने कहा, "मैं यह समझ भी नहीं सकती कि जिसे तुम खीझ कहते हो, उसका कारण यह हो सकता है कि मैं पूरी तरह तुम्हारे वश में हूं। यहां स्थिति की अनिश्चितता हो ही क्या सकती है? बात इसके विपरीत है।"

"बहुत दुख की बात है कि तुम समझना नहीं चाहतीं," उसने अपना विचार व्यक्त करने का हठ प्रकट करते हुए उसे टोका, अनिश्चितता यह है कि तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं स्वतन्त्र हूं।"

"इस बारे में तुम बिल्कुल निश्चिन्त रह सकते हो," आन्ना ने उत्तर दिया और मुंह फेरकर कॉफ़ी पीने लगी।

अपनी कनिष्ठा को अलग रखते हुए उसने प्याला उठाया और मुंह के साथ लगाया। दो-चार घूंट पीने के बाद उसने व्रोन्स्की की तरफ़ देखा और उसके चेहरे के भाव से स्पष्ट समझ गयी कि उसका हाथ, उसकी मुद्रा और उसके होंठों से पैदा होनेवाली आवाज़ – उसे सभी कुछ बुरा लग रहा है।

"मुझे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं है कि तुम्हारी मां क्या सोचती

है और कैसे तुम्हारी शादी करना चाहती है," कांपते हाथ से प्याला नीचे रखते हुए उसने कहा।

"लेकिन हम इसकी बात नहीं कर रहे हैं।"

"नहीं, इसी की कर रहे हैं। और विश्वास करो कि हृदयहीन नारी, वह बूढ़ी हो या जवान, तुम्हारी मां हो या कोई परायी, मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं, मैं उससे कोई सरोकार नहीं रखना चाहती।"

"आन्ना, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी मां के बारे में अनादर से बात नहीं करो।"

"जो नारी अपने हृदय से यह नहीं जान सकी कि उसके बेटे का सुख और सम्मान किस चीज़ में निहित है, उसके पास दिल नहीं है।"

"मैं तुमसे अपना अनुरोध दोहराता हूं कि मेरी मां के बारे में, जिसका मैं आदर करता हूं, अनादर से बात नहीं करो," व्रोन्स्की ने अपनी आवाज़ ऊंची करते और आन्ना की ओर कड़ाई से देखते हुए कहा।

आन्ना ने कोई जवाब नहीं दिया। व्रोन्स्की को, उसके चेहरे और हाथों को एकटक देखते हुए उसे पिछले दिन उनके बीच हुई सुलह और उसके उद्वेगपूर्ण प्रेम-प्रदर्शन का दृश्य पूरी तफ़सीलों के साथ याद हो आया। "बिल्कुल इसी तरह का प्रेम वह दूसरी औरतों पर लुटाता रहा है, लुटाना चाहता है और लुटायेगा!" आन्ना ने सोचा।

"तुम अपनी मां को प्यार नहीं करते हो। ये तो शब्द, कोरे शब्द ही शब्द हैं!" घृणा से व्रोन्स्की की ओर देखते हुए उसने कहा।

"अगर ऐसी बात है, तो हमें..."

"मामले को तय कर लेना चाहिये और मैंने तय कर लिया है," इतना कहकर उसने बाहर जाना चाहा, मगर इसी समय याश्विन कमरे में दाखिल हुआ। आन्ना ने उससे हाथ मिलाया और रुक गयी।

जिस समय आत्मा में तूफ़ान उमड़-घुमड़ रहा था और वह यह महसूस कर रही थी कि जीवन के ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जिसके भयानक परिणाम हो सकते हैं, ऐसे क्षण में उसे एक पराये आदमी के सामने, जिसे देर-सबेर सब कुछ मालूम हो जायेगा, ढोंग क्यों करना पड़ा—वह यह नहीं जानती थी। किन्तु इसी क्षण अपने आन्तरिक बवंडर को दबाकर वह बैठ गयी और मेहमान से बातचीत करने लगी।

"तो कैसा हालचाल है आपका? क़र्ज़दार से पैसा मिल गया?" उसने याश्विन से पूछा।

"कुछ बुरा नहीं। लगता है कि पूरी रक़म नहीं मिलेगी और बुध को जाना ही होगा। और आप लोग कब जा रहे हैं?" याश्विन ने आंखें सिकोड़कर व्रोन्स्की की ओर देखते और स्पष्टत: उनके बीच हुए झगड़े का अनुमान लगाते हुए पूछा।

"लगता है कि परसों," व्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

"वैसे आप लोग बहुत दिनों से जाने की बात कर रहे हैं।"

"मगर अब तो बिल्कुल पक्का है," आन्ना ने व्रोन्स्की को सीधे ऐसी नज़र से देखते हुए कहा, जो कह रही थी कि वह सुलह होने की सम्भावना के बारे में तो सोचे भी नहीं।

"उस बदक़िस्मत पेव्त्सोव पर क्या आपको तरस नहीं आता?" आन्ना ने याश्विन से बातचीत जारी रखी।

"तरस आता है या नहीं आता, अपने से कभी यह पूछा ही नहीं, आन्ना अर्कादि्येव्ना। बात यह है कि मेरी सारी दौलत इसी में है," उसने बग़ल की जेब की तरफ़ इशारा किया, "और इस वक़्त मैं अमीर आदमी हूं, मगर आज जब क्लब में जाऊंगा, तो हो सकता है कि वहां से कौड़ी-कौड़ी का मुहताज होकर बाहर निकलूं। मेरे साथ जो कोई खेलने बैठता है, वह मेरी क़मीज़ तक उतरवा लेना चाहता है और यही मैं करना चाहता हूं। तो इस तरह हम मोर्चा लेते हैं और इसी में तो मज़ा है।"

"लेकिन अगर आप शादीशुदा होते, तो आपकी बीवी की क्या हालत होती?"

याश्विन ठठाकर हंस दिया।

"ज़ाहिर है कि इसीलिये तो मैंने शादी नहीं की और न कभी ऐसा इरादा ही बनाया।"

"मगर वह हेलसिंगफ़ोर्स?" व्रोन्स्की ने बातचीत में शामिल होते और आन्ना की ओर देखते हुए, जो मुस्करा रही थी, पूछा।

व्रोन्स्की से नज़र मिलते ही आन्ना के चेहरे पर सहसा रुखाई और कड़ाई का भाव झलक उठा, जो मानो कह रहा था – "कुछ भुलाया नहीं गया है। जो था, वही है।"

"क्या सचमुच आप प्रेम कर चुके हैं?" आन्ना ने याश्विन से पूछा।

"हे भगवान! अनेक बार! लेकिन बात यह है, कोई तो ऐसे जुआ खेलने बैठता है कि rendez-vous* का समय आने पर हमेशा ही वहां से उठकर जा सकता है। मगर मैं सिर्फ़ ऐसे ही प्रेम कर सकता हूं कि शाम को जुआ खेलने के वक़्त देर न हो। मैं ऐसी ही व्यवस्था कर लेता हूं।"

"नहीं, मैं इसकी नहीं, असली प्यार की बात कर रही हूं।" वह हेलसिंगफ़ोर्स का नाम लेना चाहती थी, मगर उसने व्रोन्स्की द्वारा कहा गया शब्द दोहराना नहीं चाहा।

व्रोन्स्की से घोड़ा ख़रीदनेवाला वोइतोव आ गया। आन्ना उठी और कमरे से बाहर चली गयी।

घर से जाने के पहले व्रोन्स्की आन्ना के पास आया। उसने यह दिखावा करना चाहा कि मेज़ पर कुछ ढूंढ़ रही है, मगर इस ढोंग से लज्जित होते हुए उसने रुखाई से सीधे उसकी तरफ़ देखा।

"क्या चाहिये आपको?" उसने फ़्रांसीसी में पूछा।

"गामबेता की नसल का प्रमाणपत्र, मैंने उसे बेच दिया है," उसने ऐसे लहजे में कहा, जो शब्दों से अधिक स्पष्ट रूप से यह कह रहा था – सफ़ाई देने का मेरे पास वक़्त नहीं है और इससे कोई फ़ायदा भी नहीं होगा।

"मैं उसके सामने किसी बात के लिये दोषी नहीं हूं," व्रोन्स्की सोच रहा था। "अगर वह ख़ुद अपने को सज़ा देना चाहती है, तो tant pis pour elle.**" किन्तु कमरे से बाहर निकलते समय उसे लगा कि आन्ना ने कुछ कहा है और उसके प्रति सहानुभूति से उसका दिल धड़क उठा।

"तुमने कुछ कहा, आन्ना?" उसने पूछा।

"मैंने कुछ नहीं कहा," पहले की तरह ही रुखाई और शान्ति से उसने उत्तर दिया।

---

* प्रेयसी-मिलन। (फ़्रांसीसी)

** यह उसके लिये ही बुरा है। (फ़्रांसीसी)

"अगर कुछ नहीं कहा, तो tant pis," उसने फिर से कठोर होते हुए सोचा, मुड़ा और चल दिया। बाहर निकलते हुए उसे दर्पण में आन्ना के पीले चेहरे और कांपते होंठों की झलक मिली। उसने चाहा कि रुककर उसे तसल्ली देनेवाले कुछ शब्द कहे, मगर इससे पहले कि वह ऐसे शब्द सोच पाता, उसके पांव उसे बाहर ले गये। व्रोन्स्की दिन भर घर से बाहर रहा और रात को देर से जब घर लौटा, तो नौकरानी ने उसे बताया कि आन्ना अर्काद्येव्ना के सिर में दर्द है और उन्होंने अनुरोध किया है कि आप उनके कमरे में न जायें।

(२६)

इससे पहले कभी भी पूरा दिन झगड़े में नहीं गुज़रा था। आज पहली बार ऐसा हुआ था। यह झगड़ा नहीं था। यह उसके प्रेम के पूरी तरह ठण्डा पड़ जाने की स्पष्ट स्वीकारोक्ति थी। क्या उसकी ओर उसका ऐसे देखना उचित था, जैसे उसने उस समय देखा था, जब वह घोड़े की नस्ल का प्रमाणपत्र लेने कमरे में आया था? उसकी ओर देखे, यह जान ले कि उसका हृदय हताशा से फटा जा रहा है और फिर भी उदासीन और शान्त चेहरे के साथ चुपचाप बाहर चला जाये? उसके प्रेम की गर्मी ही नहीं जाती रही, बल्कि वह उससे घृणा करता है, क्योंकि किसी दूसरी औरत को प्यार करता है – यह साफ़ था।

और व्रोन्स्की द्वारा कहे गये कठोर शब्दों को याद करते हुए आन्ना अन्य ऐसे शब्दों की कल्पना कर रही थी, जो वह सम्भवतः कहना चाहता था और उसने कहे होते तथा इस तरह अधिकाधिक खीझती जा रही थी।

"मैं आपको रोक नहीं रहा हूं," वह कह सकता था, "आप जहां भी चाहें, जा सकती हैं। आप पति से शायद इसीलिये तलाक़ नहीं लेना चाहती थीं कि उसके पास लौट सकें। लौट जाइये। अगर आपको पैसों की ज़रूरत है, तो मैं दे सकता हूं। कितने रूबल चाहिये आपको?"

एक अशिष्ट व्यक्ति जितने भी कठोर शब्द कह सकता था, आन्ना

की कल्पना में उसने उससे वे सभी कह दिये और वह उसे इन शब्दों के लिये वैसे ही क्षमा नहीं कर रही थी, जैसे कि उसने सचमुच ही उन्हें कहा हो।

"मगर क्या कल ही उसने, उस सच्चे और ईमानदार आदमी ने मेरे प्रति अपने प्यार की क़सम नहीं खाई थी? क्या मैं अनेक बार पहले भी ऐसे ही हताश नहीं हो चुकी हूं?" कुछ क्षण बाद उसने अपने आपसे कहा।

श्रीमती विल्सन के यहां आने-जाने में बीते दो घण्टों को छोड़कर आन्ना का सारा दिन इसी ऊहापोह में बीता कि सब कुछ ख़त्म हो गया या सुलह की कोई उम्मीद हो सकती है? उसे अभी चले जाना चाहिये या एक बार फिर उससे मिलना चाहिये? उसने दिन भर उसका इन्तज़ार किया और शाम को अपने कमरे में जाते और नौकरानी से उसे यह कहने का आदेश देते हुए कि उसके सिर में दर्द है, उसने मन में सोचा – "नौकरानी द्वारा कहे जानेवाले शब्दों के बावजूद अगर वह मेरे कमरे में आया, तो इसका मतलब होगा कि अभी भी मुझको प्यार करता है। अगर नहीं आया, तो समझो कि सब कुछ समाप्त हो चुका और तब मैं तय करूंगी कि मुझे क्या करना है!.."

रात को व्रोन्स्की के घर लौटने पर उसने उसकी बग्घी, घण्टी तथा पैरों की आवाज़ और नौकरानी के साथ हुई उसकी बातचीत सुनी। व्रोन्स्की को जो बताया गया, उसने उस पर विश्वास कर लिया, और कुछ भी जानना नहीं चाहा और अपने कमरे में चला गया। समझना चाहिये कि सब कुछ ख़त्म हो गया।

और व्रोन्स्की के दिल में अपने प्रति प्रेम को फिर से बहाल करने, उसे दण्ड देने और उस संघर्ष में, जो उसके हृदय में बैठा कोई क्रोधी पिशाच व्रोन्स्की के विरुद्ध कर रहा था, विजय पाने के एकमात्र साधन के रूप में वह मृत्यु की स्पष्ट और सजीव कल्पना करने लगी।

वह वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव जाये या न जाये, उसे पति से तलाक़ मिले या न मिले – उसके लिये अब यह सब बराबर था, सब अनावश्यक था। आवश्यक था, तो यही कि उसे दण्ड दिया जाये।

जब उसने सामान्य मात्रा में अफ़ीम डाली और यह सोचा कि मरने के लिये अफ़ीम की पूरी शीशी पी जाना ही काफ़ी है, तो उसे

यह इतना साधारण और आसान प्रतीत हुआ कि वह फिर से मज़ा लेती हुई सोचने लगी कि किस तरह व्रोन्स्की यातना सहेगा, पछतायेगा और उसकी स्मृति को प्यार करेगा, मगर तब देर हो चुकी होगी। वह आंखें खोले हुए पलंग पर लेटी थी और लगभग जल चुकी मोमबत्ती की रोशनी में छत की प्लास्टरवाली कार्निस और लकड़ी की ओट से उस पर पड़नेवाले छाया-भाग को देखते हुए यह सजीव कल्पना कर रही थी कि जब वह नहीं रहेगी और उसके लिये वह केवल स्मृति ही होगी, तब वह क्या अनुभव करेगा। "ऐसे कठोर शब्द मैंने उससे कैसे कह दिये?" वह कहेगा। "उससे कुछ भी कहे बिना मैं कमरे से बाहर कैसे चला गया? मगर अब वह नहीं रही। वह हमेशा के लिये हमारे पास से चली गयी। वह 'वहां' है..." लकड़ी की ओट की परछाईं सहसा डोली, सारी कार्निस, पूरी छत पर फैल गयी, दूसरी ओर से दूसरी परछाइयां उसकी तरफ़ लपकीं, क्षण भर को परछाइयां पीछे हटीं, मगर फिर नयी स्फूर्ति से एक-दूसरी की ओर बढ़ीं, कांपीं, आपस में घुली-मिलीं और सब कुछ अंधेरे में डूब गया। "मौत!" आन्ना ने सोचा। और भय ने उसे ऐसे जकड़ लिया कि देर तक यह नहीं समझ पायी कि वह कहां है और जल चुकी मोमबत्ती की जगह दूसरी मोमबत्ती जलाने के लिये कांपते हाथों से देर तक दियासलाई की डिबिया नहीं ढूंढ़ पायी। "नहीं, बस – सिर्फ़ जीते रहना! मैं तो उसे प्यार करती हूं! वह भी मुझे प्यार करता है! ऐसा मनमुटाव पहले भी हुआ है और ख़त्म हो जायेगा," उसने जीवन की ओर फिर से लौट आने की ख़ुशी के आंसुओं को गालों पर बहते अनुभव करके कहा। और अपने भय से मुक्ति पाने के लिये वह झटपट व्रोन्स्की के कमरे में चली गयी।

व्रोन्स्की अपने कमरे में गहरी नींद सो रहा था। आन्ना उसके निकट गयी और मोमबत्ती की रोशनी में उसके चेहरे को देर तक देखती रही। अब, जबकि व्रोन्स्की सो रहा था, उसके हृदय में उसके लिये ऐसे प्यार उमड़ रहा था कि उसे देखते हुए वह प्यार के आंसुओं को वश में नहीं रख सकी। किन्तु वह जानती थी कि अगर उसकी आंख खुल जाये, तो वह अपने को ही सही माननेवाली रूखी दृष्टि से उसकी ओर देखेगा और उससे अपने प्यार की बात कहने के पहले

आन्ना को उसको यह साबित करना होगा कि वह उसके सम्मुख दोषी है। व्रोन्स्की को जगाये बिना वह अपने कमरे में लौट आयी और दूसरी बार अफ़ीम पीने के बाद सुबह होने के वक़्त उसे बेचैनी की कच्ची-सी नींद आई, जिसमें लगातार अपनी चेतना बनी रही।

सुबह के वक़्त एक भयानक स्वप्न ने, जिसे व्रोन्स्की के साथ उसका सम्बन्ध होने के पहले भी वह कई बार देख चुकी थी, उसे जगा दिया। झबरीली दाढ़ी वाला एक बूढ़ा किसान फ़्रांसीसी में बेमानी-से शब्द बोलता हुआ एक लोहे पर झुककर कुछ कर रहा था और जैसा कि इस भयानक स्वप्न के समय हमेशा होता था (और यही इस स्वप्न को भयानक बना देता था) यह छोटा-सा किसान उसकी ओर कोई ध्यान दिये बिना लोहे के टुकड़े से उसके ऊपर कुछ भयानक कर रहा था। और ठण्डे पसीने से तर आन्ना की आंख खुल गयी।

उठने पर मानो घनी धुंध में से उसे पिछले दिन की याद आई।

"हां, झगड़ा हुआ था। वही हुआ था, जो पहले भी कई बार हो चुका है। मैंने कहा था कि मेरे सिर में दर्द है और वह कमरे में नहीं आया था। कल हमें यहां से जाना है, उससे मिलना और जाने की तैयारी करनी चाहिये," उसने अपने आपसे कहा। यह मालूम करके कि वह अपने कमरे में है, वह उधर चल दी। मेहमानख़ाने को लांघते हुए उसे दरवाज़े के सामने बग्घी के रुकने की आवाज़ सुनाई दी। खिड़की में से बाहर झांकने पर आन्ना को एक बग्घी दिखाई दी, जिसमें से बैंगनी रंग की टोपी पहने एक जवान लड़की सिर बाहर निकालकर घण्टी बजानेवाले नौकर को कुछ आदेश दे रही थी। ड्योढ़ी में बातचीत के बाद कोई ऊपर गया और मेहमानखाने के निकट व्रोन्स्की के पैरों की आहट सुनाई दी। वह तेज़ी से ज़ीने से नीचे उतर रहा था। आन्ना फिर से खिड़की के पास जा खड़ी हुई। लो, वह नंगे सिर बाहर निकला और बग्घी के पास गया। बैंगनी रंग की टोपी पहने जवान लड़की ने उसे एक पैकेट दिया। व्रोन्स्की ने मुस्कराकर उससे कुछ कहा। बग्घी चली और व्रोन्स्की तेज़ क़दमों से ज़ीने पर वापस चढ़ गया।

आन्ना की आत्मा पर छाया हुआ कुहासा अचानक छंट गया। पिछले दिन की भावनाओं ने उसके टीसते हुए हृदय को नयी पीड़ा

से डस लिया। उसकी समझ में अब यह नहीं आ रहा था कि कैसे उसने दिन भर उसके साथ उसके घर में रहने की सीमा तक अपने को अपमानित होने दिया। अपने निर्णय की घोषणा करने के लिये वह उसके कमरे में गयी।

"अपनी बेटी के साथ सोरोकिना आई थी और maman से पैसे और काग़ज़ात लाई थी। मैं कल इन्हें हासिल नहीं कर पाया था। तुम्हारे सिर का क्या हाल है, बेहतर है न?" व्रोन्स्की ने आन्ना के चेहरे के उदासी भरे और गम्भीर भाव को देखने और समझने की इच्छा न रखते हुए शान्ति से कहा।

कमरे के मध्य में खड़ी हुई आन्ना चुपचाप और टकटकी बांधकर उसे देखती रही। व्रोन्स्की ने उसकी तरफ़ देखा, क्षण भर को त्योरी चढ़ायी और ख़त पढ़ता रहा। आन्ना मुड़ी और धीरे-धीरे कमरे से बाहर चल दी। व्रोन्स्की उसे अभी भी लौटा सकता था, मगर उसके दरवाज़े तक पहुंचने पर भी वह ख़ामोश रहा और केवल काग़ज़ के उलटे जाने की सरसराहट ही सुनायी दी।

"और हां," व्रोन्स्की ने उस समय कहा जब वह दरवाज़े के बीच पहुंच गयी थी, "कल तो हम निश्चय ही जा रहे हैं न? ठीक है न?"

"आप जा रहे हैं, मैं नहीं," व्रोन्स्की की ओर मुड़ते हुए आन्ना ने जवाब दिया।

"आन्ना, ऐसे जीना असम्भव है..."

"आप जा रहे हैं, मैं नहीं," उसने दोहराया।

"यह तो बर्दाश्त के बाहर होता जा रहा है!"

"आप... आप इसके लिये पछतायेंगे," आन्ना ने कहा और कमरे से बाहर चली गयी।

अत्यधिक हताशा के जिस भाव से ये शब्द कहे गये थे, उनसे घबराकर व्रोन्स्की उठा और उसने आन्ना के पीछे भागना चाहा, मगर सम्भलकर फिर से बैठ गया और दांतों को ज़ोर से भींचते हुए त्योरी चढ़ा ली। आन्ना की इस भद्दी धमकी ने, जैसी कि वह उसे प्रतीत हुई थी, उसमें झल्लाहट पैदा कर दी थी। "मैं सब कुछ करके देख चुका हूं," उसने सोचा, "अब एक ही रास्ता रह गया है कि उसकी

तरफ़ ध्यान न दूं," और वह शहर तथा फिर से मां के यहां जाने को, जिससे उसे अधिकारपत्र पर हस्ताक्षर करवाने थे, तैयार होने लगा।

आन्ना को अध्ययन-कक्ष और फिर भोजन-कक्ष में व्रोन्स्की की पद-चाप सुनायी दी। मेहमानखाने के निकट वह रुका। किन्तु वह उसके कमरे में नहीं आया, उसने केवल यह आदेश दिया कि उसकी अनुपस्थिति में वोइतोव के आने पर उसे घोड़ा दे दिया जाये। इसके बाद आन्ना ने बग्घी के आने, दरवाज़ा खुलने और व्रोन्स्की के बाहर जाने की आवाज़ सुनी। मगर वह फिर से ड्योढ़ी में लौटा और कोई व्यक्ति भागता हुआ ऊपर आया। यह व्रोन्स्की का अर्दली था, जो कमरे में रह गये मालिक के दस्ताने लेने आया था। आन्ना खिड़की के निकट जा खड़ी हुई और उसने देखा कि नज़र ऊपर उठाये बिना उसने दस्ताने लिये और कोचवान की पीठ छूकर उससे कुछ कहा। इसके बाद खिड़की की तरफ़ देखे बिना टांग पर टांग रखकर अपनी सामान्य मुद्रा में बग्घी में जा बैठा और एक दस्ताना पहनते हुए मोड़ के पीछे ग़ायब हो गया।

(२७)

"चला गया! सब कुछ ख़त्म हो गया!" खिड़की के पास खड़ी आन्ना ने अपने आपसे कहा और इसके उत्तर में बुझती हुई मोमबत्ती के समय अंधेरे में अनुभूत प्रभाव और भयानक स्वप्न आपस में घुल-मिलकर एक हो गये और झुरझुरी पैदा करनेवाले भय ने उसके दिल को जकड़ लिया।

"नहीं, यह नहीं हो सकता!" उसने ऊंची आवाज़ में कहा और कमरे को लांघते हुए ज़ोर की घण्टी बजायी। अब उसे अकेली रहते हुए इतना डर लग रहा था कि नौकर के आने का इन्तज़ार किये बिना वह स्वयं ही उसकी तरफ़ चल दी।

"यह मालूम कीजिये कि काउंट कहां गये हैं," आन्ना ने नौकर से कहा।

नौकर ने जवाब दिया कि काउंट अस्तबल में गये हैं।

"उन्होंने आपसे यह कहने का आदेश दिया था कि अगर आप कहीं बाहर जाना चाहती हों, तो बग्घी अभी वापस आ जायेगी।"

"अच्छी बात है। रुकिये! मैं अभी एक रुक्क़ा लिखे देती हूं। रुक्क़ा देकर मिख़ाईल को अस्तबल भेज दीजिये। जल्दी से।"

आन्ना ने बैठकर यह लिखा –

"मैं दोषी हूं। घर वापस आ जाओ, हमें मामले को साफ़ कर लेना चाहिये। भगवान के लिये आ जाओ, मेरा दिल डरता है।"

आन्ना ने मुहर लगाकर रुक्क़ा नौकर को दे दिया।

अकेली रहते हुए अब उसे डर लगता था और इसलिये नौकर के पीछे-पीछे ही वह बच्चों के कमरे में चली गयी।

"अरे यह क्या हुआ, यह तो वह नहीं, वह नहीं! उसकी नीली आंखें और सहमी-सी मुस्कान कहां है?" आन्ना के दिमाग़ में यही पहला विचार आया, जब उसने सेर्योझा की जगह, जिसे उसने अपने विचारों की गड़बड़ी के कारण बच्चों के कमरे में देखने की आशा की थी, गुदगुदी, लाल-लाल गालों और घुंघराले, काले बालों वाली बिटिया को अपने सामने पाया। मेज़ के पास बैठी हुई बच्ची मेज़ पर लगातार और ख़ूब ज़ोर से कार्क मार रही थी और काले अंगूरों जैसी काली-काली आंखों से मां की तरफ़ ख़ाली-ख़ाली नज़र से देख रही थी। अंग्रेज़ शिक्षिका को यह उत्तर देकर कि वह बिल्कुल स्वस्थ है और अगले दिन गांव जा रही है, आन्ना बच्ची के नज़दीक बैठकर सुराही के कार्क को उसके सामने घुमाने लगी। बच्ची की ज़ोरदार और गूंजती हंसी और उसकी भौंह की हरकत ने उसे व्रोन्स्की की इतनी सजीव याद दिला दी कि अपनी सिसकी को वश में करके वह झटपट उठी और बाहर चली गयी। "क्या सचमुच सब कुछ ख़त्म हो गया? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता," वह सोच रही थी। "वह लौट आयेगा। किन्तु वह उस मुस्कान तथा उस सोरोकिना के साथ बात करने के बाद उसमें आ गयी सजीवता की मुझे क्या सफ़ाई देगा? लेकिन अगर सफ़ाई न दी, तो भी मैं उस पर यक़ीन कर लूंगी। अगर मैं यक़ीन नहीं करूंगी, तो मेरे लिये एक ही चीज़ बाक़ी रह जाती है – मैं वह नहीं चाहती।"

आन्ना ने घड़ी पर नज़र डाली। बारह मिनट बीते थे। "अब

तो उसे मेरा रुक़्क़ा मिल चुका है और वह वापस आ रहा है। अधिक समय नहीं लगेगा, दस मिनट और... लेकिन अगर वह न आया, तो? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मगर उसे मेरी आंखों से यह नहीं पता चलना चाहिये कि मैं रोती रही हूं। हां, मैं जाकर इन्हें धो लेती हूं। और हां, मैंने बाल संवारे या नहीं?" उसने अपने आपसे पूछा। और याद नहीं कर पायी। उसने हाथ से सिर को छूकर देखा। "हां, मेरे बाल तो संवरे हुए हैं, लेकिन मैंने उन्हें कब संवारा, बिल्कुल याद नहीं आ रहा है।" उसे अपने हाथ पर भी विश्वास नहीं हुआ और यह देखने के लिये कि वास्तव में ही उसके बाल संवरे हुए हैं अथवा नहीं, दर्पण के सामने जा खड़ी हुई। उसके बाल संवरे हुए थे, मगर याद नहीं कर पा रही थी कि कब उसने ऐसा किया। "यह कौन है?" तमतमाये और अजीब चमकती आंखों वाले भयभीत-से चेहरे को दर्पण में अपनी ओर देखकर उसने सोचा। "यह तो मैं हूं," अचानक उसकी समझ में आया और सिर से पांव तक अपने को देखने पर सहसा उसे उसके चुम्बनों की अनुभूति हुई और उसने सिहरकर कंधे हिलाये। इसके बाद उसने अपना हाथ होंठों से लगाकर उसे चूमा।

"यह क्या मैं पागल हुई जा रही हूं," और वह शयन-कक्ष में चली गयी, जहां आन्नुश्का कमरा ठीक-ठाक कर रही थी।

"आन्नुश्का," उसने नौकरानी के सामने खड़े होकर उसकी ओर देखते हुए कहा और यह नहीं समझ पा रही थी कि उससे आगे क्या कहे।

"आप दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना के यहां जाना चाहती थीं," मानो उसके मन की बात का अनुमान लगाते हुए नौकरानी ने कहा।

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना के यहां? हां, मैं जाऊंगी।"

"पन्द्रह मिनट अस्तबल तक जाने के और पन्द्रह मिनट वापस आने के। वह लौट रहा है, अभी आ जायेगा।" उसने घड़ी निकालकर देखी। "लेकिन मुझे ऐसी स्थिति में छोड़कर वह चला कैसे गया? मुझसे सुलह किये बिना वह यों चैन से जी कैसे सकता है?" वह खिड़की के पास जाकर बाहर सड़क पर नज़र दौड़ाने लगी। समय के हिसाब से उसे वापस आ जाना चाहिये था। मगर उसका हिसाब

ग़लत भी हो सकता था और वह फिर से यह याद करते हुए कि व्रोन्स्की कब गया था, मिनटों की गिनती करने लगी।

उस समय, जब वह बड़ी घड़ी के समय से अपनी घड़ी को जांचने के लिये खिड़की से हटी, बाहर एक बग्घी आकर खड़ी हो गयी। खिड़की से झांकने पर उसे व्रोन्स्की की बग्घी दिखाई दी। किन्तु ज़ीने पर कोई नहीं चढ़ा और नीचे आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। यह आन्ना द्वारा भेजा गया आदमी बग्घी में लौटा था। आन्ना उसके पास नीचे गयी।

"काउंट नहीं मिले। वे निजेगोरोद्स्की स्टेशन की ओर जा चुके थे।"

"तुम्हें क्या चाहिये? क्या?" आन्ना ने लाल गालों वाले प्रफुल्ल मिख़ाईल से पूछा, जो उसे रुक़्क़ा वापस दे रहा था।

"रुक़्क़ा तो उसे मिला ही नहीं," आन्ना को याद आया।

"यही रुक़्क़ा लेकर काउंटेस व्रोन्स्काया के देहात वाले बंगले पर चले जाओ। जानते हो न उनका घर? और फ़ौरन जवाब लेकर लौटो," आन्ना ने सन्देशवाहक से कहा।

"मगर मैं ख़ुद क्या करूंगी?" उसने सोचा। "हां, यह सच है कि मैं डौली के यहां जाऊंगी, नहीं तो मेरा दिमाग़ चल निकलेगा। इसके अलावा मैं तार भी भेज सकती हूं।" और आन्ना ने यह तार लिखा –

"मेरे लिये आपसे बात करना ज़रूरी है, अभी आ जाइये।"

तार भेजने के बाद वह कपड़े बदलने के लिये अपने कमरे में चली गयी। कपड़े और टोपी पहने हुए उसने फिर से मुटा गयी शान्त आन्नुश्का की आंखों में झांका। आन्नुश्का की भूरी, छोटी-छोटी और दयालु आंखों में स्पष्ट सहानुभूति झलक रही थी।

"मेरी प्यारी आन्नुश्का, मैं क्या करूं?" सिसकती हुई असहाय-सी आन्ना आराम-कुर्सी पर ढह पड़ी।

"इतनी परेशान क्यों हो रही हैं, आन्ना अर्काद्येव्ना! कभी ऐसा भी हो जाता है। आप बाहर चली जाइये, जी हल्का हो जायेगा," नौकरानी ने कहा।

"हां, मैं जाती हूं," आन्ना ने सम्भलते और उठते हुए कहा।

"अगर मेरी अनुपस्थिति में तार आये, तो दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना के यहां भिजवा देना... नहीं, मैं खुद लौट आऊंगी।"

"हां, सोचना नहीं चाहिये, कुछ करना चाहिये, बाहर जाना चाहिये, सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस घर से चले जाना चाहिये," उसने भयभीत होकर अपने हृदय की भयानक धड़कन को सुनते हुए कहा और जल्दी से बाहर निकलकर बग्घी में जा बैठी।

"कहां चलने का हुक्म है?" कोच पर बैठने से पहले कोचवान प्योत्र ने पूछा।

"ज़्नामेन्का सड़क पर, ओब्लोन्स्की दम्पति के यहां।"

(२८)

मौसम सुहाना था। सारी सुबह बार-बार बूंदा-बांदी होती रही थी और कुछ ही समय पहले आकाश साफ़ हुआ था। टीन की छतें, पटरियों की टाइलें, सड़क के खड़ंजे और बग्घियों के पहिये, चमड़े, कांसे और धातु की चीज़ें – मई महीने की धूप में सभी कुछ खूब चमक रहा था। दिन के तीन बजे थे और यह सड़कों पर बहुत ही व्यस्तता का समय था।

लचीले स्प्रिंगों पर तनिक डोलती, दो तेज़, भूरे घोड़ों वाली आरामदेह बग्घी के कोने में बैठी हुई आन्ना ने पहियों की निरन्तर खड़खड़ाहट और खुली हवा में लगातार बदलते दृश्यों के वातावरण में पिछले दिनों की घटनाओं पर फिर से नज़र डाली और उसे अपनी स्थिति घर की तुलना में बिल्कुल भिन्न दिखाई दी। अब तो मृत्यु का विचार ही उसे इतना भयानक और स्पष्ट प्रतीत नहीं हो रहा था और स्वयं मृत्यु अनिवार्य नहीं लगती थी। अब वह उस अपमान की स्थिति के लिये अपने को भला-बुरा कह रही थी, जिसमें उसने अपने को डाल लिया था। "मैं क्षमा कर देने के लिये उसकी मिन्नत कर रही हूं। मैं उसके सामने झुक गयी हूं। मैंने अपने को दोषी मान लिया है। भला क्यों? क्या मैं उसके बिना जी नहीं सकती?" और इस प्रश्न का उत्तर दिये बिना कि वह उसके बिना कैसे जियेगी, उसने साइनबोर्ड पढ़ने शुरू कर दिये। "दफ़्तर और गोदाम। दांतों का डाक्टर।

हां, मैं डौली से सब कुछ कह दूंगी। उसे व्रोन्स्की अच्छा नहीं लगता। मुझे शर्म आयेगी, ठेस लगेगी, मगर मैं उसे सब कुछ बता दूंगी। वह मुझे प्यार करती है और मैं उसकी सलाह पर अमल करूंगी। मैं व्रोन्स्की के सामने घुटने नहीं टेकूंगी। मुझे क्या करना चाहिये, मैं उसे यह नहीं सिखाने दूंगी। फ़िलिप्पोव नानबाई। कहते हैं कि वह अपनी रोटियां पीटर्सबर्ग भी भेजता है। मास्को का पानी कितना अच्छा है। और मितीश्ची के कुएं और माल-पूए भी।" और उसे याद हो आया कि बहुत, बहुत साल पहले, जब वह सत्रह वर्ष की थी, तो अपनी मौसी के साथ त्रोइत्सा मठ देखने गयी थी। "सो भी बग्घी में। क्या वह मैं ही थी, लाल हाथों वाली लड़की? उस समय मुझे जो कुछ इतना बढ़िया और पहुंच के बाहर लगता था, उसमें से कितना कुछ तुच्छ हो गया है और जो कुछ उस समय उपलब्ध था, वह अब सदा के लिये अनुपलब्ध हो गया है। क्या मैं तब इस बात का विश्वास कर सकती थी कि अपने को इस हद तक अपमानित होने दूंगी? मेरा रुक़्क़ा पाकर उसे कितना गर्व और कितनी ख़ुशी होगी! किन्तु मैं उसे दिखा दूंगी... कितना बदबूदार है यह रोग़न। किसलिये लोग निर्माण और रंग-रोग़न करते रहते हैं? पोशाकें और टोपियां," उसने पढ़ा। एक पुरुष ने सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया। यह आन्नुश्का का पति था। "हमारे परोपजीवी," आन्ना को व्रोन्स्की के ये शब्द याद हो आये। "हमारे? हमारे क्यों? भयानक बात तो यह है कि अतीत को जड़ से नहीं उखाड़ा जा सकता। जड़ से तो नहीं उखाड़ा जा सकता, मगर उसकी याद को छिपाया जा सकता है। और मैं उसे छिपा लूंगी।" इसी समय आन्ना को कारेनिन के साथ अपने अतीत और इस चीज़ की याद हो आयी कि कैसे उसने उसे स्मृति-पट से मिटा डाला। "डौली सोचेगी कि मैं दूसरे पति को भी छोड़ रही हूं और इसलिये सम्भवतः ठीक नहीं कर रही हूं। किन्तु क्या मैं अपने को ठीक सिद्ध करना चाहती हूं? मैं ऐसा कर ही नहीं सकती!" उसने कहा और उसका रोने को मन हुआ। किन्तु इसी क्षण वह यह सोचने लगी कि ये दो लड़कियां किस बात को लेकर मुस्करा रही हैं। "निश्चय ही प्रेम को लेकर? वे नहीं जानतीं कि इसमें कितनी पीड़ा, कितना अपमान है... छायादार सड़क और बच्चे। तीन लड़के घोड़ों का खेल खेलते हुए भाग रहे हैं। सेर्योझा!

मैं सब कुछ खो दूंगी और उसे वापस नहीं ला सकूंगी। हां, अगर वह लौटा नहीं, तो सब कुछ खो दूंगी। हो सकता है कि वह गाड़ी न पकड़ पाया हो और अब तक लौट आया हो। फिर से अपना अपमान चाहती हो!" उसने अपने आपसे कहा। "नहीं, मैं डौली के यहां जाऊंगी और उससे साफ़ ही कह दूंगी – मैं बहुत दुखी हूं, मैं इसी के लायक़ हूं, फिर भी मैं बहुत दुखी हूं, मेरी सहायता करो। ये घोड़े, यह बग्घी – इस बग्घी में मैं अपने को कितना बुरा महसूस कर रही हूं – सब कुछ उसका है, लेकिन मैं इन्हें फिर नहीं देखूंगी।"

उन शब्दों को सोचते हुए, जो वह डौली से कहेगी और मन ही मन अपने अन्दर और अधिक झुंझलाहट लाते हुए आन्ना सीढ़ियां चढ़ गयी।

"मालकिन के पास कोई है क्या?" ड्योढ़ी में उसने नौकर से पूछा।

"येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना लेविना," नौकर ने जवाब दिया।

"कीटी! वही कीटी, जिसे व्रोन्स्की से प्रेम था," आन्ना ने सोचा। "वही, जिसे प्यार से याद करता था। उसे इस बात का पछतावा होता है कि उसने कीटी से शादी नहीं की। मगर मुझे घृणा से स्मरण करता है और उसे पछतावा है कि उसने मेरे साथ नाता जोड़ लिया।"

आन्ना जिस समय यहां पहुंची, तो दोनों बहनों के बीच बच्चे को दूध पिलाने के बारे में बातचीत हो रही थी। बातचीत में बाधा डाल देनेवाली आन्ना के स्वागत को डौली अकेली ही बाहर आयी।

"तुम अभी तक नहीं गयीं? मैं तो ख़ुद तुम्हारे यहां जाने की सोच रही थी – आज मेरे पास स्तीवा का पत्र आया है।"

"हमें भी उसका तार मिला है," आन्ना ने कीटी को देख पाने के लिये इधर-उधर नज़र दौड़ाते हुए जवाब दिया।

"उसने लिखा है कि समझ नहीं पा रहा है कि अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच क्या चाहता है, मगर वह उससे जवाब लिये बिना नहीं आयेगा।"

"मैंने सोचा था कि तुम्हारे यहां कोई है। मैं ख़त पढ़ सकती हूं?"

"हां, कीटी है," डौली ने झेंपते हुए उत्तर दिया। "वह बच्चों के कमरे में रह गयी है। वह बहुत बीमार रही है।"

"मैंने सुना था। ख़त पढ़ सकती हूं?"

"मैं अभी लाती हूं। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच तलाक़ देने से इन्कार नहीं कर रहा है, इसके विपरीत स्तीवा ऐसा हो जाने की आशा कर रहा है," डौली ने दरवाज़े में रुकते हुए कहा।

"मुझे आशा नहीं है और चाहती भी नहीं हूं," आन्ना ने कहा।

"क्या कीटी मुझसे मिलना अपने लिये अपमानजनक मानती है?" अकेली रह जाने पर आन्ना सोचने लगी। "शायद उसका ऐसा करना ठीक ही है। लेकिन उसे, जो व्रोन्स्की को प्यार करती थी, उसे तो मुझे इस चीज़ का आभास नहीं देना चाहिये, यद्यपि यह सचाई है। मैं जानती हूं कि मेरी वर्तमान स्थिति में सम्मान-प्रतिष्ठा वाली कोई भी औरत मुझसे मिलना पसन्द नहीं करेगी। मैं जानती हूं कि पहले ही क्षण में मैंने उसके लिये अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया! और यह है इसका इनाम! ओह, कितनी नफ़रत करती हूं मैं उससे। और किसलिये मैं यहां आयी हूं? मेरी मानसिक दशा और भी ख़राब हो गयी है, मन और भी भारी हो गया है।" उसे दूसरे कमरे से बहनों की बातचीत की आवाज़ सुनाई दी। "और अब मैं डौली से क्या कहूंगी? कीटी को इस बात से ख़ुश होने दूं कि मैं बहुत दुखी हूं, अपने प्रति उसकी दया-सहानुभूति के लिये आभार मानूं? नहीं, और डौली भी कुछ नहीं समझ पायेगी। और उससे कहने के लिये मेरे पास कुछ है भी नहीं। हां, कीटी से मिलना और उसे यह दिखा देना दिलचस्प होगा कि मैं सभी को और हर चीज़ को तिरस्कार से देखती हूं, कि मेरे लिये अब किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।"

डौली पत्र लिये हुए आई। आन्ना ने उसे पढ़कर चुपचाप लौटा दिया।

"मैं यह सब कुछ पहले से ही जानती थी," उसने कहा, "और मुझे इसमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं।"

"भला ऐसा क्यों? इसके उलट, मैं तो आशा कर रही हूं," डौली ने जिज्ञासा से आन्ना को देखते हुए कहा। उसने उसे कभी भी ऐसी अजीब और खिन्नता की स्थिति में नहीं देखा था। "तुम कब जा रही हो?" डौली ने पूछा।

आन्ना ने आंखें सिकोड़ीं, अपने सामने की ओर देखा और डौली को कोई उत्तर नहीं दिया।

"कीटी क्यों मुझसे छिप रही है?" आन्ना ने दरवाज़े की ओर देखते हुए पूछा और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी।

"अरे, कैसी बात कर रही हो! वह बच्चे को दूध पिला रही है और उससे यह हो नहीं पा रहा है। मैंने उसे सलाह दी है... वह बहुत खुश है। वह अभी आ जायेगी," डौली ने, जो झूठ बोलने की कला नहीं जानती थी, अटपटे ढंग से कहा। "लो, वह आ गयी।"

यह मालूम होने पर कि आन्ना आयी है, कीटी ने उसके सामने नहीं आना चाहा, मगर डौली ने उसे राज़ी कर लिया। किसी तरह से मन कड़ा करके कीटी बाहर आयी और लज्जारुण होते हुए उसके निकट जाकर हाथ मिलाया।

"मुझे बहुत खुशी है," कीटी ने कांपती आवाज़ में कहा।

कीटी उस संघर्ष से परेशान थी, जो इस बुरी औरत के प्रति शत्रुभाव और उसके साथ दयालुता से पेश आने की इच्छा के कारण उसके मन में हो रहा था। किन्तु सुन्दर और प्यारा चेहरा देखते ही कीटी का शत्रुभाव छूमन्तर हो गया।

"अगर आप मुझसे मिलना न चाहतीं, तो मुझे इससे भी कोई हैरानी न होती। मैं हर चीज़ की आदी हो गयी हूं। आप बीमार थीं न? हां, आपमें परिवर्तन हो गया है," आन्ना ने कहा।

कीटी ने अनुभव किया कि आन्ना उसकी ओर शत्रुता से देख रही है। कीटी ने इस शत्रुता का कारण उस अटपटी स्थिति को माना, जिसमें कभी उसकी सरपरस्ती करनेवाली आन्ना अब अपने को अनुभव कर रही थी और उसे उस पर दया आयी।

इन्होंने बीमारी, बच्चे और स्तीवा के बारे में बातचीत की, मगर आन्ना ने स्पष्टतः किसी चीज़ में दिलचस्पी नहीं ली।

"मैं तुमसे विदा लेने आयी हूं," आन्ना ने उठते हुए कहा।

"आप लोग कब जा रहे हैं?"

किन्तु आन्ना ने फिर से इस प्रश्न का उत्तर न देकर कीटी को सम्बोधित किया।

"मुझे बहुत खुशी है कि आपसे भेंट हो गयी," उसने मुस्कराकर कहा। "आपके बारे में मैं बहुत-से लोगों, यहां तक कि आपके पति से भी बहुत कुछ सुनती रही हूं। आपके पति मेरे यहां आये थे और

वे मुझे बहुत अच्छे लगे," स्पष्टतः दुर्भावना से उसने यह भी जोड़ दिया। "वे कहां हैं?"

"गांव चले गये," कीटी ने शर्माकर लाल होते हुए जवाब दिया।

"उन्हें मेरा प्रणाम कहिये, अवश्य ही कहिये।"

"अवश्य कह दूंगी!" कीटी ने सहानुभूति से आन्ना की आंखों में झांकते हुए भोलेपन से दोहराया।

"तो विदा, डौली!" डौली को चूमने और कीटी से हाथ मिलाने के बाद आन्ना जल्दी से बाहर चली गयी।

"बिल्कुल वैसी ही और उसी तरह से आकर्षक है। बहुत ही सुन्दर है!" डौली के साथ अकेली रह जाने पर कीटी ने कहा। "किन्तु उसमें कुछ दयनीय है! बहुत ही दयनीय!"

"हां, आज तो उसमें कुछ ख़ास बात थी," डौली ने कहा। "जब मैं उसे बाहर छोड़ने जा रही थी, तो मुझे लगा कि वह रोना चाहती है।"

(२९)

घर से चलने के वक़्त आन्ना जिस बुरे मूड में थी, अब उससे ज़्यादा बुरे मूड में बग्घी में आकर बैठी। पहले की यातनाओं में अब कीटी से भेंट होने पर स्पष्ट रूप से अनुभूत तिरस्कार और समाज-बहिष्कृत होने की भावना भी जुड़ गयी थी।

"कहां चलने का हुक्म है? घर?" प्योत्र ने पूछा।

"हां, घर," आन्ना ने अब यह सोचे बिना ही कि उसे किधर जाना है, उत्तर दे दिया।

"कैसे वे मेरी ओर देख रही थीं – एक भयानक, अनबूझ और अजीब-से व्यक्ति की तरह। भला यह आदमी दूसरे को इतने उत्साह से क्या बता सकता है?" पैदल जा रहे दो व्यक्तियों की ओर देखते हुए आन्ना ने सोचा। "आदमी जो कुछ ख़ुद महसूस करता है, क्या दूसरे को बता सकता है? मैं डौली को अपने दिल का हाल बताना चाहती थी और अच्छा ही हुआ कि नहीं बताया। कितनी ख़ुश हुई होती वह मेरे दुख-दर्द से! उसने मुझसे अपनी ख़ुशी को छिपाया होता, मगर उसे मुख्यतः इस बात के लिये ख़ुशी हुई होती कि मुझे उन मौजों और मज़ों के लिये दण्ड मिल गया, जिनके कारण वह मुझसे

ईर्ष्या करती थी। कीटी – वह तो और भी ज़्यादा ख़ुश हुई होती। कैसे मैं उसे आर-पार देख रही हूं! उसे मालूम है कि मैं उसके पति के साथ सामान्य से कहीं अधिक अच्छी तरह पेश आयी थी। और वह मुझसे जलती तथा घृणा करती है। मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देखती है। उसकी नज़रों में मैं एक बदचलन औरत हूं। अगर मैं पतिता होती, तो उसके पति को अपने प्रेम-जाल में फांस सकती थी... अगर ऐसा चाहती। हां, मैं चाहती भी थी। देखो, यह अपने आपमें ही मस्त-ख़ुश है," आन्ना ने सामने से बग्घी में आते हुए एक मोटे और लाल-लाल गालों वाले महानुभाव को देखकर सोचा, जिसने यह समझते हुए कि वह आन्ना से परिचित है, अपनी गंजी, चमकती चांद पर चमकता हुआ टोप ऊपर उठाकर अभिवादन किया और बाद में समझ गया कि उससे भूल हुई है। "उसने सोचा कि मुझे जानता है, मगर वह भी मुझे उतना ही कम जानता है, जितना कि इस दुनिया में कोई मुझे जान सकता है। मैं ख़ुद भी अपने को नहीं जानती। जैसा कि फ़्रांसीसी लोग कहते हैं, मैं अपनी भूखों को जानती हूं। यह देखिये, इनका गन्दी आईसक्रीम खाने को मन हो रहा है। इतना तो ये जानते ही होंगे," आन्ना ने दो लड़कों की ओर देखते हुए सोचा। इन लड़कों ने आईसक्रीम बेचनेवाले को रोका था, जो अपने सिर पर से आईस-क्रीम का बक्स उतार कर तौलिये के छोर से माथे का पसीना पोंछ रहा था। "हम सभी कुछ मीठा, कुछ ज़ायक़ेदार चाहते हैं। टॉफ़ी नहीं, तो गन्दी आईसक्रीम ही सही। कीटी का भी यही हाल है – व्रोन्स्की नहीं, तो लेविन सही। और वह मुझसे ईर्ष्या करती है, घृणा करती है। हम सभी एक-दूसरे से घृणा करते हैं। मैं कीटी से, कीटी मुझसे। यह बिल्कुल सच है। त्यूत्किन coiffeur. Je me fais coiffer par त्यूत्किन...* जब वह घर आयेगा, तो मैं उससे यह कहूंगी," उसने सोचा और मुस्करा दी। किन्तु इसी क्षण उसे याद आ गया कि अब कोई ऐसा नहीं है, जिससे वह हंसी-मज़ाक़ की बात कह सके। "और हंसने-हंसाने तथा दिल ख़ुश करनेवाली कोई बात है भी नहीं। सब कुछ बहुत घिनौना है। सन्ध्या-प्रार्थना के घण्टे बज

* केश-विन्यासकर्त्ता। मैं त्यूत्किन के यहां केश-विन्यास करवाती हूं। (फ़्रांसीसी)

रहे हैं और यह व्यापारी कितनी सावधानी से अपने ऊपर सलीब का निशान बना रहा है मानो डरता हो कि उसके हाथ से कहीं कुछ गिर न जाये। किसलिये हैं ये गिरजाघर, ये घण्टे और यह भूठ? सिर्फ़ इसलिये कि हम इस बात पर पर्दा डाल सकें कि सभी एक-दूसरे से इन कोचवानों की तरह ही नफ़रत करते हैं, जो ग़ुस्से से आपस में गाली-गलौज कर रहे हैं। याश्विन कहता है कि उसके साथ जुआ खेलनेवाला उसकी क़मीज़ तक उतरवा लेना चाहता है और वह उसकी। यही सचाई है!"

आन्ना इसी तरह के विचारों में इतनी खो गयी कि उसे अपनी स्थिति के बारे में सोचने का भी ध्यान नहीं रहा और बग्घी घर के दरवाज़े के सामने जाकर रुक गयी। बग्घी का दरवाज़ा खोलने के लिये दरबान के आने पर ही उसे याद आया कि उसने व्रोन्स्की के नाम रुक़्क़ा और तार भेजा था।

"कोई जवाब आया?" आन्ना ने दरबान से पूछा।

"अभी देखता हूं," दरबान ने उत्तर दिया और ड्योढ़ी में रखी मेज़ पर से तार का छोटा-सा चौकोर लिफ़ाफ़ा उठाकर उसे दे दिया। "मैं रात के दस बजे से पहले नहीं लौट सकता। व्रोन्स्की," आन्ना ने पढ़ा।

"सन्देशवाहक नहीं लौटा?"

"जी नहीं," दरबान ने जवाब दिया।

"अगर ऐसी बात है, तो मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना चाहिये," उसने अपने आपसे कहा और अपने भीतर अस्पष्ट क्रोध तथा प्रतिशोध लेने की उमड़ती भावना को अनुभव करते हुए तेज़ी से ऊपर भाग गयी। "मैं ख़ुद उसके पास जाऊंगी। हमेशा के लिये अलग होने के पहले मैं उससे सब कुछ कह दूंगी। इतनी नफ़रत मुझे कभी किसी से नहीं थी, जितनी इस आदमी से!" वह सोच रही थी। खूंटी पर व्रोन्स्की का टोप देखकर वह घृणा से कांप उठी। उसे यह ध्यान नहीं आया कि व्रोन्स्की का तार उसके अपने तार के जवाब में आया था और उसका रुक़्क़ा उसे अभी तक नहीं मिला। वह कल्पना कर रही थी कि इस समय व्रोन्स्की इतमीनान से बैठा हुआ अपनी मां और सोरोकिना से बातें कर रहा होगा और उसकी व्यथा-वेदना से ख़ुशी हासिल कर रहा होगा। "हां, जल्दी से जाना चाहिये,"

उसने अपने आपसे कहा, यद्यपि यह नहीं जानती थी कि कहां जाये। वह जल्दी से जल्दी उन भावनाओं से दूर हो जाना चाहती थी, जिनकी इस भयानक घर में उसे अनुभूति होती थी। नौकर-चाकर, दीवारें और इस घर की चीज़ें – सभी कुछ उसमें नफ़रत और ग़ुस्सा पैदा करता था तथा भारी बोझ-सा बनकर उसके दिल को दबाता था।

"हां, रेलवे स्टेशन पर जाना चाहिये और अगर वहां मुलाक़ात न हो, तो वहीं पहुंचकर उसका भंडाफोड़ करना चाहिये।" आन्ना ने अख़बार में रेल-गाड़ियों की समय-सारणी देखी। रात को आठ बजकर दो मिनट पर एक गाड़ी छूटती है। "हां, मैं यह गाड़ी पकड़ सकती हूं।" उसने बग्घी में दूसरे घोड़े जोतने का आदेश दिया और एक सफ़री थैले में कुछ दिनों के लिये ज़रूरी चीज़ें रखने लगी। वह जानती थी कि अब कभी यहां वापस नहीं लौटेगी। उसने अपने दिमाग़ में आनेवाली योजनाओं में इस चीज़ को भी अस्पष्ट रूप से तय कर लिया कि रेलवे स्टेशन या काउंटेस के घर पर जो कुछ होगा, उसके बाद वह निजेगोरोद्स्की रेलवे-मार्ग से किसी भी पहले शहर तक जाकर वहीं रुक जायेगी।

शाम का खाना मेज़ पर लगा हुआ था। वह मेज़ के क़रीब गयी, डबल रोटी और पनीर की गंध ली और यह विश्वास हो जाने पर कि खाने-पीने की हर चीज़ की गंध उसे बुरी लगती है, उसने बग्घी को दरवाज़े पर लाने का आदेश दिया और बाहर निकली। घर की परछाईं सारी सड़क पर फैल रही थी, साफ़ और अभी तक धूप से तपी हुई शाम थी। चीज़ें लानेवाली आन्नुश्का, चीज़ों को बग्घी में रखनेवाला प्योत्र और कोचवान, जो स्पष्टतः अप्रसन्न था – आन्ना को सभी कुछ बुरा लग रहा था और ये सभी अपने शब्दों तथा गतिविधियों से उसमें झल्लाहट पैदा कर रहे थे।

"मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है, प्योत्र।"

"टिकट कौन ख़रीदेगा?"

"ख़ैर, जैसा चाहो, मेरे लिये सब बराबर है," आन्ना ने झल्लाहट से जवाब दिया।

प्योत्र कूदकर कोच पर चढ़ गया और कमर पर हाथ रखते हुए उसने कोचवान को स्टेशन की तरफ़ चलने का आदेश दिया।

"लो, फिर से मैं वहीं आ गयी। फिर से मैं सब कुछ समझ रही हूं," बग्घी जैसे ही चली और छोटे-छोटे खड़ंजों पर हल्के-हल्के डोलती हुई खड़-खड़ करने लगी, तो आन्ना ने अपने आपसे कहा। और उसके मन पर एक के बाद एक पड़नेवाली छापें बदलने लगीं।

"हां, सब से आख़िर में मैं कौन-सी अच्छी बात के बारे में सोच रही थी?" उसने याद करने की कोशिश की। "त्यूत्किन, coiffeur? नहीं, उसके बारे में नहीं। हां, उसके बारे में, जो याश्विन कहता है – अस्तित्व का संघर्ष और घृणा – बस, यही लोगों को सूत्रबद्ध करता है। नहीं, बेकार ही आप लोग जा रहे हैं," उसने चार घोड़ों वाली बग्घी में जाते लोगों को मन ही मन सम्बोधित किया, जो स्पष्टतः मनोरंजन के लिये नगर के बाहर जा रहे थे। "और वह कुत्ता, जो आप अपने साथ ले जा रहे हैं, उससे भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। अपने से तो दूर नहीं भाग सकेंगे।" प्योत्र ने जिस तरफ़ मुंह फेर लिया था, उस तरफ़ नज़र दौड़ाने पर उसे नशे में लगभग बेहोश एक मज़दूर दिखाई दिया, जिसका सिर लटका हुआ था और जिसे पुलिस वाला कहीं लिये जा रहा था। "शायद यही अधिक ठीक है," आन्ना ने सोचा, "काउंट व्रोन्स्की और मुझे यह आनन्द प्राप्त नहीं हुआ, यद्यपि हम इससे बहुत कुछ की आशा कर रहे थे।" और आन्ना ने पहली बार वह प्रखर प्रकाश, जिसकी चमक में वह सब कुछ देख पाती थी, उसके साथ अपने सम्बन्धों की ओर घुमाया, जिनके बारे में वह पहले सोचने से कतराया करती थी। "किस चीज़ की तलाश थी उसे मुझमें? इतनी प्यार की नहीं, जितनी अहं-भाव की तुष्टि की।" उसे व्रोन्स्की के साथ अपने सम्बन्ध के पहले समय में उसके शब्दों, उसके चेहरे के भाव की याद हो आयी, जो इशारों पर नाचने वाले कुत्ते का स्मरण करवाता था। और अब हर चीज़ इसकी पुष्टि करती थी। "हां, अहंभाव की तुष्टि ही उसके लिये सबसे अधिक महत्त्व रखती थी। ज़ाहिर है कि प्यार भी था, मगर अधिकतर तो अपनी सफलता का गर्व ही था। वह मुझे लेकर अपनी डींग मारता था। अब यह ख़त्म हो गया। गर्व करने को कुछ नहीं रहा। गर्व की बात नहीं, शर्म की बात रह गयी। मुझसे जो

कुछ ले सकता था, उसने वह ले लिया और अब उसे मेरी ज़रूरत नहीं रही। वह मुझसे ऊब गया है और मेरे मामले में छल-कपट न करने का प्रयास करता है। कल उसने कह ही तो दिया था – चाहता है कि मुझे तलाक़ मिल जाये, वह मुझसे शादी कर ले और ऐसे पूरी तरह अपने को मेरे साथ बांध ले। वह मुझे प्यार करता है – मगर कैसे? The zest is gone.* यह हज़रत भी सभी को हैरान करना चाहता है और अपने मन में बेहद ख़ुश है," आन्ना ने किराये के घोड़े पर सवार लाल गालों वालों एक कारिन्दे को देखकर मन में सोचा। "हां, उसके लिये अब मुझमें वह मज़ा नहीं रहा। अगर मैं उसे छोड़कर चली जाऊं, तो दिल की गहराई में उसे ख़ुशी ही होगी।"

यह अनुमान ही नहीं था – आन्ना उस बींधती हुई रोशनी में, जिसने अब उसके लिये जीवन का अर्थ और लोगों के सम्बन्ध स्पष्ट कर दिये थे, इस बात को बिल्कुल साफ़ तौर पर देख रही थी।

"मेरा प्यार अधिकाधिक प्रबल और प्रतिदान की मांग करने वाला होता जा रहा है, जब कि उसका प्रेम अधिकाधिक ठण्डा पड़ता जा रहा है और यही हमारे एक-दूसरे से दूर होते जाने का कारण है," वह सोचती जा रही थी। "और इस मामले में किया कुछ भी नहीं जा सकता। मेरे लिये तो वही सब कुछ है और मैं यह मांग करती हूं कि वह भी अधिकाधिक मेरा होता जाये। मगर वह मुझसे अधिकाधिक दूर होना चाहता है। हमारे बीच सम्बन्ध स्थापित होने तक हम एक-दूसरे की ओर बढ़े, किन्तु उसके बाद रुके बिना अलग-अलग दिशाओं में जाने लगे। और इस स्थिति को बदलना सम्भव नहीं। वह मुझसे कहता है कि मैं पागलों की तरह जलती हूं, ख़ुद मैं भी अपने से यही कहती रही हूं कि मैं व्यर्थ ही जलती हूं, किन्तु यह सच नहीं। मैं जलती नहीं हूं, मगर मैं नाख़ुश हूं। लेकिन ..." उसके दिमाग़ में अचानक आ जानेवाले विचार से वह इतनी विह्वल हो उठी कि उसने मुंह खोलकर सांस ली और बग्घी में अपनी जगह बदल ली। "काश कि मैं उसकी प्रेयसी के सिवा, जो जी-जान से केवल उसका प्यार ही चाहती है, कुछ भी और हो सकती! किन्तु

---

*उछाह जाता रहा है। (अंग्रेज़ी)

मैं न तो कुछ और हो सकती हूं और न होना ही चाहती हूं। अपनी इस इच्छा से मैं उसमें घृणा उपजाती हूं और वह मुझमें क्रोध। इसके सिवा कुछ हो ही नहीं सकता। क्या मैं यह नहीं जानती कि वह मुझे धोखा नहीं देगा, कि सोरोकिना से शादी करने का उसका कोई इरादा नहीं है, कि वह कीटी को प्यार नहीं करता है, कि मेरे साथ बेवफ़ाई नहीं करेगा? मैं यह सब कुछ जानती हूं, मगर इससे मुझे कुछ चैन नहीं मिलता। अगर वह मुझसे प्यार न करते हुए, कर्त्तव्य पूर्ति के लिये मेरे प्रति दयालु और स्नेहशील होगा, यदि वह नहीं होगा, जो मैं चाहती हूं – तो यह नफ़रत से भी हज़ार गुना बुरी चीज़ होगी! यह जहन्नुम होगा! और वास्तव में वही तो है। वह अर्से से मुझको प्यार नहीं करता। जहां प्यार ख़त्म हो जाता है, नफ़रत शुरू हो जाती है। इन गलियों-कूचों को मैं बिल्कुल नहीं जानती। टीले-से, और घर ही घर हैं... घरों में लोग ही लोग हैं... कितने हैं वे, कोई अन्त नहीं उनका और सभी एक-दूसरे से घृणा करते हैं। चलो, मैं इसकी कल्पना करती हूं कि सुखी होने के लिये मैं क्या चाहती हूं। तो? मान लो कि मुझे तलाक़ मिल जाता है, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच मुझे सेर्योझा दे देता है और मैं व्रोन्स्की से शादी कर लेती हूं।" कारेनिन का ध्यान आते ही असाधारण सजीवता से, बिल्कुल जीता-जागता सा वह उसकी मन की आंखों के सामने आ गया। उसे उसकी विनम्र, निर्जीव और बुझी-बुझी आंखें और गोरे हाथों की उभरी हुई नीली नसें दिखाई दीं, उसके बातचीत के लहजे और उसकी उंगलियों का चटखना सुनाई दिया और उस भावना को याद करके, जो उन दोनों के बीच थी और जिसे भी प्रेम की संज्ञा दी जाती थी, वह घृणा से सिहर उठी। "तो मुझे तलाक़ मिल जायेगा और मैं व्रोन्स्की की बीवी बन जाऊंगी। तो क्या तब कीटी मेरी ओर वैसे नहीं देखेगी, जैसे आज देखती रही थी? नहीं, वह ऐसे ही देखेगी। और क्या सेर्योझा मेरे दो पतियों के बारे में सवाल करना या सोचना बन्द कर देगा? और अपने तथा व्रोन्स्की के बीच मैं किस नयी भावना की कल्पना कर सकती हूं? सुख तो एक तरफ़, क्या इतना भी सम्भव है कि यातना न रहे? नहीं, नहीं!" आन्ना ने किसी भी तरह की दुविधा के बिना अपने को उत्तर दिया। "ऐसा सम्भव नहीं! जीवन हमें अलग कर

रहा है, मैं उसका दुर्भाग्य और वह मेरा दुर्भाग्य बन रहा है और न तो उसे तथा न ही मुझे बदलना सम्भव है। सभी कोशिशें करके देख ली गयीं, पेच बुरी तरह से कसा जा चुका है। हां, बच्चे के साथ भिखारिन। वह सोचती है कि लोगों को उस पर दया आती है। क्या हम सभी को इसलिये इस दुनिया में नहीं फेंका गया है कि हम एक-दूसरे से नफ़रत करें और फिर दूसरों को यातना दें? स्कूल के छात्र आ रहे हैं, हंस रहे हैं। सेर्योझा?" उसे बेटे की याद आ गयी। "मैं भी सोचती थी कि उसे प्यार करती हूं और उसके प्रति अपने प्यार से द्रवित हो उठती थी। मगर उसके बिना भी मैं जीती तो रही, इसके प्यार से मैंने उसे बदल लिया और जब तक इस प्यार से सन्तुष्ट रही, तब तक मैंने कोई शिकवा-शिकायत नहीं की।" और उसने घृणा से "इस प्यार" को स्मरण किया। और जिस स्पष्टता से अब वह अपनी और दूसरे लोगों की ज़िन्दगी देख पा रही थी; उससे उसे ख़ुशी हुई। "तो ऐसा ही हाल है मेरा, प्योत्र का, कोचवान फ़्योदोर का, इस व्यापारी का और उन सभी लोगों का भी, जो वोल्गा के तटवर्ती क्षेत्रों में रहते हैं और जहां जाने का ये विज्ञापन निमन्त्रण दे रहे हैं, सभी जगह और हमेशा यही बात सही रही है," आन्ना सोच रही थी, जब बग्घी निजेगोरोद्स्की रेलवे स्टेशन की कम ऊंची इमारत के सामने पहुंच गयी और कुली उसकी तरफ़ लपके।

"ओबिरालोव्का तक का टिकट ले आऊं न?" प्योत्र ने पूछा।

आन्ना बिल्कुल भूल ही गयी थी कि वह कहां और किसलिये जा रही है तथा बड़ी मुश्किल से ही इस प्रश्न को समझ पायी।

"हां," उसने नौकर को बटुआ देते हुए कहा और छोटा-सा लाल थैला लिये हुए बग्घी से उतरी।

भीड़ में से पहले दर्जे के प्रतीक्षालय की ओर जाते हुए उसे धीरे-धीरे अपनी स्थिति की सभी तफ़सीलें और वे निर्णय याद आये, जिनके बारे में उसके मन में दुविधा थी। और फिर से कभी आशा तो कभी हताशा उसके बुरी तरह व्यथित और धड़कते हुए दिल के घावों को छीलने और उन पर नमक छिड़कने लगीं। गाड़ी की प्रतीक्षा में तारे जैसी शक्लवाले सोफ़े पर बैठी और भीतर आते तथा बाहर जाते लोगों को घृणा से देखते हुए (उसे वे सभी बुरे लग रहे थे) आन्ना

यह सोच रही थी कि कैसे वह स्टेशन पर पहुंचेगी, उसे रुक़्क़ा लिख भेजेगी और उसमें क्या लिखेगी, कि कैसे अब वह (उसकी यानी आन्ना की व्यथा को न समझते हुए) मां से अपनी स्थिति के बारे में शिकायत करता है, कैसे वह कमरे में जायेगी और उससे क्या कहेगी। कभी वह यह सोचती कि कैसे अभी भी जीवन सुखी हो सकता था, कितनी यातना है उसके लिये उसे प्यार और घृणा करना तथा कितने ज़ोर से उसका दिल धड़क रहा है।

(३१)

स्टेशन की घण्टी बजी, कुछ जवान, बदसूरत, बदतमीज़ और उतावले लोग, मगर जो साथ ही अपने द्वारा पैदा किये जा रहे प्रभाव के प्रति सजग थे, पास से गुज़रे। वर्दी और बूट पहने पशुओं जैसे भोंदू-से चेहरेवाला प्योत्र प्रतीक्षालय को लांघता हुआ उसके पास आया, ताकि उसे गाड़ी के डिब्बे तक पहुंचा आये। आन्ना जब प्लेटफ़ार्म पर शोर मचा रहे जवान लोगों के पास से गुज़री, तो वे ख़ामोश हो गये और एक ने फुसफुसाकर दूसरे के कान में कुछ कहा। ज़ाहिर है कि उसने कोई गन्दी बात कही होगी। ऊंचे पायदान पर चढ़कर आन्ना स्प्रिंगदार, धब्बों से गन्दे हुए सोफ़े पर, जो कभी सफ़ेद रहा होगा, बैठ गयी। डिब्बे में वह अकेली ही थी। थैला स्प्रिंग पर हिला-डुला और लेट गया। प्योत्र ने बुद्धू की तरह मुस्कराते हुए खिड़की के पास आकर सुनहरे फ़ीतेवाला अपना टोप ऊपर उठाया और ऐसे विदा ली, बेहूदा कंडक्टर ने फटाक से दरवाज़ा बन्द किया और हेंडल घुमा दिया। कमानीदार घाघरा पहने एक बदसूरत महिला (आन्ना ने मन ही मन उसे नंगा कर दिया और उसकी बदसूरती से स्तम्भित रह गयी) और बनावटी ढंग से हंसती हुई एक लड़की खिड़की के पास से भागती हुई गुज़रीं।

"कातेरीना अन्द्रेयेव्ना के पास, सब कुछ उसके पास है, ma tante!*" लड़की ने चिल्लाकर कहा।

"लड़की भी मानसिक दृष्टि से अपंग हो चुकी है और उसमें बड़ा बनावटीपन है," आन्ना ने सोचा। इस इच्छा से कि वह किसी

*मौसी। (फ़्रांसीसी)

को न देखे, आन्ना झटपट उठी और ख़ाली डिब्बे की सामनेवाली खिड़की के पास जा बैठी। छज्जेदार टोपी पहने, जिसके नीचे से उलझे-उलझाये बाल बाहर निकले हुए थे, एक गन्दा-मन्दा और भद्दी-सी सूरत वाला देहाती डिब्बे के पहियों की ओर झुकता हुआ खिड़की के पास से गुज़रा। "इस घिनौने-से देहाती में कुछ जाना-पहचाना-सा लगता है," आन्ना ने सोचा। और अपना स्वप्न याद आने पर वह भय से कांपती हुई सामनेवाले दरवाज़े की तरफ़ हट गयी। इसी समय कंडक्टर ने दरवाज़ा खोला, ताकि एक दम्पति भीतर आ सकें।

"आप बाहर जाना चाहती हैं क्या?"

आन्ना ने कोई उत्तर नहीं दिया। चूंकि उसका चेहरा जाली से ढका हुआ था, इसलिये कंडक्टर और डिब्बे में आनेवाला जोड़ा उसके चेहरे पर उड़ रही हवाइयों को नहीं देख सके। वह अपने कोने में आकर बैठ गयी। जोड़ा छिपे-छिपे, किन्तु ध्यान से उसकी पोशाक को देखते हुए उसके सामने बैठ गया। आन्ना को पति और पत्नी – दोनों ही बहुत बुरे लग रहे थे। पति ने आन्ना से पूछा कि उसके सिगरेट पीने पर उसे कोई आपत्ति तो नहीं। उसने स्पष्टतः सिगरेट पीने के लिये नहीं, बल्कि उससे बात करने के लिये यह प्रश्न किया था। आन्ना की अनुमति पाकर वह फ़्रांसीसी में अपनी पत्नी से ऐसी बातों की चर्चा करने लगा, जिनकी वह धूम्रपान से भी कम चर्चा करना चाहता था। वे केवल इसलिये सभी तरह की बेहूदी बातें कर रहे थे कि आन्ना सुन सके। आन्ना स्पष्ट रूप से यह देख रही थी कि कैसे वे एक-दूसरे से ऊब चुके हैं और एक-दूसरे से नफ़रत करते हैं। और ऐसे दयनीय घिनौने लोगों से घृणा न करना सम्भव नहीं था।

दूसरी घण्टी बजी और उसके साथ ही सामान लादा जाने लगा, शोर, चीख़-चिल्लाहट और ठहाके सुनाई दिये। आन्ना को बिल्कुल स्पष्ट था कि किसी के लिये किसी कारण हंसने की कोई बात नहीं थी, इसलिये इस हंसी ने उसे पीड़ा देने की सीमा तक चिढ़ा दिया और उसने चाहा कि कानों में उंगलियां ठूंस ले, ताकि उसे यह हंसी सुनाई न दे। आख़िर तीसरी घण्टी बजी, गार्ड की सीटी और इंजन की चीख़ गूंजी, डिब्बों के बीच की ज़ंजीरें झनझनायीं और पति ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "इससे यह पूछना दिलचस्प

होगा कि ऐसा करने से उसका क्या अभिप्राय है," ग़ुस्से से उसकी तरफ़ देखते हुए आन्ना ने सोचा। उसने महिला के पीछे खिड़की में से विदा करने के लिये आये हुए प्लेटफ़ार्म पर खड़े लोगों की ओर देखा, जो मानो पीछे की तरफ़ लुढ़कते-से प्रतीत हो रहे थे। पटरियों के जोड़ों पर बंधी लय में झटका खाता हुआ वह डिब्बा, जिसमें आन्ना बैठी थी, प्लेटफ़ार्म, पत्थर की दीवारों, सिगनलों और दूसरे डिब्बों के पास से गुज़रा। पहिये लाइनों पर अधिक लयबद्ध आवाज़ करते हुए चलने लगे, सन्ध्याकालीन सूरज की प्रखर रोशनी से खिड़की चमचमा उठी और हल्की-हल्की हवा से पर्दे हिलने लगे। आन्ना अपने पास बैठे लोगों के बारे में भूल गयी, गाड़ी की गति के साथ धीरे-धीरे डोलती और ताज़ा हवा में सांस लेती हुई फिर से अपने विचारों में खो गयी –

"हां, तो मैं किस बात पर रुकी थी? इस बात पर कि मैं ऐसी स्थिति की कल्पना नहीं कर सकती, जिसमें जीवन यातना न हो, कि हम सभी यातनायें सहने के लिये बने हैं, कि हम सभी यह जानते हैं और मानो सभी अपने को धोखा देने के साधन ढूंढ़ते रहते हैं। लेकिन जब सचाई नज़र आ जाये, तो क्या किया जाये?"

"मनुष्य को इसीलिये समझ-बूझ दी गयी है कि जो कुछ उसे परेशान करता है, उससे मुक्ति पा ले," सामने बैठी महिला ने फ़्रांसीसी में कहा और वह स्पष्टतः अपने वाक्य से ख़ुश होकर मुंह बना रही थी।

ये शब्द मानो आन्ना के मनोभाव का उत्तर थे।

"जो कुछ परेशान करता है, उससे मुक्ति पा ले," आन्ना ने इन शब्दों को दोहराया। और लाल-लाल गालों वाले पति तथा दुबली-पतली पत्नी को देखकर वह समझ गयी कि बीमार-सी पत्नी अपने को रहस्यमय समझती है और पति उसे धोखा देता हुआ अपने बारे में पत्नी के इस विचार को प्रोत्साहन देता है। आन्ना उन पर प्रकाश केन्द्रित करके मानो उनके जीवन की सारी कहानी और उनकी आत्मा के गुप्त स्थानों को देख पा रही थी। मगर इसमें कोई दिलचस्प बात नहीं थी और इसलिये वह अपने ख़्याल के सिलसिले को आगे बढ़ती गयी।

"हां, मैं बेहद परेशान हूं और इसीलिये तो समझ-बूझ दी गयी है कि मुक्ति पा ली जाये। मतलब यह कि मुक्ति पा ली जानी चाहिये। जब देखने को कुछ न रह जाये, जब सभी कुछ को देखने से घिन आये,

तो मोमबत्ती को बुझा क्यों न दिया जाये? किन्तु कैसे? यह कंडक्टर पायदान पर भागता हुआ क्यों गया है, उस डिब्बे में वे जवान लोग चिल्ला क्यों रहे हैं? वे बातें क्यों कर रहे हैं, हंस क्यों रहे हैं? कुछ भी तो सच नहीं, सब झूठ है, धोखा है, बुराई है!"

गाड़ी के स्टेशन पर पहुंचने के बाद आन्ना दूसरे मुसाफ़िरों की भीड़ में बाहर निकली और उनसे ऐसे बचती हुई, मानो वे कोढ़ी हों, प्लेटफ़ार्म पर रुककर यह सोचने लगी कि वह किसलिये और क्या करने के इरादे से यहां आयी है। उसे पहले जो कुछ सम्भव प्रतीत होता था, अब उसे समझ पाना बहुत कठिन लग रहा था, ख़ास तौर पर इन बेहूदे लोगों की शोर मचाती भीड़ में, जो उसे चैन नहीं लेने दे रहे थे। कभी तो अपनी सेवा पेश करनेवाले कुली उसके पास आ जाते, कभी प्लेटफ़ार्म के तख़्तों पर एड़ियों से ठक-ठक करते और ऊंचे-ऊंचे बोलते-बतियाते हुए नौजवान उसे घूरते, तो कभी सामने से आनेवाले लोग सही दिशा में एक ओर को नहीं हटते थे। यह याद करके कि उत्तर न मिलने पर वह आगे जाना चाहती थी, उसने एक कुली को रोककर पूछा कि काउंट व्रोन्स्की का रुक़्क़ा लिये कोई कोचवान तो यहां नहीं है।

"काउंट व्रोन्स्की? उनके यहां से तो अभी-अभी कोई प्रिंसेस सोरोकिना और उनकी बेटी को लिवाने आया था। कोचवान देखने में कैसा लगता है?"

आन्ना कुली से बात कर ही रही थी कि लाल-लाल गालों वाला, बहुत ख़ुश मिख़ाईल, जो छैलों जैसा नीला कोट पहने और ज़ंजीर वाली घड़ी लगाये था, स्पष्टतः इस बात पर गर्व करता हुआ कि उसने अपने को सौंपा गया काम बहुत अच्छी तरह से पूरा किया है, उसके पास आया और उसे रुक़्क़ा दिया। उसने उसे खोला और पढ़ने के पहले ही उसका दिल बैठ गया।

"बहुत अफ़सोस की बात है कि तुम्हारा रुक़्क़ा मुझे वहीं नहीं मिला। मैं दस बजे पहुंच जाऊंगा," व्रोन्स्की ने लापरवाही से लिखा था।

"तो यह बात है! मुझे इसकी ही आशा थी!" उसने द्वेषपूर्वक मुस्कराकर अपने आपसे कहा।

"अच्छी बात है, तुम घर जाओ," मिख़ाईल को सम्बोधित करते हुए उसने धीमे-धीमे कहा। वह धीमे-धीमे इसलिये बोल रही थी कि बहुत तेज़ी से धड़कता हुआ दिल उसके बात करने में बाधक हो रहा था। "नहीं, मैं तुम्हें इस तरह अपने को संतप्त नहीं करने दूंगी," न तो उसे और न ख़ुद को, बल्कि उस शक्ति को सम्बोधित करते धमकी-सी देते हुए उसने सोचा, जो उसे यातना सहने को विवश कर रही थी, और स्टेशन की इमारत के साथ-साथ प्लेटफ़ार्म पर चल दी।

प्लेटफ़ार्म पर आती-जाती दो नौकरानियों ने उसे देखते हुए अपने सिर उसकी तरफ़ घुमा लिये और उसकी पोशाक के बारे में ऊंचे-ऊंचे बात करने लगीं। "असली है," उन्होंने उसकी पोशाक की लेस के बारे में कहा। जवान लोग उसे चैन नहीं लेने दे रहे थे। वे फिर से उसे घूरते और हंसते तथा बनावटी आवाज़ में कुछ चिल्लाते हुए उसके पास से गुज़रे। स्टेशन मास्टर ने उसके निकट से जाते हुए पूछा कि वह इसी गाड़ी से जा रही है या नहीं। क्वास* बेचनेवाला लड़का उसे एकटक देखता ही रहा। "भगवान, कहां जाऊं मैं?" प्लेटफ़ार्म पर आगे ही आगे जाती हुई वह सोच रही थी। प्लेटफ़ार्म के सिरे के क़रीब जाकर वह रुक गयी। चश्माधारी एक महानुभाव को लिवाने के लिये आयी हुई महिलायें और बच्चे, जो ऊंचे-ऊंचे हंस तथा बातें कर रहे थे, आन्ना के उनके निकट पहुंचने पर ख़ामोश हो गये और उसे सिर से पांव तक बहुत ध्यान से देखने लगे। आन्ना ने अपनी चाल तेज़ कर दी और प्लेटफ़ार्म के सिरे की ओर उनसे दूर हट गयी। एक माल गाड़ी निकट आ रही थी। प्लेटफ़ार्म ज़ोर से हिल उठा और आन्ना को लगा कि वह फिर से गाड़ी में यात्रा कर रही है।

व्रोन्स्की से अपनी पहली मुलाक़ात के समय गाड़ी के नीचे कुचले जानेवाले व्यक्ति की अचानक याद आ जाने पर वह समझ गयी कि उसे क्या करना चाहिये। पम्प घर से रेलवे लाइन की ओर जानेवाली पैड़ियों पर तेज़ी और फुर्ती से नीचे उतरकर वह गुज़र रही गाड़ी के क़रीब रुक गयी। उसने डिब्बों के नीचे काबलों, ज़ंजीरों और पहले डिब्बे के धीरे-धीरे चल रहे लोहे के ऊंचे पहियों पर नज़र डाली तथा

---

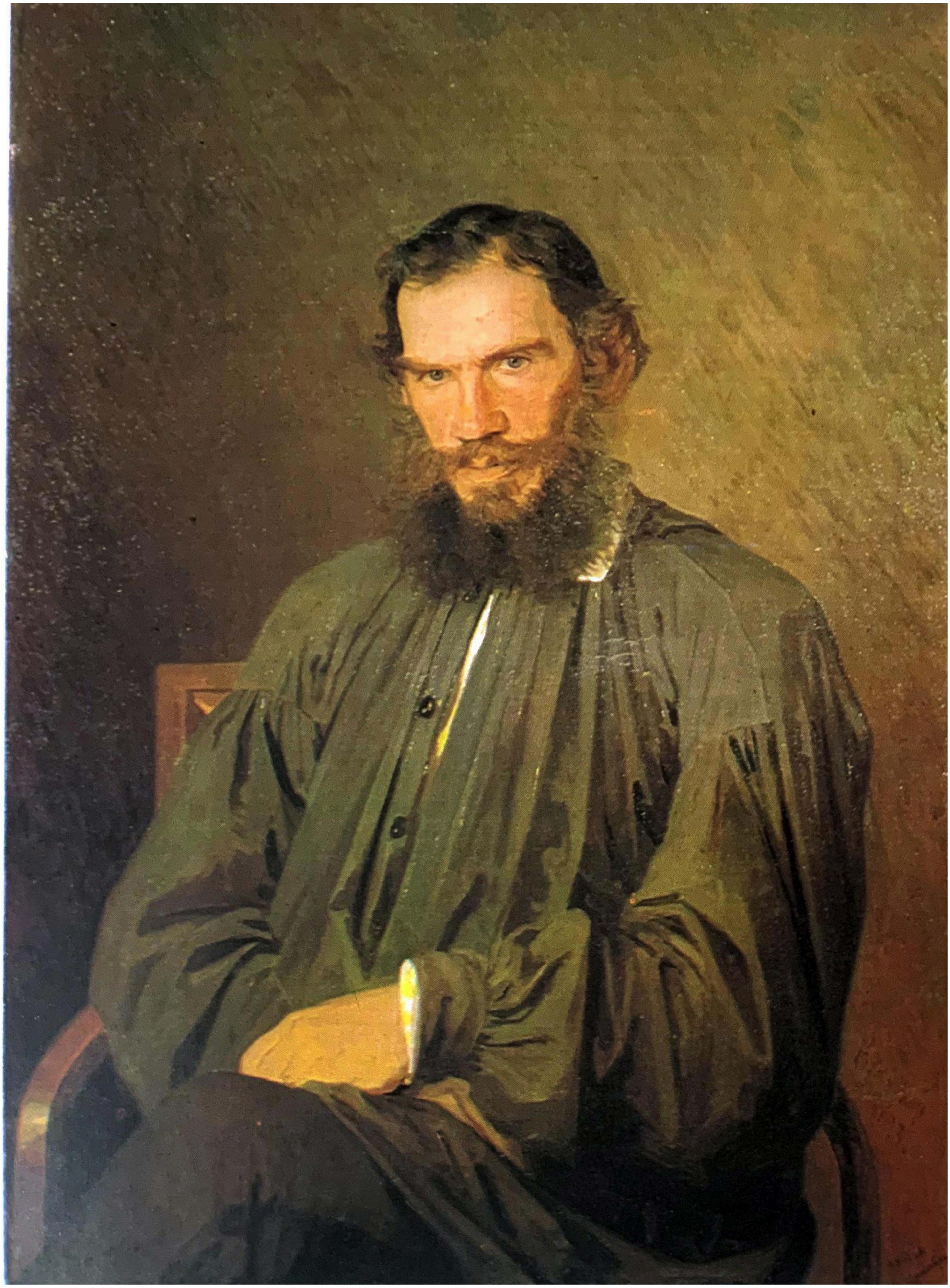
*एक रूसी पेय, जिसका कुछ कुछ कोका-कोला जैसा स्वाद होता है। – अनु०

दृष्टि से ही आगे और पीछे के पहियों के मध्य भाग तथा उस क्षण का अनुमान लगाने का प्रयास किया, जब मध्य भाग उसके सामने होगा।

"वहां!" आन्ना ने स्लीपरों पर डाली गयी कोयला-मिश्रित बालू पर डिब्बे की परछाईं की ओर देखते हुए कहा, "वहां, ठीक मध्य में, मैं उसे सजा दे दूंगी तथा सबसे और खुद अपने से निजात पा लूंगी।"

आन्ना ने अपने सामने आ गये पहले डिब्बे के मध्य भाग के नीचे गिरना चाहा। किन्तु लाल थैले ने, जिसे उसने अपने हाथ से अलग करना चाहा, देर करवा दी और मध्य भाग आगे निकल गया। अगले डिब्बे का इन्तज़ार ज़रूरी हो गया। नहाने के लिये पानी में घुसने के समय उसे जैसी अनुभूति होती थी, उसी तरह की भावना उस पर हावी हो गयी और उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। सलीब बनाने के इस चिर-परिचित संकेत ने बचपन और किशोरावस्था की ढेरों स्मृतियां सजीव कर दीं और सहसा वह अंधेरा, जिसने उसके जीवन की हर चीज़ को ढंक लिया था, छंट गया और क्षण भर को जीवन अतीत की सभी मधुर ख़ुशियों क़े साथ उसके सम्मुख उभर उठा। किन्तु वह निकट आ रहे दूसरे डिब्बे के पहियों पर नज़र टिकाये रही। और ठीक उसी क्षण में, जब पहियों के बीच का मध्य भाग उसके सामने आया, उसने लाल थैला फेंक दिया और अपने कंधों के बीच सिर को दुबकाकर हाथों के सहारे डिब्बे के नीचे गिर गयी और फुर्तीली हरकत से, मानो उसी क्षण उठने को तैयार हो रही हो, घुटनों के बल हो गयी। और इसी क्षण वह इस चेतना से कि उसने क्या कर दिया, भयभीत हो उठी। "मैं कहां हूं? क्या कर रही हूं? किसलिये?" उसने उठना और पीछे हट जाना चाहा, मगर कोई बहुत बड़ी और कठोर चीज़ उसके सिर से टकरायी और उसने उसे चित गिरा दिया। "हे भगवान, मुझे सब कुछ क्षमा कर दो!" अपने आपको संघर्ष के लिये असमर्थ अनुभव करते हुए उसने कहा। नाटा-सा देहाती कुछ बोलता हुआ लोहे पर काम कर रहा था। और वह मोमबत्ती, जिसकी रोशनी में वह चिन्ता, छल-धोखे, दुख और बुराई से भरी पुस्तक पढ़ती रही थी, ऐसे ज़ोर से रोशन हो उठी, जैसे कभी नहीं हुई थी, उसने उस सब को प्रकाशमान कर दिया, जो पहले अंधेरे में था, फड़फड़ाई, धीमी होने लगी और हमेशा के लिये बुझ गयी।

लेव तोलस्तोय



लेव निकोलायेविच तोलस्तोय।
चित्रकार – इ० न० क्राम्स्कोई। १८७३।



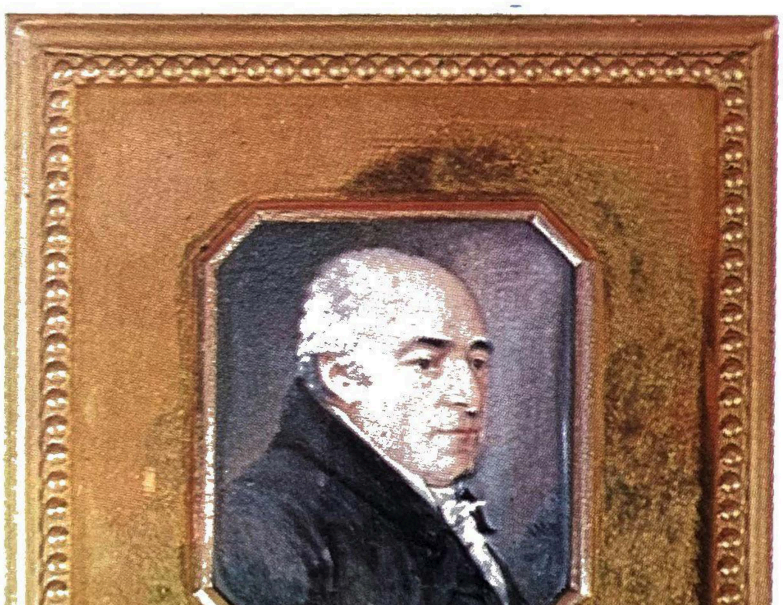


यास्नाया पोल्याना का प्रवेश-मार्ग। चित्रकार – ल० अ० क्वाचेव्स्की।

तोलस्तोय परिवार का घर। यास्नाया पोल्याना। १८६६। पोर्च में – सोफ़िया अन्द्रेयेव्ना तोलस्ताया।



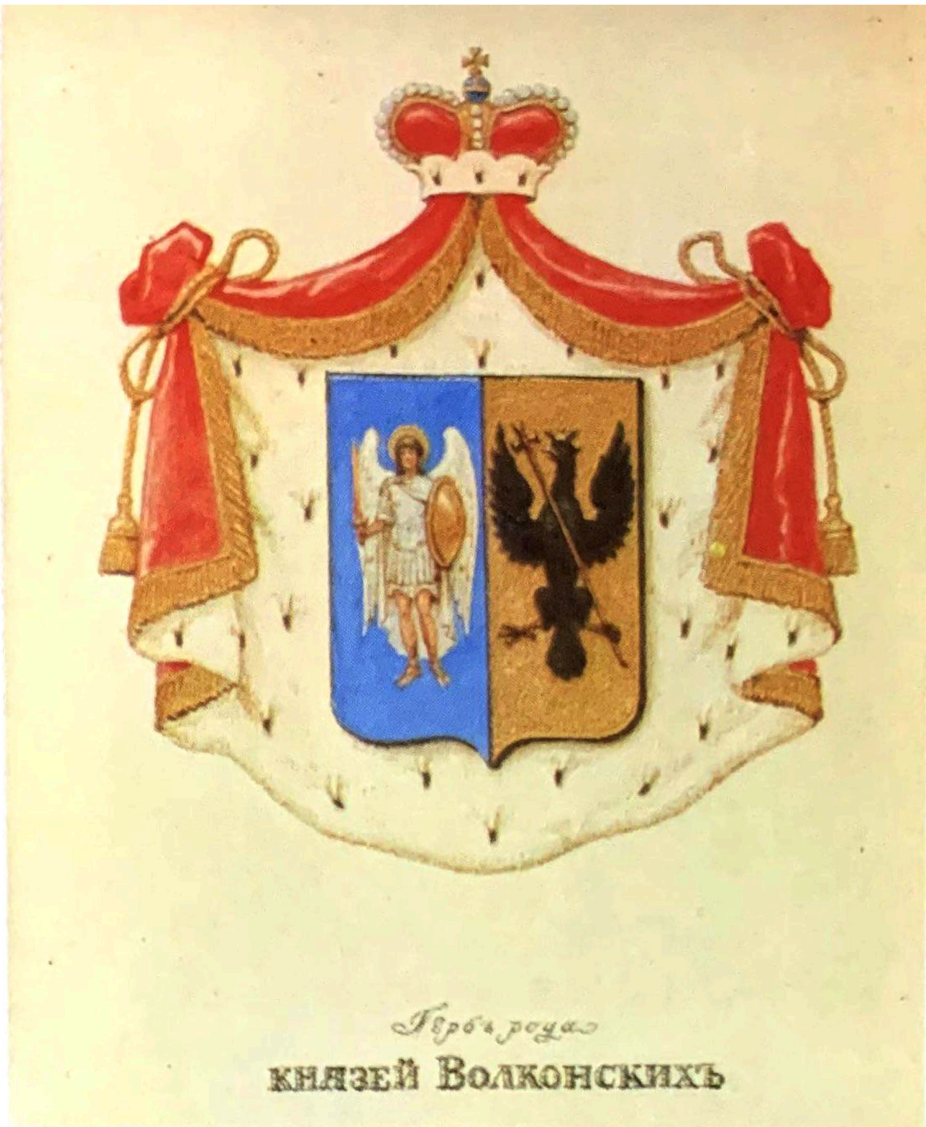
तोलस्तोय काउंटों का कुल चिह्न।



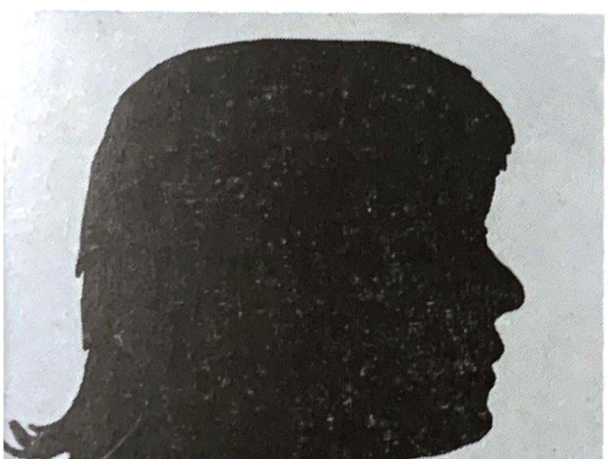
लेखक के नाना निकोलाई सेर्गेयेविच वोल्कोन्स्की। अज्ञात चित्रकार द्वारा बनाया गया लघु-चित्र। १८०६।



लेखक के दादा इल्या अन्द्रेयेविच तोलस्तोय। अज्ञात चित्रकार द्वारा १६वीं शताब्दी की प्रथम चौथाई में बनाया गया लघु-चित्र।



वोल्कोन्स्की प्रिंसों का कुल चिह्न।



तिया निकोलायेव्ना वोल्कोन्स्काया। अज्ञात कार का रेखाचित्र। १८वीं शताब्दी अन्त। लेखक की मां का यही एकमात्र उपलब्ध है।



लेखक के पिता निकोलाई इल्यीच तोलस्तोय। चित्रकार – अ० मोलीनारी। १८१५।



काकेशिया के लिये रवाना होने के पहले लेव तोलस्तोय और उनके भाई निकोलाई का चित्र। मास्को। १८५१।





काकेशिया। पहाड़ी दृश्य। चित्रकार – क० न० फ़िलीप्पोव। १८६६।

लेव तोलस्तोय और उनके भाई सेर्गेई, द्मीत्री और निकोलाई। १८५४। "पर्वतीय लोगों के विरुद्ध कार्रवाई में विशेष वीरता दिखाने के लिये" ले० नि० तोलस्तोय के सब लेफ़्टीनेन्ट बनाये जाने के तत्काल बाद यह फ़ोटो मास्को में खींचा गया।

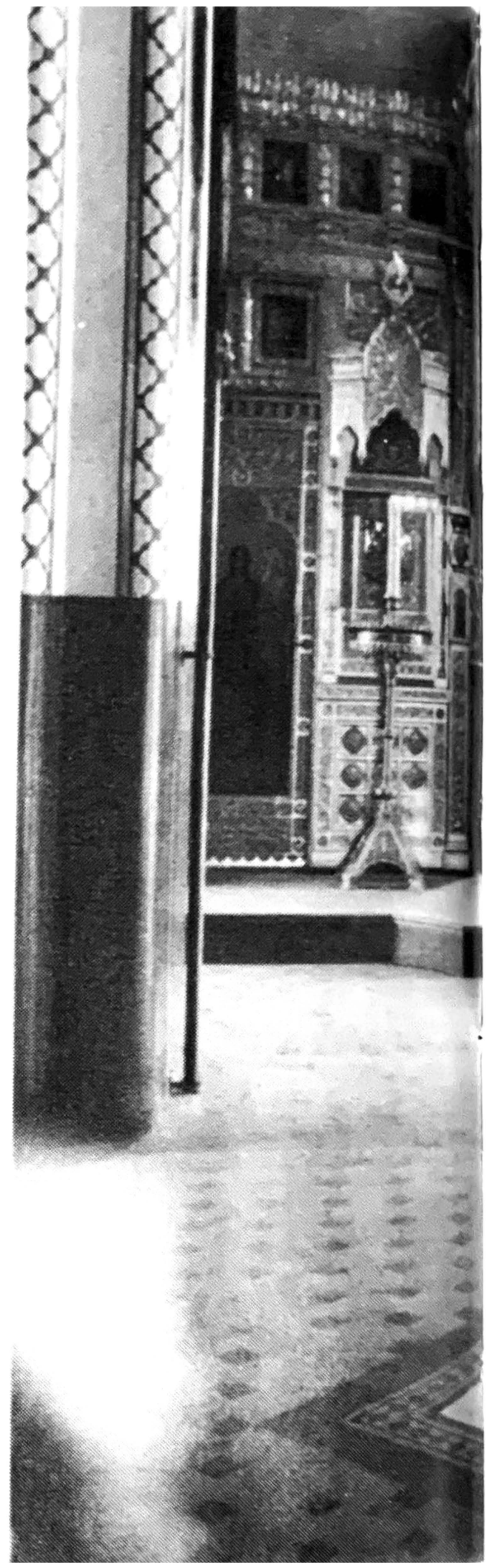


लेव तोलस्तोय। १८५६। पीटर्सबर्ग। फ़ोटो – स० ल० लेवीत्स्की। "... तोलस्तोय का एक बहुत ही श्रेष्ठ छविचित्र ... सुन्दर चेहरा, सुन्दर गठन, सैनिक की सादगी की छवि लिये हुए ..." इ० अ० बूनिन।

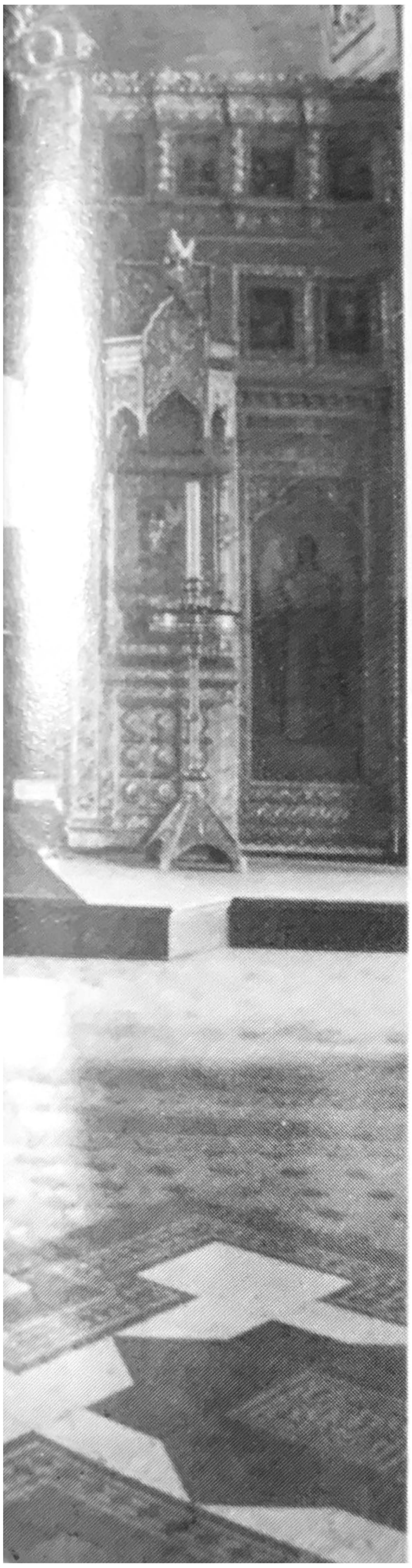


तोलस्तोय 'सोव्रेमेन्निक' पत्रिका में छपनेवाले लेखकों के बीच। १८५६। पीटर्सबर्ग। फ़ोटो – स० ल० …वीत्स्की। खड़े हैं – लेव तोलस्तोय और द्मीत्री ग्रिगोरोविच। बैठे हैं – इवान गोंचारोव, इवान …गेनेव, अलेक्सान्द्र द्रुजीनिन और अलेक्सान्द्र ओस्त्रोव्स्की।





लेव तोलस्तोय। १८६२। मास्को। फ़ोटो – म० ब० तुलीनोव।





क्रेमलिन का वह गिरजाघर, जिसमें लेव निकोलायेविच तोलस्तोय का सोफ़िया अन्द्रेयेव्ना बेर्स के साथ विवाह हुआ था।

सोफ़िया अन्द्रेयेव्ना तोलस्ताया। १८६३।





यास्नाया पोल्याना की एक सामान्य झांकी। १६०८। फ़ोटो – क० क० बुल्ला।

यास्नाया पोल्याना में तोलस्तोय के अध्ययन-कक्ष में लिखने की मेज़।





दोल्गोखामोव्निचेस्की कूचे में तोलस्तोय परिवार का घर। मास्को। १६वीं शताब्दी के अन्तिम दशक के समय का फ़ोटो।



मास्को के घर के अहाते में स्केटिंग करते हुए तोलस्तोय। १८९८। फ़ोटो – सो० अ० तोलस्ताया।



लेव तोलस्तोय। १८८५। मास्को। फ़ोटो – शेरेर, नाब्गोल्त्स एण्ड क० फ़र्म।



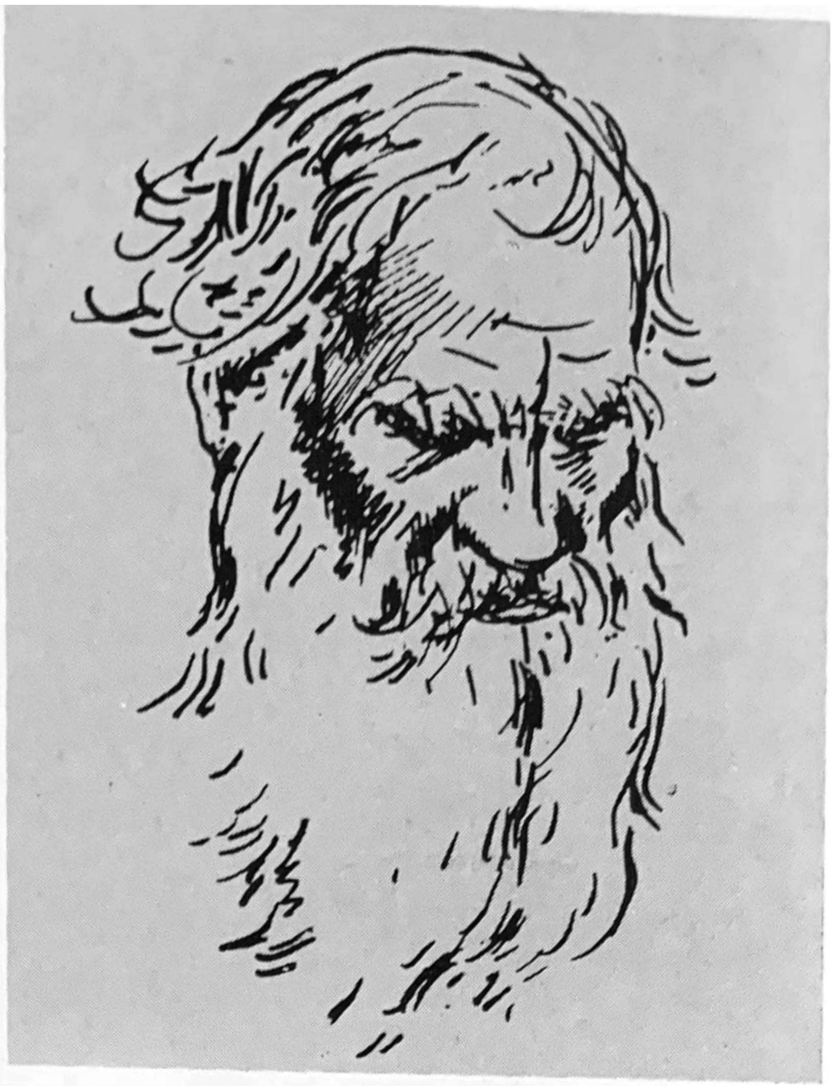
लेव तोलस्तोय अपने रिश्तेदारों और मित्रों के बीच, जिनमें उनके चित्रकार मित्र निकोलाई निकोलाये-
विच गे भी हैं। १८८८, यास्नाया पोल्याना। फ़ोटो – स० स० अबामेलेक-लाज़ारेव।





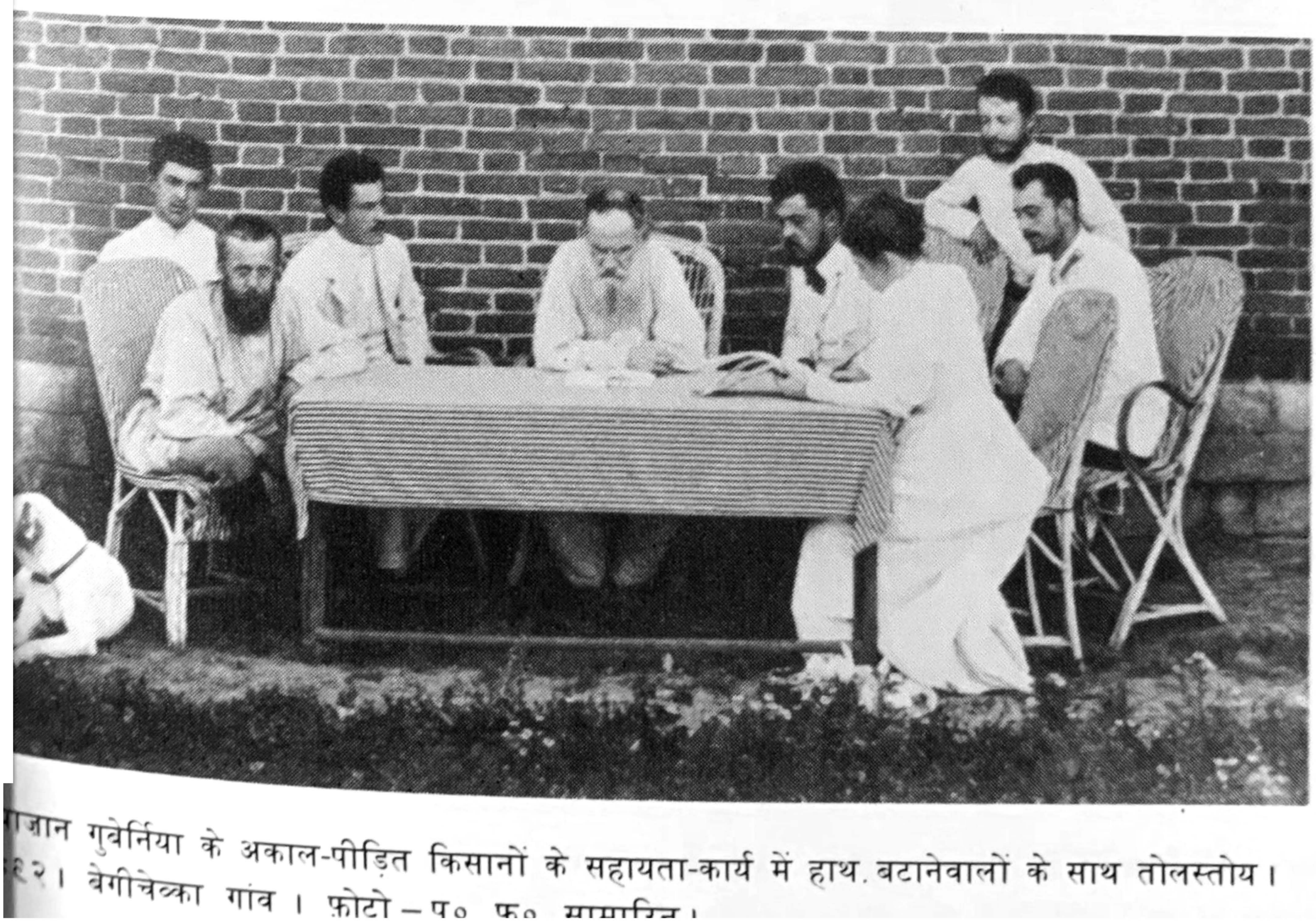
तोलस्तोय अपने परिवार में। १८८७। यास्नाया पोल्याना। फ़ोटो – सो० अ० तोलस्ताया। बैठे हैं – सेर्गेई, लेव, बेटी साशा के साथ लेव निकोलायेविच, सोफ़िया अन्द्रेयेव्ना, मिख़ाईल, इल्या। खड़े हैं – मारीया, अन्द्रेई और तत्याना।





तोलस्तोय के सिर का चित्र। चित्रकार – ये० ये० लान्सेरे। १६३१।

न० गे द्वारा बनायी गयी तोलस्तोय मूर्त्ति। १८६०।



ाज़ान गुबेर्निया के अकाल-पीड़ित किसानों के सहायता-कार्य में हाथ बटानेवालों के साथ तोलस्तोय। ६२। बेगीचेव्का गांव। फ़ोटो – प० फ० सामारिन।



घरवालों और मेहमानों के बीच तोलस्तोय। इनमें हैं – प्रोटेस्टेन्ट मत के प्रोफ़ेसर, फ़्रांस के प्रोटेस्टेन्ट गिरजाघरों के बड़े पादरी शार्ल बोने-मोरी। १८६६। यास्नाया पोल्याना। फ़ोटो – सो० अ० तोलस्ताया।





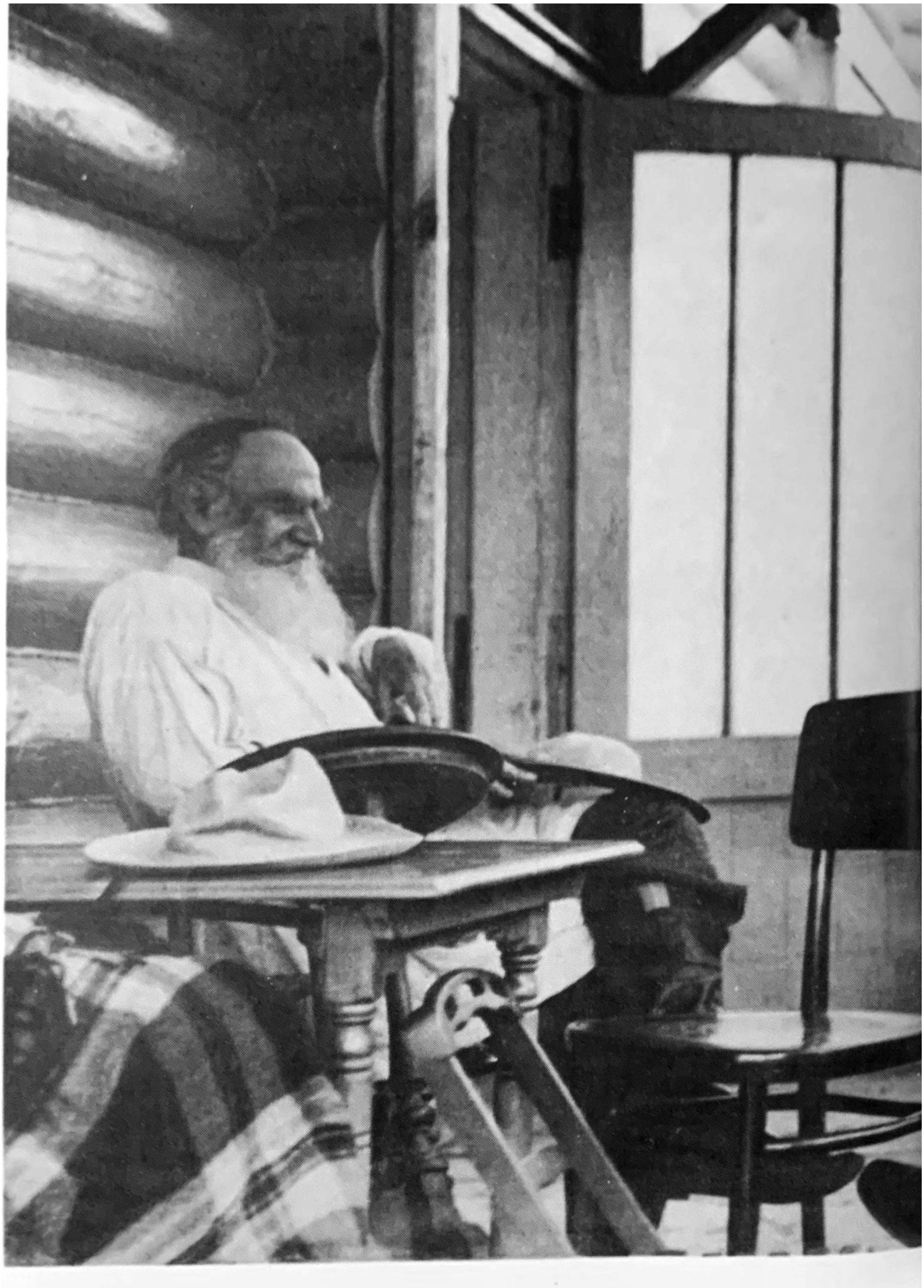


लेव तोलस्तोय और मक्सिम गोर्की। १९००। यास्नाया पोल्याना। फ़ोटो – सो० अ० तोलस्ताया।

ले० नि० तोलस्तोय और अन्तोन पोव्लोविच चेख़ोव क्रीमिया में। गास्प्रा। १९०१। फ़ोटो – सो० अ० तोलस्ताया।

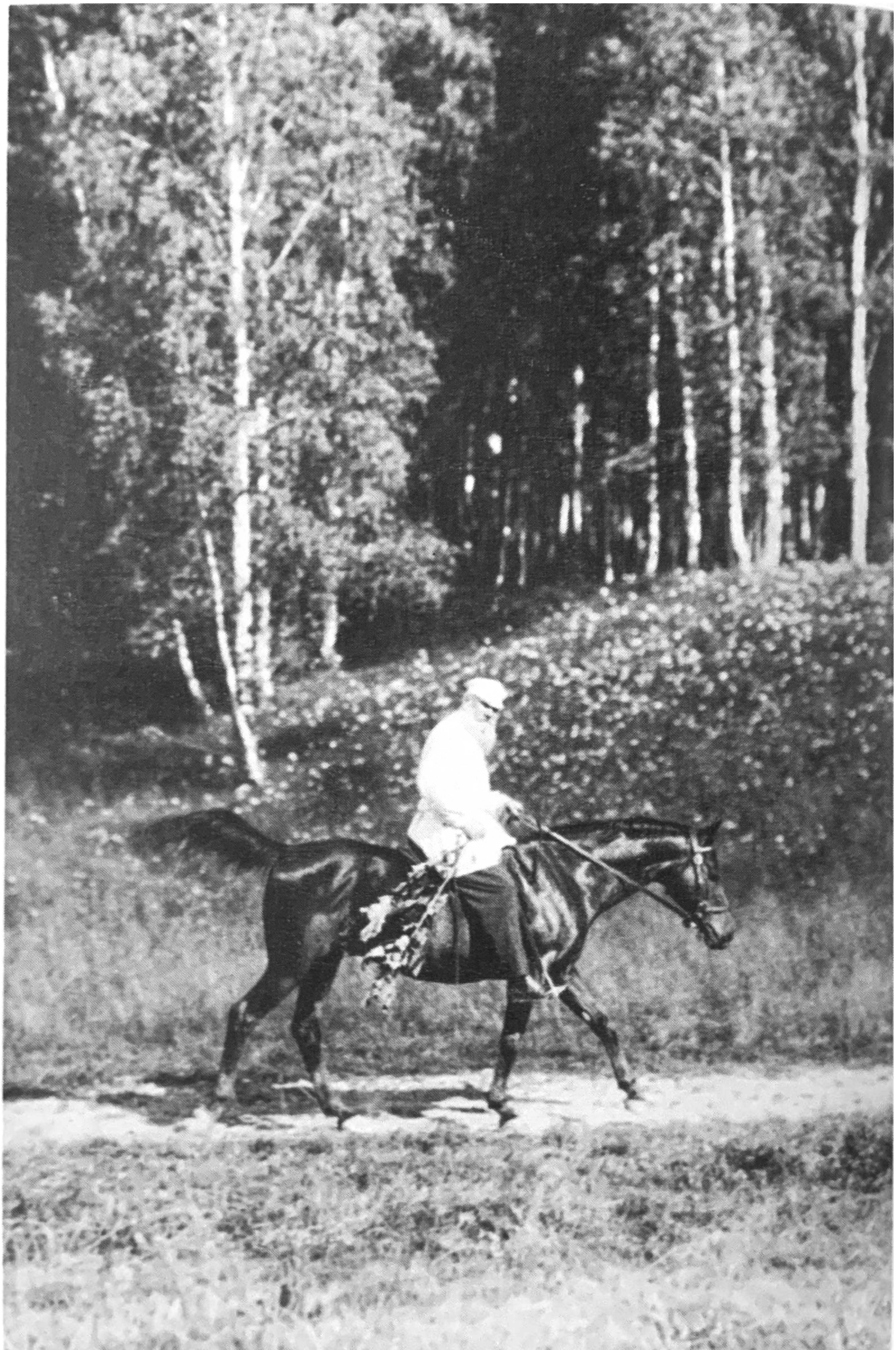


गास्प्रा क्रीमिया के बंगले के छज्जे में लेखन-कार्य में व्यस्त तोलस्तोय। १९०१। फोटो – सो० अ० तोलस्ताया।



ले० नि० तोलस्तोय, अलेक्सान्द्र बोरीसोविच गोल्देनाज़ेर, लेव ल्वोविच तोलस्तोय और इल्या इल्यीच मेच्निकोव चेत्कोंव परिवार के घर के बरामदे में। ३० मई, १९०९। फ़ोटो – व० ग० चेत्कोंव।





लेव तोलस्तोय यास्नाया पोल्याना के आस-पास अपने प्यारे घोड़े देलीर पर सैर करते हुए। १६०८।
फ़ोटो – क० क० बुल्ला।





तोलस्तोय की मूर्त्ति बनाते हुए मूर्त्तिकार पाओलो त्रुबेत्स्कोई (दायें – इ० इ० गोर्बुनोव-पोसादोव)। १८९९। यास्नाया पोल्याना। फ़ोटो – सो० अ० तोलस्ताया।

पोते-पोती इल्यूशा और सोन्या को खीरे के बारे में अपना किस्सा सुनाते हुए तोलस्तोय। १९०९। फ़ोटो – व० ग० चेर्त्कोव।



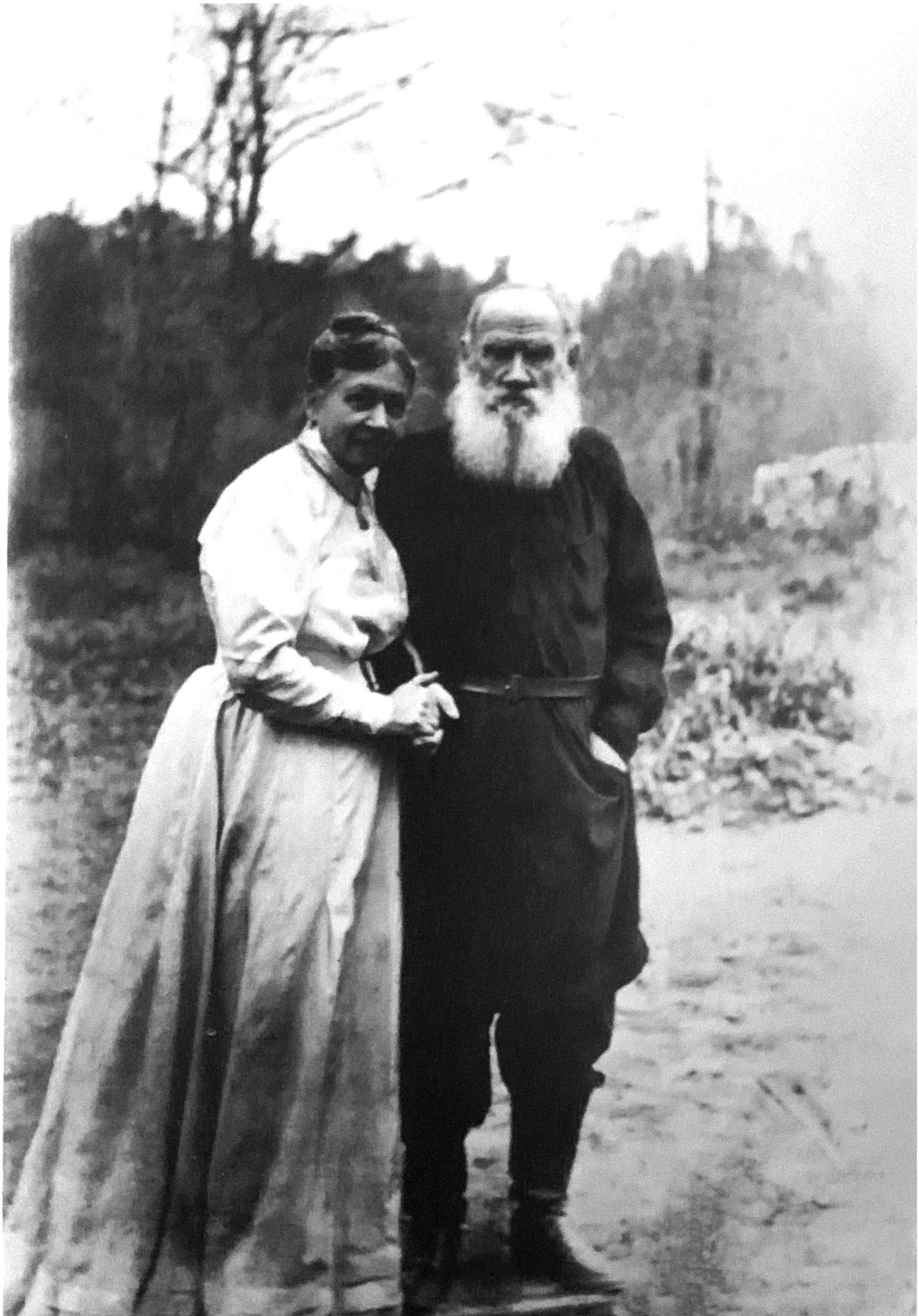


व० ग० चेर्त्कोव के साथ शतरज की बाज़ी खेली जा रही। १९१०। फ़ोटो – त० अ० तापसेल।

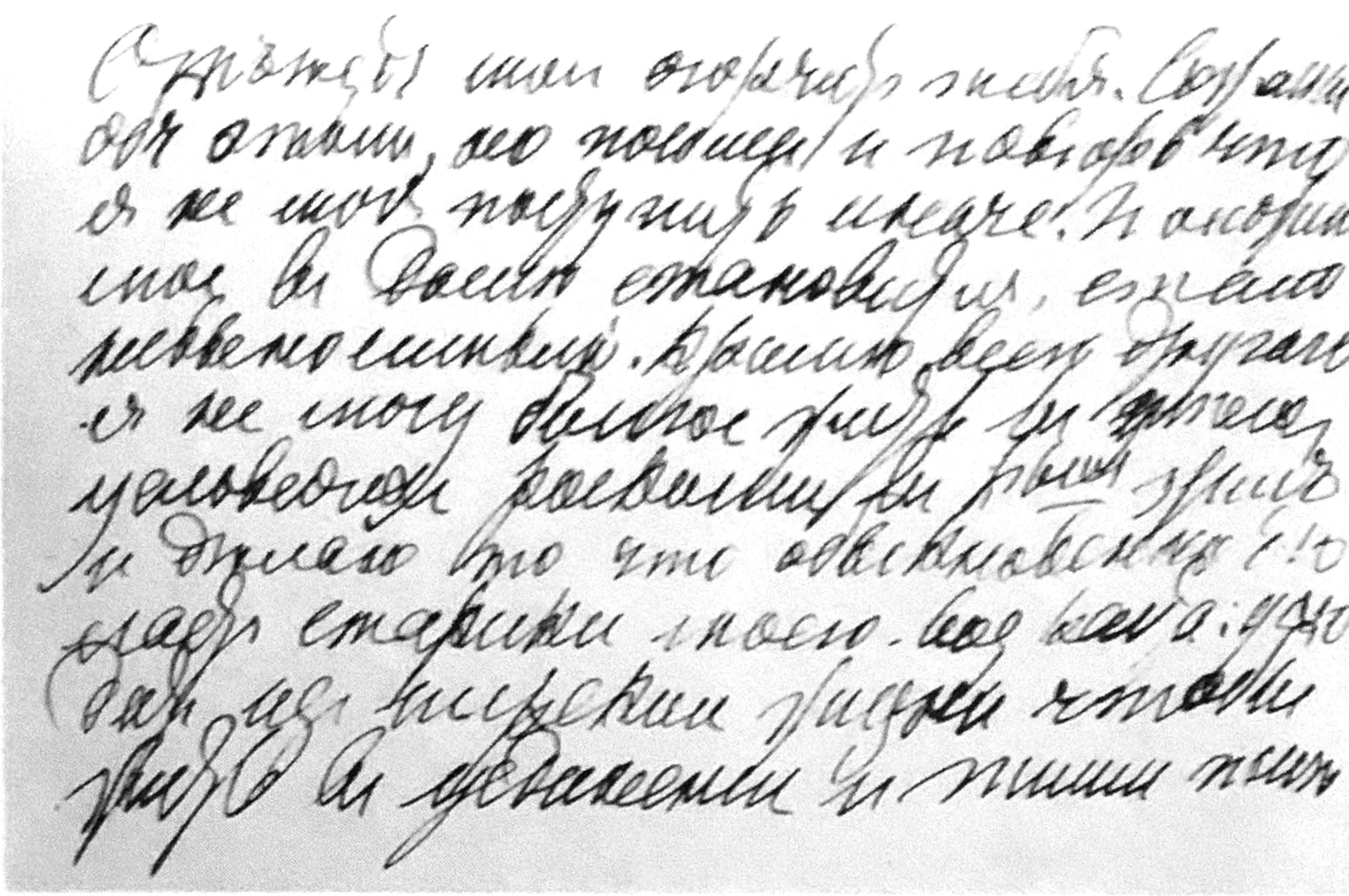
धार्मिक पर्व के अवसर पर तोलस्तोय किसानों और उनके बच्चों के बीच। १९०९। यास्नाया पोल्याना। फ़ोटो – व०ग० चेर्त्कोव।



अपने कक्ष में लेखन-कार्य करते हुए तोलस्तोय। १६०६। यास्नाया पोल्याना। फ़ोटो – व० ग० चेत्कोंव।



ले० नि० तोलस्तोय और सो० अ० तोलस्ताया अपने विवाह की ४८वीं वर्षगांठ के अवसर पर। तोलस्तोय का आखिरी फ़ोटो। फ़ोटो के दूसरी ओर सो० अ० तोलस्ताया के हाथ से लिखा हुआ है –





"२३ सितम्बर, १६१०। रोकना सम्भव नहीं!"

२८ अक्तूबर, १६१० ले० नि० तोलस्तोय द्वारा सोफ़िया अन्द्रेयेव्ना तोलस्ताया को लिखा गया पत्र।
यास्नाया पोल्याना में तोलस्तोय की अर्थी के पीछे मातमी जुलूस। ६ नवम्बर, १६१०।



तोलस्तोय की क़ब्र। १९१०। यास्नाया पोल्याना।

आठवां भाग

(१)

लगभग दो महीने बीत चुके थे। ज़ोरों से पड़नेवाली आधी गर्मी जा चुकी थी, लेकिन सेर्गेई इवानोविच कोज़्निशेव केवल अभी मास्को से जाने को तैयार हुआ था।

इस समय के दौरान कोज़्निशेव के जीवन में कुछ अपनी घटनायें घटी थीं। एक साल पहले उसके छः वर्षों का फल, उसकी अपनी पुस्तक – 'यूरोप और रूस में शासन के आधारों और रूपों का सिंहावलोकन' – समाप्त हो चुकी थी। इस पुस्तक के कुछ भाग और भूमिका पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके थे और कोज़्निशेव ने कुछ भाग अपने मिलने-जुलने वालों को पढ़कर सुनाये थे। इसलिये इस रचना के विचार लोगों के लिये सर्वथा नये नहीं हो सकते थे। फिर भी कोज़्निशेव को यह आशा थी कि उसकी किताब प्रकाशित होने पर समाज में बड़ा प्रभाव उत्पन्न करेगी और यदि विज्ञान के क्षेत्र में क्रान्ति नहीं, तो विद्वानों की दुनिया में भारी हलचल ज़रूर पैदा कर देगी।

बहुत ही अच्छी तरह से मांजने-संवारने के बाद पिछले वर्ष कोज़्निशेव ने यह पुस्तक प्रकाशित करवा दी थी और वह पुस्तक-विक्रेताओं के पास पहुंच गयी थी।

किसी से इस पुस्तक के बारे में कुछ भी न पूछते हुए, अपने मित्रों के ऐसे प्रश्नों के कि उसकी किताब का क्या हाल है, मन मारकर और बनावटी उदासीनता से उत्तर देते और पुस्तक-विक्रेताओं से यह

न पूछते हुए कि पुस्तक की बिक्री कैसी हो रही है, कोज़्निशेव बहुत ही सावधानी तथा तनावपूर्ण ध्यान से इस बात पर नज़र रख रहा था कि उसकी पुस्तक समाज और साहित्य में क्या प्रभाव पैदा करती है।

किन्तु एक, दो और तीन सप्ताह बीत गये, लेकिन समाज में कोई प्रभाव दिखाई नहीं दिया। उसके मित्र, विशेषज्ञ और विद्वान, स्पष्टतः शिष्टाचारवश कभी-कभी इसकी चर्चा कर देते थे। उसके अन्य परिचित, जिन्हें विद्वत्तापूर्ण पुस्तक में कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसके बारे में उससे कोई बात ही नहीं करते थे। और समाज ने भी, जो अब किसी दूसरी चीज़ में व्यस्त था, इसके बारे में पूरी उदासीनता प्रकट की। पत्र-पत्रिकाओं में भी एक महीने तक इस पुस्तक के बारे में एक शब्द भी नहीं लिखा गया।

कोज़्निशेव ने बहुत तफ़सील में यह हिसाब लगाया कि समीक्षा लिखने के लिये कितना समय लगना चाहिये, किन्तु एक, फिर दूसरा महीना बीत गया और वही ख़ामोशी बनी रही।

केवल 'उत्तरी गुबरैला' पत्रिका में गायक द्राबान्ती के बारे में, जिसकी आवाज़ जाती रही थी, एक मज़ाक़िया लेख छपा और उसी में कोज़्निशेव की क़िताब के सम्बन्ध में भी कुछ तिरस्कारपूर्ण शब्द कहे गये थे, जिनका आशय यह था कि इस पुस्तक की सभी बहुत पहले से भर्त्सना कर चुके हैं और इसे सभी के आम उपहास के लिये अर्पित कर दिया गया है।

आख़िर तीसरे महीने में एक गम्भीर पत्रिका में आलोचनात्मक लेख छपा। कोज़्निशेव इस लेख के लेखक से परिचित था। गोलुब्त्सोव के यहां उसकी उससे एक बार भेंट हो चुकी थी।

लेख लिखनेवाला एकदम जवान और बीमार हास्य-व्यंग्य लेखक था, लेखक के नाते बड़ा दबंग, मगर बहुत ही कम पढ़ा-लिखा और व्यक्तिगत सम्बन्धों में बहुत ही झेंपू।

लेखक के प्रति अत्यधिक तिरस्कार-भावना रखते हुए भी कोज़्निशेव बड़े आदर से लेख को पढ़ने लगा। लेख भयानक था।

हास्य-व्यंग्य लेखक ने सारी पुस्तक को इस तरह से समझा था, जैसे उसे समझना सम्भव नहीं था। किन्तु उसने ऐसी होशियारी से उद्धरण चुने थे कि जिन लोगों ने पुस्तक को पढ़ा नहीं था (और

ज़ाहिर है कि लगभग किसी ने भी उसे नहीं पढ़ा था) उनके लिये यह स्पष्ट हो जाता था कि सारी पुस्तक भारी-भरकम शब्दों का, जिनका ग़लत उपयोग किया गया है, (जिनके सामने प्रश्नचिह्न लगे हुए थे) संकलन है और पुस्तक-लेखक सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्ति है। यह सब कुछ ऐसी समझ-बूझ से किया गया था कि कोज़्निशेव ने ख़ुद भी ऐसी समझ-बूझ से इन्कार न किया होता और यही सबसे भयानक बात थी।

इस चीज़ के बावजूद कि कोज़्निशेव ने बड़ी ईमानदारी से समीक्षक के निष्कर्षों को परखा, फिर भी उसने क्षण भर को भी उन त्रुटियों तथा भूलों पर रुककर विचार नहीं किया, जिनका मज़ाक़ उड़ाया गया था। उसे यह बिल्कुल स्पष्ट था कि ऐसे उद्धरणों को जान-बूझकर चुना गया है। किन्तु इसी समय वह अनचाहे ही इस लेख को लिखनेवाले के साथ अपनी भेंट की हर छोटी से छोटी तफ़सील को याद करने लगा।

"मैंने उसके दिल को किसी तरह की ठेस तो नहीं लगायी थी?" कोज़्निशेव ने अपने आपसे पूछा।

और यह याद आने पर कि उस भेंट में उसने इस नौजवान की अनभिज्ञता को प्रकट करनेवाला एक शब्द सुधारा था, कोज़्निशेव को इस लेख के पीछे छिपी भावना का स्पष्टीकरण मिल गया।

इस लेख के बाद इस पुस्तक के बारे में प्रेस और बातचीत में भी एकदम ख़ामोशी छा गयी और कोज़्निशेव समझ गया कि इतनी मेहनत और इतने प्यार से छः वर्षों के दौरान लिखी गयी उसकी पुस्तक ने अपनी ज़रा भी छाप नहीं छोड़ी है।

कोज़्निशेव की स्थिति इसलिये और भी बुरी थी कि इस पुस्तक को समाप्त करने के बाद, जो उसका अधिकतर समय ले जाती थी, उसके पास अध्ययन-कक्ष में करने को कोई काम नहीं रह गया था।

कोज़्निशेव बुद्धिमान, पढ़ा-लिखा, स्वस्थ और कर्मशील व्यक्ति था और उसकी समझ में नहीं आता था कि अपनी क्रियाशीलता का कहां उपयोग करे। मेहमानख़ानों, सभा-सम्मेलनों तथा समितियों और अन्य जगहों पर भी, जहां बोलना-बतियाना सम्भव था, उसके समय का एक भाग ही व्यतीत होता था, लेकिन बहुत अर्से से नगरवासी होने के कारण वह बातों में ही अपना पूरा समय नष्ट नहीं होने देता

था, जैसा कि उसका अनुभवहीन भाई लेविन मास्को आने पर करता था, कोज़्निशेव के पास फ़ुरसत का बहुत-सा वक़्त और मानसिक शक्ति बच रहती थी।

ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि उसकी पुस्तक की असफलता के कारण उसके लिये इस बहुत ही कठिन समय में विधर्मियों, अमरीकी मित्रों, समारा की भुखमरी, प्रदर्शनी और प्रेत-विद्या की जगह स्लाव समस्या, जो पहले समाज की तह में धीमे-धीमे सुलग रही थी, उभरकर सामने आ गयी थी और कोज़्निशेव, जो कभी इस प्रश्न को उठानेवाले पहले लोगों में से एक था, पूरी तरह इसी काम में जुट गया।

कोज़्निशेव का जिन लोगों से वास्ता रहता था, उनके हलक़े में इस समय स्लाव प्रश्न और सेर्ब-तुर्की युद्ध के सिवा न तो किसी बात की चर्चा होती थी और न किसी अन्य चीज़ के बारे में लिखा जाता था। काहिल लोगों की भीड़ वक़्त को नष्ट करने के लिये आम तौर पर जो कुछ करती है, वह अब स्लावों के भले के लिये किया जा रहा था। बॉलों, कन्सर्टों, दावतों, फ़ैशन शो, बीयरख़ानों और रेस्तोरानों में, यानी सभी जगह स्लावों के प्रति सहानुभूति का प्रमाण मिलता था।

इस प्रश्न के सम्बन्ध में जो कुछ कहा और लिखा जा रहा था, उसकी बहुत-सी तफ़सीलों से कोज़्निशेव सहमत नहीं था। उसे यह स्पष्ट था कि स्लाव प्रश्न एक ऐसा फ़ैशनदार मनबहलाव बन गया है, जो हमेशा बदलते रहकर समाज के लिये वक़्त बिताने का साधन होते हैं। उसे यह भी साफ़ दिखाई दे रहा था कि बहुत-से लोग अपनी स्वार्थसिद्धि और महत्त्वाकांक्षा की तृप्ति के लिये इस काम में लगे हुए हैं। उसे इस बात की भी चेतना थी कि अख़बार केवल एक ही उद्देश्य से बहुत-सी अनावश्यक और अतिशयोक्तिपूर्ण सामग्री छापते हैं – ताकि अपनी ओर ध्यान आकृष्ट कर सकें और दूसरों से ज़्यादा अपना शोर मचाने में सफल हो सकें। वह यह देखे बिना न रह सका कि समाज के इस आम जोश की लहर में वही सबसे आगे आ गये थे और सबसे अधिक ज़ोर से चिल्लाते थे, जो ख़ुद असफल और उपेक्षित थे – सेना के बिना सेनापति, मन्त्रालयों के बिना मन्त्री, पत्रिकाओं के बिना पत्रकार, अनुयायियों के बिना पार्टी-नेता। उसने

देखा कि इस मामले की बहुत-सी बातों में गम्भीरता का अभाव और बहुत कुछ हास्यास्पद था। किन्तु वह यह देखे और माने बिना भी न रह सका कि निस्सन्देह लोगों का जोश लगातार बढ़ता जा रहा है, जो समाज के सभी वर्गों को सूत्रबद्ध कर रहा है और जिसके प्रति सहानुभूति अनुभव न करना सम्भव नहीं। स्लाव सहधर्मियों और भाइयों के हत्याकाण्ड से उन पीड़ितों के प्रति सहानुभूति और अत्याचारियों के प्रति क्रोध की भावना पैदा होती थी। महान ध्येय के लिये संघर्ष-शील सेर्बों और मान्टनीग्रो के निवासियों की वीरता सभी लोगों में केवल बातों द्वारा ही नहीं, बल्कि अमली तौर पर अपने भाइयों की सहायता करने की चाह पैदा कर रही थी।

किन्तु कोज़्निशेव के लिये ख़ुशी की एक और बात भी थी – यह थी जनमत की अभिव्यक्ति। समाज ने निश्चित रूप में अपनी इच्छा व्यक्त की थी। जैसा कि कोज़्निशेव कहता था – जन-आत्मा को वाणी मिली है। और वह इस मामले में जितनी अधिक रुचि लेता था, उतना ही अधिक उसे यह स्पष्ट होता जाता था कि यह मामला बहुत विराट पैमाना हासिल करेगा, युग-घटना बनेगा।

उसने अपने को इस महान ध्येय के लिये समर्पित कर दिया और अपनी पुस्तक के बारे में सोचने की बात भूल गया।

वह अब हर समय इतना व्यस्त रहता था कि अपने नाम आनेवाले पत्रों और अनुरोधों के उत्तर भी नहीं दे पाता था।

पूरे वसन्त और कुछ गर्मी तक काम करने के बाद वह जुलाई के महीने में ही भाई के पास गांव जाने को तैयार हो पाया था।

कोज़्निशेव दो सप्ताह के आराम और साथ ही दूरस्थ गांव में जन-आत्मा की गहराई के उस उभार को देख कर, जिसके अस्तित्व का उसे और राजधानी और नगरों के सभी लोगों को पूरा विश्वास था, आनन्दित होने के लिये वहां जा रहा था। कातावासोव भी, जो लेविन को उसके यहां जाने के अपने दिये हुए वचन को बहुत अर्से से पूरा करने की सोच रहा था, उसके साथ हो लिया।

(२)

कोज़्निशेव और कातावासोव कूर्स्की रेलवे-स्टेशन पर, जहां आज ख़ास तौर पर बहुत भीड़ थी, बग्घी से उतरे ही थे और उन्होंने सामान लेकर अपने पीछे आ रहे नौकर पर नज़र डाली ही थी कि इसी समय चार बग्घियों में स्वयंसेवक भी वहां पहुंच गये। महिलाओं ने गुलदस्ते भेंट करते हुए उनका स्वागत किया और वे उनके पीछे उमड़ती हुई भीड़ के साथ-साथ स्टेशन की इमारत में दाख़िल हुईं।

स्वयंसेवकों का स्वागत करनेवाली एक महिला ने प्रतीक्षालय से बाहर आते हुए कोज़्निशेव को सम्बोधित किया।

"आप भी स्वयंसेवकों को विदा करने आये हैं?" उसने फ़्रांसीसी में पूछा।

"नहीं, प्रिंसेस, मैं ख़ुद जा रहा हूं। आराम करने के लिये अपने भाई के यहां। आप क्या हमेशा विदा करने आती हैं?" कोज़्निशेव ने होंठों पर हल्की-सी मुस्कान लाते हुए प्रश्न किया।

"ऐसा तो करना ही चाहिये!" प्रिंसेस ने उत्तर दिया। "यह सच है न कि हमारे यहां से आठ सौ स्वयंसेवक भेजे जा चुके हैं? मल्वीन्स्की ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया।"

"आठ सौ से अधिक। अगर उन्हें भी गिन लिया जाये, जिन्हें सीधे मास्को से नहीं भेजा गया, तो एक हज़ार से अधिक जा चुके हैं," कोज़्निशेव ने कहा।

"तो मैंने ठीक ही कहा था न!" महिला ख़ुश होते हुए बोली। "और यह भी सच है न कि लगभग दस लाख रूबल का चन्दा हो चुका है?"

"इससे अधिक, प्रिंसेस।"

"और आज के समाचार के बारे में क्या ख़्याल है? फिर से तुर्कों का मुंह तोड़ दिया गया।"

"हां, मैंने पढ़ा है," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया। उन्होंने नवीनतम युद्ध-समाचार की चर्चा की, जो इस बात की पुष्टि करता था कि पिछले तीन दिनों में तुर्कों को सभी मोर्चों पर मुंह की खाकर भागना पड़ा था और अगले दिन निर्णायक लड़ाई होनेवाली थी।

"अरे हां, एक बहुत ही अच्छे नौजवान ने अपनी सेवायें प्रस्तुत की हैं। मालूम नहीं कि उसके मामले में क्यों कठिनाइयां आ गयी हैं। मैं उसे जानती हूं और आपसे यह अनुरोध करना चाहती हूं कि कृपया उसके लिये एक रुक़्क़ा लिख दीजिये। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उसे भेजा है।"

अपनी सेवायें प्रस्तुत करनेवाले इस नौजवान के बारे में वे सभी तफ़सीलें मालूम करके, जो प्रिंसेस को मालूम थीं, कोज़्निशेव ने पहले दर्जे के प्रतीक्षालय में जाकर इस काम से सम्बन्धित आदमी के नाम रुक़्क़ा लिखा और प्रिंसेस को दे दिया।

"आपको मालूम है या नहीं कि प्रसिद्ध... काउंट व्रोन्स्की भी इसी गाड़ी से जा रहा है," प्रिंसेस ने उत्साह तथा अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ कोज़्निशेव से तब कहा, जब उसने उसे पुनः ढूंढ़कर रुक़्क़ा दिया।

"मैंने सुना था कि वह जा रहा है, मगर कब जा रहा है, मुझे यह मालूम नहीं था। इसी गाड़ी से?"

"मैंने उसे देखा है। वह यहीं है, सिर्फ़ मां ही उसे विदा करने आई है। उसकी वर्तमान परिस्थिति में यही सबसे अच्छा है, जो वह कर सकता था।"

"हां, बेशक, ऐसा ही है।"

ये दोनों बातें कर रहे थे कि लोगों की भीड़ इनके पास से गुज़रती हुई भोजनालय की ओर उमड़ पड़ी। ये दोनों भी उधर चले गये और वहां उन्होंने जाम हाथ में लिये हुए एक महानुभाव को ऊंची आवाज़ में स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते सुना। "अपने धर्म, मानव-जाति और अपने भाइयों की सेवा कीजिये," अपनी आवाज़ को अधिकाधिक ऊंची करते हुए यह महानुभाव कहता जा रहा था। "इस महान कार्य के लिये मां मास्को आपको आशीर्वाद देती है। हुर्रा!" उसने ऊंची आवाज़ और डबडबाई आंखों से अपनी बात समाप्त की।

सभी "हुर्रा!" चिल्ला उठे, लोगों की नई भीड़ हॉल में उमड़ आई और प्रिंसेस गिरते-गिरते बची।

"अरे प्रिंसेस! कहिये, कैसा लगा भाषण!" ओब्लोन्स्की ने अचानक भीड़ के बीच से प्रकट होते हुए मुस्कराकर कहा। "बहुत

बढ़िया, बहुत हार्दिकता से बोला न? शाबाश है! सेर्गेई इवानोविच, आप भी यहां हैं! आप भी अपनी ओर से कुछ शब्द कहिये न, उत्साह बढ़ानेवाले। आप तो इतना अच्छा बोलते हैं," उसने आदर और सावधानीपूर्ण कोमल मुस्कान से तथा कोज़्निशेव का हाथ पकड़कर उसे तनिक आगे बढ़ाते हुए कहा।

"नहीं, मैं ख़ुद इस वक़्त जा रहा हूं।"

"कहां?"

"भाई के पास, गांव में," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया।

"तो आपकी मेरी पत्नी से भेंट होगी। मैंने उसे पत्र तो लिखा है, मगर आपकी भेंट ख़त से पहले होगी। कृपया उससे कहिये कि आपकी मुझसे मुलाक़ात हुई थी और यह कि मैं all right* हूं। वह समझ जायेगी। मेहरबानी करके उससे यह भी कह दीजिये कि मुझे संयुक्त एजेंसी के बोर्ड का सदस्य... हां, वह समझ जायेगी! ये सब les petites misères de la vie humaine,**" उसने मानो क्षमा-याचना करते हुए प्रिंसेस से कहा। म्याग्काया तो, लीज़ा नहीं, बीबीश, एक हज़ार बन्दूकें और बारह नर्सें भेज रही है। मैंने आपको बताया था न?"

"हां, मैंने सुना है," कोज़्निशेव ने मन मारकर उत्तर दिया।

"अफ़सोस की बात है कि आप जा रहे हैं," ओब्लोन्स्की ने कहा। "कल हम दो व्यक्तियों – पीटर्सबर्ग के दीमेर-बार्तन्यान्स्की और हमारे ग्रीशा वेसेलोव्स्की – की विदाई दावत कर रहे हैं। दोनों मोर्चे पर जा रहे हैं। वेसेलोव्स्की ने हाल ही में शादी की है। बहादुर आदमी है! ठीक है न, प्रिंसेस?" उसने महिला को सम्बोधित किया।

महिला ने कोई उत्तर न देकर कोज़्निशेव की तरफ़ देखा। कोज़्निशेव और प्रिंसेस उससे मानों पिंड छुड़ाना चाहते थे, इस बात से ओब्लोन्स्की को कोई परेशानी नहीं हुई। वह मुस्कराता हुआ कभी तो प्रिंसेस की टोपी के पंख की ओर तथा कभी इधर-उधर ऐसे देखता, मानो कुछ याद कर रहा हो। एक महिला को देखकर, जो चन्दा जमा करने का डिब्बा लिये घूम रही थी, उसने बुलाकर पांच रूबल का नोट डिब्बे में डाल दिया।

---

* ठीक-ठाक। (अंग्रेज़ी)

** मानव जीवन की छोटी-छोटी मुसीबतें हैं। (फ़्रांसीसी)

"जब तक मेरी जेब में पैसे होते हैं, ये चन्दे के डिब्बे देखकर मैं विह्वल हुए बिना नहीं रह सकता," उसने कहा। "आज का क्या समाचार है? शाबाश है मान्टनीग्रो लोगों को!"

"यह आप क्या कह रही हैं!" प्रिंसेस के यह बताने पर कि व्रोन्स्की इसी गाड़ी से जा रहा है, ओब्लोन्स्की चिल्ला उठा। क्षण भर को उसके चेहरे पर उदासी दिखाई दी, किन्तु अगले ही क्षण टांगों को डोलाते और गलमुच्छों को ठीक करते हुए ओब्लोन्स्की जब उस कमरे में दाख़िल हुआ, जहां व्रोन्स्की था, तो इस बात को बिल्कुल भूल चुका था कि अपनी बहन की लाश पर वह कैसे तड़प-तड़प कर रोया था, और व्रोन्स्की के रूप में उसे केवल एक वीर और अपना पुराना मित्र ही दिखाई दिया।

"सारी कमियों-त्रुटियों के बावजूद उसकी ख़ूबियों से इन्कार करना अन्याय होगा," ओब्लोन्स्की के जाते ही प्रिंसेस ने कोज़्निशेव से कहा। "बिल्कुल रूसी, बिल्कुल स्लाव स्वभाव है इसका! मुझे सिर्फ़ यही डर है कि व्रोन्स्की को उससे मिलना अच्छा नहीं लगेगा। कुछ भी कहिये, मगर व्रोन्स्की का भाग्य मेरे मन को विह्वल किये बिना नहीं रहता। उसके साथ रास्ते में बात कीजियेगा।"

"हां, अगर ऐसा मौक़ा बन गया।"

"मुझे वह कभी अच्छा नहीं लगा। किन्तु उसका यह काम उसे बहुत कुछ क्षमा कर देता है। वह न सिर्फ़ ख़ुद जा रहा है, बल्कि सवारों का एक दस्ता भी अपने ख़र्च पर साथ ले जा रहा है।"

"हां, मैंने सुना है।"

स्टेशन की घण्टी बजी। सभी लोग दरवाज़ों की तरफ़ लपके।

"वह रहा!" प्रिंसेस ने व्रोन्स्की की ओर इशारा करते हुए कहा। लम्बा ओवरकोट और चौड़े किनारोंवाला काला टोप पहने वह अपनी मां का हाथ थामे चला जा रहा था। ओब्लोन्स्की बड़ी ज़िन्दादिली से कुछ कहता हुआ उसकी बग़ल में चल रहा था।

व्रोन्स्की माथे पर बल डाले हुए सामने देख रहा था और मानो ओब्लोन्स्की की बातें नहीं सुन रहा था।

सम्भवत: ओब्लोन्स्की के बताने पर उसने उधर देखा, जहां कोज़्निशेव और प्रिंसेस खड़े थे और चुपचाप टोप ऊपर उठाकर उनका अभि-

वादन किया। बुढ़ापा और व्यथा को अभिव्यक्त करनेवाला उसका चेहरा पथराया-सा लग रहा था।

प्लेटफ़ार्म पर पहुंचकर व्रोन्स्की ने चुपचाप अपनी मां को आगे बढ़ा दिया और एक अलग डिब्बे में ग़ायब हो गया।

प्लेटफ़ार्म पर 'भगवान रक्षा करें ज़ार की' राष्ट्र गान और इसके बाद "हुर्रा!" गूंज उठा। लम्बे क़द और धंसी छाती वाला एक नौजवान अपने सिर के ऊपर नमदे का टोप और गुलदस्ता हिलाते हुए ऐसे सिर झुका रहा था कि उसकी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट हुए बिना नहीं रह सकता था। उसके पीछे से दो फ़ौजी अफ़सर और छज्जेदार गन्दी टोपी पहने बड़ी दाढ़ी वाला एक बूढ़ा भी अपने सिर आगे बढ़ाते हुए उन्हें झुका रहे थे।

(३)

प्रिंसेस से विदा लेकर कातावासोव के साथ, जो अब तक आ गया था, कोज़्निशेव ठसाठस भरे हुए डिब्बे में दाखिल हुआ और गाड़ी चल दी।

त्सारीत्सिनो स्टेशन पर युवा लोगों के सहगान-दल ने, जो 'तुम्हारा यश बढ़े' गाना गा रहे थे, गाड़ी का स्वागत किया। फिर से स्वयंसेवकों ने सिर बाहर निकाले और झुकाये। किन्तु कोज़्निशेव ने उनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। स्वयंसेवकों के साथ उसका इतना अधिक वास्ता रहा था कि वे किस ढंग के लोग हैं, वह अच्छी तरह जानता था और उसे उनमें दिलचस्पी नहीं रही थी। दूसरी ओर, कातावासोव, जिसे अपनी विद्वत्तापूर्ण व्यस्तता के कारण स्वयंसेवकों की ओर ध्यान देने का अवसर नहीं मिला था, उनमें बहुत दिलचस्पी ले रहा था और उसने कोज़्निशेव से उनके बारे में पूछताछ की।

कोज़्निशेव ने उसे सलाह दी कि दूसरे दर्जे के डिब्बे में जाकर ख़ुद उनसे बातचीत कर ले। अगले स्टेशन पर कातावासोव ने ऐसा ही किया।

गाड़ी के रुकते ही उसने दूसरे दर्जे के डिब्बे में जाकर स्वयंसेवकों

से परिचय किया। वे डिब्बे के कोने में बैठे हुए ऊंचे-ऊंचे बातें कर रहे थे और सम्भवतः जानते थे कि मुसाफ़िरों और डिब्बे में आनेवाले कातावासोव का ध्यान उन पर केन्द्रित है। सबसे अधिक ऊंचे तो लम्बे क़द और धंसी छाती वाला नौजवान बोल रहा था। वह स्पष्टतः शराब के नशे में था और अपने दफ़्तर में घटी हुई किसी घटना के बारे में बता रहा था। उसके सामने गार्डों की फ़ौजी वर्दी की आस्ट्रिया के ढंग की क़मीज़ पहने अधेड़ उम्र का एक अफ़सर बैठा था। वह मुस्कराता हुआ नौजवान की बातें सुन रहा था और जब-तब उसे रोकता-टोकता था। तोपचियों की वर्दी पहने एक और अफ़सर सूटकेस पर उनके निकट बैठा था। चौथा सो रहा था।

नौजवान से बातचीत करने पर कातावासोव को पता चला कि वह मास्को का धनी व्यापारी है, जिसने बाईस साल की उम्र होने तक बहुत-सा पैसा उड़ा दिया था। कातावासोव को वह इसलिये अच्छा नहीं लगा कि नाज़ुक, बिगड़ा हुआ और कमज़ोर था। उसे स्पष्टतः, ख़ास तौर पर अब नशे की हालत में, इस बात का पूरा यक़ीन था कि वह बड़ी बहादुरी का कारनामा कर रहा है और बहुत ही अप्रिय ढंग से अपनी शेख़ी बघार रहा था।

दूसरे, अवकाशप्राप्त अफ़सर का भी कातावासोव पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। पता चला कि इस आदमी ने ज़िन्दगी में सभी तरह के पापड़ बेले हैं। उसने रेलवे में काम किया था, कारिन्दा रहा था, ख़ुद भी फ़ैक्टरियां चलायी थीं, किसी तरह की आवश्यकता के बिना इन सभी चीज़ों की चर्चा चला रहा था और विद्वत्तापूर्ण शब्दों का बड़ा अटपटा उपयोग करता था।

इन दोनों से भिन्न तीसरा, यानी तोपची, कातावासोव को बहुत ही अच्छा लगा। वह बड़ा विनम्र और ख़ामोश क़िस्म का आदमी था, गार्ड सेना के अवकाशप्राप्त अफ़सर के ज्ञान और नौजवान व्यापारी के वीरतापूर्ण आत्मबलिदान से स्पष्टतः बहुत प्रभावित था और अपने बारे में कुछ नहीं कहता था। कातावासोव ने उससे जब यह पूछा कि किस चीज़ ने उसे सेर्बिया जाने की प्रेरणा दी है, तो उसने विनम्र-सा उत्तर दिया –

"सभी तो जा रहे हैं। सेर्बों की भी सहायता करनी चाहिये। दया आती है।"

"हां, आप जैसे तोपचियों की तो वहां ख़ास कमी है," कातावासोव ने कहा।

"मैंने बहुत थोड़े समय तक ही तोपची का काम किया है। हो सकता है कि पैदल या घुड़सेना में जगह मिल जाये।"

"पैदल सेना में किसलिये, जबकि तोपचियों की ही सबसे ज़्यादा ज़रूरत है?" कातावासोव ने तोपची की उम्र से यह अनुमान लगाते हुए कि उसका ख़ासा ऊंचा पद होना चाहिये, अपनी राय ज़ाहिर की।

"मैं तोपख़ाने में बहुत कम समय तक रहा हूं, अवकाशप्राप्त कैडेट हूं," उसने कहा और यह स्पष्ट करने लगा कि क्यों वह अभिजात सैनिक विद्यालय की परीक्षा नहीं दे पाया था।

इन सभी चीज़ों ने मिलकर कातावासोव के मन पर अप्रिय प्रभाव डाला और स्वयंसेवक जब शराब पीने के लिये स्टेशन पर उतरे, तो कातावासोव ने चाहा कि किसी से बातचीत करके अपने मन पर पड़ी इस बुरी छाप की जांच करे। फ़ौजी ओवरकोट पहने एक बूढ़ा मुसाफ़िर स्वयंसेवकों के साथ कातावासोव की बातचीत सुनता रहा था। डिब्बे में जब वे दोनों ही रह गये, तो कातावासोव ने उसे सम्बोधित किया।

"देखिये तो कितनी अलग-अलग सामाजिक स्थितिवाले लोग वहां जा रहे हैं," कातावासोव ने अपनी राय ज़ाहिर करने और साथ ही बुज़ुर्ग के विचार जानने के लिये अस्पष्ट ढंग से कहा।

बूढ़ा फ़ौजी आदमी था और दो युद्धों में भाग ले चुका था। उसे मालूम था कि फ़ौजी आदमी कैसा होता है और इन स्वयंसेवक महानुभावों की शक्ल-सूरत और बातचीत तथा जिस दिलेरी से ये शराब की बोतल की ओर लपकते थे, वह इन्हें बुरे फ़ौजी मानता था। इसके अलावा वह एक प्रान्तीय नगर का रहनेवाला था और यह बताना चाहता था कि फ़ौज से अलग किया गया एक सैनिक, जो पियक्कड़ और चोर था तथा जिसे कोई भी अपने यहां नौकरी देने को तैयार नहीं था, स्वयंसेवक बनकर मोर्चे पर चला गया था। किन्तु अपने अनुभव से यह जानते हुए कि समाज की तत्कालीन मनःस्थिति में सामान्य मत के विरुद्ध राय प्रकट करना और विशेषतः स्वयंसेवकों

को भला-बुरा कहना ख़तरनाक है, उसने भी कातावासोव के साथ बातचीत में बड़ी सावधानी से काम लिया।

"ख़ैर, वहां लोगों की ज़रूरत है," बूढ़े फ़ौजी ने आंखों में हंसते हुए कहा। दोनों ने नवीनतम सैनिक समाचार की चर्चा शुरू कर दी और दोनों एक-दूसरे के सामने इस बात की अपनी उलझन को छिपाते रहे कि यदि नवीनतम समाचार के अनुसार सभी मोर्चों पर तुर्कों को कुचल दिया गया है, तो अगले दिन किसके साथ लड़ाई लड़ी जायेगी। और इस तरह दोनों ही अपना मत व्यक्त किये बिना अलग हो गये।

अपने डिब्बे में लौटने पर कातावासोव ने अनचाहे ही कपट करते हुए कोज़्निशेव को स्वयंसेवकों के बारे में अपने मन पर अंकित हुए प्रभाव बताये, जिनसे यही नतीजा निकलता था कि वे बहुत बढ़िया जवान लोग हैं।

बड़े नगर के स्टेशन पर गानों और हुर्रा की आवाज़ों से फिर स्वयंसेवकों का स्वागत हुआ, फिर से चन्दा जमा करनेवाले पुरुष और नारियां डिब्बे लिये हुए दिखाई दिये, गुबेर्नियां की महिलाओं ने स्वयंसेवकों को गुलदस्ते भेंट किये और उनके पीछे-पीछे जलपान कक्ष में गयीं। किन्तु मास्को की तुलना में यह सब कम उत्साह और छोटे पैमाने पर हुआ।

(४)

गुबेर्नियां के मुख्य नगर के स्टेशन पर जलपान कक्ष में जाने के बजाय कोज़्निशेव प्लेटफ़ार्म पर इधर-उधर टहलने लगा।

व्रोन्स्की के डिब्बे के सामने से पहली बार गुज़रते हुए उसने देखा कि खिड़की पर पर्दा पड़ा है। किन्तु दूसरी बार वहीं से गुज़रने पर उसने बूढ़ी काउंटेस को खिड़की के पास देखा। काउंटेस ने कोज़्निशेव को अपने पास बुलाया।

"इसे कूर्स्क तक विदा करने जा रही हूं," काउंटेस ने कहा।

"हां, मैंने सुना है," कोज़्निशेव ने खिड़की के क़रीब रुकते और डिब्बे में झांकते हुए कहा। "कितना शानदार काम किया है यह उसने!" यह देखकर कि व्रोन्स्की डिब्बे में नहीं है, उसने इतना और जोड़ दिया।"

"ऐसी बदक़िस्मती के बाद वह और कर ही क्या सकता था?"

"कैसी भयानक बात हुई है!" कोज़्निशेव ने कहा।

"ओह, कैसी मुसीबत का सामना करना पड़ा है मुझे! आप भीतर आ जाइये न... ओह, कैसी मुसीबत का सामना करना पड़ा है मुझे!" कोज़्निशेव के भीतर आ जाने और उसके निकट सोफ़े पर बैठ जाने के बाद उसने दोहराया। "इसकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती! छः हफ़्तों तक उसने किसी से बात ही नहीं की और मेरे बेहद मिन्नत करने पर ही कुछ खाया-पिया। एक मिनट को भी उसे अकेले नहीं छोड़ा जा सकता था। हमने वे सभी चीज़ें उसकी पहुंच के बाहर कर दी थीं, जिनसे वह अपनी हत्या कर सकता था। हम पहली मंज़िल पर रहते थे, फिर भी हमें हर समय चिन्ता बनी रहती थी। आप तो जानते ही हैं कि इसी औरत के लिये वह एक बार पहले भी अपने को गोली मार चुका था," बुढ़िया ने कहा और इस बात के याद आने पर उसकी त्योरी चढ़ गयी। "हां, उसने अपना अन्त भी वैसे ही किया है, जैसी इस तरह की औरत से उम्मीद की सकती थी। मौत भी उसने घटिया और कमीनी चुनी।"

"इसका निर्णय हम नहीं कर सकते, काउंटेस," कोज़्निशेव ने निश्वास छोड़ते हुए कहा। "मगर मैं समझ सकता हूं कि आपके लिये यह कितनी बड़ी यातना थी।"

"ओह, कुछ न कहिये! मैं अपनी जागीर पर रह रही थी और अलेक्सेई भी मेरे पास था। उसके नाम रुक़्क़ा आया। उसने जवाब लिखकर भेज दिया। हमें बिल्कुल मालूम नहीं था कि वह ख़ुद भी यहीं स्टेशन पर थी। रात होने पर मैं अपने कमरे में गयी ही थी कि मेरी नौकरानी मेरी ने मुझे बताया कि स्टेशन पर एक महिला ने गाड़ी के नीचे आकर अपनी जान दे दी है। मेरा तो कलेजा धक से रह गया! मैं समझ गयी कि उसी ने ऐसा किया है। सबसे पहली बात मैंने यही कही कि अलेक्सेई को कोई भी यह ख़बर न बताये। मगर वे बता चुके थे। उसका कोचवान वहीं था और उसने सब कुछ अपनी आंखों से देखा था। जब मैं भागकर उसके कमरे में गयी, तो वह जैसे बिल्कुल बदल गया था – उसकी तरफ़ देखते हुए डर लगता था। मुंह से एक शब्द भी कहे बिना वह सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ

स्टेशन पर पहुंचा। वहां क्या हुआ, मुझे मालूम नहीं, मगर उसे मुर्दे की हालत में वहां से लाया गया। मैं उसे पहचान ही न सकती। डाक्टर का कहना था कि prostration complète* थी। बाद में लगभग उन्मादी की सी स्थिति हो गयी।

"ओह, क्या चर्चा की जाये!" काउंटेस ने हाथ झटककर कहा। "बहुत ही बुरा वक़्त था! चाहे कुछ भी क्यों न कहिये, बहुत बुरी औरत थी। ऐसे हताशापूर्ण भावावेश, यह भी कोई बात हुई! यह सब विशेष रूप से कुछ सिद्ध करने के लिये किया। सो उसने सिद्ध कर दिया। खुद को और दो अन्य बढ़िया आदमियों – अपने पति और मेरे बदक़िस्मत बेटे को बरबाद कर दिया।"

"उसके पति का क्या हाल है?" कोज़्निशेव ने पूछा।

"उसने उसकी बेटी ले ली है। अल्योशा शुरू में हर चीज़ के लिये सहमत था। मगर अब बहुत दुखी है कि उसने एक पराये व्यक्ति को अपनी बेटी दे दी। अपना वचन वह वापस ले नहीं सकता। दफ़न के वक़्त कारेनिन आया था। किन्तु हमने कोशिश की कि अल्योशा के साथ उसकी भेंट न हो। उसके लिये, पति के लिये, इसे सहन करना कुछ आसान ही है। उसने उसे मुक्त कर दिया था। किन्तु मेरे बेचारे बेटे ने तो अपने को पूरी तरह उसे ही समर्पित कर दिया था। अपना कैरियर छोड़ा, मुझे छोड़ा और उसने उस पर फिर भी दया नहीं की, जान-बूझकर उसे पूरी तरह मार ही डाला। चाहे कुछ भी कहिये, उसकी मौत भी – दीन-धर्म के बिना एक भयानक नारी की मौत है। भगवान मुझे क्षमा करें, मगर अपने बेटे को ऐसे बरबाद हुए देखकर मैं उस औरत की याद से नफ़रत किये बिना नहीं रह सकती।"

"लेकिन अब उसकी कैसी हालत है?"

"यह तो भगवान ने हमारी मदद की – इस सेर्बिया की जंग ने हमारी सहायता की। मैं बूढ़ी औरत हूं, इस मामले को कुछ नहीं समझती, मगर उसके लिये तो भगवान ने ही इसे भेजा है। ज़ाहिर है कि मां के नाते मेरा दिल डरता है और, जैसा कि सुनने में आया है,

---

*पूर्ण अवसन्नता। (फ़्रांसीसी)

ce n'est pas très bien vu à Petersbourg.* लेकिन किया क्या जाये! सिर्फ़ यही एक चीज़ उसे उबार सकी। उसका दोस्त याश्विन जुए में सब कुछ हार गया और सेर्बिया की लड़ाई में जाने को तैयार हो गया। वह उसके पास आया और उसे भी ऐसा करने को राज़ी कर लिया। अब इस चीज़ में उसकी दिलचस्पी है। कृपया आप उससे बात करें। मैं चाहती हूं कि उसका ध्यान बंटाया जाये। वह बहुत ही उदास है। एक और मुसीबत आ गयी कि उसके दांतों में दर्द होने लगा है। आपसे मिलकर उसे बहुत ख़ुशी होगी। कृपया उससे बात करें, वह इस तरफ़ घूम रहा है।"

कोज़्निशेव ने कहा कि वह ख़ुशी से ऐसा करेगा और गाड़ी के दूसरी ओर चला गया।

(५)

प्लेटफ़ार्म पर रखी बोरियों के ढेर की सन्ध्याकालीन तिरछी छाया में लम्बा कोट पहने, टोप को आंखों पर झुकाये और हाथ जेबों में डाले व्रोन्स्की पिंजरे में बन्द दरिन्दे की तरह इधर-उधर आ-जा रहा था और बीस क़दमों पर तेज़ी से वापस घूम जाता था। व्रोन्स्की के निकट जाने पर कोज़्निशेव को ऐसा लगा कि वह उसे देख रहा है, मगर ऐसे ज़ाहिर कर रहा है, मानो न देख रहा हो। कोज़्निशेव को इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। व्यक्तिगत रूप से व्रोन्स्की के विरुद्ध उसके मन में किसी तरह का मैल नहीं था।

कोज़्निशेव की दृष्टि में व्रोन्स्की इस समय एक महान ध्येय के लिये एक महत्त्वपूर्ण कार्यकर्त्ता था और उसकी हिम्मत बढ़ाना तथा उसके इस काम की प्रशंसा करना वह अपना कर्त्तव्य मानता था। वह उसके पास गया।

व्रोन्स्की रुका, उसने ग़ौर से कोज़्निशेव को देखा, पहचाना और कुछ क़दम उसकी ओर आकर बहुत ही तपाक से उसके साथ हाथ मिलाया।

---

*पीटर्सबर्ग में इसे पसन्द नहीं किया जा रहा है। (फ़्रांसीसी)

"शायद आप मुझसे मिलना नहीं चाहते," कोज़्निशेव ने कहा, "लेकिन क्या मैं आपके किसी काम नहीं आ सकता?"

"अन्य किसी से भी मिलना मुझे इतना कम बुरा न लगता, जितना आपसे," व्रोन्स्की ने जवाब दिया। "मैं माफ़ी चाहता हूं। मेरे जीवन में कुछ भी मधुर नहीं है।"

"मैं यह समझता हूं और आपके लिये किसी तरह उपयोगी होना चाहता हूं," कोज़्निशेव ने व्रोन्स्की के स्पष्टतः व्यथित चेहरे को ध्यान से देखते हुए कहा। "आपको रीस्तिच या मीलन के नाम पत्र की तो ज़रूरत नहीं?"

"ओह, नहीं!" बड़ी मुश्किल से यह बात समझ पाते हुए व्रोन्स्की ने कहा। "यदि आपको आपत्ति न हो, तो हम चहलक़दमी करेंगे। रेल के डिब्बों में बड़ी उमस है। पत्र? नहीं, शुक्रिया। मरने के लिये सिफ़ारिश की ज़रूरत नहीं। हां, तुर्कों के नाम हो, तो बात दूसरी है..." केवल होंठों से ही मुस्कराते हुए उसने कहा। आंखों में क्रोधपूर्ण व्यथा का भाव बना रहा।

"किन्तु शायद आपके लिये ऐसे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित करना, जो ज़रूरी होगा, आसान रहेगा, जिससे पत्र द्वारा आपका परिचय करवा दिया गया हो। ख़ैर, जैसा आप ठीक समझें। आपके मोर्चे पर जाने के निर्णय के बारे में सुनकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई थी। स्वयंसेवकों के बारे में इतना कुछ उल्टा-सीधा कहा गया है कि आप जैसे व्यक्ति की बदौलत वे समाज की नज़रों में ऊंचे उठ जायेंगे।"

"व्यक्ति के रूप में मैं इसलिये काम का हूं," व्रोन्स्की ने कहा, "कि मेरे लिये ज़िन्दगी की कोई क़ीमत नहीं। मुझमें दुश्मन की क़तारों में घुस जाने, उन्हें मिटा देने या ख़ुद मिट जाने के लिये काफ़ी ताक़त है — यह मैं जानता हूं। मैं ख़ुश हूं कि किसी काम के लिये अपनी ज़िन्दगी दे सकता हूं, जिसकी मुझे न केवल ज़रूरत ही नहीं है, बल्कि जिससे मैं नफ़रत भी करता हूं। किसी के काम आ जायेगी।" — और उसने लगातार टीसते तथा उस ढंग से बोलने में, जैसे वह चाहता था, बाधा डालनेवाले दांत के कारण जबड़े को बेचैनी से हिलाया-डुलाया।

"मैं आपको अभी कहे देता हूं कि आपका नया जन्म हो जायेगा,"

कोज़्निशेव ने भाव-विह्वल होकर कहा। "अपने भाइयों को जुए से मुक्ति दिलाना एक ऐसा ध्येय है, जिसके लिये जीने और मरने में भी तुक है। भगवान आपको लड़ाई में सफलता और मानसिक शान्ति दें," उसने अन्तिम शब्द और जोड़ दिये तथा व्रोन्स्की की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

व्रोन्स्की ने अपनी ओर बढ़े हुए कोज़्निशेव के हाथ को तपाक से दबाया।

"हां, एक साधन के रूप में मैं काम आ सकता हूं, मगर इन्सान के रूप में खण्डहर हूं," उसने धीरे-धीरे कहा।

मज़बूत दांत का कसकता हुआ दर्द, जिससे उसका मुंह थूक से भर जाता था, उसके बात करने में बाधक हो रहा था। वह कोयले-पानी के डिब्बे के धीरे-धीरे और रवानी से रेलों पर चलते आ रहे पहियों को देखता हुआ चुप हो गया।

और अचानक दर्द ने नहीं, बल्कि यातनापूर्ण आन्तरिक बेचैनी ने उसे क्षण भर को दांत के दर्द के बारे में भूल जाने को विवश कर दिया। कोयले-पानी के डिब्बे और रेल-लाइनों को देखकर तथा उस व्यक्ति के साथ बातचीत के प्रभावस्वरूप, जिससे अपने दुर्भाग्य के बाद उसकी भेंट नहीं हुई थी, उसे सहसा "उसकी" या शायद यों कहना बेहतर होगा कि उस समय "उसका" जो कुछ शेष रह गया था, जब वह पागल की तरह रेलवे स्टेशन पर भागा गया था, उसकी याद आ गयी – पराये लोगों के बीच बेहयाई से मेज़ पर पड़ा हुआ लहू-लुहान जिस्म, जो कुछ ही समय पहले तक जीवित होने के कारण अभी तक गर्म था। भारी चोटियों और कनपटियों पर घुंघराले बालों वाला पीछे को लटका सिर, जो बिल्कुल सही-सलामत था, और अध-खुले लाल मुंह वाले बहुत ही सुन्दर चेहरे पर वह अजीब-सा भाव, जो होंठों पर दयनीयता और खुली रह गयी आंखों में भयानकता लिये था, मानो उनके अन्तिम झगड़े के समय कहे गये उसके इन शब्दों को अभिव्यक्त कर रहा था कि वह पछतायेगा।

और उसने उसे उस रूप में स्मरण करने का प्रयत्न किया, जिस रूप में स्टेशन पर ही हुई पहली भेंट के समय पाया था – रहस्यपूर्ण, बहुत ही कमनीय, प्रेमपूर्ण, सुख पाने और सुख देने के लिये आतुर, न कि कठोर और प्रतिशोध की इच्छुक, जैसी कि वह अन्तिम समय

में उसे याद रह गयी थी। उसने उसके साथ बिताये गये मधुर क्षणों को याद करने का प्रयास किया, किन्तु इन क्षणों में सदा के लिये ज़हर घुल गया था। उसे वह ऐसी विजेत्री के रूप में ही याद आयी, जिसने अमिट पश्चाताप की उस धमकी को, जिसकी किसी को आवश्यकता नहीं थी, व्यावहारिक रूप दे दिया था। दांत का दर्द अब उसे महसूस नहीं हो रहा था और सिसकियों से उसका चेहरा विकृत हो गया था।

बोरियों के ढेर के पास चुपचाप एक-दो चक्कर लगाने और अपने को सम्भालने के बाद उसने शान्ति से कोज़्निशेव को सम्बोधित किया –

"कल के बाद आपको कोई नया समाचार नहीं मिला न? हां, तीन बार उनके दांत खट्टे कर दिये गये हैं, मगर निर्णायक लड़ाई तो कल होनेवाली है।"

और मीलन के सम्राट घोषित किये जाने तथा इसके फलस्वरूप सम्भव होनेवाले बहुत ही महत्त्वपूर्ण परिणामों की चर्चा करने के बाद दूसरी घण्टी बजने पर वे अपने-अपने डिब्बों में लौट गये।

(६)

यह न जानते हुए कि मास्को से कब गांव जाना सम्भव होगा कोज़्निशेव ने अपने भाई लेविन को इस आशय का तार नहीं भेजा था कि कोई स्टेशन पर आ जाये। स्टेशन से किराये पर ली हुई घोड़ा-गाड़ी में कोज़्निशेव और कातावासोव रास्ते की धूल से लथ-पथ तथा नीग्रो की तरह काले होकर जब दिन के बारह बजे पोक्रोव्स्कोये गांव के घर के दरवाज़े पर पहुंचे, तो लेविन घर में नहीं था। अपने पिता और बहन के साथ छज्जे में बैठी हुई कीटी ने अपने जेठ को पहचान लिया और उसके स्वागत को भागी हुई नीचे गयी।

"आपको शर्म आनी चाहिये कि अपने आने की ख़बर नहीं दी," कोज़्निशेव से हाथ मिलाते और चूमने के लिये माथा उसकी ओर बढ़ाते हुए कीटी ने कहा।

"हम ख़ूब मज़े में पहुंच गये और आप लोगों को कोई तकलीफ़ नहीं हुई," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया। "मुझ पर इतनी धूल-मिट्टी

पड़ी हुई है कि तुम्हें छूते हुए घबराता हूं। मैं इतना अधिक व्यस्त था कि कब वहां से निकल पाऊंगा, नहीं जानता था। और आप लोग पहले की तरह अपनी अलग-थलग दुनिया में सुख-शान्ति की ज़िन्दगी बिता रहे हैं," उसने मुस्कराकर कहा। "और हमारे ये मित्र फ़्योदोर वसील्येविच भी आख़िर यहां आ ही गये।"

"मैं नीग्रो नहीं हूं, हाथ-मुंह धोने के बाद फिर इन्सान जैसा हो जाऊंगा," कातावासोव ने अपने सामान्य विनोदी ढंग से हाथ मिलाते और धूल से काले हुए चेहरे के कारण विशेष रूप से चमकते दांतों की झलक देते हुए मुस्कराकर कहा।

"कोस्त्या को बहुत ख़ुशी होगी। वह फ़ार्म पर गया है। आनेवाला ही होगा।"

"खेतीबारी में ही लगा हुआ है। अपनी अलग-थलग दुनिया में," कातावासोव ने कहा। "और हमें शहर में सेर्बिया की जंग के सिवा और कुछ दिखाई ही नहीं देता। और मेरे दोस्त की इस बारे में क्या राय है? निश्चय ही और लोगों जैसी तो नहीं?"

"वैसी ही, और लोगों जैसी ही राय है उसकी," तनिक परेशानी से कोज़्निशेव की ओर देखते हुए कीटी ने उत्तर दिया। "तो मैं कोस्त्या को बुला लाने के लिये किसी को भेज देती हूं। हमारे यहां पापा आये हुए हैं। वे अभी-अभी विदेश से लौटे हैं।"

और लेविन को बुला लाने तथा एक मेहमान को अध्ययन-कक्ष तथा दूसरे को डौली के बड़े कमरे में हाथ-मुंह धोने के लिये ले जाने और नाश्ता तैयार करवाने की हिदायतें देकर कीटी तेज़ी से चलने-फिरने के अपने अधिकार का उपयोग करते हुए, जिससे वह गर्भावस्था के समय वंचित कर दी गयी थी, छज्जे की ओर भाग गयी।

"सेर्गेई इवानोविच और प्रोफ़ेसर कातावासोव आये हैं," उसने कहा।

"ओह, ऐसी गर्मी में यह तो मुसीबत है!" प्रिंस ने कहा।

"नहीं, पापा, वह बहुत अच्छा आदमी है और कोस्त्या को बहुत पसन्द है," कीटी ने पापा के चेहरे पर व्यंगात्मक भाव देखकर मानो उससे किसी बात का अनुरोध करते हुए मुस्कराकर कहा।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

"मेरी प्यारी, तुम जाकर ज़रा उनकी चिन्ता करो," कीटी ने बहन से कहा। "उनकी स्टेशन पर स्तीवा से मुलाक़ात हुई थी, वह ठीक-ठाक है। मैं मीत्या के पास भागती हूं। मैंने, मुसीबत की मारी ने, नाश्ते के बाद उसे दूध नहीं पिलाया। वह अब जाग गया होगा और ज़रूर ही चिल्ला रहा होगा।" और स्तनों में दूध उतरता हुआ अनुभव करके वह तेज़ क़दमों से बच्चे के कमरे की तरफ़ चल दी।

वास्तव में ही उसने अनुमान नहीं लगाया था (शिशु और उसके बीच अभी सम्पर्क-सूत्र बना हुआ था), बल्कि अपने स्तनों में दूध के प्रवाह से यक़ीनी तौर पर यह जान लिया था कि बेटा भूखा है।

बाल-कक्ष के निकट पहुंचने के पहले ही वह जानती थी कि मीत्या चिल्ला रहा है। और वास्तवं में ऐसा ही था। उसकी आवाज़ सुनकर उसने अपनी चाल और तेज़ कर दी। किन्तु वह जितनी तेज़ी से चलती थी, बेटा उससे अधिक ज़ोर से चिल्लाता था। यह अच्छी, स्वस्थ बच्चे की आवाज़ थी, मगर भूख और बेसब्री को ज़ाहिर करनेवाली।

"आया, यह बहुत देर से, बहुत देर से जागा हुआ है क्या?" कीटी ने कुर्सी पर बैठते और दूध पिलाने के लिये तैयार होते हुए जल्दी-जल्दी पूछा। "इसे जल्दी से मुझे दो। ओह, आया, कितनी सुस्त हैं आप, इसकी टोपी बाद में बांध दें!"

बच्चा भूख के कारण गला फाड़कर चिल्ला रहा था।

"नहीं, ऐसा करना तो ठीक नहीं है, मालकिन," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने कहा, जो लगभग हमेशा ही बाल-कक्ष में विद्यमान रहती थी, "इसे ढंग से कपड़े-लत्ते पहना लेने चाहिये। आ, आ!" मां की तरफ़ कोई ध्यान दिये बिना वह बच्चे के निकट जाकर लोरी-सी गाने लगी।

आया बच्चे को मां के पास ले चली। अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना स्नेह-द्रवित चेहरे के साथ उसके पीछे-पीछे हो ली।

"जानता है, जानता है। भगवान साक्षी है, येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना, उसने मुझे पहचान लिया है!" अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने बच्चे के चीख़ने-चिल्लाने से अपनी आवाज़ अधिक ऊंची करते हुए कहा।

किन्तु कीटी उसके शब्द नहीं सुन रही थी। बच्चे की उतावली की तरह उसकी अपनी उतावली भी बढ़ती जा रही थी।

इसी उतावली के कारण देर तक बात नहीं बनी। बच्चा स्तन को मुंह में नहीं ले पा रहा था और खीझता था।

आख़िर बेदम होते हुए ज़ोर से चीख़ने और उच्छू आने के बाद बच्चे ने स्तन मुंह में ले लिया, मां-बच्चे को एकसाथ चैन मिला और दोनों शान्त हो गये।

"यह बेचारा भी पसीने-पसीने हो गया है," बच्चे को छूते हुए कीटी ने फुसफुसाकर कहा। "आप ऐसा क्यों सोचती हैं कि वह आपको पहचानता है?" कीटी ने आगे को खिसक आई टोपी के नीचे से, जैसा कि उसे लगा धूर्त्ततापूर्वक देखती हुई बच्चे की आंखों, समगति से फूलते गालों और लाल हथेलीवाले छोटे-से हाथ को, जिससे वह चक्र-से बना रहा था, कनखियों से देखते हुए अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना से पूछा।

"ऐसा नहीं हो सकता! अगर पहचान सकता, तो मुझे ही पहचानता," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना के फिर से ऐसा दावा करने पर कीटी ने कहा और मुस्करा दी।

कीटी इसलिये मुस्करायी कि यद्यपि वह यह कह रही थी कि बच्चा उसे नहीं पहचान सकता, तथापि मन में यह जानती थी कि वह केवल अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना को ही नहीं पहचानता, बल्कि सब कुछ जानता और समझता है तथा बहुत कुछ ऐसा जानता और समझता है, जो अन्य कोई नहीं जानता, और वह ख़ुद, बच्चे की मां भी केवल उसी की बदौलत वह सब जान और समझ पायी है। अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना, आया, नाना और अपने पिता के लिये भी मीत्या एक प्राणी था, जो केवल भौतिक देखभाल की मांग करता था, किन्तु मां के लिये वह बहुत पहले से ही विशेष नैतिक लक्षण रखनेवाला जीव था, जिसके साथ उसके मानसिक सम्बन्धों की पूरी कहानी विद्यमान थी।

"भगवान ने चाहा तो उसके जागने पर आप स्वयं ही देख लेंगी। मैं जैसे ही यों करती हूं, वह मेरा लाड़ला खिल उठता है। उज्ज्वल भोर की भांति खिल उठता है," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने कहा।

"अच्छी बात है, अच्छी बात है, तब देख लेंगे," कीटी ने फुसफुसाकर कहा। "अब जाइये, उसकी आंख लग रही है।"

(७)

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना दबे पांव बाहर चल गयी, आया ने पर्दा नीचे गिरा दिया, पलंग के ऊपर तने मलमल के चंदवे के नीचे से मक्खियों और खिड़की के शीशे से टकराते हुए ततैये को बाहर निकाला और बैठकर भोज की मुरझायी टहनी से मां-बेटे को पंखा झलने लगी।

"ओह गर्मी, कैसी गर्मी है! भगवान करें, कुछ पानी ही बरस जाये," उसने कहा।

"हां, हां, शी..." कीटी ने केवल इतना ही उत्तर दिया और तनिक हिल-डुलकर मीत्या के छोटे से गुदगुदे हाथ को प्यार से दबाया, जिसे मानो धागे के टुकड़े से कलाई के गिर्द कसकर बांध दिया गया था और जिसको वह अपनी प्यारी आंखों को कभी खोलते और कभी बन्द करते हुए अभी भी धीरे-धीरे हिला रहा था। यह हाथ कीटी को परेशान कर रहा था। वह उसे चूमना चाहती थी, मगर इसलिये ऐसा करते हुए डरती थी कि बच्चा कहीं जाग न जाये। आख़िर हाथ का हिलना-डुलना बन्द हो गया और बच्चे की आंखें मुंद गयीं। स्तन-पान जारी रखते हुए बच्चा केवल कभी-कभी अपनी लम्बी, कमान की तरह टेढ़ी बरौनियों को ऊपर उठाकर अध-अंधेरे कमरे में काली और नम प्रतीत होनेवाली आंखों से मां की ओर देख लेता। आया ने भोज की टहनी से पंखा झलना बन्द कर दिया और ऊंघ गयी। ऊपर की मंज़िल से बूढ़े प्रिंस की ऊंची आवाज़ और कातावासोव का ज़ोर से हंसना सुनायी दिया।

"लगता है कि मेरे बिना ही उनके बीच पटरी बैठ गयी है," कीटी ने सोचा, "फिर भी बड़ी बुरी बात है कि कोस्त्या घर पर नहीं है। ज़रूर फिर से मधुमक्खी पालक के यहां चला गया होगा। बेशक यह अफ़सोस की बात है कि वह अक्सर वहां जाता है, फिर भी मैं ख़ुश हूं। इससे उसका मन बहलता है। वसन्त के दिनों की तुलना में वह अब बेहतर और अधिक ख़ुश नज़र आता है।

तब तो वह इतना उदास और ऐसे व्यथित रहता था कि मुझे उसके लिये भय अनुभव होने लगा था। और कैसा अजीब है वह!" कीटी मुस्कराते हुए फुसफुसायी।

वह जानती थी कि कौन-सी चीज़ उसके पति को यातना देती रहती थी। यह उसकी नास्तिकता थी। अगर उससे यह कहा जाता कि भगवान में आस्था न हो पाने पर अगले जीवन में कोस्त्या का बुरा हाल होगा, तो उसे सहमत होना पड़ता कि उसका बुरा हाल होगा। फिर भी उसकी अनास्था से वह परेशान नहीं होती थी। यह मानते हुए कि नास्तिक के लिये कोई मुक्ति-मार्ग नहीं और अपने पति की आत्मा को दुनिया में सबसे अधिक प्यार करते हुए भी वह मुस्कान के साथ उसकी नास्तिकता के बारे में सोचती और अपने आपसे कहती थी कि वह अजीब है।

"किसलिये वह सारा साल दर्शनशास्त्र की किताबें पढ़ता रहता है?" वह सोच रही थी। "अगर यह सब कुछ इन किताबों में लिखा है, तो वह समझ सकता है। अगर उनमें सचाई नहीं है, तो उन्हें पढ़ा ही क्यों जाये? वह खुद यह कहता है कि भगवान में विश्वास करना चाहता है। तो किसलिये विश्वास नहीं करता? शायद इसीलिये कि बहुत अधिक सोचता है? और सोचता इसलिये अधिक है कि अकेला, हमेशा अकेला ही रहता है। हम लोगों के साथ वह सारी बात नहीं कर सकता। मेरे ख़्याल में इन मेहमानों, विशेषतः कातावासोव के आने से उसे ख़ुशी होगी। उसके साथ विचार-विनिमय करना उसे अच्छा लगता है," उसने सोचा और उसी समय उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि कातावासोव के सोने की व्यवस्था करना कहां अधिक सुविधाजनक होगा – अलग कमरे में या कोज़्निशेव के साथ ही। इस विचार के आते ही सहसा एक अन्य विचार भी उसके मस्तिष्क में कौंध गया, जिसने उसे व्याकुलता से सिहरने और मीत्या की नींद में भी ख़लल डालने को विवश कर दिया, जिसने इसी कारण कड़ाई से कीटी की तरफ़ देखा। "लगता है कि धोबिन कपड़े नहीं लाई और मेहमानों के बिस्तरों के लिये धुली हुई चादरें और गिलाफ़ नहीं हैं। अगर मैं कहूंगी नहीं, तो अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना कोज़्निशेव के बिस्तर पर इस्तेमाल की हुई चादर बिछा देगी," और इस ख़्याल से ही उसके गाल लाल हो उठे।

"हां, मैं उसे हिदायत दे दूंगी," उसने निर्णय किया और अपने पहले विचारों की ओर लौटते हुए उसे याद आया कि कोई महत्त्वपूर्ण,

घनिष्ठ मानसिक बात रह गयी है, जिस पर उसने अन्त तक विचार नहीं किया था और वह याद करने लगी। "हां, नास्तिक कोस्त्या," उसे फिर मुस्कराते हुए स्मरण हो आया।

"हां, नास्तिक है! यही ज़्यादा अच्छा है कि वह मदाम श्ताल जैसा या जैसी कि मैं विदेश में बनना चाहती थी, वैसा बनने के बजाय हमेशा ऐसा ही बना रहे। नहीं, वह ढोंग नहीं करेगा।"

और कुछ ही समय पहले सामने आया हुआ उसकी उदारता का एक लक्षण उसके सम्मुख सजीव हो उठा। दो सप्ताह पहले डौली को ओब्लोन्स्की का पश्चातापपूर्ण पत्र मिला था। उसमें उसने इस बात की मिन्नत की थी कि वह उसकी इज़्ज़त बचा ले, अपनी जागीर बेचकर उसके ऋण चुका दे। डौली बहुत बुरी तरह परेशान हो उठी, अपने पति से उसे घृणा हुई, उसे तिरस्कार से देखने लगी, उस पर दया आई, तलाक़ लेने और इन्कार कर देने का निर्णय किया, मगर अन्त में अपनी जागीर का एक भाग बेचने के लिये राज़ी हो गयी। इसके बाद कीटी को बरबस ही स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ अपने पति की परेशानी की याद हो आयी, कैसे उसने उसके मन पर छाये हुए इस प्रश्न को उठाने के अनेक बार अटपटे प्रयास किये और आख़िर डौली के मन को ठेस लगाये बिना उसकी सहायता का एकमात्र साधन ढूंढ़ते हुए कीटी के सामने यह सुझाव रखा कि वह डौली को अपने हिस्से की जागीर दे दे और कीटी को यह बात नहीं सूझी थी।

"वह भी कोई नास्तिक है? उसके जैसा दिल रखनेवाला, बच्चे तक का दिल दुखाते हुए डरनेवाला! सब कुछ औरों के लिये, अपने लिये कुछ भी नहीं। सेर्गेई इवानोविच यही समझता है कि उसका कारिन्दा होना कोस्त्या का कर्त्तव्य है। उसकी बहन भी ऐसा ही मानती है। अब डौली और उसके बच्चों की भी वही सरपरस्ती कर रहा है। वे सभी किसान भी, जो हर दिन उसके पास आते हैं, मानो उनकी सेवा करना भी उसका कर्त्तव्य है।"

"हां, तुम भी ऐसा ही बनना, जैसा तुम्हारा पिता है, ऐसा ही," मीत्या को आया को सौंपते और उसके गाल से होंठ छुआते हुए उसने कहा।

(८)

उस क्षण से, जब लेविन ने मृत्यु-शय्या पर पड़े प्यारे भाई को देखते हुए पहली बार जीवन और मृत्यु के प्रश्नों को, उसके शब्दों में, उन नई आस्थाओं के अनुसार देखना शुरू किया, जिन्होंने बीस से चौंतीस वर्ष की आयु में अनजाने ही उसके बचपन तथा किशोरावस्था के विश्वासों की जगह ले ली थी, उस क्षण से वह मौत के सम्बन्ध में तो इतना नहीं, जितना ज़िन्दगी के बारे में – कि उसका स्रोत क्या है, उद्देश्य क्या है, वह किसलिये है और उसका रूप क्या है – मामूली-से ज्ञान के अभाव के कारण स्तम्भित रह गया। शरीर, उसका नाश, पदार्थ की अनश्वरता, शक्ति-संरक्षण का नियम, विकास – ये वे शब्द थे, जिन्होंने उसके पहले के विश्वास का स्थान ले लिया था। ये शब्द और इनके साथ जुड़ी हुई धारणायें बौद्धिक लक्ष्यों की दृष्टि से तो बहुत अच्छी थीं, किन्तु जीवन के लिये कुछ भी नहीं देती थीं। लेविन ने अचानक अपने को ऐसे व्यक्ति की स्थिति में अनुभव किया, जो फ़र-कोट के बदले में मलमल की पोशाक लेकर पहन लेता है और पहली बार पाले में जाने पर तर्क-वितर्क से नहीं, बल्कि अपने समूचे व्यक्तित्व से यह मानने को विवश हो जाता है कि वह नंगे जैसा ही है और उसका अवश्य ही यातनापूर्ण अन्त हो जायेगा।

उस क्षण से, यद्यपि लेविन को इस बात की चेतना नहीं थी और वह पहले की तरह ही अपना जीवन बिताता रहा, वह अपनी इस अज्ञानता के कारण निरन्तर भय अनुभव करता रहा था।

इसके अतिरिक्त वह अस्पष्ट रूप से यह भी अनुभव करता था कि जिस चीज़ को वह अपने विश्वास कहता था, वह केवल अज्ञानता ही नहीं, बल्कि सोचने का ऐसा ढंग था, जिसके अनुसार वह ज्ञान पाना सम्भव ही नहीं था, जिसकी उसे आवश्यकता थी।

शादी के बाद के पहले समय में नई ख़ुशियों और ज़िम्मेदारियों ने इन विचारों को पूरी तरह से उसके दिमाग़ से निकाल दिया, किन्तु पिछले समय में पत्नी के प्रसवकाल की समाप्ति के बाद, जब वह किसी काम के बिना मास्को में रह रहा था, यह प्रश्न अधिकाधिक बार तथा अधिकाधिक ज़ोर से समाधान की मांग करने लगा।

उसके सामने प्रश्न यह था – "यदि मैं उन उत्तरों को स्वीकार नहीं करता हूं, जो मेरे जीवन के बारे में ईसाई धर्म देता है, तो मैं किन उत्तरों को मान्यता देता हूं?" और उसे अपनी मान्यताओं के पूरे भण्डार में न केवल कोई उत्तर ही, बल्कि उनसे मिलता-जुलता भी कुछ नहीं मिल सका।

वह उस व्यक्ति के समान था, जो खिलौनों और बन्दूक़ों की दुकानों पर खाने-पीने की चीज़ों की खोज करता हो।

अनचाहे और अचेतन रूप से वह अब हर पुस्तक, हर बातचीत और हर व्यक्ति में इन प्रश्नों से सम्बन्धित रवैये और इनके समाधान ढूंढ़ता।

इस सिलसिले में जिस बात से उसे सबसे बड़ी हैरानी और दुख होता, वह यह थी कि उसके हलक़े और उम्र के लोग उसी की भांति अपनी पहली मान्यताओं की जगह नई आस्थाओं को स्वीकार करके उसमें कोई परेशानी नहीं अनुभव करते थे और पहले की भांति ही बिल्कुल ख़ुश और शान्त थे। तो इस तरह मुख्य प्रश्न के अतिरिक्त उसे ये प्रश्न भी परेशान करते थे – ऐसे लोग निष्कपट हैं या नहीं? वे ढोंग तो नहीं करते? या फिर उसकी तुलना में वे अधिक स्पष्टता से उन उत्तरों को समझते हैं, जो उसे विह्वल करनेवाले प्रश्नों के लिये विज्ञान प्रस्तुत करता है? और वह इन लोगों के विचारों तथा इन उत्तरों को अभिव्यक्ति देनेवाली किताबों को बहुत ध्यान से पढ़ता।

जब से ये प्रश्न उसके मन का मन्थन करने लगे थे, तब से उसे यह पता चल गया था कि अपनी किशोरावस्था, अपने विश्वविद्यालय के हलक़े से सम्बन्धित स्मृतियों के आधार पर ऐसा निष्कर्ष निकालकर उसने ग़लती की थी कि धर्म का समय बीत चुका है और अब उसका कोई अस्तित्व नहीं रहा। अच्छा जीवन बितानेवाले और उसके सभी घनिष्ठ लोग भगवान में आस्था रखते थे। बूढ़े प्रिंस, ल्वोव, जो उसे बेहद पसन्द था, कोज़्निशेव भी, सभी महिलायें और उसकी पत्नी भी वैसे ही आस्था रखती थी, जैसे वह अपने बचपन की पहली अवस्था में। रूसी जनता के निन्यानवे प्रतिशत लोग, ऐसे साधारण लोग आस्थावान थे, जिनका जीवन उसके मन में अधिकतम आदर-भावना पैदा करता था।

दूसरी बात यह थी कि बहुत-सी किताबें पढ़ने पर उसे इस बात का विश्वास हो गया था कि उसके समान दृष्टिकोण रखनेवाले लोग अपने विचारों को उससे कुछ अधिक नहीं समझते थे और अपने लिये कुछ भी स्पष्ट किये बिना उन प्रश्नों की ही अवहेलना कर देते थे, जिनके उत्तर पाये बिना उसे यह अनुभव होता था कि वह ज़िन्दा नहीं रह सकता और बिल्कुल दूसरी ही समस्यायें हल करने की कोशिश करते थे, जिनमें उसे दिलचस्पी नहीं हो सकती थी। उदाहरण के लिये ऐसी समस्यायें थीं – प्राणियों का विकासक्रम और आत्मा की यन्त्रवत व्याख्या, आदि।

इसके अलावा पत्नी के प्रसवकाल में उसके लिये एक असाधारण बात हुई थी। वह नास्तिक व्यक्ति भगवान को याद करने लगा था और ऐसा करते समय उसमें आस्था रख रहा था। वह समय बीत गया और अपनी उस समय की मनःस्थिति को वह अपने जीवन में कोई स्थान नहीं दे पा रहा था।

वह इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता था कि तब सत्य को जानता था और अब भूल कर रहा है, क्योंकि जैसे ही वह शान्त मन से इसके बारे में सोचना आरम्भ करता था, सब कुछ खण्ड-खण्ड होकर बिखर जाता था। वह यह भी नहीं स्वीकार सकता था कि उससे तब भूल हुई थी, क्योंकि अपनी उस समय की मनःस्थिति को मूल्य-वान मानता था और उसे दुर्बलता का परिणाम कहकर वह उन क्षणों को कलुषित कर देता। वह स्वयं अपने मानसिक द्वन्द्व की यातना का शिकार था और इससे मुक्ति पाने के लिये अपनी आत्मा का पूरा ज़ोर लगा रहा था।

(९)

ये विचार उसे कभी बहुत अधिक और कभी कम परेशान तथा व्यथित करते, मगर हमेशा उसके दिमाग़ में बने रहते। वह पढ़ता और सोचता और जितना अधिक पढ़ता तथा सोचता, ख़ुद को अपने ध्येय से उतना ही अधिक दूर अनुभव करता।

यह विश्वास हो जाने पर कि भौतिकवादियों से उसे उत्तर नहीं

मिलेगा, उसने पिछले समय में मास्को और देहात में प्लाटो, स्पिनोज़ा, कान्ट, शेलिंग, हेगेल और शोपेनहार – यानी उन दार्शनिकों को पढ़ा और फिर से पढ़ा, जो जीवन की भौतिकवादी ढंग से व्याख्या नहीं करते हैं।

वह जब इन्हें पढ़ता या दूसरों की शिक्षा, विशेषतः भौतिकवादियों की शिक्षा के खण्डन के तर्क सोचता, तो उसे ये विचार फलप्रद लगते। किन्तु ज्योंही वह समस्याओं के समाधान के बारे में पढ़ता या स्वयं ऐसे समाधानों के बारे में सोचता, तो हमेशा एक ही नतीजा उसके सामने आता। आत्मा, संकल्प, मुक्ति और तत्त्व जैसे अस्पष्ट शब्दों की उपलब्ध व्याख्याओं को मानते और जान-बूझकर शब्दों के उस जाल में फंसते हुए, जो दर्शनशास्त्र या वह स्वयं अपने लिये बिछाता था, वह मानो कुछ समझने लगता था। किन्तु विचारों की कृत्रिम धारा को भूलते और वास्तविक जीवन से उधर मुड़ते ही, जो निश्चित चिन्तन-धारा का अनुकरण करते हुए उसे सन्तोषजनक लगता था, उसकी यह कृत्रिम इमारत ताश के पत्तों के घर की तरह भहरा कर नीचे गिर पड़ती और यह स्पष्ट हो जाता कि उस इमारत को जीवन में तर्क-शक्ति से कुछ अधिक महत्त्व रखनेवाली चीज़ की अवहेलना करके शब्दों के हेर-फेर से ही खड़ा किया गया था।

एक बार शोपेनहार को पढ़ते समय उसने संकल्प की जगह प्यार शब्द रख दिया और जब तक कि उसने इसका दामन नहीं छोड़ा, यह नया दर्शन दो दिन तक उसे सान्त्वना देता रहा। किन्तु जब उसने इसे वास्तविक जीवन की दृष्टि से देखा, तो यह भी धराशायी हो गया और ठण्ड से बचा सकने में असमर्थ मलमल की पोशाक जैसा प्रतीत हुआ।

लेविन के भाई कोज़्निशेव ने उसे धर्मशास्त्र के बारे में ख़ोम्याकोव की रचना पढ़ने का सुझाव दिया। लेविन ने ख़ोम्याकोव का दूसरा खण्ड पढ़ा और उसकी विवादपूर्ण, बढ़िया तथा चुटकियां लेनेवाली शैली के बावजूद, जो शुरू में उसे अच्छी नहीं लगी, चर्च के बारे में उसकी शिक्षा से आश्चर्यचकित रह गया। आरम्भ में उसे इस विचार ने हैरान किया कि किसी एक व्यक्ति के लिये ईश्वरीय सत्यों को समझ पाना सम्भव नहीं, मगर चर्च द्वारा सूत्रबद्ध सभी लोग इसे मिलकर

समझ सकते हैं। उसे इस विचार से ख़ास ख़ुशी हुई थी कि लोगों की सभी आस्थाओं को समेट लेनेवाले विद्यमान और अब सजीव चर्च पर, जिसका शीर्ष भगवान होने के कारण पावन और पापमुक्त था, विश्वास करना अधिक आसान था। दूरस्थ, रहस्यपूर्ण भगवान और विश्व-रचना, आदि से शुरू करने के बजाय इसे ही प्रस्थान-बिन्दु बनाकर भगवान, उत्पत्ति, पतन और प्रायश्चित में विश्वास किया जा सकता था। किन्तु बाद में एक कैथोलिक लेखक तथा एक रूसी आर्थो-डाक्स लेखक का चर्च-सम्बन्धी इतिहास पढ़ने के बाद और यह देखकर कि दोनों चर्च अपने सार में अमोघ होते हुए भी एक-दूसरे का खण्डन करते हैं, वह चर्च के बारे में ख़ोम्याकोव की शिक्षा से भी निराश हो गया और दर्शनशास्त्र की इमारत की तरह यह भी भहरा कर नीचे गिर गयी।

इस पूरे वसन्त में वह अपने से पराया-सा रहा और उसने बहुत ही भयानक क्षणों की यातना सही।

"यह जाने बिना कि मैं क्या हूं और किसलिये यहां हूं, जीना सम्भव नहीं। मगर मैं यह जान नहीं सकता और इसलिये नतीजा यही निकलता है कि मुझे जीना नहीं चाहिये," लेविन अपने आप-से कहता।

"अनन्त काल, अनन्त भूतद्रव्य और अनन्त विस्तार में जीव रूपी एक बुलबुला सामने आता है और कुछ समय तक क़ायम रहकर फट जाता है और यह बुलबुला हूं मैं।"

यह यातनापूर्ण झूठ था, किन्तु यही इस दिशा में मानव के शता-ब्दियों के चिन्तन का एकमात्र और अन्तिम परिणाम था।

यही वह अन्तिम विश्वास था, जिस पर लगभग सभी क्षेत्रों में मानवीय चिन्तन की सारी खोजें आधारित थीं। यही प्रमुखतम धारणा थी और अन्य सभी धारणाओं की तुलना में अधिक स्पष्ट होने के कारण लेविन ने यह न जानते हुए कि कब और कैसे अनजाने ही इसी धारणा को ग्रहण कर लिया था।

किन्तु यह झूठ ही नहीं, बल्कि बुराई की तथा किसी ऐसी घृणित शक्ति का ऐसा क्रूर व्यंग्य था, जिसके सामने झुकना उचित नहीं था।

इस शक्ति के चंगुल से निजात पाना ज़रूरी था। और निजात

पाना हर आदमी के अपने हाथों में था। बुराई पर अपनी निर्भरता को समाप्त करने की ज़रूरत थी। और इसका एक ही उपाय था–मौत।

सुखी परिवार वाला स्वस्थ लेविन कई बार आत्महत्या करने के इतना निकट तक जा पहुंचा कि उसने अपने को सूली न लगा लेने के डर से रस्सी छिपा दी और इस डर से कि कहीं अपने को गोली न मार ले वह बन्दूक़ हाथ में नहीं लेता था।

किन्तु लेविन ने न तो अपने को गोली मारी और न वह फांसी का फंदा बनाकर झूला बल्कि जीता रहा।

(१०)

लेविन जब यह सोचता था कि वह क्या है और किसलिये ज़िन्दा है, तो उसे कोई जवाब नहीं मिलता था और वह हताश हो उठता था। किन्तु जब वह अपने से यह सवाल न करता, तो उसे मानो यह पता होता था कि वह क्या है और किसलिये जी रहा है, क्योंकि दृढ़ता और निश्चित ध्येय से काम करता तथा जीता था। यहां तक कि इस पिछले समय में भी वह पहले की तुलना में कहीं अधिक दृढ़ता और लक्ष्य की स्पष्टता से जी रहा था।

जून के आरम्भ में गांव लौटने पर वह अपने सामान्य काम-काज में जुट गया था। खेतीबारी, किसानों और पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध, घर-गृहस्थी की चिन्ता, बहन और भाई के कारोबारी मामले, जिनकी वही देखभाल करता था, पत्नी और सगे-सम्बन्धियों के साथ उसके सम्बन्ध, बच्चे की फ़िक्र और इस वसन्त से पैदा होनेवाला मधुमक्खियों के पालन का नया शौक़–ये सब उसका सारा समय ले जाते थे।

वह इन कामों में इसलिये नहीं लगा रहता था कि इन्हें किन्हीं सर्वमान्य सिद्धान्तों की दृष्टि से उचित समझता था, जैसा कि पहले करता था। इसके विपरीत, अब एक ओर तो, सभी की भलाई के लिये पहले किये गये कार्यों की असफलता से निराश होने तथा दूसरी ओर, अपने विचारों और सभी ओर से घेर लेनेवाले कार्यों में व्यस्तता के कारण उसने सभी की भलाई के विचार को बिल्कुल भुला दिया था

और अपने इन कामों में केवल इसलिये जुटा रहता था कि उसे ऐसा प्रतीत होता कि वह जो कुछ कर रहा है, उसे करना चाहिये, और इससे भिन्न कुछ नहीं कर सकता था।

पहले (और इसका अर्थ था लगभग बचपन से आरम्भ करके उसके पूरी तरह जवान होने तक) जब कभी वह कुछ ऐसा करने का प्रयास करता था, जिससे सभी का, मानवजाति, रूस या गांव का भला होता, तो अनुभव करता कि ऐसे विचार उसके मन को अच्छे लगते हैं, मगर उसकी गतिविधि हमेशा सन्तोषजनक नहीं होती थी। उसे इस बात का पूरा भरोसा नहीं होता था कि उस काम की वास्तव में ही बड़ी ज़रूरत है और आरम्भ में अत्यधिक प्रतीत होनेवाली उसकी क्रियाशीलता कम होती-होती पूरी तरह समाप्त हो जाती थी। शादी के बाद अब, जब वह जीवन को अधिकाधिक अपने ही लिये सीमित करने लगा था, उसे अपनी क्रियाशीलता के विचार से बेशक किसी ख़ुशी की अनुभूति नहीं होती थी, वह यह विश्वास अनुभव करता था कि जो कुछ कर रहा है, उसे करने की ज़रूरत है, देखता कि पहले की तुलना में वह अधिक तेज़ी से होता है और अधिकाधिक बढ़ता ही जाता है।

अब वह जैसे अपनी इच्छा के विरुद्ध हल के फाल की तरह ज़मीन में अधिकाधिक गहरा धंसता जाता था और हल-रेखा बनाये बिना बाहर नहीं निकल सकता था।

बाप-दादा जिस तरह से रहने के आदी हो गये थे, परिवार में उसी तरह से जीना, शिक्षा के उसी स्तर और वैसी ही परिस्थितियों में बच्चों का पालन-पोषण निस्सन्देह आवश्यक था। यह वैसे ही ज़रूरी था, जैसे भूख लगने पर भोजन करना ज़रूरी होता है। और इसके लिये जैसे खाना पकाना ज़रूरी है, वैसे ही पोक्रोव्स्कोये के कृषि-कार्य का ऐसे संचालन आवश्यक था कि आमदनी हो। जैसे ऋण चुकाना चाहिये, वैसे ही पैतृक धरोहर को ऐसी स्थिति में रखना ज़रूरी था कि उसे उत्तराधिकार में पाकर बेटा वैसे ही धन्यवाद दे, जैसे लेविन अपने दादा को उसके लिये धन्यवाद देता था, जो उन्होंने बनाया और रोपा था। और इसके लिये ज़रूरी था कि भूमि को किराये पर न देकर ख़ुद उस पर खेती करवाये, पशु रखे, खेतों में खाद डाले और जंगल उगाये।

कोज़्निशेव और बहन के मामलों की चिन्ता न करना और उन किसानों की सहायता न करना, जो सलाह-मशविरा लेने के लिये उसके पास आने के आदी हो गये थे, वैसे ही असम्भव था, जैसे गोद में उठाये हुए बच्चे को नीचे गिराना असम्भव होता है। अपनी बड़ी साली और उसके बच्चों की चिन्ता करना भी ज़रूरी था, जिन्हें उसने अपने यहां बुला रखा था, अपनी पत्नी और बच्चे का ध्यान करना तथा उनके साथ दिन में, बेशक थोड़ा-सा ही सही, समय बिताना लाज़िमी था।

यह सब और शिकार तथा मधुमक्खियों के पालन का नया शौक़ लेविन के उस जीवन को बहुत व्यस्त रखता था, जो चिन्तन करने पर उसे सारहीन प्रतीत होता था।

किन्तु लेविन न केवल यही अच्छी तरह से जानता था कि उसे क्या करना चाहिये, बल्कि सही तौर पर यह भी जानता था कि यह सब कैसे करना चाहिये और कौन-सा काम अधिक महत्त्वपूर्ण है।

उसे मालूम था कि मज़दूरों को कम से कम मजूरी देकर काम लेना चाहिये, मगर पेशगी देकर उन्हें बांध लेना और इस तरह जितनी उचित है, उससे भी कम मजूरी देना ठीक नहीं, यद्यपि ऐसा करना बहुत लाभदायक होता। चारे की कमी के समय किसानों को पुआल भी बेचा जा सकता था, यद्यपि इसके लिये उनसे पैसे लेते हुए अफ़सोस होता था, मगर सराय और शराबख़ाने को नष्ट कर देना चाहिये, गो उनसे आमदनी होती थी। जंगलों को काटने के लिये किसानों को कड़े से कड़ा दण्ड देना चाहिये, किन्तु खेतों में चरने के लिये हांक दिये गये उनके पशुओं के लिये उनसे जुर्माना नहीं लेना चाहिये, यद्यपि रखवालों को यह बुरा लगता था और फिर किसानों का भय भी जाता रहता था। इसके अलावा ऐसे पशुओं को लौटाना भी ज़रूरी था।

हर महीने दस प्रतिशत का ब्याज देनेवाले प्योत्र को सूदख़ोर के पंजे से निजात दिलाने के लिये ऋण देना ज़रूरी था, किन्तु लगान अदा न करनेवाले किसानों का लगान न तो कम और न ही स्थगित करना चाहिये। कारिन्दे को यह क्षमा नहीं किया जा सकता था कि चरागाह में घास न काटी जाये और वह नष्ट हो जाये, किन्तु जिस दो सौ एकड़ भूमि में नये जंगल उगाये गये थे, वहां घास बिल्कुल ही

नहीं काटी जानी चाहिये। काम के बहुत व्यस्त समय में इसलिये घर चले जानेवाले मज़दूर को क्षमा नहीं किया जा सकता था कि उसका बाप मर गया है, चाहे उसके लिये कितना ही दुख क्यों न हो, और ऐसे क़ीमती वक़्त में ग़ैरहाज़िर रहने के कारण उसे कम मज़दूरी देनी चाहिये, मगर बूढ़े हो चुके तथा किसी काम के न रहनेवाले घरेलू नौकरों-चाकरों को मासिक वेतन देना चाहिये।

लेविन यह भी जानता था कि घर लौटने पर उसे पहले अपनी पत्नी के पास जाना चाहिये, जो स्वस्थ नहीं थी, और तीन घण्टों से राह देख रहे किसान और भी इन्तज़ार कर सकते थे। उसे यह भी मालूम था कि मधुमक्खियों के छत्ते बढ़ाने से उसे बहुत ख़ुशी होती थी, फिर भी उसे इस ख़ुशी से वंचित रहते हुए बूढ़े मधुमक्खियों के पालक को ही यह काम करने देना चाहिये और ख़ुद उन किसानों से बातचीत करनी चाहिये, जो मधुमक्खी पालनशाला में उससे मिलने आ गये थे।

वह अच्छा या बुरा करता था, उसे यह मालूम नहीं था और इसके बारे में अब न केवल अपना मत ही सिद्ध नहीं करना चाहता था, बल्कि इस सम्बन्ध में बातचीत और सोचने-विचारने से भी कन्नी काटता था।

सोच-विचार करने से उसके मन में सन्देह पैदा होते थे और उसके यह देख पाने में बाधा डालते थे कि वह क्या करे और क्या न करे। जब वह सोचता नहीं था और जीता जाता था, तो लगातार अपनी आत्मा में कभी ग़लती न करनेवाले ऐसे निर्णायक की उपस्थिति अनुभव करता रहता था, जो यह तय करने में समर्थ था कि दो सम्भव कार्रवाइयों में से कौन-सी अच्छी और कौन-सी बुरी है। जैसे ही वह कुछ ऐसे करता, जो उसे नहीं करना चाहिये था, वह तत्काल ही इसे अनुभव कर लेता।

इस तरह वह यह जाने बिना और इस बात को जानने का अवसर पाये बिना ही कि वह कौन है और इस दुनिया में क्यों जी रहा है, जीता रहा। उसके लिये इस ज्ञान के अभाव की यातना इतनी अधिक थी कि उसे भय होता कि कहीं वह आत्महत्या न कर ले। साथ ही वह अपना व्यक्तिगत जीवन-पथ भी बनाता रहा।

कोज़्निशेव के पोक्रोव्स्कोये गांव में आने के दिन लेविन बहुत ही यातनापूर्ण मानसिक स्थिति में था।

अत्यधिक व्यस्तता का ऐसा समय था, जब किसान लोग श्रम के मामले में ऐसा असाधारण तनावपूर्ण आत्मबलिदानी उत्साह दिखाते हैं, जैसा कि जीवन की किन्हीं भी अन्य परिस्थितियों में नहीं दिखाया जाता और जिसका बहुत ऊंचा मूल्यांकन होता, यदि ऐसे गुण प्रकट करनेवाले लोग स्वयं उनका मूल्यांकन करते, यदि यह हर वर्ष न दोहराया जाता और यदि इस तनाव के परिणाम इतने साधारण न होते।

रई और जई को काटना, इनके पूले बांधना और छकड़ों में लादकर ले जाना, चरागाहों में घास की कटाई ख़त्म करना, ज़मीन को फिर से जोतना, बीजों को मांड़ना और जाड़े की फ़सल के लिये बुआई करना – यह सब कुछ सीधा-सादा और साधारण काम लगता है। किन्तु यह सब कर पाने के लिये ज़रूरी है कि गांव के सभी छोटे-बड़े लोग इन तीन-चार सप्ताहों के दौरान सामान्य की तुलना में तिगुना काम करें, काली रोटी और प्याज़ खाकर तथा क्वास पीकर गुज़ारा करें, रातों को पूलों को मांड़ें और छकड़ों पर लादकर ले जायें और चौबीस घण्टों में दो-तीन घण्टों से अधिक न सोयें। और सारे रूस में हर साल यही होता है।

जीवन का अधिकतर भाग गांव में बिताने और किसानों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण लेविन को काम के इस अत्यधिक व्यस्त समय में हमेशा ऐसा अनुभव होता कि किसानों के आम जोश से वह ख़ुद भी वंचित नहीं रहता है।

लेविन सुबह ही वहां गया, जहां रई की पहली बुवाई हो रही थी, और जई के पूले बांधकर उन्हें घोड़ा-गाड़ियों पर लादा जा रहा था। पत्नी और बड़ी साली के जागने के समय घर लौटकर उसने उनके साथ कॉफ़ी पी और पैदल फ़ार्म को चला गया, जहां बीज तैयार करने के लिये मांड़ने की नई मशीन लगायी गयी थी।

कारिन्दे, किसानों और घर पर पत्नी, डौली, उसके बच्चों और अपने ससुर से बातचीत करते हुए लेविन कृषि-सम्बन्धी अपनी

चिन्ताओं के अलावा दिन भर एक ही बात के बारे में, जो इस समय उसके मन पर छाई हुई थी, सोचता रहा और हर चीज़ में अपने इन प्रश्नों के – "मैं क्या हूं? कहां हूं? किसलिये यहां हूं?" उत्तर ढूंढ़ता रहा।

कुछ ही समय पहले पुनः फूंस से ढके गये खलिहान की ठण्डक में खड़े होकर और ऐस्प की ताज़ा-ताज़ा छीली गयी कड़ियों और हेज़ल की जाली, जिस पर अभी तक पत्ते लगे हुए थे, की सुगन्ध में सांस लेते हुए लेविन कभी खुले फाटक में से, जहां अनाज के मांड़े जाने से खुश्क और कड़ुवी धूल उड़ और चक्कर काट रही थी, कभी तेज़ धूप में चमकती घास और खत्ती से इसी वक़्त लाये गये ताज़ा भूसे को, कभी सफ़ेद वक्ष और रंग-बिरंगे सिर वाली अबाबीलों की ओर देखता, जो शूं की आवाज़ करती हुई छत के नीचे उड़तीं और फाटक के प्रकाश में रुककर पंखों को फड़फड़ातीं, तो कभी खलिहान के अंधेरे और धूल में हिलते-डुलते लोगों की ओर देखता और ऐसा करते समय उसके मस्तिष्क में अजीब-अजीब विचार आते।

"यह सब किसलिये किया जा रहा है?" वह सोच रहा था। "किसलिये मैं यहां खड़ा हुआ इन्हें काम करने को बाध्य कर रहा हूं? किसलिये ये सभी इतनी दौड़-धूप कर रहे हैं और मेरी उपस्थिति में अपनी इतनी अधिक लगन दिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं? मेरी यह सुपरिचिता मात्र्योना क्यों इतना अधिक काम कर रही है? (आग लगने के समय जब इस पर शहतीर गिर गया था, तो मैंने इसकी चिकित्सा की थी)" – वह दुबली-पतली उस किसान औरत की ओर देखते हुए सोच रहा था, जो जेली से अनाज को समेटते हुए खलिहान के सख़्त और टेढ़े-मेढ़े फ़र्श पर बड़ी कठिनाई से चल रही थी। "तब तो यह स्वस्थ हो गयी थी, लेकिन कल-परसों नहीं, तो दस साल बाद इसे दफ़ना दिया जायेगा और न तो इसका और न ही गाढ़े का लाल स्कर्ट पहने उस छैल-छबीली का ही कुछ बाक़ी बचेगा, जो ऐसी फुर्ती और हल्की-फुल्की गतिविधि से बालियों से भूसा अलग कर रही है। इसे भी मिट्टी दे दी जायेगी और इस चितकबरी घोड़ी को तो बहुत ही जल्द दफ़ना दिया जायेगा," उसने बार-बार नथुने फुलाकर सांस लेती घोड़ी की ओर देखते हुए सोचा, जिसका पेट हांफने के कारण

उस समय ऊपर-नीचे उठता-गिरता था, जब वह तनिक झुके हुए पहिये के गिर्द घुमती थी। "इसे दफ़ना दिया जायेगा और मशीन में पूले डालने वाले फ़्योदोर को भी दफ़ना दिया जायेगा, जिसकी घुंघराली दाढ़ी भूसे से अटी है और गोरे कंधे पर क़मीज़ फटी हुई है। किन्तु वह पूलों को खोलता जा रहा है, कुछ आदेश दे रहा है, औरतों पर चीख़-चिल्ला रहा है और बड़ी फ़ुर्ती से पहिये का पट्टा ठीक करता जाता है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन्हें ही नहीं, मुझे भी दफ़ना दिया जायेगा और कुछ भी बाक़ी नहीं बचेगा। आख़िर यह सब क्यों है?"

वह यह सोच रहा था और साथ ही घड़ी पर भी नज़र डालता जाता था, ताकि यह हिसाब लगा सके कि एक घण्टे में कितना अनाज मांड़ा गया है। उसके लिये यह जानना ज़रूरी था, क्योंकि इसी के मुताबिक़ उसे दिन भर के काम की मात्रा निर्धारित करनी थी।

"जल्द ही एक घण्टा होनेवाला है और इन्होंने केवल तीसरा पूला शुरू किया है," लेविन ने सोचा। वह मशीन में पूले डालनेवाले फ़्योदोर के पास पहुंचा और मशीन के शोर से अधिक ऊंची आवाज़ में बोलते हुए उससे कहा कि वह कम मात्रा में पूले मशीन में डाले।

"बहुत अधिक पूले डालते हो, फ़्योदोर! देखते हो न कि इसी वजह से मशीन रुक जाती है और जल्दी-जल्दी काम नहीं होता। थोड़े-थोड़े पूले डालो!"

पसीने से तर चेहरे पर चिपकी धूल के कारण काले हुए फ़्योदोर ने चिल्लाकर जवाब में कुछ कहा, मगर फिर भी वैसे काम नहीं किया, जैसे लेविन चाहता था।

लेविन ने मशीन के पास जाकर फ़्योदोर को एक तरफ़ हटा दिया और ख़ुद मशीन में पूले डालने लगा।

थोड़ी देर बाद आरम्भ होनेवाले किसानों के दोपहर के खाने के वक़्त तक काम करने के बाद फ़्योदोर के साथ लेविन खलिहान से बाहर आया और मांड़ने के लिये तैयार रई के साफ़, पीले पूले के क़रीब खड़ा होकर उससे बात करने लगा।

फ़्योदोर दूर के उस गांव का रहनेवाला था, जहां लेविन पहले सहकारिता के आधार पर जुताई के लिये ज़मीन दिया करता था।

अब वह अहाते को झाड़ने-बुहारने वाले को लगान पर दे दी गयी थी।

लेविन ने फ़्योदोर के साथ इसी ज़मीन के बारे में बात की और पूछा कि क्या उसी गांव में रहनेवाला भला और धनी किसान, प्लातोन, उसे अगले वर्ष के लिये लगान पर नहीं ले लेगा।

"लगान बहुत अधिक है। प्लातोन के बस की बात नहीं है, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच," किसान ने पसीने से भीगी अपनी क़मीज़ में से बालियां निकालते हुए उत्तर दिया।

"किरील्लोव कैसे इतना लगान दे पाता है?"

"मित्यूख़ा" (किसान ने अहाते की सफ़ाई करने वाले को तिरस्कारपूर्वक यही संज्ञा दी) "तो बालू में से तेल निकाल लेनेवाला आदमी है, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच। वह दूसरे को निचोड़ कर अपना नफ़ा हासिल कर लेगा। वह इन्सान पर कभी दया नहीं करेगा। मगर चाचा फ़ोकानिच" (बूढ़े प्लातोन के लिये उसने इसी सम्बोधन का उपयोग किया) "क्या कभी किसी के कपड़े उतारेगा? किसी को क़र्ज़ दे देता है, तो कभी-कभी वापस ही नहीं लेता। कभी-कभी ख़ुद उसे भी पैसों की कमी हो जाती है। ऐसा आदमी है वह।"

"पर वह क़र्ज़ वापस क्यों नहीं लेता?"

"बस, ऐसे ही – तरह-तरह के लोग जो ठहरे। कुछ अपने पेट की आग बुझाने के लिये ही जीते हैं, मित्यूख़ा जैसे, अपना पेट ही भरते जाते हैं, मगर फ़ोकानिच – वह सच्चा बूढ़ा आदमी है। वह अपनी आत्मा के लिये जीता है। भगवान को याद रखता है।"

"भगवान को याद रखता है? आत्मा के लिये जीता है? क्या मतलब है तुम्हारा?" लेविन लगभग चीख़ उठा।

"वह तो साफ़ है, सचाई से, भगवान के बताये ढंग से। लोग तो अलग-अलग होते हैं। आप ही को लिया जा सकता है, आप भी तो किसी का दिल नहीं दुखायेंगे..."

"हां, हां, अच्छा, मैं चल दिया!" लेविन ने उत्तेजना से बेदम होते हुए कहा, मुड़ा और अपनी छड़ी लेकर तेज़ी से घर की ओर चल दिया। किसान के इस आशय के शब्दों से कि फ़ोकानिच अपनी आत्मा के लिये जीता है, सचाई और भगवान के बताये हुए ढंग से जीता है, अस्पष्ट किन्तु महत्त्वपूर्ण विचारों की भीड़ मानो ताले में

बन्द किसी जगह से बाहर उमड़ पड़ी और सभी विचार एक ध्येय की ओर बढ़ते हुए तथा अपने प्रकाश से चकाचौंध करते हुए उसके दिमाग़ में चक्कर काटने लगे।

(१२)

लेविन बड़े रास्ते पर लम्बे-लम्बे डग भरता चला जा रहा था, अपने विचारों पर तो इतना ध्यान नहीं दे रहा था (वह उन्हें अच्छी तरह से समझ पाने में अभी असमर्थ था), जितना कि उस मानसिक स्थिति की ओर, जो उसने पहले कभी अनुभव नहीं की थी।

किसान द्वारा कहे गये शब्दों ने उसकी आत्मा में बिजली की एक ऐसी चिंगारी का काम किया, जिसने उसके बिखरे-बिखराये, अलग-थलग तथा प्रभावहीन विचारों को, जो हमेशा उसके दिमाग़ में घूमते रहते थे, अचानक रूपान्तरित करके सूत्रबद्ध कर दिया था। उसके अनजाने में ये विचार उस समय भी उसके मन में चक्कर काट रहे थे, जब वह ज़मीन को लगान पर देने की बात कर रहा था।

वह अपनी आत्मा में कुछ नया-सा अनुभव कर रहा था और यह न जानते हुए कि यह नयी चीज़ क्या है, बहुत आनन्दित होकर इसका स्पर्श-सुख पा रहा था।

"अपने पेट, अपनी ज़रूरतों के लिये नहीं, भगवान के लिये जिया जाये। किस भगवान के लिये? उस किसान ने जो कुछ कहा, उससे अधिक बेतुका और क्या कहा जा सकता है? उसने कहा कि हमें अपनी आवश्यकताओं के लिये नहीं जीना चाहिये, अर्थात उसके लिये नहीं जीना चाहिये, जिसे हम समझते हैं, जिसकी ओर हम खिंचते हैं, जो हम चाहते हैं, बल्कि उसके लिये जियें, जो हमारी समझ के बाहर है, भगवान के लिये जियें, जिसे न कोई समझ सकता है और न ही जिसकी कोई स्पष्ट व्याख्या कर सकता है। तो नतीजा क्या निकला? फ़्योदोर के उन अर्थहीन शब्दों को मैं नहीं समझा? और समझने पर उनकी न्यायसंगतता पर अविश्वास किया? उन्हें मूर्खतापूर्ण, अस्पष्ट और अप्रामाणिक पाया?

"नहीं, मैंने उसको समझ लिया और बिल्कुल वैसे ही, जैसे

वह समझता है, पूरी तरह और उससे भी अधिक अच्छी तरह समझ गया, जितना जीवन में किसी भी चीज़ को समझता हूं, इसके बारे में मुझे जीवन में कभी सन्देह नहीं हुआ और सन्देह नहीं हो सकता। मैं अकेला ही नहीं, बल्कि सभी, सारी दुनिया इस बात को अच्छी तरह समझती है, इसके बारे में सन्देह नहीं करती और हमेशा सहमत रही है।

"फ़्योदोर का कहना है कि अहाते को झाड़ने-बुहारने वाला किरील्लोव अपने पेट के लिये जीता है। यह चीज़ समझ में आती है और समझदारी की बात भी है। सूझ-बूझ वाले प्राणियों के नाते हम पेट के अलावा और किसी तरह जी भी नहीं सकते। और अचानक वही फ़्योदोर यह भी कहता है कि पेट के लिये जीना बुरा है, कि हमें सचाई के लिये, भगवान के लिये जीना चाहिये और मैं संकेत से ही उसकी यह बात समझ जाता हूं! मैं तथा शताब्दियों पहले और अब इस धरती पर जीनेवाले करोड़ों लोगों, किसानों, आत्मा से दरिद्र और अत्यधिक बुद्धिमान लोगों ने, जिन्होंने इस बारे में सोचा और लिखा है, अपनी अस्पष्ट भाषा में वही कुछ कहा है, हम सब एक बात पर सहमत हैं – किस चीज़ के लिये जीना चाहिये और क्या अच्छा है। सभी लोगों के साथ मेरा भी एक दृढ़, निर्विवाद और स्पष्ट ज्ञान है और इस ज्ञान की बुद्धि से व्याख्या नहीं की जा सकती – वह इसकी परिधि से बाहर है, उसके न तो कोई कारण हैं और न कोई परिणाम ही हो सकते हैं।

"भलाई का यदि कोई कारण है, तो वह भलाई नहीं रही। अगर उसका कोई परिणाम अर्थात पुरस्कार है, तो वह भी भलाई नहीं। नतीजा यह निकला कि भलाई कारण और परिणाम की शृंखला से बाहर है।

"इसे तो मैं जानता हूं और हम सभी जानते हैं।

"और मैं चमत्कारों की खोज कर रहा था, इस बात के लिये अफ़सोस करता था कि ऐसा चमत्कार नहीं देखा, जो मुझे इसका विश्वास दिला सकता। और चमत्कार तो यह रहा – एकमात्र सम्भव, स्थायी रूप से विद्यमान, सभी ओर से मुझे घेरे हुए, और मैंने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

"इससे बढ़कर और क्या चमत्कार हो सकता है?

"क्या मुझे सारी बात का समाधान मिल गया, क्या मेरी यातनाओं का अन्त हो गया?" धूल भरे रास्ते पर डग भरता, गर्मी और थकान को न अनुभव करता तथा दीर्घकालीन यातना से मुक्ति की अनुभूति मन में लिये वह सोच रहा था। यह अनुभूति इतनी अधिक सुखद थी कि अविश्वसनीय-सी प्रतीत हुई। उत्तेजना से उसके लिये सांस लेना कठिन हो रहा था और आगे जाने में अपने को असमर्थ-सा अनुभव करते हुए वह रास्ता छोड़कर जंगल में चला गया और ऐस्प वृक्षों की छाया में अनकटी घास पर बैठ गया। पसीने से तर सिर पर से उसने टोप उतार लिया और कोहनी की टेक लगकर जंगल की रसीली, चौड़ी पत्तियोंवाली घास पर लेट गया।

"हां, मुझे अपने को सम्भालना और सभी बातों पर चिन्तन करना चाहिये," अपने सामने उस घास को एकटक देखते हुए, जो रौंदी नहीं गयी थी, और उस हरे कीड़े की गतिविधि की ओर ध्यान देते हुए, जो घास के डंठल पर चढ़ रहा था और एक दूसरे पौधे का पत्ता जिसके मार्ग में बाधा बन रहा था, वह सोच रहा था। "सब कुछ आरम्भ से सोचना चाहिये," उसने पौधे को दूसरी ओर करते हुए ताकि वह कीड़े के मार्ग में बाधा न बने और घास के एक अन्य तिनके को झुकाते हुए, ताकि कीड़ा उस पर चला जाये, अपने आपसे कहा। "किस बात की ख़ुशी हो रही है मुझे? क्या खोज लिया है मैंने?

"पहले मैं यह कहता था कि मेरे शरीर में, इस घास और इस कीड़े के शरीर में (उसने घास की दूसरी पत्ती पर नहीं जाना चाहा और पंख फैलाकर उड़ गया) शारीरिक, रासायनिक और भौतिक नियमों के अनुसार द्रव्य-पदार्थ का रूप-परिवर्त्तन होता है। ऐस्पों, बादलों और नीहारिकाओं समेत हम सभी का विकास हो रहा है। किस चीज़ से, किस चीज़ में? अन्तहीन विकास और संघर्ष?.. मानो अनन्त में कोई दिशा और संघर्ष हो सकता है! और मुझे आश्चर्य हो रहा था कि इस मार्ग पर विचारों के अत्यधिक तनाव के बावजूद मैं अपने जीवन का अर्थ, अपनी मानसिक उत्तेजनाओं और प्रयासों का अर्थ नहीं समझ पा रहा था। किन्तु मेरी अन्त:प्रेरणाओं का अर्थ

इतना स्पष्ट है कि मैं निरन्तर उसी के अनुसार जी रहा हूं, और जब किसान ने उसके बारे में मुझसे कहा, तो मैं हैरान और ख़ुश भी हुआ – भगवान के लिये जियो, आत्मा के लिये जियो।.

"मैंने कोई खोज नहीं की। मैंने केवल वही जाना है, जो मैं जानता हूं। मैं उस शक्ति को समझ गया, जिसने न केवल अतीत में मुझे जीवन दिया, बल्कि अब भी मुझे जीवन देती है। मुझे छल से मुक्ति मिल गयी, मैं स्वामी को जान गया।"

और उसने इन पिछले दो वर्षों में अपनी पूरी विचार-शृंखला को संक्षिप्त रूप से मन ही मन दोहराया, जिसका निश्चय ही मृत्यु-ग्रास बन जानेवाले प्यारे भाई को देखने पर मृत्यु के बारे में स्पष्ट और प्रत्यक्ष विचार से आरम्भ हुआ था।

तब पहली बार स्पष्ट रूप से यह समझकर कि हर व्यक्ति और ख़ुद उसके आगे भी यातना, मृत्यु और स्थायी रूप से विस्मृत हो जाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, उसने यह तय किया था कि ऐसे जीने में कोई तुक नहीं, कि उसे अपने जीवन को या तो ऐसे स्पष्ट करना होगा कि वह किसी शैतान का द्वेषपूर्ण मज़ाक़ न लगे या फिर अपने को गोली मार लेगा।

किन्तु उसने दोनों में से एक भी बात नहीं की, जीता, सोचता और अनुभव करता रहा, यहां तक कि इस समय के दौरान उसने शादी भी की, बहुत-सी ख़ुशियों का आनन्द पाया और जब अपने जीवन के अर्थ के बारे में नहीं सोचता था, तो सुखी भी रहा।

तो इससे क्या नतीजा निकलता है? इससे यह नतीजा निकलता है कि वह अच्छी तरह से जीता, मगर बुरे ढंग से सोचता रहा।

वह जीता रहा (इसे न जानते हुए) उन्हीं मानसिक सत्यों के सहारे, जो उसे मां के दूध के साथ मिले, किन्तु सोचता रहा न केवल इन सत्यों को स्वीकार किये बिना, बल्कि बड़े यत्नपूर्वक इनसे कन्नी काटता हुआ।

अब उसे स्पष्ट था कि वह उन्हीं आस्थाओं की बदौलत ज़िन्दा रह पाया, जिनमें उसका पालन-पोषण हुआ था।

"अगर मुझमें ये आस्थायें न होतीं, अगर मैं यह न जानता होता कि अपनी ज़रूरतों के लिये नहीं, भगवान के लिये जीना चाहिये, तो

मैं कैसा होता और कैसे मैंने अपना जीवन बिताया होता? मैंने दूसरों को लूटा होता, झूठ बोला होता, हत्यायें की होतीं। जो भी मेरे जीवन की प्रमुख ख़ुशियां हैं, उनमें से कोई भी मेरे लिये न होती।" और अपनी कल्पना पर बहुत ज़ोर डालने के बावजूद वह यह अनुमान न लगा पाया कि अगर उसे यह ज्ञान न होता कि किसलिये जीवित है, तो वह कैसा दरिन्दा होता।

"मैं अपने प्रश्न का उत्तर खोज रहा था। मगर विचार या तर्क मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता था – वह प्रश्न के अनुपात में नहीं है। स्वयं जीवन ने, मेरे इस ज्ञान ने कि क्या अच्छा और क्या बुरा है, इसका उत्तर दिया है। और यह ज्ञान मैंने कहीं से प्राप्त नहीं किया, अन्य सभी के साथ मुझे मिला है, इसलिए मिला है कि मैं इसे कहीं से प्राप्त नहीं कर सकता था।

"कहां से मैंने यह प्राप्त किया? क्या तर्क और सूझ-बूझ से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि इन्सान को प्यार करना चाहिये, उसका गला नहीं घोंटना चाहिये? मुझसे बचपन में ऐसा कहा गया और मैंने सहर्ष इस पर विश्वास कर लिया, क्योंकि मुझसे वह कहा गया, जो मेरी आत्मा में था। और किसने इसे खोजा? तर्क ने नहीं। तर्क ने अस्तित्व के संघर्ष और इस बात की मांग करनेवाले नियम की खोज की कि मैं अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति में बाधा बननेवाले सभी लोगों का गला घोंट दूं। हमारी समझ-बूझ का यही परिणाम है। किन्तु दूसरे को प्यार करने की खोज समझ-बूझ नहीं कर सकती थी, क्योंकि ऐसा करना समझदारी नहीं है।"

"हां, घमंड," उसने पेट के बल लेटते, घास के तनों को टूटने से बचाते और उन्हें गांठें देते हुए कहा।

"और बुद्धि का घमंड ही नहीं, उसकी मूर्खता भी। और सबसे बढ़कर तो बेईमानी, बुद्धि की बेईमानी। हां, बुद्धि का कपट," उसने दोहराया।

(१३)

और लेविन को डौली और उसके बच्चों के साथ कुछ ही समय पहले हुई एक घटना की याद हो आई। बच्चों ने अकेले रह जाने पर रस्पबे-

रियों को मोमबत्तियों पर भूनना और एक-दूसरे के मुंह में फ़व्वारे की तरह दूध डालना शुरू कर दिया। उनकी मां ने उन्हें ऐसे करते पकड़ लिया और लेविन की उपस्थिति में उन्हें यह समझाने लगी कि जो कुछ वे नष्ट कर रहे हैं, उसे बनाने के लिये बड़ों का कितना अधिक श्रम करना पड़ता है, कि यह श्रम उनके लिये किया जाता है, कि अगर वे प्याले तोड़ेंगे तो चाय पीने के लिये उनके पास कुछ नहीं रहेगा और अगर वे दूध गिरायेंगे तो उनके खाने-पीने को कुछ नहीं रहेगा और वे भूख से मर जायेंगे।

बच्चों ने मां के इन शब्दों को जिस शान्ति और उदासीनतापूर्ण अविश्वास के साथ सुना, लेविन उससे दंग रह गया। उन्हें केवल इसी बात का दुख था कि उनका दिलचस्प खेल रोक दिया गया था और मां ने जो कुछ कहा, उन्होंने उसके एक भी शब्द पर विश्वास नहीं किया। उन्हें इसलिये विश्वास नहीं हो सकता था कि जिन चीज़ों का वे उपयोग करते थे, उसके पूरे परिमाण की कल्पना करने में असमर्थ थे और इसीलिये यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि जो कुछ वे नष्ट कर रहे हैं, उसी से जीवित रहते हैं।

"ये सब तो अपने आप ही बनते हैं," उन्होंने सोचा, "और इसमें दिलचस्प तथा महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं, क्योंकि ऐसा हमेशा था और आगे भी रहेगा। और हमेशा बार-बार यही दोहराया जाता है। इसके बारे में हमें सोचने की कोई ज़रूरत नहीं, यह तो तैयार ही है – हम कुछ अपना और नया सोचना चाहते हैं। सो हमने रस्पबेरियों को प्याले में डालकर उन्हें मोमबत्ती पर भूनने तथा फ़व्वारे की तरह एक-दूसरे के मुंह में दूध डालने की बात सोच निकाली। यह मनोरंजक और नयी बात है, प्याले से दूध पीने की तुलना में किसी तरह बुरा नहीं है।"

"क्या हमने, मैंने भी ऐसा ही नहीं किया, जब बुद्धि से प्रकृति की शक्ति का महत्त्व और मानव के जीवन का अर्थ खोजना चाहा?" वह सोचता रहा।

"और क्या सभी दार्शनिक सिद्धान्त भी ऐसा नहीं करते हैं? विचारों के मार्ग से, मानव के लिये पराये और अस्वाभाविक मार्ग से उसे उस चीज़ का ज्ञान करवाते हैं, जो वह कभी का जानता है और

इतनी अच्छी तरह जानता है कि उसके बिना ज़िन्दा ही नहीं रह सकता था? क्या हर दार्शनिक के सिद्धान्त के विकास में यह स्पष्ट दिखाई नहीं देता कि वह किसान फ़्योदोर की भांति पहले से ही निश्चित रूप में, लेकिन उससे कुछ अधिक स्पष्ट रूप में नहीं, जीवन का मुख्य अर्थ जानता है और केवल सन्देहपूर्ण बौद्धिक मार्ग से वहां लौटना चाहता है, जो सभी को स्पष्ट है?

"ज़रा बच्चों को अकेले छोड़ दिया जाये कि वे स्वयं ही सब कुछ प्राप्त करें, बर्तन बनायें, दूध दुहें, आदि, आदि। तब क्या वे शरारतें करते? वे भूख से मर जाते। इसी तरह से अगर हमें हमारी चित्तवृत्तियों, विचारों, एक भगवान और स्रष्टा की धारणा के बिना छोड़ दिया जाये! या फिर इस विचार के बिना कि भलाई क्या होती है, या फिर नैतिक बुराई की व्याख्या के बिना।

"इन धारणाओं के बिना कुछ निर्मित तो करके देखिये!

"हम नष्ट इसीलिये करते हैं कि आत्मिक रूप से भरे हुए हैं। मतलब यह कि बच्चे हैं!

"मेरे पास किसान के साथ साझा और एकमात्र चैन देनेवाला आनन्दपूर्ण ज्ञान कहां से आया? कहां से मैंने इसे प्राप्त किया?

"भगवान और ईसाई धर्म की धारणा से शिक्षित, उन्हीं आत्मिक वरदानों से जीवन को भर लेनेवाला, जो मुझे ईसाई धर्म ने दिये, इन्हीं वरदानों से ओत-प्रोत और इन्हीं के सहारे जीनेवाला मैं बच्चों की भांति इसे न समझते हुए इन्हें नष्ट कर रहा हूं, यानी उसे नष्ट करना चाहता हूं, जिसके सहारे जीवित हूं। किन्तु जैसे ही जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण क्षण आता है, उसी प्रकार जैसे बच्चों को जब ठण्ड और भूख का सामना करना पड़ता है, मैं भगवान के पास जाता हूं और अनुभव करता हूं कि बच्चों की तुलना में, जिन्हें उनकी मां उनकी शरारतों के लिये डांटती-डपटती है, सभी चीज़ों के बाहुल्य के कारण मेरी बच्चों जैसी हरकतें करने की कोशिश के लिये भी मुझे कुछ बुरा-भला नहीं कहा जाता।

"हां, मैं जो कुछ जानता हूं, वह बुद्धि से नहीं, बल्कि यह ज्ञान तो मुझे दिया गया है, मेरे सामने खोला गया है, इसे हृदय से जानता हूं और उस मुख्य चीज़ में विश्वास करता हूं, जो ईसाई धर्म मुझे बताता है।

"ईसाई धर्म? ईसाई धर्म!" लेविन ने दोहराया, उसने दूसरी ओर करवट ले ली और कोहनी का सहारा लेकर दूरी पर दूसरे तट से नदी की ओर जाते हुए पशुओं के झुण्ड को देखने लगा।

"किन्तु क्या मैं ईसाई धर्म की सारी शिक्षा में विश्वास कर सकता हूं?" उसने अपने आपको परखते और वह सब ध्यान में लाते हुए सोचा, जो उसकी इस समय की मानसिक शान्ति को नष्ट कर सकता था। वह जान-बूझकर ईसाई धर्म की उन शिक्षाओं को याद करने लगा, जो हमेशा उसे सबसे अधिक अजीब लगती थीं और उसके मन में सन्देह पैदा करती थीं। सृष्टि? किन्तु मैंने अस्तित्व को कैसे स्पष्ट किया था? अस्तित्व से? किसी से भी नहीं? शैतान और गुनाह? और बुराई को मैं कैसे स्पष्ट करता हूं?.. और मुक्तिदाता?..

"किन्तु मैं उसके सिवा, जो मुझे दूसरों के साथ बताया गया, कुछ भी, कुछ भी तो नहीं जानता और नहीं जान सकता।"

और उसे अब यह प्रतीत हुआ कि ईसाई धर्म के विश्वासों में से एक भी तो ऐसा नहीं था, जो मुख्य चीज़ – मानव जीवन के एकमात्र ध्येय के रूप में भगवान, भलाई में उसकी आस्था का खण्डन कर सके।

इस तरह ईसाई धर्म के हर विश्वास का अर्थ आवश्यकताओं की पूर्ति के बजाय सचाई की सेवा में विश्वास लगाया जा सकता था। और हर विश्वास न केवल इसका खण्डन नहीं करता, बल्कि इसलिये आवश्यक भी था कि पृथ्वी पर स्थायी रूप से होनेवाला वह मुख्य चमत्कार भी होता रहे, जो करोड़ों विभिन्न प्राणियों के साथ – बुद्धिमानों और कुछ सिरफिरों, बच्चों और बूढ़ों, किसानों, ल्वोव, कीटी, फ़क़ीरों और बादशाहों के साथ – हर किसी के लिये यक़ीनी तौर पर समान रूप से सोचना-समझना संभव करे और आत्मा के लिये जीना संभव करे, केवल जिसके लिये जीना ही मानी रखता है और जिसे हम मूल्यवान मानते हैं।

चित लेटा हुआ अब वह ऊंचे, निर्मल आकाश को ताक रहा था। "क्या मैं यह नहीं जानता हूं कि यह असीम विस्तार है और गोल मेहराब नहीं है? किन्तु मैं अपनी आंखों को कितना ही क्यों न सिकोड़ूं और अपनी नज़र पर कितना ही ज़ोर क्यों न डालूं, मैं उसे गोल और सीमित देखे बिना नहीं रह सकता और असीम विस्तार के अपने ज्ञान

के बावजूद मैं निस्सन्देह तब सही होता हूं, जब मैं ठोस, हल्की नीली मेहराब देखता हूं, मैं उसकी तुलना में अधिक सही होता हूं, जब उस मेहराब के आगे देख पाने के लिये अपनी दृष्टि पर ज़ोर डालता हूं।"

लेविन ने सोचना बन्द कर दिया था और मानो रहस्यपूर्ण ध्वनियों को सुन रहा था, जो आपस में किसी चीज़ के बारे में हर्ष तथा चिन्तापूर्ण ढंग से कुछ बातें कर रही थीं।

"क्या यह आस्था ही है?" अपनी ख़ुशी पर विश्वास करने से डरते हुए उसने सोचा। "हे भगवान, मैं आभारी हूं आपका!" गले में उठती सिसकियों को निगलते और आंसुओं से भरी आंखों को दोनों हाथों से पोंछते हुए उसने कहा।

(१४)

लेविन अपने सामने देख रहा था, उसने पशुओं का झुण्ड और उसके बाद अपनी घोड़ा-गाड़ी देखी, जिसमें मुश्की घोड़ा जुता हुआ था, कोचवान को देखा, जिसने पशुओं के झुण्ड के क़रीब आकर चरवाहे से कुछ बातचीत की। इसके बाद उसने अपने निकट पहियों की आवाज़ और ख़ूब अच्छी तरह से खिलाये-पिलाये जानेवाले घोड़े का भर्राटा सुना। किन्तु वह अपने विचारों में इतना डूबा-खोया हुआ था कि कोचवान के अपने पास आने के कारण के बारे में नहीं सोच पाया।

उसे इस बात का तभी ध्यान आया, जब कोचवान ने बिल्कुल निकट आकर ऊंची आवाज़ में कहा –

"मालकिन ने आपके पास भेजा है। आपके भाई और कोई अन्य साहब आये हैं।"

लेविन ने घोड़ा-गाड़ी में बैठकर लगामें अपने हाथ में ले लीं।

लेविन ऐसे अनुभव करता हुआ मानो उसे गहरी नींद से जगा दिया गया हो, देर तक नहीं सम्भल सका। उसने तगड़े घोड़े की टांगों के बीच और गर्दन पर उस जगह फेन को ध्यान से देखा, जहां डोरियां रगड़ खाती थीं, अपनी बग़ल में बैठे इवान कोचवान को ग़ौर से देखा और उसे यह याद हो आया कि उसे भाई के

आने की प्रतीक्षा थी, कि उसके देर तक अनुपस्थित रहने के कारण पत्नी सम्भवतः चिन्तित होगी और यह अनुमान लगाने का प्रयास किया कि भाई के साथ आनेवाला मेहमान कौन हो सकता है। अब भाई, पत्नी और अनजान मेहमान उसे पहले की तुलना में भिन्न प्रतीत हुए। उसे लगा कि अब सभी लोगों के साथ उसके सम्बन्ध भिन्न होंगे।

"भाई के साथ वह परायापन नहीं होगा, जो हमेशा हमारे बीच रहा था – वाद-विवाद नहीं होगा; कीटी के साथ झगड़ा कभी नहीं होगा; मेहमान के साथ, वह चाहे कोई भी क्यों न हो, प्यार और दयालुता से पेश आऊंगा; नौकरों-चाकरों, इवान के साथ भी बिल्कुल दूसरा ही रवैया होगा।"

बेसब्री से भर्राटे लेते और अधिक तेज़ी से दौड़ने के लिये उत्सुक तगड़े घोड़े की लगामें कसे हुए लेविन ने अपने निकट बैठे इवान की तरफ़ देखा, जो यह नहीं जानता था कि ख़ाली रह गये हाथों का क्या करे और लगातार अपनी क़मीज़ को नीचे दबाता जा रहा था। लेविन उसके साथ बातचीत शुरू करने का कोई आधार ढूंढ़ रहा था। उसने कहना चाहा कि व्यर्थ ही उसने ज़ीन को इतना ऊंचा कस दिया, किन्तु यह तो उसकी भर्त्सना करना होता और वह उससे कुछ प्यार भरे शब्द कहना चाहता था। किन्तु कोई दूसरी बात उसके दिमाग़ में आ नहीं रही थी।

"घोड़े को दायें कर लेने की इजाज़त दीजिये, वहां ठूंठ है," कोचवान ने लेविन के हाथ में लगाम ठीक करते हुए कहा।

"कृपया लगाम को नहीं छेड़ो और मुझे शिक्षा नहीं दो!" कोचवान के इस तरह दख़ल देने पर लेविन ने झल्लाकर कहा। सदा की भांति, इस समय की दख़लंदाज़ी से भी वह बिगड़ उठा और उसने दुखी मन से यह अनुभव किया कि उसका ऐसा मानना कितना ग़लत था कि उसकी नयी मनःस्थिति यथार्थ से वास्ता पड़ने पर उसे उसी क्षण बदल सकती है।

घर से थोड़ी दूर रह जाने पर लेविन ने ग्रीशा और तान्या को अपनी ओर भागे आते देखा।

"मौसा कोस्त्या! मां आ रही हैं, नाना भी, सेर्गेई इवानोविच और एक अन्य व्यक्ति भी," उन्होंने घोड़ा-गाड़ी में बैठते हुए कहा।

"यह अन्य व्यक्ति कौन है?"

"बहुत ही भयानक है! हाथों को ऐसे करता है," तान्या ने घोड़ा-गाड़ी में खड़े होकर कातावासोव की नक़ल करते हुए कहा।

"बूढ़ा है या जवान?" लेविन ने हंसते हुए पूछा, जिसे तान्या के इस अभिनय से किसी की याद आ गयी थी।

"काश, कोई अप्रिय व्यक्ति न हो!" लेविन ने मन में सोचा।

सड़क का मोड़ मुड़ते ही लेविन को अपनी ओर आते लोग दिखाई दिये और उसने पुआल का टोप पहने कातावासोव को पहचान लिया, जो उसी तरह से हाथ हिलाता हुआ आ रहा था, जैसे तान्या ने अभिनय करके बताया था।

कातावासोव को दर्शनशास्त्र की चर्चा करना बहुत पसन्द था, जिसके विचार उसने प्रकृतिविज्ञानियों से लिये थे, जिन्होंने दर्शनशास्त्र का कभी अध्ययन नहीं किया था। लेविन ने पिछली बार मास्को में उसके साथ काफ़ी बहस की थी।

ऐसी ही एक बातचीत की, जिसमें कातावासोव ने स्पष्टतः यह अनुभव किया था कि उसका पलड़ा भारी रहा है, लेविन को उसे पहचानने पर सबसे पहले याद हो आई।

"नहीं, मैं बहस नहीं करूंगा और चंचलता से अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं करूंगा," उसने सोचा।

घोड़ा-गाड़ी से नीचे उतरकर, अपने भाई और कातावासोव से हाथ मिलाने के बाद उसने पत्नी के बारे में पूछा।

"वह मीत्या को घर के पासवाले कोलोक जंगल में ले गयी है। वह उसे वहां सुलाना चाहती है, क्योंकि घर में बहुत गर्मी है," डौली ने कहा।

बच्चे को जंगल में ले जाने के बारे में लेविन हमेशा पत्नी को मना करता रहता था, क्योंकि इसे ख़तरनाक मानता था और इसलिये उसे यह ख़बर अच्छी नहीं लगी।

"उसे जहां-तहां ले जाती रहती है," बूढ़े प्रिंस ने मुस्कराकर कहा। "मैंने उसे सलाह दी थी कि बच्चे को बर्फ़ वाले तहख़ाने में ले जाये।"

"वह मधुमक्खी पालनशाला में जाना चाहती थी। उसका ख़्याल था कि तुम वहां हो। हम वहीं जा रहे हैं," डौली ने कहा।

"तो तुम आजकल क्या कर रहे हो?" कोज़्निशेव ने दूसरों से पीछे रहते और भाई के बराबर होते हुए पूछा।

"कोई ख़ास काम नहीं। हमेशा की तरह खेतीबारी में लगा रहता हूं," लेविन ने उत्तर दिया। "काफ़ी दिनों के लिये आये हो न? हम तो बहुत दिनों से राह देख रहे हैं।"

"दो हफ़्ते के लिये। मास्को में बहुत काम है।"

इन शब्दों पर दोनों भाइयों की नज़रें मिलीं और लेविन के मन में भाई के साथ मैत्रीपूर्ण, मुख्यतः सीधे-सरल सम्बन्धों की सदा बनी रहनेवाली चाह के बावजूद, जो अब और भी प्रबल हो गयी थी, उसने अनुभव किया कि उससे नज़र मिलाते हुए उसे झेंप अनुभव हो रही है। उसने दृष्टि झुका ली और समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहे।

बातचीत के ऐसे विषय चुनने का प्रयास करते हुए, जो कोज़्निशेव को पसन्द हों और सेर्ब युद्ध तथा स्लाव प्रश्न से उसका ध्यान हटा सकें, जिनकी ओर उसने मास्को में अपनी व्यस्तता के उल्लेख में संकेत किया था, लेविन ने कोज़्निशेव की पुस्तक की चर्चा आरम्भ कर दी।

"तो तुम्हारी किताब के बारे में समीक्षायें निकलीं?" उसने पूछा।

लेविन ने पहले से सोचकर यह प्रश्न किया है, कोज़्निशेव इस बात पर मुस्करा दिया।

"कोई इसकी चिन्ता नहीं कर रहा और मैं दूसरों से भी कम," उसने उत्तर दिया। "दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना, उधर देखिये, बारिश होगी," उसने ऐस्प पेड़ों की फुनगियों के ऊपर नज़र आनेवाले कुछ सफ़ेद बादलों की ओर छाते से संकेत करते हुए कहा।

इन शब्दों के कहे जाते ही दोनों भाइयों के बीच शत्रुता का नहीं, किन्तु रुखाई का वह सम्बन्ध फिर से स्थापित हो गया, जिससे बचने को लेविन इतना अधिक उत्सुक था।

लेविन कातावासोव के पास चला गया।

"कितना अच्छा किया आपने कि यहां आने का विचार बना लिया," उसने कहा।

"बहुत अर्से से चाह रहा था। अब ख़ूब बातचीत होगी। स्पेन्सर पढ़ा है?"

"नहीं, पूरा नहीं पढ़ा," लेविन ने जवाब दिया। "वैसे, मुझे अब ऐसा करने की ज़रूरत भी नहीं।"

"यह क्या कह रहे हैं? बड़ी दिलचस्प बात है। भला क्यों?"

"मुझे पूरी तरह से विश्वास हो गया है कि जिन प्रश्नों में मेरी रुचि है, उनके उत्तर मुझे स्पेन्सर या वैसे ही अन्य लोगों में नहीं मिलेंगे। अब ..."

किन्तु कातावासोव के चेहरे के शान्त और प्रफुल्ल भाव ने उसे सहसा ऐसे चकित किया और उसे अपने मूड पर ऐसा तरस आया, जिसे वह इस बातचीत से स्पष्टतः नष्ट कर रहा था, कि अपने इरादे को याद करते हुए उसने बीच में ही बात रोक दी।

"ख़ैर, बाद में चर्चा करेंगे," उसने इतना और जोड़ दिया। "अगर मधुमक्खी पालनशाला में चलना है, तो इधर, इस पगडंडी से आइये," उसने सभी को सम्बोधित किया।

एक संकरी पगडंडी पर चलते हुए घास से ढके वन-प्रांगन में पहुंचने पर, जो एक ओर से चटकीले पैन्जा फूलों से घिरा था और जिनके बीच गहरे हरे रंग की हैलीबोर की झाड़ियां उगी हुई थीं, लेविन ने अपने मेहमानों को नौ उम्र ऐस्प वृक्षों की घनी छाया में मधुमक्खियों से डरनेवाले आगन्तुकों के लिये विशेष रूप से बनायी गयी बैंच और ठूंठों पर बिठा दिया और स्वयं बच्चों तथा वयस्कों के लिये रोटी, खीरे और ताज़ा शहद लाने के लिये झोंपड़े में चला गया।

कम से कम द्रुत गति से हिलने-डुलने का प्रयास करते और अधिकाधिक अक्सर निकट से उड़कर गुज़रनेवाली मधुमक्खियों की भिन-भिनाहट को सुनते हुए वह पगडंडी पर चलकर झोंपड़े तक पहुंच गया। ड्योढ़ी के बिल्कुल निकट ही एक मधुमक्खी उसकी दाढ़ी में फंसकर ज़ोर से भिनभिना उठी। किन्तु उसने सावधानी से उसे दाढ़ी में से निकाल दिया। छायादार ड्योढ़ी में जाकर उसने खूंटी पर लट-

कता हुआ जाल उतारा, उसे पहनकर तथा जेबों में हाथ डालकर मधुमक्खी पालनशाला तक चला गया, जिसके गिर्द बाड़ बनी हुई थी और जहां घास से साफ़ की हुई जगह पर सीधी क़तारों में छाल द्वारा खूंटों से बंधे उसके जाने-पहचाने पुराने छत्ते रखे थे, जिनमें से प्रत्येक का अपना इतिहास था। बाड़ के बराबर नये, इस वर्ष के छत्ते लगाये गये थे। छत्तों में दाख़िल होने के सूराख़ों के सामने एक ही जगह पर भीड़ लगाकर और खेलती हुई मधुमक्खियां झलक दिखा रही थीं और काम करनेवाली मधुमक्खियां एक ही दिशा में, फूलों से लदे लाइम वृक्षों के जंगल की ओर जाती थीं और वहां से रस लिये हुए छत्तों की तरफ़ वापस आती थीं।

उसके कानों में लगातार तरह-तरह की आवाज़ें आ रही थीं, कभी तो काम में व्यस्त, तेज़ी से उड़ती हुई पास से गुज़रनेवाली मधुमक्खी की, कभी भिनभिनाते काहिल नर मधुमक्खी की, तो कभी चौकीदारी करनेवाली उत्तेजित मधुमक्खियों की, जो शत्रु से अपने ख़ज़ाने की रक्षा करती थीं और डंक मारने को तैयार थीं। बाड़ के दूसरी ओर बूढ़ा लकड़ी की पतरी पर रन्दा फेर रहा था और उसने लेविन को नहीं देखा। लेविन मधुमक्खी पालनशाला के मध्य में रुक गया और उसने बूढ़े को नहीं पुकारा।

वह अकेला रह जाने पर ख़ुश था, ताकि वास्तविकता से, जिसने उसके मूड को इतना अधिक ख़राब कर दिया था, अपने को उबार सके।

उसे याद आया कि वह इवान पर बिगड़ चुका है, भाई के प्रति रुखाई दिखा चुका है और कातावासोव के साथ अगम्भीर ढंग से बात कर चुका है।

"क्या वह क्षणिक मनःस्थिति थी, जो अपना चिह्न तक छोड़े बिना समाप्त हो जायेगी?" वह सोच रहा था।

किन्तु उसी क्षण अपनी मनःस्थिति में लौटते हुए उसने सहर्ष यह अनुभव किया कि उसके भीतर कोई नयी और महत्त्वपूर्ण बात हो गयी है। वास्तविकता ने कुछ ही समय के लिये उस आत्मिक चैन पर, जो उसने प्राप्त किया था, पर्दा डाल दिया था, मगर वह उसके मन में अक्षुण्ण था।

जिस प्रकार इस समय उसके इर्द-गिर्द उड़ती, डराती और उसका

ध्यान बंटाती हुई मधुमक्खियां उसे उसके पूरे शारीरिक चैन से वंचित कर रही थीं, उनसे बचने के लिये उसे सिकुड़ने-सिमटने को विवश कर रही थीं, ठीक इसी प्रकार उन चिन्ताओं ने, जिन्होंने घोड़ा-गाड़ी में बैठते ही उसे घेर लिया था, उसे आत्मिक स्वतंत्रता से वंचित कर दिया था। किन्तु ऐसा केवल तभी तक जारी रहा, जब तक वह उनके बीच था। जिस प्रकार मधुमक्खियों के बावजूद उसकी सारी शारीरिक शक्ति सुरक्षित थी, वैसे ही नवनिर्मित आत्मिक शक्ति भी क़ायम थी।

(१५)

"तुम्हें मालूम है, कोस्त्या, कि सेर्गेई इवानोविच के साथ गाड़ी में कौन था?" बच्चों में शहद और खीरे बांटने के बाद डौली ने कहा। "व्रोन्स्की। वह सेर्बिया की लड़ाई में जा रहा है।"

"सो भी अकेला नहीं, बल्कि एक दस्ता भी अपने ख़र्च पर साथ ले जा रहा है!" कातावासोव ने बताया।

"यह उसके अनुरूप है," लेविन ने कहा। "क्या स्वयंसेवक अभी भी मोर्चे पर जा रहे हैं?" कोज़्निशेव की ओर देखते हुए उसने पूछा।

कोज़्निशेव ने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि वह छत्ते के एक सफ़ेद टुकड़े के शहद में फंसी हुई मधुमक्खी को चाक़ू के कुन्द हिस्से से बहुत सावधानीपूर्वक प्याले से बाहर निकालने में व्यस्त था।

"बिल्कुल जा रहे हैं! काश, आपने देखा होता कि कल स्टेशन पर क्या हो रहा था!" कातावासोव ने ज़ोर से खीरे को काटते हुए कहा।

"इस सब का क्या अर्थ है? सेर्गेई इवानोविच, ईसा मसीह के नाम पर मुझे यह समझाइये कि ये सब स्वयंसेवक कहां जा रहे हैं, किसके विरुद्ध लड़ते हैं?" बूढ़े प्रिंस ने स्पष्टतः उस बातचीत को आगे बढ़ाते हुए पूछा, जो लेविन की अनुपस्थिति में आरम्भ हुई थी।

"तुर्कों के साथ," कोज़्निशेव ने शहद से काली हुई और असहाय-सी स्थिति में पैरों को हिलाती-डुलाती मधुमक्खी को चाक़ू से ऐस्प के मज़बूत पत्ते पर बिठाते हुए बड़े इतमीनान से मुस्कराकर जवाब दिया।

"मगर तुर्कों के विरुद्ध युद्ध किसने घोषित किया है? इवान इवानोविच रागोज़ोव और मदाम श्ताल के साथ काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने?"

"युद्ध किसी ने घोषित नहीं किया, किन्तु लोग अपने जाति-बन्धुओं के दुख-कष्टों के प्रति सहानुभूति अनुभव करते हुए उनकी सहायता करना चाहते हैं," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया।

"मगर प्रिंस मदद की बात नहीं कर रहे हैं," लेविन ने ससुर का पक्ष लेते हुए कहा, "बल्कि युद्ध की। प्रिंस का कहना है कि सरकार की अनुमति के बिना लोग अपने तौर पर युद्ध में भाग नहीं ले सकते।"

"कोस्त्या, इसे देखो, इस मधुमक्खी को! ज़रूर कोई न कोई हमें डंक मार देगी!" डौली ने हाथ हिलाकर ततैये को दूर भगाते हुए कहा।

"यह मधुमक्खी नहीं, ततैया है," लेविन ने कहा।

"तो कहिये, कहिये जनाब, आपका इस बारे में क्या सिद्धांत है?" कातावासोव ने मुस्कराकर प्रश्न किया। वह स्पष्टतः लेविन को बहस के मैदान में उतरने के लिये ललकार रहा था। "लोग अपने तौर पर ऐसा करने का क्यों अधिकार नहीं रखते?"

"मेरा सिद्धांत यह है कि युद्ध एक तरफ़ तो ऐसी पाशविक, क्रूर और भयानक चीज़ है कि किसी ईसाई की तो बात दूर, कोई भी आदमी व्यक्तिगत रूप से युद्ध आरम्भ करने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले सकता, केवल सरकार ही ऐसा कर सकती है, जिसका यह अधिकार-क्षेत्र है और जो अनिवार्य रूप से युद्ध में घसीट ली जाती है। दूसरी ओर, विज्ञान और साधारण सूझ-बूझ की दृष्टि से भी राजकीय मामलों, विशेषकर युद्ध के मामले में साधारण नागरिक अपनी इच्छा का परित्याग कर देते हैं।"

कोज़्निशेव और कातावासोव दोनों ही अपनी पहले से तैयार आपत्तियों के साथ एक बार ही बोल उठे।

"यही तो बात है प्यारे कि ऐसी स्थितियां भी हो सकती हैं, जब सरकार नागरिकों की इच्छा पूरी नहीं करती और तब समाज अपनी इच्छा व्यक्त करता है," कातावासोव ने कहा।

किन्तु कोज़्निशेव ने स्पष्टतः इस आपत्ति का समर्थन नहीं किया।

उसने कातावासोव के शब्दों पर नाक-भौंह सिकोड़ी और दूसरी बात कही –

"प्रश्न को इस तरह प्रस्तुत करना ठीक नहीं। यह युद्ध की घोषणा नहीं, बल्कि मानवीय, ईसाई भावनाओं की अभिव्यक्ति है। भाइयों, एक ही रक्त और एक ही धर्म के माननेवालों की हत्या की जा रही है। किन्तु मान लें कि भाइयों, एक ही रक्त और एक ही धर्मानुयायियों को नहीं, बल्कि बच्चों, नारियों और बूढ़ों को मौत के घाट उतारा जा रहा है, भावनायें भड़क उठती हैं और रूसी लोग इन भयानक हत्या-काण्डों को समाप्त करवाने के लिये भागे जाते हैं। कल्पना करो कि तुम सड़क पर जा रहे हो और यह देखते हो कि शराबी लोग किसी नारी या बच्चे को पीट रहे हैं। मेरे ख़्याल में तब तुम यह न पूछते कि इस व्यक्ति के विरुद्ध युद्ध घोषित किया गया है या नहीं, बल्कि तुम उस पर टूट पड़े होते और तुमने मासूम की रक्षा की होती।"

"किन्तु मैंने उसकी हत्या न की होती," लेविन ने कहा।

"नहीं, तुमने हत्या कर दी होती।"

"मैं नहीं जानता। अगर मैंने ऐसा देखा होता, तो उस समय जैसी भावनायें मुझ पर हावी हो जातीं, मैं वैसे ही करता। किन्तु मैं पहले से ही कुछ नहीं कह सकता। उत्पीड़ित स्लावों के लिये ऐसी स्वतःस्फूर्त भावना नहीं है और न ही हो सकती है।"

"हो सकता है कि तुम्हारे लिये न हो। मगर दूसरों के लिये है," कोज़्निशेव ने अप्रसन्नता से माथे पर बल डालते हुए कहा।"जनता में 'काफ़िर तातारों' के जुए तले ईसाई धर्म के अनुयायियों के दुख-दर्दों की दास्तान अभी तक जीवित है। जनता ने अपने भाइयों की मुसीबतों के बारे में सुना और वह अपना विरोध प्रकट किये बिना न रह सकी।"

"सम्भव है," लेविन ने बात टालते हुए कहा। "किन्तु मैं ऐसा नहीं देखता हूं। मैं भी तो जनता में से हूं, मैं ऐसा अनुभव नहीं करता।"

"मुझे ही ले लीजिये," बूढ़े प्रिंस ने कहा। "मैं विदेश में रह रहा था, अख़बार पढ़ता था और स्वीकार करता हूं कि बल्गारियाई अत्याचारों के पहले किसी तरह भी यह नहीं समझ पा रहा था कि सभी रूसियों को अचानक अपने स्लाव भाइयों से इतना अधिक प्यार क्यों हो गया

और मैं उनके प्रति कोई प्यार अनुभव नहीं करता हूं? मुझे बेहद परेशानी होती थी, सोचता था कि या तो मैं बड़ा घटिया आदमी हूं या फिर कार्ल्सबाद का पानी मुझ पर ऐसा प्रभाव डालता है। किन्तु यहां आकर मैं शान्त हो गया – देखता हूं कि मेरे अलावा भी ऐसे लोग हैं, जो स्लाव भाइयों में नहीं, बल्कि केवल रूस में दिलचस्पी लेते हैं। मिसाल के तौर पर कोन्स्तान्तीन।"

"व्यक्तिगत विचार इस मामले में कोई महत्त्व नहीं रखते," कोज़्निशेव ने कहा। "व्यक्तिगत विचार कोई अर्थ नहीं रखते, जब पूरे रूस – पूरी जनता ने अपनी इच्छा व्यक्त कर दी है।"

"मैं माफ़ी चाहता हूं, मुझे ऐसा दिखाई नहीं देता। आम लोग तो जानते तक नहीं," प्रिंस ने कहा।

"नहीं, पापा... जानते कैसे नहीं। इतवार के दिन गिरजे में?" बातचीत को सुन रही डौली ने कहा। "कृपया, तौलिया इधर दे दो," उसने मुस्कराते हुए बच्चों की ओर देख रहे बूढ़े को सम्बोधित किया। "ऐसा तो नहीं हो सकता कि सभी..."

"इतवार को गिरजे में क्या हुआ था? पादरी से कुछ पढ़ने को कहा गया, उसने पढ़ दिया। लोगों के पल्ले कुछ नहीं पड़ा और वे उसी तरह आहें भरते रहे, जैसे हर उपदेश के समय करते हैं," बूढ़े प्रिंस कहते गये। "बाद में उनसे कहा गया कि पुण्य कार्य के लिये गिरजे में पैसे जमा किये जा रहे हैं और उन्होंने एक-एक कोपेक दे दिया। किन्तु किसलिये – उन्हें यह मालूम नहीं है।"

"जनता न जानती हो, ऐसा नहीं हो सकता। उसमें अपने भाग्य की चेतना हमेशा रहती है और इस समय जैसे क्षणों में वह और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है," बूढ़े मधुमक्खियों के पालक की ओर देखते हुए कोज़्निशेव ने ज़ोर देकर कहा।

सफ़ेद होती हुई काली दाढ़ी और पके रुपहले बालों वाला सुन्दर बूढ़ा शहद से भरा प्याला हाथ में लिये निश्चल खड़ा था और अपनी ऊंचाई से स्नेह तथा शान्ति से इन महानुभावों को देख रहा था, स्पष्टतः कुछ भी नहीं समझ रहा था और समझना भी नहीं चाहता था।

"यह बिल्कुल सही है," अर्थपूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए बूढ़े ने कोज़्निशेव के शब्दों के बारे में कहा।

"तो इसी से पूछ देखिये। वह न तो कुछ जानता है और न ही सोचता है," लेविन ने कहा। "मिख़ाइलोविच, तुमने जंग के बारे में सुना है न?" उसने बूढ़े को सम्बोधित किया। "मेरा मतलब उससे है जो गिरजे में कहा गया? तुम्हारा क्या ख़्याल है? क्या हमें ईसाइयों के लिये लड़ना चाहिये?"

"हमें क्या ज़रूरत है सोचने की? सम्राट अलेक्सान्द्र निकोलायेविच ने पहले हमारे लिये सोचा और आगे भी सभी मामलों में सोच लेगा। वह हम सबसे ज़्यादा अच्छी तरह सब कुछ जानता है। क्या और रोटी लाऊं? लड़के को और दूं?" उसने ग्रीशा की ओर संकेत करते हुए, जो रोटी का अपना टुकड़ा ख़त्म कर रहा था, डौली से पूछा।

"मुझे पूछने की आवश्यकता नहीं," कोज़्निशेव ने कहा, "हमने अपनी आंखों से ऐसे सैकड़ों लोग देखे हैं और देख रहे हैं, जो अपना सब कुछ छोड़-छाड़कर रूस के सभी भागों से न्यायपूर्ण ध्येय में योग देने के लिये आ रहे हैं और बिल्कुल सीधे तथा स्पष्ट रूप से अपना विचार और लक्ष्य व्यक्त करते हैं। वे अपनी कौड़ियां लाते हैं या ख़ुद मोर्चे पर जाते हैं और साफ़-साफ़ कहते हैं कि किसलिये ऐसा कर रहे हैं। क्या अर्थ है इसका?"

"मेरे विचार में इसका अर्थ है," लेविन ने कहना शुरू किया, जो ग़ुस्से में आने लगा था, "कि आठ करोड़ लोगों में हमेशा सैकड़ों ही नहीं, जैसा कि इस समय हो रहा है, बल्कि दसियों हज़ार ऐसे सिरफिरे और सामाजिक स्थिति से वंचित लोग मिल जायेंगे, जो हमेशा कहीं भी – पुगाचोव के गिरोह में, ख़ीवा या सेर्बिया – जाने को तैयार होंगे..."

"मैं तुमसे कह रहा हूं कि सैकड़ों नहीं, सिरफिरे लोग भी नहीं, बल्कि जनता के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि!" कोज़्निशेव ने ऐसी झल्लाहट से कहा मानो वह अपनी अन्तिम पूंजी की रक्षा कर रहा हो। "और चन्दा? इस तरह तो सारी जनता अपनी इच्छा को साफ़ तौर पर व्यक्त करती है।"

"'जनता' शब्द बहुत ही अस्पष्ट है," लेविन ने कहा। "सम्भव है कि ज़िलों के क्लर्क, अध्यापक और हज़ार में से एक किसान यह जानता है कि क्या मामला है। बाक़ी मिख़ाइलोविच जैसे आठ करोड़

न केवल अपनी इच्छा ही नहीं व्यक्त करते हैं, बल्कि उन्हें तो इस बात का आभास तक नहीं है कि किस बारे में अपनी इच्छा व्यक्त करें। हमें ऐसा कहने का भला क्या अधिकार है कि यह जनता की इच्छा है?"

(१६)

तर्क-वितर्क में बहुत अनुभवी कोज़्निशेव ने कोई आपत्ति न करते हुए बातचीत को दूसरी दिशा में मोड़ दिया।

"यदि तुम गणित द्वारा जनता की भावना को जानना चाहते हो, तो स्पष्ट है कि ऐसा कर पाना बहुत कठिन होगा। हमारे यहां अभी तक मतदान नहीं है और यह सम्भव भी नहीं है, क्योंकि वह जनता की इच्छा को व्यक्त नहीं करता। किन्तु इसके लिये दूसरे उपाय हैं। इसे वातावरण में, इसे हृदय से अनुभव किया जा सकता है। मैं जनता के ठहरे सागर के नीचे उठनेवाली तरंगों की बात नहीं कर रहा हूं, जो पूर्वाग्रह से मुक्त हरेक व्यक्ति के लिये स्पष्ट हैं। तुम संकुचित अर्थ में ही समाज पर दृष्टि डाल लो। बुद्धिजीवियों के जगत की सभी विभिन्नतापूर्ण पार्टियां, जो पहले एक-दूसरी की इतनी अधिक विरोधी थीं, वे सभी मिलकर एक हो गयी हैं। उनके सभी मतभेद समाप्त हो गये हैं, सभी सार्वजनिक निकाय एक ही बात कर रहे हैं, सभी ने उस स्वतःस्फूर्त शक्ति को अनुभव कर लिया है, जो उन्हें अपने वश में करके एक ही दिशा में लिये जा रही है।"

"हां, ये तो अख़बार ही हैं, जो एक ही बात कह रहे हैं," बूढ़े प्रिंस ने कहा। "यह सच है। इस हद तक एक ही राग अलाप रहे हैं, जैसे तूफ़ान के पहले मेंढक। इनके कारण ही और कुछ सुनाई नहीं देता।"

"मेंढक हैं या नहीं – मैं अख़बार नहीं निकालता हूं और उनकी सफ़ाई भी देना नहीं चाहता। किन्तु मैं तो बुद्धिजीवियों के क्षेत्र में मतैक्य की बात कर रहा हूं," कोज़्निशेव ने अपने भाई लेविन को सम्बोधित करते हुए कहा।

लेविन ने उत्तर देना चाहा, मगर बूढ़े प्रिंस बीच में ही बोल उठे।

"किन्तु इस मतैक्य के बारे में एक अन्य बात कही जा सकती है," प्रिंस ने कहा। "मेरा दामाद है, स्तेपान अर्काद्येविच, आप

उसे जानते हैं। उसे अब आयोग की कमेटी या ऐसी ही किसी दूसरी जगह पर, जो मुझे याद नहीं, एक पद मिलनेवाला है। मगर वहां करने-धरने को कुछ नहीं – डौली, यह कोई रहस्य तो नहीं है न! – और वहां वेतन होगा आठ हज़ार रूबल वार्षिक। आप उससे पूछ देखिये कि यह नौकरी उपयोगी है या नहीं – वह आपके सामने सिद्ध कर देगा कि इसकी बेहद ज़रूरत है। वह सच बोलनेवाला आदमी है, लेकिन वह आठ हज़ार की उपयोगिता में विश्वास न करे, यह कैसे हो सकता है?"

"हां, स्तेपान अर्कादयेविच ने दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना को यह बताने के लिये कहा था कि यह जगह उसे मिल गयी है," कोज़्निशेव ने यह अनुभव करते हुए कि प्रिंस बात को कहीं और लिये जा रहे हैं, अप्रसन्नता से कहा।

"अख़बारों का मतैक्य भी इसीलिये है। मुझे समझाया गया है कि जैसे ही जंग छिड़ती है, वैसे ही उनकी आमदनी दुगुनी हो जाती है। वे जनता और स्लावों के भाग्य... और ऐसी ही दूसरी बातों की भला चिन्ता क्यों न करें?"

"मुझे बहुत-से अख़बार अच्छे नहीं लगते, किन्तु यह न्याय नहीं है," कोज़्निशेव ने कहा।

"मैं सिर्फ़ एक शर्त पेश करना चाहूंगा," बूढ़े प्रिंस कहते गये। "प्रशा के साथ युद्ध होने के पहले अल्फ़ोन्स कार्र ने इस सम्बन्ध में बहुत ही बढ़िया लिखा था – 'आप समझते हैं कि जंग लाज़िमी है? बहुत अच्छी बात है। जो युद्ध का प्रचार करते हैं, उनकी एक विशेष, अग्रणी पलटन बनाकर सबसे आगे-आगे धावा बोलने, हमला करने के लिये भेज दी जाये!'"

"सम्पादक लोग तो अपना ख़ूब रंग दिखायेंगे," कातावासोव ने इस ख़ास पलटन में अपने परिचित सम्पादकों की कल्पना करते हुए ज़ोर का ठहाका लगाकर कहा।

"वे तो भागने लगेंगे," डौली ने कहा, "केवल बाधा ही डालेंगे।"

"अगर भागने लगेंगे, तो पीछे से उन्हें छर्रों या कज़ाकों के कोड़ों का मज़ा दिलवाना चाहिये," बूढ़े प्रिंस ने कहा।

"यह तो मज़ाक़ है और, माफ़ी चाहता हूं, कोई अच्छा मज़ाक़

नहीं है, प्रिंस," कोज़्निशेव ने कहा।

"मुझे तो यह मज़ाक़ नहीं लगता, यह..." लेविन ने कहना शुरू किया, मगर कोज़्निशेव ने उसे टोक दिया।

"समाज के हर सदस्य को उसकी योग्यता के अनुरूप काम करना होता है," उसने कहा, "और बुद्धिजीवी लोग जनमत को अभिव्यक्त करके अपना कर्त्तव्य पूरा करते हैं। और जनमत का मतैक्य तथा उसकी पूर्ण अभिव्यक्ति प्रेस की बड़ी सेवा और साथ ही सुखद बात है। बीस साल पहले हम लोग चुप रहते, मगर अब रूसी जनता की आवाज़ सुनाई दे रही है, जो मिलकर एक व्यक्ति की तरह उठने और अपने उत्पीड़ित भाइयों के लिये बलिदान करने को तैयार है। यह महान क़दम और हमारी शक्ति की पेशगी है।"

"लेकिन सिर्फ़ बलिदान ही नहीं, बल्कि तुर्कों को मारने की बात है," लेविन ने दबी ज़बान से कहा। "लोग अपनी आत्मा के लिये बलिदान करते हैं और बलिदान करने को तैयार हैं, मगर हत्या के लिये नहीं," अनचाहे ही उन विचारों के साथ, जो उसके मन पर हावी थे, इस बातचीत को जोड़ते हुए उसने कहा।

"आत्मा के लिये कैसे? मुझ प्रकृतिवादी के लिये यह बड़ी कठिन अभिव्यक्ति है। यह आत्मा क्या चीज़ है?" कातावासोव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"अजी आप जानते हैं!"

"क़सम भगवान की, आभास तक नहीं है मुझे!" कातावासोव ने ज़ोर से हंसकर कहा।

"'मैं अमन नहीं, तलवार लेकर आया हूं,' ईसा मसीह ने कहा है," कोज़्निशेव ने अपनी ओर से इंजील का वह कथन उद्धृत किया, जो मानो सबसे अधिक आसानी से समझ में आनेवाली बात हो और जिससे लेविन को हमेशा बहुत परेशानी होती थी।

"बिल्कुल सही है," इन लोगों के पास खड़े बूढ़े ने संयोगवश अपनी ओर उठी दृष्टि के उत्तर में कहा।

"अरे भैया, तुम्हारा तो कचूमर निकाल दिया गया, एकदम कचूमर निकाल दिया गया!" कातावासोव ख़ुशी से चिल्ला उठा।

लेविन के चेहरे पर झल्लाहट की लाली दौड़ गयी, इसलिये नहीं

कि उसका कचूमर निकाल दिया गया था, बल्कि इस कारण कि वह अपने को वश में नहीं रख सका और बहस करने लगा।

"नहीं, मुझे इनसे बहस नहीं करनी चाहिये," लेविन ने सोचा, "ये लोग अभेद्य कवच पहने हैं और मैं नग्न हूं।"

वह महसूस कर रहा था कि अपने भाई और कातावासोव को अपनी बात नहीं मनवा सकता और ख़ुद उनके साथ सहमत होने की तो और भी कम सम्भावना देख रहा था। वे बुद्धि के उसी घमण्ड का प्रचार कर रहे थे, जिसने उसे लगभग डुबो दिया था। वह इस बात से सहमत नहीं हो सकता था कि उसके भाई समेत दसियों लोगों को राजधानी में आनेवाले बातूनी स्वयंसेवकों के शब्दों के आधार पर यह कहने का अधिकार है कि अख़बारों के साथ वे जनता की इच्छा और विचार को व्यक्त कर रहे हैं और सो भी ऐसे विचार को, जो प्रति-शोध और हत्या में व्यक्त होता है। वह इससे सहमत नहीं हो सकता था, क्योंकि जिन लोगों के बीच रहता था, उसे उनमें इन विचारों की अभिव्यक्ति दिखाई नहीं देती थी और अपने भीतर भी इन विचारों को अनुभव नहीं कर रहा था (और वह अपने को रूसी जनता से अलग मानने को तैयार नहीं था)। मुख्यतः तो वह इसलिये सहमत नहीं हो सकता था कि आम लोगों के साथ-साथ वह ख़ुद भी नहीं जानता था और जान भी नहीं सकता था कि सार्विक कल्याण क्या होता है, किन्तु इतना निश्चित रूप से जानता था कि इस सार्विक कल्याण को भलाई के उस नियम का, जिसे हर व्यक्ति जानता है, कड़ाई से पालन करने पर ही प्राप्त करना सम्भव है, और इसलिये वह किसी भी तरह के साझे उद्देश्यों के लिये न तो युद्ध चाह सकता था और न उसका प्रचार ही कर सकता था। वह मिख़ाइलोविच और जनता का, उस जनता का साथ देते हुए कहता, जिसने स्कैंडिनेवियनों को निमंत्रित करने से सम्बन्धित दन्त-कथा में अपना विचार अभिव्यक्त किया था – "हमारे राजा बनकर हम पर शासन कीजिये। हम सहर्ष पूर्ण अधीनता का वचन देते हैं। सारा श्रम, सारा अपमान और सारा बलिदान अपने ऊपर लेते हैं, किन्तु हम जांच-परख और निर्णय नहीं करते हैं।" किन्तु कोज़्निशेव के शब्दों में जनता अब उस अधिकार से इन्कार कर रही है, जो उसने इतना अधिक मूल्य चुकाकर प्राप्त किया था।

लेविन ने यह भी कहना चाहा कि यदि जनमत इतनी अचूकता से सब कुछ जांच-परख सकता है, तो क्रांति और कम्यून भी उतने ही क़ानूनी क्यों नहीं हैं, जितना कि स्लावों के पक्ष-पोषण का आन्दोलन? किन्तु ये सब ऐसे विचार थे, जो कुछ भी निर्णय नहीं कर सकते थे। हां, एक बात निश्चित रूप से देखी जा सकती थी और वह यह कि इस समय वाद-विवाद से कोज़्निशेव को झल्लाहट हो रही थी और इसलिये बहस जारी रखना उचित नहीं था। लेविन चुप्पी लगा गया और आकाश में घिरते आ रहे बादलों की ओर मेहमानों का ध्यान आकर्षित करते हुए उसने कहा कि बारिश से बचने के लिये घर जाना ठीक होगा।

(१७)

बूढ़े प्रिंस और कोज़्निशेव घोड़ा-गाड़ी में बैठकर चल दिये और बाक़ी लोग तेज़ क़दमों से घर की तरफ़ बढ़ने लगे।

किन्तु सफ़ेद और काले बादल इतनी तेज़ी से उमड़ते आ रहे थे कि बारिश शुरू होने से पहले घर पहुंचने के लिये इन सबको अपनी चाल और तेज़ करने की ज़रूरत थी। कालिख सहित धुएं जैसे काले अग्रणी और नीचे बादल असाधारण गति से आकाश में दौड़ रहे थे। घर अभी दो सौ क़दम दूर था कि ज़ोर से हवा चलने लगी और किसी भी क्षण मूसलधार बारिश की आशा की जा सकती थी।

दहशत और ख़ुशी से चीख़ते हुए बच्चे आगे-आगे भागे जा रहे थे। टांगों के साथ चिपक गये स्कर्टों से बमुश्किल जूझते हुए डौली चल नहीं, बल्कि दौड़ रही थी और बच्चों पर लगातार नज़र टिकाये थी। मर्द लोग अपने टोपों को थामे हुए लम्बे-लम्बे डग भर रहे थे। ये लोग ड्योढ़ी के क़रीब पहुंच गये थे, जब मोटी-सी बूंद गिरी और परनाले के सिरे से टकराकर बिखर गयी। बच्चे, और उनके पीछे ख़ुशी से बातचीत करते हुए वयस्क लोग भी छत के नीचे भाग गये।

"येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना कहां हैं?" लेविन ने अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना से पूछा, जो ड्योढ़ी के दरवाज़े पर दुपट्टे और कम्बल लिये हुए मिली।

"हमने तो सोचा था कि आपके साथ हैं," उसने जवाब दिया।

"और मीत्या ?"

"पासवाले जंगल में होना चाहिये और आया भी उनके साथ है।"

लेविन ने कम्बल झपट लिये और घर के पासवाले जंगल की तरफ़ भाग चला।

इसी थोड़े वक़्त में बादल के मध्य भाग ने सूरज को ऐसे ढक दिया कि सूर्यग्रहण के समय की भांति अंधेरा हो गया। हवा मानो अपनी मनमानी करती हुई बड़ी ज़िद्द से लेविन को रोक रही थी और लाइम वृक्षों से पत्तों तथा फूलों को तोड़ती और बड़े भद्दे तथा अजीब ढंग से भोज वृक्षों की सफ़ेद टहनियों को नग्न करती हुई अकासिया की झाड़ियों, फूलों, बर्डोक के कंटीले पेड़ों, घास और वृक्षों की फुनगियों, आदि, सभी को एक दिशा में झुकाती जा रही थी। बाग़ में काम करनेवाली लड़कियां चीख़ती हुई नौकरों के घर की छत के नीचे भाग गयीं। मूसलधार बारिश के सफ़ेद पर्दे ने दूर के जंगल और पास के मैदान के आधे भाग को अपनी लपेट में ले लिया था और वह तेज़ी से घर के निकट वाले छोटे जंगल की तरफ़ बढ़ रहा था। छोटी-छोटी बूंदों का रूप लेनेवाली बारिश की नमी को हवा में अनुभव किया जा सकता था।

सिर को आगे की ओर झुकाये तथा हाथों से दुपट्टे छीननेवाली हवा से मोर्चा लेता तथा दौड़ता हुआ लेविन छोटे जंगल के क़रीब पहुंच गया था और बलूत के पीछे उसे सफ़ेद-सा कुछ नज़र भी आ रहा था कि अचानक सब कुछ भड़क उठा, सारी पृथ्वी दहक उठी और मानो सिर के ऊपर आकाश की मेहराब चटक गयी। चौंधियाई हुई आंखों को खोलने पर लेविन बारिश के घने पर्दे में से, जो अब उसके और जंगल के बीच दीवार बना हुआ था, सबसे पहले तो जंगल के मध्य में परिचित बलूत की हरी फुनगी की अजीब ढंग से बदली हुई स्थिति देखकर स्तम्भित रह गया। "क्या इस पर बिजली गिर पड़ी?" लेविन ने यह सोचा ही था कि बलूत की फुनगी अपनी गति बढ़ाती हुई दूसरे वृक्षों के पीछे ग़ायब हो गयी और उसे एक बड़े पेड़ के दूसरे पेड़ों पर गिरने की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी।

बिजली की कौंध, बादल की गरज और उसके शरीर में सहसा फैल जानेवाली सिहरन – इन सभी चीज़ों ने मिलकर लेविन के लिये

अत्यधिक भयावह रूप धारण कर लिया।

"हे भगवान! हे मेरे भगवान, यह पेड़ उन पर न गिरा हो!" वह कह उठा।

यद्यपि उसी क्षण यह बात उसके दिमाग़ में आयी कि उसकी यह प्रार्थना कितनी अर्थहीन है कि उस बलूत से उनकी हत्या न हो जाये, जो गिर भी चुका था, फिर भी वह उसे दोहराता रहा, क्योंकि जानता था कि इस अर्थहीन प्रार्थना से बेहतर वह और कुछ नहीं कर सकता।

वह भागता हुआ वहां पहुंचा जहां बच्चे और आया के साथ कीटी अक्सर होती थी, किन्तु उन्हें वहां नहीं पाया।

वे जंगल के दूसरे सिरे पर पुराने लाइम पेड़ के नीचे थीं और उसे बुला रही थीं। काली पोशाकों में (जो पहले उजली थीं) दो आकृतियां किसी चीज़ पर झुकी खड़ी थीं। वे कीटी और आया थीं। लेविन जब भागता हुआ उनके निकट पहुंचा, तो बारिश थम चुकी थी और उजाला होने लगा था। आया की पोशाक का नीचेवाला भाग सूखा था, किन्तु कीटी की पोशाक पूरी तरह भीग गयी थी और उसके शरीर से चिपक गयी थी। बेशक बारिश थम चुकी थी, फिर भी वे दोनों उसी तरह खड़ी थीं, जैसे बारिश के ज़ोर से टूट पड़ने के समय खड़ी हो गयी थीं। दोनों हरे छाते वाली बच्चा-गाड़ी पर झुकी हुई थीं।

"ज़िन्दा हो? सही-सलामत हो? शुक्र है भगवान का!" उसने तब कहा, जब पानी से भरे गड्ढे में एक पैर के जूते के पानी से भर जाने और पांव से आधा निकल जाने के बावजूद वह दौड़ता हुआ उनके पास पहुंचा।

कीटी का लाल गालों वाला भीगा हुआ चेहरा लेविन की तरफ़ मुड़ा हुआ था और वह अपनी टोपी के नीचे से, जिसकी शक्ल बिगड़ गयी थी, सहमी-सहमी-सी मुस्करा रही थी।

"तुम्हें शर्म आनी चाहिये! मेरी समझ में नहीं आता कि कोई इतना असावधान कैसे हो सकता है!" वह बीवी पर बरस पड़ा।

"क़सम भगवान की, मेरा कोई दोष नहीं है। हम चलने को थीं कि मीत्या बेचैनी ज़ाहिर करने लगा। उसका पोतड़ा बदलना ज़रूरी था। हम अभी..." कीटी अपनी सफ़ाई देने लगी।

मीत्या ठीक-ठाक था, भीगा नहीं था और गहरी नींद सो रहा था।

"ख़ैर, शुक्र है भगवान का! मालूम नहीं, मैं क्या कहता जा रहा हूं!"

उन्होंने गीले पोतड़े समेटे, आया बच्चे को गोद में लेकर घर की ओर चल दी। लेविन अपनी पत्नी के साथ-साथ चल रहा था, गुस्से में आने के लिये अपने को अपराधी अनुभव करता हुआ वह आया से चोरी-चोरी पत्नी का हाथ दबा रहा था।

(१८)

लेविन अत्यधिक विभिन्नतापूर्ण बातचीत में मानो अपने मस्तिष्क के बाहरी पक्ष से भाग लेता रहा और उस परिवर्तन के मामले में निराशा के बावजूद, जिसकी उसने अपने भीतर होने की आशा की थी, उसे अपने हृदय की पूर्णता की सुखद चेतना बनी रही।

बारिश के बाद इतना कीचड़ था कि बाहर घूमना सम्भव नहीं था और इसके अलावा जल भरे मेघ क्षितिज पर अभी तक बने हुए थे तथा आकाश के छोरों पर जहां-तहां घने हो उठते थे, गरजने लगते थे। इसलिये सभी लोगों ने दिन का शेष भाग घर पर ही बिताया।

फिर से कोई बहस नहीं छिड़ी, इसके विपरीत दोपहर के भोजन के बाद सभी बड़े अच्छे मूड में थे।

कातावासोव ने शुरू में महिलाओं को अपने मौलिक मज़ाक़ों से ख़ूब हंसाया, जो पहले परिचय के बाद हमेशा ही बहुत पसन्द आते थे। इसके बाद कोज़्निशेव की प्रेरणा पर उसने अपने निरीक्षणों के आधार पर घरेलू नर तथा मादा मक्खियों के बारे में, उनके विभिन्न लक्षणों और चेहरों-मोहरों की भी बहुत दिलचस्प चर्चा की। कोज़्निशेव भी रंग में था और चाय के समय उसने लेविन के आग्रह पर पूर्वी प्रश्न के बारे में अपना दृष्टिकोण इतने सीधे-सादे और अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया कि सभी ने बड़े ध्यान से उसे सुना।

केवल कीटी ही अन्त तक उसकी बात नहीं सुन सकी – उसे मीत्या को नहलाने के लिये बुला लिया गया।

कीटी के जाने के कुछ देर बाद लेविन से भी बच्चे के कमरे में जाने को कहा गया।

अपनी चाय बीच में ही छोड़ने, दिलचस्प बातचीत के अधूरी

रह जाने का अफ़सोस अनुभव करते और साथ ही इसलिये चिन्तित होते हुए कि उसे किसलिये बुलाया गया है, क्योंकि ऐसा तो महत्त्वपूर्ण अवसरों पर ही होता था, वह बच्चे के कमरे की ओर चल दिया।

बेशक यह सही है कि मुक्त होनेवाले चार करोड़ स्लावों के रूस के साथ मिलकर इतिहास में एक नया युग आरम्भ करने के बारे में कोज़्निशेव की योजना एक सर्वथा नयी चीज़ के रूप में उसे बहुत दिलचस्प लगी थी और वह उसे अन्त तक सुन नहीं पाया था, बेशक उसे इस बात की जिज्ञासा और चिन्ता भी थी कि उसे बच्चे के कमरे में क्यों बुलाया गया है, फिर भी वह जैसे ही मेहमानख़ाने से बाहर निकला और अकेला रह गया, वैसे ही सुबह के विचार उसे पुनः याद हो आये। और उसकी आत्मा में हो रही उथल-पुथल की तुलना में विश्व-इतिहास में स्लाव तत्त्व के महत्त्व के बारे में सभी विचार उसे इतने तुच्छ लगे कि वह आन की आन में यह सभी कुछ भूल गया और फिर से उसका वैसा ही मूड हो गया, जैसा आज सुबह था।

पहले की तरह उसने अपने सभी विचारों को अब फिर से नहीं दोहराया (उसे इसकी ज़रूरत नहीं थी)। वह फ़ौरन उसी भावना की स्थिति में पहुंच गया, जो उसका संचालन कर रही थी, जो इन विचारों के साथ सम्बन्धित थी और उसने इस भावना को अपनी आत्मा में पहले से कहीं अधिक स्पष्ट और सशक्त पाया। अब उसके साथ वैसा नहीं हुआ, जैसा कि मन का चैन लौटाने के लिये उसे पहले करना पड़ता था, जब भावना को पाने के लिये उसे अपनी पूरी विचार-शृंखला को दोहराना होता था। अब, इसके विपरीत, ख़ुशी और चैन की भावना पहले से अधिक सजीव थी और विचार भावना का साथ नहीं दे पा रहा था।

वह छज्जे को लांघ रहा था और अंधेरे से घिर चुके आकाश में जगमगा उठे दो सितारों को देखते हुए उसे सहसा याद हो आया – "हां, आकाश को देखते हुए मेरे दिमाग़ में यह ख़्याल आया था कि मैं जो मेहराब देख रहा हूं, वह धोखा नहीं है और ऐसा करते समय मैंने किसी बात पर पूरी तरह विचार नहीं किया था, अपने से कुछ छिपाया था," उसने सोचा। "किन्तु वह कुछ भी क्यों न हो, उसके विरुद्ध कोई आपत्ति नहीं हो सकती। मेरे सोचते ही सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा!"

बच्चे के कमरे में प्रवेश करते हुए उसे यह याद आ गया था कि उसने अपने से जो कुछ छिपाया था, वह क्या था। वह यह था कि भगवान के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण उसका भलाई-सम्बन्धी रहस्योद्घाटन है, तो यह केवल ईसाई धर्म तक ही क्यों सीमित है? इस रहस्योद्घाटन का बुद्ध धर्म और इसलाम से क्या सम्बन्ध है, जो ईसाई धर्म की तरह ही भलाई करते हैं, उसका उपदेश देते हैं?

उसे लगा कि उसके पास इस प्रश्न का उत्तर है, किन्तु अपने को जवाब बताने के पहले ही वह बच्चे के कमरे में दाखिल हो गया।

कीटी आस्तीनें ऊपर चढ़ाये हुए नहाने के टब के पास खड़ी थी, जिसमें बच्चा पानी से खिलवाड़ कर रहा था। पति के पैरों की आहट सुनकर वह उसकी ओर मुड़ी और मुस्कान से उसे अपनी तरफ़ बुलाया। एक हाथ से वह गुदगुदे और टांगें चलाते हुए मीत्या का सिर थामे थी, जो पानी पर तैर रहा था, और दूसरे हाथ की पेशियों पर एक नियमित लय से ज़ोर डालते हुए उस पर स्पंज से पानी डाल रही थी।

"ज़रा देखो, देखो तो!" उसने पति के निकट आने पर उससे कहा। "अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना की बात ठीक है। पहचानता है।"

बात यह थी कि आज के दिन से मीत्या निश्चय ही अपने लोगों को पहचानने लगा था।

लेविन के नहाने के टब के निकट आते ही उसे यह तजरबा करके दिखाया गया और वह कामयाब रहा। इस तजरबे के लिये बुलायी गयी बावर्चिन उसकी तरफ़ झुकी कि वह उसे पहचान ले। बच्चे ने नाक-भौंह सिकोड़ी और इन्कार करते हुए सिर हिला दिया। इसके बाद कीटी उसकी ओर झुकी, मीत्या खिल उठा, उसने स्पंज को अपने हाथों से पकड़ लिया और होंठों से ऐसी अजीब और हर्षपूर्ण आवाज़ निकाली कि कीटी और आया ही नहीं, बल्कि लेविन भी आनन्द-विभोर हो उठा।

बच्चे को एक हाथ पर टब से बाहर निकाला गया, उस पर ताज़ा पानी डाला गया, चादर में लपेटकर पोंछा गया और उसकी ज़ोरदार किलकारी के बाद उसे मां को सौंप दिया गया।

"मुझे ख़ुशी है कि तुम इसे प्यार करने लगे हो," बच्चे को स्तन-पान करवाने के लिये उसे गोद में लेकर अपनी अभ्यस्त जगह

पर बैठने के बाद कीटी ने कहा। "मैं बहुत ख़ुश हूं। नहीं तो मुझे इस कारण बहुत चिन्ता होने लगी थी। तुम्हारा कहना था कि तुम उसके प्रति कुछ भी महसूस नहीं करते।"

"नहीं तो क्या मैंने ऐसा कहा था कि मैं कुछ भी महसूस नहीं करता? मैंने सिर्फ़ यही कहा था कि मुझे निराशा हुई है।"

"क्या मतलब, इससे निराशा हुई है?"

"इससे नहीं, अपनी भावना के मामले में निराशा हुई है – मैं कुछ अधिक की आशा कर रहा था। मुझे उम्मीद थी कि मानो एक अचम्भे की तरह मेरे भीतर एक नयी, मधुर भावना पलक खोल देगी। किन्तु सहसा इसकी जगह पर घिन और दया की अनुभूति हुई..."

कीटी बच्चे को स्तन-पान कराते और अपनी पतली उंगलियों में अंगूठियां पहनते हुए, जो उसने मीत्या को नहलाते समय उतार दी थीं, बहुत ध्यान से लेविन की बात सुन रही थी।

"और सबसे बड़ी बात तो यह है कि ख़ुशी के बजाय भय और दया की कहीं अधिक अनुभूति हुई। आज आंधी-पानी के समय अनुभव हुए भय के बाद मैं समझ गया कि उसे कितना अधिक प्यार करता हूं।"

कीटी के चेहरे पर मुस्कान खिल उठी।

"तुम बहुत डर गये थे क्या?" कीटी ने पूछा। "मैं भी, मगर अब, जब यह बीत चुका है, मुझे कहीं अधिक डर महसूस हो रहा है। मैं बलूत को देखने जाऊंगी। कातावासोव कितना प्यारा आदमी है! वैसे तो पूरा दिन ही बहुत अच्छा रहा। सेर्गेई इवानोविच के साथ तुम भी इतने अच्छे ढंग से पेश आते हो, जब तुम चाहते हो... तो तुम उनके पास जाओ। स्नान के बाद यहां हमेशा गर्मी और भाप होती है..."

(१६)

बच्चे के कमरे से बाहर निकलने और अकेला रह जाने पर लेविन को फ़ौरन फिर से वही विचार याद हो आया, जो उसके लिये कुछ स्पष्ट नहीं हुआ था।

मेहमानख़ाने में जाने के बजाय, जहां से आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, वह छज्जे पर ही रुक गया और रेलिंग पर कोहनियां टिकाकर आकाश को ताकने लगा।

बिल्कुल अंधेरा हो चुका था और दक्षिण में, जिधर वह देख रहा था, बादल नहीं थे। बादल दूसरी दिशा में थे। वहां से बिजली कौंधती थी और दूर से बादल की गरज सुनाई पड़ती थी। लेविन लाइम पेड़ों से लगातार गिर रही बूंदों की आवाज़ को सुन रहा था और सितारों के अपने परिचित तिकोण तथा उसके बीच से गुज़रनेवाली आकाशगंगा तथा उसकी शाखाओं को देख रहा था। बिजली की हर कौंध पर आकाशगंगा ही नहीं, बल्कि चमकीले सितारे भी ओझल हो जाते थे। किन्तु जैसे ही बिजली की कौंध ग़ायब होती, वैसे ही वे फिर उसी जगह पर ऐसे प्रकट हो जाते मानो किसी सधे हुए हाथ ने उन्हें फिर से वहां फेंक दिया हो।

"मुझे क्या चीज़ परेशान कर रही है?" लेविन ने पहले से ही यह अनुभव करते हुए अपने आपसे पूछा कि उसके सन्देह का समाधान उसकी आत्मा में तैयार है, यद्यपि वह उसे जानता नहीं है।

"हां, भगवान के अस्तित्व का एक स्पष्ट और निर्विवाद प्रमाण भलाई के नियम है, जो संसार के लिये एक रहस्योद्‌घाटन के रूप में प्रकट हुए हैं, जिन्हें मैं अपने भीतर अनुभव करता हूं और जिन्हें मान्यता देते हुए मैं धार्मिक आस्था रखनेवाले दूसरे लोगों के संगठन से, जिसे चर्च कहते हैं, सूत्रबद्ध तो नहीं, किन्तु चाहे-अनचाहे जुड़ा हुआ हूं। किन्तु यहूदी, मुसलमान, कनफ़्यूशस के अनुयायी, बुद्ध धर्म के माननेवाले – ये क्या हैं?" उसने अपने आपसे वह प्रश्न पूछा, जो उसे ख़तरनाक लगता था। क्या ये करोड़ों लोग उस उच्चतम वरदान से वंचित हैं, जिसके बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं?" वह सोच में पड़ गया, किन्तु उसी क्षण उसने अपने को सही किया। "मैं यह क्या पूछ रहा हूं?" उसने अपने आपसे कहा। "मैं भगवान के प्रति सारी मानवजाति के विभिन्न धर्मों के रवैये के बारे में पूछ रहा हूं। मैं इन सभी अस्पष्ट बातों के साथ सारी दुनिया के लिये भगवान के सामान्य प्रकटीकरण के बारे में प्रश्न कर रहा हूं। यह मैं क्या कर रहा हूं? व्यक्तिगत रूप से मुझे, मेरे हृदय के लिये निश्चय ही उस ज्ञान का उद्‌घाटन हो गया है, जिसे बुद्धि से प्राप्त नहीं किया जा सकता और मैं हठपूर्वक इस ज्ञान को बुद्धि द्वारा तथा शब्दों में व्यक्त करना चाहता हूं।

"क्या मैं यह नहीं जानता हूं कि सितारे गतिमान नहीं हैं?"

उसने उस चमकीले ग्रह की ओर देखते हुए अपने आपसे प्रश्न किया, जिसने भोज वृक्ष की फुनगी की दृष्टि से अपनी स्थिति बदल ली थी। किन्तु सितारों को गतिमान देखते हुए मैं पृथ्वी के गतिमान होने की कल्पना नहीं कर सकता और जब मैं यह कहता हूं कि सितारे चलते हैं, तो ठीक ही कहता हूं।

"और अगर खगोलशास्त्री पृथ्वी की सारी विभिन्न गतियों को ध्यान में रखते, तो क्या कभी कुछ समझ पाते और हिसाब-किताब जोड़ने में सफलता प्राप्त कर सकते? आकाश-पिंडों के फ़ासलों, वज़न, गतियों और व्यतिक्रमों के बारे में उनके सभी अद्भुत निष्कर्ष गतिहीन पृथ्वी के गिर्द तारकों की दृश्यमान गतिशीलता पर आधारित हैं, उसी गतिशीलता पर, जो इस समय मेरे सामने है, जो शताब्दियों के दौरान करोड़ों लोगों के लिये ऐसी ही थी, ऐसी ही थी और हमेशा ऐसी ही रहेगी तथा हमेशा जिसको जांचा जा सकता है। एक मध्यरेखा और एक क्षितिज के बनिस्बत दृश्यमान आकाश के निरीक्षण पर न आधारित होनेवाले खगोलशास्त्रियों के निष्कर्ष जैसे ढीले-ढाले और ढुलमुल होते, ठीक उसी तरह भलाई की उस धारणा को आधार न बनानेवाले मेरे निष्कर्ष भी ढीले-ढाले और ढुलमुल होते, जो सभी के लिये हमेशा समान थी और होगी तथा जिसका ईसाई धर्म ने मेरे लिये उद्घाटन किया और जिसे हमेशा मेरी आत्मा में जांचा-परखा जा सकता है। दूसरे धर्मों और भगवान के प्रति उनके रवैये के प्रश्न का समाधान ढूंढ़ने का मुझे न तो अधिकार है और न सम्भावना ही प्राप्त है।"

"अरे, तुम अभी तक यहां हो?" इसी रास्ते से मेहमानख़ाने की ओर जाती हुई कीटी की अचानक आवाज़ सुनाई दी। "तुम किसी कारण परेशान तो नहीं हो?" सितारों के प्रकाश में बहुत ध्यान से पति के चेहरे को देखते हुए उसने पूछा।

किन्तु यदि सितारों को फिर से लुप्त कर देनेवाली बिजली की कौंध ने उसके चेहरे को रोशन न कर दिया होता, तो वह उसे देख न पाती। बिजली की कौंध की रोशनी में उसे पति का पूरा चेहरा दिखाई दे गया और उसे शान्त तथा प्रसन्न पाकर वह उसकी ओर मुस्करा दी।

"वह मुझे समझती है," लेविन ने सोचा, "वह जानती है कि मैं किस बारे में सोच रहा हूं। इसे बताऊं या नहीं? हां, मैं इसे बता दूंगा।" किन्तु जिस क्षण उसने बात शुरू करनी चाही, कीटी भी उसी समय बोल पड़ी।

"सुनो, कोस्त्या! मेरे लिये इतना काम करो," वह बोली, "कोनेवाले कमरे में जाकर यह देख लो कि सेर्गेई इवानोविच के लिये कैसे सारी व्यवस्था की गयी है। मुझे अटपटा लग रहा है। हाथ-मुंह धोने की नयी चिलमची वहां लगा दी गयी है या नहीं?"

"अच्छी बात है, मैं अभी जाता हूं," लेविन ने उठते और उसे चूमते हुए कहा।

"नहीं, मुझे नहीं कहना चाहिये," कीटी जब उसके आगे-आगे चल दी, तो उसने सोचा। "यह एक रहस्य है, जिसकी केवल मुझे आवश्यकता है, जो महत्त्वपूर्ण है और जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

"इस नयी भावना से मुझमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ, इसने मुझे सुखी नहीं बनाया, मुझे सहसा कोई प्रकाश नहीं दिया, जैसी कि मैंने आशा की थी, ठीक वैसे ही जैसे बेटे के प्रति मेरी भावना के मामले में हुआ था। आश्चर्य की भी कोई बात नहीं हुई। यह मेरी आस्था है या कुछ और – यह क्या है मुझे मालूम नहीं, किन्तु यह भावना भी व्यथाओं-पीड़ाओं के साथ अनजाने ही मेरी आत्मा में प्रवेश कर गयी है और जमकर बैठ गयी है।

"पहले की भांति कोचवान इवान पर बिगड़ूंगा, उसी तरह से वाद-विवाद करूंगा, किसी प्रसंग के बिना अपने विचार प्रकट करूंगा, मेरी आत्मा की गहराई और दूसरों के बीच, यहां तक कि मेरे और मेरी पत्नी के बीच दीवार बनी रहेगी, उसी तरह अपने भय के लिये उसे दोषी ठहराऊंगा और इसके बारे में पछताऊंगा, उसी भांति बुद्धि से यह नहीं समझ पाऊंगा कि मैं किसलिये प्रार्थना करता हूं, मगर फिर भी प्रार्थना करूंगा। किन्तु अब मेरा जीवन, मेरे साथ कुछ भी क्यों न हो, मेरा सारा जीवन, उसका हर क्षण पहले की भांति न केवल अर्थहीन नहीं रहा, बल्कि भलाई के रूप में उसे एक अर्थ प्राप्त हो गया है, जो मैं उसे प्रदान करने में समर्थ हूं!"

पाठकों से

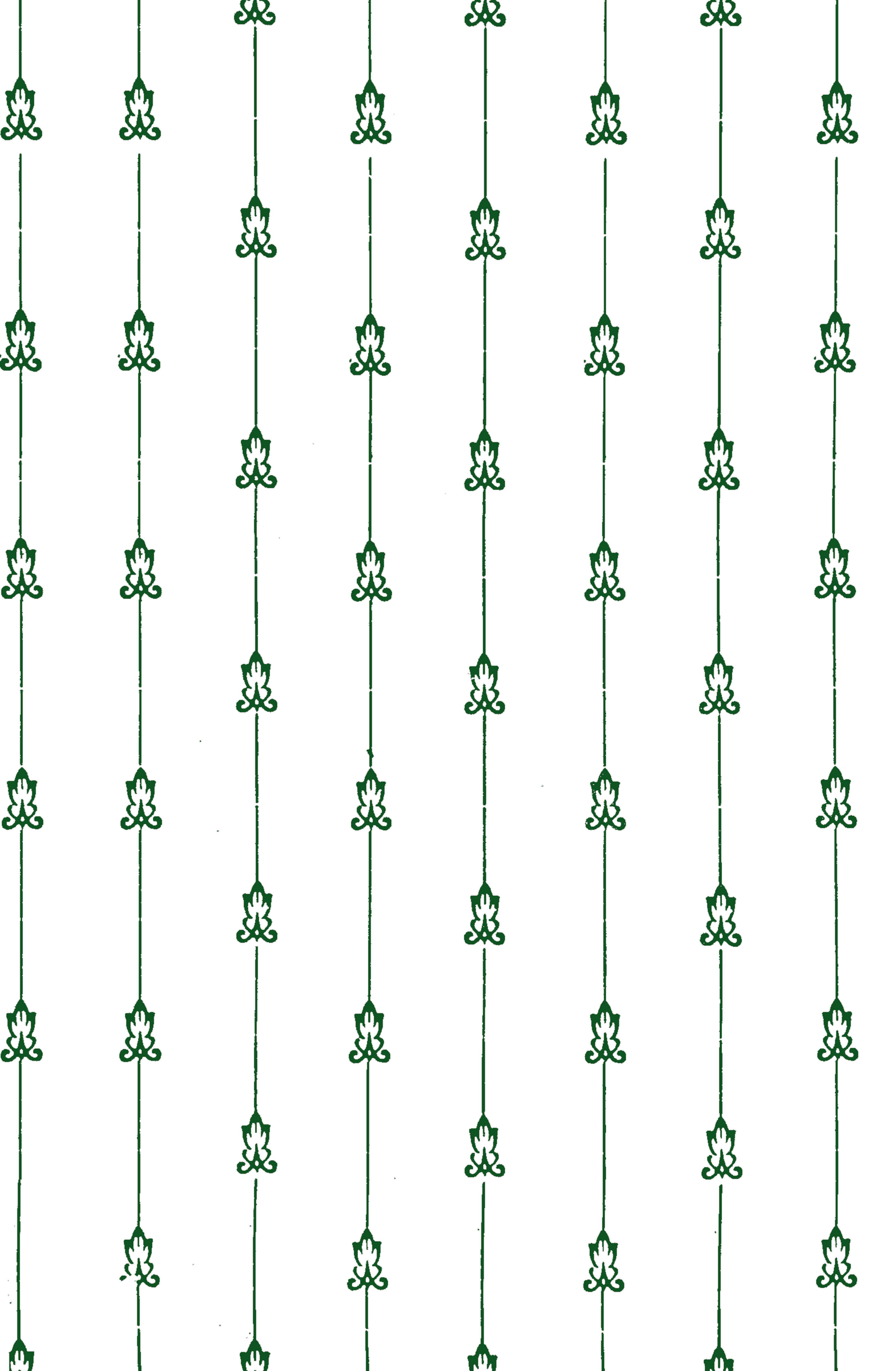
प्रगति प्रकाशन

इस पुस्तक की विषयवस्तु,
अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में
आपके विचार जानकर
आपका अनुगृहीत होगा।
आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी
हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।

कृपया हमें इस पते पर लिखिये:

प्रगति प्रकाशन,

ज़ूबोव्स्की बुलवार, १७, मास्को, सोवियत संघ।



"काश, तोलस्तोय की तरह, ऐसे लिखना सम्भव होता कि सारी दुनिया कान देने के लिये विवश हो जाती।"

थियोदोर ड्राइज़र, अमरीका

"मैं किसी भी तरह के ऊहापोह के बिना 'आन्ना कारेनिना' को विश्व-साहित्य का महानतम उपन्यास कह सकता हूं।"

टामस मान, जर्मनी

"मेरे ऊपर तोलस्तोय ... का असर पड़ा है।"

प्रेमचन्द, भारत

"तोलस्तोय के विचारों ने हर जापानी के दिल-दिमाग़ में घर कर लिया। चट्टान की दरारों में छिपे बारूद की भांति उनका बहुत ज़ोरदार विस्फोट हुआ जिसने सभी सिद्धांतों और नियमों की नींवें हिला दीं। यह तो लगभग क्रान्ति ही थी।"

मासोस्मी कातो, जापान